# भूमिका

देखिये इस शास्त्र समुद्रमें कैसे २ दृष्टांत रूप अमोल्य रत्न भरे हैं जिनके आनंद के आगे रत्नाधीश जौहरी आदि भी तुच्छ समझे जाते हैं। और उन रत्नोंको तो डर बहुत रहताहै इन रत्नोंको कुछ भी डर नहीं है। परंतु क्या करें वे रत्न जहाँ तहाँ कहीं २ ठौर स्थित थे, इसलिये विद्वान् ग्राहकजन, उनको क्रमसे एकत्र नहीं देखके अत्यानंदको नही प्राप्त होते थे इसलिये इस अल्प बुद्धि शुभचिंतक ने बहुत से ग्रंथादिकों में से इन रत्नोंको चुन२ कर तथा शिष्टजनों के मुख से यथोक्त उपयोगी अत्यंत चमत्कृत रोचक 'इतिहास रत्नों' को सुन। तिन सबोंको एकत्रकर क्रमसे जिस २ प्रकरणके जो २ थे तिनको तहां २ क्रमसे लगाकर जिसमें ग्राहकजनों को देखने में श्रम न हो इस रीतिपर लगादिये हैं। तिनको समस्त विद्वानोंके आनंदके लिये बहुशिष्टजन प्रेरित सद्गुण ग्राहक ( मुन्शी नवलकिशोरजी ) ने लेकर निज व्यय से स्वीय यन्त्रालय में छपवाकर प्रकट किये ऐसे उत्तम ग्रंथों को निज प्रबंध से छपवा २ कर उक्त मुंशीजी जगत्में यशोधन वर्षाते हैं इससे ये यश शरीरी अजर अमर जानने इस विषयमें एक दोहा भी कहा है ॥

दो॰ जोजगमेंप्रमुदितगुनी प्रकटकरतगुणमोर ॥
राज औज्ञगमेंयुगयुगजिवौ यशतननवलकिशोर ॥१॥

देने हे॰ समस्त विद्वानोंका कृपापात्र जगत्कापूर्ण हितैषी
शुक्लोपनामक पण्डित देवीसहाय शर्मा,
नार नवलीयः ॥

## अथ भक्तिनिबन्धोद्वितीयः

### तदीयम्मङ्गलम् ॥

प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीकव्यासाम्बरीषशुकशौनकभीष्मकाद्यान् ॥ रुक्मांगदार्जुनवसिष्ठविभीषणादीन्तानहंपरमभागवतान्नमामि १ ॥

### अनेकभक्तिनिष्ठोंकेदृष्टान्त

सद्भक्तिमात्रेणहरिःप्रतुष्यते नार्थैर्यथातेमुनयोदिवंगताः ॥ ग्राहगृहीतातुरहस्तिमोचने पूजाहरेरतैःकमलैःप्रियाऽभवत् १ ॥

गोप्योवणिग्व्याधकपीशपुल्कसाश्चैद्यादयोयेद्विषतोगतिंगताः ॥ तन्मातरोवैगणिकाऽथगृध्रो नविष्णवेद्रव्यचयंसमर्प्पयन् २ ॥

'हरि-भगवान्, श्रेष्ठ भक्तिमात्रही से प्रसन्नहोते हैं कुछ द्रव्यादिकही से नहीं, जैसे मुनिजन, स्वर्ग पधारे । और ग्राह से पकड़े गजके छुटाने में कमलोंही से की पूजा, हरि को प्रियहोती भयी १ और गोपी, साधु, व्याध, कसाई औ हनुमान् ये भक्तभये । और चैद्य आदि जो 'शिशुपाल, जरासंध, कंसादिक थे वे भगवान् से द्वेष करतेही गतिको प्राप्तहुये । और तिनकी माता यशोदा और गीध, जटायू इत्यादि और भी भक्तहुये जिनकी कथा प्रसिद्ध है इन्होंने भगवान् को थैली नहीं सौंपदी थी' २ अब इनके यथाक्रम से इतिहासक० मुनिजन, वनमें फल फूलो से भगवान् की पूजा किया करते उसी से गतिपाई सो भगवान् ने भी कहा है 'पत्रं पुष्पं फलं तोयं' तैसेही एक 'कौडिन्य' नाम मुनि श्रीगणेशजी पै नित्य दूर्वा चढ़ाया करता था । उसकी स्त्री बोली स्वामिन् ! इस दूर्वाही के चढ़ाने से क्या होता है तो तिसे परीक्षाके लिये मुनि ने कहा जा इस दूर्वाके पत्रभैर सुवर्ण, इंद्रसे

[ल]ा लाव। वह गयी इन्द्रने सुन आश्चर्य मानके एक छोटा
[क]ड़ा सुवर्ण का चढ़ाया वह पूरा न भया तो और चढ़ाया फिर
[भ]ी कम देखा तब तो जितना इन्द्र के पास सुवर्णथा वह चढ़ा
[द]िया फिर भी न भया तो अपने मित्र कुबेरजीको बुलाये वे भी
[आ]य अपना सब सुवर्ण चढ़ाय फिर तिसमें आपभी निज परि-
[व]ार समेत चढ़गया पर वह दूर्वा पत्र के बराबर नहीं होसका।
[दू]र्वाका ऐसा माहात्म्य है ( यह कथा श्रीगणेश पुराण-उपासना
[ख]ंडके ६७ अध्यायमें लिखाहै। इति शु० दे० दृ० भक्तिनि० प्रथमः
[प्र]० १ ) और,जैसे ग्राहने जब हाथी को पकड़ा तो अति आतुर
[भ]ये तिसने जलमें से कमलही लेकर नारायण की पूजा करी
[त]ो शीघ्रही प्रसन्नहो हरिने तिसको छुटाया यह कथा श्रीमद्भाग-
[व]त ८ स्कंधमें विस्तार से कहीहै ( इति द्वि० प्र० २ ) और 'गो-
[पि]यें व्रजवनिता, जैसे वृन्दावनमें तिन श्रीकृष्णजीके बिन क्षण
[क]ी कोटि कल्पभर समझ अत्यन्त दुःखसे काटती थीं सो विरह
[क]था वेणुगीत आदि श्रीभागवत दशमस्कन्ध में प्रसिद्ध लिखाहै
( इति तृ० ३ प्रदीप· ) और जैसे 'साधु-एक वैश्य' हरिभक्त था
[व]ह रात्रि दिन यही चिन्ता किया करता कि कभी मुझसे भी भग-
[व]ान् मिलेंगे इसही चिन्तामें वह एक पीपल वृक्षके नीचे जाय
[बै]ठा उधरसे श्रीनारदजी आय निकले तो वह इन्हें देख बोला ना-
रदजी! आप हरिभक्तहो विष्णुजी के पास जाओ तो पूछना कि
मुझ तुच्छ सेवकसे भी कभी कृपाकरके मिलेंगे। नारदजी ने
तहां पहुँच विष्णुजीसे प्रार्थनाकी महाराज! उस बनियेसे आप
कब मिलेंगे तब तो विष्णुजी के मुख से यही वचन निकला कि
उस पीपलमें जितने पत्ते हैं उतनेही जन्मोंमें हम उसे मिलेंगे
तो नारदजी आये और तिसी वृक्षकेनीचे बैठेभये उससे कहा कि
इसमें जितने पत्तेहैं तितने जन्मोंमें भगवान् मिलेंगे ऐसे नारदजी
ने तो उसकी आशटूटने के भयसे कुछ संकोचही से कहा और वह
प्रसन्नहो वहांही बैठगया और ( अच्छा जी मिलेंगे तो सही। २ )

ऐसे कहने की धुनिबाधी निदान भगवान् आये और तिस से प्रेम सहित मिखे तिसे वैकुंठ पठाया ॥

इतिशुकदेवसहायकृतदृ०भक्तिनिबंधेचतुर्थःप्रदीप० ४ ॥

और जैसे एक 'व्याध-कसाई' ग्राहक के ताईं देनेको बकरे का पुट्ठाभर काटकर देताथा उसने जब शस्त्र उठाया औ प्रहार करने लगा तब उसको बकरे ने कहा कि अब मेरा यह नया वैर भया, तब तो व्याध, अचानक ऐसा वचन सुन अचरज कर चुपहोरहा तब फिर बकरेने कहा कि तू जन्म २ मे मेराशिर काटता रहा और इसतिरह मैं तेरा काटता रहाथा पर अब यह पुट्ठाभर काटनेका मेरा तेरा नयाही वैर भयाहै अब मैं न तो जीतारहा न मरूंगा इतनी सुनतेही व्याधने सर्वथा उस कुकर्मको छोड़ दिया हरिभक्त भया ( इति० ५ प्र० ) 'कपीश-हनूमान्जी के चरित्र रामायण में प्रसिद्धहैं सदन कसाई की कथा भक्तमाल में प्रसिद्धहै 'चैद्य शिशुपाल, जैसे राजा 'युधिष्ठिर, के महायज्ञ में आये 'श्रीकृष्णचन्द्रको असह्यगाली देता भी ज्योति रूपहो तिनमे लीन भया यह कथा भागवत मेंहै 'माता पिता-नन्द यशोदा,वा 'वसुदेव-देवकी, जैसे इनके लिये अत्यन्त कष्टपातेरहे जन्मांतर मे भी जैसे जन्म समय भगवान् ने कहाहै ( त्वमेव पूर्व सर्गेभूः पृश्निः स्वायम्भुवेसति। तदायं सुतपानाम प्रजापतिरकल्मपः ) इत्यादि श्रीभगवान् कहते हैं कि हे देवकि ! तू पहिले सर्गमे 'पृश्नि, थी और यह वसुदेव, निष्पाप 'सुतपा—नाम, राजाथा, तुम दोनोंने ब्रह्माजी की आज्ञासे भारी तप किया सूखेपत्ते खाकर तुमने समय बिताया ऐसेही तप करते २ तुमको बारह वर्ष बीते तब तो मैं इसही शरीर से तुम्हारे आगे प्रकट भया और मैंने कहा कि तुम बरमांगो 'तब तुम मेरे दर्शन से प्रसन्न होगयेथे तो तुमने मुझसे दुर्लभ मोक्षभी न मागी, किन्तु यहही कहा कि तुम सरीखे हमारे पुत्रहो तो अहोभाग्य है ऐसा सुन मैं (तथास्तु ) कह अन्तर्द्धान हुआ अब तिस तपके प्रभाव से मैंने तु-

म्हारे यहां अवतार लियाहै सोही मैं कंस आदि असुरों को मार, भूमिभार उतार के निजलोक पधारोगा तुम मुझमें ईश्वरभाव वा पुत्रभाव से भक्ति करते मेरेलोकमें आय मेरेपास रहोगे इति और 'नन्द' यशोदा, ने भी पहिले तप कियाथा सो 'नन्दजी,तो वसुओंमें श्रेष्ठ 'द्रोण नामवसु थे और 'यशोदा तिनकी स्त्री 'धरणी, थी। तिन दोनों ने भी ऐसाही तप किया तो प्रसन्न हुए श्रीहरि फिर तिनके घर पहुँचे और तिनको अति दुर्लभ बाल लीला दिखायी जिसे कौन वर्णन करसके और अन्तमें मोक्षपदवी दी इति ( ८ ) पिंगलानाम, वेश्याथी वह शृंगार किये अपने मकानपर बैठी धनीलोगोंके आनेकीराह देखरहीथी निदान आधीरात बीतगई कोई भी तिसके पास न आया तब तो तिस को ज्ञान उत्पन्न हुआ और मनमें यह विचार किया कि इतना मन मैने निन्दित इस जार कर्ममें लगाया और मनुष्योंकी राह देखी तिसपर भी कोई नहीं आया। और जो कदाचित् इतनी ईश्वर मे भावना करती तो मेरी तुर्त मोक्षही निस्संदेह होजाती। ऐसे पछतायके एकान्त बैठगयी और ईश्वरमें मनलगाया और तहां कई श्लोक इस विषयके कहे सो भागवत एकादश स्कन्ध में हैं और इसपर व्यासजी ने यह शिक्षा श्लोक कहाहै तहांहीपर जैसे 'आशाहि परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम्। यथा संत्यज्य कांताशां सुखं सुष्वाप पिंगला॥१॥ अथवा भाषामें किसी ने दोहा भी कहा है' जैसी नीति हराम में तैसी हरि मे होय। चलाजाय वैकुंठ को पल्ला गहै नहि कोय, १ अथवा 'सुवा पढ़ावत गनिका तरी यह साखी भी है। इत्यादि वाक्यों पर पूर्वोक्त पिंगलाका दृष्टांत प्रमाण है। इत्यादि भक्त हुएवे केवल भक्ति ही से कृतार्थ होगये और परमगति पायी जो योगियों को भी दुर्लभहै और शबरी, अहल्या आदि अनेक भक्त है जिन्होंनेकेवल मनही नारायण मे लगाया और द्रव्य पूजा उनसे कुछ भी न होसकी इनके इतिहास जहां तहां,प्रकटहै सो देखलेने इसग्रंथ

पांडवो ने इनको पहिचान अत्यन्त भयभीत होकर प्रणामकरी और भीतर जाय उदासहो बैठे द्रौपदी बोली महाराज! बाहर कौन आये और घबराये कैसे हो तब पांचों ने कहा कि बहुत से शिष्य लिये दुर्वासा मुनि आयेहैं और इस समय तुम्हारी चरी में भी पदार्थ नहीं है और न सायंकाल में उत्पन्न होसक्ता इससे हम को महाभय होरहा हम उनसे कुछ भी नहीं कहसक्ते वे प्रचण्ड मुनि, तुर्तही शापदेके चले जावेंगे यह सुन द्रौपदी बोली कि आप उनसे कहिये स्नान पूजन करें फिर देखा जायगा इतना तो बचाव कीजिये फिर श्रीभगवान्‌ही सब अच्छाही करेंगे पाण्डवोने तिनसे हाथजोड़ प्रार्थना की कि आप स्नान ध्यान कीजिये तुर्तही भोजन तैयार होताहै। यह सुनतेही वे सब तो श्रीगंगाजी के तीर' स्नान ध्यानको चलेगये। और द्रौपदीने श्रीकृष्ण महाराज से बिनती करी कि इस समय चीरहरण से दूना दुःख समझ मुझ भक्तकी लाज रखिये नहीं तो अत्यन्त धारमें नाव डूब जावेगी निदान 'श्रीकृष्णचंद आनन्दकंद, प्रकट भये और द्रौपदीसे बोले कि ठीकहै पर मारे भूखके हमारेप्राण जाते हैं तू कुछ पहिले हमें खानेकोदे। यह सुन द्रौपदी चकितभई औ कहने लगी महाराज! मैंनेतो इसही लिये आपको बुलाये और आपभी भूखेहीमरते आये तो पूरेपटे मेरी तो चरीमेंभी रात्र को नहीं रहता तो श्रीकृष्णजीने कहा कि चरीको देख, झाड़काय के कुछ वेगलाव नहीं तो मेरेप्राण चले वस। तबतो घबराती द्रौपदी ने चरीको देखी झाड़काई तो उसमें एकचावल लगारहा निकला उसे ले श्रीकृष्णजी को दिया उन्होंने शीघ्रही भोग लगाया और पेटपर हाथफेर ' तृप्त–थापे' ऐसे कहा तो तिस समय सबतृप्त होगये और द्रौपदीने पांडवोंसे कहा कि उनकोशीघ्र बुलाइये, तब पांडवोंने बुलावाभेजा वे वहां काकड़ीकी तरे लोटेहुयेथे तो आपसमें वह उसेकहै और वह उसेकहै कि उठो२ चलो निदान सबके सबकहनेलगे कि चलें क्याहमारा तोऐसापेट भरग-

याहै कि सारेबोझके उठाभी नहीं जाता फिर चलनातो कहां जैसे दोचौबे, जीमके उठे एकने दूसरे से कहा भाई देखतो मैंने जूता किसी ओरकातोनहीं पहरलियाहै मुझसे नीचाहोकर दीखा नहीं जाता है तब दूसरा बोला कि मुझे तुही नहीं दीखता मैंने क्या तुझसे थोडा खाया है सोहीहाल इनकाहुआ। निदान तब तोहारे बेचारे लज्जितभये और पांडवोंको आशीशदेके कहनेलगे कि (यत्रकृष्णःकुतोविपत्—) जहां श्रीकृष्ण हैं तहां बिपत्ति कहांसे हो, यह कह विजय मंत्रसे आशीर्वाद देकर बिदाहुए इति १

और राजा अंबरीष जैसे एकादशी व्रतकिये द्वादशी को पारण करने अर्थात् व्रतखोलनेके लिये तैयार थालीपर बैठाथा कि इतने में कहीं से 'दुर्वासाजी, चले आये और बोले कि राजन्! हमतेरे घर, अतिथि, आये हैं राजाने कहा महाराज! आइये भोगतैयार है आइये तब बोले स्नान ध्यानकरके आतेहैं यहकह कर चलेगये 'राजा, राह देखतारहा वे वहाँ निश्चिन्त ध्यान में मग्नहुये ब्राह्मण, न्योता पाये राजाहो बैठते हैं इधर राजा, इस धर्मसंकट में फँसा कि जो उनकी राहही देखतारहूं तो द्वादशी थोड़ी फिर पारण होनहीं सक्ता और जो व्रतखोललें तो ब्राह्मण, न्योता रहा, तब राजा ने शास्त्र की आज्ञा से जल पी लिया, कि जिसमें भोजन नहो और व्रत भी सफल हो। राजाके जलपान करते ही दुर्वासा जी झुँझलाते हुएआये और बोले तैंने ब्राह्मण को न्योतके बिनभोजन करवाये जलाहार करलियाहै सो अबइस का फल अभी देखले। ऐसेकह निज जटाकी लटा उखाड़ मंत्र पढ़के राजाके ओर फेंकी राजा डरके ठहरारहा। निदान श्रीकृष्णजी का दियो सुदर्शन-चक्र, राजाकी रक्षा करता था वह उस 'कृत्या-मूठ, के पिछाड़ी दौड़ा तब वह उलटी दुर्वासाजीही ओर झपटी तबतो मुनिजी जीव बचाने को भगे और त्रिलोकी भरमें भ्रमआये परकोई ऐसी ठौर न पाई जहाँ चक्रसे पीछाछूटे। निदान फिर ब्रह्मलोकमें ब्रह्माजी के पासगये और उनसे वह सब

वृत्तांत कहा तब ब्रह्माजीने बिचारके कहा भाई कैलास में शिवजीके पासजाओ वे बचावेंगे। इतनी सुन कैलास में शिवजीसे जाय प्रार्थनाकरी उन्होंने कहा भाई त्रिलोकीनाथ के चोरको कौन रखसक्ता है तुम विष्णुजी ही के पास जाओ वे ही छुड़ावेंगे यह सुन वैकुण्ठमेंजाय श्रीविष्णुजी से साष्टांग प्रणाम कर निज कृत अपराध सुनाया तब विष्णुजीने कहा भाई मेरे भक्त से किये अपराध को तोमैं भी क्षमानहीं करसक्ता इससे तू उस राजाके पासजाव वहही तुझे इस बिपत्तिसे छुटावेगा। तबतो हारलाचार होकर ब्राह्मण उसराजा अम्बरीषही की शरणगया तब राजाने निज जप तपका सब फलदेकर ब्राह्मणको चक्र से छुटाया इति सप्तमप्रदीपः ७॥

## अष्टमः ८ प्रदीपः॥

### त्रिलोकचन्द्रसुनारका वर्णन॥

महद्भयाद्रक्षति भक्तवत्सलो भक्तंहरिः स्वर्णकृतास्तुतो वने। दत्त्वाऽथराज्ञे शुभपादभूषणं त्रिलोकचन्द्रस्य भयं न्यवारयत् १॥

भक्तवत्सलदयालु भगवान् निजभक्तकी भारीभयसे रक्षाकरते हैं जैसे स्वर्णकारी- अर्थात् त्रिलोकचन्द्र-सुनार से वनमें स्तुति किये गये भगवान् राजाको सुन्दर लक्ष्मीजीकी पायजेबदेकर त्रिलोकचन्द्र भक्तका भय निवारण करतेभये (१) दृष्टांत जैसे एक त्रिलोकचन्द्र, नामसे विष्णु भक्त था वह जो कुछ पाता था सो सब साधु ब्राह्मणोंको खवादेता था यहांतक कि उसके पास कुछ गढ़ने को आता उसेभी वह धरबेचकर ठिकाने लगादेताथा इसी कारण उसपर सब भाईलोग दुःख पारहेथे कभी कि तिसनगरके राजाके घरमेंसे रानी की पायजेब जाती रहीथी तो रानीने कहा कि इसीगढ़नकी पायजेब दूसरी तैयार होवे। राजाने तुर्तही सब सुनारों को बुलवाय कहा कि ऐसीही पायजेब तैयारकरो वे सब बिचारकर बोले महाराज!ऐसी तौहमसे नहींबनसक्ती जो त्रिलो-

का कारीगर, चाहे तो अवश्यही बनादेवेगा इसमें सन्देहनहीं। राजा नेत्रिलोकचन्द्रसे कहा। भगत! तूबनादेवेगा वहबोला श्रीमहाराज! जोआज्ञा इधरलाइये पर यह पायजेब, आपको छैमहीने में मिलेगी और एकलाख, रुपये मुझको, दिवादीजिये। राजाने लाख रुपये भिजवा दिये नामलिख लिया। तबतो त्रिलोकचन्द्रके गहरेहोगये लगा ब्राह्मण जिमाने औ साधुजनोंको खवानें कम्बल बस्त्र बांटने इसीतरह छैमहीने सबरुपया ठिकाने लगाया। क़रार आयाज्ञान घरकोंसे कहा कि, अब हम लुटिया डोरं बांधके चलते हैं सरकारके सिपाही लोग आवेंगे। तोतुम कहदेना वहतोकहीं भगगया हम नहीं जानते। यह कहके गहन बनमें एक वृक्षतले जाय छिपा। इधरराजाने त्रिलोकचन्द्रको भगगया सुनके उन सब सुनारों को कैदकर लिये उनसबों के घरं रोना पड़गया और लगे त्रिलोके को गालीदेने। उधर त्रिलोकचन्द्र ने श्रीभगवान् से बिनती की कि महाराज! भक्तकी लाज रखिये मैंने आपही के नामसे लुटायाहै आगे इच्छा तुम्हारी रही। यह बिनती, बैकुंठमें श्रीविष्णुजीको सुनपड़ी वे भोजन करनेको बैठेथे सुनतेही उदास होगये लक्ष्मीजीने पूछा तब कही कि, हमारे भक्तपर भारी भीड़ पड़ी है जो तुम्हारी, पायजेब, वहां पहुँचे तो कामचले। लक्ष्मीजी बोलीं महाराज! लीजिये भक्तको दीजिये। निदान श्रीभगवान्, भक्त भय हटाने को वह पायजेबले सुनार का सांगभरकर नगरमें आये इन्हें दूरसे आते देख के लोग चिल्ला उठे 'अरे यह आया त्रिलोका अरे, अब वे बेचारे सब सुनार छूटजावेंगे, ऐसेही वेविष्णुजी द्वारपै पहुँचे मंत्रीलोग बहुतसा धमकानेलगे तब कही कि छैमहीनाको तो कराररही था तो सवाछा महीना सही फिर राजाने पूछा अरे तूचला कहांगयाथा तबकही श्रीमहाराज, यह काम चोरेकरबे को था मैंने एकांतमें बैठके यह पायजेब तैयारकरी है लीजिये, स्वीकार कीजिये, दिखाइये मोलकराइये तो सही ऐसी पक्की बानी सुन, राजाने मोल कराने

को सराफ बुलवाये उन्होंने आयदेखिके कहा महाराज! इसकी हम क्या कीमत करें यह तो अमोल्यवस्तु है इसका मोल कौन करसकाहै, निदान त्रिलोकचंद्रने विष्णुजीनेही कहा कि इस की कीमत चार लाख रुपये तो दिवाइये। ऐसे कह श्रीविष्णुजी, रुपयेले त्रिलोकचन्द्रके घर पहुँचाय के वन में त्रिलोकचन्द्र के पास गये और कहा कि हे त्रिलोकचन्द्र! उठ घर चल यहांक्यों बैठाहै, वह बोला तू कौनहै चलूं कहां घर पर, तो राजाके सिपाही हैं क्या? तूं भी राजाको सिपाही है? मोकों पकरने आयोहै श्री-विष्णुजी बोले भाई वह पायजेब तो राजाके घर पहुँचगई। त्रि-लोकचन्द्र तू अच्छो मिल्यो क्या मोकों पकरायबे को डोलै है? मैं तो यहां बैठ्यो, पायजेब कहां से पहुँचती। फिर विष्णुजीने कहा कि हमहीने तेरा भय मिटानेको लक्ष्मीकी पायजेब, राजा के पहुँचादी कीमत के रुपये तेरे घर पहुँचादिये तू घर चल इ-तना कहके विष्णुजीने निजदर्शन दिया और परमभक्त श्रेणी में तिसकी गणना करी॥

इतिश्रीशुक्रदेवीसहायकृतौदृष्टान्तावल्यांभक्तिनिबंधभक्ति सुलभतावर्णननामाष्टमःप्रदीपः ८॥

## नवमः ९ प्रदीपः॥

### राजा और वैश्यपुत्रका भय दूर करना॥

वेषस्य लज्जां मनुते हरिः स्तुतो विधायवेषं सहसा स्त्रकं गतः। दूरी चकाराशुरिपोर्महद्भयं राज्ञोथ वैश्य-स्यच वेषधारिणः॥१॥

स्तुतिकिये भगवान् वेषकी लाजको मानते हैं। जैसे अपना वेष धार के शीघ्र गये तहां राजा का शत्रु से भया महाभय और निजवेषधारी वैश्य का भी भय हटाते भये (न०१) दृष्टान्त। जैसे एक बनिये का लड़का था उसने एक बेर किसी समय राजा की पुत्री को देखी तो उसके देखने में उस का जीव ऐ-

सा फँसो कि उसको देखे विन अन्न भी भाता नहीं था, तो उस के मित्र एक ( बढ़ई ) ने पूछा कि तू ऐसा दुर्बल कैसे होताजाता है। उसने सकुचाकर कहा कि राजाकी पुत्रीको जो मैं देख लिया करूं तो तुर्तही अच्छा होसक्ताहूं। उसने कहा कि इसका तो मैं ऐसा उपाय करूं कि वह नित्य तुम्हारी पूजाही कियाकरे फिर देखना तो कहां रहा। यह कहके उसने एक विष्णुजी के आकार उसके लिये वस्तर, बनाया और उसे पहिरायदिया और कहा कि तू एकबेर राजाके मन्दिर में हो आयाकर वहां तेरी पूजाहुआ करेगी। उसनें वैसाही किया तो उन्होंने भगवान् आये जान आश्चर्य मानकर इसकी सबोंने पूजा की अभीष्ट राजकुमारी भी नित्य रीतिसें अच्छीप्रकार देखतीरही ऐसे बहुत दिन बीते किसी समय उस राजाको पूजामें मग्नजानके उसपर शत्रुने चढ़ाई की तो मंत्रियों नें कहा महाराज ! कुछ उपाय कीजिये शत्रुने नगर आय घेराहै, राजाने कहा मुझ भक्तपर तो श्रीकृष्ण, दया करके दर्शन देतेहैं वेही सबउपाय आपकरलेवेंगे निदान श्रीकृष्ण महाराज, साक्षात् प्रकटे और राजाके शत्रुकी सेनाहटाई ॥

इति श्रीशुकदेवीसहायविरचितदृष्टान्तप्रदीपिन्यांभक्तिनिबन्धेनवम.प्रदीपः ९ ॥

## दशमः १० प्रदीपः

### नवाब और कन्हैया, माशूक का दृष्टांत वर्णन ॥

न जातिभेदं मनुते स्तुतो हरिर्न कर्म पूजां नच भारहेमकम् । वदन् कन्हैयेति विनिर्गतो गृहान्मुदा न वात्रो बुभुजेऽथ तत्करात् १ ॥

स्तुतिकिये भगवान् न तो जातिके भेदको मानते और न कर्म वा पूजाको और न सुवर्ण भार द्रव्यादिक को कुछ समझते हैं, जैसे एक ' नवाब, " कन्हैया " ऐसे कहता घर से निकल गया फिर वह तिन भगवान् के ही हाथसे हर्षकरके जिमाया गया ॥

नवाब, को "श्रीकृष्णचन्द्र, का पड़ा इष्टथा किसी दिनरात के समय 'श्रीकृष्णजी, ने उसको निज चतुर्भुज रूप दिखादिया तो 'नवाब को तबही से हे 'कन्हैया माशूक २, यह भक, लग गयी, प्रभात होतेही घरसे निकल चला तो, 'मथुरापुरी, पहुँच मन्दिर के आगे जाय भीतर जानेलगा तो इसे यवनदेख गुसाइँयोंने रोका तब बाहर सामने पंदरहा शाम हुए उन्होंने पूछा कि फ़क़ीर साहब! कुछ खानेको तो खालीजिये इसने कहा मुझे तो मेरा 'कन्हैया-माशूक, ही खिलावेगा यह सब अचरज कर भोगलगाके सो रहे तब आधीरात हुए आय 'श्रीकृष्णचन्द्र, वही निज भोगका थाल हाथ में लेकर 'नवाब साहब, के पास आये बोले लीजिये नवाब साहब! भोजन कीजिये, उसने सुनै वैसाही कहा तब भगवान् बोले अजी साहब आपका 'कन्हैया माशूक, मैंहीहूं यह सुन नवाब साहबने आंखखोल देखा मनोरथ पूर्णकर जीवन्मुक्तहो परमगति को प्राप्त हुए। इधर सबेरे पुजारियोंने पूछा फ़क़ीर साहब! क्या हाल गुजरा, उसने सब कहसुनाया उन्होंने जाय निजभोगके थालको सँभाला तो खाली मिला तबहीं से गोसाईं, लोग, घिनके मारे प्रसाद, नहींलेते तुलसीदल चरणामृतही ले लेते हैं॥

इति श्रीमच्छुक्कोपनामकपण्डितवरदेवीसहायकृतदृष्टांत प्रदीपिन्यांभक्तिनिबन्धेदशमःप्रदीपः १०॥

## एकादशः ११ प्रदीपः

### अजामिल का दृष्टांत॥

गतिं धत्ते हरिः प्रीतः स्मृतोऽनिच्छावशादपि। पुत्रं नारायणं स्मृत्वाऽजामिलो गातपरम्पदम्॥ १॥

प्रसन्नभये भगवान् अनिच्छा वशसे अर्थात् और के भरोसे करके भी याद किये गति देते हैं जैसे 'अजामिल, निज पुत्र नारायण को याद करके परम पद को पहुँचा (१) जैसे

अजामिल, एक महापापी था, उसने अवस्थाभर में कभी भी नारायण,का स्मरण पूजन सेवनादि नहीं किया। निदान निज मरने के समय अपने पुत्र 'नारायणहीको, अरेबेटा नारायण!, ऐसे याद किया तो वह परमपद को प्राप्तहुआ। इस पर यम-राजके दूतभी उसे पकड़ने को आयेथे पर वे विष्णुजी के दूतोंसे हार लाचारहो चलेगये यह इतिहास 'भागवत 'षष्ठ' स्कंध में विस्तार से कहाहै ॥

इतिश्रीशुक्लदेवीसहायकृतदृष्टान्तप्रदीपिन्यांभक्तिनिबन्धे
एकादशः प्रदीपः ११ ॥

## द्वादश १२ प्रदीपः ॥

### द्विजपुत्रका दृष्टान्त व० ॥

गतिं धत्तेऽप्युच्चरितो हरिर्भ्रान्त्यातुरो यथा। अरी लेरीति वै जल्पन् गतिमापद्द्विजाधमः ॥

भ्रांति से भी उच्चारण किये भगवान् गतिदेंतेहैं जैसे-मरने सू भयाभी खोटा-वेश्यागामीद्विज 'अरीलेरी, ऐसे कहता निश्चय गतिको प्राप्तहुआ॥ दृष्टांतजैसे एककोई वेश्यागामी ब्राह्मणथा, वह नित्य वेश्याके घरजाय तिससे रमणकरता था। एक दिन उसके पिता का श्राद्धथा तो वह न जासका। उस दिन श्राद्धकर ब्राह्मण जिमाये और कुटुंबियों को जिमाय निश्चिंत हो वेश्या के लिये भी थालमें भोजन लगाय रातको ले चला। अंधेरी रात थी एक भारी गड्ढेमें पैर फिसलगया, तो तिस मरन समय में उसने 'अरीलेरी, ऐसे उस वेश्यामें चित्त लगाकर कहा। पर दैवयोग से तिस 'अरी-हरी, सिरखे भ्रांति पद के उच्चारण करने से उसपर 'श्रीभगवान्, प्रसन्नहुये तो तिसीसमय तिसको-निज बैकुंठ पठाया॥

इतिश्रीशुक्लदेवीसहायकृतदृष्टांतप्रदीपिन्याम्भक्तिनिबन्धे
द्विजपुत्रवर्णनंद्वादशःप्रदीपः॥१२॥

## कार्पण्यनिबन्धस्तृतीयः।

तत्र नियमदृढत्वप्रसंगे दमड़ीचीदृष्टान्तमाह।

नियमो नितरां फलप्रदोऽदानस्यापि फलं ददाति हि। दमड़ी हरिणापि याचिता ननु दत्ता दमड़ी दमड़ चिना ॥ १ ॥ पुनराह हरिः सुहर्षितोवृणुमांकामदुघंत तोऽप्ययम्। दमड़ी भयतो विशंकितो दमड़ीमेवहरेर्व्य मोचयत् २ ॥

(भाषार्थादि)भक्त,प्रायःकृपणभी होजाते हैं इससे कार्पण्यघ्न निबंधकहते हैं तिसमें दृढ़ नियम के प्रसंगमें 'दमड़ची-सेठ, का दृष्टान्त न दानकरनेका भी नियम, निरन्तर फल देताही है जैसे एकसेठको न देनेका नियम था वह भाइयों करके गढ़से खेदा एक तीर्थ पै न्हानेको गया। वहांसबसे पीछे एकान्त स्नानकिया तो आप श्रीभगवान् ने तिससे ब्राह्मणबनके एक दमड़ी, मांगी उसने देनेकही घरमें आय बैठा भगवान् पिछाड़ी २ आये निदान वह झूठेही मरभीगया लोग उसे फूंकने को गये निदान आगदेनेकी तयारी भई तब प्रसन्नहो भगवान् ने कान में कही कि वरमांग, तब बोला कि ये दमड़ी छोड़देओ इससे कुछ भी नियम हो पर फल देताही है इति १। २॥

### द्वितीयप्रदीपः।

जाट, ब्राह्मण का दृष्टान्त॥

नियमात्संतुष्यते यथा विभुरर्चादिवसात्तथानच। द्विजजाटकयोर्यथाद्वयोः पयसायष्टिकयाशिवंजुषोः २ ॥

विभु ईश्वर, जैसे नियम से संतुष्टहोते तैसे अर्चनआदि से प्रसन्न नहीं होते जैसे 'द्विज-एक ब्राह्मण शिवजी पै दुग्धनित्य चढ़ाताथा और जाटके शिवालय पर लट्ठमारने का नियम था

एक दिन राहमें नदी भारी चढ़रहीथी तहां ब्राह्मण देवता तो नदी देख उसी में "पयःपृथिव्यां" पढ़दुग्ध चढ़ाकर चले आये और वह जाट आया उसने नदी के पारहो लट्ठजायही मारे तो तिसपर शिवजी महाराज प्रसन्नहो (वरंब्रूहि) वरमांग, ऐसे बोले इससे नियम पक्कालेना चाहिये इति द्वितीय प्रदीपः २॥

## तृतीयप्रदीपः।

### कृपणवैश्य का दृष्टान्त।

दत्त्वापि दानंतु मिषेणकेनचित् पुनर्भृशंतु कृपणोऽनुतप्याति। हिरण्मयां गांच मृदोपलेपितां दत्त्वावणिक् तत्र करौ ममर्दह ३॥

कृपण, किसी मिससे दान देकर भी फिर पश्चात्ताप करता है जैसे एक कृपण वैश्यने कुछ भी कभी दान नहीं कियाथा निदान मरनेके समय उसकी स्त्री ने कहा कि तुम वैतरिणी "गऊ का दान तो करदेओ" उसने कहा "उसमें भी बीस रुपैयालगैं,, निदान उसने सुवर्णकी गऊवनाय उसपर मिट्टी लपेट दिखाकर कहा "यह तो देदेओगे उसे देखतेही प्रसन्नहो सेठने दान करी प्राणान्त भये नदी पर वही मिट्टी से सनीगऊमिली सेठजी बड़े प्रसन्नहो पूंछ पकड़के पारहोनेलगे वीच में पहुंचतेही उसकी मिट्टीहटी तब तो तिसे सुवर्ण की देख सेठजी पछता २ कर हाथ मसलनेलगे पूंछ हाथ से छुटी अधबिचमें ही गिरपड़े कृपणों की यह दुर्गति है इतितृतीयप्रदीपः ३॥

## चतुर्थप्रदीपः।

जहाति सर्वान् गुणिनो गुणान् खल आरोपयेच्चाथ तु दोषसंचयम्। पपात वृक्षात्तु फलं प्रतोटयन् पृष्टः कथायां सतु दोषमाक्षिपत् ४॥

खल जो कृपण सो गुणवाले के सब गुणों को तो त्यागदेता

और उनमें बहुत से दोष लगा देताहै जैसे सूंजी सेठफल तोड़-ता तो वृक्ष से गिरा और पूछा गया तो कथाही में दोषलगाने लगा (दृष्टान्त) एकमूंजी सेठकी स्त्री कहा करती कथामें जाओ-वह नहीं जाताथा निदान एकदिन लोग उसे गढ़से पकड़ लेगये वहां पण्डितजी ने 'कल्ह कथा पूर्णहोगी, कहा यह सुनतेही दि-शाकी शंकालगगयी उठके चला आया दूसरे दिन भेट पूजामें यादहुवा कि सेठजी आयेभीथे बुलाने चाहिये फिर दोमनुष्यगये दिशाकानाम लेके छिपरहा स्त्री ने बतादिया मनुष्य, बांध जक-ड़करलेचले राहमें विचारा कुछ भेट पूजाभीलेनी कम से कम एकनारियरतो लेना चाहिये फिर लोगोंसे कहा भेट तो लेआऊं उन्होंने छोड़ा तो घर को न जाकर बगीचे में हीं तोड़ने गया वह वृक्षऊंचाथा दीवार पै चढ़के तोड़नेलगा फल हाथ में आया टूट न सका निदान खैंचते २ पैर छूटगये सेठजी लटकते रहे निदान एक पीलवान हाथी लिये आताथा उसे देख पुकारा कि तू हाथी नीचे लगाव पच्चीस रुपये दूंगा उसनें लगाया तो वह हाथी भी कुछ नीचारहा फिर उसने पीलवान से कहा तू भी खड़ाहोजा तो पैंतीस दूं वह खड़ाहुआ दैवयोगसे वह हाथी हट गया बोझ भारीहुआ पीलवान सेठजी, दोनों नीचे गिरे वह उठ हाथी पै चढ़चलागया सेठजी की कल २ ढीलीहोगई। वे लोग इसे देखते २ बागमें आये, पूछा आपको किसने मारा तो बोले मोको या कथाही ने मारयो है इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

## पञ्चमप्रदीपः।

कथामृतं ह्यपि विषवत् प्रतीयते दुर्बुद्धेर्हरिविमुखा-न्तरात्मनः। गतःकथां कथमपि जाययार्दितः सुष्वापा स्वादितवान् पतत् श्वमूत्रम् ५॥

हरिसे विमुख अन्तःकरण जिसका ऐसेदुर्बुद्धि कृपणकोकथा-रूप अमृतभी विष समानजान पड़ता है। जैसे कोई कृपण, स्त्री

करके खेदाभया, कथामें अमृत वर्षताहै, इस लालचसे एकदिन कथामें गया वहाँ दो श्लोक सुनतेही नींद आई कुत्ते ने आकर मुंहमें मूत मारा चेतहुआ तो गालीदेनेलगा कि यह तोमहाखारी है इस्से मेरा मुंहभी बिगड़गया सब लोग हँसे इति पञ्चमः प्रदीपः ५॥

## षष्ठप्रदीपः।

अत्यन्तकृपणतायां जातायां जायते समौदार्यम्।
दूरीकृताकृपणता महात्मना कोटिदानेन ६॥

जब अत्यन्त कृपणता होतीहै तो फिर उसी से उदारता भी उत्पन्न होजातीहै जैसे महात्मा हरिने कृपणको कोटि गुणाफल पानेका विश्वासदेके उसकी कृपणता दूरकी (दृष्टांत)एकसेठका मुनीम, मथुराजी में व्यापार करनेगया वहाँ चौबेलोगोंसे सुना, एक गुनादेय करोड़गुनापावे तो मुनीमजीने इसव्यापारको मातवर समझकर सबधन चौबों को बांटदिया खालीहो घरआये। कुछधन और मिला उसेभी भुगताय आये निदान दरिद्री होगये कुछधन ससुरालवालोंने दिया वहभी तहांही ठिकाने लगाया फिर मुंह न दिखासके वहांही निवासकिया एकदिन फल छीलते चाकू हाथसे छूटकर नीचे गिरा वहां पारस-पत्थर गड़ाथा उससे वह सुवर्णका होगया तब तो मुनीमजी बहुतसा लोह खरीद लाये औ सुवर्ण बनाय२भरवाकर जिन२ के यहाँसे धन आयाथा वहाँ२ भिजावाने लगा इति ६॥

इतिश्रीशुकदेवसहायकृतदृष्टांतप्रदीपिन्यां
कार्पण्यनिबन्धस्तृतीयः ३॥

## अथ औदार्यनिबन्धश्चतुर्थोयम्॥

तत्र मंगलरूपउदारजनकीर्त्तनश्लोकः।

रामं रामद्वयाढ्यं कुलवरसहितं सीतयासंयुतं च
कृष्णं कृष्णासमेतान्निगमनिगदितान् पाण्डुपुत्रान्सपु

त्रान् ॥ कुन्तीं कर्णं सुवर्णप्रतरणशरणं कौरवान्दानगीतान् प्रह्लादं ह्यप्रमादं बलिमथनिखिलान्दैत्यपुत्रान् सुदातॄन् १ मांधातृवेणुसगरांश्चभगीरथादीन् याया तिनाहुषमुखान्कृतदानयुंजान् ॥ उष्णांशुशीतकरवंश विशेषमुख्यान् राज्ञोनमस्कृतिमहंविदधेविवक्षुः २ ॥

ऐसे दानियोंको नमस्कार करके दानी भक्तजनों की दृढ़ता दिखाते हैं जैसे—

सद्दानाद्दीयमानाद्धरणरणसमाज्ञोपतेद्दानवीरः । सेवासंग्रामधीरो जित् निखिलरिपुर्यः शुनाशीर तुल्यः ॥ तद्योधाभूत्कबीरःपुनरभवदसौ शाजहांपूर्वगीरो यःसंशुश्राववाचं महिषनिगदितां तारमार्गेण तूर्णम् १ ॥

दानी शूरवीर, दानरूप रणभूमिमें गिरतानहींहै कैसावो जो सेवारूप संग्राम में धीर, औ संपूर्ण शत्रुजीतने वाला ऐसा और जो ऐश्वर्य्य में इन्द्रके समानहोवे। जैसे तिस संग्राम के मुख्य योधा भक्त"कबीरजी"भये। फिर 'शाहजहां-बादशाह'भया जिसने तारकी, राहसे भैंसेके मनोरथको समझ के सफल किया दृष्टांत शाहजहां-बादशाह, ने सबको मालूम किया कि जिस किसी के पास अर्जी देनेको दाम न हो वह इस तारको हिलादेवे मैं उसके अनुसार उसका मनोरथ जान सफल करूंगा। किसी काल रातको अचानक तारहिला बादशाहने सिपाहीभेजा उसने आकर कहा कोई आदमी नहीं है केवल एक भैंसा, तो खड़ा तारसे खुजारहाहै बादशाहने तुर्त उस भैंसेको मँगाया और भारी देख उसकी पखाल तौलायी तो उसमें सातमन पानी निकला तब से नियमकर दिया कि साढे तीन मनसे अधिक कोई भी लादने नहीं पावे इति १। कबीरजी का पुत्र कमालहुआ तिसकी भक्ति निष्ठा, दूसरे निबन्ध में वर्णन होचुकी है उत्पत्ति ऐसे

भई कि किसी समय, बादशाहने एक मुर्दा नदीमें वहताथा उसे मँगवाकर कहा कि इसे जियाओ कवीरजी बोले आपही जिवावें दुनियांके बादशाह हैं तबकही यह काम करामातकाहै इसेआपही करसक्ते हैं यहसुनकबीरजी ने उसे 'उठ' ऐसाकह जिवाय उठाया तब बादशाहने अचरजमान " कमालकिया' ऐसाकह तब उसे "कमालही कहकर पुकारा तभी से वह " कमाल ", ऐसे विख्यातहुआ इ० ॥

वलेः समानो,न हि कोपि दानवान् त्रिविक्रमायाशु जगत्त्रयन्ददौ । स्वयं तथासौस्थितवान्रसातले शिरस्य थाधायपदं महात्मनः २ ॥

राजाबलिके समानदानी कोई नहीं भया जिसने भटही श्री भगवान्को तीनलोक देदिये और आप तिन वामनजीका चरण शिरपै धराकर पातालमें रहा तिसपर प्रसन्नहो वामनजी भी तहांहीं द्वारपैरहे यह वृत्तांत बहुधा प्रसिद्धहै इति द्वितीयप्रदीपः २

कर्णस्यापि तु दानंप्रदीयते दानिनां समाधानम् । भारस्वर्णवितरणम्प्रकरोद्योसौ जगत्यसमम् ३ ॥

कर्णकाभी दानदेना, दानियोंका समाधान कियाजाता है। जिसने भार प्रमाण सुवर्णका दानदिया जो जगत् में असमान अर्थात् सर्वोपरिहै ॥

योरन्तिदेवोर्चितदेववृन्दः सर्वंजगद्योजितवान्स्व दानात् । योदात्सदन्नम्प्रविभज्यभूय आपुल्कसेभ्योव्रत कर्षितात्मा ४ ॥

जो देव समूह पूजनेवाला 'रंतिदेव' भया उसने निजदान देने से सब जगत्को जीता जो बहुत दिनका व्रतीभी भूखके न वश होकर श्रेष्ठ अन्नको विभागकर२ के चांडालतक दान करतारहा इसका इतिहास श्रीमद्भागवतमें प्रसिद्धहै ४ ॥

न संकुचंतिप्रददाथिनो ये दारिद्र्यकालेपि द्विजार्थ दाने । मृदर्घ्यदातापि धनं ददौ यः कुवेरसंप्रेषितमत्र गाथा ५ ॥

जो दानी हैं वेदरिद्रपन समय में भी ब्राह्मणके अर्थ धनदेने में संकोच नहीं करते, जैसे मृत्तिकाके पात्रसे अर्घ्य देने वाले भी राजा 'रघु' ने ब्राह्मणको धन दिया उसके पास कुवेरजी ने अपने परचढ़ाई करता समझ के वहुतसा सुवर्ण भेजदियाथा ये वृत्तांत 'रघुवंश-काव्य' में व० है इ० ५॥

जाता उदारा वहवोऽत्र भूमीतले महान्तो बहुदानवन्तः । तेषांसमस्तानि विचेष्टितानि दृष्ट्वा समह्यानि यथाक्रमेण ६ ॥

इस भूमितलमें ऐसे वहुत से उदारदानी होगये हैं तिनके समस्त कर्तव जहां तहां प्रसिद्धही हैं यथायोग्य देखके समझ लेने चाहिये ६ ॥

इतिश्रीमच्छुक्लदेवीसहायकृतदृष्टान्तोद्दीपिन्यामौदार्य निवन्धश्चतुर्थोऽयम् ४॥

वधिरनिवन्धश्चतुर्थः ४॥

वाधिर्यं दुःखदं लोके महद्दुःखप्रदायकम् । यथा वधिरविप्रस्य सकुटुम्बगृहक्षतिः १ ॥

इस संसारमें वहिरापन, महा दुःखदायी होताहै । जैसे वहिरे ब्राह्मणको कुटुम्वसहित हानि अर्थात् विगाड़होनेसे दुःख भया । (दृष्टांत ) एक वहिरा 'ब्राह्मण' था वह नयावैल लेकर खेतवाहने को गया, वहां एक ज्योतिषी ग्रह देखके पंचांगसे आशिशदेकर फल वताने लगा वह कुछ न समझा और मनमें पछताता रहा कि मेरे वापने इतना कर्ज करलियाथा? जव उसने आशीशदेय कुछ मांगनेको हाथ पसारा तो उससे यह वोला कि मैं नहीं जा-

नताथा मेरे शिरपर इतना कर्ज है अब आप ये दोनों बैल तो लेजाइये बाकी फिर देकर फारकतीलेवेंगे। उसने शोचा सहज में माल हाथ लगा, बैल लेकर चलदिया। उधर उसकी मा, भोजन लेकर पहुँची वह उदासहुआ बैठा था खाते उसने कहा कि क्या खाना पीना है बाप तो हमें कर्जेमें फँसागया शाहूकार अभी यहीं लेकर आय बैठाथा बैल लेकर गयाहै। वहभी बहिरी थी कुछ न समझके पुकार बोली बेटा! मैं जानतीहूं तेरी बहूने तरकारी में नमक नहीं डालाहोगा उसकी निगह औरही होरही है मैं जाकर उसे बहुत धमकाओंगी। वह वहाँ बड़२ करती पहुँची। उधर उसने भी कुछ कपास चुराकर बेचीथी सो भी कुछ न समझके आपही पुकारउठी मैंने किसकी कपास चुराईहै कौन रांड कहती है तू दुनियाके कहने से मुझसे लड़ती है निदान तीनों बहिरेथे उनकी यह दुर्गति होती भई॥

इतिश्रीशुकदेवीसहायविरचितदृष्टांतप्रदीपिन्यां बधिरनिबंधश्चतुर्थः ४॥

## आलस्यघ्ननिबन्धःपञ्चमः ५॥

तत्र मंगलरूपमाद्यश्लोकमाह॥

पूर्वं सुखप्रदायाथ पश्चाद्दुःखप्रदायिने।
आलस्यायनमस्कुर्मोमित्ररूपायशत्रवे १॥

जो पहिले तो सुख देनेवाला अर्थात् प्रथम तो प्यारालगे और पिछाड़ी दुःखदायी होजावे ऐसे मित्रका रूप किये अंतः शत्रुभये आलस्य को दूरसे नमस्कार है १॥

नहि हानिं निजां सम्यग् जायमानां प्रपश्यति। महालस्यवशीभूतो यथा मात्रोदितोऽलसः॥ १॥ हा मातइति माखेदं कथितोऽसौ जगादह। कथं कृतावत्सहेति जानेकार्यविवक्ष्यसि॥ २॥ इदानीं तव भार्य्येयं

कष्टात्कष्टतरंगता । उत्तिष्ठानयसद्वैद्यं येनतज्जीवनम्भवेत् ३ ॥ आलस्य उवाच ॥
अहं मातः सुखासीनो गंतुं शक्तो न कुत्रचित् । म्रियमाणादृश्यतेचेत्सवैद्यः किंकरिष्यति ॥ कथं वृथा तत्सकाशं प्रेषयस्यपि सुव्रते १ ॥

आलस्य से भगवद्भक्ति नहीं होती इससे आलस्यघ्न निबंध कहतेहैं॥जो आलस्यके वशहै वह होतीभई निजहानिको भी नहीं समझताहै॥दृष्टान्त॥ जैसे आलसी, की माता उसे पुकारी १ तो इसने खेदसे 'हायमा'कहके समाधान किया तब वह बोली बेटे ! हाय क्योंकरी वह बोला मा ! मैंनेजाना किसी कामको कहेगी २ वह बोली, भाई ! इससमय तेरी बहूको अत्यंत खेदहोरहाहै । तू उठ किसी अच्छे वैद्यकोला जिससे उसका जीवनहोवे ३ इतनी सुन आलसी 'आः२' करता बोला हे मा ! मैं सुख से सोरहा मेरी कहीं भी जानेकी सामर्थ्य नहीं है । और जो वह मरतीही दीखती है तो फिर वहवैद्य बेचारा आकर क्याकरैगा : मुझे उसकेपास भेजके क्यों वृथा हैरानकरती है । आलसियोंकी यहगतिहै ।१इति

केनचित्कथितभृत्य ! दीपोनिर्वाप्यतामिति । प्रत्युक्तमक्षिमीलस्व स्वयमेव भविष्यति २ ॥

किसीने सेवकसे कहा अरे दीपक बुझादे उसने उत्तर दिया कि आंखें मीचलीजिये आपही होजावेगा । फिर उसने कहा कि बाहरजादेख मेहवर्षताहै या नहीं उसने कहा वर्षताहै वह बोला तू तो यहां पड़ा, कैसे जाना वर्षताहै नौ० बो० बाहर से बिल्ली भीगी आई इससे जाना वर्षताही होगा इससे आलस्य से सदा बचते रहना चाहिये २ ॥

प्रसंगान्मत्तनिबन्धः ६ ॥

नहिमत्तो विजानाति वस्तुस्वंविस्मृतंमहत् । अश्वं विस्मृत्यभृत्योन गतोवासेबुधोऽसः १ ॥

अब प्रसंग से ' मत्त--नशेबाजों का निबंध कहते हैं ॥

मत्त जो नशेवाला है वह अपनी भूलीभई भारी वस्तुकोभी नहीं सँभालता। जैसे स्वामी, सेवक, दोनो मत्तथे घरसे चले राहमें ठैर के खान पान किया चलन समय घोड़ा वहांही बंधा भूलके चलदिये राहमें सँभालकरी कि कुछ भूले तो नहीं हैं तो विचार करालिया कि अफीमका डिब्बा, भांग, तमाखू, पोस्त वगैरा सब हमारे पासही हैं ज़ाहिरमें तो कोई चीज ऐसी रही नहीं जिसे भूल चलेहों। यों कहते जाय सरायमें उतरे मैहत-रानीसे कहा खाने दाने घास पानी का जल्द बन्दोबस्तकर उसने कहा कि कुछ आदमी पिछाड़ी आते हैं या घोड़ा आप कुछ दूर छोड़ आये हैं नौकर तो आपके साथही दीखताहै। इतनी सुनतेही आंखखुलगई नौकरको साथले उलटेही घोड़ालेने चले ।।१ इति

कालं नाप्यनुबुध्येत मत्तमूढोगतं बहु । स्त्रियावलं वितः स्थूणे दृष्टो प्रातस्तथाविधः २ ॥

उन्मत्तमूढ नशेमें चूर, बहुत बीते कालको भी कुछ नहींस-मझता। जैसे एक पोस्ती ने स्त्री से कहा 'खाटविछाती जाना, यह कहकर दोखूंटियों को पकड़ सहारा लेके खड़ाहोगया। वह खाट विछाकर दूसरे घरमें रतजगाकरने चलीगई निदान सवेरा भये वह घरमें आय धराढका करनेलगी तो खुड़का सुन पोस्ती जीकी आंख खुली तो उसी ध्यानमें कहा कि 'खाट बिछाई भी, यह सुन उसने ऊपर को देखा तो वहाँहीं उसीतरे खूंटियों के सहारे लटकरहे हैं रोकर कहामेरी किस्मत फूटगई ॥ २ इति-

मत्तस्य जायते प्रायः स्वपरादस्मृतिःखलु । स्वयं हिपतितो विष्ठा गर्त्तेपश्यच्छसेवकम् ३ ॥

नशेबाजको अपने पराये की कुछ भी सुधि नहीं रहती जैसे आपही तो नशेके झोकमें दिशा बैठते पायखाने में गिरपड़े और नौकरसे पूछते है अरे देखतो यह क्या गिरा बड़ाभारी खुड़का भयाहै नौकर बोला कोई बिल्ली इल्ली गिरी होगी फिर बोले अबे देखता नहीं है निदान आकर देखे तो आपही पड़े सड़ते है। उसने पुकारा कि आप कहाँ हैं यह तो बताइये तब आंखखुली आह् २ करते खड़ेहुये बड़ी चोटलगी इलाज होनेलगी ३ इति॥

नहि भंगादिमत्तोपि जानाति निज चेष्टकाम्। यथा मिश्रोवनान्नग्नो वत्सनंके निधायच १ आजगामपुरेहष्टः पृष्ठोपि बुबुधे न सः। पत्न्याऽथभर्त्सितो भूय आत्मानंज्ञातवानसौ २॥

भंगबाजोंका दृष्टांत॥

भंगड़, भी अपने शरीर की चेष्टाको नहीं जानता। एक मिश्र जी निज गौको वनमें लेजाया करते वह वहांहीं ब्याई तो आप बच्छेको गोदीमें सँभाये नगरमें आये राहमें इनकी धोती खुलके गिरपड़ी कुछ ध्यान नहीं रहा पुरवालोंने इन्हें नंगे देखके पूछा 'मिश्रजी! आज क्या डौल डालहै किस रूपसे आते हैं। तो ये कोपकर बोले अच्छा डौलहै, नारायणके गऊ ब्याई है, बच्छा लिये आनंद रूपसे चले आते है तुम किसीको देख नहीं सक्ते। आगे और भी लोगोंने इन्हें अद्भुत रूप देख पूछा आज अच्छे दर्शनभये साथ २ पुकारते बालक बूढ़े सभी जातथे और ये उन्हें हँसी समझके लगे गालियाँ बकने। निदान गाली देते२ घर पै आये स्त्रीने गैला सुन बाहर आय देखतेही कहा आज क्यारूप है तो पुकारे रोड़ तू भी तो दुनियां मेंही है सब दुनियां मेरे गैल लगी, तो तूभी सही अब सब को धताहै फिर कहा निपूते धोती कहां, तब तो मिश्रजी नीचेकी ओर झुकके देख बहुत लज्जित हुए और स्त्री से बोले ल्याव ओढ़नाही ल्याव इति ४॥

क्वचिन्मत्तस्यसिद्धत्वाद्द्रव्यप्राप्तिरपिस्मृता। धत्तूरमोदकान्कृत्वा प्रस्थिताभ्रातरःपुरा १ चौरैर्विलोकितामार्गे विधिवद्धृतपादकाः। तेषामन्योन्यमभवत्प्रेमतो विषभक्षणम् २ चौरामतागताभूमिं तद्धनं तैर्न्यनायिवै। द्रव्येच्छाचेद्भवेद्यस्य सधत्तूरंनिषेवति ३। ५॥

कहीं २ मत्तमें सिद्धाई होने से द्रव्य प्राप्ति भी होजाती है। जैसे नारनौल रावके महोलेके ब्राह्मण चारभाई धतूरा खाते थे उनकी स्त्रीकहती कमाने जाओ वे धतूरे के लड्डू वना घरसे चले राहमें उनको ठगमिले माल उनके पास वहुत था पर लोभ से 'इनकाभी जो हो सो लेलें, यहविचारके इनसे पालागन कर पास वैठगये और अपने पाससे ज़हरके लड्डू निकालकर इनको दिये तव तो इन्होंने भी वह अपनामहाप्रसाद इतनेकोसादे स्वभावसे दिया उन्होंने प्रसाद जान खाय तो लिया पर पचावे कौन, वेहोशहो गिरे इनको जो,सुमति आई, उनकामालसे लदा भया घोड़ाथा उसे हांकलाये घर आकर आवाज दई कि कमाय आये माल देखतेही सबोंने वडाही आश्चर्य किया। उनका यह वचनहै द्रव्य चाहै तो धतूरासेवै इति पंचम प्रदीपः ५॥

इतिशुक्लदेवीसहायकृतदृष्टान्तप्रदीपिन्यांषष्ठमोमत्तनिवंधः ६॥

## मूर्खनिवन्धः ७॥

तत्रादौ मौढ्यघ्नं मूर्खचतुष्टय निवद्धं दृष्टान्तमाह॥

चत्वारोऽत्यंतमूर्खा गहन.वनगता भूय आह्लादवन्तः कश्चिद्वृद्धःस्वमौलिं पदपतनभियाऽधश्चकारैकवारम्॥ ते तं मत्वा प्रणामं चस्थविरवरकृतं कहिवादंविचक्रुस्तत्रत्वागत्यतूर्णं च निज निज कथां वर्णयांचक्रुरेवम् १॥

चार अत्यंत मूर्ख, बागमें सैरकरते आपसमें हँसी करते चले जातेथे । किसी वृद्धने 'पैरन अखटजावे, इस विचारसे अपने शिरको एकबेर नीचा किया तो उन्होने समझा इस वृद्धने हमें प्रणाम किया फिर भी आपसमें 'मुझको किया २, कह २ के झगड़नेलगे तो उसी बुड्ढे के पास आकर पूछा वृद्धजी तुमने किसको किया बतादीजियेगा । बुड्ढाथा पुराना जानलिया कि ये निरे मूर्खही है उत्तरदिया कि मैने तुममें बड़े मूर्खको प्रणाम किया है तब तो 'मै बड़ा मूर्खहूं २, ऐसे कहके झगड़नेलगे तब वृद्धने कहा तुम अपनी २ मूर्खता वर्णन करो तब वे राजीरजाँहुए १॥

एकस्तेषां मूर्ख आसीद्द्वितीयो मूर्ख स्वामी मूर्खनेतातृतीयः । योसौतूर्य्यो मूर्खमूर्खस्तुतेषां संवादोऽयंकीर्त्यतेऽमौढ्यहेतुः २ ॥

एक तो उनमें 'मूर्ख' था, दूसरा 'मूर्ख' स्वामी और तीसरा 'मूर्खनेता' चौथा जो मूर्खथा वह 'मूर्ख मूर्ख' अर्थात् मूर्खोंमें भी अत्यंतही मूर्खथा अब इन चारो का संवाद है २ ॥

मूर्खउवाच ।

अहं हि पूर्वं श्वशुरालयं गतो महोत्सवं द्रष्टु मनाः सुभोज्यवत् । सायंगतस्तस्यपुरे विचिंतयन् स्फुटंन रात्रौ ममभूषणादिकम् ४ जातो निवासस्त्वथसाधुवेश्मनि समर्पितंतत्रविभूषणादिकम् । तत्रप्रसुप्तस्तु यथा कथंमुदा परन्तु निद्रां न हि लब्धवान् क्षुधा ५ ॥ तयार्दितोहमुत्थाय याचनन्नं गृहे गृहे । न लब्धमन्नंकुत्रापि ततःश्वशुरसद्मनि ६ गत्वा मुहुः कथितवानन्नं मे दीयतामिति । मत्कनिष्ठाश्यालकातु स्वन्नमादायभूरिशः ७ भो याचक गृहाणान्नमित्यूचेह्यनुकम्पिता ।

अहं तु तदभिज्ञाय महद्वैधर्म्यमात्मनः ८ विलोमपद्भ्यां त्वरितं विद्रुतस्तेन लज्जितः । एवंगच्छन् पृष्ठतोहि पतिभूमिश्वगर्तके ९ निःसारितोयत्नतस्तैर्भूयोभूयोविगर्हितः । तद्दिनादेव श्वशुर गृहंनगतवानहम् १० अतोहंमूर्ख इत्येवं प्रसिद्ध कथितं तव।

मूर्ख कहनेलगा हे वृद्ध ! पहिले मैं अपनी ससुरालमें गया, वहां भारी महोछाथा। तो मैं सांझ हुए तहां पहुँचा तो विचारा कि रातको मेरे वस्त्र आभूषणोंकी प्रकट शोभा न होगी। तो एक साधुकी मढ़ैयामें डेराकिया उसने सजा देख मुझको ठहरालियां वहा मैं रातको आरामसे सोया पर रातको मारे भूखके नींद नहीं आई। तब व्याकुल हुआ मैं उठके घर २ अन्न मांगता अपने ससुरके घरही चलाआया। तो मेरी साली मेरे लिये बहुतसा अन्न लेकर 'ले मँगते भीखलेव, ऐसेपुकारती आई मैं अवाज पहिचान उलटे पगोंसे लज्जितभया पिछाड़ी सरका वह आगे २ सरकती चली आई निदान एकभारी गढ़ाथा उसमें मै गिरा लोग दीवा ले आये मुझे निकाला पहिचानलिया तो सबोंने मुझे लानतें दईं तिसी दिनसे मैं ससुराल नहीं गयाहूं और 'मूर्ख' मेरा नाम भया इति प्रथम प्रदीपः १ ॥

## मूर्खस्वाम्युवाच ।

अहमपि श्वशुरालयकं गतः प्रकथितो बहुधापि न भुक्तवान् । अथ निशि क्षुधया परिपीडितो बुभुज आशु सुरक्षित मोदकम् २ तदुद्घाटनशब्देन श्वश्वास्म्यहं निरीक्षितः । कपोलस्थेन तेनाहं मूढवैद्य चिकित्सितः ३ भिन्नः शलाकयागंडो द्वितीयोऽथापि शंकया । मोदकः पतितो भूमा नहमासं प्रगर्हितः ४॥

दूसरा 'मूर्ख स्वामी, बोला वृद्ध ! मैं भी अपनी ससुरालगया

था तहां लोगोंने पूछा खानेको खाइये मेरे मुँहसे निकलगई 'खाकर चलाथा, फिर तो उन्होंने मुझे बहुतही अड़ाया पर मैंने भी समझलिया कि 'जायलाख रहैशाख, अब खाना ठीक नहीं निदान बेचारे कह २ के चुपहोरहे सोया पर चारपाईपै भूखके मारे चकनहीं पड़ी उठके धरा ढका सँभाला तो खुड़का सुनके सास जगउठी उसने मुझे चोरजानकेपकड़ा मैंनेएक लड्डूलेके मुँहमें लगालियाथा पर वह फूट न सका मुँहमें रहा निदान उन्होंने जान भी लिया पूछतेरहे मैं 'हूं हूं' करतारहा।तब उन्होंने जाना इनका मुँह बंद होगया तो वैद्य बुलाया उसने गाल फूला देख वे रोक नस्तर मार दिया खूनकी धार गिरी पर मैंने भी उस समय ऐसी बुद्धिमानी कियी कि वह लड्डू इधरसे उसतर्फ करलिया तब वैद्य बोला यह रोग इधर आगया अबके नस्तर में सोफ गिरजावेगा, यह कह उस निर्दयी मूढ, वैद्यने देख यह मेरा दूसरा गाल भी फाड़डाला बस, फिर लड्डू निकल पड़ा लोग हँसने लगे मैं शर्माकर भागा इति द्वितीय प्रदीपः २॥

## मूर्खनेतोवाच।

मूर्खनेतात्वहंख्यातो हर्षे दुःख प्रकारकः। उष्णीषपतनात्कूपे बुद्धःश्वश्रु गृहं गतः १ दृष्टोऽनावृतमूर्द्धाहं पृष्टः केनापिनैवहि। दृष्ट्वातान्रुदतः सर्वान् रुरोदंवक्तथाप्यहम् २॥

मूर्खनेता बोला वृद्ध! मैं भी अपनी ससुरालगया तो राह मैं कुयेंके सहारे सोया नींद आगई। तो! बेचेत सोतेहुए मेरी पंगड़ी उतरके कुयेंमें गिरपड़ी फिर मैं भड़भड़ाकर झटसे उठा तो दिन थोड़ा रहगया था चलदिया ससुरालके पास पहुँचा तो पहिलेही सासुरेकी नाइन मिली उसने मुझे पहिचान नंगेशिर देखके समझलिया कि बीबीजी मरगईं इसीसे ये नंगेशिर चले आते हैं। बस उसने जाय घरपै कहदिया लालाजी नंगेशिर बी-

बीकी बदखबरी सुनाने आते हैं, यह सुनतेही वहां रोना पीटना पड़गया, मैं पहुँचा तो उन्हें रोते देख मैं भी रोने पीटने लगा खूबही शिर पीटा, निदान हारके उन्होंनेही पूछा कि जो हुई सो परमेश्वर की मरजी पर आप तो अच्छेरहे। तब मैंने पूछा आप के यहां तो कुशलहै, उन्होंने कहा यहां तो सभी कुशलहै पर आप नंगेशिर आये इससे जाना बीबी मरगई इसीसे हम रो पीटरहे हैं यह सुनतेही मैंने शिर सँभाला तो होश हवास भूला वहांसे भगा तबसे आजतक फिर ससुराल नहीं गयाहूं। इति तृतीयः प्रदीपः ३ ॥

मखं मखउवाच।

अहं पुरा राजमते स्थितोऽभवं लब्धं ततस्वं च महद्व्ययीकृतम्। वृद्धा विवाहं ममकारयत्त्वपि प्रादि सुतानां प्रशशंस हर्षिता १ श्रुत्वैवाहं पुत्रजन्म जन्मसाफल्यदं मम। प्रादां दानं द्विजादिभ्यो सुतसौख्यमवाप्तवान् २ कियत्काले गतेचाहं जातो राज्ञा निराकृतः। ततस्तामब्रुवं वृद्धां सुतौ मेद्य प्रदर्शय ३ तत्र मामातुरं वृद्धे निवासय यथासुखम्। इत्युक्त्वाहं तयासार्द्धं गतो दर्शनलालसः ४ कस्यचिद्धर्म्यनिकटे गतामामब्रुवीदिति। भवद्भार्य्या मयि क्रुद्धा दृष्ट्वातिक्रोधमाप्स्यति ५ अतस्त्वमेवान्तर्य्याहि स्वागतं ते भविष्यति। सुतौ तवांतिके चापि संनतावागमिष्यतः ६ इत्युक्तोहं गतः शीघ्रमुच्चैस्तौचाप्यबोधयम्। पुत्रौ श्रुत्वा गतौ तत्र सन्नतौ मत्समीपतः ७ अहं तेभ्योऽददंचाऽथ भक्ष्यभोज्य मनुत्तमम्। तौ गत्वा मातृसान्निध्यं दर्शयन्तौ परस्परम् ८ तया ज्ञातः स्वीयभर्त्तुर्मित्रोहं बहु लालितः। सुखं सु

तौ सुसंप्रीतावंकेकृत्वा स्थितोह्यहम् ९ आगतस्तत्पिता चापि मां नमस्कृतवानथ। अन्तः पप्रच्छ साध्वींतां कोऽयं नव्य इवागतः १० सापि श्रुत्वाभवत्तूष्णीं नाहं जानामितस्त्वतः।तवैवाऽयंकृतो मित्रो भविष्यति तथा स्मर ११ तत आगत्य तरसा पृष्टवान्मामतंद्रितः। कस्त्वं वा कुत आयात प्रब्रूह्यागमकारणम् १२ अहं कथितवान्सौम्य किन्न मांवेत्थ बान्धवम्। भगिनी भवदीया या सापिमह्यं विवाहिता १३ ममांकएतौ वर्ते ते भागिनेयौ तव प्रभो। श्रुत्वैवैतत्कटुवचः क्रुद्धो मां प्रदहन्निव १४ भृकुटीं कुटिलां कृत्वा क्रुद्धो मां प्राब्रवीदिति। किं दुष्ट! भाषसे मिथ्या वचो नैव विलज्जसे १५ कुतः किं मदिरा पीताऽथवा मत्तो मुमूर्षति। इत्युक्तोहं प्रकुप्तेन लज्जया विक्लीकृतः १६ अधः शिराः खनन् भूमिमवोचं न किमप्यथ। गृहीत्वा कर्णयोस्तूर्णं वृद्धो निष्कासितो गृहात् १७ अतो मूर्खेषु मूर्खोहं प्रथितः पृथिवीतले॥ इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

मूर्खों में मूर्ख अत्यंत अज्ञानी 'चौथा' बोला हे वृद्ध मैं पहिले राजका कामदार बहुत मन चढ़ाथा मैंने. बहुतसा द्रव्यकमाया खोया एक बुढ़िया ने कहा मैं. तुम्हारी शादी ठहराती हूं (१००० ) रुपये देवो मैंने देदिये कुछ काल में फिर आई कहा कि आपकी शादीहोही गईथी अब आपके दोलड़के हुयेहैं उनकी परवरिशकेलिये खर्च दिवाइये यह कहके और रुपये लेगई निदान हमारा काम बंदहोगया हम तंगहुये तो उसी बुढ़िया से कहा कि अब हम तंगहैं तू हमें हमारे कुनवेसे मिलादे अब हम वहांही सुखसे रहेंगे। तो वह बुढ़िया मुझको एक बड़े मकानके नीचे ले जाकर बोली कि बहूजी मुझसे नाराज होरही हैं मुझे देख और

क्रोधकरैंगी इससे तुमहीं भीतर चलेजाओ वहां पुकारना तो तुम्हारे दोनों लड़के पास आजावैंगे बस ? मैं चावभरा भीतर गया आवाज़दई सुनतेही दोलड़के आये मैंने उनसे प्यारकर उन्हें मेवा मिठाई दी वे लेकर अपनी माकेपासगये उसने समझा कोई मेरेपतिका मित्रआया है। फिर उसने मेरेलिये अतर पान दान भेजा मैंने 'अहोभाग्य कहके ग्रहण किया और दोनों लड़कोंको गोदमें लिये बैठाथा उससमय के आनन्दको मैंहीजानताहूं कहते नहीं बनताहै। इतने में उसका पति घरचलाआया उसने मुझे देखतेही प्रणाम किया और भीतरजाय के घरवाली से पूछा यह नयासा आदमी लड़कों को गोदमेंलिये बैठा, कौनहै। उसने कहा मैंने तो तुम्हाराही मित्रजानके इसकी खातिरकरी है आप निश्चय करलीजिये तो उसने आके मुझसे धीरेसे पूछा कि मैं आपको पहिचानता नहीं आप मुझे बतलादीजिये। तो मैं झटसे बोलउठा कि अजीसाहब ? आपने मुझे नहीं पहिचाना मैं आपका रिश्तेभाई 'बहनोई, हूं आपकी बहिन मुझको व्याही है और ये दोनों आपके बहनजे हैं। यह सुनतेही उसने आंखें चढ़ाकर दांतपीसकर मुझसे कहा 'कहां का पागलचलाआया चल यहां से नहीं इतने जूते लगैंगे कि बालखोपड़ी पर न रहैंगे। यह सुन मेरेहोश बिगड़े तो मैं नीचा मुंहकिये जूता वहांही छोड़के पत्ता तोड़भागा फिर कभी उसगलीकी तर्फभी नहीं गयाहूं॥ इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

कथितेयं मया सम्यक् चतुर्मूर्खकथा शुभा। शुक्ल देवीसहायेन सहायेन मनीषिणाम् १॥

इस प्रकार से शुक्ल देवीसहाय ने चारमूर्खोंकी कथा कही॥

न हि बुद्ध्यंति मूर्खाहि शब्दपर्य्यायमव्ययम्। यथा केनचिदेवोक्तं कश्चिद्दर्पणमानय॥ सोपि गत्वा गृहीत्वा तु स्थितः कश्चिद्विशंकितः ५॥

मूर्ख जो है, वह शब्द के साथ के अव्ययको भी नहीं पहिचानता जैसे किसीने सेवकसे कहा 'ज़रादर्पण लाना' तो, वह, गया और दर्पणले भीलिया पर 'ज़रा' की तलाश में खड़ारहा स्वामीने पूछा तो कही कि दर्पण तो मिला पर वह 'ज़रा' न मिली इससे लाचार खड़ाहूं ॥ इति पञ्चमः प्रदीपः ५ ॥

हानिं कृत्वा पुनर्हानिं करोति निज मौढ्यतः । जाते तु दर्पणध्वंसे घट्या ध्वंस अपि कृतः ६ ॥

मूर्ख, निजमूर्खता से हानिकरके और भी कुछ हानिही कर देताहै जैसे किसीने चौबेसे कहा दर्पण लाना उससे भंगके नशे में दर्पण हाथ से छूटगिरके फूटगया मालिकने पूछा चौबेजी! दर्पण कैसे फूटा चौबेजी के पास घड़ी रखीथी उठाकर देमारी कहा "ऐसे फूटो" निदान मालिक, संतोष करबैठा इससे मूर्खोंसे पूछना सँभलकर चाहिये ॥ इति षष्ठःप्रदीपः ६ ॥

लक्षणां नैव जानाति मूर्खः केनापि लक्षितः । यथा भोजनवेलायां श्वागतो न निवारितः ७ ॥

मूर्ख, किसी करके लाक्षितकरी अर्थात् बताई लक्षणाको भी नही समझताहै जैसे किसीने रसोई करके जलको जाते एकसे कहा भाई! तू रसोईको देखता रहना, मैं जललेआताहूं कहके चलागया पीछेसे कुत्ता आय रसोई खाय विगाड़गया उसने आकर देख-कहा अरे यह क्याहुआ तो वह बोला कि कुत्ता आकर खाय फेंकगया मै देखतारहा तुमने कहा न था 'देखतारहना' वह बेचारा लाचारहो चुपरहा इति सप्तमःप्रदीपः ७ ॥

बहुभिर्बोध्यमानोऽपि मूढो नैवाऽवबुध्यति । गृहीत्वा फललोभेन महिषीं न मुमोच सः ८ ॥

बहुतोंसे समझायागया भी मूर्ख, समझता नही है जैसे एक मूर्खसे पंडितने कहा वृक्ष लगाकर सींचतारहु फल मिलेगा,

वह इसी चाहनामें नित्य २ सींचतारहा। निदान एक दिन किसीकी भैंस उस वृक्षसे आकर खसने लगी उसके सींग वृक्ष में फँसगये निकल न सकी इतने में वह मूर्ख भी चलाआया देखतेही बहुत प्रसन्नहो पुकारा कि गुरुजीने जो फल बताया सो आज पाया लोगों ने बहुत समझाया पर न माना इत्यष्टमः प्रदीपः ८॥

हानिर्लाभो न जानाति कार्याकार्ये हिताऽहिते। अनुक्तो नैव जग्राह पतितं वस्त्रमुत्तमम्॥ कथितः प्रतिजग्राह वस्त्रे विष्ठां निपातिताम् ९॥

मूर्ख, हानि लाभ, कार्य, अकार्य हित अनहित, इनको नहीं जानताहै जैसे स्वामीने सेवकसे कहा हम कहैं सो करना उसने यही निश्चय माना। एकदिन कहीं जातेथे तो दुशाला गिरपड़ा नौकरने देखा पर उठाया नहीं अमीरने सँभाला तो पूछा अरे दुशाला गिराथा तैंने देखा नहीं उसने कहा देखाथा पर आपने मुझसे "नहीं उठाले,, कहा न मैंने उठाया इतिनवमःप्रदीपः९॥

शठो न शाठ्यं त्यजते हठं साधयतीहसः। मृतामदाहयन्मौढ्यात्कथाग्रे जाननीमसौ १०॥

*शठ, अपनी शठताको नहीं त्यागता किंतु निज हठकोही* सिद्ध करताहै। जैसे मूर्खकी माता मरी तो उसने किसीकी भी न मानी औ निज माताका कथाके पासही "तत्रैव गंगा यमुना त्रिवेणी" इत्यादि प्रमाण करके दाहकरवाया पंडित चुपरहा इत्यादि मूर्खप्रसंग जानना इति दशमःप्रदीपः १०॥

## एकादशः प्रदीपः।

### गुरु चेलेका दृष्टान्त।

मूर्ख शिष्यान्महदुःखं जायते शूद्रतो यथा। ब्राह्मणो दुःखमापन्नस्ताडितस्तेन सुभृशम् ११

मूर्ख शिष्यसे महा दुःख होताहै। जैसे शूद्र शिष्यसे ब्राह्मण, दुःख पाया उसने गुरुको बहुतही मारा पीटा। दृष्टांत। एक ब्राह्मण, किसी जाटको शिष्य करनेगयाथा जाटसे कहा कि मैं कहूंसो कहना उसने वैसाही नियम लिया तो उसने कहा कि 'मेरे पैर पकड़के कहु मुझे शिष्य कीजिये, तो शिष्यने भी वैसेही ब्राह्मणसे कहा ' मेरे पैर प० क० मु० शि० की०, तब गुरुने कहा 'अरे तू कहु' शिष्य बोला अरे तू कहु गुरुने कहा तू बड़ामूर्ख है शिष्य बोला, तू बड़ा मूर्ख है। तब तो गुरुजीने क्रोधमें आकर उसके कहीं एक हलकासा थप्पड़ मारा तो उसने भारी जमाया तब तो गुरु भी भारी २ मारनेलगा शिष्य उससे भी भारी२मारतारहा निदान बेचारे गुरुकी कल २ ढीली होगई लाचार होकर अलगहो बैठा, तब शिष्य भी हलकाईपर उतरा। इसीप्रकार शिष्य करके घर आया फिर उसकी जाटनी उसके घरपै सीधालेकर आई तो उसे देखतेही गुरुने कोपहो निज स्त्रीसे कहा कि इसके पतिनें शिष्य होते मुझको बहुत माराहै अब तू इसको खूब पीट वह सुनतेंही उसे पीटनेलगी मारे मारके उसे शिथिल करदी। फिर घर पहुँचाई तब उस जाटनीने जाट से कहा कि 'चेला होना तो सहज, पर सीधा देना बड़ा कठिन है अथवा एकने ब्राह्मणसे पूछा महाराज! गुरुहोने में आराम, या चेलाहोनेमें? उसने कहा गुरुहोने में आराम, चेला टहलकरने वाला होताहै तब उसने झटही कहा अच्छा तो मुझे गुरुही करलीजिये, गुरु बेचारा सुनकर चुपहो बैठा॥

इतिश्रीशुकदेवीसहायकृतदृष्टांतप्रदीपिन्यांमूर्ख निबंधः सप्तमः ७॥

## चातुर्यनिबन्धः ८।

अथप्रसंगाच्चातुर्य्य निबंधं निबध्नातुं तावद्विभक्तिक्रमं प्रदर्शयन् ज्ञानोत्कर्षंद्रढयति ॥

ज्ञानं सत्यतमं सदा विजयते ज्ञानं भजे सर्वदा ज्ञानेनांशुहता निशाचरचमूर्ज्ञानाय तस्मै नमः ज्ञाना त्सर्वमिदं जगत्समुदितं ज्ञानस्यदास्योऽस्म्यहम् ज्ञानेमे मतिरस्तु ज्ञान न हि मां मोक्तुं भवानर्हति १ ॥

अब मूर्ख निबंध कहनेके अनन्तर चातुर्य्य निबंध भी कहना चाहिये इसप्रसंगसे चातुर्य्य निबंध कहनेकेलिये पहिले ज्ञान की उत्कृष्टता दिखाते हैं। सत्यरूप ज्ञान सदा विजयी है, ज्ञानको सदा भजते हैं। ज्ञानकरकेही राक्षस सेनाहतगई, तिस ज्ञान के अर्थ नमस्कार है ज्ञान से यह सब संसार उत्पन्न हुआ, ज्ञानको मैं दास हूं, ज्ञानमें मेरी मतिहो, हे ज्ञान! तू मुझे छोड़ने योग्य नहीं है १ यहां ज्ञानं, यहप्रथमा-विभक्ति, इत्यादि, संबोधन सहित सातों विभक्तियां भी सिद्ध होती हैं ॥

ज्ञानाज्जन्यबलं बलं निगदितं मौढ्याद्बलं कद्बलं आजन्मावसितः शशेन मृगराट् भीत्यैव विद्रावितः ॥ योवैतं पुनराक्रमत्का भिटस्तनैव संहारित मूढेनाऽथत तो विचार्य मतिमान् बुद्ध्या बलं योजयेत् २ ॥

जो ज्ञानसे जन्यबल है वही 'बल' कहताहै और जो मूर्खतासे उत्पन्नबलहै वह बहुत भी हो पर 'कद्बल' खोटाबल अर्थात् वह निष्फल बल समझा जाताहै। जैसे एक सिंह, वनमें बहुतसे शशेखाता और मारडालताथा। एकबुद्धिमान् शशा, रंगरेज़की कूंड़में लोट अद्भुत भयानक रूप बनाकर वनमें जाय बैठा, सिंह आया उसने देखतेही पूछा तुम कौन; वह बोला हम सवासेर, यह सुन सिंहने शोचा कि मैं 'सेर' हीहूं अब यहां सवा-

सेर' आगया यह विचार गीदड़ ज्यों पुकारभगा राहमें वानरने पूछा सेर ? कैसेभगा जाताहै वह बोला सवासेर, आगया उसने कहारेमूर्ख ? कोई सवा अवासेर, नहीं है चल मुझे दिखाव तो सेर-फिर लौटा जब पास पहुँचे तो फिर ज्ञानी शशा पुकारा वाह२ मेरे प्राचीन मित्र ' वन्दर ! तूहीं मेरीगई शिकारको फेर लौटाकर लायाहै, यह सुन सेरने विचारा कि सचमुच इसवानर की मेरी आपसमें लाग रहती है इसीसे मुझे मरवाना विचारके वन्दर, फिर भी लौटायके लियायाहै बस ! झटसे वन्दरके दुहाथड़ मारगिराया आपजीव बचाकर भगदिया। इससे बुद्धिमान् को चाहिये कि पूर्वापर विचार के बलका प्रयोगकरै जिसमें वह बल सफल होवे २ ॥

इतिश्रीशुक्लदेवीसहायकृतदृष्टान्तावल्यांचातुर्य्यनिबंधे
प्रथमःप्रदीपः १॥

अथवा एक ज्ञानी गीदड़ ने हाथीको देखके बिचार किया कि इसहाथी को मारलेऊं तो छः महीने भोजनका कामचले। ऐसे कह हाथीके पास गया प्रणामकर बैठगया। हाथीने पूछा तुम कौनहो तब गीदड़ बोला कि मुझे आपने नहीं पहिचाना, मैं आपका बड़ा पुराना 'लंगोटिया' यारहूं मैंने तुम्हारे साथबड़ी सैरकीहै पर आप मेरे साथ कभी भी सैरको न गये देखिये हमारे वहां क्याही सुन्दर सरोवर भराहुआ है जहांका जल हाथियोंको अत्यंतही गुणदायक है। निदान इसप्रकारकी नोन मिर्च लगाई चुपड़ी २ बातों में आकर हाथीजी मस्तहुए तो गीदड़से बोले यार ! हमें भी तो लेचल तेरा भी सरोवर का लहजा देखें। तब तो गीदड़जी हाथीको लिये २ जहां बहुत भारी दल दलथी तहां आप अधर २ धीरे २ चला हाथी पीछे २ पैरफँसाता कष्टसे निकालतागया गीदड़, 'चलेआओ २' कहता अगाड़ी बढ़ता चलागया निदान गीदड़, तो ऐसेही अलग २ बचता [illegible] पार जालगा और हाथीजी अधम बीचकी गहरी दलदल

में रुपगये तो चिंहाड़नेलगे गदिड़ने आवाज सुन धीरज बँधाई कि आप फँसगये घबड़ाइये नहीं मैं अपने भाइयों को लाताहूं अभी आपको निकाल ठिकाने लगावेंगे कुछदेर पीछे बहुतसेगीदड़, आकर हाथीको उधेड़नेलगे हाथी, चिंहाड़ २ के मरगया ५, बल, बुद्धिसेहीं सफल होताहै इति द्वितीयःप्रदीपः २ ॥

काचिच्छागीं सिंहएकोत्रभाषे किं नाऽयाता शंकया वैरिणःस्ते । कुत्रेत्युक्तादर्शयत्तस्य विम्बं कूपे दृष्ट्वा सो पतन्मौढ्यतोहि ३ ॥

'एक सिंह, वन में बहुतसे जीवोंको मारडालताथा । सबोंने मिलके निबंध किया कि तुम एक जीव हममेंसे लेलियाकरो तुमारे पास वे रोक समय पर नित्य २ पहुँचतारहेगा । एकदिन एक दुर्बल बकरी, बच्चोंकी चिंता करती देरमें पहुँची सिंहने क्रोधकरके कहा तू कहांरही ॥ शीघ्र क्यों नहीं आई । बकरीने कहा तेरे वैरीकी शंकासे कि वह उधर मुझको बुलाताथा कि मैंही बनका स्वामीहूं मैं ढांढसके तुमारे पास आईहूं सिंहने कहाअभी मुझे उसके पास लेचल, कहा चलिये, सिंह साथ हुआ कूएपास लेगई कहा इसमें झुकके देखिये सिंहने निज प्रतिबिंबका 'सिंह देख गर्जनाकरी तो उधरसे भी प्रतिध्वनिका शब्दहुआ । निदान सिंह, कूएमें कूदके मरगया । बेचारी गरीब बकरी ने कइयोंकी जान बचायी इससे बुद्धिबल प्रबल गिनाजाताहै । इति तृतीयः प्रदीपः ३ ॥

वैरं न कुर्यात्केनापि तुच्छेन महतापि वा । पिपीलिकादिभिःक्रुद्धैः क्षुद्रजीवैर्हतः करी ४ ॥

एक हाथी से कई जीवोंको दुःखथा उन्होंने विचारकियाआओ इस हाथीको मारडालें तो निर्भयतासे रहें । तो महा दुखियारे मेंडकनेकहा मैं इसके शूंड़की राहसे कपाल में चढ़जाऊँगा चिड़ीने कहा मैं इसकी आंखें नोचूंगी । निदान उन्होंने वैसाही

किया हाथी,शूंड़ फटकार २ अंधा होकर मरगया इत्यादि जानना इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

सुवेषमत्वादथ पूज्यतेजनो यथा कुवेषो धनिनातिरस्कृतः। सएव वेषं परिधायचोत्तमं गत्वामुदामानधनेसमाप्तवान् ५॥

यह जन, सुंदर वेष होनेसेही पूजित होता अर्थात् वस्त्रादिसे सजाहो तभी इसका सत्कार होताहै। जैसे कोई गरीव, कुचैल मैले वेष से मित्रके पास गया तो उसने इसे देख नाकचढ़ालिया और इसकी कुछ खातिर न करी। दरिद्री भिखारी जानएक टका नौकरसे दिवादिया उसको इसीसे ज्ञान उत्पन्नहुआ तो उसी टकेसे अपने वस्त्र धुलाये पहरके फिरगया तो सवोंनेइसे लालाजीका मित्र जानके वड़े प्रेमसे रक्खा और मुलाकात होने पर मित्र-लालाजीने भी वहुतसामाल दिया । इससे मनुष्यको मैले वेष रहना न चाहिये इति पञ्चमः प्रदीपः ५॥

गतानुगतको लोको नायं तत्त्वार्थ चिंतकः। घटपुंजप्रभावेन गतं वै ताम्रभाजनम् ६॥

यह संसार चलतेके पिछे चलताहै और तत्त्व अर्थका चिंतन नहीं करता अर्थात् अपने प्रयोजनको नहीं समझताहै। जैसेएक ब्राह्मण, तीर्थ स्नानको गया, उसने वहां भीड़देख अपना ताम्र कमंडलु, मिट्टीमें दाब ऊपर मिट्टीका ढेर लगादिया। पिछाड़ी, वहुतसे लोग आतेथे। उन्होंने देख शोचा कि पंडितजीने ढेरलगाया इसका कुछ माहात्म्यहोगा तो उन्होंनेभी एक२ढेर अपना२ किया ऐसे पंडितजी नहाकर आय देखें तो हजारहों ढेर वैसेही लगे हैं पंडितजीके कमंडलुका पतान लगा इति षष्ठः प्रदीपः६॥

सर्वसंग्रहकर्त्तव्यः क्वापिकाले फलप्रदः। घटसर्पप्रभावेन दुर्भगा सुभगाभवेत् ७॥

मनुष्यको सर्व वस्तुओंका संग्रह करना, कभी किसी कालमें फलदायी होताही है जैसे एक राजाकी दुहागिनरानी सब वस्तु मोल लेलियाकरतीथी एकदिन एक घड़ेमें बंध सर्प मिला उसे भी लेके संदूकमें रखलिया। कभी कि उसके बाहर जानेपर उसकी सपत्नी सुहागन, उसके घरमें आ घुसी और देखा भाली करनेलगी तुर्तही उसने संदूक खोल घड़ेमें हाथ दिया उस भूखे सर्पने ऐसी डसी कि दूसरा सांस भी न लिया उस दुहागिनको फिरसे सुहाग मिला दोनों राजा रानी, सुखसे रहनेलगे इति सप्तमः प्रदीपः ७॥

निजवृत्त्यैव वर्त्तेत परवृत्त्या न हि क्वचित्। हंसवृत्तिं दधानोऽसौकाकोऽबुद्धिर्जलेऽपतत् ८॥

मनुष्यको निज स्वभावकी वृत्तिसेही वर्तना अर्थात् दूसरेकी रीस न करना चाहिये हंसकी रीस करता कौआ पीछे २ उड़ा और हंसके साथही जलमें डूबके मरगया इत्यष्टमः प्रदीपः ८॥

बुद्ध्यैवसफलाभवतीत्यत्र दृष्टान्तमाह।

बुद्ध्यैव विद्या सफला फलप्रदा अबुद्धि विद्या विफलाऽफलप्रदा। यथातिमूढाश्चतुरोऽपिसंगता गताश्च देशांत्वधनापुरावपि १ ज्योतिर्विदाऽश्विनीत्यक्ता तृणमत्तुं गतागता। वैद्येन शाकमानीतं निंबस्याऽऽरोग्यदायकम् २ वैयाकरणमूढेन तत्पत्राणि यथेच्छया। निस्तुषीकृत्यचाप्यग्नौ स्थापितानि फलेच्छया ३ गड्वडंशब्दमुद्दिश्य चुक्रुशुस्ते स्वभावतः। पात्रेण सहचैतानि क्षेपितान्यथभूतले ४ नैयायिकेनाथघृतं त्वाधाराधेयभावतः। विस्मयापन्नमनसा पातितं पृथिवीतले ५ पुनर्गत्वातुराज्ञोऽग्रेप्रश्नंतैर्हि विचारितम्। चतुर्भिश्चतुरै

बुद्धिहीसे बताना पड़ा तो वोले होनहो आप के हाथ में " चक्की का " पाट " है ॥ इति नवमःप्रदीपः ९ ॥

श्रेयस्तावत्प्रकर्तव्यं यावद्धानिर्नाहिस्वका । युवाव स्थाप्रदानेन प्रेतोयोषित्वमाप्तवान् १० ॥

भलाई, तहां तकही करनी जहांतक अपनी सर्वथा हानि न होवे। जैसे प्रेत, निज युवा अवस्था देनेसे स्त्री होगया तैसे न हो। दृष्टान्त। दो राजोंका करार ठहरा कि जौनसे के हममें लड़का या लड़की हो वह सगाई करदेवे। कुछकालमें पहिले उस वड़े राजा के लड़की हुई वह करार पर ठहरारहा कि जो तुम्हारे लड़का हुआ तो मैं इस लड़कीको अवश्य विवाह देऊंगा इसमें सन्देह नहीं। दैवयोग से उसके भी लड़कीहीहुई पर उसनेभारी तिलकके लालच से उसे ' लड़का , ही प्रसिद्धकिया। सगाई भई विवाह भी होगया द्विरागमनकी तयारीभई तवतक उस लड़कीको भी ज्ञान भया कि मेरे वापने मालके लालच मुझको लड़कीसे ' लड़का , बना रक्खाहै पर अव क्या करूं गौने में तो सभी कलई खुल जावेगी ' इसी चिन्ता में वह लड़की दिन २ सूखनेलगी और उसका वाप भी द्विरागमनके कईक मुहूर्त्त टाल चुकापर पोल कवतक निभे; ' वकरेकी मा,/कवतक कुशल मनावे, निदान उसको गौना करने भेजनीही पड़ी, वह लड़की मारे भयके अढ़ाई कोशसे अधिक मञ्जिल नहीं करतीथी कि जवतक जान बचै तभीतक सही निदानराहमें एक ठौर ठहरना हुआ उस स्थानमें महाभारी ' प्रेत , रहताथा वह, लड़कीपर दौड़ के खानेको आया तव तो वह बोली 'लेखालेव, मैं भी यही चाहती हूं प्रेतने आश्चर्यकर इसका कारण पूछा उसने सवकह सुनाया निदान प्रेतने दयामें आकर उसे निज पुरुषपन देदिया औकरार किया जव तू लौट आवे तव मेरा पुरुषपन मुझको देदेना उस ने स्वीकार किया तो झटही ससुराल पहुँचा वहां द्विरागमन भ

'अयाचक-ब्राह्मण' ऐसे विख्यातहुआ। उधर उस मायावीने एकांत उद्यानमें आसनलगाया वहां बहुतसे मनुष्य जाने लगे उसने ऐसी मायारची कि किसी को भी मालूम नहीं आधी रात को उसका संगी उसे चाररोट दे आता वह खालेता और दिनभर व्रती रहता तब तो उसकी बहुतही प्रतिष्ठा बंधी कुछ समय में उसी मायावी की समस्या से वह 'अयाचक द्विज, झूठ मूठसे मरगया लोग इकट्ठे होय शोच करनेलगे कि देखो कैसा 'अयाचक—ब्राह्मण, था जिसने कुछ भी किसी से न मांगा और निजप्राण देदिये ऐसे शोचते चिन्ता करते उसे लेकर नगर के बाहरगये उसी उद्यान में वह साधु था उसने कहा क्या रौला है लोगोंने कहा 'अयाचक-ब्राह्मण, बड़ाही सीधासादा था, उसने कहा यहां लाओ कैसा सीधासादा है लोग झट से चाव करते उसकी अर्थी लाये उसने तुर्त्तही जल छिड़क उसे खोल बैठादियां, यह अचरज देख सुनके लोगोंको बड़ाही आश्चर्य हुआ। वहां का राजा आय हाथ जोड़ खड़ा हुआ महाराज! आज्ञा कीजिये उस साधुने कहा तुमको बड़ीभारी शांति करनी चाहिये। सो १०००००) लक्ष रुपये तो इस 'अयाचक ब्राह्मणको देओ, और ५०००) इस दूसरे ब्राह्मणको 'गुप्त' जो रातको रामरोट पहुँचाता था उसको देओ, राजाने प्रसन्नहो इतनेही दिये फिर प्रसन्नहो हाथ जोड़ खड़ाहो बोला महाराज! कुछ अपने लिये भी आज्ञा कीजिये साधुने कहा सब आनंद हैगे निदान राजाने दो चारबेर अड़ाकर कहा तब बोले हम जगन्नाथजी जातेहैं हमें भी५०००००) लाख रुपये देदेओ राजाको देनेहीपड़े 'माया चालाकी, ऐसी है इत्येकादशः ११ प्रदीपः॥

## पण्डितका दृष्टान्त।

चातुर्यं फलदं प्रोक्तं विद्वत्सुच महत्सुच। धृष्टैःसंधर्ष्यमाणोपि शतमुद्रास्तुलब्धवान् १२॥

विद्वान् और चतुरोंमें भी 'चालाकी, काम देतीहै जैसे एक विदेशी पण्डितने नये नगर में कथावांची लोगोंने कहा देखें यहा से कहा लेजायगो, निदान जब उसकी कुछ भी न चली तो अपने भाई से कहके झूठेही मरगया, लोग इकट्ठे भये लोगों ने कहा इसेलेजानेका व्योंतकरो तो उसका भाई रोकरबोला' हाय ! सौ रुपये को तो हमारे घरानेमें दुशाला, ही परैहै, निदान विचारे हारे लोगोंने सब तयारी करी वहां लेगये वहां भंगीकर मांगनेलगा सबोंने कहा इसके पास कुछ नहीं है निदान सब लोग छोड़ २ करचलेआये कि यह हमको देख इसको और तंगकरैगो, सबके जाने पर उसने अपने भाई से कहा 'भाई ! यहां करलगैहै तो मरनाभी यहां उचित नहीं' ऐसे कह हाथपकड़ उसे उठायलेचला भंगीदेख अचरज करता रहगया ॥

इति द्वादशः प्रदीपः १२ ॥

सर्वेभ्य श्चैवज्ञानेभ्यो वार्ताज्ञानं महन्मतम् । यथा स्वस्वामिनं भृत्यो वार्ता दक्षोह्यतुष्टयत् १३ ॥

सब ज्ञानोंसे बातोंका ज्ञान, बड़ा मानागयाहै जैसे एक राजा ने निज मन्त्री से कहा हमें धूवें की कोठरी वनवायदे, कल्ह इस का उपाय करना नहीं तुझपर बड़ा दंड पड़ैगा मन्त्री बड़ेशोक से पछताता घरगया नौकर पुरानाज्ञानी था उसने पूछा स्वामिन् ! आज उदास कैसे । मन्त्रीने हाल चिताका कहा उसने सुन झटही उत्तरदिया स्वामिन् ! घबराते क्योंहो कल्ह पहिले आप ही जायके कहना कि हमें बीसमन धुआंतोलाकर दिया जाय जिससे कोठरी बननेकाकाम आरंभहो । मन्त्रीने वैसाही कहा राजासुन चुपहोरहा मन्त्रीके नौकरको भारीपद मिला ॥

इति त्रयोदश प्रदीपः १३ ॥

न हि भेदं प्रकल्पेत भृत्यानां भोजनं ददन् । कंगू भोजनदानेन यथा स्वामी विलज्जितः १४ ॥

एक समय अकाल वशसे अन्न बहुत महँगाथा। धनीके मित्रने पूछा तुम नौकरोंको क्या खवातेहो, धनीनें कहा गेहूं चावल खाते हैं। यार बोला ज्वार, मकाई, कांगुन, खानेको दियाकरो उसने वैसाही किया कुछ समय बाद किसी काम की आवश्यकतासे धनीने आवाज दई अरे आत्माराम! वह कहताहै 'लटपटपंछी चतुर सुजान' तो धनी चुप होरहा फिर दूसरेसे कहा 'गंगाराम! वह बोला 'सत्त, गुरुदत्त, शिवदत्त, दाता' निदान तीसरे को पुकारातो वह "सीतापति की कोठरी" बोला तबतो धनी क्रोधकरके पुकारा 'अरे तुम आदमीसे जानवर कबसे होगये उन्होंनेकहा अन्नदाताजी जबसे जानवरों कासा खाना--दाना, मिलने लगा, अमीरने सुन कुछ न उत्तर दिया और उन नौकरोंको बदस्तूर खानेको मिलता रहा इससे नौकरोंको दुःखी न रखने चाहिये॥ इति चतुर्दशः प्रदीपः॥

साठ अशरफीवाले साधुका दृष्टांत॥

न हि वैराग्यमापन्नो धनार्जनपरोभवेत्। निष्कषष्टि धनादेवं साधुर्दुःखी यथाऽभवत् १५॥

जो वैरागी है उसे धन इकट्ठा करना परिणाम में दुःखदाई होताहै, जैसे किसी साधुने अवस्था भर पेट गांठदके कठिनाई से साठ अशर्फियें इकट्ठी कीं। तो दिशा जंगल जाने के समय वह नित्य २ संभाल लेताथा एक दिन गिनते २ किसी चालाक ने देख लिया तो वह 'बाबाजी! दण्डवत्' कहकर इन्हें घर में लेगया वहां इनकी बड़ी सेवा की भोजन करके सोतेथे कि इतनेही में उस चालाकचेलेने बाहर से आकर अपनी स्त्री से कहा 'वे साठ अशर्फी लेआव देआऊं। वह भीतर आय देखभालके बोली "यहांतो नहीं हैं, वह बोला, जायँगी कहां अभी तो मैंने धरीही हैं। रांड लुच्ची है ऐसे रौलाकर उसे मार पीटने लगा लोग इकट्ठे भये पूछा ये क्या बात है। वह बोला 'बात क्याहै'

साठ अशर्फियें अभी लाकर धरीथीं रंडी कहती है कि नहीं हैं, सब--भला कहीं ऐसा होता है, घर में कौन २ थे कहा सिवायइसके और कौनथा एक ये बाबाजी तो थे बिचारे सो रहे हैं सबोंने कहा इसका लहँगा उतराकर देखलेओ उसने दिखादिये तो पतिने उसके शिरके बालभी अलग २ खोलके देखे। तो बाबाजी यह माजरा देखकर पीलेपड़गये और डरते २ बाहर आकर कहा भाई हमारे भी लुटिया डोर लंगोटा देखलेओ, तब स्त्रीने कहा जटा न अलग २ खुलवाओंगी, साधुके होश उड़गये लोगोंने कहा बाबाजी, दिखादीजिये वह बोला 'भाई मेरी जटा, छे महीनासे बँधी हैं लोग बोले आज खुलेंगी, बाबाजीने न खोलीं तो एक लुच्चेने पकड़कर झटकादिया तो वह साठों अशर्फियें जमीन में गिरीं लोग हँसनेलगे बाबाजी को लाचार होकर सटकनाही पड़ा चेला बोला बाबाजी फिर भी कभी कृपा करना तो बोले बच्चा अब तो न फिर साठ होनी न आना होगा इससे संचयकरना बुरा होता है॥ इति पञ्चदशः प्रदीपः॥

हट्टू पप्पूका दृष्टान्त।

चातुर्य्यमेतद्गुरुकारणंपरं द्रव्यादिसौख्यं विदधाति मायया। यथा मिलित्वा तु विदेशकं गतौ हट्टूश्च पप्पूर्वणिजौ स्वनामतः १, कुत्रचिद्वैश्यगेहे तौ गत्वातत्पितृमित्रताम्। ज्ञापयित्वा धनं लब्ध्वा मुदंचापतुरुत्तमाम् २ अथतं त्यक्तवान्हट्टूः खातगर्त्ते स्थितं द्रुतम्। स्वयं तद्धनमादाय गेहं गन्तुं प्रचक्रमे ३ पप्पूर्ज्ञात्वागतं तं तु स्वयं चापि जगामह। मार्गेतूपानहांमिषाद्धनं तस्माज्जहारह ४ अथतौ नगरावासे मिलितौ च पुनर्दृढम्। कृतवन्तौ धनं द्वाभ्यां संग्राह्यं स्वन्यथा न हि ५ ततोपि लवणव्याजाद्धनं हट्टूर्जहारह। सोऽथग

त्वा निजं गेहं धनं तत्र पिधाय च ६ स्वयं कूपे विशित्वाऽथ तत्र वासं चकारह । उष्णमन्नं घृताद्याढ्यं पत्नी तस्य समर्पयत् ७ पप्पूस्तं पिहितं ज्ञात्वा कदन्नं प्रददावथ । तद्दृष्ट्वादर्पितोप्याह धनं मे कुत्र तद्गतम् ८ सोथ श्रुत्वा हितं वाक्यं तस्यगेहाद्धनंतुतत् । समादाय शुभं तस्य भाजनं भोजनेकरोत् ९ सोपि गत्वा भोजनार्थी भाजनं हृतवानथ । स्थापयित्वा जलेचाथ स्वयं मिथ्या समारह १० पप्पूर्ज्ञात्वा मृतं तंतु दाहार्थमनयद्वने । तत्र चौराः समायाता तेऽप्यादायधनं स्थिताः ११ ताभ्यां तेषामपि धनं माय या विहृतं क्षणात् । चौरा भयाद्गतादूरं धनं ताभ्यां विभाजितम् १२ कथितेयं मया सम्यग् हट्टूपप्पूकथा शुभा । शुकदेवीसहायेन सहाद्धनमनीषिणाम् १३ । १६ ॥

एकनगर में 'हट्टू' औ 'पप्पू' ये दोनों बनिये; रहतेथे एक दिन हट्टू, एक घडेमें गोबरभर ऊपर थोड़ाघी लगाकर बेचने चला, तो नगरमें इसे चालाकजान इसका घी किसीने भी मोलनलिया। निदान हट्टूजी का " पप्पूजी, सेहीजाय मुक़ाविलाहुआ बोले यार। हम तेरेलिये घीका घड़ालाये हैं लेरख। उसनेभी एक तलवार काठकी ऐसी बनायी जो सच्चीही जानपड़े सो उसने इसकी भेटकरी हट्टूखुशी से लेघरआय पछताया उधर उसने भी घड़ा नीचे गोबरसे भरादेख 'जमाखर्च, बराबर किया। सांझ को एकान्तमें मिले बोले यार! आवो दोनों मिल परदेशचलें बहुतसाद्रव्य चालाकीसे कमाकरलावें, यह विचारकरके दोनों घरसे चले एकनगरमें पहुँचे वहां एक बड़ा भारी शाहूकार मरगयाथा ये उसके मित्रबन ऊभसाधने को उसके घरगये; हाय! मित्र २, पुकार २ कर बहुतहीरोये निदान लोगोंने धीर धरायी तो फिर

रोकरबोले फलाने समय सेठजीने हमसे सौ अशर्फी उधारली-
थीथी हाय अबसेठजी के साथ हमारी अशर्फियें भी गयीं, लोगों
ने कहा आप खान पान कीजिये सबेरे सब निश्चय-होजायगी
सबेरे हुए वे सब मिल सलाहकरके इनसे बोले शाहजी ! आ-
पके पास कोई लिखतम भी उनअशर्फियोंकी है वे बोले लिख-
तमहै न पढ़तम है जो लिखापढ़ी का व्यवहार होता तौ फिर
कहनाही क्याथा अब तुम्हाराधर्म भावे तो देओ वे बोले शाहजी !
हमारे तो लिखा पढ़ीकाही व्यवहार है । फिर तो वे दोनों बुद्धि
से विचारकरके बोले अच्छा भाई जो तुम्हारा बाप तुमसे पुका-
रके कहदे तब तो देओगे सेठबोले खरीखरी तब तो हट्ठूने जा-
य पप्पूको, वही श्मशानमें जहाँ उसके बापकी ढेरीथी तहाँ ग-
ड्ढाखोद उसमें बैठाकर यत्नसे ढकदिया और आप आकर सेठों
से बोला चलिये पूछि आइये तब तो सब सेठमिल अचरज क-
रते तहाँ पहुँचे और सेठके बेटेने हाथ जोड़करकहा " बापजी,
म्हांनैयांकी सौ अशर्फी दीणी छैं तौ थे वेगाबोल ज्यों " बापजी!"
यह सुनतेही भीतरसे पप्पू बोला " अरे छोरो ! मों आंकना सौ
अशर्फी भोत महँगाड़ा मे लयी थी । जीसों आपणू गुजारो हुयो
छोसो थे व्याज सईती वेगादेयो नाही मैं थारो दावन दगीरछूं२
बेचारे भोले भाले सेठोंने झटमे अशर्फियें गिन व्याज समेत दे-
दयीं हट्ठू ले मनमें विचारा कि अब पप्पूको निकालने का क्या
कामहै आपही लेके चलदिया कुछ देर बाद पप्पू ऊपर की टट्टी
तोड़ताड़ नगरमें आय उसे गया सुनके आपभी चला और एक
जूता बहुत अच्छा बना राहमें पहुँच करहट्ठूकी सवारीके अगा-
ड़ी फेंका हट्ठूने देख विचारा जूतातो खूब है पर एकही है क्या
करेंगे फिर कुछ आगे जाय उसने दूसरा भी फेंका तब तो हट्ठू
उसेलें उस दूसरेकोभी लेने पिछाड़ी भगा उसपप्पूने सवारीपर
चढ़ अगाड़ीकी राहलयी । शामको सरायमें दोनों मिले तब तो
दोनोंने निश्चय करके वे अशर्फियें ( हमदोनोंकोही मिलें ) यह

नियम करके बनियेंकी दूकान में धरीं, पप्पू रोटी करता था दाल में नमक नहीं था नमक लेने हट्टूको भेजाहट्टू ने उससे सौ अशर्फियें मांगीं वह बोले उसके बिन कैसे देऊं उसने पुकारा भाई यह नहीं देता वहबोला दे देवस! हट्टूजी अशर्फियें लेकरलम्बेहो घर चले। झटसे घरआय अशर्फी कोठीतले गाड़ आप कूएमेंजा छिपावहां उसकी वहू गरम २ मलीदा पहुंचायआतीथी। पप्पू घर आया उसे जाय पूछा तो उसकी वहू बोली तुम्हारेही तो साथगया था न जाने कहां मार आया। पप्पूजी तलाशमेंरहे। निदान एक दिन रातके समय उसकी वहू तरमाल लिये जातीथी। वह भी पीछेसे होलिया उसका सबचरित्र देखा दूसरे दिन आप बूरका मलीदा अरु दूधकी जघे गरमपानी ले जनाना वेपकर उसकी बहूसे भी पहिले पहुंचा और सराजाम उसे उतार पहुंचाया तो वह उस बूरेके मलीदे और गरमपानीको देखतेहीं झुंझला करबोला अरी रांड़ वे कोठीतले की सौ अशर्फियें अभी पूरी हुई क्या जो ये कंगाल भोजन मेरेलिये लेआई है। वह तो चुपचाप ढेके चलाआया इतने में उसकी वहू पहुंची उधर उसने घरमें घुस कोठीतले जाय संभालीं लेके घरजाय एक सुन्दर थाल उनका बनवाया। उधर वह औरतसे पुकारा रांड आज दूसरे! वह बोली नहीं अभी आईहूं तव तो धोखाभया झट घरमें आये न देख पछताता हुआ निदान हट्टूजी एक दिन पप्पू के घरगये वहां उसी थालमें भोजन किया उसीके चुरानेकी ताकमेंरहे पर रातको सोते समय उसने थाल पानी से भरके छीकेपर धरदिया नीचे अपनी खाटबिछाई रातको हट्टूउठा थालसंभाला तो पानीसे भराथा झट उसने उसमें राखभरी पानी न गिरसका वह थालले तलावमें गाड़ चलाआया पप्पू थाल छींकेपर न देख घरआया हट्टूको सोते देखा ढेही ढाढीयीं झट थाल तलाव में से निकाललाया घरमें आय झूंटेही मरगया फिर हट्टू उस के घरगया उसकी स्त्रीको रोतेदेखपूछा यह कैसे मरगया वह बोली

तेरे घरमें इसे जहर दियागया तबतो वह बोलाअच्छा भाभी भगवत्की मरजी ला इसे जलायआवें। यहकह उसे बांधशिरपररख के लेगया विचले वासे जाय पीपलके लटकादिया। आधीरात को चारचोर चोरीको जातेथे उनमें से एकबोला जोमेरे मालहाथ लगा तो मैं इसमुरदे को लकड़ी देऊंगा दूसरा बोला मैं कफन देऊंगा तीसरा बोला मैं ऊपरका खर्च करूंगा चौथा बोला जो माल लेआऊं तो इसकी नाक काटलेऊंगा। निदान वे चोर बहुतसा माल लेकर उधरसे आये। और उसमुर्देको देख एक बोला लकड़ी लाताहूं एक कफन ला० ती० खर्च दे० चौथा बोला मैं इसकी नाक काटताहूं। तबतो पप्पूने विचारा कि मेरी नाक वृथाही कटतीहै तो ऊँचे स्वरसे चिल्लाया (अरेभाई प्रेतो पहुँचियो यहां मुर्दोंकी नाककटतीहै) यहसुनतेही हट्टूने ऊपर से पीपल हिलाया और (मारो २ आये २) ऐसे आवाजदई फिर तो चोरोंने विचारा कि न जाने कितने आपहुँचे पीपलभर हिल रहाहै यहकहते मारेडरके पत्ञातोड़ भगदिये। उधर हट्टू पप्पू ने माल सब सँभाला औ सलाहकरी कि आओ इस धन को आधा २ करलेवें और वह थाल भी मँगालो। निदान उनका हिस्सापातीहुआ उसमें एकरुपया बचरहा उसको यहकहे मुझे दे दे कल्ह आठआने लेलेना, वह कहे मुझे दे दे। यह तकरारहो रहीथी। उधर कुछदेर बाद उन चोरोंने विचारा कि भूत उसद्रव्य का क्या करेंगे उसे तो सँभालें यह कहके वहां आये वहां कुछ न देखा एक शून्यमकान में उनका झगड़ा होरहाथा। एकने जाय उसकी वारीमें मुँह दिया उसके शिरपर पगड़ीलाल बहुत उमदाथी हट्टूने कहा ले धेली मैं यह पगड़ीरही। चोर तो पगड़ीउतारकर चलदिया और साथकों से जाय कही कि वे तो इतनेथे कि एक २ धेली उनके हाथलगी जिसपर भी एक रह गयाथा उसको उनके चौधरी ने मेरी पगड़ी उतारकर धेली में दई यह सुन चोर भी चकरागये हट्टू पप्पू सबधनले घर

आय खुशीसे रहनेलगे चतुराई ऐसी वस्तुहै इससे किसी वात की कमी नहीं रहती है और जो ये न हो तो मनुष्य किसीकाम काभी नहीं है ॥

इति शुक्लोपनामकपण्डितदेवीसहायविरचितदृष्टान्तावल्यां हट्ठूपप्पूइतिहास वर्णनन्नाम षोडशःप्रदीपः १६॥

बादशाह और जुआरी का दृष्टान्त।

न लाभमात्रं गृह्णीयादज्ञात्वालाभकारकम्। गृही त्वाऽज्ञानवशतो ददौ भूयो विलज्जितः १७॥

विना उसवस्तुके आने के कारण को समझे विना उसवस्तु को नहीं लेरखना चाहिये जैसे एक बादशाहको किसी जुआरीने मुरगी दिखाई उसने कहा मैंने आपके नाम से शर्त लगाई थी यह मुरगी जीताहूं आप लीजिये बादशाहने वह रखवालयी दूसरे दिन एक वकरी लाया कहा आज यह जीताहूं। फिर एक गाय लाया उसे भी बँधवालयी निदान एकदिन आकर बोला मैं आप के नामसे दशहज़ार रुपये हाराहूं सो आप दिवाइये। तब तो बादशाहको देने का सन्देह हुआ, मंत्रियों से हाल कहा वे बोले गरीब निवाज आपने चुपके २ इतनी चीजें रखवालयीं अब तो आपको रुपये देनेहीं पड़ेंगे इससे (न लाभमात्रं गृह्णीयादिति) इति सप्तदशः प्रदीपः १७॥

ज्योतिषी का दृष्टान्त।

क्वचित्सत्येऽपि मिथ्या त्वं प्रतिष्ठायाश्च लाघवम्। गतो द्विजोक्तो योगस्तु फलं सर्वैर्विनिन्दितम् १८॥

कहीं सत्य कहनेपर भी मिथ्यापन होता और प्रतिष्ठा घट जाती है जैसे हमारे नारनौल, के एक ज्योतिषीथे किसी इल्लत में नवाबके यहां कैदहोगये वहां इन्होंने एकान्त अवकाश समझ के नवाब के होनेवाले लड़केकी जन्मपत्री वनाई नवाब को मालूमहुआ तुर्त कैदसे छूटे खातिर होनेलगी निदान उसीसमय

पर वैसाही लड़का हुआ तौ इनकी वड़ीही प्रतिष्ठा भई और पण्डितजी के लिये इनामकी ठीक २ तयारी भी हुई पर भाग्यके मन्द थे उसके मारे नवावसाहब एक सवाल और करवैठे वह यह था कि एक हाथमें चाकू दूसरे में चिड़िया (कहो मरै या बचैगी) तो पण्डितजी विचार बोले जहांपनाह आपको सवसामर्थ है पर यह चिड़िया तो बचनी चाहिये-इतनी मुंहसे निकलतेही उस नीचने चाकू चिड़िया पर छोड़ा वह दैवयोगसे फुड़तीके वश अंगूठे पर टिका बड़ा घाव आया नवावको जाफ़ आगया दवा इलाजहोनेलगे पंडितजी का इनाम कहीं हिरहा वाकी में इनको लोग "वाह २ पंडितजी! कोई ऐसा योग वतलाताहै जिस से नुकसान पहुँचे। वसहोचुका आपका योगभोग अब यहां से चले जाइये नहीं कोई पठान, शिकारका वार फेंक देता है" निदान पंडितजी विचारे लाचारहो जानबचाकरभगे इससे योग आदि भी बुद्धिवानी से कहने ॥ इति अष्टादशः प्रदीपः १८ ॥

## जीते मरे का दृष्टान्त।

न कार्य्यो मंत्रिभिः सार्द्धं विरोधः केनकत्रचित्। मंत्रिद्रोही यथा वैश्यो जीवन्नेव मृतोऽभवत्॥ १९॥

मंत्रियोंके साथ कभी कहीं भी विरोध नहीं करना चाहिये। जैसे एक वैश्य, नवाबके यहां मोदीथा फिर वह कुछदिन घररह कर फिर गया, तो कामदारोंने कुछ न मिलने से मुलाकात न होने दयी, और नवाबने यादि किया तो कह दिया वह तो मर गया निदान एक दिन नवाब, ऊपर मकान पै खड़े थे इस ने नीचे से सामने होकर जा सलामकरी नवाब ने पूछा तूं जीता है वह बोला, जीहाँ, फिर तो नवावने आम खासमें सब पर तेजी की तो पुकारे कि फ़लाना शख्सहाजिरहो जो मोदीको [illegible] कहा और यह मोदी तो जी- [illegible] पूछा गरीब निवाज! कहां

हैं तबवड़े नाराजहुए दूसरेको बुलाय कहा अरेदेख तो यह अन्धा होगया इसे मोदीसामने नहीं दीखता उन सबकी एक सलाह थी तो वह भी बोला मुझे भी नहीं दीखता तीसरे को बुलाया वह कहता है, मुझे मोदीका निशान भी नहीं दीखता निदान सबोंने इकट्ठेहो अर्ज की गरीब निवाज ! आप गौर तो कीजिये कहीं इसकी रुह तो न चलीआई है। नवाब सचमान डरकर भीतर पर्दे में घुसगये मंत्रियोंने मोदी की गरदन पकड़ बाहर फेंका ॥ इत्येकोनविंशः प्रदीपः १९ ॥

एका छागी वृकं भीता मृत्युतो वाक्यमब्रवीत्। गानंमेशृणु तच्छ्रुत्वाऽऽगत्यस्वामी व्यमोचयत् २० ॥

एकबकरी को भेड़िये ने दबाई तो उसने कहा जरामेरागाना सुनिये फिर मुझे मारियेगा। भेड़िया सुननेलगा वह ऊंचेचढ़ चिल्लाय २ पुकारनेलगी इतने में उसका चरानेवाला आवाज पर पहुँचा भेड़िया भगगया बकरीकी जानबची ॥ इतिविंश प्रदीपः २० ॥

राज्ञोक्तं बुद्धिमन्धूम गृहं निर्माहि सत्वरम्। संतोल्य दीयतां तन्मे येनाहं कर्तुमुत्सहे २१ ॥

राजाने एक बुद्धिमान् मंत्री से कहा हमें धुएंकी कोठरी बनादे वह बोला मुझे आप धूआं तोलाकर दीजिये जिससे बनाऊं॥ इत्येकविंशः प्रदीपः २१ ॥

उक्तं राज्ञैकदा धीमन् आश्चर्यं मे कथम्भवेत्। श्रुत्वातु बुद्धिमन्मंत्री कांचित्कालं समीक्ष्य च १ वैकुण्ठ मिषतस्तंवै बद्धनेत्रं खरेस्थितम्। परिक्रमं कारयित्वा देशस्यांतः पुरस्य च २ उक्तं सभायां तं नीत्वा किमाश्चर्यमतःपरम् २२ ॥

एकबेर राजाने बुद्धिमान मंत्रीसे कहा हमें कोई ऐसा आश्चर्य

दिखाव जो हमारे कुलमें कभी भी न हुआ न होवे नहीं तुझको मरवावेंगे । यहसुन मंत्री शोचतारहा कुछ दिन बाद भुलावादेकर बोले । बैकुंठका बिमान हमारे पास आताहे जो आपकी इच्छा देखनेकीहो तो आपभी भेजदिये जावें राजाबोला हम अवश्य चलेंगे तबतो झटही उसने उसकी आंखों में पट्टी बँधवायी और गधेको बुलवाय राजा से कहा सवारहोइये । राजा उसपरचढ़ा, मंत्रीने उसे शहरभरेकी परिक्रमा दिवाय रनवासमें फिराय कचहरीमें लाय खड़ा किया कामदारलोग आये राजाको देख २ कर हँसनेलगे राजाने पट्टी खुलवाई और लाचारहुआ अथवा जैसे बादशाहने बीरबलसे कहा कि हम बावन सिढ्ढी जुमा मस्जिद की चढ़लेवें तभीतक हमको हँसाना नहीं तुमको सजाहोगी यह कह होशियारहुए चढ़तेगये बीरबलने बहुत से किस्से हँसने के कहे पर न हँसा निदान बीरबल और कुछभी औसान न समझ जूता निकाल बाहशाहके मारनेको सामनेहुये बादशाहको हँसी आगयी इससे जैसेके साथ तैसाही करै ॥ एक दिन बादशाह ने पूछा, बीरबल ! लड़ाईमें क्याकाम आताहै ? वह बोला " औसान , फिर एकबेर बादशाहने उस पर मत्तहाथी मारनेको छोड़दिया बीरबल पूजामें था उससमय कुछभी हथियार न मिला निदान पासमें एक कुतिया बैठीथी उसकी टांगपकड़ के हाथीके माथे पर फेंकी डरता चिंहाड़कर भगदिया इत्यादि फिर एक दिन पूछा बीरबल ! उत्तम भोजन, क्या कहा ( तसमई ) फिर कई दिन बाद जंगलमें गये बड़के वृक्षतले बैठेथे बादशाहने भुलावादेकर वही बात पूछी बीरबल ! ऊपर क्या ? उसने झटही कहा ' शक्कर ' बादशाह खुशहुआ । एकबेर सबोंने सलाह करके बादशाह से कहा यह बीरबल अगाड़ी २ अच्छा चलसकता है क्योंकि दुबलाहै बीरबलने इसबातको सुन बादशाहको चिताया कि इन सबोंको आपहुक्मदीजिये कम २ खाकर आयाकरें जिससे दुबलेहो अगाड़ी चलनेके कामिलहों यह सुन सबको भारी

संदेहहुआ इत्यादि बहुत से छोटे २ चुटकुले हैं कहांतक लिखें जगत्में प्रसिद्ध ही हैं॥

इतिश्रीमच्छुक्कोपनामकपंडितदेवीसहायकृतदृष्टान्तदीपिन्यां चातुर्य्यनिबंधोऽष्टमः ८॥

---

अथ निर्णयनिबन्धो नवमः ९॥

निर्णेतात्वीश्वरःसाक्षात्सत्यासत्यविवेचकः। सत्ये ददातिसर्वस्वं त्वसत्येहानिकारकः। असत्यवादिनो द्रव्यं सत्ययुक्ताय दत्तवान् १॥

निर्णेता जो निर्णय करनेवाला है उसे साक्षात् ईश्वरजानना वह निर्णय कर्त्ता सत्य और असत्यका प्रतिपादन कर्ता है। फिर वह सत्य विषयमें तो सर्वस्व देता और असत्यमें हानिकारक है। जैसे असत्यवादी का द्रव्य ' सत्यवादी ब्राह्मण, को दिवाया। दृष्टान्त जैसे एक ब्राह्मणके घर लड़काहुआ वह महादरिद्री था कि उसके घरमें एक दिनकाभी भोजन न था और प्रसूता की क्षुधा प्रसिद्धहीहै कि अपने बच्चेको भी खा लेतीहै। निदान वह ब्राह्मण लाचार भोजन के तलाश में चला तो राहमें उसे बीस हज़ार रुपये के कागज मिले उसने सहजही उठा लिये फिर वह कागज़ वाला भी पीछे से पुकारता आया कि मेरे कोई कागज़ देवे मैं उसे पांच हजार रुपये देऊंगा वह बोला भाई ये तो मुझको मिलेहैं उसने लेलिये और बोला भाई मेरे पच्चीस हज़ारके कागज़थे सो बीस हजार के तो तैंने दिये पांच हज़ार के और दे। वह बोला भाई मैं तो और कुछ जानताही नहींहूं मुझे तो येही मिलेहैं वह मिथ्यावादी कब मानताथा उस गरीब को सरकारमेंलेगया वहांवह लिखवाय आयाथा तौ कहनेलगा। सरकार मेरे पच्चीस हजार के कागज खोयेथे उन्में से इसनेबीस हजारके तो दिये अबमेरा पांच हजारका दावा रहा। उससे पूछा

वह बोला मैं बीस, पच्चीसको जानताही नहीं मुझे तोये कागज मिलेये । फिर सरकारने पूछा भाई तू अपना सच २ हाल कह सुनाव । उसने सबहाल ठीक २ कह दिया तबतो सरकारने निज हृदय में बिचार परमेश्वरकी उस दरिद्रीपर उदारताको समझ लयी । और ब्राह्मणसे बोले तू ये बीस हजारके कागजले तुझको परमेश्वरनेदिये और उससे बोले तू अपने पच्चीस हजारके और कहींदेख ये तो इसे बीसहजार के मिलेहैं इन्में किसी का दावा नहीं वह मिथ्यावादी लाचार हो बोला मुझे येही मिलजावें तब सरकारने उस झूठेको जूतों से पिटवाकर निकला दिया इति प्रथमः प्रदीपः १ ॥

चोर की दाढ़ी में तिनका दृष्टान्त ॥

निर्णयोजायते वाक्य मिषतोऽपिविशेषतः ॥ नष्टंतूलं त्वालब्धं श्मश्रूलग्नापदेशतः २ ॥

किसी बचनकरके मिस लगानेसे भी बिशेष निर्णयहोताहै ॥ दृष्टान्त॥जैसे किसीकी बहुतसी रुई चुरायीगयीथी वहांएकचतुर मनुष्य बोला, कहीं रुई चोरी रहसकी है उस्की दाढ़ीमें उसरुई का रोहाँ अवश्यही लगा होगा इसमें संशय नहीं । यह सुनतेही तुर्त उस चोरने अपनी दाढ़ी पै हाथ डाला कि कहीं लगा न रह गयाहो । बस निश्चय होगया वहीं पकड़ा गया रुई देनी ही पड़ी इति द्वितीयःप्रदीपः २ ॥

अथवायष्टिकाच्छेदभयतःकाटितास्वकाः ॥ त्रिह्नाद साधनंतेन गृहीतमिति निश्चितम् ॥ ३ ॥

अथवा एक चतुरने सब जनोंको एक २ छड़ीदई और यह कह दिया कि चोरकी लकड़ी दो अंगुल बढ़ जावेगी यह सुन उस चोरने अपनी लकड़ी दो अंगुल काटडाली तो फिर नापने में उसकी लकड़ी दो अंगुल कमहुयी तोनिश्चय हुआ चोर यही है इति तृतीयःप्रदीपः ३ ॥

दातारोहि दयायुक्ताश्चौरस्यापि ददतिहि। पश्चा
द्दैववशात्तेषां निर्णयोजायते स्वयम् ४॥

दयायुक्त जो देनेवालेहैं वे चौरकोभी देदेतेहैं और फिर दैवयो-
गसे आपही उनकानिर्णय होजाताहै। दृष्टान्त॥ जैसेएक खलीफा
जी किसी ठाकुरके लड़केको पढ़ाने जातेथे राहमें उसी गांवकेचोर
उनको मिले उन्होंने कहा मियाँ! जो तुम्हारे पासहै हमें देदेओ,
मियाँजीने उनको गरीब समझ अपने पासके कपड़े वगैरा कुछ
दिया वे लेकर चलदिये तो मियाँजीने उन्हें बड़े तङ्ग समझ फिर
बुलायके कहा भाई ये दो रुपये हमारी अंटमें खुराकके और हैं
तुमलेजाओ तुम्हारा कई दिन काम चलेगा तबतो चोरोंने वि-
चारा कि यह जोफिर बुलाकर देताहै इसमें कुछ दगाहै तोउन्हों-
ने पूछा बड़े मियाँ! आप कहां तसरीफ लिये जातेहैं तब उन्हों ने
उसी ठाकुर का पता बताया तबतो कांप उठे और कुछ पास से
भेट देकर पैरों में शिरधरके बोले हमारी जान बख्शिये ठाकुर
साहबसे जिकर न कियाजावे नहीं हम उसी वक्त मारे जावेंगे
मियांजी और लेओ देंगे २ करते रहे चोरोंने अपनी जानब-
ख्शाई इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

गन्धीका दृष्टान्त॥

निर्णेतुर्भाषणभया दपिजायेतनिश्चयः॥ नदत्त
वान्धनं गंधी दृष्ट्वा तद्भयतो ददौ ५॥

निर्णय कर्त्ता सरकारसे संभाषण करने के भयसेभी निश्चय
होताहै॥ दृष्टान्त॥ जैसे कोई गंधीकेपास द्रव्यरखकर कहीं चला
गयाथा आकर मांगनेलगा तो उसने नहीं दिया उस बेचारे ने
वहां के सरकार से अर्ज की उससरकारने कहा हमारी सवारी
उधरसे निकले तब तू हमारेकानके पास मुँहलगा ठहरके निक-
लजाना तोउसने वैसाहीकिया तबतो गंधीने जानलिया कि स-
रकारसे इसकीबड़ी प्रीतिहै यह जोहीचाहै सोकानहीमें कहदेता

है निदान उसे बुलाय हाथ जोड़के कहा अपना द्रव्य लीजिये मैंतो हँसी करताथा। इति पंचम प्रदीपः ५॥

कालेनतस्यसंसर्गा दपिजायेतनिश्चयः ॥ मधुगुप्तं धनंसम्यङ् निश्चितंमधुकालतः ६॥

समय पायके उसद्रव्यका किसी वस्तुके साथ रहनेसेभी निश्चय होजाताहै॥ दृष्टान्त॥जैसे किसीने द्रव्य सहतमें छिपाय रक्खाथा फिर उससहतसे कई मनुष्य रोगीहुए उनसे पूछने पर निश्चयहुआ इति षष्ठः प्रदीपः ६॥

अथवापाचकंद्रव्यं चोरितंचोरकेनच । क्षिप्तेतस्मिञ्जलेगंधे जातेजातो विनिश्चयः ७॥

अथवा किसीने हलवाई का द्रव्य चुराया और उसे जल में छिपाया तो जल में चिकनेकी गंध आने से द्रव्यका निश्चय हुआ इति सप्तमः प्रदीपः ७॥

अथवावृक्षमूलेतत्क्षिप्तंनिस्सारितं पुनः ॥ तद्वृक्षगुणारोगिभ्यां मुक्तेजातोविनिश्चयः ८॥

तथा किसीने वृक्षकी जड़ में द्रव्य गाड़ दियाथा फिर उस वृक्षकी धातुसंयोगी छालसे अच्छेभये रोगियोंके कहने से निश्चयहुआ इत्यष्टमः प्रदीपः ८॥

अथवावेष्टितंवस्त्रे कृंतितंतद्धनंगतम् । तद्रफूगरसंसर्गात्तस्यजातोविनिश्चयः ९॥

अथवा किसीने वस्त्र थैली आदिमेंसे काटकर द्रव्यचुराया। फिर रफूगरके पास जानेसे पूछनेपर कि तुमने कौन २ कपड़ा रफू किया तो उन्होंने थैलीका भी नाम लिया तब द्रव्यका निश्चयहुआ इति नवमः प्रदीपः ९॥

द्वाभ्यांप्रतिज्ञितद्रव्ये द्वाभ्यामेवविनिश्चयः॥ एको धनंगृहीत्वाथाऽपरोऽद्रित्याह्निलज्जितः १०॥

दोओंसे प्रतिज्ञा किये द्रव्यका, दोओंही से निश्चय होताहै। दृष्टान्त ॥ जैसे एकने तो द्रव्यलिया और दूसरा अकेलेपनसे लज्जितहुआ इत्यादि इति दशमः प्रदीपः १० ॥

नामांतरेणापिभवे न्निर्णयोत्रयथासुता। वीरोपनाम्ना कथितासद्योनिर्णयमागता ११ ॥

वीरां का दृष्टान्त ॥

नामांतरसेभी निर्णय होताहै॥दृष्टान्त॥जैसे किसीकी लड़की चुराईगई उसकानिश्चयनहींहुआतबसरकारने उसके मा बापों से पूछा इसका औरभी कुछनामहै तब 'बीरां, नामसे पुकारा तो उसने कान उठाये और बोलने को तयार हुई तब निश्चय हुआ इत्येकादशप्रदीपः ११ ॥

निर्णेतुरीश्वरत्वेहि नकार्य्यःसंशयःक्वचित्। कृषिकर्तुर्यथाप्रज्ञाप्राप्तराजस्यवर्द्धिता १२ ॥

निर्णेताके ईश्वरपनमें कुछभी संदेहनहींकरना दृष्टांत ॥ किसी खेतीकरनेवालेको दैवयोगसे राज्यमिला तो वहगद्दीपर बैठतेही सबनौकरोंसेपूर्ववत् कामकाज करानेलगा इतिद्वादशःप्रदीपः१२॥

प्राप्तेधनेनकर्तव्योलोभश्चेद्धानिकारकः॥ यथामुक्ताऽसाम्यलाभेपुनर्दत्तंगतंतुतत् १३॥

मिले धनमें लोभनहीं करना नहीं वह मिलाभी रहजाताहै दृष्टान्त॥जैसे किसी पर प्रसन्नहोकर मच्छने एकमोतीदिया वह विचारनेलगा कि इसके जोडका और होता तो ठीकहै तो एक चालाकने उससे वहभी मोतीलेके रखलिया कि लाते हैं १३।

मातुर्मोहोहिबलवान्नयत्येषुखलेष्वपि ॥ विवादिन्योर्द्वयोर्मात्रोर्यथादात्कंपितास्वकम् १४ ॥

जैसा मोहमाताका निजसंतानपरहोता वैसा कहींनहीं दृष्टांत ॥ जैसे दोमाता एकलड़केपर(मेराहै२)कह २ कर भगड़रहीथीं

तोसरकारने विचारके कहा अच्छा इसको आधा २ करलेओ तो वह सगी माताबोली नहीं आधा २ मतकरो इसेही देदेओ इससे निश्चयहोगया उसीको लड़का मिला॥ इतिचतुर्दशःप्रदीपः१४॥

असाध्येपणितंद्यूतमसाध्येनैव जीयते॥ सकृत्सेटकमांसस्य दानाभावेविनिश्चयः १५॥

असाध्यसे पणित जोशर्त लगाया द्यूतहै वह असाध्यही नियमसे जीता जाताहै॥ दृष्टान्त॥ जैसे किसीकी शर्तथी कि आधसेर मांस कलेजेका लेऊंगा शर्त पूरीहोनेपर सरकारपै गये वहांनिर्णयहुआ कि आधसेर मांस एकदम चाकूसे एकबेरही उतारले कम ज्यादे हुआ तो तुझको फांसीहोगी यहसुन वहचुप होगया॥ इति पञ्चदशः प्रदीपः १५॥

अप्राप्तधनिनोद्रव्यसाक्ष्यभावेऽपिजायते॥ निर्णयस्तत्प्रतिकृतेष्करणाभावतोध्रुवम् १६॥

जिससे धन न मिला उसके द्रव्यका साक्षियोंके अभावमें भी निर्णय, तिसके सदृश वस्तुनहीं बननेसेभी होताहै॥ दृष्टांत॥ जैसे कोई दोजने विदेश कमानेको गयेथे उनमें से एकघर आया अशर्फियें बँधायीं दूसरे ने उसके हाथ अपनी भी अशर्फियें घरभेजीं उसने उसके घर न दईं कुछकाल पीछे वहभी घर आया अशर्फियें न मिलीं तो उसके घरजाकर पूछा उसने कहा मैंने तो देदीथीं उनका झगड़ा हुआ सरकारमें गये, वहां यह निर्णय हुआ कि तुम अलग २ मिट्टीकी मोहर बना २ कर लावो वे वैसीही बना २ कर लेआये केवल उसहीकी स्त्री, जिसके पास मुहरनहीं पहुँचीथी उसके हाथसे अशर्फी नहीं बनी वह औरही सूरतकी बनाकर लाई तो निश्चयहोगया कि इसके घर मुहर नहीं पहुँची १६॥

इतिश्रीमच्छुक्लोपनामकपण्डितवरदेवीसहायविरचित दृष्टान्तोदीपिन्यांनिर्णयनिर्वचनवमः ६॥

अथ मिश्र निबंधः १०

## सार्वविषयिकः

### शुकदेवीसहाय शर्मणा निबद्धः

तावत् राधाकृष्ण विनोदात्मकम्मंगलमाह ॥

अंगुल्या कः कपाटं प्रहरति कुटिलो माधवः किं व सन्तो नो चक्री किं कुलालो न हि धरणिधरः किं द्विजिह्वः फणीन्द्रः ॥ नाहं घोराहिमर्दी किमपि खगपति नौ हरिः किं कपीश इत्थं राधाविवादे प्रहसित वदनः पातुवः कृष्णचन्द्रः १ ॥

एक बेर रात्रिके समय श्री कृष्णचन्द्र महाराज राधिकाजी के भवन पधारे किवाडबन्दथे लगे खटखटाने, तो प्रियाजी की नींद खुली तो बोली को किवारे बजावत है, श्रीकृष्णजी बोले हे प्रियाजी ! मैंहू,श्रीराधिकाजी-तू कौनहै,श्रीकृष्णजी-मैं माधव हूं,श्रीराधि० क्या माधव वसन्तहै, बिन अवसरही चलाआया फिर बोले-नहीं प्यारी मैं चक्रीहूं, श्रीरा० क्या चक्र चाकवाला कुलालहै तो यहां क्या कामहै। फिर बोले- नहीं मैं हूं धरणीधर श्रीरा०- तो सर्प है मुझसे क्या कहै है। फिर बोले०-नहीमैं तो सर्पमर्दक हूं,तो सर्पमर्दन करनेवाला गरुड़ है तो विष्णुजी पे जाव। फिर बोले- नहीं प्यारी हरीहूं हरि २ तो वन में जाओ यहां हरि बानर का क्या काम है। इसप्रकार श्री राधिकाजी ने इनको बात २ में हटाये तब तो मैं कृष्ण २ श्रीकृष्णचन्द्रहूं ऐसे कहके हँसदिये उनका जो हास्यरूप मंगल है वह सब जगत्की रक्षा करो यह मंगलाचरण भया इति प्रथम प्रदीपः १ ॥

गंगाधरका दृष्टान्त ॥

अर्थं किंचित्प्रदीयेताऽनर्थं च बहुदीयते ॥

गणिकायै शतं मुद्रास्त्वेको गंगाधरायवै २

अर्थ जो उचितकार्य्य है उसमें तो कुछ थोड़ाही दियाजावे औ अनर्थमें शीघ्रही बहुतसादेदियाजाताहै जैसे॥दृष्टांत॥ एकसेठ केयहां नाचकी ठहरी जिसमेंउत्तम २ बिछौनेआदि सभी ठाटलगे हुएथे। फिर तो 'जुमियां वेश्या, नाचनेको आई उसने सहजही दो घड़ी ताल ठप्पे सुनाकर डेढ़सौ १५०) रुपये इनाम सीधे किये। वहां बहुत देरसे एक गंगाधर प्रोहित भी मंत्र पढ २ के आशीर्वाद देरहाथा उसके लिये हुक्म हुआ कि इसके भी एक रुपया मूड़मारो चलाजाय पिण्डछूटे। फिर तो गंगाधरने एक रु० पाय अपनी तुच्छ आजीविकाको विचारकर एक दोहा भी कहा जैसे॥ अच्छी कीनी करनगत राखी कुलकी टेक। जुमियांको दिये डेढ़सौ गंगाधरको एक॥ यह सुनतेही सब लज्जित हुए औ प्रोहितजीकी और भी कुछ विदायी भई॥ इति द्वितीयप्रदीपः २॥

सत्यतः सुखमाप्नोति मिथ्यातो दुःखमेवच।
शंखाल्लपोड़शंखाद्धै ब्राह्मणोदुःख सुख्यभूत् ३॥

सत्यवस्तु से तो सुख प्राप्तहोता और मिथ्यावादी से दुःख होताहै जैसे शंख और लपोड़शंख से ब्राह्मण दुःख सुख भागी हुआ॥ दृष्टान्त॥ एक दरिद्रीब्राह्मणथा वह समुद्रपर जाय बैठा वहां सप्ताहबांचनेलगा समाप्त होनेपर समुद्रने आकर उसे एक शंख दिया और कहा कि यह पांच अशरफी नित्य दियाकरेगा ब्राह्मण लेकर चलदिया। राहमें एक मित्रकेघर ठहरा वहां सब हाल कहा उस कपटी मित्रने इसको बड़ी खातिरकी और वह शंख चुरालिया ब्राह्मण न देखकर बड़ा दुःखीभया फिर समुद्रपै गया विलाप करनेलगा तो उसने इसे एक और 'लपोड़शंख, दिया और कहा यह दूनी देता है पर मिथ्याही है इसे लेजा तू वहांहीं उतरना तो वही शंख तेरे पास पहुँचेगा। वह ले वहांहीं उतरा सब कही उसने दूने देने के लालचसे वह शंख फिर चु-

राया और पहिलेवाला वहांहीं रखदिया ब्राह्मण ले खुशीसे घर गया उधर उसने उस लपोड़शंखसे कहा दशअशर्फींदे वह बोला वीस अशर्फीले। फिर वह बोला लाच पचास वह बोला ले सौ, वस देने लेनेको कुछ नहीं निदान वह दगावाज शेकर बैठरहा इति तृतीय प्रदीपः ३ ॥

स्त्रीके चेलेकादृष्टान्त ॥

गुरु देवान्नजानाति स्त्री जितो मोहमाश्रितः।
गुरुदेवेन ददौ किंचित् स्त्री शिक्षातः शतंत्वदात् ४ ॥

जो स्त्री से जीताभया मोहवशहै वह गुरु देवतादिकको नहीं जानताहै जैसे दृष्टान्त ॥ एकसेठने गुरुजीको कुछभी नहींदिया वे नित्य २ आशीर्वाद देतेरहे उन्हें कह देता ऐसेही बहुत बीतगया, उसकायहहालथा "पलक पक्षकी घड़ी महीना चारवर्ड़ीकीसाल। फंहो वह कब आवेगी काल्ह", निदान वेचारा ब्राह्मण हार लाचारहोकर उसकी स्त्री के पास जायके पुकारा यजमान! यह तो कुछ भी नहीं देताहै स्त्री बोली-महाराज! अभी क्या हुआहै यह तोयोंहीं कल्ह २ किये जावेगा। लीजिये। यह मेरी नथ आपरखिये और लहजा देखिये। गुरुजी ने नथ ली वह सेठ घर आया सेठानीने रसोई पानी कुछ भी न किया था उसने पूछा तो कहा मेरी नथ जातीरही, वह बोला आप रसोई पानी कीजिये अभी तो नथ बनीजाती है देर नहीं, झट आदमीसे कहा वह सौकी जोडी मोती पचासकी नथ ले आया तुर्तही दो घड़ी में तयार होकर सेठानीजीको पहिराई गई तो सेठानी ने कहा कहिये महाराज! यह सच्चा ' चेला ' तुम्हारा या मेरा ॥ इति चचतुर्थप्रदीपः ४ ॥ नेकीका फल बदी दृष्टान्त ॥

श्रेयःकरणेऽश्रेयोऽश्रेयःकरणेभवेत्सौख्यम्।
सम्यग्दृष्टह्युभये श्रेयःश्रेयोऽशुभोऽशुभदः ५ ॥

भला करने से बुरा और बुरा किये भला होता, यह स्थूल

दृष्टिवालों का कथन है । और इनदोनों को सम्यक् विचार दृष्टि से देखने में भला भलाही और बुरा बुराहीहै ॥ दृष्टान्त ॥ दो ब्राह्मणों के लड़के आपस में मित्र थे एक सवेरे उठ स्नान पूजन करता फिर पढने लिखने में दिन बिताता । दूसरा उठतेही चोरी के विचार मे निकल धनलाय उससे जूआ वेश्या गमन आदि कुकर्म में समय खोता था. एक दिन वह ब्राह्मण, बहुत सबेरे न्हाने को उठा तो, राहमे उसके पैर में ऐसी शूल लगी जो पैरमें पार होगई निदान वह महाकष्टभागीहो खाट में पड़ा उधर उस कुकर्मी ने उसी दिन राहमें हजार रुपये की थैली पाई वह प्रसन्न होता मित्रके घर आया और उसविचारेको धमकानेलगा कि अरे मैं तुझको नित्य २ समझाताथा सवेरे नंगेपैरों उठके नहाने न जायाकर फिर सवाद लिया पैरमें शूल घुसी और कभी किसी गढेमें पड़के प्राणदेगा। देख हमको यह "थैली" मिलीहै उसने कहा भाई हरी-छा । मैं क्या करूं निदान ब्राह्मण, लट्ठी के सहारे २ गुरूजीके पासजाय प्रणामकर बोला महाराज ! मेरे में यह कष्ट पड़ा और उसे थैली मिली यह क्या?तव गुरूजी उनका कर्म विचार के कहनेलगे भाई जो हुआ सो ठीक हुआ तू चिन्ता मतकर हम कहते हैं हे ब्राह्मणवर्य्य ! तेरे पूर्व जन्मका भारी पाप है तिससे तुझको इस जन्ममें शूलपिर चढना लिखाथा पर तेरे इस स्नान पूजन आदि सत्कर्म करनेसे वह शूलीकी शूल पर टलगई । और उसको इस जन्ममें ग्राममिलता सो कुकर्म करने से थैलीही मिली इससे ठीकही है ॥ इति पञ्चमः प्रदीपः ५ ॥

राम के घर न्याय है पर देर में ॥

कुकर्मणः फलं भूयात्कर्तुः किंचिद्विलंबतः ।
गृहदाहे सप्तपुत्राजातास्तु निहताः सकृत ६ ॥

कुकर्म करनेवाले को फल मिलताहै पर कुछ विलम्बसे

जैसे॥दृष्टान्त॥किसीजाटनीकोकिसीस्यानेनेकहा तूएकघरजलाव तेरेपुत्र होगा। उसने जलाया उसके साथ कई घरजले बहुत से नर, पशु, पक्षी आदि जीव मरे दैवयोग से उसके पुत्रहोगया। फिर तो उसने दूसरी वेर भी जलाया और पुत्र होगया। ऐसेही वह सातबेर जलातीगई और उसके सातपुत्र होगये।इसव्यवस्था को एक गरीब चमार जानता था वह सर्वत्र "राम के घर न्याय नहीं" ऐसे कहता फिरतारहा। निदान किसी समय उस जाटनीके सातों पुत्र और आठवां उसका पति "जाट" ये सबचोरों से लड़के कट मरे फिर तो सात रांड थे और आठवीं आप ऐसे उनका अठरंडा, खंड वंड हो दुःख पाय २ के मरा फिर उस चमार ने कथन बदला कि "राम के घर न्याय है पर देर में" इति प्रष्ठ प्रदीपः ६॥

प्रार्थितो नहि कुर्वीत निराकृत्यागतं हठात्।
दुःखी संजायते नूनं वांताशीव यथा यतिः ७॥

जो प्रार्थना किया अर्थात् कहे से न करै और आये पदार्थ का निरादरकरे वह अवश्य दुःखी होताहै जैसे वांताशी साधु पछताया॥दृष्टान्त॥एकसाधु महात्मा थे बड़ेनिरपेक्षीहोरहे थे, पास में कहीं भोजन का निमंत्रण आया तो न लिया कहा हमकहीं नहीं आते जाते हैं फिर शिष्योंने आकर बहुतही साथ लेजाने को कहा पर वावाजीने एक न मानी। निदान वे विचारे हारे वहांहीं पहुँचाते भये थाल सब तयारी से भरा अगाड़ी रक्खा। वावाजी बोले हमको कुछ अपेक्षा नहीं लेजाओ तुम्हारा भोजन भाजन, वे न माने तो उसे उठाय धूनी में डाल दिया वे मन मलीन हो चलेगये। फिर तो वावाजीने विचारा कि देखो थाल में कितनी २ तयारियां थीं तब तो उस राखमें से उठाकर अध जला अन्न चखने लगे पर वह सवाद कब आनाथा पछतावा किया तोतृष्णाबढ़ी निदान रातभये उठ संगते बनकेवहांहीपहुँचे

तब एक शिष्य अन्न लेकर दीपकलिये इनके पास आया ये पिछाड़ी सरकते २ मूर्खनेता के तरह गढ़ेमें गिरे ॥ इति सप्तमः प्रदीप ७ ॥

तेलीकादृष्टान्त ॥

नीचोधनिनोगृहेऽपिसन्न त्यजतिप्रकृतिंनिजामसौ ॥
राज्ञानिहितोऽपितैलिनः पुत्रस्तूलमुहुर्दधावह ८ ॥

नीच, धनवान्‌केघरमें भी जायरहे पर वह निज स्वभावकर्म को नहीं छोड़ताहै जैसें॥ दृष्टान्त ॥ एकबादशाहने अपनीवेगमसे कह दिया था कि तेरेकाला लड़का होगा तो तुझेसजा दीजावेगी दैवयोगसे वह लड़का कालाही हुआ, तो भयके मारे एक तेली का भूरा लड़का लाकर रक्खा और उस लड़केको तेलीके घर पहुँचाया दोनों लड़कों का यह हाल हुआकि तेलीके घर बादशाहका लड़का था वह तो अपने को थानेदार और लड़कों को और २ अफ़सर बनाय कइयों को चोर बना २ कर उनके मुकद्दमें फैसल किया करता था। और वह तेलीका बादशाह के यहां तकियेमेंसे रुई निकाल २ कर कमान बनाकर धुना करता तो बादशाह, इसहाल को देखके बहुत उदासहोता लोग कहते कि बालकोंके अनेक २ खेल होते हैं। निदान एकदिन बादशाह से किसी बुढ़ियाका मुकद्दमा बिगड़ गया इन्साफ न होसका वह बुढ़िया जहां तहां पुकारती फिरी कि मैंने बादशाहसे इन्साफ नहीं पाया। उस लड़केने सुनतेही उसका मुकद्दमासाफ़ २ कर दिया वहखुशहो पुकारती फिरी कि बादशाहसे कुछ न होसका और तेलीके लड़के ने इन्साफ किया यह खबर शहरभरे में फैली बादशाह सुन खिसियायके बेगमोंपर तलबी कर कहने लगा तब जवाब मिला कि आपके डरसे यह तेलीका लड़का यहां मँगवाया और वह वहां पहुँचाय दियाथा। यह सुनतेही तुर्त बादशाहने उस अपने लड़केको बुलवाकर गद्दीपर बैठाया इति अष्टम प्रदीपः ८ ॥

असाक्ष्यंनैवकुर्वीत कार्य्यंप्रायःसुबुद्धिमान् ॥ मुनिः प्रियाप्रलंभेन भिक्षान्मृत्युमवापह ९ ॥

बुद्धिमान् किसी कामको साक्षी विना गुप चुपही न करेजैसे दृष्टान्त ॥ एक बावाजीथे उनका किसी लड़कीपर चित्त चलायमान भया तो उसके मा वापोंसे कह किसी बहाने से संदूक में मुँदवाकर उसेगंगामें वहवा दी वह एकसुन्दर पुरुषकोमिलीऔर उसने सब हाल [illegible] कहा उसने बावाजीकी भेट के लिये एक रीछ उसमें [illegible] छुटवाया बावाजी राहदेखतेही थे सं[illegible]क नि[illegible] आश्रम पे लेगये चेलोंको कहीं वाहर भेजदिये आपअकेलेने एकांतमें जाय उसेखोलातो वह झुँझलाया रीछ इनको फाड़के एकघड़ी में खागया इति नवमप्रदीपः९॥

अथबुद्ध्यतिशयनिबन्ध ॥

मत्स्यींदृष्ट्वाधनंदातु मुद्यतोऽपिनिवारितः ॥ मत्स्यमानयएतस्या मैथुनायेतिनिश्चितः १० ॥

एक बादशाहको किसी ने एक मछली दी उसकी रंगत बड़ीही अजूबा थी बादशाह बहुतसा द्रव्य देनेको तयार हुये तब एक मंत्री बिचार के बोला कि भाई तू इसके जोड़े के लिये दूसरा मच्छ भी लादे तब सब रुपये दियेजावेंगे। यह सुन वह चुपरहा इति दशमप्रदीपः १० ॥

अन्धोऽन्धरात्रौदीपेन गच्छन्मार्गेतिरस्कृतः ॥ उवाचहैवंदीपोऽयं हृदंधानांप्रकाशकः ११ ॥

एक अन्धा, अँधियारी रातको कन्धेपर पानीका घड़ाधरे और हाथ में एक बत्तीभी लिये चलाजाताथा किसीने कहा भाई! तुम्हें यह बत्ती, क्या सहारा देतीहोगी। वह बोला यह दीपक मेरे लिये नहीं है यह हिये के अन्धोंके लिये है कि जिसमें कोई मेराघड़ा न गिरादे इसलियेबत्तीलियेहूं इति एकादशप्रदीपः११ ॥

धृष्टाद्बिभेतिराजापि किमुतान्येजनाऽबुधाः॥ दत्त्वा चपेटिकांवैश्ये राज्ञिदत्त्वाददौधनम् ॥१२॥ कृतेऽपराधेतेनाऽथ राज्ञाश्यामसुखीकृतः ॥ उवाचक्रियतामर्द्धं नोचेद्ज्ञास्यंतिभूपतिम् ॥१३॥

धृष्ट पुरुषसे राजाभी डरता है फिर सीधे साधे जनोंका क्या कहनाहै दृष्टान्त॥ एक लुच्चेने एक बनियेके थाप मारी वह पुकारा सरकारने लुच्चेपर आठआना सजाकी उसने रुपया निकालधरा कि कहां तुड़ाता फिरूंगा एक थाप आपही खा लीजिये फिर सरकारने कहा इसका काला मुँहकरदेओ तब वह बोला एक तर्फ का काला करजा नहीं लोग कभी यही न जानलें कि सरकारही इसरूपसे फिरतेहैं सरकार सुनचुपहोरहा इतिद्वादशप्रदीपः १२ ॥

धृष्टःप्राप्तधनोप्येवं सहतेऽन्यसुखंनहि ॥ परस्यशंखतोजाते सुखेदुःखमुथाकरोत् १४॥

धृष्ट पुरुषको धनमिलनेपर भी पराये सुखको नहीं सहता जैसे दृष्टान्त॥ एकईर्षी जनको कहीं से शंख मिला वह जोमांगौसो हीदेता था पर उससेदुगुना पड़ोसियोंके होजाताथा । वहअपनेघर शंख रखके बिदेश चलागया और कहगया कि यह मांगौसो ही देता है । पीछे से इन्होने मांगा सो ही दिया इससे उसके पड़ोसियों के भी बहुतसा द्रव्य होगया वह आया उनको वैभव देख बड़ा दुःख पाया और कहनेलगा हे शंख ! तू मेरी एक आंखफोड़ दे जिससे उनकी दोनों फूट जावें तब तो उसकी एक आंखफूटी और उनसबोंकी दोनों २ फूटगयीं वे अंधे होगये फिर उसनेकहा हे शंख एककुआँ मेरेघरकेआगे खुदजावे तब ऐसाहीहुआ और उनके घरके आगे दो २ खुदे तबतो वे बिचारे अंधेहुए कुओंमें गिरनेलगे निदान वे सबमरे और वहही जीता रहा इति त्रयोदश प्रदीपः १३॥

चौबेलोगों का दृष्टान्त ॥

उक्तं भोजनं तृप्तस्य चूर्णं किंचित्सुभक्ष्यताम् ॥
उवाच चावकाशश्चेद्भक्षये किं न शर्कराम् १४ ॥

दो चौबेलोग कहीं से जेमकेचले एकने दूसरे से कहा भाई देख तो मैंने जूता किसी औरको तो नाहीं पहरलयो है मुझ से नीचाहोकर देख्यो नाहिंजाय है। वह बोला मोको तो तूही नीहिं दीखैहै मैंने का तोसैं थोरोखायो है फिर किसीसे बोले पेट दूखैहै कोई बोला नेकसो चूरन खायलेओ वे बोले अरे चूरनकी जगेंहोती तो पेड़ाखांड़ही और न फांकलेते अबतू चूरन खवावैहै॥ इति चतुर्दश प्रदीपः १४ ॥

सहजेनैव केनोक्तं वृषारूढस्य भक्षतः । वृषपृष्ठेकथं भुंक्षे विना गोमयमण्डलम् ॥ उवाच येन पूतेन यांति लोकाः पवित्रताम् । गोमयेनस्तदेवास्मिन् भोजने काक्षतिर्मम १५ ॥

किसी साथकेमें एकको बैलकी पीठपर चढ़ खाते जाते को देखकर कहा कि इसपर कैसे खाताहै? गोबरसे चौकालगाकर भोजन करना चाहिये। वह बोला भाई जिस गोमयसे जगत् भर पवित्रहोता वहही इस बैलके पेटमें है फिर क्यादोषहै यह सुन वह बेचारा चुपहोरहा ॥ इति पंचदशप्रदीपः १५ ॥

माथुराः कुर्वते स्वामिन् वृथा सर्वत्र भोजनम् । विचार्य यवनेशेन प्रेषिता गर्तकर्षणे ॥ ते तु तूर्णं ततः किंचित्कालेनैवाविलम्बतः । अकर्षन् बहुगर्त्तानि दृष्टाराज्ञा विधर्षिताः ॥ ऊचुर्दीनाहि ते दृष्टाः शृणुत्वं यवनप्रभो । यूयं तु मरणप्राया अस्माकं गर्तकर्षणम् ॥ श्रुत्वा विलज्जितः सोथा पराधक्षममाचरत् १६ ॥

किसीने बादशाह से कहा ये मथुराके चौबे मुफ्तका खातेहैं इनसे भी कुछ काम लियाजावे यह सुन उनको हुक्महुआ कि तुम हमलोगोंकेलिये 'कबर' खोदाकरो। उन्होंने सुनतेही खोदनाप्रारंभ किया तो कुछही कालमें हजारहों गड्ढे खोदडाले किसी दिन सवारी निकली तो पूछा ये गड्ढेक्योंहुए। किसीने कह दिया चौबेलोग खोदाकरतेहैं। बादशाहने उनको बुलवाकर पूछा तुमने एक साथही इतनी कबरें क्यों खोदीहैं वे बोले मियांलोगो आपलोगों को तो मरनाही है और हमें कबरें खोदनीहीहैं पांच सात हज़ार तो खोदें ये भरें इतने और तयार होती जाती हैं। बादशाह सुन चुपहुआ और उनको थँभादिये॥ इति षोडश प्रदीपः १६॥

दो चालाकों का दृष्टान्त॥

दुर्जनेभ्यो विभेतव्यं मायिभ्यस्त्वरितंजनाः॥ दत्ता मुद्रा नहिद्वाभ्यां भोजनंतु कृतं यथा १७॥

हेजनो! मायावी खोटे जनों से डरके रहना चाहिये। जैसे दृष्टान्त॥ दो चालाक, शैरको चले बाजार में मिठाई खानेकी दिलमें आई हलवाईकी दूकान पहुँचे एकने रुपये की मिठाई तोलाई और वहीं खानेलगा। दूसरा पहुँचा उसने भी रुपये की तोलाई लेके चला हलवाई ने रुपयामांगा तो कहा अभी तो तुझे दियाहै दो २ कहां से लावें वह झगड़ा करनेलगा लोग अकट्ठे होबोले भाई! यह बैठा खारहा इससे पूछना चाहिये। वह झटसे निकलकेबोला भाई! कहीं मैंने रुपया दिया उसे भी न भूलजाना। निदान बेचारा हलवाई, चुपहोबैठाइत्ति॥ सप्तदशप्रदीपः १७॥

अनभिज्ञोऽप्येवमेवंवर्ज्यस्तेनयथाततः॥ ताम्रखण्ड सिताक्रीता महद्रत्नंप्रसारितम् १८॥

अनजान से भी ऐसेही बचना चाहिये जैसे॥ दृष्टान्त॥ एक गँवारने पैसे की मिश्रीली उसने उसके हाथ पै धरी वह खागया

और "बहुत अच्छी" कहकर कपड़ा फैलादिया। बेचारे बनिये को गैलछुटानी कठिनहोगई इत्यादि जानों॥ इति अष्टादश प्रदीपः १८॥

अशुद्धीमें किसान का दृष्टांत॥

प्रायोऽशौचं जायतेहि योषितांनाऽत्रसंशयः। गंडूषाकरणेपत्नी गुदाऽशुद्धि मुदाहरत् १९॥

अवश्य करके स्त्रियां, अशुद्धरहती हैं इसमें संदेह नहीं करना जैसे॥ दृष्टान्त॥ एक किसान अशौच होकर कुल्ले करने भूलगया और रसोई खानेलगा उसको याद आई तोकहके पछतानेलगा। उसकी गँवारी बोली 'ओःकेःशै' मैंहतो कई दिनताहीं चूतड़ भी नाहीं धोवो करूँहूँ,, किसान के कानके कीड़े झड़गये॥ इति एकोनविंश प्रदीपः १९॥

घंटाकर्ण राक्षस का दृष्टान्त॥

शब्दमात्रान्नभेतव्य मज्ञात्वा शब्द कारणम्॥ शब्दहेतुमभिज्ञाय वेश्याऽप्यासीत्सुपूजिता २०॥

केवल शब्दहीसे डरजाना न चाहिये बिना उसशब्दके कारण को जाने जैसे॥ दृष्टान्त॥ एकबंदरके कहीं से घंटाहाथ लगगई वह आधीरात्त के समय तिस घंटाको बजाताहुआ आया तो बहुत जनों ने घंटाकर्ण राक्षसकी बात सुनीथी वे डरकर मरने और भयभीत हो भगनेलगे। निदान एक वेश्याने इस बातको जानली वह लोगों से बोली जो मुझे हज़ाररुपये देओ तो मैं उसका परिहार कर देऊं। उन्होंने देदिये तो उस वेश्याने बंदरके आगे खानेकी चीज धरी वह खानेलगा उसने घंटा उठालिया सब निर्भय हो सुखसे रहनेलगे॥ इति विंशप्रदीपः २०॥

गूजरी और पण्डितका दृष्टान्त॥

राभनामदृढानौकासंसारार्णवतारिणी॥ विश्वासिनां नचान्यस्यगुजरीपण्डितौयथा २१॥

रामनाममयी नौका, संसार सागरसे पार उतार देती है पर विश्वासी जनोंको और को नहीं जैसे गुजरी पंडितका दृष्टान्त ॥ एक गुजरी मथुरामें दधिबेचने आया करती तो आते २ दोशलोक कथाके भी सुनलिया करतीथी। एकदिन उसने "रामनाम दृढानौका संसारार्णवतारिणी" सुनातो इस पदको अपना हित-कारक समझके विचारा किमैं जो टका आतेजाते उतराईदेती हूं बृथाहीहै बस फिरतो वह तटपर पहुँच ओढनीबिछायके राम नामरूपनौ [illegible]" स्मरण करके झटही यमुनासे पा [illegible] सेही नित्य २ आती जातीरही त [illegible] उतने मेरे कईटके ब-चाये एकदिन इसे न्योता तो देना चाहिये तो बोली पंडितजी! आपको न्योता है पंडितजी बोले बहुत अच्छा चल वह बोली आप नेक सन्ध्या वन्दन करो मैं आती हूं बोले जल्दी आव। आई तो पं०तयारही पाये साथ होलिये गुजरी, पुलकी राह छोड़के तिरछी २ चली तो पं० ने विचारा ये रांड कहां लेजाती है डुबोवेगी तो नहीं फिर शोचा कि इसने टका बचाने को गुप्त थोड़े जलकी राह यादकर राखी है। जब पहुँचे तो गुजरी वैसे-ही अधर २ लहँगा उठाये चलती गई पं० पिछाड़ी २ चले जब कमर तक जल आगया तब घबराये और जलकी ढकेल लगी तो कहीं लुटिया कहीं पगिया, कहीं धोती, कहीं पोथी, पं०जीने सोधी रामघाटकी राहली तो पुकारे अरी रांड मरवाये २ तब गुजरी बोली अजी पं० आप किधर बहे जाते हो उन पदों का स्मरण करो पं० बोले अरी रांडतूने हमसे पहिलेही क्यों न पूछ लयी यह तो जिस के हृदय में खूबजाप उसी को फल देता है हम तो कथन मात्र करते हैं निदान पं० विचारे कहते २ गुप-चुप हुये ॥ इति एकविंश प्रदीपः २१॥

[illegible]

॥ मातापिताकी सेवामें तपस्वी परिडतका दृष्टान्त ॥

येयेदेवाः सर्वलोकप्रसिद्धा स्तेतेसर्वेभावभक्त्यार्चनीयाः ॥ मातापित्रोर्नाऽत्रदेवत्वतर्कस्सन्निर्णीतः पण्डिते नानुभूतः २२ ॥

जो २ देवता समस्त लोकमें प्रसिद्धहैं वेसब भावभक्ति सेही पूजेजाते हैं अर्थात् उनके नामकी मूर्तिबनाकरही पुजतीहैं। और माता, पिता इनके देवपन मे कुछ संदेहनहीं ये प्रत्यक्ष मूर्तिमान् देवहैं यह पक्ष श्रेष्ठजनोंसे निर्णयकियागया और एक पंडित करके अनुभव कियागयाहै जैसे ॥ दृष्टान्त ॥ एकब्राह्मण, अपने घरसेनिकलगया. उसकेमावापउसविनविलापकरते औमहादु:ख पातेरहे। वह काशीजी पहुँचा वहां बहुत शास्त्रपढ़ा और भजन तपस्या भी बहुतहीकिया। फिर वहांसे चला राहमें वृक्षकेनीचे बैठाथा ऊपर चिड़ीने बीटकरदी तो पंडित ने क्रोध दृष्टिसे उसे भस्मकरी वह खटपटाकर आगिरी पंडितको बडाअहंपद होगया। फिर चला २ एक नगर में आया एक ब्राह्मणके घर भिक्षामांगी उसकी पतिव्रतास्त्री अन्नलेआई सोही उसके पतिने, जलमागा तो वह उसे भिक्षानदेकर अपने पतिको जल पिलानेगई। फिर तो पंडितजी मनमें जले और लगे उसकी ओर एकसा दृष्टि मारने वह पतिको जल पिलाय आज्ञा लेकर आई औ पंडित को भिक्षादेनेलगी, पंडितजी उसको एकटकके घूररहे तब वहपतिव्रतावोली कि ऐसीक्या वहचिड़ियाहा तोनहींहूं जो जलायगिराओगे। तवतो पंडितजी का सब मुलम्मा भड़गया अर्थात् निर्दुष्ट सत्य पतिव्रता पर दृष्टिछोड़नेसे निर्जजपतप सबनष्ट कियावस कोरे कोरे 'पंटाजी' होबैठे और लगे उस सतीसे प्राथेना करने कि मुझे उपदेश कीजिये। तव वह बोली आपतपस्वी ब्राह्मण हो मेराअधिकार नहीं जाओ। सदना के यहां तुम्हें आपहीसे उपदेश होजावेगा। तव वह वहॉ से चल सदना को पूछता २

दुकानपर पहुँचा, वहां मांस विकता देख ग्लानिसे दूरखड़ारहा और ब्राह्मणी को गाली देनेलगा। तव सदना ने उसका अभिप्राय समझकर अपने नौकर से कहा इसको हमारे मंदिर पै लेजाओ वे लेगये वह वहाँ पहुँचा देखता क्या है कि सुन्दर मन्दिर में रत्नजटित सिंहासन विछा उसमें उसके मा बाप विराजरहे औ उनकी सांगोपांग षोडश उपचारों से पूजा होरही है। यह चरित्र देखतेही पण्डित को भी निज मा बापोंकी याद आई शीघ्र वहाँ से चल निजघर पहुँचा और उनकी यथावत् सेवा करने लगा ॥ इति द्वाविंशप्रदीपः २२ ॥

राजाके साक्षीभूत रामसे रक्षित सतीका दृष्टान्त ॥

पश्यतिन कोऽपियदिचेत् रामःपश्यति जगज्जनयितासौ ॥ राज्ञःसाक्षीभूतोहत्वासैन्यंररक्षसतीम् २३ ॥

जो कोई भी न देखे तो जगदुत्पादक श्रीराम, तो सबको देखताहै जैसे राजा करके साक्षीकिये राम, ने प्रकटहो राजाकी सेना हतकर तिसपतिव्रता की रक्षा की ॥ दृष्टान्त ॥ एक ब्राह्मणी पतिव्रता थी वह अपने पतिको साथ लेकर एकतीर्थपै गई वहां एकराजा भी आया वह इसके तेजस्वी स्वरूपको देखकर मोहित होगया। तो उनको कुछ लोभदेनेलगा और न माने तब 'राम' को बीचमें साक्षीदेकर उनको सवारी के साथ लिवायलाया। राहमें महा उद्यान विषे ब्राह्मणको मरवाडाला वह ब्राह्मणी रो२ कर पिछाड़ीही को देखतीरहीं तब राजाबोला ब्राह्मणि! अबतू किसेदेखतीहै संतोषकर आनन्दमें रहु। तुझे किसी बातकी कमी न रहेगी पीछे फिर २ देखनेसे कुछ कामनहीं सरता। ब्राह्मणीबोली रेदुष्ट मैं उस राम को देखतीहूं जिसको तैंने बीच में दियाथा वह कहांहै अरेक्याईश्वरभी झूठा साक्षीहोवेगा। निदान यह कह २ के पिछाड़ीको देखते २ 'श्रीरामचन्द्रजी महाराज' की मूर्त्ति देखपड़ी जो धनुष्बाण धारणकिये और लक्ष्मण

भरत, शत्रुघ्न जिनके साथ ऐसे इनको देखतेही ब्राह्मणी का रोम२ हर्षिताभया और राजा भयभीत होगया। तबतो तुर्तही 'श्रीरामजी' ने सेना सहित राजाको हतकर उसके पतिको शीघ्रजिवाया और हाथजोड़ ब्राह्मणीसे बोले हे देवि अबहम को क्याआज्ञा है ॥ इति त्रयोविंशप्रदीपः २३ ॥

एकस्मिन् साध्यमानेहि सर्वं सिद्ध्यत्यसंशयम् ॥ यथापाचनवेलायां शास्त्रार्थस्यनिदर्शनम् २४ ॥

एकको साधनेसे निस्संदेह सभी सिद्धहोताहै-और दुविधामें दोनों जाते हैं जैसे ॥ दृष्टान्त॥एक विदेशी पंडित शहरमें पंडितके पास शास्त्रार्थ करनेगया वहरसोई बनाताथा इसने जल्दीमचाई तो उसे अवसानआया कि दालका रँधतापात्र नीचेदेमारा और कहा आव पहिले शास्त्रार्थही करलें इससे एकही बात एकचित्त में होतीहै चाहो सो करलेओ ॥

इतिश्रीमत्शुक्लोपनामकपंडितवरदेवीसहायविरचित दृष्टान्तोद्दोपिन्यांमिश्रनिबंधेचतुर्विंशःप्रदीपः २४ ॥

मिश्रनिबंधे प्रदीपः २६ ॥

सुतं पतन्तं प्रसमीक्ष्यपावके नबोधयामास पतिं पतिव्रता ॥ बभूवतस्याव्रतभंगशंकया हुताशनश्चन्दनपंकशीतलः १ ॥

एकपतिव्रता, निजपतिके पैर दबातीथी, उसका लड़का,खेलते २ अग्निके पासजाय उसमें गिरभी पड़ा पर उसने निज पतिकी निद्राभंगहोने के कारण उसे नहीं सँभाला। निदानउस पतिव्रता के व्रतभंगहोने की शंकासे वह अग्नि चन्दन समान शीतलहोगया,लड़का उसमें ज्योंका त्यों खेलतारहा पतिनेजागतेही लड़केको पूछा तो उसने अग्निमें गिरा बताया वह झट से जायदेखे तो वैसेही खेलरहाहै ॥ इति प्रथमः प्रदीपः १ ॥

धूर्त्तता विषयके दृष्टान्त ॥

शठस्य शाठ्यं शठ एव वेत्ति नेवाशठो वेत्त्यशठस्य शाठ्यम् ॥ छुछून्दरी भक्षति लोह दण्डं कथं न गृध्रेण हृतःकुमारः २॥

शठकी शठताको शठही जानता है और कोई नहीं। जैसे दृष्टान्त॥ कोई वैरागी एक गृहस्थीको अपना लोहका दंड सौंप गया था उसमें मोती छिपेथे। फिर उससाधुने आकर मांगा तो कहा उसे तो छछूंदर उठालेगयी खागयी होगी। वह चुपकाहो-रहा कभी उसके लड़केको वह साधु भी संगलेजाकर छिपाय आया उसनेकहा लड़काकहांरहा तो बोला लड़केकोभी चीलले गयी वहबोला कभी लड़कोंको चीलले जासक्तीहै वहसाधु बोला जो छछूंदर लोहका डंडाखायसक्तीहो तो लड़केको भी चीलले जासक्तीहै॥ इति द्वितीयप्रदीपः २॥

शठम्प्रतिचरेत्शाठ्यंसादरंप्रतिचादरम्॥ शुकस्योक्तन्तितंपुच्छंतेनसुमुण्डायितंशिरः ३॥

शठके प्रति शठताही करनी और आदरवाले के साथ आदर करना जैसे दृष्टान्त॥एककी स्त्री व्यभिचारिणी थी उसकेघरमें एकतोताथा॥वह उसके पतिको आतेही सबहाल कहदियाकरता। एक दिन उसस्त्रीने क्रोधकर उसकी पंखउखाड़के बाहर फेंकदि-या। पतिने आयपूंछा तो रोकर कहदिया बिल्ली लेगयी वहमूर्ख सुनके चुपहोरहा। और वह तोता घिसटता २ शिवालेके गुम्म-ठमें जायघुसा वहां वह पूजाकरने जायाकरती थी एक दिन वह गुम्मठके भीतरसे बोला "प्रसन्नोस्मि, वरंब्रूहि" प्रसन्नहूंवरमां-ग॥ तब वह बोली हे महाराज! जो प्रसन्नहो तो मेरे पतिको अंधाकरदेओ जिससे मैं मनमाने काम कियाकरूं। तब तोता बोला तू अपना शिर मुँडवाकर हमारे सन्मुख आव तेरा कार्य सिद्धहोगा। वह झटही मुँडवाकर सामने आई तोते की पंखन-

यारहोगयी थी उसे दिखाई देकर उड़गया वह खिसियानी रह गयी इससे जैसे के साथ तैसाही करना चाहिये ॥ इति तृतीयः प्रदीपः ३॥

अहं मुनीनां वचनं शृणोमि शृणोत्ययं वै यवनस्यवाक्यम् ॥ न चास्य दोषो न च मे गुणो वा संसर्गतोदोषगुणाभवन्ति ४ ॥

किसी समयकी लूटमें एक सिपाही के दो तोते हाथलगे उनमें एक तोता ब्राह्मणका था औ एक मुसल्मानका था वे पास २ ही रहाकरते तो सिपाही उन्हें अपने सरकारके यहां लेगया वहां सवेरा होतेंही ब्राह्मणके तोतेनेतो "मंगलं भगवान् विष्णुः" तथा "मेघैर्मेदुरमंबरं" कहके गीतगोविंदके अच्छे २ पद कहे तो उन्हें सुनके वह सरकार प्रसन्नहुया और उस दूसरे से कहा अबे तूभी कुछ पढ़ वह बोला "दः बहनचोद" सुनके कहा अबे क्या बोलताहै फिर बोला "दः सूअरके बच्चे" तब तो तुर्तही सरकारने कहा इसकी गरदन् काटो जब गर्दन कटने लगी तब उस ब्राह्मणकेनें "अहंमुनीनां" यह श्लोकपढ़ा। तात्पर्य। मैंतो मुनिजन ब्राह्मणों के बचन सुनतारहा और यह यवन म्लेच्छों के बचन सुनतारहा है सो नतो इसके गाली देनेका दोष है और न मेरे श्लोक कहनेका गुणहै येतो दोष, गुण, संसर्ग साथरहनेसेही होजातेहैं ॥ इति चतुर्थः प्रदीपः ४॥

सहसाविदधीतनक्रियामविवेकःपरमापदांपदम् ॥ वृणुतेहिविमृश्यकारिणंगुणलुब्धाःस्वयमेवसम्पदः ५ ॥

कामको शीघ्रतासे न करे यह 'अविवेक-विनविचारना' महा आपत्तियों का स्थानहै। क्योंकि विचारके करनेवाले पुरुषको तो गुणों के लोभवाली संपत्तियें आपही चाहती हैं अर्थात् किसी कामको जल्दीसे न करना किंतु विचारके करना इसमें दोदृष्टान्त। एक ब्राह्मणके पास तोताथा उसने उसको परिश्रम

करके "अत्र कः संदेहः" 'इसमें क्या शक है' यह पढाया फिर उसे बेचनेको गया एक शाहूकारने पूछा 'तोतेका क्या मोलहै ! उसने कहा 'लाखरुपये' तब बनियाँ बोला ऐसा इसमें क्यागुण है उसनेकहा मेरातोता, संस्कृत बोलताहै इससे पूछलीजिये। शाहूकारने पूछा अरे तेरी कीमत लाखरुपये ? तू संस्कृत बोलताहै? वह बोलदिया " "अत्र कः सन्देहः" बस बनियेंने झट ही लाखरुपयेदेदिये उसेघरलेगया-वहां "चुग्गाखावेगा, पानीपीवेगा" ऐसे पूछतारहा वह "अत्र कः संदेहः २" कहतारहा फिर शोचा कि इसे औरभी कुछ आता है ? तो पूछा तोते! भूसाचरैगा कहा 'अत्र कः संदेहः' फिरकहा 'मरैगा' कहा 'अत्रकःसंदेहः' तबतोजानालिया कि इसे सिवाय 'अत्र कः संदेहः' के और कुछभी आता जातानही है। फिर हार लाचार होकर कहा 'अरे ये लाखरुपये कूयेमेंही डालेगये तो कहा 'अत्रकः संदेहः' बेचारा बनियां अपने घरमें रोकर बैठरहा ॥ इति पंचमः प्रदीपः ५ ॥

## "सहसाविदधीतनक्रिया" परदूसरा दृष्टान्त ॥

एक पंडित लड़ झगड़कर अपने घरसे निकलगया फिर बीसबर्षमें आया तो उसकी स्त्रीको गर्भथा उससे लड़काहो पलकर समर्थहोगया वे दोनों माता पुत्र एकठौरही पास२ सोरहेथे। जूता उसका बाहर खुलरहाथा उसपण्डितने विचारलिया कि अवश्य ये जारकर्म करती है परपुरुष इसके घरमें घुसाहै इसमें संदेह नहीं । निदान भीतर गया और पुत्रको सोता देख उन दोनो पर तलवार निकाल के मारने का उद्योग किया कि इतनेमेंही "सहसा विदधीत ॥ क्रिया" श्लोकयाद आगया तोठहरा खांसा इतनेमें स्त्रीकी आँखेंखुली तोनिजपतिको पहिचानतेही लज्जाकर पड़दा करलिया और पुत्रको जगाया वहउठतेही पिताके चरणोंमें गिरा पंडित, फेर २ श्लोककी प्रशंसाकरके परमेश्वरको धन्यवाद देताभया ॥ इतिषष्ठः प्रदीपः ६ ॥

तथा एककुटिल ब्राह्मण अपनी बेटीकेघर भोजन करनेको बैठा तभी उसका 'जॅवाई' आयपहुँचा उसने कहा 'क्या अन्याय, करते हो' यह कहके हाथ पकडलिया उसने ग्रास उठाकर मुख के लगालियाथा इतनेहीसे उसके होठ सपेदहोगये जॅवाई ने कहा जो कभी ग्रास भीतर चलाजाता तो देहभर में तुम्हारे कुष्ठ होजाता इस्से पुत्री के संसर्गसे सदाबचना चाहिये ॥ इति शुक्लदेवीसहायकृतौःमिश्रनिबन्धे सप्तमःप्रदीपः ७॥

अथ पितृभक्तिमें सातव्याधोंका दृष्टान्त ॥

सप्तव्याधादशार्णेषु मृगाःकालिंजरेगिरौ । चक्रवाकाःसरद्वीपे हंसाःसरसिमानसे ॥ तेपिजाताःकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः । प्रस्थितादीर्घमध्वानं यूयंकिमवसीदथ ८॥

एक दरिद्री ब्राह्मणके घरमें सातपुत्रथे उसने उनकानिर्वाह होना नहीं समझकरके 'मुनि- भारद्वाजजी को सौंपादिये उनके घर वे प्रवृद्ध कर परिशिक्षित हुए' एकदिन मध्याह्न समयमें निज पिताका श्राद्धकरना उनके याद आगया और पशु, पक्षीभी उन को कुछ नहींमिला। निदान उन्होंने श्राद्ध अवश्य करना समझके इस गौका पिंडदिया। फिर घरआय गुरुजी से कहा गऊ को बघेरा लेगया उन्होंने ज्ञान से विचार लिया कि इन्हों ने यहकाम कियाहै। तब क्रोधकरके शापदिया कि तुम सातों व्याध होजाओ तो वे 'दशार्णदेशमें' सातव्याध' हुए। फिर 'कालिंजर पर्वत में सात मृगहुए, फिर सरद्वीपमें 'चकवे' हुए फिर 'मानससरमें 'हंसहुए' उसव्यवस्थामें तहां एक राजा स्नान करनेको बड़ी तयारीसे आया। उसके ऐश्वर्यको देखके उनमें से छोटा हंसबोला कि राजाहो तो ऐसाही होवे, सबोंने कहा अब तेरे लिये हमकोभी जन्म लेनापड़ेगा। फिर तो वह राजाके घरजाकर जन्मा और वे एकदरिद्री ब्राह्मणके घरजनमे। राजाके घर

कुँवर होनेका वड़ा उत्साह हुआ। वह लड़का समर्थ होने पर राजा हुआ रानी बड़ीसुन्दर आयी थी उसके सर्वथा वह आधीन था। एकदिन राजा रानी दोनों एकथाल में भोजन करनेको बैठे तो उसमें से एकचावल उठाकरके 'चींटी' लेचली आगे उसको पति 'चींटा' मिला उसने कहा तू यह चावलकहाँसे लायीहै वह बोली राजा के थालमें से। तूभीले आव, वहबोला, यह मुझको देदे तू और लेआना वहबोली तू मर्दकी जात मुझको लाकरदेता सोतो नहीं और मुझही से मांगताहै निदान उनका झगड़ा होते २ चींटीने कहा 'ले नपूते लेले' यह वृत्तान्त वह राजा समझता था सुनकर हँस दिया। उधर रानीने जाना कि मेरे शृंगारको देखके कुछ कसर रहनेपर राजा, हँसाहै। तो पूछने लगी आपकैसे हँसे सो बतलाइये राजाने कहा मैं तो तुच्छ बातपर हँसाहूं तुम मतपूछो रानीने कहा कुछभीहो मुझे बताही दीजिये निदान राजाने निजभय सुनाया कि मैं जोबताऊं तो मरजाऊंगा। रानी बोली मैं अभी मरीजातीहूं। तब राजाने कहा अच्छा मन्दिरमें चलो बतावें ऐसे कहकेगये। उधर उसब्राह्मणके घरमें वे छओं विद्वान् हुए ब्राह्मण को उनसे कुछभी लाभ नहीं हुआ था वह पूछता तब कहदेते कि ब्राह्मण? हम तुमको एकहीबेर प्रसन्न कर जावेंगे उसी अवधिपर उन्होंने उस ब्राह्मण के हाथ पत्रलिखके भेजा उसमें "सप्तव्याधा" आदि दोनों श्लोकालिख दिये वह लेकर चला मंदिरमें पहुँचा, राजाने देखतेही उस ब्राह्मणको बुलाया और पत्रको ले उसका अभिप्राय समझकर वह 'चींटी चावल लेजानेकी बात रानी को सुनाकर देह त्यागदिया सबके सबदेखतेरहे॥ इत्यष्टमः प्रदीपः ८॥

देह त्यागंन वांछंति कोपिदुःखभुजो भृशम्॥ यथा काष्ठवहो-मृत्यु-वांछितं वांछतिस्मनो ९॥

एकलकड़िहारा, शिर पै लकड़ीलादे घाममें तपा पसीने में

भीगा महादुःखी एकवृक्ष के नीचे ठहरा वहां उसके मुंहसे यही निकला 'अरे मौत, कहां है' तबहीं वह मृत्यु पुरुषरूप धारके उसके सामने आया। उसने पूछा तू कौन? वह बोला मैं मौत हूं तैंने यादभीकीथी। तब तो वह सब हवासभूलगया और उस बातको टालकरके बोला मुझे बोझाउठा दो अगाड़ी बड़ी बड़ी दूरजानाहै॥ इति नवमः प्रदीपः ९॥

दूसरा दृष्टान्त, एकवैश्यका पुत्र, पासहीमें एक योगीश्वरथे उनके पास जायाकरताथा। योगीजी कहते तू प्राणायाम साधा कर वह कुछ न कहता फिर नित्य २ कहने पर वहबोला महाराज! में अपने मा बापों के अकेलाही हूं क्या? आप मुझे योगी बनाया चाहतेहो योगी जी बोले बच्चा प्राणायाम साधन, सबको अच्छाहै निदान उनके नित्य २ कहनेपर उसने अभ्यास किया जब प्रहरभरेकी गति होगयी तब योगीश्वर, बोले बच्चा आज अपने घर जाकर परीक्षा करना तू किसको प्याराहै। निदान वह उनके कथन के अनुसार प्राणायाम चढ़ाय के पड़रहा उसकी माताने जगाया न उठा तो थथेड़ के मराजान रो २ कर पुकारने लगी अब लगे सब घर बाहर के रोने औ शिर पीटने फिर आधीरातहोनेपर योगीश्वरजी आये वे पूछनेलगे यह कैसे मरगया उन्होंने कहा आपही के यहां जाया करता है न जाने आपने क्या कर दिया है तब योगीजी बोले अच्छा हमही इसे जिवावेंगे यह कहके एक कटोरे में दूध भरवाया उसमें मिश्री डाली सुन्दर तयार करके कहा कि तुम में से जिस किसी को यह अधिक पियाराथा वही इस दूधको पीजाओ बस? पीनेवाला मरजावेगा और यह जी उठैगा इतनी सुनतेही उसका पिता उठाथा पर मरनेको सुनकर विचारता रहगया योगी जीके पूछनेपर जो जीतारहूंगा तो लड़के और भी होजावेंगे पर जीतेजी मरानहीं जाता फिर उसकी मासे कहा अरी तुझे यहबहुतप्यारा था तू मरजावेगी यह जी उठेगा तू पीले। तो वहभी बोली जो

जीते रहेंगे तो लड़का और भी होसक्ता है फिर उसकी स्त्री से कहा इसकी अर्द्धांगी है तेरे मरने से कुछ हानि नहीं यह और बिवाह करलेगा तू पीव, वहभी बोली मैं दुःखसे दिनकाटदेऊंगी पर मरा नहीं जाता। ऐसेही योगीश्वर ने सबसे पूछा पर मरना किसीने भी न चाहा। निदान आपही उस दूधको पीगये मरनेका काम क्या था लड़के को पुकारा वह उठ साथहो चला मा बाप लिपटनेलगे उसने कहा मेरे तुम कोई नहींहो जो होते तो दूधमें क्या बिष मिलाथा॥ इति दशमः प्रदीपः १०॥

शय्यावस्त्रंरम्यगेहंसुरत्नं वीणापाणिर्दर्शनीयाचनारी॥ नभ्राजंतेक्षुत्पिपासातुराणां सर्वारंभास्तंडुलप्रस्थमूलाः ११॥

सुन्दर सेज, वस्त्र, रमणीय घर और रत्न, और बीणा हाथ लिये देखनेयोग्य स्त्री ये सब क्षुधा तृषा से आतुरजनों को कुछ भी नहीं सुहाते जितनेभर आरम्भ हैं वे सब प्रस्थभर चावलों के आश्रयहैं। दृ० किसीकी बरातजातीथी उस मेंबर की पालकी पिछाड़ी रहगयी बरात समधी के घर पहुंची लग्नका समय आया तो उन्होंने शोच विचार के एक गरीब के लड़के को सजाकर फेरोंलेन को भेजदिया। बिवाह होगया तभी लड़का लड़की, एकांत रमणीय गृह में गये वहां स्वच्छ शय्या बिछी थी और वह नशाते प्रभूतयारथी उस सब सामान को देख के, विद्वान्लड़के ने "शय्यावस्त्रं" यह श्लोक पढ़ा तब उसने उसी समय कहीं से चावल चुग २ के बनाये और भोजन कराने को आयी तब प्रभात होने पर आगया तो उसने भोजन नहीं किया वैसेही चलाआया। फिर दूसरे दिनके नेगचारों में वहदूल्हा आगयाथा भेजागया उसे देख और है, कह-२ के संदेह करनेलगे सबलोगोंने कहा, लड़कीहीसे इसकी परीक्षाकराओ वह कहे सोसही तब दोनोंका सामनाहुआ तो लड़की ने

'शय्यावस्त्रं' श्लोक आधाकहा उससे उत्तर कबहोता परदूती आदिकोंकी सहायतासे इसने 'नभ्राजंते' आधाकहके प्रत्युत्तर कहदिया पर फिर पूछा कि उनचावलोंका क्याभया तबबोल उठा कि खालिये और क्याहुआ तब निश्चय करकेकहा यहनहीं है निदान उसगरीबलड़केकोही लड़की देनीपड़ी इति॥ एकादशःप्रदीपः ११॥

## अथशालिग्रामोत्पत्तिः॥

गंडकी नाम,एकवेश्याथी वहकथा सुनाकरती उसनेपतिव्रता का धर्म बहुतसुना तोविचारा कि हमारे कोईभी पति नहींहै हम किसकी सेवाकरें निदान पंडितोंने विचारकरके कहा कि तेरेघर जोपहिले चलाआवे उसहीकी सेवा कियाकर तेरा दिन रातभर वहीपतिहै। गंडकीने ऐसाही निश्चय किया नित्य २ नये २ पुरुषोंकी सेवाकियाकरती उससेवासे प्रसन्न हुए आप श्रीभगवान् दरिद्री ब्राह्मणबन भारी पेटबंधाये जूताछिटकाये मक्खी लिपटाये महाकुरूप बनाये तिस वेश्याके घरपहुंचे उसने अहोभाग्य कह आसन पै बैठाये पैरधोय चरणामृत लिया। फिर इनको स्नानकरवा बहुतसा भोजन करवाए हाथजोड़ बोली स्वामिन्? क्याआज्ञाहै तोयेबोले दिशाबैठेंगे कहा बैठलीजिये यहकहतेही हगमारा सबघरभरमें दुर्गंध फैलगई। उसने फिर स्नानकरवाया फिर हाथजोड़पूछा क्या आज्ञा, बोलेदिशाबैठेंगे,फिरहगा फिर न्हाये फिरहगा ऐसेही रात बितायसबेराभये त्रिकहोके मरगये वेसब भडुये लोग देख २ कर नाकचढ़ाने और गंडकी से लड़ने लगे कि क्या आफत गले में डाल ली अब यह मौताज आदमी बे तादाद खाकर मरगया लाओ इसे कहीं फेंकआवें नहीं तो तंगीहोगी उसने कहा भाई तुम कुछभी मतकहो मेरा यह 'पति परमेश्वर' होचुका और मैं शास्त्र में सुनतीरही हूं जो पति मरजावे तो साथही सतीहोजाना परमधर्म है सो करूंगी यह सुनतेही उन भडुओं के तो होशउड़गये और उसने सती

होनेकी तयारी की झट एकांत में चितालगाय उसमें चढ़ के पतिको प्रेमसे अपनी गोदमें बैठालिया और सखियों को अग्नि लगाने की आज्ञा की इतने में यथोक्तरूपधारी भगवान्, तिसकी गोद में प्रगटभये वेश्या दर्शन से प्रसन्नहो पवित्रभई भगवान्बोले वरमांगले वह बोली आपके मिलतेही मांगनी कुछ वस्तु रही नहीं फिर आपही बोले तेरी गोद मे हम ऐसेसजे जैसे माताकी गोदमें पुत्र, इसीसे अब तू (गंडकी- नदी) होगी और हम तुझमें (शालिग्रामजी) होवेंगे (सब जनों का तुझसे उद्धार होगा) इति द्वादशः प्रदीपः १२॥

श्लोकः॥ या पाणिग्रहलालिता सुसरला तन्वीसुवंशोद्भवा, श्यामास्पर्शसुखावहा गुणवती नित्यंमनोहारिणी ॥ साकेनापिहृतातयाविरहितो गन्तुन्नशक्तोस्म्यहं रे भिक्षोतवगेहिनीनहिनहि प्राणप्रियायष्टिका १३॥

एकदरिद्री ब्राह्मण, यहश्लोक बोलता एक विद्वान्के घरके नीचेसे निकला उसने इसकेमुखसे जोपाणिग्रहसे लालित, सुन्दरसीधी, हलकी, अच्छे वंशकी, श्यामवर्णवाली, कोमल, गुणयुक्त, मनोहर ऐसी मेरी प्राणप्यारी किसीने चुरालई उस बिन मुझसे चलानहीं जाताहै। यहसुन उसविद्वान् ने पूछारे भिक्षुक? तेरी घरवाली? उसने कहा नहीं२ मेरीलट्ठी जातीरही इस्से चला नहीं जाताहै। दूसरा २ अर्थ जो हाथ पकड़ने से लड़ाई अर्थात् सदाहाथ में रहती (सीधी-कोई वेकनथा हलकी अच्छे वांसकी काली कोमलई गुणवाली सुन्दर, प्राणोंसेभी प्यारी ऐसीलाठी इत्यादि॥ इति त्रयोदशः प्रदीप. १३॥

पापकाबाप, इसमें वेश्याकादृष्टान्त॥

लोभोनृणांपितामातानलोभाद्यापरंक्रियत्॥ यथा लोभाभिभूतोजोभोजनवेश्ययाऽचरत् १४॥

यह लोभही मनुष्यों का मा बाप है लोभसे परे और कुछ नहीं है जैसे लोभी ब्राह्मण, वेश्याके साथभी भोजन करने को तयारहुआ एक विद्वान् को संदेह हुआ कि पापका बाप कौन है वह इसी संदेह में घरसे निकलचला और जहाँ तहाँ पूछनेलगा तो एक वेश्याने उसे पास बुलाकर कहा महाराज! आप मेरे घर रसोई बनाकर पाय लियाकरें तो मैं एक अशर्फी दक्षिणा दियाकरूं ब्राह्मण सुनके प्रसन्नहुआ अशर्फी दक्षिणाके लोभ से वहाँ गोवर से लीप रसोई करने पानेलगा फिर उसने कहा जो मैं स्नान करके बनादेओं आपपायलेओ तो दो अशर्फी देओं ब्राह्मणने कहा क्या चिंताहै "अद्भिर्गात्राणिशुद्ध्यन्ति" शरीर तो जल सेही शुद्ध होजाताहै यह हमारी स्मृति की आज्ञाहै उसने बनाई जब कि उस ब्राह्मणने खानेको ग्रास उठा लिया तब वेश्याने थप्पड मारके कहा कि देख 'पाप' का "बाप" यह लोभही है ॥ इतिचतुर्दशःप्रदीपः १४ ॥

रक्षा विषयमें राजा चन्द्रहास का इतिहास ॥

अरक्षितंतिष्ठतिदैवरक्षितंसुरक्षितंदैवहतंविनश्यति॥ जीवत्यनाथोऽपि वनेविसर्जितः कृतप्रयत्नोपिगृहेनजीवति ॥ १५ ॥

बिन रक्षाकिया भी दैव करके रक्षित कियाजाता और रक्षा किया भी दैवसे रक्षित न हो तो नष्ट होजाताहै। अनाथ वनमें भी आनंद से रहता और घर में अच्छेप्रकार रक्षा किया भी दैवहत हो तो नहीं जीवताहै इसमें दृष्टान्त राजा (चन्द्रहास) बालपने से ऐसे भगवद्भक्त हुए कि महाभागवतोंमें गिनेगये। उन का यश 'च्यवन'अश्वमेधमें लिखाहै कि 'मेधावी' नाम राजा केरल देशके घर 'राजाचन्द्रहास' का जन्म हुआ तो एक पांवमें छः अंगुली थीं 'यह सामुद्रिक' में कुलक्षण लिखे हैं। जन्मसे थोडेही दिन वीते कोई शत्रु चढ आया उस लड़ाई में इनका

पिता मेधावी मारागया माता उनके साथ सती होगई और धाय इनको लेकर कुंतलपुरमें चलीआई वहां के राजाके वजीर का नाम (धृष्टबुद्धि) था उसके घर रहनेलगे फिर वहां धाय मीमर गई 'चन्द्रहास' जी अनाथ पांच वर्ष के लड़कों के साथ नगर में फिरने लगे कोई कुछ देता उसीसे उदर पालन करलेते, एक दिन वहां नारदजी आये तो इनको सुपात्र देख एक शालग्राम जीकी प्रतिमादेकर आज्ञाकरी कि जो कुछ भोजन आदि करे सो इस प्रतिमाके आगे रखके इसकी आज्ञासे किया कर। वे वैसेही करते रहे थोड़ेही दिनों में भगवत्प्रीति बढ़गई एकदिन उस वजीरके घर ब्राह्मण भोजन करने आये उसने उन्होंसे पूछा मेरी लड़कीको वर कौन कैसा मिलेगा तो उन्होंने चन्द्रहासजी को बतलाया कि यह इसे व्याहैगा तब तो वजीरको बड़ी ग्लानिभई कि हाय ? मेरी पुत्री दासीपुत्रकी भार्या होगी ! शीघ्र वधको को बुलाकर कहा इस लड़केको जंगलमें लेजाकर मारडालो वे लेगये और चन्द्रहासजी से पूछा अब तुम्हारा रक्षक कौनहै तो कुछ भी चिंता तिनको निजमरने की न भई और कहा कि एक घड़ी ठहरो, कहके शालग्रामजी का पूजन किया फिर उनको मारने की आज्ञादेकर समाधि लगालई फिर तो जगद्रक्षक भगवान्ने उननिर्दयी बधकोंके मनमे ऐसी दया उपजाई कि वे एकही अंगुली जो बढ़ती थी उसे काटकर वजीरको दिखलाने लेगये और चन्द्रहासजी, तीन दिनतक उस वनमे भगवान्को ध्याते विचरतेरहे जब उनपर धूप आता तो पक्षी उनपर छायाकरलेते और रात्रि समय बघेरा आदि वली जीव उनकी रखवाली किया करते थे। संयोग वश 'कलिंददेशमें' चन्दनावती नगरीका राजा शिकार खेलता २ उस वन में आया तो चन्द्रहासजीको अपने घर लेगया। उसके कोई लड़का नही था इन्हीको अपना पुत्र समझकर सब विद्यायुक्त किया और पीछे राज्यतिलक देकर सारा राज्य सौंपदिया और आप भगवद्भजन करनेलगा यह राजा 'क-

लिंद ' करदेनेवाला राज्य कुंतलपुर का था। जब समय पर वह कर नहीं पहुँचा। तो ' धृष्टबुद्धि-वज़ीर ' सेना सजकर आया राजा कलिंद सुनके मिलनेको गया। बड़ीरीति मर्य्यादसे नगर में लाया। चन्द्रहासजीसे भेट कराई सब समाचार उनके राज्य पाने के कहे फिर तो वह 'धृष्टबुद्धि' चन्द्रहासजीको पहिचान बड़े शोचमें आकर मारनेके विचारमें उद्यत हुआ। सोही राजा कलिंदको डरपाया कि बिना हमारे राजाकी आज्ञा तुझकोगद्दी बैठाना उचित न था अब मैं इसको अपने 'मदन' नामा पुत्र के सामने पत्र सहित भेजताहूं वह राज्यतिलक अंगीकार करा-देगा ' चन्द्रहासजी ' पत्री लेकर चले और कुंतलपुर के निकट उसी वज़ीरके बागमें ठहरे वहां स्नान पूजनकर भगवत् प्रसाद पाकरके थके सोरहे। दैववश उसी वजीरकी लड़की (विषया) नामवाली,बागकी शोभा देखनेको आई सखियोंसे अलग होकर जहां चन्द्रहासजी सोतेथे तहां पहुँची वह इनकी शोभा देखतेही आसक्त होगई और भगवत् से प्रार्थनाकरी कि यही पुरुष मेरा पतिहोवे फिर जो दृष्टि उसकी कमरकी ओर गई तो पत्री देख कर निकाललई औ पढ़ी तात्पर्य्य यह था कि हे मदन ? इस चिट्ठी लेजाने वालेको तुरन्त विष--देदेना जो देर होगी तो हम क्रोध करेंगे, वजीरकी लड़कीने पढकर शोचलिया कि मेरापिता बहुत दिनों से मेरे लिये सुन्दर पुरुष देखरहा था और चलती वेर मुझको जल्दी विवाह करदेने के वचन दे गयाथा सो इस पुरुषको मेरेलिये भेजा है और जल्दी से पत्र लिखा इससे इस में अक्षर ( या ) जो विषके पीछे लिखनाथा सो भूलगया सो यह अक्षर बना देना चाहिये सोही उसनेनिज आंखकेकाजलकी स्याही बनाकर उससे ( या ) लिख उसीतरह कमरमें बांधदई फिर उठतेही ' चन्द्रहासजी ' मदनके पास पहुँचे पत्री दिया वह बहुत प्रसन्न हुआ और उसी घड़ी विवाह चन्द्रहासजी से निज बहिनका करदिया। जब वजीरने पत्र द्वारा यह सबवृत्तांत

सुना तो अत्यन्त दुःखी और क्रुद्ध हुआ । उसी क्षण चलके घर आया और अपने लड़के को धिक्कारनेलगा तब उसकेलड़के मदन ने वह पत्री आगे धरदी और कहा मेरा कुछ अपराध नहीं जो लिखा सो कियाहै । फिर तो वजीरने मनमें यही ठानलियाकि लड़की चाहे विधवाही बैठीरहै पर इसे अब मारदेनाही उचित है इसहेतु वधकोंको आज्ञाकरी कि जो कोई प्रभात दुर्गाकेभवन में आवे उसे मारदेना । और चन्द्रहासजीसे कहा कि हमारेकुल मे प्रथम दुर्गापूजन होताहै सो तुम प्रभातही दुर्गा पूजआओ । ऐसे उस दुर्बुद्धि वजीरने तो यह घात बिचारा और भगवत्की यह इच्छाभई कि कुंतलपुर का राज्य भी चन्द्रहासजीको मिल जावे । इसहेतु कुंतलपुरके राजा के मनमें ज्ञान दिया कि राज्य और शरीर, दोनों नाशमानहैं और भजन सिवाय दूसरा उत्तम पदार्थ नहीं है सो यह राज्य तो ( चन्द्रहास ) वजीरका लड़का योग्यहै उसे दे देना चाहिये और जो आयुर्बल शेषहै सोभगवद्भजनमें बिताना चाहिये । प्रभातको जिसप्रकार 'चन्द्रहास' पूजा करने गये तो राजाने वजीरके बेटे 'मदन' को बुलाकर कहा हम राज्यतिलक देतेहैं चन्द्रहासको शीघ्र बुलाओ वह इस आनंदसे शरीर में न समाया कि राज्य हमारे घरकाही रहैगा और चन्द्रहास के पास जाय उनको तो राजाके पासभेजदिया और आप दुर्गाभवनमें पूजा करनेगया और राजाने, तुर्तही तिलक चन्द्रहास के करदिया । और मदन जो भवनमें पहुँचा तो तुर्त माराही गया । तब तो वजीर, निजपुत्रका मरना सुन शिर में धूलडालता उसके शरीर के पासजाय पत्थर से शिर मार २ कर मरगया । यह वृत्तान्त चन्द्रहासजीने सुना तो भवनमें आकर करुणामें भर विह्वल होगये । फिर उनके जिवानेके लिये दुर्गाजी की स्तुति की तो दुर्गा महारानीने प्रकट होकर तिनको जिवाये तब वजीरने जो प्रताप भगवद्भक्तिका देखा तो विश्वासी हुआ, औ चन्द्रहासजी के चरणोंमें गिर भगवत्शरण होगया चन्द्रहास

जीने तीन सौ वर्ष राज्य किया और भगवद्भक्तिका ऐसा प्रचार चलाया कि देशभर भक्त होगया देखो कैसी शिक्षा भगवद्भक्तोंके लिये है एक तो प्रतिमानिष्ठाका फल, दूसरे भगवद्भक्तको मृत्यु का भी भय नहीं तीसरे कठिन आपत्ति आनेपर भी भक्त निज भजन नहीं छोडते चौथे जो उनके साथ दुष्टताकरे उसको भी सुखही देते हैं भक्तोंकी महिमा अपारहै ॥ इतिश्रीशुक्कदेवीसहाय कृतौचन्द्रहासइतिहासवर्णनंनामपञ्चदशःप्रदीपः १५ ॥

करै तो डर न करै तो डर इसपर पिता पुत्रका दृष्टान्त ॥

कृतेऽपिदोषंत्वकृतेपिदोषं कृताकृतेदोषमुदीरयन्ति। तस्माद्बुधस्तत्रकृताकृतेद्वे विचार्य्यबुद्ध्याऽऽचरतेसुखीस्यात् १६ ॥

लोग, किये में और न किये में तथा किये न किये में भी दोष लगादेते हैं। तिससे ज्ञानीजन किये न किये का विचारकरके आचरणकरे तो सुखसे रहे १६ दो बाप बेटे थे बाप कहा करता कि करै तो डर न करै तो डर तब बेटा सुनकर कहता था कि करै तो डर राही पर न करै तो किसका डर इसपर बाप एक दिन लडके को साथले घोड़ेपर चढ़ाकर चला तो राहमें लोगोंने उस लडके से कहा अरे तेरा बुड्ढा बाप तो पीछे २ लाठी टेकता पगों घिसटता आताहै और तू घोड़ेपर चढ़ाहै। यह सुनतेही लडका उतर पड़ा और बापको घोड़ेपर चढ़ाकर आप पीछे २ चला आगेलोग फिर बोले कि धूल पड़ी इसके बुढ़ापे में जिसके पीछे २ बालक लड़का हैरान होता आवे औ आप घोड़ेपर चढ़ाहै तो सुनके बाप ने कहा अरे आव दोनोंही चढ़लेवें तब तो लोग देख २ कर हँसने लगे कि देखो एकजीनपर दोजने ऐसा क्या सवारी बिन सरताही नहीं था। फिर तो हारके वे दोनोंही उतर पडे और साथ २ घोड़े के चले। तब तो लोग बहुतही हँसे कि

देखो यह विन कौड़ी तमाशा जिनके सवारी साथ में है और आप पैदल घिसटते जाते हैं ॥ इतिषोडशःप्रदीपः १६ ॥

चतुर स्त्रीका दृष्टान्त ॥

भूषणन्दूषणंस्त्रीणां चातुर्य्यम्भूषणम्परम्।
यथावरास्त्रीसहसा धनंलब्धवतीमहत् १७॥

स्त्रियोंको आभूषण जो गहना आदि हैं वे तो दोषयुक्त अर्थात् निष्प्रयोजन हैं और चतुरता, स्त्रीका परम आभरण है जैसे चतुर स्त्रीने शीघ्रही बहुतसाधन पाया इसपर दृष्टान्त। जैसे एक चतुर स्त्री,अपने घरमें रोटी करतीथी दाल चढ़ाय आटा भिगोकर बाहर आय बैठी उसकी सासनेकहा तू बाहर क्यों आयबैठी वह बोली दाल रँधती और आटा भीगरहाहै फिर मैं क्याकरती वह इस उत्तर देनेसे नाराजभई तो अपने बेटेसे इसकी निन्दाकरने लगी। एकदिन वह अकेली खेतमें थी वहां एकसवार सरकारसे छुट्टीलिये असबाबसेलदे घोड़ेपर चढ़ाआताथा वह इसके रूपकी सुन्दरता औ पतिव्रतापनके प्रभावसेयुक्तको देख ठहरगया वह घास खोदतीथी उसनेकहा अरी धरतीकी हजामत करनेवाली नेक औरत ? प्रथम इसमनुष्यका धरतीपर क्या टिकताहै वह बोली सयाने मशखरी न कर पहिले नजर टिकती है। वह यह सुनतेही फिर बोलउठा कि अबके जो जवाब देवे तो घोड़ा छोड़ देऊं, वह तुर्तही बोलउठी सयाने ? घोड़ा छोड़े तो अपनी मा बहनपर छोड़ मुझे तो मेरा पतिही बहुतहै, यह सुनतेहीना-जवावहो घोड़ा छोड़कर चलदिया। वह उसे घरपै हांकलाई तो उसकी सासने देख बेटेको सिखाया कि देख यह किसी सरकार के आदमी को मार उसका घोड़ा छीनलाई है,वह बेचारा सीधा सादाथाउसने शोचविचारकरघोड़ा कोतवालीपर इत्तलाकेसाथ पहुँचादिया कोतवालको घोड़ा छोड़नेकाहाल मालूमहुआ तो अचरज मानकर उस स्त्रीकेघर बुलावा भिजवाया उसने आने

की तैयारी की तो सासने फिर बेटेसेकहा कि देख अब यहसर-
कार दरबार में चढेगी। वह चतुर स्त्री सांझ समय कोतवाली
पर पहुँची वहां कोतवालने कमरा सजाकर सब ठाटबाट लगा
रक्खेहीथे उसे बड़ी तवज्जुहसे बैठाई और उसके रूप लावण्यसे
आप छकरहा तो प्रथमही आज्ञादी कि बोतल-मदिराकी, आ-
वे वह तुर्त लेआया कोतवालने तब खूबही मद्यपानकिया औ
उस स्त्रीके कहने तथा हाथसे भर२के देनेसे चारपियाले औरभी
अधिक पिये। फिर कामशास्त्रकीरीतिसे चौपड़ बिछी कोतवाल
खेलता २ ही बुतहोपड़ा जब उसे देखलिया कि यह बिलकुल
अचेतहो गिरा। सोही उस स्त्रीने कोतवाल के सबकपड़े पहरे
और गश्त के लिये दौरा करने को सिपाहियो से आवाज दी
वे हाजिर हुए कूचवान घोड़ा सजाय लेआया। तबतो वह च-
तुर स्त्री, वहा के बादशाहके खास महल के नीचे घोड़ा दौड़ाती
होशियार २ पुकारती पहुँची तब बेगमकी नींद हटी बादशाहसे
कहनेलगी आज यह कौन हैवान आदमी गश्तपर आया जिसने
मेरी नींद हटाई इसे मारदेना चाहिये यहसुनके बादशाहने उस
स्त्रीसे पूछा अरे कोतवाल? रात कितनी बीती, उसने जवाबदिया
जनाब"घघरिया उतरिया" बेगमने कहा देखिये यह कैसी गुस्ता-
खीसी कररहाहै। सुनके चुपरहे फिर पहरबाद आधीरातको उसी
ने आकर आवाजदी फिर नींद हटने से बेगम खफाहुई बादशाहने
उसे समझाई और कोतवालसे आकर पूछा रात कितनीबीती,
उसनेकहा " चांकलगी है " फिर भी बेगमखफा होकर सोरही
फिर पहर रातरहे उसने आकर आवाजदी तब पूछा रात कितनी
बीती तो बोला 'डोलै आरही है' तबभी सोरहे फिर चारघड़ी
रातरहे पुकारा और पूछा तो कही कि " पौहफाट्या औ मैं टि-
या" बादशाह बेगम, इस रातभर की गुस्ताखीको सुनके बहुत
ही नाराजरहे सवेरा होतेही तोपसे उड़वानेका विचार करकेको-
तवालको बुलवाया वह आंखें मसलतासामनेआया बादशाहने

तुर्त्तही हुकुमदिया इसे तोपसे उड़वादो कोतवालने कहा मेरा ऐसा कोई कसूर नहीं है खाली गश्तपरही नहीं जासकाहूं तब बादशाहने कहा तैंने तो रातभर चकही न लेने दिया और कहता है कि मैं नहीं गया, इसे बेशक मरवा देवो। कोतवालने फिर अरज किया कि मैं बे गुनाह माराजाताहूं मैं नहीं गया। तब तो कूचवान से पूछा वह तुर्तही पुकारा कि आज इसने रातभर बड़ेही हैरान किये हैं फिर कहा "मरवा देओ" निदान हार ला-चार होकर कोतवालने फिरभी अरज किया गरीब निवाज मे-री नाहक जान जाती है मैं नहीं गया मेरे घर की तलासी ले-ली जावे तब नौकर उसके मकान पर पहुँचे और मकान को देखा सँभाला तो उसमें एकतर्फ वह औरत बैठी देखपड़ी उसे बादशाहकेपास लेगये उससे पूछागया कि रातको गश्तपर कौन गयाथा, वह बोली मैं गईथी तो फिर कहा हमने रात पूछी तब तैंनेही जवाब दियाथा, वह बोली जी हां मैंनेहीं, तो तैंने रात (घघरिया०) बतलाई इसके क्या माने, वह बोली मानेको तो मै जानती नहीं पहररातबीते मैं घघरा निकालकर सोयाकरती इससे "घघरिया" बतलाई। फिर पूछा कि आधीरातको (चां-कलगी) यह क्या कहाथा। वह बोली मेरा मरद आधीरातको चांक लगाया करताहै इससे कही। और (डोलैआरही) ये क्या तू बोली पहररातरहे हिरनी डोलै आती हैं। फिर बोले (पौह फाट्या मैं दिया) यह क्या तो कहा प्रभात होतेही मैं चक्की में गल्ला डालतीहूं इससेकहा बादशाह इन चारों जवाबों को सुनके बड़ा खुशहुआ और पछितानेलगा कि मुफ्तमें इसकी या उस कोतवालकी जानजातीथी इससे सबकाम शोचसमझकर करने चाहिये निदान तबतो तुर्तही बादशाहने हजार (१००० ) रुपये उस चतुरस्त्रीको दिवाये और दोनादर खोजे साथमें घर पहुँचाने को भेजेगये वे राहमें उस स्त्रीसे कुछ लेनेकी कहनेलगे तो उस ने उनको अपने हाथका कंगन दिखाकर पूछा कि कहो एक बेचूं

या दोनोंको तो वे बोले दोनोंही को बेच दीजिये फिर वहसाम-नेही एक सराफकी दुकान पर जाय उससे बोली ये दो खोजे सरकारी आप इन्हें गिरवी रखलीजिये पांचसौ रु० ५००) इन दोनोंके हैं। बनियेने पूछा इनसे पूछना चाहिये तो स्त्रीने पूछा अरे एकको या दोनों को, तो वे कंगन के लिये समझकर बोले अजी दोनोंकोही रखदीजिये उसने यह सुनतेही पांच सौ रुपैया गिनदिये वह लेकर एक गलीसे चलदी वे दोनों कुछ देर राहदे-खकर सटकनेलगे तो उस वनिये के आदमीने कहा कहांजातेहो तुम गिरवी धरेगये, वे सुनचुप बैठरहे बादशाहके यहां खोजोंकी यादगारी हुई वहां किसीने जाय कहा कि खोजे तो बनियेकेगि-रवी हैं तब बादशाहने पास से रुपये भेजकर उनदोनोंको छुट-वाये और मनमें बहुतसा अचरज मानकर उस चतुर स्त्री की बुद्धिमानीको सराहनेलगा और वहही स्त्री उनके मन में बसी निदान सुभह होतेही अपने नौकरोंसे हुक्म किया कि उसदाना औरतको हमारे पासलेआओ बुलावा पहुंचा वह आय हाजिर हुई। तो बादशाहने पूछा अय नेक औरत ! यह क्या माजरा हुआ तू हमको अव्वलसे कह सुनाव। वह बोली गरीब निवा-ज ! मुझको सात चूतिया मिलगये और कुछ माजरा नहीं बा-दशाहने फिर पूछा कौन २ कैसे चूतिया मिले। वह कहने लगी कि अव्वल चूतिया तो मेरी सास जो मुझको ढाढ़से चूल्हे के आगे बैठातीथी १ दूसरा चूतिया मेरा मर्द, जो मुझको अकेली जंगलमें छोड़दीथी २ तीसरा चूतिया सवार, जो बातके कहने पर घोड़ा छोड़ भगा ३ चौथा कोतवाल, जो बेताहाद पीताग-या जिसे हकूमतका कुछ ख्याल नहीं रहा ४ और दोनों चूति-या वे खोजे जो कंगनके बहाने दोनों बिकगये ५।६ सातवें चूतिया आप जो हुए हुआए माजरेको फिर पूछरहेहो ७ बादशाहसुनके और खुशहुआ औ उसे औरभी इनामदेकर उसके घरपहुंचाई॥

इति चतुरस्त्री इतिहासवर्णननामसप्तदशः प्रदीपः १७॥

दोलड़कियों का दृष्टान्त ॥

सुरक्षितोऽपिव्यथतेदुरासद स्ततस्तुदुष्कर्मभुनक्तिहिस्वकम्। महद्गृहेचापिविवाहितासुता दुष्कर्मणाभुक्तवतीस्वकंफलम् १८ ॥

कुटिलजन; रक्षाकिया भी दुःखित होताहै और फिर अपने कुकर्म फलको भोगताहै जैसे बड़े घर में भी विवाही कन्या, फिर दुःखही भोगती भई। दृष्टान्त। एक वैश्यके दो लड़कीथीं। एक कथा सुनती, दूसरी आते जाते जनोंके ईंटे मारा करतीथी और उनका बाप उन्हों से पूछता कि सबसे मीठा क्या? तब वह कथा सुननेवाली कहती कि सब से मिष्ट 'लवणहै' इसी बात की जिद पर उसने बेटीको महादरिद्री घर में कुष्ठी मनुष्यको विवाही और दूसरीको भाग्यवान् अच्छेवरको बिवाही दोनोंका विवाह हुआ॥ दैव वश उस ईंटे मारनेवाली का पति परस्त्री गामी था गरमीका रोग निकलकर मरगया वह निर्धन दरिद्रिणी हो व्यभिचार करनेलगी। और वह अपने कुष्ठी पतिकी टहल किया करती कभी कोई महात्मा आकर उसे अच्छा स्वच्छ शरीरी कर गये फिर वह द्रव्य कमाकर बड़ा धनी होगया वेदोनों परमसुखी भये और उस सुलक्षणवती के मा बाप भी निर्धन होकर उन्हीं की शरण आरहे इससे चाहे कहीं हो पर भाग्य अपना अपने साथरहताहै जैसे श्लोकमेंकहा(भाग्यंफलतिसर्वत्र नविद्यानचपौरुषम्। समुद्रमथनेप्राप्ता हरेर्लक्ष्मीहरेर्विषम् १) जब ईश्वरोंकी भी यह गति है तो मनुष्य, क्या वस्तुहै और भी कहाहै जैसे कि अवश्यं भावि भावानाम्प्रतीकारो भवेद्यदि। तदा दुःखैर्न युज्येरन्नलरामयुधिष्ठिराः॥ इत्यष्टादशःप्रदीपः १८॥

मालीका दृष्टान्त॥

प्राप्तेत्रिभुत्वेकर्तव्या त्रिभुवस्यैवभावना। यथामाली दिनैकेन्द्रोमहेन्द्रत्वमवापह १९॥

स्वामित्वके प्राप्त होनेमें स्वामीपनकी प्राप्ति होने काही प्रयत्न करना जैसे 'माली' एकदिन के लिये इन्द्र बनाया गया फिर वह सदाके लिये 'महेन्द्र' होगया। दृष्टान्त। एक माली शिर पर फूल लादे चला आताथा। राहमें कथा होतीथी तहां एक फूल उसके शिर से गिर पड़ा तो उसने उसे दूर पड़ा देख (श्री कृष्णार्पण) कहके छोड़दिया तो फिर वह तिसके फलसे एक दिनको (इन्द्र) बनायागया, तब तो उसने बिचारा कि सदाके लिये इन्द्र वनजाना चाहिये इस विचारसे उस चतुर मालीने निज (नन्दनवन) श्रीकृष्णार्पण कर दिया तो तिसके फल से वह सदाकेलिये इन्द्रबनायागया॥ इत्येकोनविंशःप्रदीपः१९॥

तथावेश्यानुगःपुष्पंपतितंह्यर्पयद्धरौ। गतोऽसौनन्द नवनं ततोवैकुण्ठमप्यगात् २०॥

तैसेही एक वेश्याके साथवाले जनने भी गिरा पुष्प, श्रीकृष्णार्पण किया तो वह इन्द्र बनकर (नन्दनवनमें) विहारकरने को गया बैकुंठके दरवाजे में ढाढ़से घसगया तो फिर वहां बैकुंठ मेंही रहा वहां सदा आनन्दसे रहनेलगा। इतिविंशःप्रदीपः२०॥

राजा युधिष्ठिर औ एक साधुका दृष्टान्त॥

पदेपदेश्वमेधस्यफलंतीर्थाटनेभवेत्। राज्ञोस्यदान संकोचेसाधुनादायितंफलम् २१॥

तीर्थाटन करनेमें पदपद पर अश्वमेधका फल होताहै जैसे राजा (युधिष्ठिर) से एक ने। अश्वमेध यज्ञका फल मांगा तो उसने देनेमें संकोच किया तव वहां एक साधु सुनरहा था उसने तुरतही अपने अश्वमेधोंकाफल दे दिया॥ इत्येकविंशःप्रदीपः२१॥

कोली और परमहंसका दृष्टान्त॥

यादृशस्तादृशम्पश्येज्जनंवैकृषिकृद्यथा। गत्वाहंसस मीपेतुकृषेर्दुःखंहिपृष्टवान् २२॥

जैसा जो मनुष्य होवे वह दूसरेको भी वैसाही देखताहै।जैसे एक कोलीने खेती की थी उसके पास माल हाकिमी ठेका देने को न रहाथा तो सरकारने उसे नंगा करके निकाल दिया।तब जंगलमें गया तो तहां शून्य वनमें एकान्त एक ( परमहंस ) बैठाथा उसने उसके पास जातेही पूछा कि क्या तूनेभी खेताकिया था तो पै भी हाकिमी नांहिंदईगई का॥ इतिद्वाविंशःप्रदीपः२२॥

यती परमहंसका दृष्टान्त ॥

समाह्ययतिनःसर्वेसुखदुःखप्रदायकाः। भोजितस्ताडितःपृष्टेताडितोयेनभोजितः २३

यती परमहंसके सुखदुःखदेनेवाले जन सब समान हैं जैसे किसी महात्माको एकने भोजन कराया और किसीने ईंटमारी तो शिरमें रुधिर चला देखलोगोंने पूछा आपके किसने मारा तो उन्होंने उत्तर दिया कि जिसने जिमाया उसीने ईंटमारी महात्माजन ऐसे होतेहैं ॥ इतित्रयोविंशः प्रदीपः २३ ॥

रानीसे यतीकी परीक्षा ॥

मुखप्रसादमालिन्यात्परीक्ष्यायतिनोभवेत् । यथा राज्ञाभोज्यमानः पुरीषेग्लानितोऽहितः २४ ॥

मुखकी प्रसन्नता और मलिनतासेभी परमहंसकी परीक्षा होजातीहै। जैसा रानीने एक कपटी परमहंसको भोजन करवाया। तो वह उसकी जांघपर बैठकर खानेलगा फिर वहांही दिशा बैठ दिया तो रानीने परीक्षाके लिये उसीकी विष्ठा उसके मुखमें लगाई तब तो वह छी २ करके मुँह फेरनेलगा तब रानीने एक थप्पड़ मारा औ मकान से बाहर निकलवादियां कपटीकी यह गतिहै ॥ इति चतुर्विंशः प्रदीपः २४ ॥

अथवाऽपक्वचित्तोऽसौकन्यामुद्वोढुमैच्छत । तिरस्कृतोऽथगुरुणा पुरीषग्लानितोऽभवत् २५ ॥

तैसेही एक ब्राह्मण अपक्वयोगी था उसको योगाभ्यास पूरा २ नहीं भयाथा औ वह अपने को ज्ञानी जानताथा उसके घर एक कन्याथी वह ब्याहने योग्य हुई तो उसकी स्त्रीने कहा इसे कहीं ब्याहदेनी चाहिये वह सुनके चुपरहा कुछ न उत्तर दिया कई दिन बाद फेर कहा स्वामिन् ! यह बड़ी होती जाती है तो कहा क्या चिंताहे भावि संस्कार मुख्यहै । ऐसेही कहते २ वह कन्या बीस वर्षकी होगई तब हार लाचार होकर उसने फिर कहा स्वामिन् ! अब क्या विचारहै तब उसने कहा विचार क्या है जो कोई इसको वर न मिलेगा तो हमहीं इसको ब्रह्मार्पण करलेवेंगे क्या चिंताहे हम ज्ञानीजन हैं हमारे यहां अपने पराये का भेद भ्रमहैही नहीं इन्द्रियां निज २ विषयमें वर्तती हैं हम कुछ भी करते नही हैं । जब उस ज्ञान पापी के मुखसे उस स्त्रीने ऐसी दुर्घट वार्ते सुनी तब तो उसके होश उड़गये और उस समय मारे दुःखके कुछभी न कहसकी और उस कन्याका हाथ पकड़ उसके गुरुके पास लेजाकर उसके पैरोंपर देमारी वह हा २ कर कहने लगा क्या बातहै ब्राह्मणी ने सब हाल कहा औ प्रार्थनाकरी कि यही ज्ञान शिष्यको सिखायाहै ! तो मुझे आप अर्पण करलीजिये ऐसेही सब जगत् वर्णसंकर होजाना चाहिये यतिने ब्राह्मणीसे कहा तू चिंता न कर हम इसकी आजही परीक्षा करेंगे तू रसोई बनायरखना । ऐसे ब्राह्मणी ने घर आय रसोई बनाई गुरुजी आये दो थालोंमें भोजन परोसा गया उसकापति औ गुरु, दोनों जीमतेरहे जब कुछ कसर रही तो ब्राह्मणीने गुरुजी के इशारेसे थोड़ी विष्ठा लाकर पहिले गुरुके थालमें फिर पति के भी थालमें परोसी तो वह हीं २ करके अलग हटा तब गुरुने उसके मुंहपर थप्पड़मारा औ कहा पुत्री विवाह लेनी सहज जान

पड़ती और यह विष्ठा खानी कठिनहोगई। इसी सामर्थ्य पर ज्ञानी होबैठाहै। यह कहके गुरुजीने उसके सामनेही शूकर शरीर धारणकरके उस विष्ठाको भक्षण किया वह ब्राह्मण, उस चरित्रको देख चकित रहगया और उस ज्ञानी पनके अहंकारको त्यागा ॥ इतिपञ्चविंशःप्रदीपः २५ ॥

श्रीगंगाजीकी महिमाका दृष्टान्त ॥

गंगामाहात्म्यमतुलं दुर्विज्ञेयमनीषिभिः। गतोमुनिः सत्यलोके तत्रकिंचिद्बुबोधतत् २६ ॥

श्रीगंगाजीकी अतुल महिमा, विद्वानोंसे भी नहीं जानी जातीहै जैसे एक वेर (नारदमुनि) कहींसे भ्रमतेचले आतेथे राहमें श्रीगंगाजी आई उनको छोड़दूरही से चले तो श्रीगंगाजीने कहा नारद! बड़े २ सुरनर मुनिजन, मुझमें स्नानकरते हैं और तुम दूरहीसे कैसे चलेजातेहो तब नारदजी बोले ऐसा तुझमें क्या बड़ाभारी माहात्म्यहै कह,तब श्रीगंगाजी बोलीं मैं अपनी महिमाको आप नही कहसक्ती ब्रह्मलोकमें जाओ। तब नारदजीने ब्रह्मलोकमे जाय श्रीगंगाजी का माहात्म्य पूछा तो वहां उत्तर मिला कि श्रीगंगाजी की महिमा हमसे कही नहीं जाती तब शिवलोकमें जाय पूछा वहां भी यही उत्तर मिला तब वैकुण्ठ में गये वहां से भी ऊपर फिर सत्यलोक में गये वहां,इन को स्वच्छ वस्त्रधारी, दिव्यरूप तेजस्वी दो स्त्री पुरुष, देखपड़े। तो नारद मुनिने हाथ जोड़ शिर नवाकर तिनसे प्रार्थनाकरी कि मै श्री गंगाजी की महिमा पूछता २ चलाआता हूं पर कोई कुछ कह न सका अब आपही सर्वोपरि देखपड़े,हो सो श्रीगंगाजी का माहात्म्य कहिये। तब ये स्त्री पुरुष बोले कि संपूर्ण माहात्म्य को तो हम जानते नहीं पर हम एक कुतियाके अगमें दोनों 'कलीले' थे वह कुतिया गंगामें लोटकर चली तो तिसने कान फड़फड़ाये तब हम दोनों कलीले झड़कर श्रीगंगाजी

में गिरे और वहांही पड़े रहकर मरगये तो तिस माहात्म्य से हम दोनों अगणित कोटि वर्षोंसे इस सत्यलोक में सबसे ऊपर विराजमान हैं जिस स्थानकी अच्छे२ महात्माजन, वाञ्छाकर रहेहैं। नारदजी यह सुनके चकित रहगये और वहां से श्रीगंगाजी २ कहते लोगोंको महिमा सुनाय२ तिन श्रीगंगाजी में स्नान कराय २ कृतार्थ करते त्रिभुवन में विचरते भये। इतिशुक्लकृतौ गंगामाहात्म्यवर्णनं षट्विंशः प्रदीपः २६ ॥

राजा युधिष्ठिरका दृष्टान्त ॥

राजतेतस्यराज्यंहियत्रतुष्टाद्विजा सदा। द्विजाश्चौर्य्यरतायत्र तस्यराज्येनकिंफलम् २७ ॥

जिस राजाके राज्यमें ब्राह्मण, सदासंतुष्ट हों उसहीका राज्य राजितहोता अर्थात् सम्यक्प्रकार शोभित होताहै। और जिसके राज्यमें ब्राह्मण, चोरी करें उसके राज्य करने से क्या फलहै दृष्टान्त। राजायुधिष्ठिरके यज्ञमें भोजनकरते समय एकब्राह्मणने उठते समय थाल चुराया गिरवीधरा तब निश्चयहुआ कि राजा युधिष्ठिर का थालहै तब राजाबलिके पास न्याय गया, राजाने पूछा ब्राह्मण, तैंने थाल क्यों चुराया वह बोला मैंने अपनेकुटुंब के लिये चुराया मैं न चुराता तो मेराकुटुम्ब भूखामरता मैं कुटुंबके भोजनके लायकहीं आटा मांगकर लाताथा आज राजाके यहां नौतागया तो मैं जीमचुका पर मेरा कुटुम्ब क्याखावे इससे चुराया। राजाबलि, सुनके चकितहो कहनेलगा वह कैसा राज्य जिसमें ब्राह्मणोंकेपास दूसरेदिनका भोजन नहीं ऐसेधिक्कारीहै और तभी से (हतंयज्ञमदक्षिणम्)कहके भोजनके साथ दक्षिणा लगाई वह उस भोजनकरनेवाले के कुटुम्बके लियेहै ॥ इति ॥

दो स्त्री वाले वैश्यका दृष्टान्त ॥

अन्यदुःखंतुदुःखंहि दुःखमात्रस्यवाचकम्। दुःखा दुःखतरंदुःखं भार्य्याद्वयभवंभवे २८ ॥

और दुःख तो जगत्में दुःखमात्रका वाचकही अर्थात् नाममात्रहीका दुःखहै। पर दुःखसे भी महादुःखतर दो भार्याओं का दुःखहै जैसे एक सेठके दो स्त्रियां थीं जब वह दुकान से आकर सोया करता तो वह अपना २ पैर जो बांटरक्खाथा उसे दबाया करतीथीं। एकरोज सेठजी आकर लेटे और वे दोनों अपना २ पैर दाबरही थीं इसमें उनकी अपने २ पैरकेही झगड़े में बिगड़ी तो वह बोली मैं तेरे पैरको तोड़ोंगी उसने कहा मैं तेरे पैरको काटोंगी ऐसेही वे हथियार लेलेकर आपसमें पैरको एकको एक काटनेलगी सेठजी के दोनों पैर कटनेलगे तब तो सेठने दुहाई तिहाई मचाई निदान पासके लोगोंने आकर इनको निठसे छुटाया इत्यष्टाविंशतितमः प्रदीपः २८॥

अहीरका दृष्टान्त।

आभीराःकथितालोके अधीराबुद्धिवर्जिताः। शीतकालेशीतजलैर्गुरुमास्नापयन्मुदा २९॥

इस संसारमें अहीर बड़े अधीर अज्ञानी कहे हैं उन्होंने शीत समयमें ठंढे जलसे गुरुको स्नान कराया। एक अहीरके घरे गुरु जंडावलसलेनेको माहके महीने में आया वह उसके लिये पहिले तो ठंढाई बनायलाया वह ठाढसे पिलाई फिर ठंढे जलसे स्नान कराया तो वह बेचारा मारे ठंढके ऐंठगया फिर सवेरे वह स्नान कर चन्दन लगाकरके उनके पास गया वे देखतेही बोले कि गुरुजी के पेटमें दर्दथा रातभर पुकारे अब ये दर्द की जगह चांक लगाकर आये हैं अब इनके चांचों पे दाग लगादेने चाहिये निदान गुरु बेचारा मरा २ पुकारताही रहा और उन्होंने ठाढसे दागही दिया अहीर ऐसे अज्ञानी होते हैं॥ इत्येकोनत्रिंशः प्रदीपः २९॥

अन्त मता सो मता इसपर तीन दृष्टान्त ॥

यंयंभावंस्मरन्मर्त्यस्त्यजेदन्तेकलेवरम् ॥ तंतंभावं भवेसम्यक् प्रपद्यभुविजायते ३० ॥

यहमनुष्य, अन्त समयमें जिस २ भावका स्मरण करता अर्थात् जिस २ भावनाको भजता शरीरको छोड़ता है। फिर वह उसी भावको प्राप्तहोकर इससंसार में उत्पन्न होता है (दृष्टांत) एक भाग्यवान्कीस्त्री विधवाहोगई वह वड़ी नियम वाली थी उसने किसी परपुरुषका स्पर्शनहीं कियाथा अन्तसमय वह वीमारहुई वैद्यवुलायागया उसनेआय हाथमिलाय पकड़के इस की नाड़ीदेखी उस परपुरुषका हाथ लगनेसे उसको सुखभया आखिर वह मरगई तो इतनेही सरागसे वह दूसरे जन्ममेंवेश्या हुई जिससे उसको कई परपुरुषभोगनेपड़े॥इतित्रिंशःप्रदीपः३०

ऐसेही एकसाधुने मरते समय सारंगी सुनी तो वह कोली के घरजन्मा वहां उसने माताका दूधनहीं पिया तो उसी वेश्या ने आकर समझाया तवदूध पिया इससे अन्त समय वाजे राग आदि कुछ नहीं सुननेचाहिये किंतु हरिनाम सुनना सुनाना कि जिससे जन जन्ममरणसे छूटे और परमपदको प्राप्तहोवे इत्येकत्रिंशःप्रदीपः ३१ ॥

अथवा एकसाधुने अपने शिष्यों से कहा कि जव हम मरेंगे तव हमारा घण्टा बजैगा तो दैववशसे वह साधु, जंगल में जा मरा लोगोंने आय खवरदी तो उन्होंने न माना और कहा कि हमारे गुरुजी मरेंगे तव घण्टा बजैगा लोगोंनेकहा कि चलकर देख लेवें घण्टे के भरोसे क्या रहनाहै तव सबलोग, बनमेंगये वहांदेखें तो एक वृक्षके नीचे गुरुजी मरे पड़े हैं और ऊपर उनके एक आमका फल वड़ा मीठा लटकरहाहै लोगोंने उसे तोड़ा तो उस फल में कीड़ाथा वह मरतेही घण्टा बजा तो सबने जानलिया कि गुरुजीका मन इस आममें था जिससे कीड़े होगये ॥ इति द्वात्रिंशःप्रदीपः३२ ॥

गतिंदद्याज्जनानांहि कृतोविष्णोर्महोत्सवः॥
अभक्तधापिसकृत्कृत्वा गतोवेश्यानुगोदिवम् ३३॥

भगवान्का महोत्सव किया मनुष्योंको गति अवश्यही देता है। जैसे एक वेश्याके साथीजनने विनभक्ति भी नारायणका (दोलोत्सव) करं अर्थात् झूलाझुलाकरके स्वर्गको गया भगवान् उत्सव के प्यारे है॥ इतित्रयस्त्रिंशःप्रदीपः ३३॥

कुकर्मापिप्रपूज्येत मिथ्यावेषधरश्चयः॥
धृतमालंयथाराजा वधिकञ्चाप्यपूजयत् ३४॥

कुकर्मकारी भी हो पर वह हरिवेषधारी होनेसे 'मिथ्या अर्थात् कपटरूपधारी भी पूजाजाताहै' जैसे वधिक भी था पर मालापहिरके गया तो राजाने देख तिसकी पूजाकरी और उसी दिनसे उसने उस चिडीमारपन के कुकर्मको त्यागा औ आप हरिभक्त भया॥ इतिचतुस्त्रिंशःप्रदीपः ३४॥

केनचित्प्रोच्यमानंहि पुण्यकर्मफलप्रदम्॥
वैश्योक्तोपिकथांश्रुत्वा प्राप्तवान्स्वर्गदर्शनम् ३५॥

किसीकरके बतायाभया भी सत्कर्म, फलदायी होताहै। जैसे किसी याचकने एक वैश्यसे याचना की उसनेकहा कि पासही कथा होरही है जाव सुनलेव, वह जायके कथा सुनतारहा तो तिसके फलसे उसने स्वर्गमें भगवद्दर्शन पाया॥ इतिपंचत्रिंशः प्रदीपः ३५॥

स्वकर्मभुज्यतेस्वेन नान्येनतुकदाचन॥
पापमिंद्रेरोपयित्वा पुनर्वैभुक्तवान्स्वयम् ३६॥

अपना कियाकर्म, अपनेहीसेभोगाजाताहै और कोई कदाचित् नहीं भोगसक्ताहै। जैसे एकमनुष्यने साधुको मारा लोगोंनेकहा तुम वराडभागी हुये उसनेकहा भुजाओंका स्वामी इन्द्र है मेरा

क्या दोष है तब कहा वे भुजा तेरेही आश्रितहैं तब वह निरुत्तर. हुआ ॥ इतिषट्त्रिंशःप्रदीपः ३६॥

रसमें भेलीका दृष्टान्त ॥

अरसेहिमिथोजाते कुतोरसविभावना ॥
रसाभावेकुतोभेलीत्युक्तस्तूष्णींबभूवसः ३७ ॥

आपसमें जब विरसताहोजावे तब रसकी सम्भावना, कहांसे होसक्ती है। जैसे किसी अच्छे भाग्यवान् घरमें बरातआई सब कुछ लगकर विवाह भया पर दानेचारेपर नौबत झगड़नेलगी उधरसे वह कहताहै 'मैंतो भेलीलूंगा भेली' वह कहता 'भेली, की लागैभेली' आपसमें येही जटल होरहीथी निदानं दोचतुर, मनुष्य उससे बोले भाई तू भेली माँगै वह भेली रसकीही होती है, उसने कहा 'हाँ' तो जब हमारा तुम्हारा रसही नहीं रहा, अर्थात् झगड़ा होनेसे वेमनहोगया तब भेली काहेकी मांगै है!, वह यह सुनके कुछ नहीं कहसका ॥ इतिसप्तत्रिंशःप्रदीपः३७॥

संसर्गेणैवत्यज्येत मुनेस्तत्सञ्चितन्तपः ॥
यथावेश्यामुनिंकृत्वा स्ववशञ्चानयद्गृहे ३८॥

संसर्ग होनेसे मुनिजनका भी इकट्ठा किया तप नष्ट होजाता है। जैसे एक मुनि ऋष्यशृंगीजी, बनमें तपस्या करतेथे और तहां के राजाने यज्ञ कियाथा तो लोगोंने कहा वह मुनीश्वर जो आवे तौ तुम्हारा यज्ञ सम्पूर्ण होवे यह सुन राजाने उनको लानेकेलिये अप्सरा भेजी वह उनके पासगई तो वे मुनिजी कितनेही वर्षों से समाधि लगाये थे इससे न आंखें खुलीं न कुछ बोलचाल भई फिर और दिन वह उनकेलिये मिष्टान्न बनाकर लेगई सो उनके मुखमें लगायआई, फिर दूसरे दिन जाय के लगाया तो मुनि जीभसे चाटनेलगे, फिर लेगई तो आपही से मुखफैलाये राहदेखरहेथे ऐसेही नित्य प्रसाद पातेरहे आंखेंखोलदई और बोलनेलगे तो कहा कि तू हमें आश्रममें लेचल,

कहा वहुत अच्छा आइये चलिये' ऐसेकह घर ले आई राजाका यज्ञ समाप्तहुआ ॥ इत्यष्टत्रिंशःप्रदीपः ३८ ॥

ब्राह्मणका दृष्टान्त ॥

बुद्ध्यैवयोजयेद्विद्वान् धृष्टेप्रत्युत्तरन्तदा ॥ स्वकार्य्यं सफलम्भूयाद्यथाधृष्टोद्विजोलभत् ३९ ॥

विद्वान्को चाहिये कि धृष्टजनके आगे बुद्धिसेही प्रत्युत्तर देवे जैसे एक ब्राह्मणने राजासे जाकर याचना किया तो उस धृष्ट राजाने कहा कि तुम्हारे वड़के तो समुद्रका आचमनकर गयेथे महाराज! क्या, तुमसे कुछभी नहीं होसकाहै। तवतो ब्राह्मण नेभी विचारके उत्तर दिया कि पहिले के राजाधिराज 'श्रीरामचन्द्रजीने तो समुद्रका सेतु बांधाथा' श्रीमहाराज। आपभी कुछ सामर्थ्य रखते हैं? राजा सुनके निरुत्तरहुआ उस ब्राह्मणको देनापड़ा ॥ इत्येकोनचत्वारिंशत्प्रदीपः ३९ ॥

अथवा एकचौबे पण्डितसे नवावने कहा हमें तुम अपनी संध्याकरनी सिखलायदेओ। अब जो वह वेचाराकहै कि तुम्हारा अधिकार नहीं तो वह यवन इनको तंगकरता तब तो उसने विचारके वुद्धिसे प्रत्युत्तर किया कि अच्छा आप कीजिये पर प्रथमही हमारे यहां सन्ध्यामें लिखाहै "सप्रणवगायत्र्याशिखांबध्वा" सो पहिले आप अपनी शिखा बांध लीजिये फिर सन्ध्या कीजिये तवतो शिखा बांधनेको वहां क्याथा शिरपर हाथफेरतेही लाचारहुआ चौबेजी गैल छुटाकरघरआये ॥ इतिचत्वारिंशत्प्रदीपः ४०॥

अथवा एकसीधे साधे पण्डितसे नवावने पूछाकहो वर्ण, कितनेहैं उसने शुद्धस्वभावसे कहा हजूर वर्ण, चारहै, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, तव तिसके कामदार कायथने सुझाया कि देखिये आपका तो कुछ इनमें जिक्रही नहीं है। उस विचारेका इनाम रुकगया कुछ दिन पीछे उसकायथने अपने पुरोहितको वुलाया और उसे सब सिखाकर कहा जनाब हमारे पण्डितजी

सेभी पूछिये उसने वही प्रश्नकिया 'वर्ण कितनेहैं' उसनेतुर्तेही उत्तर दियाकि हजूर? वर्णआठहैं चार हमारे हिंदुओंमें औरचार आपके मुसल्मानोंमें, तबतो नवाब साहब [illegible] बोलेभला पण्डितजी? हमारेमें चार कौन [illegible] सैयद, मुगल, पठान, नवाब सुनकर बहुत खुशहुए और उसे बहुतसा इनाम दिया॥ इत्येकचत्वारिंशत्प्रदीपः ४१॥

तथा कवि कालीदासजी ने एकब्राह्मणसे कहा हम राजाके पासचलतेहैं तूभी आना तेरा कुछ उपकार करवादेंगे यह कहके अपने पास से उसे दो टुकड़े ईखके आशीर्वाद देनेको दिये 'वह उनके जातेहीपहुँचा और पण्डितजीके इसारेसे एकओर बैठगया वहां एकबदमास पहुँचा उस ने उस ब्राह्मणकी बगलसे वे ईख के टुकड़े निकाल लिये और उनकी जगह दोटुकड़े लकड़ी के उसकी बगलमें लगादिये। बाद उस ब्राह्मणने आशीर्वाद देनेको वे टुकड़े निकाले देनेलगा वे लकड़ी केथे राजा उन्हें इंधनरूपअपशकुनदेखके बहुत भुँझलाया तब कालिदासजीने बुद्धि सेविचार के उत्तरदिया कि धर्मावतार इस ब्राह्मण ने अपना दरिद्र रूपइन्धन आपके आगे धरदिया अबआप इसे भस्मकरडालिये इसकायहीअभिप्रायहै राजासुनकर बहुतप्रसन्नहुआ और उसब्राह्मणकेदरिद्रको फूक उसेधनीकिया॥इतिद्विचत्वारिंशत्प्रदीपः४२

तृष्णापिशाचिनीचापिध्रुवंमारयतेजनम्॥ तृष्णाभिभूतावृद्धासावज्रेनष्टेमृतायथा ४३॥

पिशाचरूप वाली यह तृष्णाभी मनुष्यको अवश्य मारलेती है जैसे हीरा खोजाने से एकबुढ़िया, तृष्णाकी मारी मरगईथी। दृष्टान्त। एक किसानके लड़केने हीरेका ढेला गोफियेमें लगाकर फेंकदिया उसमेंका एकटुकड़ा उसकी माकोमिला उसने लड़के सेकहातो वहबोला इसे तोमैंने गोफियेमें लगाकर फेंकदियाथा निदानवह इसे जौहरीकी दुकान परलेगई उसने पांचसौ रुपये कीमत कहे तब तो वह इस अभिप्राय से कि सारा रहता तो

बहुतसे रुपये होजाते यह विचार के रो २ कर पुकारनेलगी उसने डरकर अढ़ाईसौरुपये और दिये वह हीरा हजार रुपये काथा तो वह और रुपये मिलनेपर और भी अधिक २ पुकारने लगी तो उसने सवासौ और दिये तो वह और रोनेलगी निदान उस ने नौसौ निन्यानवेतक रुपये दिये और वह साशेंके लालचमें अधिक २ रो २ कर पुकारती रही परिणाम में योंहीं हाय २ करते उसका जीव निकलगया इससे तृष्णा त्यागनी चाहिये ॥ इति त्रिचत्वारिंशत्प्रदीपः ४३ ॥

तीनअर्थ का श्लोक ॥

शतंविहायभोक्तव्यं सहस्रंस्नानमाचरेत् ॥
लक्षंविहायदातव्यं कोटिंत्यक्त्वाहरिम्भजेत् ४४ ॥

सौकाम छोड़के भोजन करना और हज़ारकाम छोड़ स्नान करनाचाहिये तैसेही लाख काम छोड़ दान करना और करोड़ काम तजे हरि भजन करना १ दूसराअर्थ । एक सेठथा उस ने बिचारकिया कि मेरे सौरुपये जमाहोजावें तो मैं अच्छी तरह पेटभरकर खायाकरूं और हजारजमाहों तो नित्यस्नान भी कियाकरूं । और जोलक्ष होजावें तो दान दियाकरूं और जोकभी करोड़होंय तो सबजगद्वालको तज हरि भजन कियाकरूं २ ॥ तीसरा मुख्यअर्थ 'शतंविहाय शतांश छोड़के भोजनकरना और 'सहस्त्ररश्मि सूर्यउदयहोते स्नानकरना तथा ' लक्ष पहिचाने भये को छोड़ और को दानदेना और 'कोटि-सुमेरुको छोड़ हरि भजना अर्थात् माला फेरनी चाहिये इसप्रकारतीन अर्थ भये॥ इतिचतुश्चत्वारिंशत्प्रदीपः ४४ ॥

चोरी निकासनेका दृष्टान्त ॥

लोभादिनापिचोरस्य निश्चयोजायतेध्रुवम् ॥
चोरभोजननिष्कासे जातस्तन्निर्णयोयथा ४५ ॥

लोभ आदि देनेसेभीचोर का निश्चय हो जाताहै । जैसे एक

साधुके पाससे अशरफी चुरालीथी मांगनेसे न दी तबसाधुने वि-
चारकरके उनके भोजन के लिये जबथाल परोसे तो एकथाल
बहुत श्रेष्ठ उसमें एकरुपया धरा ऐसा उसचोरके लियेभी परो-
सा तब चेलों ने पूछा यह थाल किसका परोसा है तबबाबाजी
बोले भाई यहथाल उसचोरकेलियेहै वहभी तो हमारा अंशभागी
अधिकारी होगया है अब उसे यहभोजन दक्षिणामिलेगा तबतो
उसचेलेने विचार के आपउसलालचसे अशर्फीबाबाजीकोदेदी
बाबाजी और सबचेले हँसनेलगे॥इतिपंचचत्वारिंशत्प्रदीपः४५॥

अज्ञानीमनुतेत्यर्थं स्वीयास्वीयपरापरम् ॥
ताडयित्वापरञ्ज्ञात्वा सुतंपश्चाद्लालयत् ४६ ॥

अज्ञानीजन, अपने परायेका बहुतभेद भाव मानते हैं। जैसे
एक सिपाही का लडका बहुत दिनसे कहीं चलागयाथा। फिरवह
सिपाही दौरे परगया तो सराय में उतरा। वहांही उसका लड़-
काभी कहींसे आयभीतरपड़ाथा सिपाही ने जाय आवाज दी वह
न बोला तबउसके चार चाबुक मारे जबवह पुकारा और जान
लिया कि लड़काहीहै तबछातीसे लगाकर रोनेलगा अपने और
परायेमें इतना भेदमानते हैं॥ इतिषट्चत्वारिंशत्प्रदीपः ४६॥

धर्मस्य सूक्ष्मागतिः पर दृष्टान्त ॥

कार्य्यारंभेतुशतंजातेऽर्द्धेर्द्धशतंतथाब्रूते ॥ जातेका
र्य्येनशतंनचार्द्धमेषाजनप्रकृतिः ४७॥

यहजन, कार्यके आरम्भमें अर्थात् जबकरनेलगताहै औ कार्य
सिद्ध नहींभयाहै तबतोशत अर्थात् पूरा२ पुण्यकरने को चितता
है॥ जबवह कामआधा सिद्धहोता तब आधा पुण्यकरने कहता
है। और जबवह कार्य्यहोजाताहै तो नतो आधापुण्य होता न
साराहोताहै इसपर दृष्टान्त। जैसे कि एककृपण मनुष्य किसी
ऊंचे वृक्षपरचढ़गया फिर नीचेकोदेखातो आंखेंफिरगईं औरउतर
नेकी तरकीब कोई यादन आसकी तबतो देवतायादआये तबलगा

उनको मनाने कि मैं खुशी से नीचे उतरजाऊं तो सौब्राह्मण, देवताके जिमाऊंगा। जब वीचमें आया तो कहने लगाआधे ५० तो जिमाऊंहींगा। जब ऐसेही कम करता २ नीचे उतरआया तो न सारे न आधेयादरहे देवताकी जय, बोलके सांवरो भावको भूखो, सुदामाके चावलचूके, शाकविदुरघरलूखो ऐसे सूखे पदकह २ देवताकी मनुहार करकर घरचला आया। पुण्यकरने में कृपणजनोंकी यह गतिहै॥ इतिसप्तचत्वारिंशत्प्रदीपः ४७॥

## मूर्ख ब्राह्मणका दृष्टान्त॥

प्रज्ञाहीनस्यपठनं यथान्धस्यचभूषणम्॥ अतोबुद्धिमतांशास्त्र मबुद्धेश्चतिरस्कृतिः ४८॥

बुद्धिहीनका पढ़ना ऐसा जैसा अंधेके आगेदर्पण। इससेबुद्धिमानों को तोवह 'शास्त्र-शिक्षारूप' है और अबुद्धिवालेको वहही 'शास्त्र-तिरस्कारकारकहोजाता है, इसमें दृष्टान्त जैसे एकसंडब्राह्मण, घरसेकाशीजी जाताथा राहमें एकयमुनाजीके पंडेने संडब्राह्मणको देखके बिचारा कि यह जो हमारे पास रहै तोचंदन खूब घिसाकरेगा तोउससे पूछाकहांजाताहै बोलाकाशीजी पढ़ने तो पंडेने संडेसे कहा आव हम यहांही पढ़ायदेंगे चन्दन घिसाकर वह घिसनेलगा तो तिसे यह पदबताया कि 'उच्च स्थानेषुपंडिताः, पण्डित लोग ऊंचेस्थान पै बैठते हैं, यह बताकर धुखाया और चन्दन घिसाया फिर उसने पूछा तो 'शाकेषु कुलथी श्रेष्ठा--शाकों में कुलथी का शाक श्रेष्ठ है, यह पद बताया कहा चन्दन, घिस, फिर 'महाजनो येनगतः सपन्थाः जिधर से बहुतजन गयेहों वही मार्ग है' यह बताया, फिर 'अन्नंब्रह्म इतिश्रुतेः- अन्न ब्रह्म ऐसी श्रुति है यहबताया। फिर 'उद्योगं जनलक्षणम्-उद्योग करना यही पुरुष का लक्षण है' बताया। फिर 'स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान्सर्वत्रपूज्यते। राजा तो निजदेशही में पुजता और विद्वान् की सब ठौर पूजा होती है,

यह पदबताया और बारहवर्षतक चन्दनघिसाया इतनेहीं खण्ड खण्ड जहांकही के श्लोकों के टुकड़े पंडे को यादथे वे संडे को बताये फिर कहदिया कि तू पंडित होगया जाव निर्भय विचर वहसुन अपनेको महाभारी पंडितमानके चला अपने देशआया राहमें ससुरालथी वहां के लोग बड़ी तयारीसे इसको अगवानी लेनेआये धूमधाम के साथ घरपै लेगये वहां इसके लिये बड़ा सुन्दर आसनबिछा था उसपर बैठनेको कहा तो पंडित जी को तो वह पदोंकी लड़ी यादहींथी उसी के आसरेसे सरकते थे तो ऊंचा स्थान देखतेरहे एक कंडोंकाटीला ऊंचा लगाथा बस (उच्चस्थानेषुपंडिताः) कहकर उस पर जा टिके सबलोग हँसने लगे फिर लोगोंनेपूछा आपकेलिये क्या२ भोजन बनवायाजावे उनके वहपद सरलहीथा झट बोलउठे (शाकेषु कुलथी श्रेष्ठा) कुलथी खावेंगे। तब तो लोग औरभी अचम्भेरहे फिर संडाजी बाहर शैरकरनेगये उधरसे बहुत से लोग एक मुर्दा जलानेजाते थे तो इनको (महाजनोयेनगतःसपंथाः) यादआगया तो उनके साथ होचले जब वे विश्रामपर पहुँचे और वहां पर पिंटदिया तो यह उसेउठाय (अन्नंब्रह्म इतिश्रुतेः) कहकर मुहँमें धरगया तब तो सबकेसब इसे देख२ कर हँसनेलगे कि यह वही संटहै जो फलाने का जँवाई कल्ह विदेश से पढ़कर आया कंडों पर जा चढ़ाथा और इसी ने कुलथी मँगाकर खाईथी सबलोग ऐसी २ ठठोली करतेरहे वह फिर उनसे बिछुड़के चला तो इस का साला कचहरी में कामकरने जाताथा, इसनेकहा हम भी चलें राजा से मुलाकात होगी दोनोंचले आगे दरवाजेपर पहुँच उसने एक नवीन कमरे में इसको बैठाय के कहा आप यहां तशरीफ रखिये मैं राजाजी से इत्तिलाकरके आपकेपास बुलावा भिजवाता हूं तब आनाठीकहै पंडाजीको वहां टालीबैठे (उद्योगं जन लक्षणम्) याद आगया तो लगे उन कांचके किवाड़ों को तोड़ने राजा के सिपाही ने देखा तो झट गिरफ्तार किया राजा

के सामने पहुँचे साला इसकी हकीकत सुनही चुकाथा हाल देखतेही सटकगया और राजाने इसे जवाबदेई में कोराकोरा मूर्ख ठहराकर कालामुहँकर गधेपर चढ़ानेका हुक्म दिया इधर उसके वह पिछाड़ीकापद सार्थकहुआ झट बोलउठे कि "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते" राजन् हमारी तो पूजाही है हम विद्वान्लोग सर्वत्र पूजेजाते हैं तू तो अपनेदेशही में पुजताहै राजा सुनके हँसनेलगा और सवजन इसेधिक्कारनेलगे ४८ इतिश्री मच्छुक देवीसहाय कृतौ दृष्टान्तप्रदीपिन्यास् मिश्र निबन्धो दशमः १० ॥

तहाँ दृढ़भक्तिविषे मामा भानजाका दृष्टान्त ॥

भक्ताधर्म्मोन्नतौसक्तास्त्यक्त्वाप्राणान्सुदुस्त्यजान् ॥
साधयन्तिनिजंधर्म्मं स्वर्णकारौयथादृढौ १ ॥

॥जोधर्मकी उन्नतिमें सक्चित्तभक्तहैं वेनिज दुस्त्यज प्राणोंको भीत्यागके निजधर्म्मका साधनकरतेहैंजैसे ॥ दृष्टांत ॥ दोनोंमामा भानजा दृढ़भक्तभये दो मामा भानजा सुनार, नारायणके परम भक्तथे। उन्होंने भ्रमते२ शून्यवनमें 'श्रीरंगजीकी, प्रतिमादेखी तो उनके मन्दिर बनवाने के लिये उद्योग किया। द्रव्य बहुत चाहता था तो एक सरावगी (जैनी) के मन्दिर में मूर्त्ति सुवर्ण की बड़भारी थी उसके लिये नौकरहुये पूजा सेवा उसकी ऐसी की कि मालिककी प्रसन्नता से सबकाम इनके हाथमें आगया अब उस मूर्त्ति के लेने के विचार में लगे। पर मन्दिरका द्वार ऐसीरीति से बनाथा कि उसमें से मूर्त्ति नहीं निकलसक्ती थी। फिर उन्होंने भेदलगाकर कारीगरसे पूछा उसने बतादिया कि इसका कलश पेचदार लगाहै उसी राहसे मूर्त्ति उतारीगई है और यह घुमाने से खुलसक्ताहै। तब उन्होंने रातिको पहिले उस कलशको उतारा फिर भानजा उस राहसे गुम्मटपर चढ़ गया मामाने मन्दिरमें जायमूर्त्तिको दृढ़ रस्सीसेबांधी और भानजे

ने उसे ऊपरको खैंचलिया। जब मूर्त्ति मिलने से मन स्थिरहो गया तो मामाभी उसीराह से निकलनेको चाहा परन्तु अति हर्ष होनेकेकारण शरीर उसका ऐसामोटा होगया, कि उस राह से नहीं निकलसका। उसी में फँसगया कितनेहीं उपाय निकलनेकेकिये पर कुछ न चला निदान मामाने भानजेसे कहा कि जो मेरा शरीर यहां रहातो कुछ चिन्तानहीं मनोरथ जो था वह होही गया अब उचित यह है कि तुम लेजाकर भगवत् का सुन्दर मन्दिर बनवाओ मेराशिर काटकर कहीं डालदे जो मेरे कानोंमें भगवत्कीनिन्दा औ सेवरोंकेवचन कानमें पड़ने न पावें निदान भानजेने शोकसेदुःखितहोकर मामाके कथनके अनुसार शिरकाट लिया और मूर्त्तिको लेकरचला यद्यपि उस भगवद्भक्त को शोक अपने मामाके मरनेका न था पर परम भगवत्सत्संगी के बिछुड़नेसे शोकसागरमें मग्नहुआ। सो कभीशोक,कभी मूर्त्ति मिलनेसे आनन्दित होता जहां मन्दिर बनवाना था तहां पहुँचा तो दूरसे देखा कि कोई मन्दिर बनवानेकी तैयारी कररहा है। जब समीप पहुँचा तो देखपड़ा कि मामाही खड़ा मन्दिर बनवा रहाहै तब तो अति आनन्द से दौड़कर दोनों मामा भानजे आपुसमें मिले और मन्दिर रंगनाथ स्वामी का ऐसा दृढ़ बनवाया कि वैसा दूसरा संसारमें नहीं भक्त ऐसेहोतेहैं इति प्रथमः प्रदीपः १॥

## क्षमा में वैश्य साधु का दृष्टान्त॥

भक्तो [illegible] ह्यागतं मुह्यति नो [illegible] शुशोचितस्मै स्वसुतामदात्पुनः २॥

भक्तजन, महादुःखको भावी से प्राप्तभया जानकर मोहित नहीं होते जैसे वैश्यभक्त ने, (वैश्य) साधुकरके हते भये पुत्र को जानकरकेभी तिसका शोक नहीं किया और तिसकी वैश्य साधु

को निज पुत्री व्याहदई। दृष्टान्त॥ जैसे एकवैश्यभक्त के द्वारपै वैश्य साधु आया वहां उसकी सेवा अच्छी वनी तो वह सेवा से प्रसन्नहुआ वहांहीं रहनेलगा वैश्यभक्त ने अहोभाग्य कहके रख लिया उसे साधु सेवा करने का बडाप्रेम था आनन्द से रहने लगे। एक दिन वहसाधु उस वैश्यके लड़के को साथलेकर वन में गया तो उसके आभूषण आदि बहुत मोलके देखकर उसका चंचल चित्त चलितहुआ तो उसेमारके गाड़आया। घरआते ही वैश्यकी स्त्रीने पूछा आपकेसाथ लड़कागयाथा कहा नहीं मेरे साथसे तो लड़कों में ठहरगयाथा यहांहीं कहीं खेलता होगा। उसने सवठौर देखाभाला पर कहां मिलना था। निदान दासी देखनेगई तो उससे एक योगीनेकहा कि जो तुम्हारे घरमें साधु रहता है वहही तुम्हारे लड़केको मारके गाड़आया है उसहींठौर पै उसके रुधिरके चिह्न होरहे हैं,वह जायके देखआई सबहाल आकर घरमें कहा वैश्यकी स्त्री रोनेपीटने लगी तो वैश्यने उसे ज्ञानदेके समझाया कि यह प्राणी कालसें होता और कालसेंही मिटजाता है उसकाल की गतिको देखना चाहिये और जिसने अपनी प्रसन्नता से जो वस्तु हमको दी थी वह हमें कुपात्रतथा निज सेवामें असमर्थ जानके वह अपनी आप उलटी लेली तो हमारे शोककिये क्यावह आसकीहै? इससे शोक करना सर्वथा वृथा है और जो हुआ सो तो भावीवशसे हुआ इसमें किसी का वशनहीं पर अब उचित यहहै कि अपनी लड़की इस साधुको और व्याहदेवें जिसमे, निस्संदेहहो आनन्द से भजनकरें इस सलाहको सुनतेही उस शीलवाली स्त्री ने अंगीकारकरी और साधुको व्याहदेने की तैयारी भई इस चरित्रको देखके वहसाधु निज निन्दित कर्म्मकी और उनकी श्रेष्ठता की लज्जाके मारे सुन्न रहगया चित्रकीपुतलीसा ज्योंकात्यों स्थित कुछभी न कह सका। इतनेमें उस साधुके (गुरुनारायण) चलेआये वह उन्हें देखके औरभी लज्जितहुआ और वेदोनों स्त्री पुरुष उनके चरणों

में गिरे तब गुरुजीबोले क्या विचार है उन्होंने हाथ जोड़ कहा महाराज! इस भगवद्भक्तको अपनी कन्या विवाहनेका विचारहै और कुछनहीं तबतो महात्माने कहा बहुत अच्छा विचारा लाओ तजवीजकरें ऐसेकह विवाहकी तैयारी करनेलगे और विवाहभी होनेलगा निदान जब फेरोंका समय आगया तब गुरुजीने कहा कि इससमय लड़कीका भाई चाहिये जब वह आवेआहुति दी जावै यह सुन सबके सब रोने लगे और वह वैश्य भी आंखभरे हाथ जोड़ बोला स्वामिन्! लड़का तो था पर वह इसरीति से काम आया वह सब हालकहा तो महात्मा बोले नहीं २ ऐसा नहीं हुआ वह लड़का खेलनेगया और अभीआता है तबतो वे सब बाहरकी ओर एकसाथ निहारनेलगे उसी समय लड़का बाहरसे प्रसन्न खेलता २ आयपहुँचा सबके आनन्दभया साधुका व्याह उसकी पुत्रीके साथ होगया भगवान् भक्तकी ऐसे रक्षा करते हैं॥ इति द्वितीय प्रदीपः २॥

देवाजी ब्राह्मणका दृष्टान्त॥

भक्तंरक्षतिदुःखार्त्तं देवाजीब्राह्मणंयथा॥
ररक्षस्यविरोभूत्वा केशाद्रक्तमवासृजत्॥ ३॥

भगवान् भक्तकी रक्षाकरते हैं जैसे दुःखित (देवाजी) ब्राह्मण की आप भगवान्ने वृद्धमूर्त्तिहोकर रक्षाकरी औ निजकेशसे रुधिर की धारचलाई॥ दृष्टान्त॥ (महाराज रानाजी) के महलकी ड्योढ़ी भीतर श्री नारायणका मंदिरथा उसमें देवाजी, वृद्ध ब्राह्मण, पूजा किया करते उसमें जो सुगन्धित पुष्पोंकाहार ठाकुरजी के लिये आता उसे देवाजी, शुद्धचित्त से पहिले आप पहिरलेते फिर ठाकुरजीको धारणकरादेते जब रानाजी दर्शन करनेआते तब वह उतारकर उन के गले में डाला जाताथा, एकदिन दैववशसे एक सफेदकेश उसमालामें रानाजी को देखपड़ा तो बोले इसमें यह सफेदकेश लगाहै, क्या नारायण वृद्धहोगये हैं? उसने एहसान समझकर यही कहा कि हां श्री

महाराज ! श्रीनारायण, वृद्धहुए इससे श्वेतकेश होगये हैं। उन ने कहा, अच्छा हमसबेरे देखेंगे ऐसेकह चलेगये तब तो देवाजी धर्म्मसंकटमें फँसे कि, रानाजी देखेंगे श्वेतकेश, न देखपड़ेंगे तो मुझपर बड़ाभारी दण्डहोगा हे जगदीश्वर ! आपही रक्षकहो निदान सबेराहोतेही रानाजी ने आय दर्शनकिया तो वही वृद्ध मूर्त्ति श्वेतकेशोंवाली उनको दिखाईदी तब निज धृष्टतासे परीक्षाके लिये एककेश उसमें से, रानाजीने उखाड़लिया तो उसके गड्ढेमें से रुधिरकीधार बहके ऐसीचली जो रोंके न रुकी निदान हारके रानाजी, देवाजी के चरणों में गिरे फिर प्रार्थनादि करने से आज्ञाहुई कि जबतक रानाजीके वंशमें कुँवर पदवी रहे तभी तक दर्शनकरने को आवें और बाद राज्यतिलकहोने के दर्शन न दिये जावें, यहीरीति उनकेयहां आज तक चलीआती है भक्तकी भगवान् ऐसे २ संकटों में रक्षाकरते हैं सत्यचित्तसे उनकी हानि भी भक्तसे होजावे तो वे दयालु आप क्षमाकरदेते हैं ॥ इति तृतीय प्रदीपः ३ ॥

भुवनसिंहका दृष्टान्त ॥

भक्तंरक्षतिभयतस्तुभुवनसिंहं निदेशतोराज्ञः ॥ कदलीकर्त्तनसमये खड्गोभूत्वाररक्षहरिः ४

भगवान्, भक्तकीभय से रक्षा करते हैं जैसे (भुवनचन्द्रकी) राजाकी आज्ञासे केला काटने में, भगवान् ने खड्ग होकर रक्षा करी, (भुवनसिंह मन्त्री) ज्ञानी ध्यानी बड़ाही भगवद्भक्तथा वह तलवार काठकी रखताथा किसी ने राजासे, कह दिया वह परीक्षाकेलिये इसको शिकार खेलनेको साथ लेगया वहां केला के वृक्षको काटने अर्थात् एकहीवारमें उड़ादेने की आज्ञा राजा ने भुवनसिंहकोही दी उसकेपास तलवार काठकीथीही उसने उससमय सिवाय परमेश्वरके और किसीको सहायक न समझ कर ईश्वरसे विनयकिया कि यहलाज आपहीके हाथहै, निदान

उसकी प्रार्थनासे प्रसन्नहुए श्रीभगवान् तिसमें खड्गरूप होकर स्थितहुए उसने शीघ्रही राजा के सामने तलवार से वारकिया उन निन्दकोंको दण्डमिला भगवान्, ऐसे रक्षकहैं ॥ इतिप्र०४॥

॥ भक्तंरक्षतिकेनापि वेषतःसेवितः कृष्णः ॥
ज्ञात्वापिलुब्धवेषं यातोहंसोऽयमोचयद्राज्ञः-५

वेषकीलाजसे भगवान्भक्तका काजसुधारतेहैंजैसे ॥ दृष्टान्त ॥ एक राजाके कुष्ठरोगथा उसको एकवैद्यने कहा एक जोड़ा हंसका मँगवायके उसका तैल निकालाजावे उसका मर्दन करने से कुष्ठजावेगा राजाने बधिक को आज्ञाकरी उसने वनमें जाकर जाललगाया पर हंसका जोड़ा उसमें नहीं फँसा वह लाचार होकर चलाआया। दूसरे दिन वह कपटी कंठी, तिलक धार करगया तो भगवान् उस वेषकी लाज से आप उसजाल में आयफँसे तथा मायाके हंस बनाके फँसादिये वह ले प्रसन्नहो चलागया। उधर श्रीभगवान्ही वैद्यवन राजाके पास पहुँचकर बोले हे राजन्! क्यों वृथा हिंसाकरताहै तेरे इस बूटीका रस लगाने से आराम होगा ऐसे कह उस राजाको (बूटी) दे उसहंस जोड़ेको छुड़वाकर पधारे ॥ इति पंचम प्रदीपः ५॥

कमधुज भक्तका दृष्टान्त ॥

भक्तंवनेपिरक्षतिकमधुजभक्तं मृतंयथाकपिभिः ॥
कृतसंस्कारंसद्यो ह्यदाहयत्सर्वजनसाक्ष्यम् ६

भगवान् वनमें भी भक्तकी रक्षाकरतेहैं जैसे॥दृष्टान्त॥(कमधुज-भक्त) घरमें सबभाई बन्धुओंसे उदासीन रहता घर जो मिलता सो खाकर वनमें चलाजाता वहां एकान्त भगवद्भजन करता परिणाम में वह बनमें मरगया भाई लोगों को खबर न थी तो निज भक्तके काज महाराजने अपनी वानरसेना भेजी वे वानर आकर उसकी तैयारी में लगे उसका यथा विधि से संस्कार किया तभी ब्योरा पायके उसके भाईलोगभी आपहुँचेथे उन्होंने यहचरित्र

देख बड़ाही आश्चर्य्य माना और धन्यधन्य कहतेभये ॥ इति षष्ठः प्रदीपः ६ ॥

जयमल्ल राजाका दृष्टान्त ॥

रक्षतिभक्तंभयतःकृष्णो नियमस्थितंयथारिपुतः ॥
जयमल्लवरराजानं ररक्षपरचक्रतोऽभीतम् ७

कृष्णचन्द्रजीभक्तकी भयादिक से रक्षाकरतेहैं जैसे ॥ दृष्टान्त॥ जयमलराजाको शत्रुसेबचाया और उसकेशत्रुसे आपलड़े उसको कुछभी भीड़नहीं आनेदी ॥ दृष्टान्त ॥ राजा जयमल बड़ा नेमी था नारायणकी सेवामें लगाथा किसीने आकरकहा शत्रु चढ़ाआता है तो उसने उसका कुछभी भयनहीं माना कहा कि मेरेतो भगवान रक्षक हैं मैं उन्हीकी सेवामें हूं निदान जब शत्रु पासही आयपहुंचा तो भगवान् आपही शूरवीर होकर तहां गये और उसको सेना सहित मारभगाया ॥ इति सप्तम प्रदीपः ७ ॥

भक्तंरक्षतिश्रीरामकवचं रक्षितंभयात् ॥
लुंठकात्परिरक्षासीद्यथाश्रीधरस्वामिनः ८

श्रीधर-स्वामी किसी ग्रामसे चले आते थे उन्होंने मार्ग में भय समझकर ( श्रीरामरक्षा-कवच ) से निज रक्षाकेरी चल दिये। राहमें उनको लुटेरे मिले तो इनके इधर, उधर उनको धनुप बाणलिये श्रीरामलक्ष्मणजी, साथ चलते देखपड़े ऐसेही वेभी देखते २ घरतक चलेआये कोईभी दांव न चला तो हार लाचार होकर श्रीधरस्वामी केही चरणोंमें आयगिरे सब हाल कहा वे-जानगये कि प्रभुने हमारी रक्षाकरी तभी से उन चोरों नेभी लूटना छोड़दिया भगवद्भक्त हुये ॥ इति अष्टमप्रदीपः ८॥

किंकथयेहरिभक्तः कुमार्गचारोपिरक्ष्यतेहरिणा ॥
लुण्ठकभक्तंविपिनेवैश्यो भूत्वाददौद्रव्यम् ९

कहांतक कहें कुमार्गचारी भक्तकी भी भगवान् रक्षाकरतेहैं

जैसे॥दृष्टान्त॥ एक भक्त चोरी और लूटसे द्रव्य लाकर साधुसेवा करता था। एक दिन उसकेघर बहुतसे साधु, चलेआये उसके घरमें कुछभी न था वह उनकोघर बैठाकर वनमें लूटनेके तलाश में गया कुछ उपाय न चला तो उन साधुओं से टरके महादुःखी हुआ निदान श्रीभगवान् वैश्यवन के आये और उसे बहुतसा द्रव्यलुटाय गये॥ इति नवम प्रदीपः ६॥

चोरका दृष्टान्त॥

पुण्यार्थमोघवचनं सम्पादयतिप्रभुर्मुदासत्यम्॥
चौरैर्मुषितांमहिषीं सालंकारांसमानयत १०

पुण्यके अर्थ कहे निरर्थक अर्थात् मिथ्यावाक्यकोभी भगवान् सत्य करदेते हैं जैसे गोपालभक्त, वनमें गऊचरारहा था, भैंसको चोर लेगये घरमें मातासे आकर कहदिया एक व्यापारी घीके दाम और भैंस देदेनेके इकरार से लेगया है केवल छांछमात्र वह खाकर फिर हमारी को हमारे घर पहुंचायदेगा निदान,उस चोरने फिर दीपमालिका के दिन उस भैंस के गले में चांदी की हँसली, पहिराकरबाहर निकाली तब निर्णयकरनेको श्रीभगवान् ने उस भैंसकी रस्सीतोड़ उसकेबच्चे समेत (गोपालजी) के घर पहुंचाई वे देखके मातासे कहने लगे देख यह घीके दामोंके गहने समेत भैंस उसभलेमानुषने पहुंचाईहै॥ इति दशमप्रदीपः १०॥

गणेशदेई रानीका दृष्टान्त॥

कौटिल्यंनापिमनुते भक्तःसाधुकृतंमहत्॥
गणेशदेवीतत्साधोर्महत्कौटिल्यमक्षमत् ११

भक्तजन साधुकरके किये भारी अपराध को सहलेते हैं जैसे गणेशदेई-रानी के एक साधू भक्ति परीक्षाके लिये जांघमें कटार मारकर भगगया तो कितनेही दिन वह रजोधर्म तथा बेचैनी के मिस से राजाकी सेजपर न गई कि राजा फिर साधुसेवा न करेगा। निदान कईदिन बाद राजा के पासगई तबभी राजा ने

देख उससे हालपूछा उसने कहसुनाया राजासुन बहुत प्रसन्न हो निज भाग्य सराहनेलगा॥ इति एकादश प्रदीपः ११॥

कृष्णदासजीका दृष्टान्त॥

दाताभक्तोददात्येव निजमांसमपिप्रियम्॥
कृष्णदासोददन्मांसं वृकंमत्वातिथिंस्वकम् १२

दाता-भक्तजन निज मांसभी दान करदेते हैं। जैसे कृष्णदासजी अभ्यागतोंके परमसेवक भगवद्भक्तहुये॥ श्रीगलताजी जयपुरके राज्य में रहतेरहे अभ्यागत सेवा से उन्होंने कलियुग को जीतलिया जैसा दधीचि मुनिजीने कामकिया वैसाही उन्होंने किया सो कि एक दिन भजन करते २ द्वारपर एक व्याघ्र चलाआया तो उसे अभ्यागत जानकर आपने निज शरीर का मांसकाटकर डालदिया भगवत् प्रसन्नहोकर शीघ्रही तिनको दर्शनदिया बिचारनाचाहिये अबकेजन, चुटकीआटा देतेरोतेहैं॥ इति द्वादश प्रदीपः १२॥

शंकर व्यास शुकजी की कथा॥

शङ्करःशङ्करःसाक्षाद्व्यासोनारायणःस्वयम्॥
अभाललोचनःशम्भुर्भगवान्बादरायणः १३

शंकराचार्य्य, साक्षात् शंकरजीहीहुए और व्यासजी, साक्षात् नारायणभये, और बिन मस्तकके नेत्रके श्रीशुकदेवजी साक्षात् महादेवजीही भये ग्रंथ समाप्ति में मंगलरूप इन तीनोंकी कथा लिखते हैं "श्रीशंकरस्वामी" इस कलियुग में धर्म के रक्षक औ भगवत् धर्म के प्रवर्तक शिवजीके अवतार औ जगत्के आचार्य्य भये। जितने अनीश्वरवादी और जैनधर्मी, पाखण्डी भये तिन सबको ध्वस्तकरके शास्त्रपद्धतिपर चलाया। दक्षिणदेशमें विक्रमादित्य के समयमें स्वामीका अवतारभया। स्मार्तमतकी रीति से दण्डधारणकर संन्यासीहुए और उसीमतके अनुसार भगवद्धर्म चलाया। सेवरोंको परास्तकिया ( मंडन-मिश्र ) जिनको

ब्रह्माजी का अवतार कहतेरहे, और वे मीमांसा मतवादीहुए। उनको वादमें निरुत्तरकिया फिर मंडन मिश्रकी स्त्री वाद करने लगी उसने काम शास्त्रमें प्रश्नकिये तो ये स्वामी संन्यासी परम यती थे उस राहसे कुछभी भेदी न थे इसहेतु (राजा-अमरुक) के शरीर में जो उसीदिन छूटाथा। योगबलसे उसमें प्रवेशकरके छै महीने रहे एक ग्रन्थभी (अमरुशतक) अति ललित उसी शरिर में बनाया तब जितनी रानियें अमरुक की थीं उन्हों ने जानलिया कि यह कोई योगी है इसका निजदेह कहीं गुप्तहोगा उसे जलाय देनाचाहिये जिस से हमारा सुहाग बनारहे, इस हेतु उस शरीरको ढुँढ़वाकर जलाने की आज्ञादी तभी स्वामी ने राजाका देह त्याग निज शरीर जाय सँभाला और अग्निकी रक्षाकेलिये नृसिंहजी का स्मरण किया प्रभुने उस अग्नि को शीतलकिया तभी स्वामीने चितासे निकलकर मंडन मिश्रकी स्त्रीको निरुत्तर की मिश्र, स्वामीजी के शिष्यहुये पश्चात् चार्वाक मतवालोंको परास्तकरके धर्म में प्रवृत्त किया फिर सांख्य शास्त्री औ हठयोगवालों को शिक्षादी फिर सेवरों से मत युद्ध बड़ाभारी आनपड़ा निदान पहिलेहीवार में जीतकर उनकी धूर्तता औ मन्त्र चेटक आदिको दूर किया फिर इन्द्रजाल उन्होंने किया तो वह भी उन्हींके गलेमें पड़ा तिसी से कोठेपर से गिरकर मरगये और कुछ नदी में डूबे तिससे बचे तिन्हें देशाधीश ने नावों में भरवा २ कर डुबवादिये उन्होंमें भी जो २ भगवत् शरणहुए, वे बचे तात्पर्य यह कि जो कोई भगवत्से विमुख वा वेदविरुद्ध चलताथा उसे विद्याके बलसे निज प्रभाव दिखाकर भगवत् धर्मपर दृढ़किये फिर ठौर २ मन्दिर, शिवालय बनवाये और प्रत्येक देवताओं के भिन्न २ स्तोत्र बनाये इत्यादि विस्तार से कथा स्वामी की (शंकरदिग्विजय) ग्रन्थमें लिखी हैं॥ इतित्रयोदशप्रदीपः १३॥

---

## व्यासोनारायणः स्वयम् ॥

व्यासजी साक्षात् नारायणहुए,जिन्होंने लोगोंके सुखसे समझनेके लिये वेदके ऋक्, यजुः,साम,अथर्व ये चारोंवेद वनाये औ पृथक् २ संहिता बनाकर ( पैल ) आदि निज शिष्यों को पढ़ाई। तथा अरिणी मन्थनकरके उत्पन्नभये मुनि (शुकदेवजी) को श्रीमद्भागवत, बनाकर पढ़ाई और भागवत आदि अठारह पुराण ( श्रीसूतजीको ) पढ़ाये उनको वेदका अधिकार नहींथा उन्होंने तिन पुराणोंको ( शौनक ) आदि मुनिजनोंको श्रवण कराये वे इतिहास आजतक जगत् में फैल रहे हैं इत्यादि इनका चरित्र बहुतसा प्रसिद्धहै ॥ इतिचतुर्दशप्रदीपः १४ ॥

## अभाललोचनःशम्भुर्भगवान्बादरायणः ॥

विना तीसरे नेत्र ( श्रीशुकदेवजी ) साक्षात् ( श्रीमहादेवजी ) भये ॥ दृष्टान्त ॥ ऐसा जगत्मेंकौनहै जो श्रीशुकदेवजीकीमहिमा वर्णन करसकै जिनके मुखसे ( श्रीमद्भागवतरूप ) अमृतकी नदी निकली जो सब पीनेवालोंकोअमर करतीहै। एकसमय देव स्त्रियों ने स्नानकरते ( शुकदेवजी ) से लज्जा न की और व्यासजीको देख लज्जित होकर वस्त्र पहिर लिये। व्यासजीने पूँछा तब उत्तर दिया कि शुकदेवजी सिवाय भगवत्रूपके जगत् को नहीं देखते आपको सबप्रकार का ज्ञान है इसहेतु तुमसे लज्जा है शुकदेवजी बालकपनसेही ज्ञानी-भगवद्भक्त हुए जन्मतेहीं बनको चलदिये व्यासजी, पीछे २ मोहके वश पुकारते२ चले तब सर्वओर वृक्षोंसे ध्वनिहुई कि हम और तुम यह सब भ्रमहै व्यासजी यह उत्तर पाकर लौट आये पर इसउपायमेंरहे कि शुकदेवजी फिर भी आयरहैं इसहेतु कई लड़कों को श्रीमद्भागवत के श्लोक पढ़ाकर शुकदेवजी थे तिस वनमें भेजतेथे। एक दिन किसी लड़के से श्लोक सुना उसका अर्थ यहहै। पापात्मापूतना, स्तनोंमें विष लगाकर मारने को भी गई पर उसे भी वहगति प्राप्तिभई जो औरकोकभी न मिलसकै ऐसादयालु

और कौनहै जिसकी हम शरणजावें शुकदेवजीने यह सुनकर बड़ा आश्चर्य्य किया और लड़कों से प्यारकरके पूछनेलगे कि यह तुमने किससे सीखाहै उन्होंने व्यासजी का नाम बताया तब शुकदेवजी आये औ प्रेमसे रहनेलगे श्रीमद्भागवत पढा और श्रीगंगाजी के तटपर आकर राजा परीक्षितको श्रवण कराकर तिसकी मुक्ति की और जिस २ ने उस सभा में सुनी वे सब भगवद्भक्ति परायणहुए और अब भी जो कोई सुनताहै वह परमपद का अधिकारी होताहै ॥ इतिपंचदशप्रदीप. १५ ॥

जयदेवकविका इतिहास ॥

महान्महत्त्वंभजतेमुहुःस्वकंभृशार्दितोपीहखलैःसमन्ततः ॥ विच्छिन्नहस्तोजयदेवपण्डितश्चकारचौरेषुदयांततोऽपिसः-१६ ॥

महान् पुरुष-महात्माजन, कुटिल जनोंकरके सब ओर से अत्यन्त दुःखी किये भी निज महत्त्वकोही भजते अर्थात् निज श्रेष्ठपनको नहीं त्यागतेहैं। जैसे चोरोंकरके हाथ कटानेपरभी (पण्डित श्रीजयदेवकविजी) ने तिनचोरोंपर दयाहीकरी विस्तारसे इनका इतिहास १६ ॥ श्रीजयदेवकवि, सब कविराजों में चक्रवर्ती (महा कविराज) भये (गीतगोविंद-काव्य) तीनों लोकों में ऐसा प्रकाशित किया कि कोककाव्य और नौरसे और शृंगारका समुद्रहै जिसकी अष्टपदीको जोकोई पढताहै वह निश्चय बुद्धिमान् और सर्व शास्त्रोंका ज्ञाता होजाताहै और जहां जोकोई कीर्त्तनकरे तहां निश्चयही भगवान्, प्रसन्नहोकर आतेहैं और भगवद्भक्त जो कमलरूपहैं तिनके प्रकाशक आनन्द के हेतु सूर्यके सदृशहैं और वैसाही भगवत्काभी आनन्ददायकहै और यह जानेरहो कि कोक और शृंगारपदसे विषयीलोगोंकेमन औबुद्धिमें जोकोक औ शृंगार, वर्तरहाहै उसका निश्चय न होवे किंतुशृंगारपदसे यह तात्पर्य्यहै कि वहशृंगार कि जिसकावर्णन

केवल भगवत् शोभा और भगवत्मेंहीहोवे और रसराज जिसका नामहै और जिसकेवर्णनमें वेदकी यहश्रुतिहै तिसको प्राप्तिकरके निश्चय भगवत्का आनन्द मिलता है सोरस ( जयदेवजीने,इस गीतगोविन्द ,में वर्णनकियाहै और कोक उसकी एकशाखाहै स्वामी जयदेवजी, कुडविल्वमें कविराज,हुये रसराज जोशृंगार तिसकी मूर्तिथेपर उस रसका आस्वाद अपने मनमेंही लेतेरहे कारण यहवैराग्यइतनाथा कि किसीरात एकवृक्षकेनीचे नहीं रहतेथे और सिवाय एकगुदड़ी औकमंडलुके कुछ अपने पास नहींरखतेथेफिर सियाही लेखनी औ पत्रिका की तो कौन बात है भगवत् को उसराजकी प्रवृत्ति अंगीकारहुई इसहेतु यहउपायकिया कि एक ब्राह्मणको प्रतिज्ञारही कि अपनी लड़की जगन्नाथजीको भेटकरूं-गा। जब लड़की लेगया तब स्वामीकी आज्ञा भई कि 'जयदेव' मेरा स्वरूपहै यह लड़की उसहीको देव । तबजयदेवजीके पास लड़की सहित जाकर प्रभुकी आज्ञा निवेदन की। उन्होंने कहा कि लड़की, धनवान्को देनी चाहिये विरक्त फक्कड़ोंको नहीं ब्रा-ह्मण बोला भगवत् आज्ञामें मेरा क्या वश फिर जयदेवजीबोले वे प्रभुहैं लाखों स्त्रियां उनकेपास शोभितहैं हमको एकभी पहाड़ के समानहै निदान समझाते २ ब्राह्मण न माना और लड़की को छोड़गया और सब धर्म लड़कीको दृढ़ायगया । जयदेवजी लड़कीको भी समझायहारे ।.तब भगवत् आज्ञासे बेबशहो एक छोटीकुटी बनाय भगवत् मूर्ति पधराकर सेवा पूजा करनेलगे और गीतगोविन्दकी रचनाकेआरम्भमें एकअष्टपदीविषे प्रियाजी के मान वर्णनमेंयहभाव ध्यानमेंलाये कि श्रीकृष्ण स्वामी मना-वनेके समय प्रियाजीसे विनती करते हैं कि कामदेवके विषको दूरकरनेवाला जो आपका चरणकमल उसको मेरेमस्तक परशो-भायमानकरो। परढिठाई शोचकर न लिखसके तब दूसरेभावको चिंतनकरते स्नानको चलेगयेतो भगवान् आपजयदेव रूपकरके जो भाव जयदेवजीने अपनेमनमें विचाराथा उसीको रचलिखके

चलेगये जवजयदेवजी, स्नानकरकेआये और अपने बिचारे भाव को सुंदर पदोंसे रचितदेखा तो निज स्त्री ( पद्मावतीसे ) पूछा तो वहबोली कि अभी आपहीआकर लिखगये और पूछतेहो तव जयदेवजीने भगवत्का चरित्र जाना औ गीतगोविंदको परम पवित्र समझा। इसकी ख्याति थोड़े दिनमेंही जहाँ तहां होगई औ सबको स्वीकृतहुआ। जगन्नाथपुरीका राजा पंडितथा उसने भी एक गीतगोविंद, रचनाकिया। तो फिर जयदेवजीका औ राजाका दोनों गीतगोविंद, जगन्नाथजी के मंदिर में धरेगये तव जगन्नाथराय ने जयदेवजी के गीतगोविंद, को छाती से लगाय लिया। राजा लज्जित होकर समुद्र में डूवनेको चला। तव प्रभुने आज्ञाकी कि यह कर्म उचित नहीं न्यायकी वात है जयदेवजीकी भक्ति कविताईको तुम्हारी नहीं पहुंचती। अच्छा जयदेवजीके गीतगोबिन्दविषे प्रतिसर्ग में एक श्लोक तुम्हारा भी रहेगा पर नाम जयदेवजीका विख्यात होगा वारहसर्गगीत गोविन्दमें हैं एक मालीकी यह अष्टपदी पांचवें सर्ग की गाती हुई बैंगन तोड़ती फिरतीथी तो जगन्नाथ स्वामी उसके पीछे जिस ओर वह जातीथी सुनतेहुये फिरनेलगे झंगा फटगया दर्शन के समय झंगा देखकर राजा चकितरहा पंडोंसे पूछा निदान श्री-जगन्नाथजी ने वह वृत्तान्त राजा के हृदय में प्रकाशित करदिया राजाने निश्चय करके डौंड़ी फेरवादी कि जो कोई गीतगोविंद पढ़े तो शुद्धस्थान में पढ़े क्योंकि आप भगवान् सुनने को जाया करते हैं एक मुगल बड़े प्रेम से इसपोथी को पढ़ता था। एक दिन घोड़ेपर सवारहो प्रेमभाव में मग्नहोकर अष्टपदीको गाता था उसको दर्शनहुये कि भगवान् सुनने को साथहैं। इस गीत-गोबिन्द की महिमा कौन वर्णन करसकै स्वर्गलोक में देवकन्या गानकरती हैं। एक दिन जयदेवजी को राहमें ठगमिले तव यह शोचा कि पापका मूल धनहै यह शोचकर जो कुछ पासथा सो ठगोंको देदिया ठगोंने समझा कि यह वड़ा धोखेवाज है कुछ

पीछे उत्पात करेगा यह विचार करके हाथ पांव काटके जयदेव जीको कुये में डालदिये। एक राजा भगवत इच्छासे उधरआय निकला उनको निकाले हाथ पाव न देखकर पूछा तो जयदेव जी बोले माताके गर्भ से ऐसेही जन्मेथे। वार्तालाप होने से राजा ने जानलिया कि कोई महात्मा भगवद्भक्त है बड़े भाग्य से दर्शन हुआ अपनी राजधानी को लेगया हाथ जोड़के सेवाके लिये विनती की तो जयदेवजीने साधुसेवा की आज्ञा दी राजा अंगीकार करके साधुसेवा करनेलगा जब विख्यातिहुई तो वे ठगभी साधुवेष बनाकर तहां पहुँचे जयदेवजी उन्हें देखतेही राजा से बोले किये दोनों हमारे बड़ेभाई महात्मा पुरुष हैं इनकी अच्छेप्रकार से सेवा करो, राजाने वैसाही किया पर ठगोंने भी जयदेवजी को पहिंचान लिये इससे डरके विदाहोनेकी विनती नित्य कियाकरते निदान एक दिन बहुत रुपया दिलादिया औ विदाकिये कुछ सिपाही घरतकपहुँचाने को पठाये सिपाहियों ने उनसे पूछा कि तुम्हारी स्वामीजी से ऐसी प्रीति काहेसे है जो ऐसी मर्य्यादसे विदाई हुई ठग बोले कुछ कहने योग्य बात नहीं सिपाहियों ने वचनदिये तब बोले कि एक राजाके घर हमलोग औ ये तुम्हारे स्वामीजी, चाकरथे किसी अपराधसे राजाने इनको मरवादेने की आज्ञा दीथी तो हमलोगोंने इसके हाथ पांवही काटदिये जान छोड़ दी। इसी से सेवा हमलोगों की ऐसी कराई। यह अपराधभक्त का प्रभु न सहसके धरती तुरन्त फटगई ठग पातालमें धँसगये। सिपाहियोंने सबवृत्तांत जयदेवजीसे कहा वे दयासे कंपितहो हाथ मलनेलगे तोहाथ पांव निकलआये यहसब वृत्तांत सिपाहियोंने राजासे कहा फिर राजाने आय स्वामीजीसे पूछा कुछन बोले जब बहुतही हठकिया तोसब वृत्तांत कहसुनाया। राजा अति विश्वासीहो सेवा करनेलगा॥ सचकरके भगवद्भक्तोंकी रीतिहै कि कोई उनके साथ दुष्टताभी करे, पर, वे साधुपनही

करतेरहेंगे। जयदेवजीने अपने देशजाने का विचार किया तब राजाने बहुत प्रार्थनाकरी जाने न दिये आपजाय स्वामीजी की स्त्री (पद्मावती) को लेआकर राजमन्दिर में निवास कराया रानी को पद्मावती की सेवामें युक्तकरी उसरानी का भाई मर गयाथा उसकी स्त्री साथसती होगईथी रानीने एकदिन यहबात पद्मावतीसे आश्चर्यमानने योग्यकही पद्मावती सुनकरहँसदी रानीने कारण हँसनेका पूछा तब उत्तरदिया कि शरीरका जला देना पतिके पीछे कौन बड़ीबातहै मुख्य प्रीतिवहीहै कि तुरन्त निजपतिकी मृत्युसुनतेही उसी क्षण अपने प्राण निछावर करै रानी बोली इससमयमें तो ऐसी सती आपही होंगी और कोई देखपड़ती नहीं है फिर पद्मावतीकी परीक्षा लेनेको पीछे पड़ी राजासे जा कहा कि स्वामी जीको एक दिन फुलवाड़ी में ले जाओ नगरमें विख्यातकरो कि स्वामीजी मरगये राजाने रानी को समझाई कि ऐसी बात चाहिये नहीं निदान नहींमानी तब राजाने वैसाही सब किया तब आंशूभरे रानी, पद्मावतीजी के पास जाबैठी उन्होंने कारण पूछा तो रोनेलगी पद्मावतीजीने कहा स्वामीजी आनन्दसे हैं तब रानी लज्जितहोबैठी फिर दश बीस दिन पीछे वैसीही बात उठाई। पद्मावतीजी जानगईं कि रानी परीक्षाको पीछे पड़ीहै तो रानीके मुखसे यहबात सुनतेही प्राण छोड़दिये यह चरित्रदेख राजा रानी,सफेदहोगये और आप भी मरने के हेतु चितालगाई स्वामी जी यहसमाचार सुनतेही तुरन्त आये और राजाको मरणप्रायदेखा कि जलनेको तैयारहैं तब बहुत समझाया तो न माना तब स्वामीजी ने विचारलिया कि बिना पद्मावतीके जिये राजा रानी, जीवेंगे नहीं तब एक अष्टपदी। (गीतगोविंदकी) गाई सोही पद्मावतीजीउठबैठीं और साथ गवानेलगीं तब भी राजा सावधान न हुआ स्वामी जी ने सचेत कराया कुछ दिन पीछे स्वामी जी निज स्थानको गये (कुंदबिल्व) गांवमें घरथा वहां पहुँचे गंगाजी अठारह कोशपर

रहीं नित्यही स्नानको जाते तब वृद्धता देख श्रीगंगाजीकी एक धारा स्वामीजीकी कुटीके नीचे वहनेलगी उसका नाम (जयदेवी) गंगा, विख्यातहै ऐसाप्रभाव हरिभक्तोंकाहै॥ इति षोडशः प्रदीपः १६॥

चतुर्भुज भक्तका दृष्टान्त॥

भक्तलज्जांनसहते हरिर्भक्तस्यनृत्यतः॥
मुक्तकच्छस्यसद्यैव कच्छंसम्यग्बबंधह १७

भगवान् भक्तकी लाजको नहीं सहते जैसे भगवत् के आगे नृत्यकरते परम रसिक भक्त (चतुर्भुज) की लँगोटी खुलगई। दोनों हाथोंसे भांझ बजारहे थे तालसम के भंग होनेके भयसे लँगोटी नहीं सम्हाली और लोगोंके ठट्टाकरनेकी चिन्ताभी हुई तिसी समय परमरिझवार (विहारीजी ने) दोभुजा और उत्पन्न करदीं औ अपनेभक्तकी लज्जारखली॥ इतिसप्तदशःप्रदीपः १७॥

भगवान्दासजीका दृष्टान्त॥

विश्वस्तभक्तेदण्डन्नोददातियवनोऽपिच॥
भगवद्दासकंभक्तिं निघ्नंप्रातोपयद्घनैः १८

विश्वासी हरिभक्त जन पर दुष्टयवन राजाभी दण्ड नहींकर सक्ता है जैसे परमरसिक भक्त शिरोमणि (भगवान्दास जी) माला बहुत पहिराकरते इसीपर एक दिन बादशाहने सारे नगर में डौंड़ी फिरवादी कि जो कोई माला तिलक धारण करे वह गर्दन माराजावेगा इसभयसे बहुतों ने छोड़दिया पर भगवान्दासजी कुछ नहीं डरे अपने शिष्यों सहित और दिनों से भी अधिक चमकीले तिलक माला पहिरकर बादशाह के सामने जान करके आये इसने बुरा मानकर हुक्म अदूली का कारण पूछा, तो भगवान्दासजी ने अशंकही उत्तर दिया कि हमारे दीनमें माला तिलक सहित प्राणजावें तो उद्धार होताहै अब हमारी मौत आपकी आज्ञाहीतेही होनेवाली जानपड़ती है

इससे तिलक माला बहुत धारण किये जिससे वे परिश्रम उद्धार होवें। यह सुनतेही बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ औ बोला कि जो चाहनाहो मांगो ये बोले मथुराजीसे बाहर जाना नहीं चाहता, बादशाहने लिख दिया कि मथुराकी आमिली जब तक मनचाहे तबतक करै सो बहुतकाल तक करी हरदेवजी का मन्दिर और मानसी गंगा पोखरा गोवर्द्धनजी में उनका स्थान है॥ इति अष्टादशः प्रदीपः १८॥

चतुर्भुजराजाका दृष्टान्त॥

### मिथ्याभक्तपरीक्षाहि जायतेराजसन्निधौ॥
### यथाचतुर्भुजगृहाच्चारणस्यविसर्जनम् १९

मिथ्या वेषधारी भक्तकी परीक्षा, प्रतापवान् राजाके पासहोजाती है। जैसे राजा चतुर्भुजके घरसे मिथ्या वेषधारी (भाट) की बिदाई भई। दृष्टान्त। राजा (चतुर्भुजजी) करौली के ऐसे भगवद्भक्त साधुसेवी हुये कि उनकी उपमा दूसरे राजा से नहीं दी जाती। भक्तोंके आनेका वृत्तान्त सुनकर इस प्रकार लेनेको आगेजाते थे कि जैसे सेवक अपने स्वामीकी सेवा के लिये जाताहै घरलाकर राजा रानी अपने हाथोंसे चरण धोते पूजाकरते नगर के चारोंओर चार २ कोशपर चौकीथी कि जो कोई मालाधारी आवे उसका समाचार भिजवावे एक कोई दूसरा राजा यह वृत्तान्त वेष सेवाका सुनकर कहनेलगा कि योग्य अयोग्य की पहिचान नहीं तो भक्तिकी बड़ाई क्याहै उसके पण्डितने उत्तर दिया कि मनमें पहिचान लेतेहोंगे इसी बातपर राजाने अपने हरिविमुख (भाट) को माला तिलक पहिराय हरिदासजी बनाकर परीक्षा को राजाकेपास भेजा वह भाट गया द्वारपाल ने कुछ रोक टोक न की जब सामने आया तो राजाने सादेस्वभावसे आव बैठकिई भगवत्प्रसाद जिमाया भगवत् चरचा छेड़ी भाट (हूँहाँ) करतारहा राजाने पहिचान लिया बिदाईदी तो एक डिबियामें (फूटीकौड़ी) रख ७।

बहुत अच्छे २ वस्त्र लपेटकर उसपर मुहर छाप लगाकरके देदी भाट अपने राजाकेपास आया तो सब वृत्तान्त भक्ति भावका वर्णन किया और बिदाई की डिबिया राजाके आगे धरी। राजाने डिबिया खोल फूटीकौड़ी देखी भेद न पाया तो उसी पण्डितने समझाया कि ऊपर वेष ऐसा औ भीतर फूटीकौड़ी (भाट) है भक्त नहीं राजाचतुर्भुजका यहीअभिप्राय है राजा सुनकरबड़ा लज्जितहुआ औ राजा चतुर्भुजजीको धन्य २ कहनेलगा भक्ति अंगीकार करी साधुसेवा करनेलगा निदान आप भी हरिभक्त श्रेष्ठ भया इससे हरिभक्ति सत्संग ये पारस हैं सबको श्रेष्ठ करते हैं॥ इत्यूनविंशःप्रदीपः १९॥

लालाचार्य्य भक्तका दृष्टान्त॥

भक्तवर्य्येनजात्यादि भेदःकार्य्योमनीषिभिः॥
विष्णुभक्तोह्यानयित्वा लालाचार्येणसंस्कृतः २०

श्रेष्ठविष्णु भक्तमें बुद्धिमानोंको जाति आदिका भेद नहीं करनाचाहिये। जैसे मरेभये एक विष्णुभक्तको (लालाचार्यजी) ने लाकर उसका संस्कार किया॥ (लालाचार्य्य) रामानुज (स्वामी) के जमातमें ऐसे भगवद्भक्त हुए कि जिनकी कथा सुनकर निश्चय भगवत्के चरणोंमें प्रीतिहोती है। गुरुनेआज्ञा दी कि भगवद्भक्तोंमें जितनी प्रीतिहो वह अच्छापर उनको निज बड़े भाईसे कम न समझने। सोये उस आज्ञाके अनुकूल वर्त्तते रहे एक समय कोई माला तिलकधारी (वैष्णव) को नदी में बहतेजातेसे निकालकर अपने घरलाये और विमान बनाकर भगवत्कीर्तन करते नदीपर जाय दाह दिया फिर महोत्सवमें नातेदारोंको निमंत्रण भेजा उन्होंने नहीं माना कहा, कि यह न जानें कौनजातिका मृतकरहा। लालाचार्य, सुनकर चिंताकरते लगे औ निज गुरुकेपास गये, दण्डवत्कर सब वृत्तान्त निवेदन किया तब स्वामीजीनेकहा कि वेलोग, भगवत् प्रसादकी महिमा को नहीं जानते तुम चिंता मतकरो भोजन की सामग्रीबनाओ

भगवत् पार्षद, वैकुण्ठसे आकर भोजन करेंगे। सोही उसदिनपर भगवत्पार्षदों का झुण्ड ऐसे वस्त्र अलंकारों से सजाभया आया कि किसीने स्वप्नमें भी नहीं देखाहो। आकर जो प्रसादबनाहुआ था। उसे अतिप्रीतिमान् भोग लगाया ब्राह्मणों को पहिले तो आश्चर्यहुआ कि ऐसे ब्राह्मण, कहांसे आये हैं फिर द्वेषबुद्धिकरके यह सलाहकी कि जब भोजनकरके आवें तब ऐसी हँसीकरो कि वे लज्जित होजावें। भगवत् पार्षद, उनकी कुमतिको जानगये तो आकाशमार्ग होकर चलेगये ब्राह्मणों ने जो यह चरित्र देखा तो चकितहो अहंकार तजआये और लालाचार्य के बराबर आंखें न करसके और जो पनवाड़े पार्षदों के भोजनकिये पड़ेथे उनमें से सीथ प्रसाद ले २ कर खानेलगे और लालाचार्य्य के चरणोंमें दंडवत्करके प्रार्थनाकरी कि अब हमको अपना सेवककरो कृपा करो लालाचार्य ने कहा तुम्हारेपर तो भगवत्ने कृपाकरी भगवत् के प्रार्षदोंके दर्शनभये इससे अधिक क्या कृपाचाहतेहो ब्राह्मणों ने फिर विनयकिया कि अब हमको और लज्जित न कीजिये निदान वे सब भगवत् शरणहुये भगवद्भक्ति और वेषनिष्ठाका प्रताप संसारमें प्रकटहुआ॥ इतिविंशःप्रदीपः २०॥

## मधुकर भक्तका दृष्टांत॥

तिरस्करोतिभक्तोन धृतवेषन्तुकञ्चन॥
घृतमालाङ्गर्दभंहि यथामधुकरोऽर्चयत् २१

विष्णुभक्त, वेषधारी किसीका भी तिरस्कार नहीं करते हैं जैसे (मधुकर-भक्त) ने मालाधारी गदहे की भी यथाविधि से पूजाकी। मधुकर-राजा ओछड़ेका भगवत्भक्तहुआ। साधुवेषमें अत्यन्त प्रेम और विश्वासथा। सचहीजैसा (मधुकर) नाम था वैसेहि सारग्राहीपनकी रीतिरही कि कोई कण्ठी तिलक मालाधारीहो उसीका चरणामृतलेते औ परिक्रमा देते। राजा के भाई बन्धुओंको यह बातअच्छी न लगी। एक गदहेको बहुत

सी माला पहिराकर तिलक लगाय महलमें भेजदिया। राजा ने उठ उसका चरण धोकर परिक्रमा करी औ कहा कि आज निहालही करदिया । पीछे प्रसाद जिमाकर विदाकरदिया । दुष्टोंको लज्जाहुई औ विश्वासी हुए राजाने जो वचन निहाल करनेका कहा उसका अभिप्राय यह है कि मेरे बड़ेही भाग्य जो मेरे राज्यमें गदहे भी तिलक माला धारण करते हैं इससे जो कोई भी तिलक माला धारण न करे वह बेदुमका गदहाहीहै ॥ इत्येकविंशःप्रदीपः २१ ॥

खतरी के पुत्रका दृष्टान्त ॥

शास्त्राद्यचिन्तकोविष्णु बालकोऽपिप्रपश्यति ॥
क्षत्रीपुत्रोऽनयत्कृष्णं यथागुर्वेन्तिकेव्रजात् २२

जो शास्त्र आदि चिंतन नहीं करता ऐसा बालक भी भगवत् भक्त, विष्णुजी को देखताहै जैसे खतरीका पुत्र ( श्रीकृष्णजी ) को व्रजमें से निज गुरुजी के पास ले आया ॥ दृष्टांत ॥ किसी खतरी के पुत्रने अपने गुरुसे सुना कि श्रीकृष्ण महराज, व्रज में नित्य विहार करतेहैं मनलगाकर देखो तो मिलभी जातेहैं । तो वह लड़का अत्यन्त दर्शनका आकांक्षी होकर व्रजमेंगया औ ढूंढ़ा कुछ पता न लगा तो लोगोंसे पूछा किसीने कहा गोलोक में हैं किसी ने वैकुंठ में बताया और किसी ने कहा जो व्रज में हैं तो देखने में नहीं आते और किसी ने कहा परमधाम को गये । इसलड़केको किसीके भी वचनपर विश्वास न हुआ औ कहनेलगा कि मेरे गुरुका वचन कभी झूठा नहीं पर मेरे ढूंढ़ने काही आलस्यहै तबतो खाना सोना सब छोड़कर बेचैनीकर ढूंढ़ने लगा जब कुछ दिन बीता न खाया न सोया न बैठा जहां तहां फिरताहीरहा तो करुणाकर दीनवत्सल प्रकटहुए औ कहा कि जिसको तू ढूंढ़ता फिरता वह मैंहींहूं या लड़का रूपमाधुरी औ छविअनूप देखकर चरणों में गिरपड़ा । औ विनय किया कि कुछ सन्देह नहीं है आप वेही हैं कि जिनको मैं ढूंढ़ता था

पर मैंने सुनाथा कि आप चोर औ छलियाभी हैं जब तक मेरे गुरुजी आपको पहिचान कर निश्चय नहीं करदेंगे तब तक मैं एकनहीं मानोंगा। भक्तवत्सल महाराज उसकेप्रेम औ विश्वास के वश होकरके कुछ न कहसके साथ होलिये और उस लड़के ने छल औ कपट के भयसे इनका हाथ पकड़लिया बस तुरन्त जहां उसके गुरुजी थे तहाँ आय पहुंचे आधीरात थी गुरुजी अटाय शयनमें थे उस लड़केने पुकारा कि महाराज! ब्रजसुन्दर मनमोहन महाराज को लायाहूं आप पहिचान लीजियेगा दो चार वेरके पुकारने में गुरुजी को सुनपड़ा तो उसके वचन को मिथ्या समझा पर उजेरा मुख झमक शोभा धामकी जो विलक्षण चांदनीसी छिटक रही थी झरोखे की राहसे जो देखा तो घबराय उठे और यह चरित्र देखकर गुरुजी पुकारे अरे तू किस ढिठाई से हाथपकड़े है ये नंदनन्दन महाराज! पूर्णब्रह्महैं मैंभी आताहूं यह कहते गुरुजी तो आतेहीरहे औ आप उस लड़के सहित अन्तर्द्धान होगये गुरुजी जो आये तो कुछ न देखा तब तो अपने चेलेपर विश्वास कर हरिशरण हुये। गुरुमें विश्वास करना चाहिये॥ इति द्वाविंशःप्रदीपः २२॥

पादपद्माचार्य्य जी का दृष्टान्त॥

गुरुभक्तिर्दृढाभक्तकार्य्यंसंसाधयेद्ध्रुवम्॥
गंगापद्मोद्भवात्पादपद्माचार्य्याभिधाऽभवत् २३

दृढ़ जो गुरुभक्ति है वह कार्य्यको अवश्यही सिद्धकरतीहै। जैसे भक्तिसे गंगाजी में कमल होनेसे भक्तका (पादपद्माचार्य्य नाम) भया॥ दृष्टान्त ( पादपद्माचार्य्यजी ) परम भगवद्भक्त गुरुनिष्ट गंगाजी के तटपर गुरुसेवा में रहाकरते गुरुजी कहीं जानेलगे तो इसे बिकलहुआ देख आज्ञादेचले कि गंगाजी को हमारा रूप समझना वह गंगाजी का पूजन करता पर चरण गंगाजी में नहीं धरता कूपजलसे स्नान करलेता और साधुलोग

इसबात से अप्रसन्न रहते थे जब गुरुजी आये तो सबोंने निंदा की गुरुजी इसके मनकी जानगये कि मर्य्यादके भयसे चरण गंगा में नहीं देता है तब सबका मोह दूर करनेको एकादिन गुरु जी ने गंगा में स्नानकरते इससे अँगौछा मांगा तो इसको इधर तो गुरुरूप गंगाजी में चरण पाप उधर गुरुआज्ञा न मानना अयोग्य इसी चिन्तामें शोचताथा कि तभी कमल गंगाजी में प्रगटहुये उन्हींपर चरणधरते जाकर अँगौछा दिया गुरुने प्रभाव देख छातीसे लगाया और तभी से (पादपद्माचार्य्य) नामधरा॥ इति त्रयोविंशः प्रदीपः २३ ॥

घाटम चोरका दृष्टान्त ॥

निर्भयश्चौरभक्तोऽपि जायतेहरिरक्षितः ॥
घाटमोघोटकंहृत्वागतःकेनापिनधृतः २४

विष्णुभक्त, चोर भी होवेपर वह भगवत्करके रक्षित किया निर्भय होजाताहै जैसे घाटमजी प्रत्यक्ष घुड़शालमें से घोड़ा चुराय लाये उन्हें कोई भी न रोकसका ॥ (घाटम) चोर जाति के मीणा रहनेवाले गांव (घोड़ी) राज जयपुरके थे। गुरुभक्ति औ वचनके भयसे उत्तमपदको पहुँचे और कृतार्थ होगये ठगीका रोजगार करतेथे कुछ मनमें विवेक आया किसी हरिभक्तकेपास गये। उसने शिक्षादी चोर ठगी छोड़दे। घाटमनेकहा मेरी जीविकाही यह है हरिभक्त ने कहा इसके बदले चारबात अंगीकार करो १ सत्यबोलना २ साधुसेवा ३ भगवत् को अर्पण करके खाना ४ भगवत्की आरती में जामिलना। घाटम ने सुनतेही चारों बातें अंगीकारकरीं तब घाटमके हरिभक्तने मन्त्रोपदेशकरके चेलाकिया घाटम, गुरुकी चारोंबातों पर अभ्यास करतेरहे एकदिन घरमें कुछ न था साधुआगये तो खलिहान से किसी के गेहूँ चुरालाये साधसेवाकी पर डरतेरहे कि ऐसा न हो कहीं से पता लगाकर गेहूँवाला आय पकड़लेवे जिससे साधुसेवा में

विघ्न होजावे। तौ आंधी मेह इसरीति से आया कि पता पांव का सब मिटगया सुचित्त होकर सेवामें लगे। एकसमय गुरुने भगवत् उत्साह में घाटम को बुलाया उससमय साधुसेवा करने को कुछ पास न था चिन्ताभई तो राजभवनके आगे आय भीतर धसें डेवढ़ीदारों ने पूछा कौनहै तो कहा कि चोरहूँ (घाटम) मेरा नामहै वेलोग पहिरान उत्तम देखकर जानगये कि हँसीसे अपने को चोर बताताहै तब कुछ न बोले तो घुड़शालमें जाय एक उत्तम घोड़ा मुशकी रंगका ले सवारहो चले द्वारपर रोक हुई तौ फिर उसीप्रकार सच २ कहके चलेआये गुरुकीओरचले तो सन्ध्यासमय किसी ठाकुरद्वारे में आरती होतीथीं वहांजाये भजन करनेलगे। राजाके यहां उसघोड़ेकी ढूँढ़पड़ी तो कोतवाल बहुतसे सिपाहियों सहित घोड़ेके पांव देख २ पता लगाता उसी मन्दिरके द्वारपर पहुँचा। भक्तवत्सल महाराज भगवत्कोचिंता भईतो घोड़ानुकरेरंगका बनादिया। घाटम जब सवारहोकरचले तबकोतवाल,देखकर लज्जितहोगया॥इतिचतुर्विंशःप्रदीपः२४॥

चतुरदासजी का दृष्टान्त॥

गुरुसेवाकल्पवल्ल्या किमलभ्यम्मनीषिणाम्॥
यथाचतुरदासाय दुग्धम्भोज्येददौहरिः २५

गुरुसेवारूप कल्पवृक्ष वल्लीसे मनुष्यों को क्या नहीं प्राप्त होताहै। जैसे (चतुरदासजी) को भोजन करनेकेलिये हरिने दुग्ध दिया स्वामी (चतुरदासजी) परमभक्त और वैराग्यवान् हुये। भगवत्भजन में मग्नरहकर सदा तिसरंग में रँगेरहते थे। मथुरा-ब्रजमण्डलमें फिरतेहुये ठौर २ सत्संग के सुख को लेतेरहे गुरुभक्त ऐसे हुये कि कोई न होगा उनके गुरु सदा घर पर आयाकरते तो ये भगवत्रूप जानकर सेवा पूजा कियाकरते स्त्री स्वामीजी की नवयौवना रूपवतीथी उसे गुरुसेवा में लगा देते औ कहदिया कि जो आज्ञाकहैं सो करना और आप ऐसे गुरु

वचन निपुथे कि तनकभेद गुरुमें नहीं लाये निदान धन, स्त्री आदि सवसामग्री गुरुजी की भेंटकरके दण्डवत्कर आज्ञापाकरके प्रभातकी मंगल आरती ( गोविन्ददेवजी ) के दर्शन किया करतेथे। फिर शृंगार आरती (केशवदेवजीकी) औ (राज्यभोग) नन्दगांवका देखकर गोवर्द्धनजी में राधाकुण्डपर होतेहुये ( श्री वृन्दावन ) में आते। एकवेर नन्दगांव में मानसरोवर पर विन अन्न जल रहे सो नन्दगांव के स्वामी ( नन्दवावा ) हैं इससे नन्दजी के सुकुमार-भक्तवत्सल महाराज, निज मेहमानको विना अन्न जल नहीं देखसके तो वारहवर्ष के लड़के के स्वरूपसे कटोरेमें दूध लेकर स्वामी को दिया तव स्वामी चतुरदास ने उस अनोखेरूप दर्शनके लालचसे फिर जलमांगा जव वहुत देरवीते वह चंचल लड़का न आया तो वहुत वेचैन औ विकलहुये और स्वप्नमें आज्ञादी कि पानीका कुछ प्रयोजन नहीं तुमको दूधही मिलता रहैगा। तव स्वामीजीने विनय किया कि दुग्ध व्रजवासियों को बड़ा प्याराहै जिसकेलिये महारानी ( यशोदाजी ) ने पुत्र ( श्रीकृष्णचन्द्रजी ) को भी कुछ न समझा वे कैसेदेंगे फिर आज्ञाभई कि अवश्यही मिलतारहैगा सो स्वामी (चतुरदासजी) को दुग्ध सवकोई देनेलगे और अवतक इनकेवंशके चेले जहां चहैं तहांहीं व्रजमें से दूध लेलेते हैं सचहै गुरुसेवासे कौन फल नहीं मिलता है ॥ इतिपंचविंशःप्रदीपः २५॥

किसी द्रव्यार्थी का दृष्टान्त ॥

अन्यदैवतभक्तेऽपिदृढेविष्णुःप्रसीदति ॥
दुर्गाभोज्यार्पणेयोसौ नासारुद्धोऽपिचाऽतुषत् २६

और देवता के भी दृढभक्त पर भगवान् प्रसन्न होते हैं। जैसे दुर्गाके भोग लगाने में आप नासिका रुकजानेसेभी प्रसन्न होभये किसी द्रव्यार्थी को भगवत् के पूजन से धन न मिला तो किसीके उपदेशसे भगवत्की मूर्त्तिको ताखमें रखकर (दुर्गामूर्त्ति)

का पूजन करनेलगा एक दिन यह विचारा कि जो धूपमें (श्री दुर्गाजी) को देताहूं वह ऐसा न हो इस भगवत् मूर्त्तिको प्राप्तहो जातीहो इस हेतु भगवत् मूर्त्ति के नाक में रुई भरनेलगा तो उसी क्षण 'भगवान्, प्रसन्नहुये औ वोले कि जो चाहना होवे सो मांगो तो वह वोला कि पूजासे कवही प्रसन्नभये और इस ढिठाई से वहुतही रीझे इसका क्या कारण है। वोले कि जव जो तू पूजनकरताथा तव तो पत्थरकी मूर्त्तिजानाकरता और इससमय सवओर से मनको खैंचकर भगवत् मूर्त्तिको पूर्णब्रह्म सच्चिदानन्द घन जाना इसी से अव प्रसन्नहुये एक वाई की कथाहै कि गुजरात देश में भगवत् मूर्त्तिकी पूजा वात्सल्यभाव से करतीथी। जहां रहती तिस गांव में भेड़ियोंकी वड़ी प्रवलता भई कई लड़कोंकोउठालेगये यह वाईहाथमें मूशल ले सारीरात जगनेलगी वहुतदिन यहीदशारही दिनको भोग 'शृंगार,में रहती और रातको भेड़ियेकी रखवाली में तो भगवत् को वड़ी करुणा भई तव तो साक्षात् प्रगटहुये वाई ने जो घुंघुरों की झनझना-हट सुनी तो मूशल हाथमेंलेकर दौड़ी तो देखा कि कोई लड़का श्यामसुन्दर मोहनीरूप है पूछा कि तू कौनहै तो वोले कि मै वहही परमात्मा हूं जिसकी मूर्त्तिको तू वालक समझकर पू-जाकरती है जो अव चाहनाहो सो मांगलेव। तव वाई प्रसन्न होकरवोली कि जो तू परमात्माहै तो यहीवरदान देव कि इस मेरे लड़केको भेड़िया नहींलेजायसके ॥ इति षड्विंशःप्रदीपः २६ ॥

अल्हजी का दृष्टान्त ॥

भक्तस्यभोज्यवेलायां भोज्यंसाधयतेहरिः ॥
वृक्षंसन्नामयामास ह्यल्हरयाम्नंयथेच्छतः २७

भक्तके भोजन समय में भगवान् उसके लिये भोजन सिद्ध करते हैं जैसे आम खानेकी इच्छा करते अल्हजीके लिये विष्णु जीने आमके वृक्षको नीचा झुकाय दिया ॥ दृष्टान्त॥( अल्हजी )-

वचन निपथे कि तनकभेद गुरुमें नहीं
आदि सवसामग्री गुरुजी की भेंटकरके
के प्रभातकी मंगल आरती ( गोविन्द
करतेथे। फिर शृंगार आरती (केशवदे
नन्दगांवका देखकर गोवर्द्धनजी में र
वृन्दावन ) में आते। एकबेर नन्दगांव मे
अन्न जल रहे सो नन्दगांव के स्वामी ( न
न्दजी के सुकुमार-भक्तवत्सल महाराज,
अन्न जल नहीं देखसके तो बारहवर्ष के
टोरेमें दूध लेकर स्वामी को दिया तब स
अनोखेरूप दर्शनके लालचसे फिर जल
वह चंचल लड़का न आया तो बहुत बे
स्वप्नमें आज्ञादी कि पानीका कुछ प्रयो
मिलता रहैगा। तव स्वामीजीने बिन
सियों को बड़ा प्यारा है जिसकेलिये र
पुत्र ( श्रीकृष्णचन्द्रजी ) को भी कुछ
आज्ञाभई कि अवश्यहीमिलतारहैग
को दुग्ध सबकोई देनेलगे और
चहैं तहांहीं व्रजमें लेलेते
नहीं मिलता है

अन्यदैवतभक्त.
दुर्गाभोज्यार्पणयोः

जय जय ध्वनि संसार में फैली ॥ इतिअष्टविंशःप्रदीपः २८ ॥

धनाभक्तका दृष्टान्त ॥

अबीजोप्यामपिकृषिं प्रीतोविष्णुस्समापयेत् ॥
धनाभक्तकृतंशस्यं निर्बीजंसमवर्द्धयत् २९

प्रसन्नभये भगवान् निजभक्तके बिनबीजबोये भी खेतकोतैयार करदेते हैं । जैसे धनाभक्त के निर्बीज खेतको आपवधाकर सम्पूर्ण तैयार करदिया ॥ दृष्टान्त ॥ (धना) जातिकेजाट परम भक्तहुये । उनके भक्तहोनेका वृत्तान्त यहहै कि जब लड़केथे तब उनकेघर एकब्राह्मणभक्त आया करताथा वह सेवा पूजा भगवत् की कियाकरताथा । धनाभक्तने उससे कहा कि मूर्ति हमकोभी देश्रो जैसी तुम सेवा पूजा करतेहो तैसी हमभी करेंगे । ब्राह्मण ने न दी जब इसने हठकिया तो उसने एकछोटासा कालापत्थर देदिया । धनाजीने बड़ी प्रीतिसे उसे शिर चढ़ाय नेत्रोंसे लगाया पूजा आरम्भकी पहिलेआप स्नानकर मूर्तिकोभी स्नानकराया औ तालाव की मिट्टीका तिलक लगाया औ तुलसीदलकी ठौर हरीपत्ती चढ़ाई फिर बड़ीप्रीति औ हर्ष से साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करी और जब उनकी माता रोटीलाई तो भगवत् के आगे रखकर आंखें बन्दकरके बैठगये बड़ी बेरतक राह देखतेरहे कि भगवत्भोग लगावें पर जब न खाई तो दुःखित उदास होकर बार २ हाथजोड़े फिर हठकरके बहुतही प्रार्थनाकी न माने तब रोटी तालाबमें डालदी आप बेअन्नजल रहगये कईदिन इसी प्रकार बीते और भूख प्याससे विह्वल होकर मरनेके निकट पहुँचे तो भगवत्को द्रवहुआ प्रकटहोकर रोटी खानेलगे जब आधा भोजन किया तो धनाजी बोले क्या सब तोहीं खायलेगा कुछ मुझको भी देगा कि नहीं भगवत्ने हँसकर बचीरोटी धनाजी को दी इसीप्रकार नित्यकी व्यवस्था होगई । धनाजी ने जो परममनोहररूप भगवत्का देखा तो ऐसी प्रीतिहोगई कि एक

परम भगवद्भक्तहुये यात्रामें कहीं एकांत बागमें उतरे सेवा पूजा किया आमके नीचे बागवान्से आम मांगा तो वह बोला आम खाये विन रहानहीं जाता तो तुमही तोड़लेव। तब तो तुरंतही आमकी डाली झुकगई कि आम सिंहासनपर आयभिड़े भगवत् को भोगलगायर। उस बागवान्ने जाकर यह चरित्र राजासेकहा राजा दौड़ाआया चरणोंमें गिरके विनयकिया कि आपके चरणों की रजसे मैं, ये बाग औ सबदेशभर पवित्रहुआ। अब कुछकृपा विशेष करना चाहिये। अल्हजीने दयाकरके उसकोभगवत्शरण औ भक्त करदिया। भगवद्भक्ति औ भक्तोंका ऐसा प्रतापहै कि शिव ब्रह्मादिक भी जिनके चरणों में मस्तक नवाते फिर आम कीडालीका झुकनाकौन बड़ीबातहै॥ इतिसप्तविंशः प्रदीपः २७॥

पृथ्वीराजका दृष्टान्त॥

मृत्युंबोधयतेविष्णुर्भक्तंस्वक्षेत्रवांछकम्॥
पृथ्वीराजेयथामृत्युंप्रदेशेऽपिह्यबोधयत् २८

जो भक्त भगवत्के क्षेत्रमें निज मृत्युचाहता उसे भगवान् आप तिसकी मृत्यु बतादेते हैं जैसे पृथ्वीराजको परदेशमें तिस की मृत्यु बतायदी॥ दृष्टान्त॥ पृथ्वीराज, राजा बीकानेर का बेटा कल्याणसिंहका भगवद्भक्तहुये। कवित्त दोहा भाषामें श्लोक बनाकर अति प्रेमसे कीर्तन कियाकरते पिंगल आदिके बड़ेज्ञाता औ काव्य उनकाबड़ा ललितथा भगवत् सेवामें बड़े निग्रथे और विषयेन्द्रिय सुखके त्यागी ऐसेथे कि जन्मभर कभी स्त्रीकी ओर न देखा इन्होंने मथुराजी में निजदेहत्यागने की प्रतिज्ञाकी थी इसबात को सुन बादशाहने द्वेषकरके उनको काबुलकी लड़ाई पर तैनात करदिया। राजाको इसयात्रा में एकदिन कल्पसमान बीतताथा जब दिन उनके प्रणका निकट आया तो भगवत् ने हीभे को चिताय दिया। तुर्त सांड़िनी पर सवार होकर मथुरा किसीआये प्रण पूर्ण हुआ। प्राणत्यागके परमधाम को पहुँचे

जय जय ध्वनि संसार में फैली ॥ इतिअष्टविंशःप्रदीपः २८ ॥

धनाभक्तका दृष्टान्त ॥

अबीजोप्यामपिक्षिं प्रीतोविष्णुस्समापयेत् ॥
धनाभक्तकृतंशश्यं निर्वीजंसमवर्द्धयत् २९

प्रसन्नभये भगवान् निजभक्तके बिनबीजबोये भी खेतकोतैयार करदेते हैं । जैसे धनाभक्त के निर्वीज खेतको आपबधाकर सम्पूर्ण तैयार करदिया ॥ दृष्टान्त ॥ ( धना ) जातिकेजाट परम भक्तहुये । उनके भक्तहोनेका वृत्तान्त यहहै कि जब लडकेथे तब उनकेघर एकब्राह्मणभक्त आया करताथा वह सेवा पूजा भगवत् की कियाकरताथा । धनाभक्तने उससे कहा कि मूर्ति हमकोभी देओ जैसी तुम सेवा पूजा करतेहो तैसी हमभी करेंगे । ब्राह्मण ने न दी जब इसने हठकिया तो उसने एकछोटासा कालापत्थर देदिया । धनाजीने बड़ी प्रीतिसे उसे शिर चढ़ाय नेत्रोंसे लगाया पूजा आरम्भकी पहिलेआप स्नानकर मूर्तिकोभी स्नानकराया औ तालाव की मिट्टीका तिलक लगाया औ तुलसीदलकी ठौर हरीपत्ती चढ़ाई फिर बड़ीप्रीति औ हर्ष से साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करी और जब उनकी माता रोटीलाई तो भगवत् के आगे रखकर आंखें बन्दकरके बैठगये बड़ी बेरतक राह देखतेरहे कि भगवत्भोग लगावें पर जब न खाई तो दुःखित उदास होकर बार २ हाथजोड़े फिर हठकरके बहुतही प्रार्थनाकी न माने तब रोटी तालावमें डालदी आप बेअन्नजल रहगये कईदिन इसी प्रकार बीते और भूख प्याससे विह्वल होकर मरनेके निकट पहुँचे तो भगवत्को द्रवहुआ प्रकटहोकर रोटी खानेलगे जब आधा भोजन किया तो धनाजी बोले क्या सब तौंहीं खायलेगा कुछ मुझको भी देगा कि नहीं भगवत्ने हँसकर बचीरोटी धनाजी को दी इसीप्रकार नित्यकी व्यवस्था होगई । धनाजी ने जो परममनोहररूप भगवत्का देखा तो ऐसी प्रीतिहोगई कि एक

बोलनेकी चाहना हो तो भगवद्भक्ति अंगीकार करो नहीं तो हमसे स्पर्श न करो यह सुन उसको क्रोधआया तो उसने भगवत् पिटारी को नदी में डालदी तब तो वह लड़की अपने स्वामी के वियोग से अति व्याकुल भई उसे अन्न जल विष होगया। फिर उस विमुख ने उसके उपाय प्रसन्न करने के अनेकही रचे पर कुछ काम न आया जब अपने घर आया तो सब वृत्तान्त राहका जनायदिया। स्त्रियोंने बहुतभांतिसे समझाया और सासु अपने हाथ से भोजन करवानेलगी परंतु उस बड़भागिनी का मन भगवत् चरणोंमें ऐसा दृढ़ लगाथा किसी की कुछ न सुनी और न कुछ खाया पिया जब सब उपाय करहारे तब सब उसी नदी पर आये जहां पिटारी को पानी में डालदिया था और वह बड़भागिनी करुणासे भरीहुई रुदनकरके पुकारी "हेस्वामी शिलिपली महाराज! कहांहो मुझदासी से क्यों रूठगये हो जो आपको बहुतही नहाना था तो मैं गंगाजी में नहवाती अब कृपाकरो,, तब तो वह करुणाभरा शब्द सुनतेही अपनी प्राणप्रियाको दर्शनदे भगवत् ने प्राणदान दिया सबको भक्ति का विश्वास होगया वह वहां से निज प्राणप्रिय मूर्त्तिको लेकर घर आई सबकेसब हरिभक्त भये और २ लोग जो साथमें थे सब हरिशरण हुये इसी रीति सब ग्रामभर भक्त होगया॥ इति त्रिंशः प्रदीपः ३०॥

## नामदेव भक्तका दृष्टान्त॥

नामदेवमहाभक्तो भक्त्यासन्तोषयन्हरिम्॥
नकिंचिद्भयमापन्नो यवनेनपरीक्षितः ३१

महान् भगवद्भक्त (नामदेवजी) भक्तिसे भगवत्को सन्तुष्ट करते, यवन-बादशाहकरके परीक्षा भी कियेगये पर कुछ भी भय को नहीं प्राप्तभये॥ दृष्टान्त॥ नामदेव, चेले (ज्ञानदेवजी) के विष्णुस्वामी सम्प्रदाय में भक्तिके प्रकाशक सूर्यसमानहुये बाल-

पनमें निज भक्ति भावसे ईश्वरको वशमें करलिया भगवत् के अंशसे उनकाजन्महै वृत्तान्त यहहै कि ( पांडरपुरमें वामदेव ) नामी जातिका छीपी भगवद्भक्तथा उसकी लड़की बाल विधवा होगई जब बारहवर्ष की हुई तो वामदेव ने भगवत् सेवा पूजा की शिक्षादेकर कहा कि जो हृदयकीप्रीति होगी तो तेरामनोरथ भगवत् सब पूराकरदेंगे उसलड़कीने उसी दिनसे अतिभक्ति औ विश्वास से ऐसी पूजा अंगीकारकरी कि थोड़ेही दिनमें भगवत् प्रसन्नहोगये यहांतक कि जवानी के आनेसे उसको जो कामकी चाहनाहुई तो वह भी भगवत् ने पूर्णकरी और उस लड़की के गर्भरहा तब सारेसंसार औ भाइयों में यहबात विख्यातहुई और लड़की से पूछागया कि यह तेरी क्या अभाग्यताहै उसने पिता से कहा कि तुम कहचुकेथे सबचाहना तेरी भगवत् से प्राप्त होगी सो कुछ हुआ वह भगवत् से हुआ। वामदेव इससुखसमाचार से ऐसे आनन्दितहुए कि शरीर में न समाये और जब लड़का उत्पन्नहुआ तो सब धन सम्पत्ति उसके जन्मोत्सव में लगादी और ( नामदेव ) नामधरा प्राणों से प्रियजान [illegible] करनेलगे और अयोग्योंके शंकासंदेह दूरकरनेकेलिये पुराणोंकीकथा आदि से अलग भगवत्का बचन स्मरण होआया कि भागवतके द्वितीय स्कन्धमें लिखाहै कि निष्काम वा सकाम अथवा मुक्ति के हेतु मुझको दृढ़भावसे जो सेवते हैं तो मैं आप उनकी सबकामना पूर्ण करताहूं और एकादशस्कन्धमें लिखाहै कि मैं अपने भक्त को मुक्तिपर्यंत देताहूं और संसारी कामनाकी तो कितनीबातहै कथा संक्षेप। नामदेवजी, जन्मसेही प्रेमी भगवत् के आराधक हुए दोचार वर्षकेहुये तो खेलभी भगवत्केहीहेतु खेलते अर्थात् भगवत्कीमूर्तिबनाय वस्त्रआभूषण पहिराय उनकी नानाप्रकार करके सेवापूजा आरती कियाकरता और वामदेवजीसे कहाक- रते कि यह सेवापूजा हमको देदेवो वे बालकजान इसे बहाना करदेते एकदिन बोले कि हम किसी गांवजायँगे तू सेवापूजाकी-

जियो जो भगवत् ने तुम्हारा भोगलगाना अंगीकार करलिया तो सेवापूजाभी तुमको सौंपदेंगे नामदेवजी बहुतप्रसन्नहुए और दिन गिननेलगे नानाजीसे नित्य गावँजानेका दिन पूछलेते जब वह दिन आया तो उनका नाना सबरीति सेवापूजाकी समझा कर चलागया तो नामदेवजी को सन्ध्याही से प्रेमहुआ और जब गऊके आनेमें विलम्बहुआ तो आप वनमें जाकर लेआये फिर माताने शिक्षादी कि दूधपिलानेका समयहोआया इसहेतु दुग्ध बहुत शीघ्रतासे उष्ण किया और सुगन्ध मिश्री मिला कर बड़ही प्रेम उत्साहसे कटोरा भगवत्के आगेलेगये परमन में यही डररहा कि मुझसे कुछ अपराध न होगयाहो तो भगवत्के सामने हाथजोड़कर बड़ी दीनताई से विनयकिया कि महाराज! यह दूधहै मुझे अपनादास जानके पानकीजिये औ मुझे आनंद दीजिये दूध न पिया देखके नामदेवजी लड़केथे तो यही बात जानतेथे कि भगवत् भी सबकीतरह दूधपीते हैं इसहेतु बहुत उदास हुये और सामनेसे अलग होकर शोचकरनेलगे जब नि-राश हुये तो रोनेलगे और कहा महाराज ! अच्छे प्रकार गरम किया मिश्री बहुतडाली है आप पीजिये। तब भी भगवत्ने न पिया तो रोते २ भूखे प्यासे पड़रहे । इसीप्रकार दो दिनबीते तीसरेदिन उसकानानाघर आनेवालाहीथा तो यहभी विकलता भई। जो दूध न पिया तो सेवा मुझको न मिलेगी इसहेतु और दूध बनाकर लेगये कईबार विनयकिया नहींहीं माने तब छुरी निकाल अपनागला काटनेपर तैयारहुये । भगवत् ने जो यह दृढ़ विश्वास देखा तो एकहाथ से उनका हाथ पकड़लिया और दूसरेहाथसे कटोरा दूधका उठाकर पीनेलगे जब कटोरे में दूध थोड़ारहा तो नामदेवजी बोले मैं तीनदिन से भूखा हूं मुझको भी तो कुछ प्रसादी छोड़दीजिये तब तो भगवत् हँसे औ निज अधरामृत युत महाप्रसाददिया। भोरही नामदेव जी का नाना जब आया और सब वृत्तान्त सुना तो बहुतही आनन्द में मग्न

और कहा कि हमकोभी तो दिखलाव नामदेवजी उसीप्र-
कार दूधका कटोरा सँवारकर लेगये विनय किया कुछ बिलम्ब
हुआ तो वही चाकू दिखलाया कहा कि मेरेपासहै तो भगवत्ने
तुरंतही पानकिया वाह २भक्तवत्सलता भगवत् तो भक्तिकेहीवश
हैंगे। तब तो यहबात विख्यातहोगई बादशाह ने इनसे बुलाकर
कहा कि तुमको ईश्वर मिलाहै सो हमें भी दिखलावो या अ-
पनी कुछ सिद्धाई बताओ नामदेवजी बोले हममें सिद्धाई होती
तो छीपीकी आजीविका क्यों करते जो कोई साधुआताहै तो
आधसेर आटा बांटखातेहैं उसीके प्रभावसे आपने बुला लिया
है तब बादशाह बोला हम तुम्हारी कपटकी बातें नहीं सुनेंगे
यह गऊ मरीहै इसे जिवाओ नहीं तुमको क़त्लकरेंगे तब तो
नामदेवजीने विनयसे एकविष्णुपद बनाकर भगवत्की भेटकिया
तिसकी पहिली तुक यहहै (विनती सुन जगदीश हमारी) तो
तुरंत इस विष्णुपदके कहतेही गऊजीउठी औ बादशाह, चरणों
में गिरा और कहा कि द्रव्य, गांव, परगना जो मांगनाहो सो कहो
नामदेवजी बोले हमें कुछ नहीं चाहिये बिदामात्रसे प्रयोजनहै
तब तो बादशाहने एक पलँग जड़ाऊ सोनेका इनकी भेटकिया
उसे लेकर चले और बादशाहके नौकर लोग जो साथथे उन
सबोंको बिदाकिया और राहमें एक नदी आई उसमें पलँग को
डालदिया बादशाहने सुनके वही पलँग मँगवाया इसबहाने कि
इसीमिसलका और बनेगा तब तो नामदेवजीने उससे भी उत्तम
उत्तम पलँग अनगिनत नदीसे निकालकर डालदिये। औ उन-
से कहा कि तुम अपना पहिचानकर लेजाओ यह बादशाह सुन
के और भी चकितहुआ फिर आकर चरणों में गिरा नामदेवजी
ने कहा कि फिर किसी साधुको क्लेशमतदेना औ न कभी हमको
बुलाना। एकदिन पण्ढरपुरमें ठाकुरद्वारे दर्शन करनेको गये तो
बड़ीभीड़ लोगोंकी देखकर बिचारा कि दर्शनमें स्थिरचित्त न करूँगा
इससे जूता निकालकर कमरमें बांधकर मंदिरमेंगये संयोगवश

से किनारा जूतेका किसीनें देखलिया तो मारते मंदिरसे बाहर निकाल दियेगये तो मंदिरके पीछे पड़ेरहे और भगवत्से विनय किया कि जो दंडकिया तो तो उचितकिया पर मुझको आपके सिवाय और कहीं ठिकाना नहींहै और कुछ चाहता नहीं जो दर्शन और लोगोंको है तो कान मेरे कीर्त्तनकी ओरहैं यह विनय करके कीर्तन करनेलगे और एक विष्णुपद व्यंग लिये और अपनी हिनाईको भी गावा। पहिली तुक यहहै ( हीनहै जाति मेरी यादवराय ) भगवत् सुनतेही करुणासे विह्वलहो मंदिरको जड़से फेरकर द्वार उसका नामदेवजीकी ओर करदिया। यह चरित्र देखकर सब चकितहोरहे और महंत आदिकों ने उनके चरणोंमें पड़कर अपराध क्षमाकराया। अबतक द्वार उसमंदिर का दक्षिण मुखहै। और एकदिन अचानकही नामदेवजीके घर में आग लगगई तो जो वस्तु घरसे अलग भी थीं सब अग्निमें डालनेलगे और विनयकिया कि सबकोही स्वीकार कीजिये। तब भगवत् बहुत हँसे और बोले कि क्या अग्निमें भी मुझको समझताहै तब कहा कि यहघर आपकाहै दूसराइसे कौन स्पर्श करसक्ताहै। तब तो भगवत् ने प्रसन्नहोकर आपनवीन छप्परऐसा सुंदर निज भक्तकेलिये छायदिया कि जैसा किसीने भी न देखा था तो लोगोंने पूछा कि छप्पर किसने छाया ओ क्या मजूरी लेताहै तब नामदेवजी बोले कि मजूरी बड़ी कड़ी है अर्थात् तन मन चाहत है ओ पहिले मजूरी लेलेताहै तब दिखाई देताहै। पंढरपुरमें एक साहूकारने तुलादान किया सारे नगरमें सोना बहुत बांटा किसीके कहनेसे नामदेवजीको भी कहलाभेजा नामदेवजीनेकहा हमको द्रव्यसे प्रयोजन नहींहै फिर बुलाकर उसने कहा कि कुछ थोड़ासा आप भी ग्रहण कीजिये जो मेराभला होय तब नामदेवजीने शोचा कि इसके धनका गर्व दूरहोगा तब भलाहोगा तो एक तुलसीदल पर ( रा ) अक्षर जो भगवत् का नामहै लिखकर उसके बराबर सोना मांगा पहिले साहूकार रा-

जा बलिकीतरह हँसी समझा पीछे घरका और औरोंसे भी मांग २ कर धरापर बराबर न तुला तव लज्जितहुआ नामदेवजी ने विचारा कि धनकागर्व तो दूरहुआ पर पुण्य इसने कियाहै तिसकाभी गर्वदूर कियाचाहिये तो बोले कि जो तूने जन्मभरसे पुण्य कियाहै उसका भी संकल्प करदे क्याजानै बराबर होजाय तव उसने वह भी संकल्प करदिया तव भी बराबर न तुला तव मैं संकुचितहो कहने लगा कि जो है सोहीलेजाव तव नामदेवद बोले अरे अज्ञानी यहधन हमारे कौन कामकाहै एक भगवद्गीति धन चाहिये कि जिसके आधीन सव देवताहैं और सब लोकोंक ऐश्वर्य्य जिसकेआगे तुच्छहै तव तो वह साहूकार लज्जितहुआ और विश्वास युक्तहो भगवद्भक्तहोगया, इसके पीछे भगवत्ने एकादशी व्रतकी परीक्षाके लिये एक अतिदुर्बल ब्राह्मणके रूप से आकर नामदेवजी से भोजन मांगा उन्होंने एकादशीव्र[illegible]न कर न दिया ब्राह्मण बोला कि बिन भोजनकिये मेरेप्राण निकले जातेहैं शीघ्र भोजनदेव तो नामदेवजी बोले आज एकादशीव्रत है न देंगे इसी हठा हठीमें झगड़पड़े धूमभई लोग इकट्ठे भये सबने कहा रसोई बनवाकर खवांदेव तब भी नामदेवजी नमाने तो संध्याहोतेही वह ब्राह्मण मरगया लोगोंने कहा नामदेवजी को हत्याभई उनको कुछ भी भय नथा चितामें ब्राह्मणकी लोथ समेत बैठगये लोगोंसे कहा कि आग लगाओ तभी भगवत्हँसे औ नामदेवजीके विश्वासपर प्रसन्नहुये सबलोग यह चरित्रदेख कर नामदेवजीके चरणोंमें गिरे। एकबेर नामदेवजीके घर जागरण एकादशीका करते लोगोंको तृषालगी उस बावलीमें एक बड़ा प्रेत रहताथा उसके डरसे कोईभी न जायसका नामदेवजी कलशलेकर आधीरातको वहांगये तो वहप्रेत विकराल भयंकर होकर आया तवतो नामदेवजीनें स्वर तालसे यह पद सुनाया तुक यहहै कि ( ये आये मेरे लम्बकनाथ ) टेर ( धरती पांव स्वर्गलों माथो, योजन भर भर हाथ ) भगवत् प्रसन्नहो उसभूत

मेंही प्रकटहुये और वहभूतभी नामदेवजी की कृपासे परमधाम को पहुँचा ॥ नामदेवजी, एकादशी के जागरणमें ऐसे दृढ़भक्त प्रेमी सर्व भक्त शिरोमणि भये कि अबतक रीतिहै जागरण में पहिले नामदेवजीका पद मंगलाचरणमें गाते हैं । इत्येकत्रिंशः द्वीपः ३१ ॥

## सन्तदास भक्तका दृष्टान्त ॥

### मन्येतभगवान्यथा सर्वोपरिकृतम्भुक्तं मेप्रीतिसन्तदासेन स्वीयभोगंजहौहरिः ३२

भगवान् निजभक्त करके लगाये भोगको सर्वोपरि समझते हैं जैसे सन्तदासजीने प्रीतिसे मानसीही भोग लगाया तो तृप्तभये हरिने जगन्नाथ मन्दिर में निज भोग नहीं पाया ॥ दृष्टान्त ॥ (सन्तदासजी) निवाई गांवके विमलानन्द के प्रबोध वंशमें परमभक्त हुये । जिसप्रकार राजा (पृथु) ने निज स्त्री समेत भगवत्सेवाकरी तैसेही सन्तदासजी ने करी अपनी वाणी की रचना में भगवत्भक्ति औ भक्तोंका प्रताप बराबर लिखा और काव्य उनका सूरदासजी के बराबरथा भगवत् के जन्म कर्म व और लीलाचरित्रों को ऐसी मधुर ललित वाणीमें बनाया कि जिससे निश्चयमन निर्मल होकर भगवत् चरणों में लगजाता है । एक वेर मनमें आया कि भगवत्काभोग छप्पन प्रकारकाही लगाना चाहिये सो ध्यानकरके मानसी भोग लगाया तो (श्री जगन्नाथरायजी) ने निज सच्चेभक्तका मानसी भोग, अंगीकार किया और वहां के पुजारियोंका लगाया भोग धरारहा वे चिंता में हुये तो राजाको आज्ञाहुई कि सन्तदासजी के घर आज हमारा निमन्त्रणथा वहां हम स्वादिष्ट औ मधुरताके लालच से वहुत खागये कि भूख कछ भी रही नहीं राजा ने सन्तदासजी कीभक्ति औ प्रतापका विश्वास किया इतिद्वात्रिंशःप्रदीपः ३२ ॥

## साक्षी गोपालजीका दृष्टान्त ॥

**दृढोगोपालकःसाक्षी साक्ष्यंसम्यग्ददातिहि ॥
मिथोद्वयोर्विवदतोः सम्यक्साक्ष्यन्ददौयथा ३२**

दो ब्राह्मण गौड़देश के रहनेवाले उनमें एक वृद्ध कुलीन था और दूसरा जवान औ सामान्य कुलकाथा। वे तीर्थयात्रामें एकसाथरह जहां तहां दर्शनकरके जब वृन्दावनमें आये तो वृद्ध ब्राह्मण, बीमार होगया तो जवान ब्राह्मणने उसकी अच्छीरीति से सेवाकी जब वह आरामहुआ तो उसने अपनी पुत्री ब्याह देनेको उससे विनय किया उसने बहुत कहनेसे व्याह अंगीकार किया और साक्षी मध्यस्थ मांगा तो उस वृद्ध ब्राह्मणने (गोपालजी) को साक्षी बताये। जब वे दोनों घर आपहुँचे तो जवान ब्राह्मण ने उससे लड़की मांगी तो उसके स्त्री पुत्रोंने, निज उँचाई कुलकी देखकर उसबातको न मानी तबपंचायती इकट्ठी भई तो पंचोंने साक्षीमांगा तो उस वृद्ध ब्राह्मणने उत्तरदिया कि जहां (गोपालजी) साक्षी हैं तहां और साक्षीका क्या प्रयोजनहै तब पंच बोले कि जो गोपालजी आकर साक्षीदेवें तो निस्सन्देह विवाह होजावे और इसबातका लिखनाभी होगया। वह ब्राह्मण वृन्दावनमें आया (श्रीगोपालजी) के मन्दिरमें जाकर चलने के निमित्त प्रार्थनाकरी औ कितने दिनतक इसीआगामें फिरता रहा जब भगवत्ने अच्छेप्रकार उसकेमनका विश्वास देखलिया तब बोले कि कहीं प्रतिमा भी चलसक्ती है तब ब्राह्मणने उत्तर दिया कि जो चलतीही नहीं तो बोलती कैसे होगी तब योगीश्वर भगवान् निरुत्तरहुये औ साथहोलिये पर इस ब्राह्मण से कहदिया कि जो तू पीछे फिरकर देखेगा तो हम उसीठौर ठहर जावेंगे तब उसने फिर उत्तरदिया कि जो ऐसाढगहो कि हजारों उपाय और परिश्रमसे भी ठहराया महादेव आदि परमयोगियों के मनमें से भी भागजाता है और जो गोपियोंका दधिमाखन

चुराकर अच्छे प्रकारखाता और उन्हों ने पकड़नेका मन किया तो फिर भगगया तो उसका कैसे विश्वासहो कि पीछे २ आता है कि नहीं इसलिये साथ २ ही चलना चाहिये तब फिर भगवत् ने कहा कि हमारे नूपुरकीधुनि तुम्हारे कानोंमें गिरती रहैगी तबउसने मानालिया जबघरकेपासआयपहुँचे तब ब्राह्मण को चाहनाहुई कि अबतो रूपअनूपको आखें भरकर देखलेना चाहिये तो इसी विचारमें उसनियमको तो भूलगया और पीछे फिरकर देखा तो भगवत् वहांहीं ठहरेरहे और ब्राह्मण आज्ञापाकर गांवमें आया औ वृत्तान्त आप आवने श्रीसाक्षी गोपालजी का कहा औ उन पंचोंको वहां लेआया तब भगवान् ने दोनों ब्राह्मणों का जो नियम था सो कहसुनाया सबको भगवद्भक्ति औ भक्तोंका विश्वासहुआ और उस ब्राह्मणका बिवाह बड़े हर्षसे हुआ सो अबतक ( श्रीगोपालजी ) महाराज ( घुड़दान ) गांवमें श्री जगन्नाथ रायजी के मन्दिर में पांच कोशपर बिराजमानहैं और नाम ( साखीगोपाल ) प्रसिद्धहै ॥ इति त्रयस्त्रिंश.पूदीपः ३३ ॥

गजपति का दृष्टान्त ॥

स्वस्वामिनोदर्शनंनत्यजतेदर्शनप्रियः ॥
यथाश्रीकृष्णचैतन्य दर्शनंकृतवान्नृपः ३४

निज स्वामी के दर्शनोंका नियमी भक्त तिनके दर्शनोंकात्याग कभी नहीं करता जैसे राजा गजपति ने श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु के दर्शनकिये एक (गजपति) नाम पुरुषोत्तम पुरी के राजा भगवद्भक्तहुये गोसाईं श्रीकृष्णा चैतन्य अपने गुरुमें ऐसादृढ़ विश्वास रखते थे कि जब दर्शन तिनके करलेते तब राजकाज किया करते थे एकदिन गुरुगोसाईंजी ने तिनका दर्शन करने को आना रोकलिया तो राजा संन्यासी रूप करके दर्शन करने को इधर उधर फिरनेलगा पर दर्शन नहीं पाया तब एकदिन रथयात्रा को देखा कि रथकेआगे गोसाईंजी नृत्य कररहे हैं तब

था। गोसाईंजी ने राजाको प्रेम औ दृढ़ विश्वास देखकर निज छाती से लगालिया और प्रेम आनन्द में मग्नहुये ॥ इति चतुस्त्रिंशः प्रदीपः ३४॥

सदनकसाई भक्तका दृष्टान्त ॥

सदनःसदनंहिविभूवहरेस्त्रिजगन्मदनोपिचयत्सदने ॥ सदुनेनगृहेतुलयाललितस्सदनेप्रससादहरिस्त्वरितम् ३५

(सदन) कसाई भगवत्का स्थान अर्थात् कृपापात्र भया। जिसके घर त्रिभुवन निवासी (श्रीविष्णुजी) जिस सदनकरके निज दुकान में तराजू सें तौलके लड़ायेगये तौ तिस सदनपर भगवान् शीघ्रही प्रसन्नभये। दृष्टान्त। (सदनजी) जातिकेकसाई परम वैराग्यवान् भगवद्भक्त हुये जिस प्रकार सोना कसौटी सें अवगुण रहित होजाता है इसी प्रकार सदनजी पिछले जन्मोंके पाप दूरकरके शुद्धभये। मांस औरों से मोल लेकर बेचतेथे आप हिंसा नहीं करतेथे (शालिग्राम) मूर्त्ति पासथी उसीसे सेर मन जो चाहताथा बेचदेतेथे। एक वैष्णव ने देखके मनमें कहा कि यह मूर्त्ति ऐसी कुवृत्तिवाले के पास कहां उचित है यह कहा सदनजीने मांगी उन्होंने तुरन्तहीदेदी तो साधुको स्वप्नमें आज्ञा भई कि हमें जहां से लाया तहांहीं पहुंचा दे उसने कहा महाराज! कसाई के घर आपका निवास अयोग्य है तो बोले उससे हमारा बड़ाप्रेम है हमको वह पलरेपर रखता है तो हम झूलाझूलते हैं और मोलतोल की जो २ बातचीत करताहै वह हमारा कीर्तन है तब तो साधुने जाय सदनजी से सब वृत्तान्त कहकर शालिग्रामजी की मूर्त्ति दिया तब सदनजी घरबार छोड़ उस मूर्तिको शिरपर रखके जगन्नाथजी को चले राह में कहीं एक स्त्री सदनजी को युवास्वरूप देखके आसक्त होगई अपने घर टिकाये सुन्दर भोजन करवाया रातको कहा कि हमें अपने साथ लेचलो सदनजी बोले कि मेरी गर्दन कटजाय तब भी

चुराकर अच्छे प्रकारखाता और उन्हों ने पकडनेका मन किय
तो फिर भगगया तो उसका कैसे विश्वासहो कि पीछे २ आत
हे कि नहीं इसलिये साथ २ ही चलना चाहिये तब फिर भ-
गवत् ने कहा कि हमारे नूपुरकीधुनि तुम्हारे कानोंमें गिरती र-
हैगी तबउसने मानालिया जबघरकेपासआयपहुँचे तब ब्राह्मण
को चाहनाहुई कि अवतो रूपअनूपको आंखें भरकर देखलेन
चाहिये तो इसी विचारमें उसनियमको तो भूलगया और ए
फिरकर देखा तो भगवत् वहांहीं ठहरेरहे और ब्राह्मण आ
कर गांवमें आया औ वृत्तान्त आप आचने श्रीसाक्षी गोप
का कहा औ उन पंचोंको वहां लेआया तब भगवान्
ब्राह्मणों का जो नियम था सो कहसुनाया सबको भग
भक्तोंका विश्वासहुआ और उस ब्राह्मणका बिवाह ब-
सो अवतक ( श्रीगोपालजी ) महाराज ( धुड़दान ) गां
जगन्नाथ रायजी के मन्दिर में पांच कोशपर बिराज
नाम ( साखीगोपाल ) प्रसिद्धहै ॥ इति त्रयस्त्रिंश

गजपति का दृष्टान्त ॥

स्वस्वामिनोदर्शननत्यजतेद
यथाश्रीकृष्णचैतन्य दर्शनं

उसीपर झूलेकीभांति बिराजमान करदेते। एकबेर वह छड़ीभू-
लगये चित्त भगवत्के चरणोंमें था इससे सुधि न रही टिकांतपर
पहुँचे तब प्रयोजन भगवत् के बिराजनेका हुआ तब यादआया
तो अत्यंत प्रेमसे कहनेलगे कि आपकी सब प्रकारकी सेवाकरने
वाला निश्चयकरके यहदासहीहै कोईभी कार्य्य आपको कर्तव्य
नहींहै केवल एक अंतःकरणको प्रेरणा यहीकाम आपके आधीन
है सो भी काम क्या इस दासहीको सौंपदिया गया है भगवत्ने
जो यह प्रेमरस से सनी बानी सुनी तो तुरंतही छड़ी उसही
स्थानपर मँगवायदी कर्मानंदजी अगाड़ी चलदिये॥ इति षट्
त्रिंशः प्रदीपः ३६॥

## कूल्ह अल्हका दृष्टान्त॥

चित्तभक्त्याप्रसीदेतहरिर्बाह्येर्नहीन्द्रियैः॥
कनिष्ठंसाधुमेनेसभ्रात्रोर्वैकूल्हअल्हयोः ३७

हरि निज चित्त वृत्तिहीसे प्रसन्नहोते हैं कुछ बाहरकी इन्द्रि-
से अर्थात् हठकरके अच्छापन दिखाने से नहीं जैसे कूल्हअल्ह
दोनों भाईथे उनमेंसे भगवत्ने छोटेभाई अल्हजीको अच्छा
॥ दृष्टान्त॥ (कूल्ह — अल्ह) ये दोनों भाई रजवाड़ेमें
रक्तहुये (कूल्ह) बड़ाभाई पहिलेही से भगवद्भक्त वैराग्य-
त्यागी और भगवत्रूप माधुरी के ध्यान में मग्न और
चरित्रोंके कीर्तन करनेवालेहुए और (अल्हजी-छोटे
ांस के खाने पीनेमें रहकर बहुतसे राजाओंके पशके
करते। और कभी घनाक्षरन्याय भगवत्काभी कीर्त-
भाईकी आज्ञामें रहतेथे। एक दिन बड़े भाईने
मनुष्यदेह वृथाखोतेहो संसार अनित्यहै सोअब
रकाजी जाय भगवत्के दर्शन करआवें। सो
ाये तो (कूल्ह) बड़ेभाईने अपनेबनायेकवित्त
र (अल्ह जी) छोटेने शिर झुकाकर ल-

यहबात नहीं होगी तो उसने कुछ औरही समझ तुरन्त घर में जायके अपनेपति का शिर काटकरके फिर आय बोली कि अब बेखटके तुम साथ लेचलो सदनजी ने फिर कहा कि हमसे यह कभीभी न होगी तब तो उसने पुकार मचादी कि इस मनुष्य को साधुजानकर टिकायाथा सो अब यह मेरे पतिका शिर काट कर मुझको अपने साथ लेजाने चाहता है। सदनजी पकडे हाकिम के घर पहुंचे पूछागया तो सदनजी ने कहा हमसे अपराधहुआ तब हाकिम ने सदनजीका हाथ कटवाय दिया। ऐसे कष्टमेंभी सदनजी उसे पूर्बजन्म के पापका फल समझकर भगवद्ध्यानही में लीनरहे जब पुरी के निकट पहुँचे तो जगन्नाथजी महाराज ने प्रसन्नहोकर पालकी सदनजीके लिये भेजी पर सदनजी मर्य्याद देखकर नहीं चढ़े जब सब बहुतही कहने लगे तब भगवत्की आज्ञा उल्लंघना उचित न जानकर सवार हो श्रीदरबारमें पहुंचे भगवत्के दर्शनपाये कृतार्थभये और हाथजोड़के दण्डवत् करनेलगे तो हाथ ज्योंकेत्यों होगये ॥ इति पंचत्रिंशः प्रदीपः ३५ ॥

## कर्मानन्दजीका दृष्टान्त ॥

भक्तस्यनियमंसम्यक् सम्पादयतिहीश्वरः ॥
स्थानेसम्प्रापयामास कर्मानन्दस्ययष्टिकाम् ३६

भगवान् भक्तके नियमको पूरा निश्चय करते हैं जैसे (कर्मानन्दजी) की लाठिकाको उन्हींकेपास पहुँचाई ॥ दृष्टान्त ॥ (कर्मानन्दजी) जातिकेचारण, रजवाड़ेमें वैराग्यवान् भगवद्भक्त हुये। काव्य उनका ऐसा प्रभाव युक्तहै कि कैसाही कठोरचित्त हो पढ़सुनकर द्रवीभूत होजाताहै उन्होंने संसारको असार औ अनित्य जानकर त्याग किया और तीर्थयात्राकोचले तो भगवत् का सिंहासन शिरपे औ एक छड़ी हाथमें लेली जहां कहीं ठहरते वह छड़ी धरतीपर गाड़देते औ बटुवा शालग्रामजी का

उसीपर फूलेकीभांति बिराजमान करदेते। एकबेर वह छड़ीभूलगये चित्त भगवत्के चरणोंमेंथा इससे सुधि न रही टिकांतपर पहुँचे तव प्रयोजन भगवत् के बिराजनेका हुआ तब यादआया तो अत्यंत प्रेमसे कहनेलगे कि आपकी सब प्रकारकी सेवाकरनेवाला निश्चयकरके यहदासहीहै कोईभी कार्य्य आपको कर्त्तव्य नहींहै केवल एक अंतःकरणको प्रेरणा यहीकाम आपके आधीन है सो भी काम क्या इस दासहीको सौंपदिया गया है भगवत्ने जो यह प्रेमरस से सनी बानी सुनी तो तुरंतही छड़ी उसही स्थानपर मँगवायदी कर्मानंदजी अगाड़ी चलदिये॥ इति षट्त्रिंशः प्रदीपः ३६॥

॥ कूल्ह अल्हका दृष्टान्त॥

चित्तभक्त्याप्रसीदेतहरिर्बाह्यैर्नहीन्द्रियैः॥
कनिष्ठंसाधुमेनेसभ्रात्रोर्वैकुल्हअल्हयोः ३७

हरि; निज चित्त वृत्तिहीसे प्रसन्नहोते हैं कुछ बाहरकी इन्द्रियोंसे अर्थात् हठकरके अच्छापन दिखाने से नहीं जैसे कूल्हअल्ह जी दोनों भाईथे उनमेंसे भगवत्ने छोटेभाई अल्हजीको अच्छा माना॥ दृष्टान्त॥ (कूल्ह — अल्ह) ये दोनों भाई रजवाड़ेमें भगवद्भक्तहुये (कूल्ह) बड़ाभाई पहिलेही से भगवद्भक्त वैराग्यवान् औ त्यागी और भगवत्रूपमाधुरी के ध्यान में मगन और भगवत्गुण चरित्रोंके कीर्तन करनेवालेहुए और (अल्हजी-छोटे भाई) मद्यमांस के खाने पीनेमें रहकर बहुतसे राजाओंके यशके कवित्त बनायाकरते। और कभी घनाक्षरन्याय भगवत्काभी कीर्तनकरते। पर बड़े भाईकी आज्ञामें रहतेथे। एक दिन बड़े भाईने कहा कि यह तुम मनुष्यदेह वृथाखोतेहो संसार अनित्यहै सोअब उचित यहहै कि द्वारकाजी जाय भगवत्के दर्शन करआवें। सो दोनोंभाई द्वारकामें आये तो (कूल्ह) बड़ेभाईने अपनेबनायेकवित्त भगवत्की भेटकिये और (अल्ह जी) छोटेने शिर झुकाकर ल-

ज्जितहो आंखोंमें आंशूभरलिये और मनमें विकलहोकर दोचार कवित्तपढ़े तबभगवत्ने जो अत्यंतप्रीति हृदयकीदेखी और अपने पापकर्मको शोचतादेखा तो प्रसन्नहोकर ( अल्हजी ) के कीर्तन पर सावधान हुये औ हुंकारी भरनेलगे और पुजारीको निज माला देनेकी आज्ञा की तब तो अल्हजी ने बिनयकिया कि कूल्हजी बड़ेभाई इसकृपाकेपात्र हैं । मैं अपराधी इसयोग्य नहीं हूं तब पुजारियों ने उत्तरदिया कि इस दरबार में बड़ाई छुटाई हृदयकी प्रीतिहीकी देखी जाती है और हमको केवल भगवत् की आज्ञा पालने उचितहै यहकहकर अल्हजी के गले में मालाडालदी तो कूल्हजी को अति दुस्सहहुआ और अपनी बे मर्य्यादी समझकर डूबनेका मनोरथ करके समुद्र में कूदपड़े मुख्य द्वारकामें जाय पहुंचे भगवत् का दर्शन करके कृतार्थभये जब भोजन करनेगये तो भगवत् ने आज्ञाकी कि दो पनवाड़ोंमें पारुस करो कूल्हजीने पूछा दूसराकिसकाहै तो बोले यहतुम्हारे छोटेभाईका है तब तो सुनतेही फिर भी बड़ा दुःख हुआ औ भोजन करना विष समानहोगया भगवत् बोले दुःखकी कुछ बात नहींहै तुम्हारा छोटाभाई मेरा परम भक्तहै वृत्तांत यहहै कि पूर्व जन्ममें वह राजाथा और राज्यछोड़ वनमें हमाराभजन करताथा संयोगबश एक और राजा वहांआकरटिका तो उसकी सजावट भोग बिलास औ रागरंगको देखकर इसनेभी उससुख की चाहनाकरी इससे यह शरीरपाया अब वह तुम्हारे सत्संगसे खाना पीना सोना सब छोड़के मरनेसमानहोरहाहै शीघ्रजाकर सुधिलेव तब तो कूल्हजी प्रसादलेकर जहां पहिले टिकेथे तहां जाय पहुंचे तो अल्हजीको वहां न पाया घरजानेकी सुधिपाय घरको चले ( अल्हजी ) निजभाईके वियोगसे दुःखीभये रोया करतेथे फिरकूल्हजीको आतेसुन हर्षितहोकरआगे जाकर सामने लिया दण्डवत्करी दोनोंभाई प्रेमसे भरेहुये मिले । कूल्हजीने सब वृत्तांत कहा दोनोंभाई प्रेमसे भरे घर वार त्याग के भगवत्

सेवा भजनमें शरीर समाप्त किया ॥ इतिसप्तत्रिंशःप्रदीपः ३७ ॥

जगन्नाथजीका दृष्टान्त ॥

स्वीयार्चामिच्छतोविष्णुर्भक्तस्यप्रतिमांनिजाम् ॥
प्रबोधयेद्यथाकूपेजगन्नाथमशिक्षयत् ३८

निज प्रतिमा पूजना चाहते भक्तको भगवान् निज प्रतिमाको आपही बतादेतेहैं जैसे जगन्नाथजीको कुयेंमें निजप्रतिमा बताई दृष्टान्त ॥ (जगन्नाथजी) रहनेवाले गांव थानेश्वरके परमभक्त श्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभुके सेवक पार्षदके सदृशहुये वृत्तान्तयह है कि तीन दिनतक प्रभुको अपने घरपर विराजमानदेखा और उनके प्रतापका प्रभाव घरमें प्रकट पायके आधीन औ विश्वास युक्तभये और सेवकहोकर ( कृष्णदास ) नामपाया पर लोग, कृष्णनाम कहाकरतेथे बहुतकाल मानसी पूजा औ ध्यान करते रहे एकबेर मन यहहुआ कि भगवत् मूर्ति चर्चा मिले तो सब काल सेवा पूजामें रहों तो भगवत्ने कृपाकरके अपना स्वरूप एक कुयें में बताया उसेलाकर स्थापनकिया औ ऐसीसेवा पूजा में लीनरहे कि रात्रि दिन भगवत्के शृंगार सेवा पूजा औ उत्साह और लाड़ लड़ानेके सिवाय दूसरा कुछ काम न था उनके पुत्रका नाम ( रघुनाथ ) था वह भी लड़काईहीसे ऐसा प्रेमी औ भक्तहुआ कि भगवत्ने स्वप्नमें एक श्लोक अपने प्रेम औ भक्ति का सिखाय दिया ॥ इत्यष्टत्रिंश प्रदीपः ३८ ॥

रामदासजीका दृष्टान्त ॥

गच्छेद्भक्तसमीपहिहरिर्हृदयवित्तमः ॥
रामदासगृहंगत्वादर्शनंप्रददौयथा ३९ ॥

हृदयवेत्ता—अंतर्यामी भगवान् , भक्तके पास जापहुँचतेहैं। जैसे ( रामदासजी ) के घरजायके तिन्हें नित्य दर्शन
दृष्टान्त ॥ रामदासजी रहनेवाले डाकौरके नि
हरिभक्त भये एकादशी व्रतकरके बड़ी

मंदिरमें द्वारका जायाकरते जब वृद्धभये तो रनछोड़जीने आज्ञा की कि अब तुम घरहीमें भजन स्मरण कियाकरो यद्यपिरामदासजीने वचन अंगीकार कियापर जब तरंग प्रेमकी उठै तो बेवश होकर चलेहीजाते तो भगवत्से निज भक्तके आने जाने का परिश्रम नहीं सहागया तब आज्ञाकी कि तुम एक गाड़ीलावोहम तुम्हारेघर चलेंगे । रामदासजी अगिली एकादशीको गाड़ीलेकर पहुँचे और लोगोंने जाना कि बुढ़ाईके कारण गाड़ीपै आया है द्वादशीके दिन बतलायेभये भगवत् मंदिरमें गये और गाड़ी में सवारकराकर चले पर गहने सब भगवत्के मंदिरमें छोड़दिये प्रभातको पुजारीलोगोंने मंदिरखोला औ भगवत्कोन देखा तो जानगये कि रामदास लेगये सब पीछेपड़े और रामदासजी को उनके आनेसे चिंताभई तब भगवत्नेकहा समीपही एक बावड़ी है उसीमें हमको छिपादेव रामदासजीने वैसाही किया फिर वे लोग आये तो रामदासजीको मारा पीटा घायलकिया और गाड़ीमें जब न देखातो लज्जितहोकर पश्चात्ताप करनेलगे पीछे किसीके बतलानेसे बावड़ीको देखा तो रुधिरसे भरी है चकित हुये भगवत्ने कहा कि रामदास हमारी आज्ञासे हमको लाया है तुमने जो उसको घावदिया सो हमने अपने शरीरपर रोकाहै इसहेतु बावड़ी रुधिरसे भरी है अब तुमलौटजाओ तुम्हारेसाथ न जायँगे पुजारियोंने बड़ी प्रार्थना औ करुणा विनय किया कि महाराज जो आप न चले तो हमारी क्यागति होगी भगवत्ने कुछ न सुना बहुत कहा तब यह ठहरा कि भगवत् मूर्त्ति के बराबर सोना तौलदेवो पुजारीलोग इसबातपर मानगये रामदासजीने कहा महाराज ! मेरेघर सोना कहां है भगवत् बोले तुम्हारी स्त्रीके कानमें बाली सोनेकीहै हमारे तौलकी बराबर वही बहुत है जब उस बालीके साथ भगवत् मूर्तिको तौलनेलगे तो बाली वाला पलरा धरतीसे जालगा औ मूर्तिवाला हलकाई से ऊपर होगया पुजारी सब लज्जित हो २ कर घरचलेगये रामदासजी

ने भगवत्को लाकर अपने घरमें विराजमानकिया और भजन सेवा करनेलगे इस चरित्रसे प्रकटहै कि राजा बलिके यहां तो उसके बांधनेके पीछे वहां टिके और यहां रामदासजीके घायल होनेके पीछे टिके और सदा भगवत्के यहां रहनेका यह चिह्न है कि अब भी भगवत् मूर्ति किसी और मनुष्यसे नहीं उठती जब कोई रामदासजीके वंशमेंकाही उठाता है तब तुरंत उठजातीहै मंदिरकी मरम्मतके समय इसबातकी परीक्षा होचुकी है॥ इत्येकोनचत्वारिंशः प्रदीपः ३९

## दयावान्साहूकारभक्तका दृष्टान्त॥

सर्वेभ्यश्चापियज्ञेभ्योदयायज्ञःपरोमतः॥
दयानिष्ठोयथावैश्यःपंचयज्ञफलंलभेत् ४०

सब यज्ञोंसे पर अर्थात् श्रेष्ठ दयायज्ञ मानागयाहै। जैसे दया वाला एक साहूकार संपूर्ण पंचयज्ञके फलको प्राप्तहुआ॥ दृष्टान्त॥ एक साहूकार समयके फेरकरके दरिद्रीहोगया चारयज्ञ उसने कियेथे किसी ऋषीश्वरके उपदेशसे एकयज्ञके फल को लेनेके लिये धर्मराजके पास चला एकबेर भोजन करनेकी सामग्री उसके पासथी उसकी रसोई बनाकर जब खानेको बैठा तो एक कुतिया उसीघड़ी बियाई भूखसे विकलभई आई तो साहूकारने दयामें आकर चौथाई भोजन उसको देदिया पर भूख न गई फिर दूसरी चौथाईदी फिरभी वही दशारही फिरतोचार बेरमें सब भोजन देदिया और पानी पियायदिया संतुष्टहोचली गई और साहूकार भूखा प्यासा धर्मराजकेपास पहुँचा धर्मराज ने हिसाबकरते कहा कि पांच यज्ञोंमें एक यज्ञ तुम्हारा अक्षयहै किसका फल चाहतेहो वैश्यने हाथजोड़कर बिनय किया महाराज! मैंने तो चारही यज्ञ कियेहैं वह पांचवां यज्ञ कौनसा है धर्मराजने कहा कि पांचवां अक्षय यज्ञ वहहै जो तैंने कुतियापर दयाकरके सबभोजन देदिया यही सर्वोत्तम अक्षय पांचवां

इसयज्ञकी बराबरी और कोईभी यज्ञ नहीं करसक्ता क्योंकि और तोफलाकांक्षीहोनेसे नाशमान्यज्ञहैं और यह निरपेक्ष्यहोनेसे अक्षयमहायज्ञहै साहूकारसुनप्रसन्नहोगयाइतिचत्वारिंशःप्रदीपः४०

॥ राजाशिविका दृष्टान्त ॥

शिविःकारुणिकोदाताबभूवभगवत्प्रियः ॥
इन्द्रायश्येनरूपायमांसंयोदत्तवान्स्वकम् ४१

राजाशिवि,दयावान्दाता भगवत्काप्रियभक्तहुआ। जिसनेश्येन रूपधारी इंद्रको निज मांस भी दान करदिया॥ दृष्टान्त॥ (राजा शिवि ) की कथा और पुराणोंमें तथा महाभारतमें विशेषसे लिखीहै कि दयावान् शरण देनेवाले औ धर्मात्माभये अश्वमेधादि वहुतसे यज्ञकरके ब्राह्मणों को अनेक प्रकारके दानदिये भगवत् की प्रेरणा करके राजाइन्द्रको दया औ शरणागत वत्सलताकी परीक्षाकी चाहनाहुई तो अग्नि देवताको कबूतर बनाया और आप वाजका रूप धरके आया कबूतरने बाजके भयसे कंपित होकर राजाके दामनकी शरणली और बाजसे राजाका बड़ावाद हुआ बाज बोला कि हमाराआहार छीनतेहो राजाकहे कि शरण में आयेकी रक्षाकरना परमधर्महै निदान जबनिजशरीरका मांस देने कहा तब बाज माना तब मांस अपना काट२ कर पलरे पर धरा तो कबूतरका पलरा धरती न छोड़े जब मांस धरते २ भी बराबर न हुआ तब राजा शिर काटकर धरनेलगा तो तीनों देवता प्रकटभये और वरदानदेकर स्तुतिकरी औ शरीर जैसाथा वैसाही करके चलेगये इससे भगवत्के भक्तभी भगवत् रूपहीहैं वे जो करें सो आश्चर्य नहीं॥ इत्येकचत्वारिंशःप्रदीपः ४१॥

॥ राजामयूरध्वज का दृष्टान्त ॥

मयूरध्वजराजाहि धर्मनिष्टोमहानभूत्॥
छित्वास्वपुत्रदेहार्द्धमखिन्नोहरयेददौ ४२

राजा (मयूरध्वज) महान् धर्म्मनिष्ठभया। जिसने भगवत्के अर्थ निज पुत्रका आधाशरीरकाटकर श्रखेददेदिया॥ दृष्टान्त॥ राजा (मयूरध्वज) इनकी धर्मपत्नी, औ (ताम्रध्वज) पुत्र, ये ऐसे परमभक्त दयावान्हुये कि भगवत्ने घरबैठे दर्शनदिया और परीक्षासे दृढ़देखा। वृत्तांतयहहै कि राजा (युधिष्ठिर) ने अश्वमेध यज्ञ किया और अर्जुनको घोड़ादेकर उसकी रक्षाकेनिमित्त भेजा तो उसी समय राजा मयूरध्वज,ने भी यज्ञ आरंभकिया औ ताम्रध्वज पुत्र घोड़ेके साथथा राहमें भटभेराहुआ तो ताम्रध्वज ने महाभारतके योधा गांडीवधारी (अर्जुन) के हाथसे घोड़ा छीनलिया तबभक्तानुकूल महाराज (श्रीकृष्णचन्द्रजी) ने देखा कि यहां दोनों भक्तहैं एकको जयदीजाय तो एककी अभिलाषा भंगहोगी। इसहेतु परीक्षाके हेतु आप वृद्धब्राह्मणबन औ अर्जुन को लड़केका रूपबनाकर राजामयूरध्वजके द्वारपैगये राजा यज्ञशालामें था दण्डवत् करके आदर औ विनयपूर्वक पूछा कि आगमनका हेतु क्याहै तब वृद्धब्राह्मणरूपधारी भगवान् बोले कि बनमें एक व्याघ्रहै उसने इसबालकके खाने की इच्छाकी मैंने बहुत कहा कि इसके बदले हमकोखालेव परउसने न माना कि तू वृद्धहै तेरामांस मेरे कामका नहीं निदान बहुतही प्रार्थनाओ रुदन करनेसे यह ठहरा कि जो राजाका आधा शरीर लादे तो इस बालकको छोड़देवेंगे इसहेतु मैं तुम्हारेपास आयाहूं इस बालककी रक्षाकरो तब सुनकर राजाको बड़ीही दया उत्पन्नहुई कि निश्चय यह शरीर एकदिन नष्टहोनेवाला है जो ऐसेकाममें आवै तो इससे अच्छीक्याहै तब उसब्राह्मणनेकहा एकवचन उस व्याघ्रका और भी है कि जिस आरेसे राजाका शरीर चीराजाय वह आरा एक ओरसेतो राजाके बड़ेबेटेके हाथमेंहोय और दूसरी ओर राजाकी स्त्रीके हाथमेंहोय और किसी प्रकारका भी किसी को दुःख औ शोक न होवे राजाने इसबातको भी अंगीकारकिया तब ताम्रध्वजने ब्राह्मणसे कहा कि शास्त्रमतसे बेटाभी बापका

रूपहोताहै जो मेराही आधा शरीर लेलियाजावे तो बहुत अच्छी बातहै तौ ब्राह्मणने कहा कि तू राजा नहींहै तब रानीबोली कि मैं भी राजाकी अर्द्धांगीहूं जो राजाके आधेशरीरके बदले मुझको लेजावे तो न्यायकी और भी अधिक संतुष्टता होय ब्राह्मणने कहा तू रानीहै राजानहीं फिर तो ब्राह्मणने ताम्रध्वजको राजा के सामने इसकारण कि परस्पर देखके मोह उत्पन्नहोजाय औ पीठपीछे रानीको खड़ाकिया और दोनों आरा राजाके शिर पर रखके खींचनेलगे जब आरा राजाकी नाकतक पहुँचा तो राजाकी बाईं आंखसे जल निकला ब्राह्मणने कहा बस यह शरीर हमारे कामका नहींरहा क्योंकि राजा दुःखितहोकर देताहै तब राजाने बिनय किया महाराज ! कृपाकरो क्रोधन करिये जिसओरकी आंखसे पानी निकलाहै उसओरके शरीरको यहदुःखहै कि मैं बड़ा पापीहूं जो किसीकाममें न आया और दाहिना अंगबड़ा बड़भागी है जो ब्राह्मणके काममें आया तब तो भगवत् करुणासिंधु इस बचन के सुनतेही भक्ति विश्वाससे अत्यन्तही प्रसन्नहुये और प्रेमसे बिह्वलहोगये और राजाको आरेकेनीचे से उठाकर छाती से लगा लिया औ निजरूपसे राजाको दर्शनदिया भगवत् के स्पर्श होतेही घाव शिरकाअच्छा होगया और भगवान् बोले कि मैं तुम्हारी धर्मनिष्ठासे बहुत प्रसन्नहूं जो चाहनाहो सो मांगो पूर्ण करूंगा राजाने हाथजोड़के बिनय कियामहाराज ! आपने अनुग्रह किया तो अब कौन पदार्थ बाकी रहा जो मांगूं केवल चरणोंकी प्रीति चाहताहूं और एक प्रार्थना यहहै कि कलिकाल आगे आनेवालाहै सो अब ऐसी कठिन परीक्षाभक्तोंपर न करनी चाहिये तब भगवत्ने यह बचन अंगीकार किया और अर्जुन को राजाका मिलाप करवाकर मेल करादिया राजाने बहुतहर्ष से घोड़ा फेरदिया और इसचरित्रसे भगवत्को अर्जुनका गर्वदूर करनाथा सोभी दूरहोगया ॥ इति द्विचत्वारिंशत्प्रदीपः ४२ ॥

तभीसे कुम्हारों में यही रीतिहै कि आँवाँ तयारहो उसी दिन-
आग लगादेतेहैं॥ इति त्रिचत्वारिंशत्प्रदीपः ४३॥

केवलरामजीका दृष्टांत ॥

देहेव पीड़ा जायेत सर्वभूतानुकंपिनः॥
केवलोदुःखमापन्नो व्यापारिवृषताडने ४४॥

सब प्राणियों पर दयाकरनेवाले भक्तको और को दुःखहो-
नेसे [illegible] जैसे व्यापारीने अपने बैलको
पीटा [illegible] चोटलगी केवलरामजी
ऐसे [illegible] तक हुए कि जिन्हों ने
भगव[illegible] ऐसे लोगों को भी पवित्र
करके भगवत्की भक्तिमें लगादिया दुःखसुख औ मित्र शत्रु से
अलग और तिलक माला नवधाभक्ति के वशीभूत बड़े दृढ़ भ-
गवत् के चरणों में औ निष्काम भक्ति और लोगोंके ऊपर दया
और कृपा विनाकारण सबके घरमें जाकर किया करते थे कि
श्रीकृष्णस्वामी के चरणकमल की सेवामें मनलगाओ यहदान
हमको देओ और भागवतधर्म उनको समझायाकरते जहां कहीं
दशबीस साधु देखते उनको शालग्रामजी औ भगवत् मूर्त्ति पास
से देकर पूजा सेवाकी रीति बताया करते। एकबेर बनजारे ने
अपने बैलपर कोड़ामारा स्वामीजी बसुधि बिकल होकर धरती
पर गिरपड़े तो लोगोंने दौड़कर उठाये औ शरीर पर दृष्टिदी
तो सांठ कोड़े मारका पड़ा हुआ दिखाईदिया सबको आश्चर्य्य
हुआ कि यह रीति [illegible]की जाने [illegible] सुनी होगी॥ इति
चतुश्चत्वारिंशत्प्र

हैं जैसे देवी को शिक्षा देनेसे आपही लोग वैष्णव होगये॥दृष्टांत॥ हरिव्यासजी ऐसे भगवद्भक्त हुये कि देवताओंको अपना शिष्य करके भगवद्भक्त बनादिया भगवद्भक्तों से ऐसी प्रीति थी कि कभी उनसे अलग नहीं होतेथे और जिसप्रकार राजाजनक ऋषीश्वरों के सतसंग में रहाकरते थे इसी प्रकार हरिव्यासजी रहाकरते साधुसेवा करनेवाले ऐसेहुये कि संसार में कदाचित् कोईही हुआहो सिवाय भगवद्भक्तों के चरित्रसे दूसरी ओर मन नहीं देते एकवेर (चरथावल) ग्राममें हराबाग देखकर टिके और इच्छाथी कि भगवत् की सेवा पूजा करके भगवत् का प्रसाद वनावेंगे। उसी बागमें एक दुर्गा का मन्दिरथा किसी ने वहां बकरामारा तो हरिव्यासजी को बहुत करुणाभई और मनको व्यथाभई भूखे प्यासे भजन करते रहे तब (दुर्गामहारानी) भगवद्भक्तों का दुःख नहीं सहसकीं तो साक्षात् होकर हरि व्यासजी से कहा कि आप महा प्रसाद करें हरिव्यासजी ने कहा कि जहां ऐसा अन्याय होता हो तहां रसोई किस प्रकार होसक्ती है दुर्गा ने कहा कि मेरे ऊपर कृपाकरो मेरा अपराध है और भगवत् मन्त्र उपदेश करके इसनगर को पवित्र कीजिये। हरि व्यासजी ने देखा कि दुर्गा के मन्त्रोपदेश होने से सबलोग दुरुस्त होते हैं इसहेतु भगवत् मन्त्रका उपदेश किया जब दुर्गा वैष्णवहुई तब नगरको वैष्णव करना उचित जाना वहां का जो सरदार था उसे रातको पलँग से डालदिया और कहा कि जो भला चाहताहै तो हरिव्यासजी का सेवक होकर भगवद्भक्ति अंगीकार कर नहीं तो सब नगरको नाश करदेऊँगी तब तो तुरन्त सबलोग आये औ चेलेहोगये भगवद्भक्त हुये और जो २ अपराध किये थे उन सबों से छुट्टीपाई हरिव्यासजी कुछ दिन वहां रहे और ऐसा उपदेश किया कि भंगीतक हरिभक्त होगये॥ इति पंचचत्वारिंशत्प्रदीपः ४५॥

पुरुषोत्तमपुरी के राजाका दृष्टान्त ॥

क्रीडाकालेप्रमादोहि जायतेवामहस्ततः ॥
राज्ञाप्रसादग्रहणे हस्तच्छेदोयथाभवत् ॥ ४६ ॥

क्रीडा करनेके समय प्रमाद होजाताहै जैसे चौपड़खेलते राजाने बायें हाथसे प्रसाद लिया तो उसे निजहाथ काट देना पड़ा। पुरुषोत्तम पुरी के राजा परम भगवद्भक्त हुये औ महाप्रसाद में ऐसी निष्ठाथी कि थोड़ीही अवज्ञा से अपना हाथ कटवा डाला। वृत्तान्त। यह कि एक बेर चौपर खेलते थे पुजारी जगन्नाथजी का महाप्रसाद लेकर आया तो राजा ने दाहिने हाथ में पांसा रहने से बायां हाथ फैलाया तो पुजारी महाप्रसादकी अवज्ञा समझ क्रोधयुक्त होकर महाप्रसाद फेरलेगया राजा इस अपराधसे लज्जितहोकर दौड़े पुजारी से बिनय प्रार्थना किया तब महाप्रसाद मिला उसे लेय शिरमें धारण किया और उस भूल चूकके पश्चात्ताप में अत्यन्त चिन्तायुक्त बिना खाये पिये त्राहि त्राहि करते घरमें जाकर पड़रहे और इस उपायमें लगे कि दाहिने हाथको किसी रीति अलग करदेना चाहिये क्योंकि भगवत् प्रसादसे बिमुखहुआ फिर चिन्ताभई कि मेरे हाथको कब कोई काटेगा इसशोचमें मन मलीन रहते थे एक दिन इसमानसी व्यथाका कारण मन्त्री ने राजा से पूछा तो राजाने कहा कि रातके समय एक भूत आता है सो झरोखे की राह हाथडाल कर बखेड़ा कियाकरताहै सो तुम रातको मेरे मकानमें रहो जब वह प्रेत अपनाहाथ झरोखे में डाले तो काटडालना। मन्त्री उसी रातको चौकीपररहा राजाने झरोखे में हाथडालकर रौला मचाया तभी मन्त्रीने ऐसी तलवार मारी कि हाथ अलग जाय गिरा जब मन्त्री को मालूम हुआ कि राजाका हाथ है तो बड़े शोक औ लज्जामें पड़ा तब राजाने समझाया कि भूत औ प्रेत यही है जो भगवत् से विमुखहै तुम चिन्ता मतकरो हमको यही

करना योग्यथा तब तो करुणासिंधु भगवत्ने आज्ञाकरी कि राजाको लिये महाप्रसाद लेआओ औ कटा हाथ उठालाओ पुजारीलोग दौड़े औ इधरसे राजा दर्शन को चले राहमें पुजारी लोग जब आगे बढकर महाप्रसाद देनेलगे तो राजा ने भाव भक्तिसे हाथ दोनों उठाये उससमय भगवत्की कृपा से वह कटा हाथ भी निकलआया औ राजाने दोनों हाथों से महाप्रसाद ले अपनी छातीसे लगाया और दर्शनकर प्रेम आनन्दमें मग्नहोकर के सेवामें रहनेलगे। भगवत्ने कटाहुआ हाथ अपने बागमें लगवादिया अबतक वह दोनावृक्ष सुगंधवानहै जिसकेपुष्प जगन्नाथरायजीपै चढाये जातेहैं ॥ इतिषट्चत्वारिंशत्प्रदीपः ४६ ॥

## सुरेश्वरानंदजीकी कथा ॥

**महाप्रसादमनतेसर्वोत्कृष्टंहरिप्रियः ।**
**अपीहमांसवटकंभक्षयामासतत्क्रिया ४७॥**

हरिके प्रियभक्त महाप्रसादको सबसे उत्कृष्ट मानतेहैं जैसे मांसके वड़ेको भी भक्तने महाप्रसाद मानकर भोगलगाया (सुरेश्वरानंदजी) चेले स्वामी (रामानंदजी) के परमभगवद्भक्त हुए और महाप्रसादकी ऐसीमहिमा इस संसारमें फैलाई जिसके प्रभावसे हजारोंको दृढ़ विश्वासहोगया ॥ वृत्तान्त ॥ एकबेर किसी द्वेषीने राहचलते दारू औ मांसका बरावनाहुआ आगेले आकर कहा कि भगवत् का महाप्रसादहै सुरेश्वरानंदजी ने महाप्रसाद का नाम सुनतेही लेकर भोगलगाय लिया आगे चल दिये पीछे से जो चेले चले आते थे उन्हों ने भी देखा देखी वही आचरणकिया तब स्वामीजीने क्रोधकरके उनसे कहा कि तुमने क्याखाया वेबोले जो आपने खाया वही हमनेभी खायाहै तब स्वामीजी बोले हमने तो महाप्रसादपाया तुमने मांसखाया है तब सबने वमन किया तो स्वामी जी के उदरसे तो तुलसीदल औ गंगारज निकली और उनकेमें से वही मांस निकल पड़ा

तवतो चेले चरणोंमें गिरे और भगवतके महाप्रसाद औ भजन का विश्वासहुआ ॥ निश्चय करके समर्थको विषभी अमृतहै औ असमर्थको अमृत विषके तुल्यहै सोही शिवजी ने हलाहल पान कर लिया वह अबतक उनके कण्ठका आभूषण है औ राहुने अमृत पानभी किया पर उसका शिरकटगया ॥ इतिसप्तचत्वारिंशत्प्रदीपः ४७ ॥

## श्वेतद्वीप निवासी भक्तोंका दृष्टान्त ॥

श्वेतद्वीपेमहाभक्ता निवसंति न संशयः ॥
परीक्षितुंगतोभक्तो नारदोऽथव्रबाधतत् ४८ ॥

[श्वेतद्वीप] भगवत्का विहार स्थानहै और जो भगवद्भक्त, शास्त्रोंमें चिरंजीवि लिखेहैं विशेषकरके इसीद्वीपमें रहतेहैं एक बेर नारदजी उसद्वीपमें गये और ज्ञान उपदेश करनेको चाहा तो भगवत्ने रोकदिया कि यहांके रहने वाले मेरे प्रेम औ भक्ति भावमें मग्नरहतेहैं इससे तुम अपनी ज्ञानकहानी औरही कहीं कहो तब नारदजी उदासहो चलेगये वैकुंठमें जाय वह वृत्तान्त कहा नारायणजीने कहा कि सत्यही श्वेतद्वीपं निवासियों का यही वृत्तान्तहै सो चलके अपनी आंखों से देखलेओ यहकह नारदजीको साथले भगवत् तहांगये तो सरोवरके किनारे एकपक्षी को देखा कि भगवत् ध्यानमेंथा तब नारायणजीने नारदसेकहा कि यह पखेरू ऐसा भगवद्भक्तहै कि हजारवर्ष से इसने जलपान नहीं कियाहैइसहेतु कि भगवत्के भोगलगानेको जल नहीं मिला औ बिना भगवत् प्रसादके कुछखाता नहींहै तबपरीक्षाके निमित्त भगवत्ने थोड़ासा जल प्रसादीकरके सरोवरके किनारेपर डाल दिया तो वह तुर्तही अपनी चोंचसे पानकरगया नारदजीने उस पक्षीकी परिक्रमाकरी औ सेव्य समझकर प्रेममें पूर्णभये फिर आगेचले तो भगवत् मंदिर देखा उस समय आरतीहोकर ताला मंगल होगयाथा एकजनको उसमंदिरकी ओरशीघ्रतासे आतेहुये

देखा तो पूछा कहांजाताहै वहबोला भगवत् आरतीके दर्शनको जाताहूं नारायणने कहा आरती होचुकी और मंदिरका तालाभी मंगल होचुकाहै तो वह तुरंत सुनतेही धरतीपरगिरपड़ा औ मर-गया तिसके पीछे उसकी स्त्री आई नारायणनेकहा कि तेरापति मरगया उसका क्रियाकर्म करनाचाहिये स्त्रीनेकहा कि तू क्या भगवत्से विमुखहै जो क्रियाकर्मको भगवत्दर्शनसे विशेष बता-ताहै नारायणने कहा कि आरती होचुकी तो सुनतेही वह स्त्री भी तुर्त अपने पतिके जैसे मरगिरी तिसपीछे पुत्रआदि घर के लोग आये उनकी भी वही गतिहुई तब नारायण औ नारदजी उनका यह भक्ति प्रेम देखकर आगेचले औ विचरते २ उसीठौर आये संयोग वश भगवत् मंदिर खुलकर दूसरे समयकी आरती आरम्भ हुई और लोग शंख भांझकी धुनि सुनके दर्शनको दौड़े और वे लोग जो मरगयेथे उठकर आरती में जायमिले और भगवत्के दर्शनकरके बहुत हर्षित अपने घरकोचलेगये नारदजीने जो यह चरित्र देखा तो विश्वासयुक्त भये और उस लोक को भगवत्का पूजास्थान औ वैकुंठके समान माना ॥ इत्यष्टचत्वा-रिंशप्रदीपः ४८ ॥

अंतर्निष्ठराजाकादृष्टान्त ॥

भक्तोन्तर्हृदिध्यायेत्हरिंनतुबहिःपुनः ॥
यथाह्यंतर्ध्यायमानोराजाराज्ञासुसत्कृतः ४९ ॥

भक्त जो हैं वे मनकेभीतरहीहरिकाध्यानकरतेरहतेहैंकुछवाह-रकेदिखानेकोनहींजैसे एकराजाअंतर्निष्ठभगवत्काभजनमनहीं में करतेरहते जब महाभागवती उसकी रानीनेजाना तो अतिही अपनेको धन्यमाना। एकराजा अंतर्निष्ठ ऐसे परम भागवतहुये कि भगवत्कास्मरणभजनमनहींमें कियाकरते और बाहरकीवृत्ति ऐसी कि सबलोग इसेमहाविषयी औ संसारी जानतेथे और रानी हरिभक्तथी उसको भी राजाकी अंतर्निष्ठाका ज्ञान नहींथा इस

शोचमें रहाकरतीथी कि किसी प्रकारभी भगवत्‌में प्रीति नहीं। एकदिन निद्रामें राजाके मुखसे भगवत् नाम निकलगया तो रानीने उसीसमय नौवत बजवाई दान पुण्य बड़ा उत्साहकिया राजाने कारण पूछा तब रानीने बिनयकिया कि रातको आपके श्रीमुखसे भगवत्‌का नाम निकलगया इसीहेतु इसी से उत्साह किया राजाने कहा कि मूल प्राणका तो भगवत्‌नाम शरीर में था जो वहही निकलगया तो तन किसकामकाहै यह कह कर शरीर छोड़दिया तुरंत परमपदको पहुँचे रानीने यह गति गुप्त भक्तिभाव राजाका देखा, तो अपनी अज्ञानताके शोकसे विकल हुई और भगवत्‌में मनलगायके। जहांपतिगया तहाँही विराजमान हुई॥ इत्येकोनपंचाशत्प्रदीपः ४६॥

## वशिष्ठजीका इतिहास॥

(वशिष्ठजी) ब्रह्माजीके दशों पुत्रोंमें भगवद्भक्तऔ सबविद्याओंके आचार्यहुए ज्योतिष विद्या चिकित्सा औ सांगीत इत्यादिकोंमें संहिताउनकीबनाई विख्यातहैं नवीनजनोंने उनकी संहिता को प्रमाणकरके नई परिपाटी चलाई पर विशेष करके उनहीं का अधिकार धर्मशास्त्र भक्ति औ ज्ञानशास्त्रमें अधिकहै जिन्होंने अंतरिक्षमें निरालंबहोकर भगवत् भजन औ ध्यानकिया और फिर दूसरे ब्रह्मांडमेंजाकर वहांकी ब्राह्मणीकी सहायके निमित्त ब्रह्माजीसे प्रार्थनाकी और धर्मकी प्रवृत्तिके लिये प्रवर्तक यह विचारहै कि तीन स्वरूप धारणकरके एकतो ब्रह्मलोकमें दूसरा धर्मराजकी सभामें तीसरा सप्तऋषियों में ऐसे तीन स्थानों में रहतेहैं जिनके प्रतापको देखके राजा विश्वामित्रने अपनाराज्य छोड़कर भगवद्भक्तिको अंगीकारकिया और तितिक्षा ऐसीथीकि नंदिनी गऊके न देने औ कहने ब्रह्मऋषिके वैरके कारणसे विश्वामित्रने उनके सौ पुत्र एक राक्षससे वध करवादिये परन्तु सामर्थ होकर भी उन्होंने कुछ बदला न लिया। उनका वचन ब्रह्मा विष्णु महेश औ सारे जगत्‌को ऐसा स्वीकृतथा कि जब

विश्वामित्रजीने ब्राह्मणहोनेकेनिमित्त बहुतकाल तपकिया और उनके ब्राह्मणहोने का निश्चय वशिष्ठजीके वचनपरही था जब वशिष्ठजीने निजमुखसे ब्राह्मणकहा तब उनकी ब्राह्मणों में गणनाभई। भगवत्के चरणोंमेंऐसीप्रीतिथी कि ब्रह्माजीसे यहबात सुनी कि पूर्णब्रह्म सच्चिदानंदघनका सूर्यवंशमें अवतारहोगा तो बड़ीप्रसन्नतासे सूर्यवंशकी पुरोहिताई अंगीकारकी जब भगवत्का अवतारहुआ तो उन्हींके प्रेममें मग्नरहे इतिपंचाशत्प्रदीपः ५०॥

विश्वामित्रजीका इतिहास॥

(विश्वामित्रजी) पहिले क्षत्री राजा गाधि के पुत्र थे जब नन्दिनी गऊके हेतु वशिष्ठजी से प्रबलसेना हारगई और राजा से ब्राह्मणों का प्रताप और पदवी भगवद्भक्तिके कारणसे अधिक देखा तो राज्यछोड़कर भगवद्भजनमें लगे और कईलाख बर्षतक ऐसा घोर महातपः किया कि क्षत्री से ब्राह्मण होगये भगवद्भक्ति औ तपका ऐसा बल प्रताप रखतेथे कि दूसरा ब्रह्माण्ड उत्पन्न करदेवें सो एकबेर ब्रह्मा से क्रोध होकर नवीन ब्रह्माण्ड बनाने का विचार किया और कई प्रकार के बहुत लोग उत्पन्न किये फिर ब्रह्मा और देवताओं ने आकर बहुत विनयकिया तब रचना से शान्तभये जो वस्तु उत्पन्नकी सो अबतक वर्त्तमान है। और (त्रिशंकु) नाम अयोध्याके राजाको शरीर सहित स्वर्गको पहुंचाया जब इन्द्रने उसे धरतीपर गिराया तो उसने आकाश में से पुकारकरी तब विश्वामित्र जी ने निज तपोबलसे धरती पर न गिरनेदिया वह अबतक निराधारहै और इन्द्रको स्वर्ग से गिरानेकी इच्छाकी फिर देवताओं ने प्रार्थना करी तब दया करी इसप्रकारके कई चरित्र बिश्वामित्रजी के हैं और भगवत् के निष्काम भक्त औ धर्मशास्त्र के प्रवर्त्तक ऐसेथे कि एक बेर बहुत अकालपड़ा कुछभी भोगलगाने को न मिला बहुत दिन पीछे एक चाण्डाल से अभक्ष्य वस्तु मिली असमय में उसको भक्ष्यही समझकर लेआये औ स्नान संध्या करके चाहाथा कि

भगवत्के अर्पण औ पितृकर्म करके भोजनकरें परन्तु भगवत्को अपने भक्तोंको ऐसा दुष्ट भोजन खानेको देना अंगीकार न भया इसहेतु जब विश्वामित्र जी ने अर्पण करनेको भगवत्का ध्यान किया तो समाधि लगगई तो फिर भगवत् ने ऐसी दृष्टि करी कि सबबन औ खेत भांति२के पुष्प फलोंसे हरेहोगये और उस मांसकाभी कटहल बड़हलका वृक्षजमिआया जबसमाधिसे जगे तो दण्डवत् भगवत् स्तुति करके फलादिकसे क्षुधाको शांतकरी और श्रीरघुनन्दनस्वामी के चरण कमलों में जो प्रीति थी उस का वर्णन तो कब होसकाहै कि भक्तिभाव के वशहोकर उनके साथगये और आप उनकेयज्ञकी रक्षाकरके उन्हें कृतार्थकिया॥ इत्येक पंचाशत् प्रदीपः ५१ ॥

## भरतजी का इतिहास ॥

राजा ( भरत ) जो जड़भरत करके विख्यात हैं तिनकी कथा ऐसी प्रसिद्धहै कि सबकोई जानते हैं इससेसूक्ष्मकरके लिखी जाती है कि ये राजा थे संसारको अनित्य जानकर राज्य छोंड़ दिया बनमें गण्डकी नदीके तीर बसके भगवत् भजन करनेलगे तब एक हरिणके विरहसे प्राणत्यागे तो हरिणका तनपाया फिर वह तन त्यागकर ब्राह्मण शरीर मिला पर पूर्वजन्मका स्मरण बनारहा तो हरिणके स्नेह से दोबेर जन्म लेनापड़ा इससे महा विरक्त होकर भगवत् भजनमें लीनरहे औ किसी से कुछ न बोलते न उत्तर देते इसहेतु जड़भरत नामहुआ। एकबेर कोई भीलोंका राजा काली के बलिदानके निमित्त इन्हें पकड़के ले गया और तलवार मारनेका मन किया तो दुर्गाने वही तलवार लेकर उन दुष्टों का वध किया औ अपना अपराध क्षमाकराया एकबेर राजा रहूगणने अपनी पालकीमें लगाये तो चींटी बचा- यके चलने से पालकी उचके कहारों के साथ चाल न मिली तो राजा क्रोधकरके बोला कि ऐसी मोटाईपरभी अच्छे प्रकार क्यों नहीं चलता है क्या मुझको दण्डदाता नहीं पहिचानताहै

तब जड़भरतजी ने ऐसे २ उत्तरदिये, कि राजाको ज्ञानहोगया तो चरणों में गिरा औ अपराध क्षमाकराया तव दयाकर उन्हों ने ज्ञानोपदेश करकरके राजाको संसार से छुटाया॥ इति द्विपंचाशत्प्रदीपः ५२॥

ज्ञानदेवजीका दृष्टान्त॥

भक्तिज्ञानविहीनोयः शास्त्रभारवहःपशुः॥
महिषींपाठयामासवेदंज्ञानामरोयथा ५३

जो भक्ति औ ज्ञानसे रहितहै वह शास्त्र भारवाही पशुसमान है, अर्थात् वेद पढ़नेहीसे ज्ञान नहीं होता वेद तो पशुभी ज्ञानीजनोंकी कृपासे पढ़सक्ते हैं जैसे ज्ञानदेवजी ने एक भैंसको वेद पढ़ाया॥ वृत्तांत॥ (ज्ञानदेवजी) परम भागवत विख्यात हुये जिनके चेले नामदेवजी औ त्रिलोचनजी, सूर्य चन्द्रमाके सदृश हुये काव्य उनका सरस्वती औ गंगाजीकी भांति जगत्को पवित्र करताहै ज्ञानदेवजी के पिता घरको छोड़ किसी संन्यासीके पास गये और कहा कि हमारे घर स्त्री नहीं है संन्यासलेंगे यह कहके संन्यासी होगये फिर उनकी स्त्री भी पहुँची तो संन्यासी से झगड़ा करके उन्हें घरलेआई तब और ब्राह्मणों ने इन्हें जाति से बाहर करदिया कहा कि यह संन्यासी होगयाथा इससे अलग रहे इनके तीन पुत्रभये बड़ेबेटे जो ज्ञानदेवजी थे वे लड़काईहीं से श्रीकृष्ण महाराजके भक्त भये फिर वेद पढ़नेकोगये तो किसी ने भी इनको न पढ़ाया कि तुम जातिबाहरहो वेदके अधिकारी न रहे तो ज्ञानदेवजी ने कहा कि ब्राह्मणहोना कुछ वेदही पढ़ने पर सिद्धांत नहीं है यह तो पशुभी पढ़सक्ते हैं किंतु भगवत्का ज्ञान होना सबसे परेहै इसी वादपर एक भैंसको वेद पढ़ाना आरंभ किया फिर शाखा सहित वेद ब्राह्मणों को सुनाया तो वे सब आश्चर्य्यकर रहगये औ ऐसी दृढ़ भगवद्भक्ति देखकर चरणों में गिरे ज्ञानदेवजी ने उनको दयाकरके भगवद्भक्त किये॥ इतित्रिपंचाशत् प्रदीपः ५३॥

लड्डूस्वामीका दृष्टान्त॥

देवाऽपि भक्तेविश्वस्तेस्ववलिंत्यजतिक्षणात्॥
दुष्टान्खादतिहिप्रीतोदुष्फलंदुष्टकर्मणः ५४

देवताभी, विश्वासी भक्त के आगे निज बलिको त्यागदेते और उन बलि देनेवाले दुष्टोंको भक्षण करलेते हैं क्योंकि दुष्ट कर्मका खोटाही फल मिलताहै॥ दृष्टान्त॥ (लड्डूस्वामी) परम भागवत भगवत् रंग में रँगेहुये और सर्वत्र उसी भगवत् रूपको चिन्तनकरते दुःखसुखसे अलगहोकर जहां तहां विचरते संयोगबश ऐसे देशमेंपहुँचे जहां भगवद्भक्तिका लेशभीनथा और वहां के लोग दुर्गाके सन्नताके हेतु मनुष्यका बलिदानदेते थे तो लड्डूस्वामी को चिकना मोटादेखके कालीके हेतु लेगये सो भगवत् अपने भक्तों के सहायकेलिये सदा साथ रहते हैं तो वह प्रतिमा काली की फटगई औ दुर्गा भयंकर रूपसे प्रकटहुई और उन्हीं दुष्टोंका तरवारसे बधकिया औ भगवद्भक्ति का प्रताप दिखाने के हेतु सन्मुखहोकर नृत्यकिया औ चरणों में लोटगई यह विश्वास औ भक्ति भगवती की वहांके लोगोंने देखी तो आधीन हुए औ भगवद्भक्ति अंगीकारकरी इतिचतुःपंचाशत्तमःप्रदीपः५४

परशुरामजीका दृष्टान्त॥

कौपीनमात्रनिष्ठोहिसर्वभोगाल्लभेदिह॥
यथापरशुरामोहित्यक्तापितुमुहुर्विभो ५५

जो वैराग्यवान भक्त कौपीन मात्रहीकी बांछा रखतेहैं उन्हें सब भोग आपही से मिलजाते हैं जैसे परशुरामजी ने किसी के कहनेपर सब ऐश्वर्य्य त्याग भी दिया पर फिर सब प्रकार के भोग उनके पास आय पहुँचे॥ दृष्टान्त॥ (परशुराम जी) ने निजभक्ति के प्रतापसे जंगल देशके जंगली लोगों को ऐसे सतसंगी औ भगवद्भक्त कर दिये कि जैसे चन्दन के वृक्षकी सुगन्धिसे सारावन सुगंधित होजाताहै श्रीभट्टजी औ

हरिव्यास जी का जो परम्परा मार्ग था उसीपर चलते थे भगवत् कथा औ कीर्त्तन का ऐसा नियमथा कि हजारों को भगवद्भक्त करदिया माला तिलक आदिकी प्रवृत्ति चलाई और राजधानी में रहकर सब ऐश्वर्य प्राप्तथा पर उस संसारी वैभव से ऐसा वैराग्यथा कि तुच्छ जानते थे, उन्हींका दोह है॥

दो० मायासंगी न मनसगो सगो न यह संसार।
परशुराम या जीव को सगो सो सिरजनहार १

किसी साधुने जाकर परीक्षा के लिये उनसे कहा कि आपको भगवत् से प्रेमहै तो फिर इस वैभव से क्या कामहै अलग हो भजन करना चाहिये परशुरामजी अभिप्राय उस साधुका जान गये तो सर्व त्यागकर कौपीनबांध भगवद्भजन करनेलगे संयोग वश वहां एक वनजारा आय निकला तो बहुतसाधन औ राजसी सामान भेंट किया तब वह साधु अच्छी तरह जानगया कि परशुरामजी को कुछ भी चाहना वैभवकी नहीं है भगवत् कृपा से आपही सब पदार्थ पहुँचते हैं तब इनके चरणोंमें लज्जितहो गिरके प्रार्थनाकरी कि मैंने अज्ञतासे कहा मेरा अपराध क्षमा कीजिये आपका प्रताप जानलिया सत्यहो भगवत्भक्त जितना त्याग करते हैं उतनीहि उनके वृद्धिहोतीहै जो संसारी सुख के इच्छक जितना भगवद्भजनमें लगैंगे उतनाहीं वैभवसुख उनको मिलेगा औ भगवद्भक्ति मिलेगी इतिपंचपंचाशत्तमःप्रदीपः५५॥

## रांका बांकाका दृष्टान्त॥

दरिद्रिणोपिसद्भक्ता वाञ्छन्तिस्वन्नहिकिंचित्॥
राङ्काबांकेयथास्वर्णं मुद्राचाञ्छानचक्रतुः ५६

वैराग्यवान् सद्भक्त दरिद्री भी है ने पर द्रव्यकी वांछा नहीं करते हैं जैसे रांका बांका भक्तों ने भगवत्की दई मुहरोंपर दृष्टि भी न की। वृत्तांत। रांकाजी, परमवैराग्यवान् भगवद्भक्त हुये और (बांका) उनकी स्त्री वह उनसे भी अधिक भक्तथी।

पुर जहां नामदेवजीका घरहै तहांहीं उनकाघरथा जंगल से ल-
कड़ी लाते बेचकर गुजरानकरते दिनरात सिवाये भजनस्मरण
के और कुछ धन्धा नहींथा । एकदिन नामदेवजी ने भगवत् से
विनय किया कि बड़े शोचकी बातहै जो रांका बांका परमभक्त
खाली हाथों दिनकाटें भगवत्नेकहा कि कौन उपाय कियाजाय
वे धनको किसीप्रकारसे भी स्वीकार नहीं करते हैं सो लीलातुम
आंखों से देखलेओ यह कहकर नामदेवजीको अपनेसाथ वनमें
लेगये और जिसराहसे रांका बांका लकड़ी लेनेको जातेथे उसी
राहमें एकथैली मुहरों की डालदी रांकाजी की दृष्टि जो उसपर
पड़ी तो विचार किया कि स्त्री पीछे आती है ऐसा न हो कि उस
को इसद्रव्यका लोभ न होजावे इसहेतु उसपर धूलडालदई स्त्री
जो रांकाजी के पास पहुँची तो पूछा कि तुम धूलमें क्या देखते
थे तो रांकाजीनेसबवृत्तान्तकहा तब स्त्री बोली महाराज! धूल
में और मुहरोंमें क्याभेदहै औ धूलपर धूल डालना क्याप्रयोजन
था यह सुन रांकाजी बहुत प्रसन्नहुये अपनी स्त्रीका (बांका)
नाम धरा और कहा कि तेरे वैराग्यने मेरे वैराग्यपरभी धूलडाली
तब भगवत औ नामदेवजीनेकहा देखो दोनोंको कैसा वैराग्य
है फिर भगवत् औ नामदेवजीने भार लकड़ियोंका इकट्ठाकिया
तब रांका बांकाने उसे दूसरेका बटोरा समझकर हाथ न लगाया
और खाली हाथघरकोचलेआये और यह निश्चय किया कि आज
मुहरें दृष्टिमें आईथीं उसी अपसगुनसे लकड़ी भी हाथ न आई
जो उन मुहरों के हाथलगालेते तो न जानें क्या हाल होता तब
भगवत् ने उन बटोरीभई लकड़ियों को उनके घर पहुँचाई तो
रांकाजीने भगवत्का भेजा जानकर अंगीकारकिया पीछे भगवत्
ने दर्शनदेकर तिनदोनोंको संसारसेछुटाये ॥ इतिषट्पंचाशत्तमः
प्रदीपः ५६ ॥

॥ श्रीधरस्वामीका दृष्टान्त ॥

स्वीकरोतिप्रियंवस्तु ध्रुवम्प्रीतोहरिःस्वयम् ॥
श्रीधरेणकृताटीका हरिणास्वीकृतायथा ५७॥

निज प्रियवस्तुको प्रसन्नभये भगवान् आपही शीघ्र अंगीकार करलेते हैं। जैसे (श्रीधरस्वामीजी) ने (श्रीमद्भागवत) की टीका करी तिसेभगवत्‌ने आपस्वीकारकरी ॥दृष्टान्त॥(श्रीधरस्वामी) ने (श्रीमद्भागवत) की ऐसी टीका रचनाकी कि परम अमृत अर्थ भागवतका विन परिश्रम सबको प्राप्त होनेलगा दूसरे तिलककारों से तो द्वेष औ खैंच प्रकटहै अर्थात् जो कोई कर्मका उपासकथा तो उसने भक्ति औ ज्ञानके अर्थको भी कर्मकीओरही लगाया और जो भक्तिज्ञानके उपासकथे वे निजमार्गकोही दृढ़ करतेरहे किसीने मुख्य अर्थपर दृष्टि न की परन्तु श्रीधरस्वामी ने तो तीनोंकाण्ड अर्थात् ज्ञानकर्म औ उपासनाकाण्डकी रीति के अनुसार विना पक्षपात अर्थ लिखा और जैसा अर्थ जहां चाहिये अपने गुरु परमानन्दजीसे पूछकर वैसाही लिखा जब वह टीका रचना होचुकी तो काशीपुरीमें पण्डितों की सभाहुई तब दूसरे पण्डितों ने अपनी टीकाको रखदिया और सब पण्डित अपनी २ टीकाको श्रेष्ठ बतातेथे निदान सबकी सम्मति से यह बात ठहरी कि बिंदुमाधव महाराज जिसाटीकाको अंगीकारकरें उसीकी प्रवृत्ति कराईजाय फिर सब टीकाओं को मन्दिरमें रखवाय दिया फिर कुछ देरमें खोलकर देखा तो श्रीधरस्वामी की टीकापर दस्तखत मंजूरी मिले और सब नामंजूर हुये सब को विश्वासहुआ औ श्रीधरटीका सर्वत्र प्रचलित भई ॥ इतिसप्तपंचाशत्तमःप्रदीपः ५७ ॥ ॥ माधवदासजीका इतिहास ॥

भक्तस्यकार्याण्यखिलानिसाधयेत्प्रियःप्रभुर्नात्रकदापिसंशयः ॥ प्रीतोयथामाधवदाससेवके दध्नौसप्रयाक्तिमतःपरम्पुनः ५८ ॥

भक्त प्रिय भगवान् निजभक्तके सर्वकार्य सिद्धकरतेहैं इसमें इसविषयमें कदापि संदेह नहीं करना। जैसे माधवदासजीपर प्रसन्नभये भगवान् ने तिनकी सम्यक्प्रकारसे सेवा रक्षाकी इससे परे और क्या होगा। वृत्तान्त यह है कि (माधवदासजी) की भक्ति महिमा औ प्रताप वैराग्य तथा शांतिभाव का वर्णन कौन करसकताहै जिसप्रकारसे वेदव्यासजीने अवतारधारके वेदों के विभाग किये और पुराण बनाये तथा महाभारत औ सूत्र आदिकों को जगत् में प्रकटकिये फिर उनका सार अर्थ सूक्ष्मकरके श्रीमद्भावतमें लिखा और भगवद्भक्तिको प्रवृत्तकिया इसीप्रकार माधवदासजीने भी मानों वेदव्यासजीका अवतार धारके भगवद्भक्ति औ चरित्र तथा सबशास्त्रोंकासार निकालकर जगत् में विख्यात किया और भगवत्नाम औ लीलाका कीर्त्तन करके हज़ारोंको संसार समुद्रसे पारउतार श्रीजगन्नाथरायजीके परम उपासक औ वैराग्यवान् और ब्राह्मणोंके नायकहुये। येकान्यकुब्ज ब्राह्मणथे जब स्त्री उनकी मरगई तो विचारकिया कि यहसंसार आगमापाई है मनोरथथा कि लड़का लड़की होंगे उनका व्याह शादी करेंगे औ कुलकी वृद्धिहोगी अब भगवत् ने यह चरित्र दिखाया निश्चय यह संसार अनित्यहै और किसीका नहींहै यह शोचकर कि जो घरमें हैं इनकी चिंताकरना निपट अयोग्य है कि सबका आहार पहुँचानेवाला औ पालनकर्त्ता भगवत्हे जोकोई अपने अर्थ उपायकरै वह बुद्धिहीनहै ऐसा निश्चयकर सब संसारी सुखछोड़करके अलगहुये और श्रीजगन्नाथपुरीमें पहुँचकर भगवत् के दर्शन किये समुद्रके किनारे जाकर बैठरहे और मन जो भगवत् के रूपअनूपमें दृढ़लगगयाथा इसहेतु भोजन की सामग्री के न मिलनेसे विकल न हुये तीन दिन बीते कुछ न खाया और भगवत्कानाम लेते एकजगह बैठेरहे तब भगवत् ने शोचा कि हमारेवास्ते नित्य हजारोंमन व्यंजन अतिमधुर भोग लगै और हाय २ हमारे भक्तको तीनदिनसे एकदाना भी नहीं

मिलाहै इसीचिंता में भगवत् विकलहुये और झटही अपने महाप्रसादका स्वर्णथाल लक्ष्मीजी के हाथ भेजा लक्ष्मी महाराणी भोजनलेके चलीं और विचार किया कि पिता तो बालकके पालन से सुचित्त रहताहै परन्तु ऐसी माता कोई नहीं जो सयजने बालकका पालन न करै तैसेही माधवदास भक्तिके घर जन्मा बालकहै उसकी सुधि न लीगई तो बड़ी लज्जाकी बातहै इस हेतु लक्ष्मीजी अति शीघ्रतासे माधवदासजी के पास पहुँचीं तब माधवदासजी को झनझनाहट पायजेबका औ प्रकाश मुखका प्रतीत हुआ परन्तु भगवत् ध्यानमें मग्नथे इससे आँख न खोलीं लक्ष्मी जी थाल रखकर चलीगईं जब माधवदासजी नें थाल देखा तो आनन्दित होकर भोग लगाया भोजनकरके अपने भाग्यको सराहा और सुवर्ण के थाल को पनवाड़े की भाँति एक ओर डालदिया फिर मंदिरके पुजारी लोग ढूंढते २ वहां पहुँचे तो माधवदासके बेंतमारी चलेआये तो वह चोट बेंतकी भगवत् ने निज शरीर ओटलई और पुजारियों को वह चोट जनाकर आज्ञाकी कि वह थाल महाप्रसादका हमने माधवदास जी के लिये भेजाथा उनको जो बिना अपराध दण्डदिया वह हमको हुआ हम बहुत क्रोधमें हैं तब तो सबपुजारी भयसे अति व्याकुलहो माधवदासजी के पास जाकर प्रार्थना औ बिनयकरके अपराध क्षमा कराया यह वृत्तांत सब संसारमें विख्यात होगया और भगवत्के भक्तजन तिनकी कृपालुताको सुनकर हर्षसे शरीरमें न समाये। माधवदासजी को भगवत् स्वरूपमें ऐसा प्रेम औ स्नेहथा कि देखते २ मंदिरमें बेसुधि होरहजाते थे और जब पुजारी मंदिर बंदकरते थे तो वे भगवत् इच्छासे उनको दिखाई नहीं पड़ते एक रात शरदी की ऋतुमें माधवदासजी को शीत लगा तो भगवत्ने पुजारियोंको आज्ञाकी कि हमको ठंढलगी तब पुजारी तुरंत भांति २ की रजाइयांलाये तो भगवत्ने निजओढ़ने की रजाई औ बनात माधवदासजीकोदी तब ठंढ हटगई। एक

बेर माधवदासजी के पेटमें मुरोका रोगहुआ तो अतिसारहोने से समुद्रपर जापड़े जब पानीलेने शौच करनेकी भी सामर्थ्य नरही तो आप भगवत् आये औ उनके शरीरको धोया औ शुद्ध किया तब तो माधवदासजी ने शोचा कि यह कौनहै जो ऐसी सेवाकरता है फिर ध्यानकर विचारा तो जानलिया कि आप भगवतहैं तब हाथजोड़के वारंवार प्रार्थनाकी कि ऐसा परिश्रम कब उचितहै सेवककी सेवकतामें भंगआवे और स्वामीका बड़प्पन घटै तब भगवत्ने कहा कि मेरे भक्तको दुःखहोताहै तब रहानहीं जाता आप चलाआताहूं तब माधवदासजीने विनयकिया कि रोगकोही दूर करदेते तो ऐसा परिश्रम नहीं होता भगवत्ने कहा कि रोग का होना प्रारब्धके आधीनहै सो प्रारब्धका भोग दूर नहीं करते क्योंकि कर्मपद्धतिसे विरुद्ध पड़ताहै और जबमेरेभक्त बिनाकष्टही उन प्रारब्ध कर्मको भोगलेते हैं तो फिर उनके ध्वंसकरनेका क्या प्रयोजनहै फिर यह रीति दिखाकर वह रोग भी दूरकरदियाइस हेतु कि किसी साधुका भक्ति विश्वास न छूटजाय। जब यह चरित्र माधवदासजी का विख्यातहुआ तो हजारों आदमीकी भीड़ रहनेलगी तब माधवदासजी ने अपनी सिद्धताका विश्वास औ भीड़के दूरकरने के लिये भिक्षा मांगनालेलिया एकके द्वारपैगये स्त्री चौका देतीथी तो उसने शब्दसुनतेही वह पोतनेका कपड़ा क्रोधमें आकर माधवदासजी के शिरसे मारा माधवदासजी को उसपर दयाआई तो हँसकर वह कपड़ाउठालिया औ उसे पानी से धोकर शुद्धकिया और उसकी बत्तीबनाकर जगन्नाथजीके मंदिरमें दीपक बारदिया तो उसका यह प्रतापहुआ कि भगवत्के मंदिरमें औ उस स्त्रीके हृदय में बराबर प्रकाश होगया उसस्त्रीको तुरंत भक्ति उत्पन्नभई दूसरे दिन माधवदासजीगये तो झटदौड़ के चरणों में गिरी ऐसी दयालुताका वर्णन किससेहो एकपंडित सब देशोंके पंडितों को शास्त्रार्थ औ चर्चा में जीतताहुआपुरुषोत्तमपुरीमेंआयाऔमाधवदासजी से कहनेलगा कि मेरेसाथ चर्चाकरो

माधवदासजी ने चर्चानकी औ कागजपर लिखदिया कि माधव दासजी हारा तब वह परिडत काशी जी में गया और अपनी बड़ाई औ पांडित्य दिखाकर कहा कि मैं माधवदासको जीतकर आयाहूं जब वह पत्र परिडतों की सभामें धरा तो उसमें लोगों ने लिखादेखा कि माधवदास जीता औ परिडत हारा फिर वह जगन्नाथपुरी में आया और माधवदासजी को क्रोध से अनेक दुर्वचन कहकर बखेड़ा करनेलगा तब माधवदासजी बोले भाई तुमकहो सो फिर लिखदेवें तब परिडत ने कहा तू बड़ाधूर्त है तुझे गदहेपर चढ़ाय काला मुहँकरके चारोंओर फिराऊंगा यह सुन माधवदासजी तो चुपहोरहे और वह परिडत स्नान करने को चलागया तभी भगवत् परिडत का रूपधर के उसके पास पहुंचे औ चर्चा करके उस पंडित को जीत लिया और उसको गदहेपर चढ़ाकर औ सौ‌ढोसौ बालक पीछे लगाकर और आप भी लड़केके रूपसे उसके साथहोकरके उस पंडित की खूबही धूलउड़ाई संयोगवश माधवदासजी भी उसी ओर आगये और भगवत् से विनती की कि ऐसे पंडितको बेमर्य्याद और मान भञ्जन करना कौन उचित था भगवत्ने कहा बहुतही उचित औ प्रयोजन था कि यह मूर्ख मेरे भक्तको गदहेपर चढ़ाकर मुझसे छेड़करता था तब माधवदासजीने आप उसको गदहेपर से उतारा औ आपही अपना अपराध क्षमाकरानेलगे पंडित बहुतही लाचार होगया एकबेर माधवदासजीके मनमें आया कि पुरुषोत्तमपुरी में ब्रजके चरित्र बहुत कीर्तन हुआकरतेहैं इससे ब्रजका दर्शन करना चाहिये सो चले राहमें एकबाई भगवद्भक्त इनको भोजन कराने लगई जब भगवत् का भोग लगाया तो जगन्नाथ रायजी आये और माधवदासजी भोजन करनेलगे तो वह बाई भगवत् का सुकुमार अंग देखकर रोनेलगी माधवदास जीने कारण पूछा तो कहा कि यहलड़का जो तुम साथलायेहो परम सुकुमारहै इसके माता पिता कैसे जीतेरहेहोंगे जब माधव

दासजी ने गर्दन फेरकेदेखा तो स्वामी हैं देखतेही प्रेममें मग्न हो बेसुधि होगये फिर उस बाईका बोधकरके आगेकोचले किसी और गांव में एकवैश्य हरिभक्त रहताथा उसे माधवदासजी ने वचन दियाथा कि हम तेरेघरमेंआवेंगे सो उसकेघरगये वहकिसी कामको गयाथा उसकीस्त्री आय चरणोंमें गिरी, एकमहन्त उस की अटारीपर रोटी करताथा स्त्रीने उस महन्तसे कहा कि एक हरिभक्त आगयेहैं वेभी आपकेसाथमें प्रसाद पालेवेंगे महन्तने क्रोधकरके उत्तरदिया कि यहांकिसी औरकी रसोई नहीं होसक्ती तब लाचारहो, उसस्त्रीने विनयकिया कि सामग्री तय्यारहै आप रसोई बनालेवें माधवदासजी बोले और नहीं बनासक्ते कुछभोजनकी वस्तु तैयारहो सो लेआव वह गरमदूध लेआई भोगलगा कर चलदिये औ कहगये कि अपने पतिसे कहदेना माधवदास जगन्नाथीआयेथे। फिर वे थोड़ीहीदूरपहुंचे कि वहवैश्यभी आगया और वृत्तांत उनके आनेका स्त्रीसे सुनकर दौड़ा जाकर अत्यन्त प्रेमसे चरणपकड़ लिये और घर पधारको बहुतही बिनय किया माधवदासजीने उससे कहा कि तेरेघर स्त्री ऐसी बड़भागिनी है कि बर्णन नहीं होसकता अब तेरे उद्धारमें क्या संदेहहै तब तो वह महन्तभी माधवदासजीका नामसुनकर महाजनके साथ आयाथा हाथ जोड़ अपराध क्षमा करानेलगा और शिक्षाचाही माधवदासजीने कहा कि हरिद्वार में जाकर भगवत् भक्तों की शीतप्रसादी सेवनकरो तबकुछ ठिकाना लगजायगा वहांसे महाजन महन्तको बिदाकरके वृन्दावनमें आये श्रीवृन्दावन औ वृन्दावनचन्द्रके दर्शनकरके परम आनन्द में मग्न होगये बांके-बिहारीजीके मन्दिर में दर्शनकरने गये थे वहां चने मिले और द्वारपालोंने कहाभी कि अब भगवत् रसोई भोगलगजाताहै तब प्रसाद मिलेगा परन्तु चनेहीं से क्षुधाकी शांति समझकर यमुनाजीपर आये और भगवत्अर्पण करके भोगलगाया जबमंदिर में रसोई तैयार भई, और पूजारी नाना विधि मधुर व्यञ्जन,

भगवत् के भोग के लिये लाये तो भगवत्ने अंगीकार न किया औ आज्ञा भई कि माधवदासजीने हमको चना भोग लगाया इससे अब कुछ चाहना नहीं रही तब पुजारी औ गोसाईं लोग दौड़ेगये औ माधवदास जीको ढूंढ़ करलेआये तबभगवत्ने भी भोग अंगीकार किया श्रीवृन्दावनकेदर्शन करके व्रजभूमिके दर्शन को गये वहां भांडीरबनमें ( खेम ) नामी साधु रहताथा उसके स्थानपर टिकनेका विचार किया तो उसने टिकने न दिये और कठोरताई बहुतकरी माधवदासजी अलग कहींजाय ठहरे जबउस साधुने अपने लिये तसमई तैयारकी और खानेको बैठेतोउसमें बहुतसे कृमिपड़गये तब लाचारहोकर आया और माधवदासजी के चरणोंमें गिरा तब माधवदासजीने अपराध क्षमाकिया औहरि भक्तिकी शिक्षाकी फिर हरियाने गांवमें पहुँचे वहां एकठौर बै-रागियोंके स्थानमें साधुसेवा हुआकरतीहै और गऊबहुत रहती हैं वहां कथा भागवतकी होतीथी भगवत् चरित्र सुनने को कुछ दिन वहां टिकरहे और टहलवहांकी अपने अंगसे यह उठाली कि गोबर इकट्ठाकरके उपले थापदेते दैवयोग एक साधुआया वहइनको पहिचानकर चरणोंमें गिरा जबवहांके महन्त आदि-कोंने भी माधवदासजी को जानातो सबचरणों में पड़े और बहुत विनयकर अपराध क्षमाकराया कुछ दिन वहां रहे और चलतीबेर ऐसावर देगये कि अबतक उनकास्थान पूर्ववत् बना रहताहै और वहां साधुसेवा होतीहै फिरतीबेर अपनेघरभी गये और माताआदिको भगवद्भक्ति उपदेश देकरके चलेआये जब उसमहाजन के गांवके निकटपहुंचे तबस्वप्नमें अपनेआनेसे उसे जनादिया कितो वहआया औ दर्शनकिये वहां से पुरुषोत्तमपुरी कोचले औ भगवत्केदरबारमें पहुंचकर भगवत्सेवा भजनमेंलगे चरित्रबहुतहै कुछलिखागया॥ इत्यष्टपंचाशत्तमःप्रदीपः ५८ ॥

नारायणदासजीकादृष्टान्त ॥

भक्तिःप्रायोजायतेहि खिन्नस्यपरवाक्यतः ॥
अल्हवेषस्यभक्तस्य भक्तिरासीद्यथाहरौ ५९

पराये वाक्यसे खिन्न-दुःखीहोने अर्थात् किसी के उलाहना देनेसे भी भक्तिउत्पन्नहोती है जैसे अल्हवेषधारी नारायणदास जीको भाभीके कहनेसे भक्तिभई (दृष्टान्त) जैसे नारायणदास जी जाति चारन अल्हभक्तके वेषमें भागवत औ वैराग्यवान्भये उनका बड़ाभाई तो कमानेवालाथा और नारायणदासजी लुटा-नेवालेथे एकबेर भाभीने भोजन ठंढा खानेको दिया इन्होंने न खाया गरममांगा तब भाभीने बोली मारी कि क्यातू अपनेबाबा अल्हजीके जैसा भक्तहै जो तुम्हारी आज्ञा उठायाकरें वहबोली नारायणदासजीको लगगई कि भगवद्भक्तिसे विमुखहोकेजीना पशुसमानहै मनुष्यदेह केवल भगवद्भक्ति के अर्थहै संसारीसुख केहेतु नहींहै इससे भगवद्भक्ति सारहै और यहसंसार अनित्यहै यहसमझकर संसारको त्यागदिया द्वारकामें जाकर ऐसी सेवा भजनमेंलगे कि भगवान् भक्तिसे वशहोकर जोकृपा उनके बाबा अल्हजीपर कीथी वैसेही उनपरकरी साक्षात् प्रकटहो दर्शनदेते भये ॥ इत्येकोनषष्टिप्रदीपः ५९ ॥

जीवगोसाईंजी का इतिहास ॥

इस कलियुगमें रूपसनातनजी तो भक्तिके जलसमानहुये और (जीवगोसाईं) महाराज मानसरोवरके सदृश औ भजन उस मानसरोवर के घाटके समानहै और भक्तकी दृढ़ता फूले कमल के सदृशहै कलियुग के प्रपं[illegible] निकट न पहुंची और जो भगवद्भक्त [illegible] परम आनंददेनेवाले हुये जिन्हों ने [illegible] प्रियतम महाराजकी सेवा औ भजन में मनलगाया और जगत् के उद्धार निमित्त सबशास्त्र औ पुराणआदि इकट्ठेकरके उनका

जो सार अभिप्राय था उसको अच्छे समझकर ऐसी भगवद्भक्ति को प्रकटकिया कि करोड़ों संसार समुद्र के पारहोगये और शोक संदेह के नाशक ऐसेहुये कि सूर्यरूप और मेघ के समान सबके उपकारकहुये माधुर्य भावसे भगवत् की उपासना करते थे रासलीला औ विहारलीला के तत्त्वको जानते थे उसी को मुख्यसमझते थे रूपसनातनजी के भतीजे थे धन ऐश्वर्य बड़ारहा तो सबको असार औ अनित्य समझकर त्यागदिया श्रीवृन्दाबन में आये धोती औ चादर रेशमी बड़े मोल की शरीर परथी रूप सनातनजी ने मुलाकातके समय हँसकर कहा कि नामतो वैरागी औ पोशाक यह तब जीव गोसाईंजी ने उसको भी त्याग दिया और गांवसे अलग यमुना किनारे कुटी बनाकर भगवद्भजनमें लगे एकदिन गोसाईं रूपजी उस ओर जानिकले तो ब्रजवासियों ने कहा कि हमारे गोसाईंजी के दर्शनकरो तब रूपजी आये औ जीव गोसाईंजी की मग्नदशा देखकर अति प्रसन्नभये औ छातीसेलगायेरहे फिर अपनेपास टिकाकर सबशास्त्रसिखाया और रसग्रंथ तथा भगवत्चरित्र के गोप्यलक्ष्य उनको सब समझाये फिर जीवगोसाईंजीने उन्हें सबसंसार में प्रवृत्त किये फिर अकबरबादशाह ने गंगा वा यमुना माहात्म्य के निर्णय करने को बुलाया तो इनको ब्रजभूमिछोड़ रात्रिको और ठौर नहीं रहनेका नियमथा इसहेतु वादशाह ने डाककेअनुसार एक प्रहरमें उलटाय पहुंचानेका बाचा प्रबंधकिया सो आगरेमें आये और ऐसे सुष्टुवादसे यमुनाजीकी बड़ाईकोठहराया कि किसीको कुछ अनुवादकी जगह न रही अर्थात् यह सिद्धांत दिखाकर बोले कि अल्प विचारकेवास्ते वृथा हमको बुलाया कोई पुराण देखलिया होता कि पुराणमें गंगाजीको जिनविष्णुजीका चरणामृत लिखाहै यमुनाजी उन्हींकी पटरानी हैं तो विचारकरलेना चाहिये कि बड़ाई किसकीहुई इसउत्तरसे किसीको किसी बातका सन्देह न होय यहउपासना औ सिद्धातकी परम पक्कताहै जिन

और जिस किसी को जैसा विश्वासहै उसको वह देवता वैसाही फल देताहै बादशाह गोसाईंजी के निर्णयको सुनकर बहुत प्रसन्नहुआ औ विनयकिया कि कुछ सेवाकी आज्ञाहोय गोसाईं जी बोले कुछ इच्छा नहीं है जब बहुतही कहा तो आज्ञाकी कि सब शास्त्र औ स्मृति पुराण आदि काशीजी से मँगवाकर वृन्दावनमें इकट्ठे करवादेओ तो बादशाहने थोड़ेही समयमें आज्ञा गोसाईंजी की पूर्णकी कि अबतक स्मृति पुराण आदि वृन्दावन में विराजमानहैं गोसाईंजीने जिसप्रकार गोविन्ददेवजीका मंदिर (मानसिंह) अजमेरके राजासे बनवाया कि वर्णन नहीं होसक्ता फिर अकबर बादशाह वृन्दावन में आया गोसाईंजी के दर्शन किये और चलते समय विनय किया कि व्रजमें मकान पक्के बनवाने की आज्ञाहोवे गोसाईंजी बोले कुछ प्रयोजन नहीं उसने बहुतही हठ किया तब गोसाईंजीने कहा कि हृदयकी आँखों से श्रीवृन्दावनकी सजावट को देखना चाहिये बादशाह ने आँखें बन्दकरकेदेखा तो धरती औ वृन्दावन के कुंजनिकुंज सबस्वर्ण के रत्नजटित देखपड़े तब आधीनहो बिदाहुये और रीतिगोसाईं जी की ऐसीथी कि जो कोई कुछ भी भेंट पूजा लेजाता था सो श्रीयमुनाजी में डालदेते थे अपनेपास कुछ नहीं रखतेथे सेवक लोगोंने हाथजोड़कर विनय किया कि किसलिये यमुनाजी मे डाला करतेहो अच्छाहै जो साधुसेवा हुआकरे तो कहा कि साधु सेवा करनेवाला कोई देखने में आता नहीं है एक चेला बोला कि जो आज्ञाहो सो कियाकरें तब गोसाईंजीने आज्ञाकी तो वह साधुसेवा करनेलगा। एकसाधुने रातके समयआय भोजनमांगा वह सेवक टहलकरनेके परिश्रमसेथकाहुआ रिसकरकेबोला कि इससमय भोजन कहांहै प्रभातको मिलेगा जो बड़ीही भूख है तो मुझको खालेव गोसाईंजी सुनकर बोले कि इसी श्रद्धापर साधुसेवा स्वीकार करीथी कि उन्हें आदमी खोरा बताताहै फिर पीछे हरिभक्तोंका माहात्म्य और उनकी बड़ाई औ सेवाकाफल

समझायां फिर आप श्रीगोविंददेवजी की सेवापूजामें गोसाईंरूप जीकी आज्ञासे रहतेथे बहुतकालतक बड़ीप्रीति औ स्नेहसेसेवा की जब एकशिष्यकी भगवद्भक्ति औ प्रेमकी सबप्रकारसे परीक्षा करली तबभगवत्सेवा उसको सौंपकर आपश्रीवृन्दावनकी लता औ कुंज यमुनातटके वन इत्यादि में मनन औ ध्यानसे बेसुधि औ निमग्न रहनेलगे॥ इतिषष्टिप्रदीपः ६० ॥

सुरसुरीजीका दृष्टान्त॥

भक्तंरक्षतिकेनापि वेषतः सेवितःकृष्ण ॥
ध्यातःसुरसुर्य्यासौ व्याघ्रोभूत्वारक्षताम् ६१

सेवा किये भगवान् निज भक्तकी किसी भेष से भी रक्षा करते हैं जैसे येही भगवान् सुरसुरीजी करके ध्याये गये तो तिन्होंने व्याघ्र रूप होकर तिनकी रक्षा करी वृत्तान्त यह है कि सुरसुरीजी परमसती ऐसी भगवद्भक्ताहुई कि जिसका सतरख-नेकेलिये भगवान् आप स्वरूप धारण करके आये ये सब धन सम्पत्ति को अनित्य और संसारको असार समझकर घर त्याग करके और अपने पति (सुरासुरानन्द जी) के साथ वृन्दावन मे आयके भगवत् भजन मे लगी रूप अतिसुन्दरथा उनकी कुटीके पास मुसल्मानों का डेरा आनपड़ा उनका सरदार सुरसुरी जी के रूपको देखके आसक्तहुआ तो अपने सेवकों को पकड़लाने की आज्ञाकी तो सुरसुरीजीने धनुषधारी का ध्यान किया तब भगवान् ने तुर्तही व्याघ्र के रूपसे प्रकटहोकर कि तरकस से तीर निकालते धनुष चढ़ाते देरहोगी इस से व्याघ्ररूप हो सब दुष्टोंको बिदारा कितनो को मारडाला कितनोको घायलकिया व्याघ्ररूप से इस हेतु प्रकटभये कि व्याघ्रके सबअंग शस्त्ररूप हैं इस से उस रूपकर दुष्टोंके दलको मारतेहुये ॥ इत्येकाधिकषष्टितमः प्रदीपः ६१ ॥

हरिवंशकी कथा॥

भगवत् का वचन है कि जे निष्किंचन मेरा भजन करते हैं

उनको मैं शीघ्रमिलता हूं इस वचनपर हरिवंशजीको दृढ़वि-श्वास था जैसे किसी घसियारेने जिसके पास केवल खुरपी जालीही था उसे गंगास्नान के समय दान करदिया तैसेही ये भी सर्ववस्तु त्यागकर भगवद्भजन में लगे ॥ इति द्वयधिकषष्टितमः प्रदीपः ६२ ॥

हनुमान् जी का दृष्टान्त ॥

## वायुसूनुर्महाभक्तो भक्तश्रेण्याःशिरोमणिः ॥
## रामनामांकितवपुः श्रद्धालुरभवद् दृढम् ६३

वायुके पुत्र ( हनुमान् जी ) भक्तशिरोमणि महाभक्त अति श्रद्धावान् भये । जिनके रोम २ में रामनाम अंकितथा । वृत्तांत श्रीहनुमान् जी का भक्तिभाव औ कथाचरित्र ऐसे पवित्र हैं कि आप रघुनन्दन स्वामी जिन्हें सुनकर प्रसन्नहोतेहैं श्रीरघुनन्दने स्वामी के जो संसार समुद्र से तिरानेवाले नौकारूप चरित्र हैं उनके प्रवर्तक श्रीहनुमान्जी हुये इनकी महिमा किससे वर्णन होसके कि सब ब्रह्माण्ड तिनकी सेवाको धन्य २ कहता है । सीता महारानी को तो भगवत्का संदेश और रावणके वधहोने की भविष्य वार्ता सुनाकर फिर रघुनन्दन स्वामी के पास जाय समाचार सुनाये लक्ष्मणजी के लिये संजीविनी लाये उनका प्राण बचाया फिर भरत शत्रुघ्न और अयोध्यावासियों को भग-वत् के आगमन का शुभसमाचार सुनाकर उपकार किया और भगवत् चरित्रों को सर्वत्र विख्यातकर संसारीजीवों को परम पद के अधिकारी किये और गान विद्या शस्त्र विद्या व्याकरण औ साहित्य शास्त्र में विशेषकरके आचार्य्यत्व हनुमान्जी का हीहै शिवजी के अंशहैं केवल रघुनन्दन स्वामीकी सेवा के लिये अवतार लिया है भगवत् ने इनकी सेवाकी बड़ाई की और सर्व काल भगवत् की सेवा में प्राप्तरहे । भगवत् नाम से ऐसा विश्वासथा कि जब श्रीरामचन्द्रजी लंकाजीतकर आये तो विभीषण ने एक मणिमय माला अद्वितीय जैसी और नहीं

तैसी समुद्र से लेकर भगवत् के लिये अर्पणकी जिस समय रघुनन्दन महाराज राजसिंहासन पर विराजमानहुये तो उस मालाको भगवान् ने निजमन में विचारा कि माला एक और इसके लेनेवाले अनेकहैं तो ऐसे किसी को देनी चाहिये जिसे चाहना न हो सो हनुमान्जी के गलेमें डालदी उन्होंने देखा तो विचारकिया कि प्रकटदेखने में तो कोईबात भगवद्भक्ति की इस मालामें दिखाइ पड़ती नहीं क्या जाने भीतर कोई बातहो इस हेतु एक नगको तोड़ा और उसे देखा जब भगवत्नाम उसमें न पाया तो दूसरातोड़ा तबभी जो नाम न पाया तो तीसरेको तोड़ा इसी प्रकार बहुतनग तोड़डाले ज्यों २ दाने तोड़ते त्यों २ चाहने वालों का मन टूटताथा और वे मनमें रिसकरके कहते थे कि कैसे बेशहूरको यह अमोल मालादेदी कि जो मोल परख को नहीं जानता निदान एक किसी से नहीं रहागया तो हनुमान्जी से बोला कि किसलिये ऐसी दुर्लभ माला के नगों को तोड़डालतेहो तो हनुमान्जी ने कहा कि इस मालाके नगों में राम-नाम, देखताहूं उसने कहा कि महाराज कहीं ऐसीवस्तुओं के भीतरभी रामनाम होता है तब हनुमान्जी ने कहा कि जो इसके भीतर रामनामही नहीं तो यह किसकामकीहै वह कहने लगा कि जो आपके विश्वास का ऐसा वृत्तांत है तो आपके भीतरभी रामनाम होनाचाहिये हनुमान्जी बोले सत्यही होना चाहिये यहकहके अपने छाती का चर्म उखाड़ के दिखाया तो सब रोम२ में रामनाम लिखाथा देखतेही सबको हनुमान्जीकी भक्तिके विश्वासका निश्चयहुआ ॥ इतित्रिषष्टितमःप्रदीपः६३॥

नरहरिआनन्दका दृष्टांत ॥

दृढभक्तकृतांहानिं देवोऽपिसहतेनिजाम् ॥
यथानरहर्य्यानन्दो दुर्गाकाष्ठंसमानयत् ६४ ॥

देवता सच्चेभक्त करके करीभई निजहानिको भी सहलेतेहैं

जैसे नरहरि आनन्दजी दुर्गा मन्दिरसे काष्ठ उठालाये ॥ वृत्तांत ॥ नरहर्यानन्दजी ऐसे परमभक्त हुये कि सिवाय भगवत् भजनके कुछभी काम न था और सदा भगवत् सेवा सामाकी तैयारी ही में रहते थे एकदिन भगवत् रसोई का चौका आदि बनाकर भगवत् प्रसाद तैयार करनेलगे घरमें ईंधन नहीं था और पानी बड़े धूमधाम से वर्षता था इसहेतु बाजारमें भी लकड़ी न मिली और भगवत् सेवा सर्वोपरि है देवताभी इससे प्रसन्न हैं अब रसोई में बिलम्ब करना उचित नहीं यह समझकर दुर्गा का मन्दिर निकट था वहांगये औ छत उतारनेलगे तो ( दुर्गामहारानी ) इस भगवत् सेवाके दृढ़ बिश्वासपर प्रसन्नहुईं और नरहरि आनन्दजी से कहा कि मन्दिर न फोड़ो तोड़ो लकड़ी तुम्हारे घर पहुंचतीरहेंगी नरहरि आनन्दजी फिरिआये औ प्रयोजन भरेको नित्य लकड़ी पहुंचती रहीं एक पड़ोसन ने इसभेद को जाना और अपने पुरुषसे कहा कि नरहरिआनन्दजी ने दुर्गाको प्रसन्नकरके नित्य लकड़ी पहुंचाना ठहरालिया है तुमभी तैसा हीकरो तो नित्य लकड़ी आ पहुंचाकरें तो वह निर्बुद्धिजन दुर्गा मन्दिर पै पहुंच मन्दिर पै जैसे फावड़ा मारनेलगा तैसेही दुर्गा महारानी ने शिर नीचे पैर ऊपर करके लटकाय दिया जबमरनेलगा तो पुकारा कि हे दुर्गाजी अबके प्राणबचाओ फिर ऐसा अपराध न होगा दुर्गाने कहा जो मेरे बदले नरहरिआनन्द के घर लकड़ी पहुंचाय दियाकरे तो प्राण तेरेबचें तब उसने दुर्गा जीकी आज्ञा स्वीकार करी श्रीदुर्गा के शिरसे बेगारछूटी भगवत् सेवाकी महिमा जो कुछ बर्णन होसके सो थोड़ीहै समस्त तो शेष शारदा से भी नहीं कहीजाती ॥ इति चतुष्पष्टितमः प्रदीपः ६४ ॥

प्रेमनिधिका दृष्टांत ॥

हरिःसेवावशीभूतो भक्तदुःखंव्यपोहति ॥
यथाप्रेमनिधेर्म्म्रे मत प्रज्वाल्यदीपिकाम् ६५ ॥

सेवावशभये भगवान्, निजभक्तके दुःखको दूरकरते हैं जैसे भगवान् प्रेमनिधि के आगे मशाललेकर चले। (प्रेमनिधिजी) जाति के चारण, रहनेवाले आगरे के ऐसे मधुर वचन से जगत् को आनन्द देनेवाले हुये कि वर्णन नहीं होता गृहस्थी होकर किसीकाम में वद्ध नहीं थे भगवत् भक्तों के सत्संगके नेमी औ दयालुहुये सदा चारघड़ी रात रहे उठके भगवत् सेवामें लगते भगवत्के लिये यमुनाजल अपने शिरपर धरके लेआया करते एकवेर वर्षासमय राहमें कीच वहुतथी चितामें लगे कि प्रभात हुये राहमें लोगोंकी भीड़ होगी किसी नीचसे जल छू न जाय और रातको जायँ तो कहीं अँधेरे में गिर न पड़ें घट फूट न जाय निदान नीचकास्पर्श अयोग्य विचारकर पानीवर्षते उसी अँधेरी में कलशको लेके चले जैसेही द्वारसे वाहर पगदिया तैसेही भक्तवत्सल करुणाकर महाराज उनकी सेवासे प्रसन्नभये वारह वर्षके लड़के के स्वरूपसे मशाल लेकर प्रेमनिधिजी के आगे २ होलिये। प्रेमनिधिजी ने जो रूप माधुरी उस मशालची (मन मोहनकी) हरारंग आंखें रसीली घूँघरवाली अलकें लालचीरा बांधे कमर मशालचियोंकी नाईं कसेहुये औ हाथमें मशालदेखी तो भीतर वाहर सव प्रकाशित होगया तो आसक्त और मोहित [illegible] लिया कि यह अपने स्वामी को [illegible] देखने की आशाकरके जिधरको वह चलाजाताथा उधरही को आपभी जातेथे। फिर यमुनाजी पर पहुँच प्रेमनिधिजी स्नानकर कलश जलका शिरपर धरकर-के उसीतरह चले घरआये तो कलश मन्दिरमें रखकर तुर्त उस मशालची को ढूँढनेलगे कहीं पता न लगा तव जानगये कि ऐसे रूप वाला सिवाय उस व्रजकिशोर चित्तचोर के और कौनहै जो एकही निगाहमें अपनादास वनालेवे और दासकी भीड़पर निज ईश्वरताको छोड़ सीधा सादावनके आन पहुँचे ऐसे समझकर भगवत्सेवा में लगे जव भगवत्सेवा से छुट्टी पाते तो भगवत्का

कीर्तन कियाकरते औ बड़ेप्रेमसे कथा कहते श्रोता बहुतआते थे कथाके पीछे कुछ गानहोताथा तब सब, स्त्री पुरुष भगवत्भावमें मग्न होजाते थे दुष्ट औ पापीजनोंको यह बात, अच्छी न लगती थी तो बादशाह से जनाकर निन्दाकी कि प्रेमनिधि, कथाके मिस स्त्रियोंको जमाकरके घरमें आनन्द करताहै तब बादशाह ने चोपदारको भेजा। उसने लेचलनेवास्ते जल्दीकी उस समय प्रेमनिधिजी भगवत् के निमित्त जल लियेजातेथे चोपदार की जल्दी से जल पिलाना भूलगये बादशाह के सम्मुखभये उसने वृत्तांत पूछा इन्होंने सत्य २ जो था वह कहसुनाया कि भगवत् के आगे कीर्तन कियाकरताहूं उससमय कोई भी स्त्री पुरुषआवें रोकटोक नहीं है बादशाह ने कहा तुम्हारे टोले के लोगोंने कुछ खोटीबात कही है उसकी हम भलीभांति परीक्षा करेंगे यह कह-कर प्रेमनिधिको नजरकैदरक्खे औ आप महलमें चला रातको जब सोया तो भगवत् ने उसके इष्टदेवके रूपसे आकर स्वप्नमें कहा कि हमको जलकी तृषा लगी है बादशाह बोला जल के घड़े भरे हैं पानकरिये तब उत्तर दिया कि तेरे घड़ेकाजल हमारे कामका नहीं तब कहा जिसे आज्ञाहो वही लेआवे तब भगवत् ने कहा कि हमारा जो पानी पिलानेवाला है उसे तो तूने कैद कर रक्खाहै पानी कौन पिलावे तभी बादशाहकी आंखें खुलगईं तो बड़ी मर्यादसे प्रेमनिधिजी को बुलाये औ चरणोंमें शिररख-के अपराध क्षमा कराया। और कहा कि आप जल्द जाइये जो तृषाकी तृषाको भी दूरकरनेवाला है उसे भी आप के बिन तृषा लगी है और मालमुल्क जो चाहिये सो लीजिये तो कुछ न लिया बिदाहुये बादशाहने मशाल साथ देकर उनके घर पहुँचा दिया उसीक्षण प्रेमनिधिजी ने भगवत्को जलपानकराया तभी तृषा मिटगई ॥ इतिपञ्चषष्टिप्रदीपः ६५॥

आशकरण जी का दृष्टांत ॥

भक्तश्छिन्नशरीरोऽपि नहिसेवांजहातिहि ॥
आशकर्णश्छिन्नपादो नहिसेवांयथाऽजहत् ६६॥

भक्तका शरीर कटभी जावे पर वह हरिसेवाको नहीं छोंड़ता है जैसे आशकरण जी का पैरभी काटागया पर वे हरिसेवा को न छोंड़तेभये। वृत्तांत। आशकरण जी राजा नरवर गढ़ के महाराज भीमसिंह के वेटे जाति के कछवाहे स्वामी कील्हजीके चेले धर्मात्मा औ परमभागवत गुणवान् हुये कि वर्णन नहीं होसकता दशघड़ी दिनचढ़ेतक भगवत्की सेवा पूजा कियाकरते और द्वारपालोंको आज्ञाथी कि कोई मनुष्य सामने न आनेपावे औ न किसीमिलेका संदेशा कहे कोई संयोगवशसे बादशाहकी सवारी आई प्रभातको किसी कार्य्य की शीघ्रताके लिये बुलाया बादशाह के सिपाही जो आये तो किसी ने उनकी आज्ञा नहीं मानी और न राजातक वृत्तांत पहुँचाया उन सिपाही लोगों ने सब वृत्तांत बादशाह के पास पहुँचाया बादशाह ने क्रोध करके फौज भेजी तबभी राजातक कोई न गया और न कुछ भय भी फौज आनेका भया तब सेनापति बादशाह को लिख भेजा कि फौजके आने परभी राजातक कोई वृत्तांत नहीं पहुँचाता जो आज्ञा हो तो युद्धआरम्भहोवे बादशाह यह सुनकर आप आया तब दरबारों ने केवल बादशाह को जानेदिया बादशाह ने देखा आशकरण जी सेवा पूजनकरके भगवत् को दण्डवत् कररहे हैं तो बादशाह देरतक खड़ारहा निदान तरवार राजा के पावँ में मारा कि ऐंड़ी कटगई पर राजा ने तबभी कुछ असावधानी न की और न घावका भानहुआ क्योंकि मन भगवत्के स्वरूप में लगाथा और जिस ओर मनहो उसीओर सुख व दुःख व्यापहोताहै। राजा दण्डवत् करनेके बाद मन्दिर के बाहर आये और बादशाहको देखके रीति मर्यादके साथ बादशाहसे मिलापकिया बादशाह यहहाल देखकर राजा के बिश्वास औ सांची प्रीतिपर

बहुतही प्रसन्नहुआ और लज्जितहो अपराध क्षमाकराया मर्य्याद राजाकी वड़ीकी सब राजाओं का शिरोमणि ठहराया जब राजा परमधाम को गये तो बादशाह ने सुनकर बड़ा शोचकिया और श्रीमोहनजी के मन्दिरमें जो राजा पूजनकरता था तिसकी सेवा औ रागभोगके लिये कई गांव जागीरके बन्धान करदिये कि अब तक माफहैं ॥ इति पट्षष्टितम प्रदीपः ६६ ॥

पीपाजीका इतिहास वर्णन ॥

भक्तस्यपूर्वपुण्येन जायाभक्तिमतीभवेत् ॥
पीपाभक्तप्रियासीता यथातदनुगाऽभवत् ६७ ॥

भक्तके पूर्वजन्म के पुण्यसे उसकीस्त्री भी भक्तिमती होतीहै जैसे पीपाजीकी प्रियपत्नी (सीता) उनके स्वभाव के अनुसार चलनेवाली भई ॥ वृत्तांत यहहै (पीपाजी) ऐसे परमभागवत हुये कि जिनके भक्तिप्रताप से पशुतुल्यभी भगवत् शरणहोगये भगवद्भक्तों के भक्त औ सबगुणोंके जाननेवाले हुये । गागरौन गढ़ के राजा औ पहिले दुर्गाके सेवकथे एक बेर भगवद्भक्तलोग जा निकले उनको रसोईकी सामग्री जो इच्छाथी सो दिवादी उन्होंने रसोई बनाकर भगवत्के भोग लगाया और भगवत् से प्रार्थनाकी कि यहराजाभी भगवद्भक्त होजाय रातको एककिसी ने राजाको स्वप्नमें शिक्षाकी तू कैसा मतिमन्द है भगवत्से वि-मुख होकर उद्धार चाहताहै पीछे एकप्रेतने भयङ्कररूपसे प्रकट होकर राजाको पलँगसे धरतीपर डालदिया राजाने उसीदिनसे भगवद्भक्तिका आरम्भकिया और सबरचना संसारकीअसार दि-खाईदेनेलगी दुर्गाजीभी प्रकटहुई तब पीपाजीने दण्डवत्करके पूछा कि भगवद्भक्ति किसप्रकार प्राप्तहोतीहै दुर्गाजीनेकहा रामा-नंदजीके शिष्य होजाओ ऐसेकह दुर्गाजीअन्तर्द्धानहुई और पीपा जी रामानन्दजी के दर्शनके हेतु ऐसे व्याकुलहुये कि बेसुधिहुये फिर वैराग्यलेने को काशीपुरी में रामानन्दजी के पास आये। उन्होंने निरादरकरदिया कि यह घर त्यागियोंकाहै राजाका क्या

कामहै तो पीपाजी सबत्याग फ़क़ीर बनकर गये कि मैं भी फ़क़ीर होगया फिर परीक्षा के हेतु रामानन्दजी ने आज्ञादी कि कुयेंमें गिरपड़ो तुरत पहुँचे कुयें में गिरनेलगे तो रामानन्दजी के चेलोंने पकड़लिया सामनेलाये तब रामानन्दजीने चेलाकिया और कृपापूर्वक भगवद्भक्ति उपदेशकरकेकहा कि अपनेघरजाओ

[illegible]

चले जब नगर के निकट आये तो पीपाजी बड़ेभावसे रीति मर्य्याद सहित रामानन्दजी को घरलाये और ऐसी सेवाकी कि जिसका शीघ्रही फलहोय कुछ दिन पीछे रामानन्दजीने द्वारका जानेकी इच्छाकी तो पीपाजी बिकलभये तब उनके हृदय की प्रीति देखकर रामानन्द [illegible]

फ़क़ीरी लेकर हमारेसाथचलो पीपाजी तुरन्त सबछोड़कर साथ हुये उनके साथ बारहों रानियें भी चलीं पीपाजीने ग्यारहको समझाकर भेजा एक छोटीरानी जिसकानाम सीताथा उसने कमली पहरना औ नंगीरहने को भी अंगीकार किया तब रामानन्दजी के बहुत कहने से साथलेचले एक ब्राह्मण भी साथहुआ उसे मनाकिया तो वह विषखाय मरा फिर भगवत चरणामृतसे जी उठा फिर कर अपने घरआया समाज द्वारकामें पहुँचा वह दर्शन यात्राकरके काशीजी चले परन्तु पीपाजी आज्ञा लेकर द्वारकामें रहे। एकदिन श्रीकृष्णजी के दर्शनकी इच्छाहुई समुद्र में कूदपड़े तो दिव्यद्वारका में पहुँचे भगवतका दर्शनपाया सात दिनरहे भगवतकी आज्ञासे फिर समुद्रके किनारे जल से बाहर सीता सहित निकले कपड़ाभीगा शरीर सूखा सबलोगोंने देख कर आश्चर्य माना और पीपाजी को जो भगवतने छापदीथी सो

पुजारीलोगों को दी औ कहा कि जिसके शरीरपर यह लगाय दीजावे वहपरमधामपावेगा यह प्रतापपीपाजीका जब विख्यात हुआ तो लोगोंकी बड़ीभीड़ होनेलगी तब वहांसेचले छैमंज़िल पर पहुँचे तो लशकर पठानोंकामिला सीताको रूपवती देखकर छीनलिया तब सीताने भगवत्का स्मरण किया भगवत् आप आये और दुष्टोंकोदण्डदेकर सीताको आनन्दसे लेआये पीपाजी ने सीतासेकहा कि अब घरचलीजाओ तुम्हारे कारणसे सब उत्पात होते हैं सीता नें उत्तर दिया कि महाराज आपके उपाय करने से कौन उत्पातहुआ है कि जिसके कारणसे भजनमें भंग हुआहो और किसमय पड़ेपर भगवान् ने सहाय न करीहो सो परीक्षा आपको औ मुझको भी होचुकी है तबभी यह सिखावन करनी दूसरी बातहै पीपाजी उसके इस दृढ़निश्चयपर बहुतही प्रसन्नहुये और दूसरी राहसेचले राहमें एक व्याघ्र आया उसको भी शिष्यकरके भगवद्भक्तिका उपदेशकिया उसने मानलिया अब तक वहांका व्याघ्र गौ ब्राह्मणको नहीं मारता वहांसे चलकर एक गांवमेंआये वहां शेषशायी महाराजका मन्दिरथा तहाँ बाजारमें किसीकेपास लाठी देखकर मांगी उसने कहा जंगलसे काटलेव पीपाजी ने तभी लाठियों को हरीपत्तोंवाली करदीं कि जंगल होगया उसमें से एकलाठी काटली फिर एकचौधरनाम भक्तकेघर आये उसके घरमें कुछ न था अपनी स्त्रीको नंगीकर उसका लहँगा बेचकरके रसोईका सामानलाय बनाई भोगलगे पीछे जब स्त्री सहित चौधरभक्तको प्रसादपाने को बुलाया तो चौधरने कहा वह वहांही प्रसाद पालेवेगी तब पीपाजी ने सीताको उसस्त्रीके पास भेजा तो देखा कोठे के भीतरहै पूछा तो कहा कि तनपर वस्त्र न रहै तो कुछ हानि नहीं पर साधुजन इसद्वारसे भूखे न जासकें सीताजी ने सबहाल जानलिया और उनके भावके आगे अपनी भक्तिको भी तुच्छ समझा तब अपने अंगपर के वस्त्रमें से आधा देकर बाहरलाई और एक साथ भोजन किया पीछे पीपा औ

सीताजी उसकी सेवाको उचित समझकर विशेष द्रव्य प्राप्ति वेश्याकर्मसेहो यह निश्चयकरके बाजार में जावैठे सुन्दर रूप देखकर लोग जमाहुये समीप आये तो आंखउठाकर न देखसके पूछा तो उत्तर दिया कि वेश्याहैं घरबार कुछ नहीं केवल एक समाजी ( भडुवा ) साथहैं वेलोग सुनकर चुपहोरहे कुछ हँसी की बात नहीं कहसके नाजमुहर रुपैया भेंटकिया पीपाजीने वह सब चीधरभण्डारकेघर पहुँचाय दिया आप ऐसे वैराग्यवान्थे कि जिसीसमय भगवत्भक्तोंको देदिया आप जैसेथे तैसेहीरहे पीपा जी बिदाहोकर राहकाकष्ट उठाते टोड़ाशहरमें टिके तालावपर स्नानकरनेगये मुहरोंसेभरा एक घड़ा देखा रातको सीतासे कहा। चोरोंने सुनकर जाकर देखा तो घड़ेमें बड़ा भारीसर्प है तब विचारा कि उसको इससांपसे कटवादेना चाहिये जो हमारे कटवानेके लिये झूठकहा तो उसघड़ेको पीपाजीके स्थानपर डाल कर चलेगये पीपाजीने उससमय सातसौबीस अशर्फी जो पांच पांचतोलेकी एक २ थी तीनदिन में भण्डाराकरके साधोंको खिला दिया। सूरसेन राजा उसदेशकाथा वह पीपाजीका नाम सुनकर दर्शनको आया चरणों में गिरा औ विनयकिया कि मुझको भी अपनादास बनालीजिये और शिष्यकरके मन्त्रोपदेश कीजिये पीपाजी ने कहा कि अपनी धन सम्पत्ति औ रानी आदि सब हमारे भेंटकरदेव राजाने तुरन्त वैसाही किया तब उसको मन्त्रोपदेश दिया और रानी औ सम्पत्ति आदि जो भेंटकी थी सो सब फेरदी और कहा कि भक्तोंसे परदाका प्रयोजन नहीं राजाके भाई बंधु यह बात सुनकरे बहुत क्रोधयुक्तहुये और पीपाजी से गुप्ती दुष्टता करनेलगे एकबनजारा बैल मोललेनेको आया किसीनेकहा पीपाजी के पास बैल अच्छे २ हैं बनजारेने पीपाजीके पासआय के रुपये नकद रखदिये औ कहा कि नये २ बैल मोल लेने हैं पीपाजी दुष्टोंकी दुष्टताको जानगये तो कहा कि इससमय बैल चराईपर गये हैं फिर आकर लेजाना वह तो सुनकर चलागया

औ पीपाजी ने उन रुपयों से भण्डारा औ महोत्साह आरम्भ किया हजारों मनुष्य जमाथे सोही वह बनजारा भी आपहुँचा औ रुपयों के लिये विनय किया तो पीपाजी ने उत्तर दिया कि ये हजारहों बैल खड़े हैं जो परमधामतक खेव पहुँचादेते हैं वह बड़भागी वनजारा उनसाधुओंका दर्शनकरतेही उसीघड़ी भगवत् शरणभया औ अच्छे २ वस्त्र साधुओं के भेंटकिये एकवेर पीपाजी घोड़ेपर सवारहोकर स्नानकोगये घोडेकोखुलाछोड़के स्नान करनेलगे घोड़ेको दुष्टलोग चुरालेगये औ बांधलिया जब स्नान करके चलनेका विचार किया तो घोड़ा कसाकसाया आकरखड़ा हुआ मानों कोई तयारकरके लायाहै दुष्टजन लज्जितहुये एकवेर पीपाजी हरिभक्तोंके समाज में गयेथे घरपैसाधुआये उस समय कुछ घरमें न था तो सीताजी बाजारमें जाय एक बनियेसे रातको आनेका क़रारकरके रसोईकी सामग्री लेआई तभी पीपाजीभी आये सबवृत्तान्त कहदिया जबरातको सीता शृंगार करके चली तो जल बहुत बर्षनेलगा तब पीपाजी अपनी पीठपर चढ़ाकरले गये दर्शनसे बनियेको ज्ञानहोगया चरणसूखा देखकर कहा माता कैसे आई सीताने कहा मेरे स्वामी अपनी पीठपर लायेहैं दरवाजे पर खड़ेहैं बनिया दौड़कर चरणों में औ गिड़ गिड़ानेलगा पीपाजी बोले, लज्जाका कुछ प्रयोजन नहीं अपनी दूकान में जाय बच्चा जी चाहे सोकरो चैन उड़ाओ तुमने वह रुपयादिया है जिसके निमित्तभाई आपसमें लड़ २ कर मरतेहैं तब बनिया बहुत दुःखीहो धारमार २ कर रोनेलगातो पीपाजीको दया आगई तोदीक्षादेकर आवागमनके दुःखसे छुटादिया वहांके दुष्टोंने यहवृत्तांत राजातक पहुँचाया ब्राह्मणों ने राजासे कहा कि यह बड़ी अनीतिहै राजा अज्ञान अपनीही नाईं समझकर वेविश्वास होगया पीपाजीने सुनके विचार किया कि गुरुसे विश्वास छूटे इसके दोनों लोक बिगड़जायँगे इसको दृढ़ विश्वास करादेना चाहिये इसहेतु राजाके घरगये खबरकराई तबराजाने कहाय

भेजा कि पूजाकरताहूं पीपाजीसुन बोले कि यहराजा बड़ा मूर्ख है जोगद्दीपर आरामसे बैठाहै औ कहताहै कि पूजाकरताहूं यह सुनतेही राजा तुरन्त उठआकर चरणों में गिरा तब पीपाजीने राजाको चेताने के लिये कुछ और परीक्षा देनी उचित समझ करे उसकी रानी बंध्याथी उसे ले आने की आज्ञा करी राजाने कुछ मन न दिया और चलातो अगाड़ी एकव्याघ्र बैठा देखा तो लौट आया कि यही बहाना करूंगा तब पिछाड़ी भी वही देखा तब करामात पीपाजी की मालूमहुई रानी के पासगया और देखा कि रानी के पास लड़का है जो अभी जन्मा है तब तो आधीन औ विश्वास युक्त होकर साष्टांग दण्डवत् करके पीपाजीको विनय किया कि मैंने आपकी महिमा का प्रभाव जाना नहीं था अपराध क्षमाकर कृपा कीजिये तब पीपाजी उसी बालकके रूपसे प्रकटहोकर बोले अरे मूर्ख ! उस दिनके भक्ति विश्वास का स्मरणकर कि जिस दिन चेलाहुआ उचिततो यह था कि दिन २ भगवत् औ गुरु में प्रीति अधिक होतीजाती यह नहीं कि बिमुखहोकर नरक में पड़ना अब तो चेत कि दोनोंलोक सहजमें प्राप्तहों इसप्रकार शिक्षादेकर अपने स्थानपै गये एक कोई साधुभेषकरकेआय,एकरातका करारकरके सीताको लेगया तो रात भर आपभी भागा औ सीताको भगाई जहां प्रभात हुआ तहांहीं सीता ठहरगई कहा कि स्वामीकी एक रातकीही आज्ञाथी तब गांवमें सवारीलेनेको गया तोवहां सब स्त्रियें सीता रूप देखीं तबतो उन्हीं सीताजी के चरणों में आयगिरा। इसी प्रकार एक बेर चार विषयीलोगों ने आकर सीताको मांगा जब सीताजी शृङ्गारकरके कोठरी में बैठी तो वे भी भीतरधसे तो उन्हें एक बाघिन फाड़ने खानेवाली देखपड़ी तब क्रोध भरे आकर पीपाजी से बोले अच्छे साधुहो बाघिन बैठाली क्या मरवातेहो पीपाजी बोले कि नहीं वहतो सीताहीहै जैसी तुम्हारे चित्तकी वृत्तिहै वैसीही दीखतीहै सो अबतुम शुद्ध चित्तसे जावो तो सीता

दर्शनपाओगे सीताजीके दर्शन भये तबतो वे भी चेलेहोकर भगवद्भक्ति करनेलगे। एक तेलिनसुन्दरी (तेलली २) कहती फिरतीथी पीपाजी उसे देख हँसकर कहनेलगे कि जोइसमुख से राम २ निकलता तो बड़ी शोभाहोती वह तेलिन बोली कि राम २ तोजब कोई मरजावे तबकहा करते हैं यहकह चलीगई तोघरजातेही अपने पतिकोही मरादेखा तबतो आकर चरणों में गिरी और कुटुम्ब सहित राम २ कहने का करारकरलिया तब पीपाजी ने कृपाकरके उसे जिवाया। एकबेर साधुसेवाके लिये एक भैंस कहीं से हाथलगी चोरआये उसे खोलकर लेचले तो आप उसके बच्चे को लेकर पीछे २ दौड़े औ कहा कि यह भैंस बच्चेबिन दूधनहीं देगी वे सुनतेही दासहुये भैंस छोड़कर चलेगये। एकबेर कहीं से एक गाड़ी गेहूं और कुछ रुपये लिये आते थे राह में बटमारों ने गाड़ी छीन ली तो पीपाजी वे रुपये भी निकालकर देनेलगे औ कहा कि बिन घृत शक्कर के भगवत् भोग की सामा नहीं बनैगी वे सुनतेही दास होगये। एक बेर बहुतसा रुपया इनके शिरपर करज का होगया वह शाहूकार नित्य तगादाकरनेलगा ये उसे आजकलहकहाकरते उसनेलाचार हो हाकिम से फरियादकरी हाकिम ने उसकी बही देखी तो सबकोरी देखपड़ी तब हाकिम ने उसे दण्डदेना चाहा तो पीपा जीही दयाकरके छुटालाये और रुपये भी उसके देदिये जब भगवत् ने देखा कि पीपाजी कंगाल होगये तो बहुतसामाल रुपया उनके घर भिजवाया पर पीपाजीने उसे जल्दीही पुण्यकरदिया एकसाधुने आकर इनसे भण्डारा करनेको याचनाकी तो उसे इतनाद्रव्यदिया कि और बचरहा। एकब्राह्मणने कन्याके ब्याह करनेकेलिये द्रव्य मांगा इनकेपास न था तो इन्होंने उसे राजा के पास भेज निज गुरुबताकर उसे बहुतसाद्रव्य दिवाया। एक ब्राह्मण से गोहत्या होगई वह जाति बाहर कियागया तब पीपा जीने उसे राम २ उपदेशकरके भगवद्भक्त किया पर लोगोंनेउसे

जातिमें न मिलाया तब तो इन्होंने सभाकर सबशास्त्रों के मत से रामनामकी उत्कृष्टता दिखाकर प्रतिपादन किया कि जिस नामके एकवेरभी मुखसे निकलतेही हजारहों गोहत्या दूरहोती हैं तो कईवेर कहने से एक गोहत्या छूटनी कौन बड़ी बातहै यह सुन सबोंने निरुत्तरहो उसे जातिमें लेलिया। एकवेर श्रीरंगजी से मिलने को गये वे मानसीपूजा कररहेथे तो माला मुकुट में अटक जाने से पहिराते नहीं बनती तब पीपाजी बाहरसे पुकारे कि कैसी पूजाकरतेहो जो माला नहीं पहिराई जाती रंगजी सुनतेही दौड़े आये औ परस्पर मिलाप भया। एकादशीको जागरण होरहाथा वहां बैठे पीपाजी अचानकहीं हाथमलने लगे लोगोंने कारण पूछा तो कहा कि पुरीमें भगवत् के चँदोवे में अग्नि लगीथी उसको बुझायाहै राजाने झट सांड़िनी दौड़ाकर समाचार मँगाया तो सत्यहुआ और यहभी मालूमहुआ कि हर एकादशी को पीपाजी जागरण में आया करते हैं। ऐसे २ बहुत से चरित्र पीपाजी के हैं॥ इतिसप्तषष्ठितमप्रदीपः ६७॥

श्रीरङ्गजीका दृष्टान्त॥

यमदूतोद्भवाम्भीतिंतथाप्रेतभवामपि॥
व्यपोहतिहरेर्भक्तिर्य्यथारंगेऽथतत्सुते ६८॥

हरिभक्ति जो है वह यमदूतों के भयको और प्रेतभयको भी दूरकरती है। जैसे रङ्गनाथ औ तिनके पुत्रकी व्यवस्था भई। (दृष्टांत) जैसे श्रीरङ्गजी, देवसागांव जयपुरके निकटहै तहांके रहनेवाले सरावगी के बेटेथे उनका सेवक मरकर यमदूत हुआ और उसी गांवमें एकबनजारा टिकाथा उसके प्राण निकालने को वही यमदूतआया तो आगेकी प्रीतिवशकरके रङ्गजीसे मिला औ सब निज वृत्तांत कहा तो पीपाजी को उस चरित्रके देखने की इच्छा हुई जहां बनजारा टिकाथा तहांगये तो देखा कि उस दूतने एक बैल उसका भड़काया बनजारा उसे पकड़नेको उठा

वह दूत बैलके शिरपर जाबैठा औ सींगसे बनजारे का पेट फाड़ बड़ी पीड़ासे मारडाला। श्रीरंगजी देखकर चकितहुये और उस दूतसे उपाय पूछा कि जिससे यमदूतों के हाथों से बचें उसने कहा कि बिना भगवद्भक्ति के सबको ऐसीही पीड़ाहोती है और जो भगवद्भक्त हैं उनकेपास स्वप्नमें भी कभी यमदूत नहीं आते श्रीरंगजी ने सुनतेही उस सरावगमतको असार समझकरछोड़ा औ उसीघड़ी भगवद्भक्ति स्वीकारकरी उसीदूतके बतलाने से (अनन्तानन्दजी) के चेलेभये। एकप्रेत, नित्य श्रीरंगजी के बेटे को दिखाईदेताथा इसकारण वह दुबलाहोगया रंगजीने वृत्तांत सुना तो उसकी खाटपर सोरहे जब प्रेतआया तो उसे हरिनाम सुनातेही प्रेत भागा औ कहा कि मैं इसीगांवका फलाना सुनार हूं पर स्त्री गमन चोरी मिथ्याकर्म करने से प्रेत होगयाहूं तब श्रीरंगजी को दया आगई तो भगवत्का चरणामृत उसे दिया उसके प्रभावसे वह देवरूप होगया॥ इत्यष्टषष्टिप्रदीपः ६८॥

खड्गसेनका इतिहास॥

(खड्ग सेनजी-जातिकायथ) रहनेवाले गवालियरके भगवत्के रासनिष्ठभक्त प्रेमीभये पदरचना बहुतललित कियाकरते थे। ब्रजगोपिका औ ब्रजग्वालोंके मा बापों के नाम ढूंढ २ कर एक ग्रंथबनाया तथादानलीला औ दीपमालिका चरित्र, ऐसा ललितबनाया कि जिसके सुनतेही भगवत्में प्रीति उत्पन्नहोजाती सम्पूर्ण अवस्थाको श्रीब्रजचन्द्र-महाराजके और उनकेसखा सखियोंके चरित्रोंमें व्यतीत किया और श्रीनन्दनन्दन स्वामीके चरण कमल में ऐसी प्रीतिथी कि सिवाय उनके चरित्रों के दूसरी बातोंका ध्याननथा रासलीला औ दूसरे चरित्रोंका समाज उत्साहसदा रहाकरताथा और शरदपूनों को यह दृढप्रणथा कि बहुत द्रव्यलगाकर रासलीला कराया करते थे एकबेर प्रिया प्रियतमकी रासविलासकी दशामें हँसी खेल औराग नृत्य और परस्पर देखना औ मुसकियाना श्री लाड़िली जूका मान औ

श्रीलालजीका आप मनाना आदि चरित्र देखकर ऐसे वेसुधि तदाकारहोगये कि निजदेहको उस प्रियाप्रियतमके रासविलासकीनिछावर करके प्राणमुख्य रसरास औ नित्य विहारमें प्राप्त किये और प्रेमकी दशा रासनिष्ठाकी महिमाकी उसके प्रभाव करके नित्य रासविलास औ भगवत्स्वरूप प्राप्तहोताहै उसे लोकमें प्रकटकरके भगवद्भक्ति भावकोशिक्षा किया ॥ इत्येकोन सप्ततितमः प्रदीपः ६९ ॥

### रैदासजीका इतिहास ॥

जातोनीचकुलेचापि भक्तोभक्तिंनविस्मरेत् ॥
यथारैदासभक्तोऽसौनीचजोऽपिमहत्कृतः ७० ॥

भक्त किसीकुकर्म वशसे नीचकुलमें भी जन्म लेलेवे परवह निज भक्तिको भूलता नहीहै । जैसे भक्त ( रैदासजी ) गुरुके शाप से नीच जातिकेयहां भी जन्मेथे परवड़ों२ने उनका सत्कार किया॥वृत्तान्त॥रैदासजी पहिलेजन्म में ब्रह्मचारी, रामानंदजी के शिष्य सेवक अद्वितीयथे उनके लिये नित्य २ भिक्षा मांग करलाते फिर आप भोगलगाकर भगवत्प्रसाद पायाकरते. एक दिन जल बहुत बर्षताथा सो एकबनियां जोवहुत दिनोंसे कहताथा और उसका भोगनहीं लेतेथे उसीके यहांसे रसोईका सामान लेआये जबरामानन्दजी भोगलगानेको वैठे तो भगवत् ध्यानमें भोगलेनेनआये तब रामानन्दजीने ब्रह्मचारीसे पूछ उस बनियेंका भेद निश्चय किया तो उसका लेनदेन चमारों से था तब रामानंदजीने ब्रह्मचारीको शापदिया कि तुझकोभी चमारके घर जन्मलेना पड़े तोब्रह्मचारीने ब्राह्मण शरीर छोड़कर चमार के घर जन्मलिया परंतुभगवद्भक्ति औ भजन प्रताप से पहिले जन्मका स्मरणबनारहा जन्मे तभीसे माताका दूधपीना छोड़दिया कि विना गुरुउपदेश के खानपान अयोग्यहै तबतो रामानन्दजीको भगवत्ने आकाशवाणीसे कहा कि ब्रह्मचारीको तुम

ने घोर दण्डदिया उसआज्ञासे चमार के घरजन्मे पर अवउनपर अनुग्रहकरो तभी रामानन्दजी उसचमारके घरगये औ मन्त्रोपदेशकरके ( रैदास ) नामधरा और दूधपीने आदिकी आज्ञादी जब रैदासजी कुछ स्याने भये तभीसे भगवद्भक्तोंकी सेवाकरनेलगे जोकुछघरसे मिलता लेजाकर भगवद्भक्तों के आगे धरदेते बापने रिसकरके घरके पिछवाड़े एकजगह उसको रहनेकेलिये देदी द्रव्य घरमेंथा परतु रैदासजीको कुछ न दिया रैदासजीस्त्री समेत तहां रहनेलगे जूती बनाकर निर्बाह करते जबकोई वैष्णव साधुदेखते तोबिनदामों के जोड़ी पहना दिया करते फिरएक छप्पर डाललिया और उसमें भगवत्मूर्ति विराजमानकरकेसेवा पूजा करनेलगे और आप उस छप्परसे वाहरचौरे में बिनछाया पड़रहते यद्यपि उनपरदुःख दरिद्र आदिकाथा परभगवद्ध्यान में मग्नरहतेथे भगवत्ने वह कंगालीभी हटानेका विचार कियातो आपसाधुबनके रैदासजीके घरगये रैदासजीने बड़ीसेवाकरके भगवत्रूप ध्यानकरके भोजन करवाया उन्होंने प्रसन्नहोकर(पारसपाषाण) रैदासजीको दिया और गुण वर्णनकरके रैदासजीसे कहा कि बहुत यत्नसे रखना रैदासजीनेकहा कि मेरे यह किसीभी कामका नहीं है मेरा धन-सम्पत्तिरामनाम है तब भगवत् समझे कि इसने प्रभाव जाना नहीं है इसहेतु रांपी के लगाया तो सुवर्ण की होगई रैदासजी ने मनमें कहा कि रांपी भी मेरे हाथसेगई तो उसे न ली उन्होंने बहुतहीकहा तब लिया और उस पारसको छप्परमें रखवाया तेरहमहीनेपीछे भगवत् फिर आये रैदासजीका वैसाही वृत्तान्त देखके पूछा कि पारस कहां गया रैदासजी बोले जहां आप रखगये तहांहीं होगा मुझको उसके हाथ लगाने से भय होताहै निदान भगवत् उसे लेकर चलेगये । एकदिन रैदासजी की पिटारी में सेवापूजा करने के लिये पांचमुहर निकली तो रैदासजीको भगवत्सेवा से भी भय होनेलगा तब भगवत् ने स्वप्नमेंकहा कि यद्यपि तुमको कुछ लोभ नहीं है पर अब

हम जो कुछदें वह अङ्गीकारकरो तब रैदासजीने अंगीकारकिया और उस द्रव्यसे धर्मशाला बनाकर भगवद्भक्तों को उसमेंरक्खा फिर एक मन्दिर तैयारकराके उसमें भांति २ के चँदोवे झालर लगाये औ सुनहरी वन्दनवार दीवारगीरी औ छतबन्ध इत्यादि से ऐसा सजाया कि जो दर्शन करनेवाले आतेथे वे मन्दिर की शोभा औ भगवत्मूर्तिकी छवि देखकर मोहित होजाते थे पूजा प्रतिष्ठा सब ब्राह्मणों के हाथ होतीथी। तिसके पीछे जहां रैदास जी आप रहतेथे तहां एक स्थान दोमहला बनवाया और बड़ी प्रीतिसे सेवा पूजा करनेलगे। तौ बहुत से ब्राह्मणों ने शत्रुता करके राजा के पास कठोर वचन कह २ कर फिरियादकरी कि जातिकाचमारहै उसे भगवत्मूर्ति के पूजनका अधिकार किसी भी शास्त्रकेमतसे नहीहै और रैदास निःशंक भगवत्मूर्ति विराज मान करके सेवा पूजा कियाकरताहै उसको दण्डदेना चाहिये राजाने रैदासजी को बुलाया और ऐसा प्रताप राजापर रैदास जीका व्यापा कि एक दो बातेंही कहकर फेरदिया राजाकी रानी का नाम झालीथा उसने जो प्रताप रैदासजी का देखा सुना तो सेवकहोगई जो ब्राह्मणलोग रानी के पास रहतेथे उन्होंने दुष्टता की तो कहनेलगे कि रानीकीबुद्धि जातिरही यह सब वृत्तान्त राजा के पास पहुँचाया तब रानीने रैदासजी को बुलाया और सब ब्राह्मण इकट्ठेहुये वे ब्राह्मण जातिकी बड़ाई करनेलगे और रैदासजी का यह वचनथा कि भगवत्को भक्ति प्यारी है जातिपर कुछ दृढ़ नहीं है बहुत वादविवादभया पीछे यहबात ठहरी कि भगवत् मूर्ति जो सिंहासनपर विराजमानहै जिसकेपास प्रसन्नहोकर आजावे वही भगवत्को प्याराहै इसबातपर ब्राह्मणोंने तीनपहर पक्का वेद पढ़ा परकुछनभया और जबरैदासजीपर बातआई तो विनयकिया कि महाराज! अपने ( पतितपावन ) नामको सफल कीजिये और दो एक विष्णुपद कीर्त्तनकिये जिसपदकी पहिलीतुकयहहै ( विलम्बछांडिआइये कि तौबुलायलीजिये ) और दूसरेपदकीतुक

चौपाई। देवाधिदेवआयोतुमशरना। कृपाकरोराखोनिजचरना॥ भगवत् इनपदों को सुनतेहीं सिंहासनपर से उठकर रैदासजी की गोदमें आय बैठे तब तो विश्वासकरके सबआधीनभये तिस के पीछे रानी झाला काशीजीसे अपनी राजधानीमें आई और यज्ञकरनेका विचारकिया रैदासजीको बड़ा विनयपत्र लिखकर भेजा रैदासजी चित्तौर में आये रानी बहुत आनंदितहुई बहुत रुपैया पुण्य किया तो ब्राह्मणोंको शोचहुआ कि इस रानी का गुरु चमारहै यहअच्छीबातनहीं तवरसोईकी शुद्धसामग्री लेकर तैयारकी जब भोजनकरने को बैठे तो सबने दो जनोंके बीचमें रैदासजी को बैठे देखे तबतो विश्वासयुक्त औ आधीन होकर चरणोंमें गिरपड़े तबतो लाखोंमनुष्य शिष्यहोगये और रैदासजी ने सबके दृढ विश्वासहोनेको अपनेशरीरकी खाल उतारकरभीतर जनेऊ दिखलाया और गुरुजीके शापकी सबबार्त्ताकही ऐसे सबकामोह दूरकर आपतन छोड़करके परमधामको प्रधारे जहां से फिर आगमन नहीं होताहै इतिसप्ततितमःप्रदीपः ७० ॥

कर्म्माबाईजीका इतिहास ॥

जातावात्सल्यभक्तेषु कर्म्माबाईमहत्तमा ॥
यद्गृहान्मुखलग्नान्नः कृष्णोऽगान्निजमन्दिरे ७१ ॥

वात्सल्य भावसे भक्ति करनेवाले भक्तों में ( कर्म्माबाईजी ) सबसे बड़ी भक्तभई जिसके घरसे मुखअन्नसे सनाभयाही लिये अर्थात् मुहँधोये विनाहीं भगवान् ( जगन्नाथरायजी ) निजमन्दिर में भोगलेनेगये। वृत्तान्तहै कि ( कर्म्माबाई ) वात्सल्यउपासक हुई संसारमें यह रीतिहै कि प्रभातहोतेही बालकअपनी माता से खानेको खिचड़ी अथवारोटी मांगाकरते हैं इससे उनके जागनेसे पहिले माताको चिंताहोती है सो कर्म्माजीभी उसीभावसे पहिले चिंता भगवत्के लिये खिचड़ी बनाने की करतीं तो विनहीं न्हाये औ शौचकर्म किये थोड़ीसी खिचड़ी एक छोटीसी हँ-

ड़िगामें अत्यन्त प्रेमसे बनायाकरतीं और प्रीतिके साथ भगवत् के भोगलगाया करतीथीं और जगन्नाथ रायजी पुरुषोत्तमपुरीसे आकर अतिप्रीतिसे भोगलगाया करतेथे एकवेर कोई साधुआगया वह शिक्षादेगया कि आचार पूर्वक भोगलगाया करो तब ला- चारहोकर कर्म्मावाईजी आचार पूर्वक भोगलगाने लगीं तो भग वत्के भोगमें देर होनेलगी एक दिन कर्म्मावाईजी के गोद में बैठे भगवत् खिचड़ीखारहे थे सोही पुरुषोत्तमपुरीमें राजभोगकीतया- रीभई तोविनहाथ मुँह धोयेही तहांपहुँचे पंडोने जोभगवत् के हाथ मुँहमें खिचड़ी लगीदेखी तोचकित हुये और विनय किया तव आज्ञाहुई कि कर्म्मावाई हमको प्रभातही नित्य खिचड़ी भोग लगाया करतीथी और हमउसके घरप्रीतिवश होकर भोग लगाने जाया करतेथे अब एकसाधुने उसको आचार विचार सिखादिये इसकारण विलम्बहोजाताहै सो अब उस साधुसे कह- देओ वह कर्मावाई जैसे पहिले करतीरही तैसेही करके भोग लगावे तब पुजारियोंने उससाधुको ढूंढ़कर कर्म्मावाईजी के घर भेजा वह भगवत् शिक्षा उसे पहिलेके जैसी बतायआया कर्म वाईजीने उस शौचाचारको बड़ी भारी बलाय समझा इसहेतु कि मेरा लड़का सुकुमार औ थोड़ा खानेवालाहै सो दो पहरतक भूखा रहनेलगा जब पहिलीरीतिसे करनेकी शिक्षापाई तो ऐसी प्रसन्नहुई कि फूली अंगमें न समासकी अबतक भी जगन्नाथरायजीको पहिले भोगकर्म्मावाईजी की खिचड़ीका ल- गताहै तो इसके दोकारण समझेजाते हैं एक तो यह कि गीता में लिखाहै जो कोई जैसे भावसे मुझको चिंतवन करताभया प्राण छोड़े वह उसीभावको प्राप्तहोताहै इसप्रमाणसे कर्मावाई को (यशोदा-महारानी) की पदवी मिली काहेसे कि उनको म- रनेके समय अपने वात्सल्यभावकी दृढ़निष्ठाथी और उसीके अ- नुसार कर्मावाईजी अबतक भगवत्को खिचड़ी भोगलगाती हैं दू- सरे यहहै कि भगवत् अपने भक्तोंको शिक्षाकरते हैं कि मेरीप्रीति

और वात्सल्यकी यह पदवीहै कि कर्माबाईकी खिचड़ीका स्वाद अबतक मेरीजीभसे नहीं हटा इससे उपासकजन प्रेमीजन औ रसिकजनोंको ज्ञानरहै कि कर्माबाई आप आकर खिचड़ी भोग लगाती हैं इसमें कोई सन्देह नहीं करना किसहेतु कि हजारहों प्रकार के पदार्थ भगवत् भोगके लिये पुरीमें तयारहोते हैं पर जो स्वाद मिठाई कर्म्माबाई की खिचड़ी में है वह अन्यत्र कदापि नहीं इससे निश्चयहै ॥ इत्येकसप्ततितम.प्रदीपः ७१ ॥

गुंजामालीका दृष्टांत ॥

प्रीयतेभगवान्पूर्णो वयस्यैर्बालकैर्यथा ॥
गुंजामालीस्नुषागेह उदासीनःशतैर्विना ७२ ॥

परिपूर्ण भगवान्, निज साथके बालकोंसेही प्रसन्न रहते हैं जैसे । गुंजामालीकी पुत्र वहूके घरपै साथी बालकोंके चलेजाने से उदास होगये । वृत्तांत यहहै जैसे कि (गुंजामाली) नाम विख्यात होनेकाकारण यह है कि ( गुंजा ) घुंगचियों की माला बहुत पहिरतेथे इसहेतु कि ब्रजभूषण महाराजको उनकीमाला बहुत प्रियहै इसहेतु गुंजामालीनाम बिख्यातहुआ नामकाअर्थ यह है कि गुंजाओंकीमाला जिसकेसो(गुंजामाली)लाहौरके रहने वालेथे बेटा उनका मरगयाथा बहूसेकहा कि धनसम्पत्तिघरबार सबतेराहै और गोपालजी महाराज मालिकहैं तुझको इच्छाहो सो लेकर भगवत्भजन कियाकर सो वह बहू उनकी भगवद्भक्त थी उसने कहा कि मुझको कुछ चाहना नहीं गोपालजी महाराज की मूर्ति सेवाकरने को देदीजिये । और वह भगवत् सेवाकेलिये ऐसी प्रार्थना करतीभई कि कहा नहीं जाता तब गुंजामाली ने भगवत्सेवा तो उस बहूको सौंपी और माल असबाब स्त्री को देकर आप श्रीवृन्दावनमें आये और ब्रजवल्लभ महाराजके भजन कीर्तन में लगे और वह बहू बड़भागिनी सेवापूजाकरने लगी तो भगवत् सेवामें ऐसी लवलीनहुई कि कोई घड़ी भजनसेवा विन

व्यतीतनहोसके और जहां भगवत्मूर्ति विराजमानथीतहीं दूसरों के लड़के उसबहूकी चाहना और भावनासे खेलाकरतेथे एकबेर उन्होंने धूलईटोंकी भगवत्मूर्तिपर डालदी तो उसबहूने उनपर बहुत रिसकी और उनका आना बन्दकरादिया जब भोजन तैयार करके भोगलगानेको धरातो भगवत्ने भोगनलिया और अनमने होकरकहा किहमारेसखाओंको आनेसे मनाकरदिया तोहमतेरी रोटीभी नहीं खाते तब बहूजीने बहुतही मनाये औ कई लाड़ लड़ाये पर एकनसुनी तबतो रिसकरके कहा कि हमारा क्या तुम्हारीही पोशाक बिगड़तीहै सो मैं जितनी धूल मिट्टी कहोगे उतनी प्रभातही डलवादेऊंगी अब भोजन करलीजिये इतनी कहने परभी भगवत् अपने सखाओं के बिनाराजी न भये तब तो वह लाचार उनलड़कोंको मिठाईदेनी कहकर फुसलाकरले आई तब भगवत्ने भोगलगाया धन्यहै भगवत्की दयालुताको कि निज भक्तोंकी ऐसी प्रीति निबाहते हैं ॥ इतिद्विसप्ततितमः प्रदीपः ॥ ७२ ॥

त्रिपुरदासका दृष्टान्त ॥

भक्तप्रीत्यार्पितंवस्तु तुच्छंहिबहुमन्यते ॥
हरिस्त्रिपुरदासस्यवस्त्रेणमुदितोऽभवत् ६७ ॥

भक्तकरके प्रीतिसे अर्पणकी तुच्छ थोड़ीभी वस्तुको बहुत मानकर भगवान् स्वीकार करतेहैं। जैसे त्रिपुरदासके दियेवस्त्र सेही भगवान् निरशीतहो सुखीभये वृत्तान्त यह वर्णन किया जाताहै (त्रिपुरदासजी) जातिके कायस्थ रहनेवाले शेरगढ़के वात्सल्य भावसे प्रेम औ भक्तिके स्वरूपहुये हरसाल जाड़े के दिनों में यह नियमथा कि श्रीनाथजी महाराजके वास्ते पोशाक जरदोजीकीथा और किसी प्रकारकी सुन्दर भेजाकरते संयोग वश राजाने धनसंपत्ति उनकीका अवरोधकरलिया तो कुछपास नरहा शोचकरनेलगे कुछ न बनसका अधिकहुआ तो यह शोच

हुआ कि उससुकुमारको जाड़ालगताहोगा तवविकलहोकर रोने लगे और घरमेंजाकरबहुतढूंढा ता दावातहाथलगी उसेएकरुपया पर बेंचकर एकमोटाथानले कुसुम्भारँगाकरभेजनेके उपायमेंलगे कोई भक्त ब्रजको जाताथा उसकेहाथ वह मोटाकपड़ा पछताय हाथमारके भेजा और बड़ी आधीनताईसे विनय किया कि इस कपड़ेका समाचार गुसाईंजीको न पहुँचे क्योंकि उनकीदासियों के योग्यभी नहीं है भण्डारमें डालदेना वह आदमी गया औ भण्डारी को सौंपा उसने बेमर्य्याद से डाल दिया श्रीनाथजीको जाड़ालगनेपर अच्छी २ रजाइयां उढ़ाईगईं पर जाड़ा न गया फिर शालदुशाले उढ़ाये आगकी अँगीठी धराई दरवाजे बन्द करवाये पर सरदी न मिटी निदान गुसांईंजी ने कहा भाई यह शीत नहीं किसीकी प्रीतिहै सो कहो किस २ने क्या २ जड़ावल भेजाहै उसने सववताया वह उढ़ायागया शीत न मिटा तबउसने विनय किया कि एक थान गाढ़ा त्रिपुरदास कंगालने भेजाहै वह पोशाक बांधनेको भण्डारमें रक्खाहै तो गोसांईंजीने कहा शीघ्र लेआओ सो आया तब उसका चोलनासा बनाकर पहिनाया कि तुर्तसरदीहटी औ शरीर पसीजनेलगा भक्तोंकी दयालुताका विचारकरना चाहिये ॥ इतित्रिसप्ततितमःप्रदीपः ७३ ॥

जनकपुरके साधुका दृष्टान्त ॥

तमेवभावम्भजति प्रभुर्यद्भावभावितः ॥
ध्यातोजामातृबुद्ध्यापि तद्भावमभजद्धरिः ६८ ॥

प्रभु श्रीरामचन्द्रजी महाराज जिसभावसे भावना कियेजावें उसी भावको भजते हैं जैसे जनकपुर के साधुकरके ( जामातृ जँवाई ) के भावसे ध्याये गये तो तिन्होंने उसी भावको भजा अर्थात् तैसीही प्रीतिपाली। वृत्तांत यहहै कि ( राम पूसाद ) जनकपुरके रहनेवाले श्रीरघुनन्दन महाराजको अपने दामाद मानतेथे। जब अयोध्याजीमें आये तो अयोध्या के देशका पानी

भी नहीं पिया और जब दर्शनको रघुनन्दन महाराजके समीप गये तो उनका भाव पूर्णकरने को और भक्तिके प्रतापको प्रकट दिखाने के निमित्त भगवत्की मूर्ति रत्नसिंहासनसे उठकर कई डगतक उनकी अगवानी को आई और जो रीतिमर्य्याद राजा जनककीहोतीथी सो सब उनकीहुई यहबातविख्यातहै और स्वामी रामप्रसाजी के सेवक अबतक उसदेश में बने हैं। और एक वैष्णव, रघुनन्दनस्वामीको अपना बहनोई, जानतेरहे और कोई घड़ी भजन बिना नहीं बितातेथे और जिसघड़ी अपने विश्वास की वार्तालापाकरते तो सुननेवाले प्रेममें मग्नहोजातेथे हेस्वामिन्! हेदीनवत्सल! हे पतितपावन! कभीअच्छीघड़ी इसतुच्छ सेवककेलिये भी आवेगी कि जितने इससंसारमें स्नेह मित्रता औ नातेदारी हैं सब आपके चरणकमलोंहीं से समझाकरूंगा और कभी वह भी दिन होगा जो सब अवलंब छोड़ आपही के चरणारबिंदका ध्यानरहैगा जो ब्रह्मादिकों करके सेवनीयहै॥ इतिचतुःसप्ततितमःप्रदीपः ७४॥

युधिष्ठिर आदिकोंका इतिहास॥

किंकुर्य्यात्प्रबलोवैरी सहायीयदिहीश्वरः॥
नागायुतबलन्नष्टं नष्टंवासोनदिक्करम् ६९॥

जहां श्रीभगवान सहायकहैं तहां प्रबल भी शत्रुहो पर क्या करसक्ताहै जैसे द्रौपदी के चीर खैंचते २ दुःशासनका दशसहस्र गजबल घटगया और वह दश हाथका धौत वस्त्र नहीं घटा। वृत्तान्त। युधिष्ठिर आदि पांचोपाण्डव, श्रीकृष्णमहाराज को मेरे भाई जानतेरहे औ भगवत्भी उनका वहीभाव पूर्णकरतेथे अर्थात् प्रभात उठतेही युधिष्ठिर औ भीमसेन जो अपने वयक्रमसे बड़ेथे उनको प्रणाम कियाकरते और नकुल सहदेव जो छोटेथे उन्हें आशीश कहाकरते थे और कभी निज ईश्वरताका ऐसा प्रभाव दिखा दियाकरतेथे कि वह भाव ईश्वरताका भी उनका

सदी बनारहता और जितनी संकोच मर्य्याद राजा युधिष्ठिर से रहतीथी तितनी भीमसेनादिकसे नहीं और हँसीठट्ठा चारोंभाइयों से हुआ करताथा विशेषकरके बहुत भोजन करनेसे भीमसेनको हँसाकरतेथे तो भीमसेनभी मनचाहै सो कहदेतेथे बोल चाल व्यवहार उनका कौन वर्णन करसक्ताहै। राजा युधिष्ठिर धर्मका अवतार, भीमसेन पवनका औ नकुल, सहदेव, ये अश्विनीकुमारवैद्यसेहुये। इनकोजो जो संकटदुर्य्योधनकी शत्रुताकरके हुये उन सबोंको श्रेष्ठ श्रीकृष्णमहाराज हटातेभये। सो पहिले तो दुर्य्योधनने भीमसेनको विषदिया और हाथपांव बांधकर नदी में डालदिया तो भगवत्की कृपासे भीमसेनको वरुणजी अपने घरलेगये वहां उनको अमृत औ दशहजार हाथीकाबल मिला पीछे दुर्य्योधनने लाक्षाभवनमें जलानेका उपाय किया तब भी भगवत्कीकृपासे कुछ न हुआ और अधिक ऐश्वर्य्य, औ ख्याति का कारण पाण्डवोंको, यहहुआ कि हजारों राजाओं की सभामें से जीतकर द्रौपदीको लाये तिस पीछे हस्तिनापुरमें आये तहां भगवत्ने सबराजोंसे विजयकराकर राजायुधिष्ठिरसेराजसूययज्ञ पूर्ण यज्ञकराया उस यज्ञमें जब दुर्य्योधनकी हँसीभई तो जुयेमें इनकी छलकरके सब धनसं ति जीतली और द्रौपदीको राजसभामें नंगीकरनाचाहा तो भगवत्ने रक्षाकर उसका चीर अमित बढ़ाया। और जब पांडव दुर्य्योधन से वचन हारनेके कारण तेरह वर्ष वनमें रहे तो बहुत गंधर्व और राक्षसोंको विजय किया, औ अनेकप्रकारके लाभ उनको ऋषीश्वरोंसे औ शिव इन्द्रादिकों से, हुआ और भगवत्हीने दुर्वासाकेशापसे उनकोबचाये और महाभारत युद्धकेसमय दुर्य्योधन की ओर ग्यारह अक्षौहिणी दलथा औ भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्य, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, सोमदत्त, जयद्रथ औ, विकर्ण आदि, ऐसे, २ शूरबीरथे, कि सब कोई पांडवोंको जीतनेका अहंकार रखतेथे और दुःशासन दशहजार हाथियोंका बलधारी औ दुर्य्योधनका अंग अष्टधातुके

सदृशथा वाकी अट्टानबे भाई भी बलवान् औ सब शूरवीरथे। और इधर पांचोंपांडव आप और दो चार राजा और सात अक्षौहिणी दलथा। तब भी भगवत् ने तिस युद्धरूप घोर नदीसे आप कैवर्तक मल्लाह होकर पांडवों को पारउतारे और दुर्य्योधनकी शूरवीर सहित सब सेना नष्टकरवाई। पीछे राजा युधिष्ठिर राजसिंहासनपै बैठे तौ धर्म और न्यायपूर्वक प्रजापालन किया जब परमस्नेही भगवत् के अंतर्द्धानिहोने का वृत्तांत सुना तौ उसी घड़ी राज्यछोड़ उत्तरदिशामें सुमेरुपर्वत के वरफाने में जाकर परमधामको पधारे यह कथा महाभारत में विस्तार से है इति। द्रौपदी जी की महिमा कौन वर्णन करसके जिसके मनोरथको ब्रह्मादिकों ने सफल किया अर्थात् जब द्रौपदीजी ने भगवत् का स्मरण किया तो तुरंतही आये और अपनी ईश्वरताको छोड़कर उनकी चाहना को मुख्य समझा द्रौपदी जी श्रीकृष्णचन्द्र स्वामी को मनसे यद्यपि परब्रह्म परमात्मा जानतीथी पर बाहर से भाव देवरका मानती थी उस भावमें भी परमानंद औ अपार रसहै कथा द्रौपदीजी की महाभारत आदि में विस्तारसे है इससे यहां कुछ थोड़ी लिखते हैं जब राजा युधिष्ठिरने द्रौपदी औ राज्य भाइयों समेत अपने को दुर्य्योधनके हाथ हारदिया तब दुर्य्योधनने पांडवों को बेमर्य्याद करनेचाहे तो राजसभा में जहां ये पांचों भाई द्रौपदी सहित और सब राजा बैठेथे तहां दुर्य्योधनने निज छोटे भाई दुःशासनको द्रौपदी का चीर उतारने की आज्ञादी तिससमय भीष्मपितामह औ द्रोणाचार्य्य इस विचार से न बोले कि द्रौपदीजी हरिभक्तहै भगवत् इनकी सहायकरेंहींगे अथवा दुर्य्योधन के भयसे मना नहीं करसके और युधिष्ठिर आदि धर्म को विचार कर न बोलसके और द्रौपदी जी उससमय स्त्रीधर्म के कारण एक वस्त्र पहिरेथी दुष्ट दुःशासन जब चीर खैंचने को तयारहुआ तौ द्रौपदीजी ने भक्तवत्सल दीनबंधु कृपासिन्धु निज देवरका

स्मरण किया और पतिराखन महाराज सर्वदा निज भक्तों के पास बनेहीरहते हैं आन पहुँचे और द्रौपदीजी की सारी बामन जीके शरीर सदृश अथवा कुरुक्षेत्र के दान समान अथवा भगवत् अर्पित कर्म के सम अथवा नारायण के नाभि कमल की नालीकीसी बढनेलगी सो ऐसी भी बढ़ी कि जो दुःशासन दश सहस्र हाथियों का वल रखताथा वह भी खैंचते २ हारगया और द्रौपदीजी का एकनखभी न देखसका सब दुष्टलज्जितहोरहे औ उसी समय उनपापियों से राज्य औ धर्म, वुद्धि, बड़ाई, आयु सम्पत्ति इत्यादिकों ने बिदामांगी शिक्षा॥

दो० कहाकरै बैरी प्रवल जो सहाय यदुवीर॥
दशहजार गजवल घट्यो घट्योन दशगजचीर १

( कवित्त ) दुर्जन दुशासन दुकूलगह्यो दीनवन्धु दीन ह्वैके द्रुपद दुलारी यों पुकारी है। आपनो सवल छांड़िठाढ़े पतिपारथ से भीम महाभीमग्रीवा नीचे करिडारी है॥ अम्बर लौं अम्बर पहाड़की नो शेप कवि, भीपम करण द्रोण सभीयों बिचारी है। सारी मध्य नारीहै किनारी मध्यसारीहै, किसारीहै किनारी है किनारी है किसारी है॥

फिर दुर्योधनने पांडवों को बारहवर्षका वनवास और तेरहवें वर्ष गुप्त रहनेकी आज्ञाकी तो वनको चले तव सिवाय एकशस्त्र के और कुछभी सामग्री न लेसके खाने पीनेको कुछ पासनथा सूर्य्यनारायणने एकटोकिनी प्रसन्नहोकरदी उसका यहचमत्कार था कि जबतक द्रौपदीजी भोजननहीं करलेती तबतक सब प्रकारकी सामग्री भोजनकी चाहती सो सोही उसमें से निकलती थी और जब द्रौपदीजी भोजनकर चुकतीथीं तोतव वन्दहो जातीथी इसी बातपर एक दिन ( दुर्वासाजी ) दशहजार शिष्यसाथ लेकर ऐसे समय पहुँचे कि द्रौपदीजी भोजनकरचुकीथीं इत्यादि कथा प्रथमहीं भक्ति निवन्धमें लिखआयेहैं यहां दुबारा लिखने से विशेप प्रयोजन नहीं॥ इति पंचसप्ततितमः प्रदीपः ७५॥

## मीराबाईजीका इतिहास ॥

बाल्येसुशिक्षिताभक्तिर्दृढासम्यग्भवेत्तराम् ॥
मात्रासुशिक्षिताजाता मीराभक्तिमतीयथा ७० ॥

बालपनमे शिक्षाकी भगवद्भक्ति अत्यन्त दृढहोजातीहै जैसे मीराजीकी माताने उनको प्रथमहीभक्तिकी शिक्षादी. तौवे त्रिभुवन विख्यात दृढ भगवद्भक्त हुई । वृत्तान्त है गोपिकाओंकी प्रीति औभक्तिके अनुसार,कलियुगमेंअशंक निर्भय भक्तिभगवत् में मीराबाईजीकी हुई संसारकी लज्जा औ कुलकी परंपराको त्यागके बलकरके गिरिधरलालजी से प्रेमलगाया और निर्मल यश सब भगवद्भक्तोंने गाया मेरते के राजाकेघर जन्महुआ और लड़काईसेही गिरिधरलालजीके रूप अनूपमें प्रीतिहोगई कारण उसका यहहै कि किसी बड़े घर बरातआईथी उसकी धूमधाम को देखनेके लिये महलकी स्त्रियां कोठेपरचढ़ी उससमयमीराबाईजीकी माता गिरिधरलालजीके दर्शनकेहेतु जोमहलमें विराजतेथे तहांगई मीराबाई जी भी पांचवर्षकीथी खेलती भई अपनीमाताके पास चली गई और पूछनेलगीं कि हमारा दूलह कौनहै तो माताने हँसकरगोदमें उठाली और गिरिधरलालजी को बताकर कहा कि तुम्हारे दूलह येहैं तौमीराबाईजी ने तभी लज्जासे घूंघटकाढ़लिया और उसी घड़ी से ऐसी प्रीति गिरिधर लालजी में भई कि एकपलभी बिनदेखे औ चिंतनकरने के न बितातीथी फिर मा बापोंने चीतौरकेरानाकेबेटेसे मीराबाईजीका विवाहकरादिया,और बरातबड़ीभारी आई जबरानाकेबेटेके साथ फेरेहोनेलगे तो मीराबाईजी निज ध्यानसे गिरिधरलालजी के साथलेतीथी तनकभीभान रानाकेबेटेका,नहीं था जबबिदाकरने की तैयारीकी तोगिरिधरलालजीके बियोगको सहनहींसकी औ अत्यन्त रो२ कर बे सुधिहोगई,तब मा बापों ने अति प्रेमसे कहा कि सब कुछ तैयार जो कुछ चाहनाहो सो लेजाओ, तब मीरा-

बाईजी ने उस विकल दशासे कहा कि जो जीवदान देना चाहते हो तो गिरिधरलाल जी को साथभेजो मै तन मन से सेवा करूंगी। मा बापों को मीराबाईजी बहुत प्यारीथी इससे बिछुड़नेके समय गिरिधरलालजीको साथभेजा बाईजी भगवत् को डोलेमें विराजमान करके उनकी छवि निरखतीभई प्राणप्रियतमके संग चलनेसे अत्यंत प्रसन्नभई रानाकेघरपहुँची सासूने डोला उतारनेकी रीतिभांति करके पहिले दुर्गापूजन अपने बेटे से करवाया फिर मीराबाईजी से करनेको कहा मीराबाईजी ने उत्तरदिया कि यहतन गिरिधरलालजीके भेंटकरचुकीहूं सिवाय उनके और किसीके सामने शीश कैसे नवाऊं सासूनेकहा दुर्गाके पूजनसे सुहागकीवृद्धिहोतीहै इससेदुर्गापूजनउचितहै तो मीराबाईजीने उत्तरदिया कि मैं सदासुहागिनहूं मेरापति अजरअमरहै यह सुनमीराकी सासू रिसभरी अपनेपतिके पासजाय कहनेलगी कि यहबहू किसीकामकी नहीं है जो पहिलेहीदिन जवाबबताती है तो कब निहाल करेगी राना यह बातसुन क्रोधमें भरकरमीराबाईजी को मारनेकेलिये उद्यतहुआ परन्तु बहुत रोकनेसे रुका औ अलग मकानमें मीराजी को टिकाई जबएकान्त स्थानमेंरहने लगी तो बहुत प्रसन्नभई गिरिधरलालजी को विराजमानकरके शृंगार औ सजावट में दिनरात मनलगाया। और रानाकीबेटी जिसका ऊदाबाई नामथा वह मीराबाईजी को समझाने आई और कहनेलगी कि भाभी तू बड़े घरकी बेटी है कुछ ज्ञान औ विवेक सीख वैरागियों का संग छोड़दे इसमें दोनोंकुलको कलंक लगताहै तब मीराबाईजी ने उत्तर दिया कि सत्संगसे करोड़ों जन्मके कलंकछूटते हैं जिसको सत्संग प्यारा नहीं वही कलंकी है और हमारा तो सत्संगही से जीवनहै जिसकिसी को दुःखहो वह तुम्हारी सीख माने ऊदाबाई फिर आई और वृत्तान्त मा बापों से कहा कि मीराबाई भक्तिमें दृढ़लगी हैं किसीका कहना नहीं मानती तब तो राना बड़ाक्रुद्धहुआ और विषका कटोराभर

चरणामृतकानाम लेकर मीराजी के पास भेजा बाईजी ने चरणामृतकानामलेतेही शीशपरचढाया औ अतिआनन्द से पानकर गई राना देखतारहा कि अब मीराके मरनेका समाचार आवे, परन्तु मीराजीके मुखकी कांति क्षण २ और भी बढ़तीरही और उससमय मीराजीने भगवत्का शृङ्गारकरते एकविष्णुपदभगवत् के सामने कीर्तनकिया जैसे। रानजी जहरदियो हमजानी। मीराबाईजीको विषकी ज्वाला कुछ भी न व्यापी तब रानाने लाचार होकर डेवढ़ीदार रखदिया कि जिससमय मीरा साधों से बोलचाल करतीहो तब खबरकरना। मीराजी गिरिधरलालजी के साथ बोलचाल खेल आदि अन्य स्त्री पुरुषों के सदृश किया करतीथी एक दिन डेवढ़ीदार ने खबरदी कि इससमय मीराजी किसीके साथ बोलचाल हँसी ठट्ठाखेल कररहीहै राना झट तलवार लेकर पहुँच पुकारा कि केवाँरखोल मीराजीने खोलदिये जब भीतरगया और कुछ न देखकर बोला कि जिसकेसाथ हँसी टट्ठा होरहाथा वह कहां है मीराजी बोली कि तुम्हारे आगे विराजमान हैं आंख खोलकर देखलेओ तुम्हारा उनसे परदा नहीं है उस समय मीराबाई औ गिरिधरलालजी आपस में चौसर खेलतेथे जब राना पहुँचा तो भगवत्ने पांसा टालने को हाथ फैलायाथा रानाने जो हाथ भगवत्का फैलायादेखा तो लज्जित हुआ फिर आया रानाने यह प्रताप भगवत्का निज आंखोंसे भी देखलिया पर उसके मनमें कुछ भी न व्यापा निश्चयही जब तक भगवद्भक्तों की कृपा नहीं होती तबतक भगवत्भी कभी कृपा नहीं करते हैं राना तौ मीराजी के मारने के प्रबन्ध में था उसपर कृपा कैसेहो। एक धूर्त्त, कपटी साधुभेष बनाकर मीराजी के सामने आया और बोला गिरिधरलालजी की आज्ञाहै कि हमपुरुष को अपने अंग संगका सुखदेव इसहेतु आयाहूं मीराजी बोली गिरिधरलालजी की आज्ञा मेरे शिरपरहै पहिले आप भोजनप्रसाद करें फिर मीराजी ने जहां भगवद्भक्तों का समाज होताथा उस

मकानके आंगन में पलंग विछाया और शृङ्गारकरके उस धूर्त साधुको बुलाया और कहा पधारिये वह लज्जित हुआ तो बोली कि भय किसकाहै गिरिधरलालजी की आज्ञा पालनीही उचित है तव तो वह धूर्त सुनतेही पीलापड़गया और हृदयकी आंखें खुलीं तव तो त्राहि २ करके मीराबाई जी के चरणों में गिरा तब मीराबाईजी ने कृपाकरके उसे भगवत् सन्मुख कर दिया। अकबरबादशाह, मीराबाईजी की सुन्दरताका वृत्तांत सुन तानसेन को साथ लेकर दर्शन करने को गया पीछे भक्तिकी दशा देखकर अपने भाग्यको धन्यमाना औ बहुत प्रसन्नहुआ तानसेन ने जब एक विष्णुपद भगवत् के भेंट किया औ चलाआया फिर मीराजी दर्शन को श्रीवृन्दावन में आईं औ जीवगोसांईजी के दर्शन को गईं जीवगोसाईजी ने कहलाभेजा कि हम स्त्रियों को दर्शन नहीं देते तव मीराजी ने उत्तर दिया कि हम तो वृंदावन में सवको सखीरूप जानतीथीं औ पुरुष केवल गिरिधर लालजी को सो आजसे जानलिया कि इसब्रजके और भी पट्टीदारहैं गोसाईंजी यह सुनतेही नंगेपांयन आये औ मीराबाईजी के दर्शनकरके प्रेममें पूर्ण होगये फिर मीराजी सबवन औ कुंजों के दर्शनकरके अपने देशमें आईं तब भी रानाकी द्वेपबुद्धि ज्यों की त्यों देखकर द्वारकामें चलीगईं तहां भगवत् शृंगाररसमेंमग्न रहनेलगी जब रानाके नगरमें भगवद्भक्तों का आवना बन्दहुआ और नगरमें भांति २ के उपद्रव होनेलगे तब मीराजीका प्रताप मालूमहुआ और वहुत ब्राह्मण मीराजी के लेआनेकोभेजे उन्हों ने रानाकी ओरसे बहुतही विनय किया जब मीराजी का मन न देखा तो धन्ने बैठे तब मीराजी ने कहा कि मेराद्वारकामें निवास रनछोड़जी की कृपासे हुआ है सो उनसे विदाहोआऊँ सो वहां जाय गिरिधरलालजी के प्रेममें मग्नहोकर एक विष्णुपद भगवत्की भेटकिया अन्तकातुक यहहै। मीराके प्रभु गिरिधरनायक मिलि विछुड़न नहिं कीजे। भगवत् मीराजीका अत्यन्त प्रेमदेख

कर अलग न करसके तो उनको अंगमें मिलालिया विलम्बभये पीछे ब्राह्मणलोग ढूंढ़ते वहांपहुँचे तो मीराबाईजीको कहीं नहीं देखा परन्तु सारी जो मीराजी पहिरेथीं वह पीताम्बरके स्थानमें देखपडी तब भक्तिका निश्चय देखकर लौटआये और अकबरने मीराबाईजीके जानेपर चित्तौरको युद्धमेंजीतकर ध्वस्तकरदिया तब सबोंने रानाको धिक्कारा ॥ इतिपट्सप्ततितमःप्रदीपः ७६॥

करमैतीजीका दृष्टान्त ॥

यथामीरातथाजाता करमैतीहरेःप्रिया ॥
यथात्यक्त्वापतिस्वीयं हरिम्पतिमथावृणोत् ७१ ॥

जैसी मीराबाईजीभई तैसीही (करमैतीजी ) हरिकीप्यारी भई जिसने निज अज्ञानिपतिको छोड़कर श्रीकृष्णमहाराजको पतिकिया । वृत्तान्त । करमैतीजी परशुराम ब्राह्मणकी पुत्री ऐसी भगवद्भक्तहुई कि कलियुगजोहजारोंकलंक औ पीड़ासे भरा हुआहै वह करमैतीजी के निकट नहीं आया जिसने अनित्यपति को छोड़कर श्रीकृष्णमहाराजसे प्रीतिलगाई संसारके सबफांसों को तृणके सदृश तोड़कर वृन्दावनमें बासकिया । निर्मलकुलीन परशुराम ब्राह्मण धन्यहुये जिनकेघर ऐसी सुशील लड़कीजन्मी जिसकी भक्तिकी बड़ाई भगवद्भक्तोंनेकरी और श्रीकृष्णमहाराज की छविपर करोड़ों कामदेव निछावर होते हैं ऐसा चित्तको लगाया कि उसीके ध्यानचिन्तनमें मग्नरहती और ध्यानके सुखका ऐसा स्वादलेती कि शरीरमें न समाती संसारका सबकाम असार औ फीकाहोगया करमैतीजीका ब्याहतूपति लेनेआया तब मा बापोंने गहने वस्त्रकी बड़ी तयारीकी तो करमैतीजीकोशोच हुआ कि यहतन भगवत् भजनकेहेतुहै बिषयभोगादि सुखलेनेके निमित्त नहीं है इसहेतु देहत्यागने की इच्छाकी फिर शोचा कि भगवत्की प्रीति औ भजनसब अर्थोंपर मुख्यतरहै और जगत्की प्रीति सब अनित्यहै सो बिनाशरीर भगवद्भजन नहींहोसक्ता इस

से देहत्यागना उचितनहीं किन्तु भजनविमुखोंकोत्यागनाचाहिये यह निश्चय ठहरायके जिसभोर गवनाथा उसीरातको भगवत् की छविमेंछकीभई उसी ध्यानरूपके साथ निर्भय निराली अँकेली घरसे निकलकर चलखड़ीहुई प्रभातको चारों ओर आदमी ढूंढनेको दौड़े उनको आते देखकर एकमरे ऊंटके करंकमें घुस छिपरही और कलियुगके पापोंके दुर्गंधिके बराबरमरे ऊंट की दुर्गंधि नहीं तुलसक्ती इसीकारण वह दुर्गंधि जनाई न पड़ी और भगवत्के शृंगारके अंतरकी सुगन्धजो ध्यानसे मस्तक में समाईथी इससेभी दुर्गंधिका विकार न हुआ तीनदिन उसी करंकमें घुसीरही फिर उसमेंसे निकली एकमेला गंगाजी नहाने को जाताथा उसके साथ गंगाजीपर आई वहां स्नानकरके गहने आदि सबदान किये जबमथुराजी में गई तो वहां स्नान औ यात्रा की फिर वहांसे वृन्दाबनमें ब्रह्मकुण्डपर निवास करके भगवत् के ध्यान चिंतनमें रहनेलगी। करमैतीजीका पिता परशुराम, ढूंढता मथुराजीमें पहुँचा तहां से एक चौबेसे पता पाकर वृन्दावनमेंगया उनदिनोंमें इतनी आबादी कुञ्जआदिकी नहीं थी। वन सघन हरियाली बड़ी थी। वहां एकबरगदके वृक्षपरचढ़कर देखा कि करमैती जी भगवत् ध्यानमें विराजमान हैं तो वृक्षसे उतरकर पासआया औ अत्यन्त स्नेहसे रोता कलपता चरणों में गिरकहनेलगा कि तुम्हारे चले आनेसे मेरीनाक कटगई भाई बन्धु कलंक लगाते हैं औ सब बोलमारते हैं अब घरचलो औ ससरालमें जाकर सेवा पूजा कियाकरो यह वनहै कोई जन्तु तुमको खालेवेगा हमको दुःखहोग। और तुम्हारी मातामरीजातीहै उसे जाकर जिवाओ तब करमैतीजीने उत्तरदिया कि निश्चयकरके जिस २ तनमें भगवद्भक्ति नहीं वह तनमृतकप्रायहै जोजीनेकी चाहहै तोसब जंजाल तोड़ भगवद्भक्तिकरो और यह जोकहतेहो कि नाककटगई सो नाकतो पहिलेहीसे तुम्हारे मुखपर न थी क्योंकि मुख्यनाक तो

भगवद्भक्तिहै विना उस के सबनकटे फिरतेहैं शोचो कि पचास वर्ष तुम्हारी अवस्था भोग बिलास में बीती औ कबही तृप्तनहीं भये अब भी मोहनिद्रा से जागो कि सबतज भजनकरो इसथोड़े उपदेशसे परशुरामजी का अज्ञानदूर हुआ तब करमैतीजीने सेवाके लिये एकस्वरूप इनको देकर बिदा किया ये घर ले आकर निश्चिंतहो सेवामें लगे राजाने इनकी भक्तिका प्रचारसुनके मनुष्यबुलानेको भेजा तो बोले कि कुछ कामनहीं तबराजा आप गया औ निश्चय भक्ति देखकर प्रसन्नहुआ फिर बोला कि करमैतीजी के भी दर्शनकरने चाहिये जो मेरेबड़े भाग्यहों तोयहांभी आवें औ निज देशको पवित्रकरें इसआशा से बृन्दावन में गया करमैतीजी के दर्शन किये तो देखा कि करमैती जी ध्यानमें बैठी हैं और ऐसी अवस्थाको पहुँचगई कि जहां कुछ कहना सुनना नहीहै उसदशामें चलनेको नहीं कहसका और मना करने पर भी हाठसे एक कुञ्जकुटी करमैतीजी की बनवाय चरणों में दंडवत् कर चलाआया अबतक ब्रह्मघाटपर वह करमैतीजी की कुटी विद्यमानहै इतिसप्तसप्ततितमःप्रदीपः ७७॥

नरसीजीका इतिहास॥

स्वभक्तस्यविवाहादिकार्य्यंसाधयतिप्रभुः॥
यथासंसाधयामासनरसीकमनोरथम् ७८॥

भगवान् निजभक्तके बिवाह आदि कर्योंको अवश्य सिद्धकरते हैं जैसे नरसीजी के मनोरथको सिद्धकिया। वृत्तांत। नरसीजी महाराजका गुजरात देशमें ऐसे कुलमें जन्मथा जहां स्मार्तमत के सिवाय भगवद्भक्तिका तनक भी लेशनथा। और जो किसी को तिलक छाप धारणकिये देखते तो उसही की निंदाकरते फिर ऐसे परमभागवतहुये कि उसदेशभरको निष्पापकरके भगवद्भक्त करदिया। शृंगार औ माधुर्य्यकी उपासना में ऐसे हुये कि कहा नहीजाता। जूनागढ़के रहनेवाले थे उनके मा बाप जब मरगये

ता भाई भावजके पास रहनापड़ा एक दिन बाहरसे खेलते २ घरमें आकर भावजसे पानीमांगा तो उसने बोलीमारी कि ऐसाही कमाई करके लायाहै जो पानी पिलाऊं तब तो नरसीजी को लज्जाके मारे जीना कठिनहोगया और शिवजी की सेवामें गये वहां सातदिनतक बिना अन्न जल पड़ेरहे तब शिवजी ने बिचारकिया कि मैं जगत्का ईश्वर कहाताहूं जो कोई संसारी जन भी द्वारपै शरण आयेकी रक्षा करताहै और ये सातदिनसे पड़ाहै इसहेतु साक्षात् प्रकटहुये औ दर्शन देकर कहा जो इच्छा हो सो मांग नरसीजीने कहा मुझको मांगना नहींआता जोकुछ आपको प्रियहो वहही दीजिये तब शिवजीने चिंताकी कि मुझ को तो भगवद्भक्ति प्यारीहै जिसे समस्तकरके अपनी प्रिया (पार्वतीजी) को भी नहीं बतायाहै सो इस साधारण मनुष्य को कैसे बतलावें यह बिचार नरसीजी का सखीरूप बनाकर वृन्दाबनमें आये वहां देखा कि समस्त भूमि कांचनमयी रत्नजटित उसमें रासमंडल औ रासमंडलमें असंख्य गोपिका तिनके बीच में सिंहासन औ तिसपर प्रिया प्रियतम विराजमानहैं अत्यंत शोभासे रासविलास होरहाहै तालदेकर कबहीं लालजी आप प्रियाजी को औ कबहीं आपप्रियाजी प्रियतमको सांगीतबतातीहैं और कभीगलबाहीं देकर नृत्य औ कभी हाथपकड़कर परस्परगान करतेहैं और कभी दूसरी गोपिकाओं के नृत्यगानपर सावधान होते हैं और कभी हँसी ठट्ठाहोरहाहै और पखावज वीना आदि सब प्रकारके बाजेमिले स्वरसेबजते हैं छओंराग रागिनी सखीरूप से खड़ेहैं। नरसीजी ने जब यह समाजदेखा तो कृतार्थहोगये दुःख सुख से उसी घड़ी अलगहुये और शिवजी की आज्ञासे मशाल दिखानेलगे तब ब्रजकिशोर महाराजने प्रियाजीसे कहा कि आज यह सखी कोई नई आई है प्रियाजो बोली कि शिवजी के साथ है तब नटनागर महाराजने मन्दमुसकानसे कृपाकी दृष्टिसे नरसीजीकी ओर देखा औ फिर प्रियाजी ने वचनसे सहायताकी तब

आज्ञाहुई कि अबतुमजाओ और जो देखाहैं उसीकाध्यान चिंतन औ कीर्तन करतेरहो जब बुलाओगे तहांहीआकर सहाय करेंगे। नरसीजी भगवत्की आज्ञापायके परमआनंदमें मग्नहुये घरआये औ अलग एकघर बनाकर उसीध्यानमें रहनेलगे एकब्राह्मणकी लड़कीसे विवाहहुआ उससे एक लड़का दो लड़की उत्पन्नहुये संसारमेंभगवद्भक्तिको विख्यात किया जो साधुआते उनकीअच्छे प्रकारसेसेवाकियाकरते और रातदिनभगवद्भजनसे अन्यकामन धायहवृत्तान्त देखउनके सजातीय ब्राह्मण द्वेषताकरनेलगे परंतु नरसीजी तो भगवद्भजनरूप समुद्रमें मग्नथे और भगवत् सदा उनकी रक्षाकेलिये तयार रहतेथे इसकारण वे लोग कुछ न कर सके। एकबेर साधु आन उतरे लोगों से पूछा कि कोई साहूकार यहांहो तो हमको द्वारकाकी हुण्डी करावना है तो लोगोंने ठट्ठाकरके नरसीजी को बताया औ कहदिया कि जो वे न मानें तो तुम चरण पकड़लेना प्रार्थना करनेसे काम होजावेगा साधु आये और सातसौ रुपया नरसीजी के आगे रखकर चरणपकड़ लिये नरसीजी नाहीं करतेरहे वे न माने तो नरसीजीने जाना कि जो हरीच्छा तुर्त हुण्डी लिखदी औ उसमें ( सांवलशाह ) नाम लिखदिया वे साधु द्वारकामेंगये उस साहूकारकोढूंढा पता न लगा तो लाचार भूख प्याससे विकलहो नगरसे बाहरआये कि प्रसादपाकर ढूंढेंगे। सांवलशाह महाराजने विचार किया कि बिन-पक्के खोजके मेरा मिलना नहीं होता पर जो इनको अब कष्टदेताहूं तबभी मेरी गुमास्तगीरी औ नरसीजीकी साहूकारी में बट्टा लगताहै इसकारण बड़ी पगड़ी धड़ी धोती नीचा जामा पहिन कमरबांधकर कलम कानपररखके एकबहीबगलमें दबाये ऐसा साहूकार रूपबनाकर थैली रुपयों की कन्धेपर धरी औ जहां साधु टिकेथे तहां आये औ पूछा कि नरसीजीकीहुण्डी कौन लेकर आयाहै साधोंके सुनतेही मानो प्राण आगयेहों सब एकबेरही बोलउठे कि हमलायेहैं आपको ढूंढते २ हारगये आप

ने बड़ी कृपाकरी आये सांवलशाहनेकहा किसलिये लजवातेहो हमकोही ढूंढ़ते २ कई दिन बीतगये और पता लगा नहीं सो यह कारणहै कि जो भगवत्का निजदासहै वही हमको जानता है साधोंने हुण्डीदी औ सांवलशाहने नकद रुपया देकर नरसी जी को जवाव लिखा कि चिट्ठी आई रुपये रोकदिये मुझको अपना गुमाश्ता जानकर कामकाजहो सो लिखतेरहना साधूलोग यात्राकरके फिर नरसीजी के पास आये और वह चिट्ठीदीनी नरसीजी ने पूछा कि सांवल शाहको देखआये साधु बोले हां महाराज देख आये तवतो नरसी जी अतिही प्रेमसे मिले जब साधों को यह वृत्तांत मालूम हुआ तो वे भी उस प्रेम में रङ्गीन भये नरसीजी ने वहसव रुपया साधु सेवामें खर्च किया क्योंकि शाहकारुपया देना अवश्यहै और उसकेपास लेजानेवाला कोई है नहीं इससे साधुसेवासे परे कोई उपाय नहीं। नरसीजी की लड़कीके पुत्रहुआ और नरसी जी के घरसे छूछककी सामाँ नहीं पहुँची तब उस लड़की ने नरसीजी को कहलाभेजा कि इससास ने मुझको संतापमें डालरक्खा है जो तुमसे कुछ दियाजाय तो लेआओ नरसी जी एक पुरानी गाड़ी जिसके बैल अति दुर्बल थे तिसपर चढ़कर उस नगर के निकट पहुँचे लड़की ने जो इनकी कंगाली दशा देखी तो कहा कि जो तुम्हारे पास नथा तो क्यों आये नरसी जी बोले चिंताका कुछ काम नहीं अपनी सासके पास जाओ और जो कुछ सामान छूछक का चाहिये सो एक कागजपर लिखवा लेआओ तब सासने क्रोध करके सारे नगरकी सामाँ पहिरने की औ गहना सब लिखदिया जब नरसीजी की लड़की फर्दलेकरआई तो नरसीजी ने फेरभेजा कि किसी को कुछ वाकीरहाहो तो और लिखभेजो तबसासने रिस करके लिखदिया कि दोपत्थरभी भेजदेना पीछे एकपुराने छप्पर में इनको टिकाये औ नहाने वास्ते जल ऐसा उष्ण भेजा कि शरीरमें छाले होजावें तो भगवत् इच्छासे मेहवरसा जलशीतल

होगया तब नरसीजीने यथेच्छ स्नानकिया और वहां एककोठरीथी उसके पड़दाडालकर भगवत्कीर्तनमें लगे तवतो भगवत् आप रुक्मिणीजी सहित सब असबावजो २ कागजमें लिखाथा लेकर कोठरीमें आये रुक्मिणीजीको साथलाने का प्रयोजन यह है कि पुरुषोंकी पोशाकसामातो मेरे आधीन है और स्त्रियोंके सामानमें कुछ भेदरहै तो रुक्मिणीका दोषहो। एक यहशंकाभई कि नरसीजी उपासक शृंगाररसकेथे इससे राधाकृष्ण स्वरूपसे आनाथा। उत्तरहै कि नरसीजीने प्रिया प्रियतमके सुख समाज में दुचिताई होना अच्छा नहीं समझा इसहेतु द्वारकानाथजी का आवाहनकिया दूसरे भगवत्ने यह विचारा कि यह कार्य शृंगारके सम्बन्ध नहीं है गृहस्थी धर्म के सम्वन्ध काहै इससे उस रूपसे चलना चाहिये कि जिसने छूछक भाते बिवाह आदि सब काम अपने हाथकियेहों इससेरुक्मिणीजीको साथलिया। पीछे नगर निवासियोंको पहिरनेकी सामा बटने लगी और ऐसे २ असबावदिये कि जो किसीने आंखोंसे भी नहीं देखेथे और सब से पीछे दो पत्थर भी चांदी सोनेके दिये तो सारे नगरमें नरसी जीका यशहुआ कि अबतक समाजमें गायाजाताहै पीछे नरसी जी निजघर को चले तो एक स्त्रीका नाम उस कागज़पर नहीं चढ़ाथा उसको नरसीजीकी लड़की अपनी पोशाक देनेलगी तो उसने हठकिया कि जिसके हाथसे सबनेलिया उसीसे लेऊंगी तब नरसीजीने अपनी लड़कीकेसंकोचसे दोहरायके भगवत् को बुलाया और उसको भी सब असबाबदिवाया इसदेने से नरसी जीकी लड़की ऐसी प्रसन्नभई कि शरीरमें न समाई औ अपने बापकी भक्तिदेखकर अपने पति आदिको त्यागदिया और नरसी जीके साथचलीगई वहां भगवत्के भजनमेंलगी दूसरी लड़कीने अपना व्याहही नहींकराया वह भी भगवद्भक्तहोगई। जूनागढ़ जहां नरसीजीका घरथा तहां दो गानेवाले फिरतेथे परकहींएक कौड़ी भी उनको नहींमिली किसीने नरसीजीका नाम बतला

दिया वे पहुँचे औ नरसीजीको निजगानसुनाया नरसीजीबोले हम फकीरहैं हमारे पास देनेको क्या धराहै यहां तो भगवद्भक्ति धनहै जो यह चाहिये तो शिर मुड़ायकें आबैठो वे तुरंतही शिर मुड़ायआय बैठे तब तो नरसीजीकी दोनों लड़की औ दो गायक प्रेम औ भक्तिसे भगवत्का कीर्तन कियाकरते। नरसीजीका मामू शाह लंबनामें जूनागढ़के राजाका दीवानथा उसे नरसीजी का आचरण अच्छा न लगा औ राजाकेआगे इनको मिथ्या पाखंडी ठहरायके इसबातपर सन्नद्धकिया कि ब्राह्मणोंका समाजकरके नरसीजीको देशबाहर निकलवाय देने सो दोचोपदार नरसीजीके लेआनेवास्तेभेजे तबनरसीजी दोनोंलड़की औ गायकोंसेकहा कि तुम कहीं अलगहोजाओ हम राजाकेपासजाते हैं उन्होंने कहा कि राजाका क्याडरहै हमभी आपके साथहैं सो सब भगवत् कीर्तन करतेहुए राजाकी सभामेंगये तब सब सभावालोंके मुखकी श्रीनरसीजीके प्रतापसे जातीरही तब एकपण्डितने इनसे पूंछा कि स्त्रियोंको साथरखना किसपद्धतिमें लिखाहै नरसीजीने उत्तर दिया कि सब शास्त्र पुराण औ वेदोंकासार भगवद्भक्तिहै वह जिस किसीको प्राप्तभई वह भगवद्रूपहै क्या स्त्री औ क्या पुरुष भगवत्ने आप मथुरावासी स्त्रियों की श्लाघाकी औ उनके पति माथुर ब्राह्मणोंने उनके भाग्यकी बड़ाईकरी कि ये स्त्रियां परम बड़भागिनी हैं जो भगवत्का दर्शनपाया और हमारी सर्वज्ञता औ वेदपढ़नेपर धिक्कारहै जो भगवत्से विमुखहैं भागवत में लिखाहै कि वही बड़ाहै औ वही मुक्तिके योग्य सत्संगीहै जो भगवद्भक्त है फिर भगवत्का वचनहै कि मैं भक्तिके आधीनहूं इससे भगवद्भक्तिसे परे कोईपदार्थ नहीं भक्ति जिसको है वह तुच्छ भी सर्वज्ञ पण्डितहै और जो विमुखहै वह सर्वगुणी भी तुच्छहै ऐसे ही ऐसे उत्तरों से सबोंको निरुत्तरकिये इन्हींबातोंमें एकब्राह्मण ने नरसीजीके हूछकदेनेका वृत्तान्त राजासे कहा तो राजा विश्वासीहो चरणों में गिरा औ विनयकिया कि मेरेघरको आपकुछ

दिनरहके कृतार्थकीजिये नरसीजी राजाका आश्वासन करके चलेगये औ भगवत् भजनमेंलगे श्रीमूर्त्ति भगवत्की जो विराजमानथी नित्य उसके सन्मुख भजन कीर्त्तन कियाकरते थे और जिससमय ( केदारा-राग ) गातेथे उससमय भगवत् प्रसन्नहो; कर अपने गलेकी माला दियाकरते एकवेर साधुसेवाका प्रयोजनपड़ा केदारा रागिनीको साहूकारके यहां गिरवीधरआये कि जबतक रुपया न देंगे तबतक केदारा रागिनीको न गावेंगे उसीसमय शत्रुलोगोंने राजाको बहकाया कि नरसीजीकी मिथ्या प्रशंसा फैलरही है एक कच्चेतागेमें फूलोंकीमाला पहिराय देताहै तो वह माला आपही फूलोंकेभारसे टूटपड़ती है राजा उसकी परीक्षा लेनेपरहुआ राजाकीमाता भगवत् भक्थी उसने बहुतसमझाया पर कुछ न माना तब एक मोटेरेशम के डोरेमें मालाको बिनवाया औ भगवत् को पहिनाकर नरसीजीसे कहा कि हमभीतो देखें तुमको भगवत् कैसे माला पहिराते हैं तबतो नरसीजीने कीर्त्तन आरम्भ किया एक केदाराछोड़ सब राग -रागिनी गाये पर भगवत् प्रसन्न न भये औ मालानदिई तब नरसीजीने बोलीमारना आरम्भकिया कि आपतो नितात ग्वालवालेहै एक मालाके लिये ऐसी कृपणताकरी कि छातीहीसे लगारक्खीहै औ सिवाय उस केदाराके प्रसन्नही नहींहोतेहो भगवान् नारायण बड़ेमनोरथ पूर्णकरनेवालेहैं मेरेभाग्यमें तुमसरीखे ग्वालवालही लिखेगयेजोएकमालाकेलिये इतनासंकोचकररहेहो इसकृपणता से मेरीक्याहानिहै आपहीको कलंकलगेगा लज्जा आपकोही है जब आप भगवत् ने नरसीजीका यह वचनसुनालिया तो तुर्तही नरसीजी का रूपबनाय उस बनिये का रुपयालेकर उसके घर गये वह साहूकार नींदमें था उसने कहदिया कि मेरी स्त्रीको रुपयादेकर लिखतम फेरलेजा जब स्त्रीके पासगये तो उस बड़भागिनीने इनको दंडवत् प्रणामकिया औ रुपयेलेकर लिखतम फेरदी फिर कुछ भोजन कराकर विदाकिया। साहूकारको स्त्री

को जो दर्शनहुये सो कारण यह है कि एकबेर उस स्त्रीने नरसी जीसे बहुत बिनयकरके कहा कि मुझको भगवद्दर्शन होवे तब नरसीजी ने वचन दियाथा सो वचन पूर्णकरनेको आपने दर्शन दिये। जब नरसीजीने भगवत् के आगे राग केदारा आलापा तो वह काँकर नरसीजीके गोदमें डालदिया वे देखतेही प्रसन्न हुये शरीरमें न समाये औ ऐसा रागगाया तो और दिन तो माला भगवत्के गले से अलगहोजातीथी और उस दिन आप भगवत् ने निज गलेसे माला निकालकर नरसीजी के गले में डालदी सर्व जय २ कहने लगे और राजा विश्वासितहोकर चरणोंमें गिरा सब दुष्ट लज्जितहुये उन सबोंने भगवत् शरणली भगवत् ने बिना केदारा रागके कृपा न की तो कारण यह है कि पहिले तो नरसीजीके मनसे बड़ाई औ प्रेम उस रागिनी की जाती रहती सिवाय इसके साहूकार औ दूसरे लोगोंको उस रागिनी का विश्वास नहीं होता और नरसीजीने जो माला मिलने हेतु औ सिद्धाई दिखावने का जो हठकिया सो कारण यह है कि उस देशमें भक्तिका प्रचार न था और यह प्रभावदेखने से बहुत से लोगोंने भक्तिको अंगीकार किया जो इस सांची भक्तिकी परीक्षा में कुछ अनर्थ प्रकटहोता तो सब वेबिश्वासहो जाते और भक्तिका प्रचार उस देशमें न होता एक ब्राह्मण लड़की के बिवाह के निमित्त लड़का ढूंढ़ताहुआ जूनागढ़ में आया पर कोई लड़का रुचिके अनुसार नहीं मिला किसी ने नरसीजीका नाम लेदिया कि उनका लड़का बड़ासुन्दरहै उस ब्राह्मण ने नरसीजीका जो लड़का देखा तो बहुत प्रसन्नहुआ औ तुरंत तिलक विवाह का करदिया नरसीजीने कहा कि हम कंगालहैं तुम किसी धनवान् के घर लड़की ब्याहो तब वह ब्राह्मण, नरसीजी की बड़ाई औ प्रार्थनाकरके बिदाहुआ औ नगर में पहुंच लड़की के बापसे सब वृत्तांत कहा वह लड़कीवाला नरसीजी का नाम सुनतेही बिमन औ क्रोधयुक्तहुआ उस ब्राह्मण

से कहनेलगा कि हमको यह लड़का अंगीकार नहीं है टीकाफेरलाओ। ब्राह्मण बोला कि जिस अंगुलीसे तिलककर आयाहूं उसको जो काटडालो तो कुछ चिंता नहीं परन्तु संबंध नहीं फिरसकेगा तब वह लड़कीवाला लाचारहोकर बोला कि लड़की के भाग्यमें जैसा लिखा वही होगा शोचकरना कुछ प्रयोजन नहीं लड़की के विवाहमें ऐसा दहेजदेंगे कि कङ्गाली दूरहोजावेगी जब विवाहकादिन निकटआया तो उसनेलग्नपत्रिका भेजी तो नरसीजी ने उसे कहीं एकओर डालदी और न कभी विवाहकी चर्चा चिंताकरतेथे ज्योंके त्यों कोरे कारे भजन कीर्तनमेंलगेरहे जब चारही दिन बिवाहकेरहे औ नरसीजीने नामभी विवाहका न लिया तब तो श्रीकृष्ण स्वामी औ रुक्मिणीजी को विवाह कार्य्य सुधारनेकी चिंताहुई तो आप आये औ रुक्मिणीजी तो स्त्रियोंके कार्य करनेमें लगीं और श्रीकृष्णजी नरसीजीके करने योग्य कार्योंमें लगे स्त्रियोंने विवाह के गीतगाना आरम्भ किया मिठाई पकवान बटने औ नगारे बजनेलगे। (श्रीरुक्मिणीजीने) निज हाथसे लड़के के भालपर तिलककिया औ मरमट मुखपर मांडा और शृङ्गारकरके घोड़े पर चढ़ाया और जिस जिस जगह जो २ नेग आचारथे सो सब श्रीरुक्मिणीजी करतीरहीं ज्योंनार हुई अनगिनत मनुष्यआये तो ब्राह्मणलोगों ने ईर्षासे इतनी मिठाई औ पकवान लिया कि पोट बांध२ कर लेगये परवह अटूट भण्डार नहींटूटसका। फिर बरातकी तैयारीभई तो असंख्य हाथी घोड़े रथ औ पालकी पर सुन्दर २ जनेतीचढ़े जब बरातचढ़ी तो भगवत्‌ने नरसीजी का हाथ पकड़कर कहा कि तुम भी बरातमें चलो गुप्तमें यद्यपि हम साथहैं पर तथा प्रकटमें सबकाम आप अपने हाथोंसे करतेरहो नरसीजी ने कहा महाराज! आपजानें औ आपका काम जानें मुझको तालबजाना और आपका कीर्तन करनाही आताहै यह काम जहां चाहो तहांलिलो भगवत् ने विचारलिया कि सिवाय भजन कीर्तनके नरसीजीसे

काम न होगा तो आपही सब कामों में अधिष्ठाता हुये औ बरात समधीके नगर निकट पहुँची उससमय समधीने बरातके आने से पहिले अपने आदमी भेजेथे कि दिन निकट आये जो कुछ नहीं तो लड़का औ दो चार आदमियों को ही लेवायलाओ उन लोगोंने जो बरात ऐसी भारी देखी तो पूछा कि यहबरात किस कीहै लोग बोले कि ( नरसीजी-महात्मा ) की है तभी वे लोग समधीके पास आये औ ऐसी धूमधामसे भारी बरात आने का वृत्तांत कहा तो समधीने जो नरसीजीको कङ्गाल-समझलियेथे तो कुछ सामान नहीं तैयार कियाथा औ उनलोगों से कहा कि क्यों मेरीहँसी करतेहो उन्होंनेकहा हँसीनहीं सत्यकहतेहैं तब तो समधीकी बुद्धि जातीरही और जो ब्राह्मण टीकादेनेगयाथा उसे देखनेको भेजा वह बरातको देखतेही अत्यन्त प्रसन्नहुआ तनमें न समाया औ समधी से आयके कहने लगा कि इतनी बरात आतीहै कि तुम अपना सर्वधन लगानेसे घोड़ोंको घास भी नहीं देसक्तेहो जिसओर दृष्टि जातीहै उसीओर बरातसे सिवाय कुछ और नहीं देखपड़ताहै तब घबराकर समधी आप बरात देखने को गया औ बरातको देखतेही चार आंखेंहोगईं धनका अहंकार था वह दूरहोगया मर्य्याद रहनी कठिन समझी तब तो लाचार हो तिनलेकर उस तिलक चढ़ानेवाले ब्राह्मणके चरणोंमें गिरा कि अब मेरीलाज तुम्हारे सिवाय और किसीसे नहींरहसक्तीहै तब वह ब्राह्मण उसको नरसीजी के पासलेगया उसने जातेही नरसीजी के चरण पकड़लिये औ हाथ जोड़के प्रार्थनाकी कि कृपाकरो मुझको जगत्में रखलेओ यह कहकर रोनेलगा औ फिर चरणपकड़लिये नरसीजी उससे मिले औ कृपाकर उसेभगवत्के दर्शन कराये औ उसकी धीरधराई कि दोनोंओरकीलाज इन महाराजके आधीनहै यहसमझाय बिदाकिया और भगवत्ने दोनोंओरका काम सँभाला और इस धूमधामसे बिवाहहुआ कि वर्णन नहीं होसका जब बिवाहकरके नरसीजी घर आये तब

भगवत् भी बिदाहो द्वारकाको पधारे और भगवद्भक्तिका प्रताप यश सारेसंसारमें विख्यातहुआ। यहप्रसंग नरसीजीका पढ़सुनकर जिसको भगवत्के चरणोंमें भक्ति उत्पन्न नहींहोवेतो उसरे अधिकभाग्यहीन कोई नहीं क्योंकि यह चरित्र अच्छेप्रकार से बोधन करता है कि भगवत् शरणहोने से कुछ चिंतासंसार औ परलोककी नहीं रहती आपही भगवत् सबपूर्णकरते हैं॥ इत्यष्ट सप्ततितमः प्रदीपः ७८॥

## हरिदासजीका इतिहास॥

भक्तप्रीत्यार्पितंवस्तु प्रभुर्गृह्णातिसत्वरम्॥
हरिदासार्पितन्तैलम्प्रीतोविष्णुर्यथागृहीत् ७३॥

निजभक्तकरके प्रीतिसे अर्प्पणकरी वस्तुको भगवान् शीघ्र स्वीकार करलेते हैं। जैसे हरिदासजीकरके प्रीतिसे अर्प्पणकिये तैलको भगवत्ने आप निज अंगमें लगाया॥ वृत्तान्त॥ स्वामी (हरिदासजी) सब शृंगार उपासकों के शिरमौर हुये और उपासनामें दृढधारणा जैसी उनकीहुई उसकावर्णन नहीं होसक्ता है कि अपने समयमें अद्वैतथे औ सखी भावनासे प्रियाप्रियतम के सुख समाज औ नित्य बिहारमें अनुक्षण मग्नरहतेथे और कुंजबिहारी, राधारमण, राधाकृष्ण ये नाम जिह्वापर रखतेथे। भक्तिका प्रताप ऐसाथा कि देश २ के राजा दर्शनकी आशाकरके द्वारपर रहतेथे भगवत् के भोग लगाने के पीछे मयूर और बन्दर इत्यादिको देखते तो बड़ीप्रीतिसे भोजन करवाते इसभावसे कि नटनागर महाराज उनकेसाथ हँसी औ दिल्लगी ठट्ठाकरते हैं। और जिनके कीर्तन करने गानविद्याके आगे गन्धर्व भी लज्जित थे कोई सेवक स्वामीजीकेलिये अतिउत्तम विष्णुतैल अर्थात् (अतर) बड़ेपरिश्रम से लायाथा उससमय स्वामीजी यमुना के पुलिनपर बैठेथे तो सीसा लेकर सब अतर उस तरंगमेंडाल दिया सेवकको बड़ादुख औ शोचहुआ तो कहनेलगा ..

अनुक्षण लवलीन रहतीथीं पतिके प्रेमकातनकभी चिंतन नहीं था भगवत् प्रीति औ भक्तिको मुख्य समझकर अपने विश्वास से चलायमान न भई अपने प्रेम औ भक्तिको भली भांति निबाही सत्यकरके अंधेरे घरकी चांदनी भई राजामानसिंह आमेरके अधिपतिथे तिनके भाई ( माधव सिंहकी रानीथी ) उसकी एक सहेली भगवद्भक्तिमें रँगीभई भगवत्का नाम नवलकिशोर, नंदकिशोर, व्रजचन्द्र, मनमोहन, विहारीजी इत्यादि कह २ के प्रेमसे आंखोंमें जल भरलाती औ प्रसन्न हुआकरती रानीने जो भगवत्के नामसुने तो पूछा कि बार २ किसका नामलेतीहै जो मेरे मनको अपनी ओर खींचतीहै सहेली ने उत्तरदिया कितुम क्यापूछतीहो अपने सुहागरँगमें मग्नरहो भगवद्भक्तोंकी कृपा से मुझको यह अमोल्य रत्न प्राप्तहुआहै तब रानीजीको प्रेम उत्पन्न हुआ और पूछनेलगी कि किसीप्रकार वहमदनमोहन महाराज मुझकोभी प्राप्तहोवें। सहेलीने जो सत्यप्रेम रानीजीका देखा तो भगवत्के चरित्र रानीजीको सुनाये और जो भगवत्के शृंगार रसिक भक्तहुये हैं तिनकी कथाकही तवतो रानीजीने उससहेली से टहललेना छोड़दिया औ उसे गुरूसमान समझी और मर्य्याद बहुतकरने लगी और भगवत्के चरित्र दिनरात सुनाकरती जबअच्छे प्रकार भगवत्के चरित्रों में मनलगाया तो दर्शन की चाहहुई तोसहेलीसेकहा कि ऐसा कुछउपाय करनाचाहिये कि जिसमें भगवत्के दर्शन होवें कि प्राणसुखीरहैं क्योंकि वह मनमोहन मनमें समाय गयाहै तब सहेलीने कहा कि उस के दर्शन बड़ेकठिनहैं हजारों ऋषीश्वर आदि घरबार छोड़कर धूलमें लोटतेहैं औ दर्शननहीं पाते परन्तु तुम प्रेमसे शृंगार औ रागभोग में लवलीन रहाकरो तब रानीजीने नीलमणिस्वरूप भगवत्को विराजमानकिया औ बड़ीप्रीति से भावसेवामेंलगीं भांति २ के शृंगार औ रागभोग और नानाप्रकार के लाड़लड़ानेलगी तो थोड़ेही समयमें उसपदवीको पहुँची कि स्वप्नमें भगवत् से बात

चीतहुआ करती निश्चयकर करोड़ों उपाय औ योग यज्ञ तप दान से प्रेमकीराह कुछ निराली ही है पीछे यह आकांक्षाहुई कि भगवत्के साक्षात् दर्शनहोवें तो इसी सहेली से मनकीबात चीतकही तब उसने उत्तर दिया कि एकमकान अपने महल के निकट बनवाओ और मनुष्य अपने सावधानकरो कि जो कोई भगवद्भक्त आयाकरें उनको लेआकर उसमकानमें टिकावें औ भोजन इत्यादि सेवा उनकी अच्छेप्रकार होतीरहे और तुम परदेमें बैठके उनके दर्शन कियाकरो इसउपायसे विश्वासहै कि ब्रजकिशोर महाराजके दर्शन अवश्य होजावेंगे रानीजीने वैसाही सबकिया और साधुसेवामें बिरहिन औ प्रेममतवालियों के सदृश दिन गिन २ काटने लगी एकबेर ब्रजभूमि के रहनेवाले साधु आगये जो ब्रजचन्द महाराजके रंगमेंरँगेहुये थे तो उनके दर्शन औ बोलवतरानसे रानीको अत्यन्त प्रेमउपजा तब उस सहेलीसे पूछा कि इनमें वह कौनसा शरीरहै जिसकी लज्जासे साधुसेवा औ सत्संगमें व्यवधान पड़ताहै मेरे देखने में सबअंग बराबरहैं भगवत्स्वरूपके रससे परमआनन्द रसमें मग्नहोना [illegible] र जहां भगवद्भक्त थे [illegible] पर न मानी आयके चरणपकड़ दण्डवत् प्रणामकिया औ आधीनता पूर्वक अपने श्री हस्तसे भोजनकराने औ सेवाकरनेका मनोरथ करके विनयकिया कि जो आज्ञाहोय सो करें उससमयकी दशा रानीकी लिखने में नहींआती कि प्रेमसे सोनेकाथाल भगवत् प्रसादका निजहाथसे लेकर उनको भोजनकरवाया पानदिया औ चरणों में गिरी वे हरिभक्त यह प्रेमभक्ति रानीजीकी देखकर चकित होरहे और जब सब परदा औ संकोच रानीने उठायधरा तो नगरमें शोरहुआ लोग देखनेको आये महलपर मुसद्दी तैनाथा उसने राजा को सब वृत्तान्त लिखा कि रानीने निर्भय होकर सब लज्जादूर की और मुण्डी वैरागियोंकेसाथ बैठती है राजाने जो पत्र पढ़ा तो

लकारों की जबानी जो सब हालसुना तो जलकर भस्म होगया संयोग वश ( कुँवर प्रेमसिंह ) जो रत्नावली के पेटसे जन्माथा वह अपने बापसे मुजराकरने इसरूपसे आया कि भालपर तिलक औ गलेमें कण्ठीमालाथी जिससमय आकर सलामकिया तो माधवसिंहने उस कुँवरको (मुण्डिनी)का अर्थात् वैरागिनका बेटाकहा औ कहकर महल में चलागया तो प्रेमसिंह को अपने पिता के क्रोधकरने की चिंताहुई तब लोगोंसे वृत्तान्त पूछा सब वृत्तान्त समझने पीछे विचार किया कि जो हमनाथुहैं तो इससे अच्छा और क्याहै भगवद्भक्ति अंगीकार करनी चाहिये तबअपनी माताको लिखभेजा कि जो तुम्हारी प्रीति भगवत् के चरणों में सांची है तो राजाने आज सभामें हमको ( मुण्डिनी ) का कहा है उसीको सत्यकरना चाहिये और मृत्युको शिरपर पहुँचा जानकर किसीप्रकारका शोचकरना योग्य नहीं रानीने जो वहपत्री पढ़ी तो भगवद्भक्तिमें रंगीनहोकर उसी घड़ी जो केश अतर फुलेलसे भीगेथे दूरकिये और पहिले साधुओंको भोजन इत्यादि सेवाकरके महलों में जातीथी उसी दिनसे महलमें जाना बन्द करदिया और राजाकीओरसे जो खर्चके निमित्त बन्धानथा तिस का लेना छोड़दिया औ अपने पुत्र प्रेमसिंहको लिखभेजा कि आज मुण्डीहोगई तुम आनन्द से रहना सुनतेही प्रेमसिंह बहुत प्रसन्नहुआ लोगोंको इनामदिया औ नौबत बजवाई तब राजा माधवसिंह ने लोगोंसे पूछा कि आज कुँवरसिंहको कौन खुशी भई है तब लोगोंने उत्तरदिया कि पहिले तो रानीजीने मुण्डी का स्वांगही भररक्खाथा और अब सच्ची मुंडीहोगई केश शिरके दूरकरदिये तब तो सुनतेही राजा अत्यन्त क्रोधमें भरा कुंवर औ उसकी माताकाघातक शत्रुहोगया हथियार बांध फौजलेकर कुंवरको मारने के लिये सवारहुआ कुँवरने जो वृत्तान्तसुना तो वह भी युद्धको तयारभया और संयोग मारकाटकी निकट पहुँच गई थी तब मंत्रियोंने राजाको समझाया कि पुत्रपै मारने को

चढ़ना योग्य नहीं संसारमें अपयशहोगा उधर कुँवर प्रेमसिंह
को समझाया उसने उत्तरदिया कि संसारके विषय भोगके हेतु
अनेक शरीर धारण किये फिर वे शरीर जातेरहे जो एक यह
भगवत् की राहमें लगे तो इससे उत्तम और क्या है तब तो
राजमंत्रियोंने चरणपकडलिये औ विनयकिया तव यह ठहरा
कि जो माधवसिंह कमरखोलके मकानपर चलाजावे तो हम
को भी बे प्रयोजन युद्धकरना अंगीकार नहीं है सो ऐसाहीहुआ
फिर रात्रिके समय राजा माधवसिंह रानी के मारनेको दिल्ली
से कूचकरके अपने नगरमें आया औ लोगोंसे सब बृत्तान्त सुन
के महलमें गया मंत्रियोंसे सलाहकरी कि इस रानीने हमारी
नाककाटली ऐसी स्त्री के मारदेने में कुछ दोष नहीं तब एक बु-
द्धिमान् मंत्रीने उत्तरदिया कि तरवार आदि से मारना उचित
नहीं है तहां एक नाहरको छुटवायदेओ वह मारखावेगा सबकी
यह सलाह ठीकहुई तो प्रभातहीको यह बात करी तब रानी
भगवत् सेवाकरके उठीथी और भगवत् प्रेम का जल आंखों में
भराथा तब उस सहेलीनेकहा कि देखो नाहरआया रानीनेकहा
कि यहां नाहरका क्या काम है ये नृसिंहजी पधारे हैं यह कह
अत्यंत भक्ति प्रेमसे संमुखआई औ दण्डवत् प्रणामकरके बिनय
किया कि आज मेरे धन्यभाग्य जो दर्शनदेके पवित्रकरी भगवत्
ने जो शुद्धभावदेखा तो उस नाहरहीमें निज नृसिंहरूप दिखा-
या तब रानीजीने भक्तिसे पूजनकिया औ फूलमाला अर्पण
करके आरतीउतारी तब भगवत् ने बिचारा कि पूजन तो करा-
लिया पर काम भी तो नृसिंहपनका करना चाहिये इसहेतु जैसे
( नृसिंहजी ) हिरण्यकशिपुके मारने के समय खंभसे भयंकर
रूप प्रकटभयेथे तैसेही मंदिरसे बाहिर आये और जो लोग भक्ति
से बिमुखथे उनको मार निकलगये माधवसिंहने भी यह हाल
सुनलिया और जानलिया कि रानी ज्योंकीत्यों भजनमें ल...
तब तो विश्वासयुक्तहो आधीनहोकर आया औ द...

साष्टांग दंडवत् किया तो उस सहेलीने रानी से बिनयकिया कि राजाजी दंडवतकरते हैं रानीने कहा लालजी महाराजको करैं फिर बिनयकिया कि एक निगाहभरके देखना चाहिये रानी ने उत्तरदिया कि यह निगाह एक ओर लगी है दूसरी ओर नहीं जासक्ती तब राजाने हाथजोड़के प्रार्थनाकरी कि यह राज्य खजाना फौज सबआपकाहै जो जीचाहै सो करो फिर रानीने कुछ उत्तर नहीं दिया भजन में लगी रही। एकबेर राजामानसिंह औ माधवसिंह, दोनों नावमें बैठकर एकबड़ी गहरी नदीकेपार जातेथे नाव डूबनेलगी तब घबराये औ कहनेलगे कि अब क्या उपाय करना चाहिये तब रानी की भक्तिका प्रभाव याद किया. औ बारंबार उसका नाम लिया तब नाव चली राजा मानसिंह ने आकर भक्ति से दर्शनकिये औ दृढभक्तियुक्त हुआ॥ इति अशीतितमप्रदीपः ८०॥

बिल्व मंगलका दृष्टान्त॥

अत्यंतव्यभिचारेऽपिज्ञानंसम्यक्प्रजायते॥
महत्वंचाप्यविदुषोयथामीह्लिल्वमंगलः ७५

अत्यंत व्यभिचारहोनेसे भी परिणाम में ज्ञान उत्पन्नहो जाताहै और अज्ञानी भी पुरुषको महत्व बड़ापनहोजाता है जैसे बिल्वमंगलजी भये। दृष्टान्त। बिल्वमंगलजी श्रीकृष्ण स्वामी के कृपापात्र आनन्दस्वरूप परमभागवतहुये करुणामृत औ गोविंदमाधव ग्रंथ और स्फुटस्तोत्र संस्कृत में ऐसे रचना किये कि रसिक भक्तों के माला हारके सदृशहैं दक्षिण देशमें कृष्ण वेणा नदीके निकट रहने वालेथे और चिंतामणि नाम वेश्याके प्रेममें ऐसे मग्नथे कि संसारकी लाजतजकर उसके प्रेममें फँसेहुये उसीके घर रहाकरतेथे जातिके ब्राह्मणथे पिताके श्राद्धके दिन कर्मकरते औ ब्राह्मण जिमाते दिन थोड़ा रहगयातो विकलहोकर चले वह वेश्या नदीके उसपार रहती थी जब नदीपर पहुँचे

तो बाढ़पर देखी और नाव आदि उतरनेकी सामा कुछ नहीं मिली तो अत्यन्त बेचैनहुये औ बिन निज प्रेमीके जीवन व्यर्थ जाना तो नदी में कूदपड़े कुछ सुधि अपने विरानेकी न थी उसी वेश्यासे मिलनेका ध्यानथा जब नदीमें डूबनेलगे तो एक मृतक बहाजाताथा उसे पकड़लिया औ विचारा कि उस प्यारीने यह नाव भेजी है उसपर चढ़कर किनारे पहुँचे वहां से गिरते पड़ते बड़े वेगसे उस वेश्याके द्वारपैपहुँचे आधीरातथी द्वारबन्दथा भीतर जानेकी चिंतामें हुये संयोगवश वहां एक सर्प लटकरहाथा तो विचारा कि उस प्यारी ने कृपाकरके यह रस्सी लटकाईहै उसे पकड़कर चढ़े और वहां से जब उतरनेकी राह न पाई तो आँगनमें कूदपड़े तब घरकेलोग जगे औ दीपकबारकरदेखा तो बिल्वमंगलजी हैं स्नान करवाया वस्त्र पहिराये औ पूछा किस प्रकार आये तब उत्तरदिया कि तुम्हींने तो नदीपर नावकोभेजाऔ द्वारपै रस्सी लटकाई थी उसी के अवलम्बसे आयाहूँ तब वेश्याने छतपरचढ़करदेखातो बड़ाभारी अजगरलटकरहाहै तबवहवेश्या क्रोधकरके कहनेलगी कि जिसप्रकारमेरे इस अस्थिचर्ममयशरीर में तेरामनलगाहै तैसे श्यामसुन्दर नटनागर महाराजमें मनको क्यों नहींलगाता जिसकरके संसारसागरसे तिरजावे और दोनों लोकसुधरें मैंतो प्रभातही से युगुलकिशोर महाराजका स्मरण भजनकरूंगी तू जो चाहे सो करना तब तो बिल्वमंगलजी के हृदयकी आंखें खुलगईं और श्रीव्रजचन्द्रकी रूपमाधुरी ने तुर्त हृदयमें प्रकाशकिया और उसीसमय ऐसा माधुर्यरस प्राप्तहुआ कि परमआनन्दसे उसरसमें मग्नहुये वह रात तो भगवत् चरित्र औ वृन्दाबनकुंज चिन्तनमें व्यतीतहुई और प्रभातहोतेही दोनोंने अपनी २ राहली मनमें परमशोभाधाम भगवत् का ध्यान औ जिह्वापर नाम औ आंखों में प्रेमकाजलथा बिल्वमंगलजी माध्वसम्प्रदाय में (सोमगिरिनाम) सन्यासी के शिष्य भये औ भगवत् के रूपअनूपकी चिंतनाकरतेहुये हजारों श्लोक

भगवत् रसचरित्रके गुरुसे पढ़े और आप रचनाकिये एकवर्षतक गुरुकी सेवामेंरहे फिर श्रीवृन्दाबनके दर्शनकीचाहहुई तो उसी प्रेममें मतवाले होकर चले राहमें रहें एक नदी किनारे पहुँचे वहां स्त्रियां सब स्नानकररही थीं तो एक परमसुन्दरीको देखकर आसक्तहुये औ अपने भेषको भूलकर उसके पीछे चले वह तो अपने घरमें चलीगई और विल्वमंगलजी देखने की चाहमें द्वार पै खड़ेरहे उस स्त्रीकापति भगवद्भक्तथा उस परमभागवतको द्वार पै खड़ा देखके स्त्री से वृत्तान्त पूछा उसने सब आसक्तहोने औ साथआनेका वृत्तान्त वर्णन किया तब उसने विल्वमंगलजी से हाथ जोड़कर विनय किया कि मेरे घर पधारिये जो चरणरज पड़ने से गृह पवित्रहोवे औ सेवाकरके धन्यहोऊँ यह कह घर में लेगया, अटारीपर टिकाये औ अपनी स्त्री से कहा कि शृंगार करके सबप्रकारसे सेवाकर क्योंकि साधुसेवासे भगवत् प्राप्तहोते हैं वह स्त्री शृंगारकर औ थालमें भगवत् प्रसादलेकर विल्व जी की सेवामें पहुँची विल्वमंगलजी उसे देख औ उसके भक्ति भावको विचारकरके अपने आसक्तमनको सावधान किया औ जानलिया कि सब उपाधि औ बखेड़े आदिकी मुख्यकारण ये मेरी आंखेंहैं जो येही नहीं होतीं तो क्यों मनआसक्त होता तो उस स्त्री से कहा कि दो सुई लेआव वह लेआई तब बिल्वमंगलजी ने उन दोनों सुइयों से अपनी दोनों आंखें फोड़लींतो वह स्त्री डरीभई अपने पतिकेपासगई औ सबवृत्तान्तकहा वह भक्त सुनतेही डरता कांपता आपके चरणों में गिर रोरोकर विनय करनेलगा कि ऐसा हमसे क्याअपराध हुआ जो आपकी यहदशा भई तब विल्वमंगलजी ने उसको धीरधराकर कहा कि तुम्हारी साधुसेवा और भक्तपन में कुछ कसर नहीं पर हमारीही साधुता में भेदहै तब उसने कहा कुछ दिन आप यहां रहिये जो सेवाकर सकूँ विल्वमंगलजी बोले तुमने ऐसी साधुसेवाकी जो किसी से नहीं होसक्ती अबतुम भगवद्भजनकरो यहकहकर चलदिये ऊपर

की आंखोंको दूरकर औ भीतरकी आंखोंसे कामरक्खा वृन्दावन में पहुँचे एक वृक्षके नीचे बैठकर भगवत् के भजन स्मरण में लवलीनभये तब भगवत्ने देखा कि मेराभक्त भूखा प्यासाहै तो आप आये औ महाप्रसाद भोजन करवाया फिर जहां विल्वमंगलजी बैठेथे तहां धूप आगई तब भगवत्ने कहा चलो तुमको छांहमें बैठालदेवें सो हाथपकड़कर गहरीछायामें लेगये तब तो विल्वमंगलजी हाथपकड़ने औ मधुर वचनके बोलने तथा कोमल स्पर्श से जानगये कि आपही हैं तोहाथ पकड़लिया औ छोड़नेको मननहीं किया तबतो भगवत् ने छुटानेको बलकिया तो विल्वमङ्गलजी ने भी किया निदान भगवत् हाथछुड़ाकर लंबेहुये तब विल्वमङ्गलजी बोले कि भला इसघड़ी तो बन आई आपकी चल निकली पर अब की मनमें पकड़ताहूं देखूं तो क्योंकर भगजाओगे सो ऐसाही किया सबओरसे मनकी वृत्तिको खैंचकर एकटक उसी स्वरूपमें रोपदियह तो जोयोगी जनोंके समाधिलगानेपरभी मनमें आकर निकलजाताहै वही रूपदृढ़होकर विल्वमङ्गलजीके हृदय में स्थितहुआ जब अच्छे प्रकारमनको दृढ़ताहोगई तो बनसे उठकर वृन्दावनमें आये औ यहचाहहुई कि जोआंखेंहोतीं तो भगवत्के कुञ्जमहलके विहार स्थानऔ भगवत्के श्रीविग्रहस्वरूपों का दर्शन करतेतो भगवत्ने उनके मनकी रुचिजानकर पहिले तोउस बांसुरीकी ध्वनि सुनाई जोयोगमायाकीभी मायाहै औफिर दोनों आंखोंको प्रफुल्लित करदी जैसे सूर्य्यके उदयसे कमल खिलजाते हैं तब तो विल्वमंगलजी ने बनलता औ कुंज भगवत् के विहारस्थान आदि का दर्शन किया फिर शोभायमान भगवत्की श्रीमूर्त्तियें देखीं फिर विल्वमंगलजीने करुणारसमयग्रंथ औ कई स्तोत्र ऐसे २ रचना किये जिनसे युगलस्वरूपमें अवश्य मनलगे उन्होंने निजग्रन्थ के मंगलाचरणमें ( चिन्तामणि ) नाम धरा इसके दोकारणहैं एक तो चिन्तामणिगुरुथे उनकानाम दूसरा येकि वह चिंतामणि

वेश्याभी थी पर उसका उपकार ऐसा माना कि उसे गुरुसे भी अधिक समझा औ जयपद उसके निमित्तधरे उस चिन्तामणि बड़भागिनी ने विल्वमंगलजीका वृत्तान्त सुना कि भगवत् के दर्शनहुये औ परमभक्तहोगये हैं तो पहिले प्रेमकानातासमझकर वृन्दावनमें आई तब विल्वमंगलजी उसे देखकर उठे और बड़ा सत्कार औ आदरभाव किया और दूधभातकादोना निज महाप्रसादका आगे धरा चिन्तामणिने पूछा कि यह भोजन कहां से आया है तो बोले कि यहमहाप्रसाद भगवत्ने तुमको कृपाकरके दियाहै वह बोली कि जो ऐसाहै तो भगवत् कृपाकरके मुझको अपने हाथसे देवेंगे तभी लेऊंगी यहकहके भगवत्भजनमेंलगी भगवत्ने जो अपारप्रीति चिन्तामणिकी देखी तो परमप्रीति औ कृपासे आप दोना दूधभातका लेकर चिन्तामणिके निकट आये कि जिसकी ब्रह्मादिक भी चाहना करते हैं औ दर्शन देकर चिंतामणि को कृतार्थ किया ॥ इतिएकाशीतितमःप्रदीपः ८१ ॥

सूरदास मदनमोहनका इतिहास ॥

भक्तआसीच्छूरदासमदनोमोहनाभिधः ॥
साधुसेवांदधानोसौभयनापत्स्वकप्रभोः ७८ ॥

सूरदास मदनमोहन महाभक्तहुये जिन्होंने साधुसेवाकरके निजस्वामीका भयनहींमाना ॥ वृत्तान्त ॥ सूरदास मदनमोहन ब्राह्मण सूरध्वज काश्मीरी किसी सखीका अवतार परमभक्त माध्वसम्प्रदाय में भये यद्यपि मुख्यनाम उनका सूरदासथा पर श्रीमदनमोहनजी महाराज में अत्यन्त प्रीतिरखनेसे नाम उनका (सूरदास–मदनमोहन) विख्यातहुआ वाहर भीतर की आंखें कमलकेसदृश प्रफुल्लितथीं गानविद्या औ काव्यरचना में बहुत अभ्यासरखते थे प्रिया प्रियतम के जो गोप्यचरित्र हैं उनके परम आनन्द औ सुख रसके अधिकारी हुये और नव रसों में जो शृंगार रस मुख्य औ सब से पहिले है उसको अपने

कवितार्ई में अच्छावर्णन किया कविताई उनकी तुरन्त मुख से निकलतेही विख्यात होजाती थी सो एक दिन में चारसौ कोश तक पहुँचजाती थी मानों वह काव्यही पंख लगाकर उड़ताथा। पूर्व के जिले में बादशाह की ओर से संदीले के सूबेदारथे बाजार में खांड़ दिव्य देखी तो विचार में आया कि यह मदन मोहनजी महाराज के भोगको मालपुओंके योग्यहै खरीद करने की आज्ञादी तब लोगों ने कहा कि इसकी खरीद से बीसगुने दाम किराये के पड़ेंगे और वृन्दावन तक मिश्री से भी महँगी पहुँचेगी सूरदासजी ने कहा कि खर्चकी कौन चिंताहै भगवत् प्रीति पर दृष्टि चाहिये सब गाड़ियों में भरवा कर पहुँचादी संयोगवश वृन्दावनमें रातके समय पहुँची तो पुजारियों ने भंडारे में रखवालिया कि प्रभात को भोगलगावेंगे वे भगवत् जो निज भक्त के सौगात की राह जोहिरहे थे भूखे के कारण धैर्य न धर सके तो गोसाईंजी को स्वप्नमें आज्ञादी कि इसी घड़ी मालपुवे बनके भोग लगें सो ही तय्यार होकर भोगलगा तब संतुष्टभये औ शयन किया। धन्यहै उनकी माया जो कोटानुकोटि ब्रह्माण्डको एक क्षण में ग्रासकरलेतीहै सो ईश्वरभक्ति के वशहोकर क्षुधापन प्रकट करैं। सूरदासजी ने एक विष्णुपद की तुक में अपनेको भगवद्भक्तोंकी जूती उठानेवाला वर्णन किया तो परीक्षा के लिये किसी साधुने इनसे कहा कि हम मदन मोहनजी के दर्शन करआवें तुम हमारे जूतो की रखवारी करना तब सूरदासजी ने बहुतही प्रसन्नहो हाथ से जूती उठाई औ कहने लगे कि आज तक तो इस कार्य्यकी कहनावतों से बातों ही मे जमा खर्च थी आज मेरी बांछा पूरी भई जो यह कार्य्य मुझ को सौंप भी दियागया गोसाईंजी ने कई वार बुलाया नहींगये बिनयकर भेजी कि साधु सेवा करें पीछे दर्शन को पहुँचूंगा तो गोसाईं जी औ साधु इस बिश्वासपर बहुत प्रसन्नभये संदीले के सूबेसे तेरहलाखरुपया तहसीलकरआया सो सब साधु सेवा

में लगाया और कुछ हिसाब बादशाह का न किया जब बाद-शाह के मनुष्य रुपैया लेनेको आये तो सन्दूककंकरों से भरकर सब सन्दूकोंमें एक २ परचा लिखकर डालदिया उस में यह लिखा था ( तेरहलाख संदीले भेजे सव साधुन मिल गटके। सूरदास मदन मोहन जी आधिरात कों सटके ) और हर सन्दूक पर अपनी मुहर करके आधीरात को भग निकले बादशाह ने परचों को पढ़कर कहा कि ( गटक—खा जाना ) तो अच्छा था मगर ( सटक-भगजाना ) यह अच्छा न हुआ और साधुसेवा औ उदारता पर प्रसन्नहुये तव एक परगना माफहोनेका औ हाज़िर होनेके निमित्तभेजा सूरदासजीने उज़र लिख भेजाकि अब इस सूबेदारीसे श्रीवृन्दाबनकी गलियोंमें झाडूदेना अच्छा समझाहै तो टोडरमलदीवाननें विनयकिया कि जो इसीप्रकारमाल वाजिब सरकारका लोग खर्च करके भागजावें तो इन्तजाम बिगड़जावेगा तोइनके गिरफदार करानेकाहुक्म भिजवाया औ कैद खानेमें भेजदिया तव सूरदासजीने एक दोहा लिखकर बादशाह के पास भेजा-उसमें बादशाहकी श्लाघा औ अपने कैदसे छूटनेका हाल लिखाथा तो बादशाहने उसीघड़ी छोड़दिये तव वृन्दाबनमें आकर श्री ब्रजकिशोर किशोरीजी की सेवा भजनमें मग्न रहे ॥ इतिद्वयशीतितमःप्रदीपः ८२ ॥

कील्हदासजीका दृष्टान्त ॥

कील्हदासोऽभवद्भीष्मपितामहसमोयथा ॥
त्रिवारंनागदष्टोपिनमृतोऽथमृतःस्वयम् ७७ ॥

कील्हदासजी ( भीष्मपितामह ) के समान स्वेच्छासे परलोकगामीहुये । जिनको तीनवेर नागनेडसा पर नहीं मरे औ स्वेच्छासे आपही परमधामको पधारे । वृत्तान्त यहहै कि स्वामी ( कील्हदासजी ) चेले कृष्णदास पयआहारीके माधुर्य्य औ शृंगाररसके उपासक परमभागवत स्वामी अग्रदासजी के गुरुभाई

हुये दिनरात श्रीरघुनन्दनस्वामीके ध्यानमें मग्नरहतेथे जिनका निर्मलयश सारेसंसार में अवतक विद्यमान है भगवत्भजन में शूरबीर और सांख्ययोगके मुख्य तात्पर्य्यके जाननेवालेहुये और भीष्मपितामहके सदृश स्वेच्छाचारीथे ऐसी सिद्धतापर प्रेम औ नम्रताका यह वृत्तान्तथा कि सबको आप प्रणाम कियाकरते सुमेरुदेव उनके पिता गुजरातमें सूबाथे जब उनका परलोक हुआ तो वे विमानपर चढ़कर परमधामको चले तो उसी घड़ी कील्हदासजी मथुरामें राजामानसिंहके पासबैठेथे. तब उठे औ साष्टांग प्रणामकर बोले कि अच्छाहुआ २ तब राजाने पूछा कि किससे बातकरतेथे तो कील्हदासजी ने पहिले तो उसबातको छिपाया जब राजाने हठकिया तो वृत्तान्त जैसा था वह कहदिया.राजाने तभी हलकारा भेजके दिन घड़ी सब समझा ठीक उतरा तो दण्डवत्किया औ दृढ़ विश्वास माना एकबेर कील्हदासजी पूजनकरतेथे फूलोंकी पिटारी में फूललेनेको हाथडाला तो सांपनेकाटा तो कील्हदासजीनेजाना कि सांप तृप्तनहींहुआ तो उससे कहा फिर काट २ ऐसे तीनवेर कटवाया पर तनकभी विष न चढ़ा और जब परमधामकी इच्छाहुई तब भगवद्भक्तोंका समाज किया और दशमद्वार ब्रह्माण्ड फोड़के देह त्यागा॥ इतित्र्यशीतितमःप्रदीपः ८३॥

केशवजीका इतिहास॥

अभिमानोनकर्तव्यो विद्यायाःकेशवोयथा॥
शास्त्रदर्पंदधानोऽसौ बालकेनपराजितः ७८॥

विद्याका अभिमान कभी किसीकेसाथ न करना चाहिये। जैसे केशवजी शास्त्रके अभिमानसे कई पण्डितों का तिरस्कार करतेरहे फिर बालरूप विष्णुजी से तुर्त हारे वृत्तान्त। केशव भट्ट काश्मीरी ब्राह्मण, ऐसे परमभक्तहुये कि लोगोंको दुःख पापों से छुटाकर भगवत् सम्मुख करदिया महिमा भट्टजीकी

विख्यातहै कि भक्तिके कुल्हाड़ेसे अन्य धर्मरूप वृक्षोंकोकाटकर भगवत् चरित्रों को जगत्में विख्यात किया भट्टजीको निम्बार्क सम्प्रदायवालों ने अपने गुरु परम्परामें लिखतेहैं परऐसी जान पड़ती है कि उनको भगवद्भक्तिका उपदेश (श्रीकृष्णचैतन्य-महाप्रभु) से हुआ उससमय महाप्रभुकी अवस्था सातवर्षकीथी इसकारणसे उनकेशिष्य न भये निम्बार्क सम्प्रदायवालोंकेसेवक हुये जिसप्रकार भगवद्भक्ति प्राप्तहुई उसका वृत्तान्त यह है कि ये भट्टजी बड़े पण्डित थे हजारों पण्डितोंको शास्त्रार्थ में निरुत्तर करते नदियाशान्तीपुर में जापहुँचे तो वहां के पण्डितलोग भयभीत हुये तब महाप्रभुजीने विचार किया कि इसको अपनी पण्डिताईका बड़ागर्व्व है सो दूरकरना चाहिये इसहेतु भट्टजी के पास आये औ मधुरवचनसे बोले कि आपकी विद्या औ यश सारेसंसारमें विख्यातहोरहाहै कुछ मुझको भी सुनाकर कृतार्थ कीजिये भट्टजीने उत्तर दिया कि अभी बालकहो विद्या प्राप्त नहीं भई है ऐसे निर्भय वचन बोलना ठीक नहींहै परन्तु हम तुम्हारे मधुरवचनसे प्रसन्नहैं जो कुछ कहो सोही सुनावें तब तो महाप्रभूजीने कहा कि श्रीगंगाजीका स्वरूप वर्णनकरो तो भट्टजीने कई श्लोक अपने बनाये पढ़े तब महाप्रभूजीने तुरन्त उनको उपस्थितकर लिये औ पढ़सुनाये और कहा कि अर्थ और गुण दोष उनमें हैं वे वर्णनकरो तो भट्टजीने कहा मेरे काव्यमें दोष कबहोसक्ताहै तब महाप्रभूजीबोले जो आज्ञाकरो तो मैं गुण दोष वर्णन करूं सो कहना आरम्भ किया तो ऐसे २ अर्थ किये कि जो बनानेके समय भट्टजीको याद्भी नहीं थे जो २ दोष गुणथेउनका ऐसेविस्तार सेवर्णनकिया कि भट्टजीको उत्तरनआया तब महाप्रभूतो अपने स्थानपधारे औ भट्टजी लज्जितहोकर रातको सरस्वतीका ध्यानकरतेभये सरस्वतीजीआईं तो भट्टजी ने विनयकिया कि सारेसंसारमें विजय कराकर एकलड़के से हरायदिया हमसे ऐसा कौन अपराधहुआथा तबउत्तर हुआ कि

(महाप्रभू) भगवत्का अवतारहैं औ मेरे स्वामीहैं मेरी क्यासामर्थ्यहै जोउनके साम्हने बोलसकूं तुम्हारे धन्यभाग्य जो उनके दर्शनभये यहकहके सरस्वतीजी तो अन्तर्द्धान हुईं औ भट्टजी महाप्रभूजीकी सेवामें आये औ हाथ जोड़कर विनय प्रार्थनाकरी कि कुछ शिक्षाहोय महाप्रभूने आज्ञाकिया कि भगवद्भक्ति अंगीकारकरो औ फिरकभी किसी पण्डितके साथ वाद मतकरना भट्टजीने भक्तिसे उसवचनको धारणकिया और जो पण्डितलोग साथथे उनसबों को विदाकरके भगवद्भक्तहोगये फिर कश्मीर अपने घर गये कुछ दिन वहांरहे फिर मथुराजीके वृत्तांत औ समाचारपहुँचे कि विश्रांत घाटपर मुसल्मानों ने ऐसा यंत्रलगा दियाहै कि कोई उसपरजावे आपसे आप उसकी सुन्नत (मुसल्मानी) होजाती है फिर बलात्कारसे मुसल्मान उसको अपने में मिलालेतेहैं भट्टजी यह समाचार सुनतेही अपने हजारों चेलों सहित चले मथुरामें पहुँचे पहिले विश्रांत घाटपरही गये दुष्टोंने जैसे और लोगों से दुष्टता करतेथे तैसेही भट्टजी से भी कहा कि नंगेहोकर हमको दिखाओ तो भट्टजीने उनको अच्छे प्रकारसे दिखलाया फिर मारा औ यन्त्रको तोड़कर यमुनाजी में डाल दिया तब मुसल्मान सबलूबाके पास फिरियादी हुये सो सब दुष्टताउनकी सूबे की हिमायत से थी तो उसने सहायता के हेतु फौजभेजी तब भट्टजी उसफौजसे ऐसेलड़े कि बहुतेरोंकामारे और कितनेंहीं को यमुनाजी में डालदिया और कुछ भागगये इसयुद्धका वृत्तान्त एककविने विस्तारकरके लिखा है उससेजाननेमें आया कि भट्टजीने चक्रसुदर्शनकी आराधना करके ऐसी अग्नि वर्षाई कि सब दुष्ट अशरणहोगये और काजी और सूबा आदि सब आयके चरणों में गिरे पीछे उसके यह चरित्र किया कि सब मुसल्मानों के शरीरपर चिह्नहिन्दुओं के जनाई पड़ने लगे वे लोग यह प्रभाव देखकर अधिक आधीनहुये और सबने हाथबांधके सेवकाई करनी अंगीकार करके रक्षाचाही त्राहि २

प्रकारे भट्टजीने ब्रजके सब हिन्दुओं का समाज किया औ बहुत जगह आपगये औ सबको मुसल्मानोंसे निर्भयकिया औ भगवद्भक्ति की प्रवृत्तिकरी ॥ इतिचतुरशीतितमःप्रदीपः ८४ ॥

अंबरीपकी रानी का दृष्टान्त ॥

भक्त्यम्बुधिनिमग्नस्यनश्यतेस्वपरभ्रमः ॥
पश्चाज्जायेतसंबोधअंबरीषस्त्रियोयथा ७९ ॥

जो भक्तिरूप समुद्र में मग्न है उसको अपने परायेकाज्ञान नहीं होता है फिर बहिर्दृष्टि होनेपर पहिचान होती है जैसे अंबरीपकी रानी ने निजपतिको नही पहिचाना ॥ वृत्तांत ॥ राजा (अंबरीप) की रानी जब व्याहीआई और राजासे उपदेशसेवा पूजा करनेका अलग पाया तो अत्यन्त प्रेम औ विश्वास से भगवत् मूर्ति विराजमान करके सेवा पूजा करने लगी और भगवत् में इतनाप्रेमहुआ कि किसीसमय सिवाय भगवत् भजन औ आराधनके किसी काम में मन नहीं लगाती थी राजा को भी इस सेवा का समाचार पहुँचा तो रानी के महल में आया औ देखा कि रानी को भगवत् में इतना प्रेम है कि साधन अवस्थासे चलके सिद्धअवस्था पर्य्यंत अर्थात् तद्रूपता को पहुँच गई हैं इसदशा को कि कभी अति चाव उमंग से गाती है औ कभी नाचती है और कभी हँसती है कभी रोती है और कभी भगवद्ध्यानमें भीत के चित्र सदृश हो जाती है राजा यह दशा देखकर अति प्रसन्नहुआ अपने भाग्य की बड़ाई करनेलगा औ रानी के समीप स्थितहुआ उससमय रानी तो भगवत् के छवि के अनुभव में मग्न हुई थी शरीर की भी सुधि उसे न थी तो पहिले कुछ बात चीत न पूछी फिर बहुत देरहुये सुधिभई तो पति को देखकर बड़ी रीति मर्य्यादसे हाथजोड़के खड़ीभई इस हेतु कि एकतो पति दूसरे राजा तीसरे गुरु कि उसही के उपदेशसे भगवत् सेवा मिली राजाने यहदशा देख अपना भाग्य

धन्य मानके मनको हर घड़ी भगवत् में निश्चल लगाया ॥
इतिपञ्चाशीतितमःप्रदीपः ८५ ॥

॥ शवरी का इतिहास ॥

सम्भूद्धरिभक्तेषुशवरीकेशवप्रिया ॥
सद्यायदपमानेनप्रजाताःकृमयोजले ८० ॥

हरिभक्तों में (शवरी) भगवत्की प्रियभक्त भई जिसकी अवज्ञासे जल में कीड़े पड़े फिर उसीके प्रसन्नहोने से दूरहुये। वृत्तान्त। (शवरी—भीलनी) की महिमा किस प्रकार वर्णन हो सके कि बड़ेबड़े ऋषीश्वर जिसकी भक्तिको देखकर आधीन हो गये। प्रथमहीं जब शवरी को भगवद्भक्ति उत्पन्नहुई तो साधु सेवा स्वीकारकरी सो दण्डकारण्य में पम्पासर के समीप मतंग इत्यादि ऋषीश्वरों के आश्रम में रात्रिके समय छिपकर लकड़ियों का भार डालजाती थी और रातसे उठकर जिस राहसे ऋषीश्वर लोग स्नानको आयाजाया करते उस राहको झाड़ बुहारकर विमल करदेती थी तब (मतङ्ग—ऋषीश्वर) अपने मनमें कहा करते कि ऐसा कौन बड़भागी है जो ऐसी सेवाकरता है और हमारे तप भजन में बखेड़ा डालता है तब रातको दश बीस ऋषीश्वर चुपके छिपकर लगेरहे जब शवरी आई तो पकड़कर मतङ्गजी के पास लेगये तब शवरी ऋषीश्वर के डरसे कांपनेलगी जब सामने गई तो रोदनकरने के दुःख औ डरसे कुछ विनय न करसकी दूसरे ऋषीश्वरों के मनमें यह हुआ कि यह शवरी नीच जातिहै तिससे ले आईहुई लकड़ी जो हमने काम में लगाई इसके पाप से न जानें हम कौन नरकमें पड़ेंगे और मतंगजी उसके प्रभाव को जानते थे तो अपने मनमें कहनेलगे कि यह शवरी ऐसी शुद्ध है कि जिसके ऊपर करोरों ब्राह्मणोंके धर्म कर्म निछावरकरने योग्य हैं तो मतंगजी उसको अपने आश्रममें लेआये औ भगवत्मन्त्र उपदेश किया जबमतंग

जी परमधामको पधारे तब शवरी को उपदेश किया कि श्रीरघुनन्दन स्वामी सच्चिदानन्द यहां पधारेंगे तुझको उनके दर्शन होंगे तू इसी आश्रम में रहाकर । यद्यपि शवरी गुरुके वियोग से अत्यन्त शोकवालीथी पर श्रीरघुनन्दन स्वामीके दर्शनोंकीआशा से प्रसन्नरही जिसघाटपर ऋषीश्वर स्नानको जायाकरते तहां शवरी राह बुहारा करती थी एक दिन नियत समय में बिलम्ब होगया, तो ऋषीश्वरोंने शवरीको देखकर क्रोधकिया और उसी क्रोध में एक ऋषीश्वरका वस्त्र जो शवरी से स्पर्श होगया था तो ऋषीश्वरों को और भी क्रोधहुआ तब शवरी को दुष्ट औ कठोर वचन कहकर फिर स्नानको गये तो तड़ागजलका रुधिरसे भरापाया और उसमें बड़े २ कीड़ेपड़गये उनसे जल सड़नेलगा तब भी उन्होंने अपनी शठतासे यही समझा कि उस शवरीकी अपवित्रतासे यह जल बिगड़गयाहै तो फिर कुटीपर आये और शवरी अपने स्थानपर चलीआई और श्रीरघुनन्दन स्वामी के लिये फललेने चाहिये इस चिंता से वनमें गई तो अच्छे २ वेर तोड़कर पहिले आप चाखलिया करती कि यह मीठे हैं कै खट्टे जो खट्टे होते उन्हें फेंकदियाकरती औ जो मीठे होते तिन्हें रख लिया करती फिर राहपर जाकर जिसओरसे रघुनन्दन स्वामी पधारेंगे बाट निहाराकरती थी और जब अपने कुरूपता औजाति की नीचताको विचारती तो किसीजगह झाड़ीमें छिपजाती और जब अपने गुरुके वचन औ भगवत् की दयालुता औ पतितपावनतापर दृष्टिकरती तो आगे लेनेको दौड़ती इसीप्रकार भगवत्के प्रेम औ चिन्तनमें दिन रात व्यतीतकरती जब बहुतदिन बीते तो अधम उद्धारण, भक्तवत्सल महाराज, पधारे और लोगों से बड़ी चाहकरके शवरीका स्थान पूछा कि शवरी महाभक्तकहां है जब स्थानके समीप आये तो शवरी ने उठकर साष्टांगप्रणाम करी रघुनन्दन स्वामीने लपककर धरतीसे उठाई और सबदुःख वियोगका दूरकिया शवरी की यह दशाहुई कि भगवत् के मुख

चन्द्रमाकी चकोर होगई औ दर्शनमें मग्नहोकर परमआनन्दका जल आंखों से अपार बहाया फिर रघुनन्दन स्वामीको अपने आश्रममें लेआई और बेर जो जंगलसे लेआतीथी सो खानेको धरे भक्तभावन महाराज, तो उन बेरोंको भोजन करनेलगें औ शिव आदि उस भक्तवत्सलताके आनन्दमें मग्नहोकर शबरी के भाग्यकी बड़ाई करनेलगे। भगवत् एक बेर उठावें औ मुख में डाल उसकी मधुरता औ मिठासकी श्लाघाकरें फिर दूसरा उठावें औ कहें कि ऐसा मिष्टफल कभी न खायाथा जब भोजन करचुके तो सब ऋषीश्वर आगमन सुनकर कि आप शबरी के गृहमें उतरे हैं तो अचम्भेहो श्रीरघुनन्दन स्वामीके दर्शनकोगये औ सब गर्व्व अपने धर्मकर्म औ कुलीनताका बिदाकिया और भगवत् दर्शनसे कृतार्थ होकर परमानन्दको प्राप्तहुये वार्त्तालाप होनेके पीछे तड़ागके जलबिगड़जानेका वृत्तान्तपूछा तो भगवत् ने आज्ञाकी कि शबरीहीके परम पावन चरण जब उसतड़ाग में पड़ेंगे उसीक्षण जलशुद्ध निर्मलहोजावेगा तबऋषीश्वर शबरीसे विनय प्रार्थना करके उस तड़ागपर लेगये और उसपरमभक्त के चरणछूतेही जलनिर्मलहोगयापीछे रघुनन्दनस्वामीने आगेजाने की शबरीसे बिदामांगी औ आज्ञाकी कि जोउपदेश भक्तिकाहमने कियाहै उसीप्रकार आगेको आचरणकरतीरहना। शबरीको जो वहपरम मनोहररूपबाहरभीतरकी आंखोंमें समागयाथातोउसके वियोगको न सहसकी तोबिदामांगतेही अपनेप्राणोंको निछावर करके परमधामको पधारी तब भगवत्ने आप उसका दाहकर्म किया इसचरित्रसे आवागमनसे छुट्टी चाहनेवालोंको भक्तिकर- ने की शिक्षाकरी निश्चयकरके प्रेमकी अन्तिम पदवी यही है कि अपने प्यारेके मिलनेमें अथवा वियोगमें मग्नहोकर तुर्तप्राण जातेरहैं मुख्यप्रेम यहीकहाताहै॥इतिषण्ठाशीतितमःप्रदीपः८६॥

विदुर औ उनकी स्त्रीका इतिहास ॥

विदुरस्त्रीमहाभक्ताजाताकृष्णोऽथयत्करात् ॥

बुभोजकदलीपत्रंप्रेमतोहर्षयन्स्वयम्. ८१ ॥

बिदुरजी की स्त्री बिदुरजी से भी अत्यन्त भक्त भई जिस के हाथ से भगवत् ने आप केलेके फलका पत्र अर्थात् छिलका भोग लगाया और बड़े प्रेमसे हर्ष करके उसको सराहा । वृत्तांत बिदुरजी औ उनकी धर्मपत्नी, परम भक्त हुये । बिदुरजी धर्म के अवतार थे मारडव्य ऋषीश्वर के शाप से मनुष्य देह पाया कथा उनकी बिस्तारसे महाभारत में लिखी है जितनी प्रीति भगवत् में बिदुरजीकी थी उससे अधिक उनकी धर्मपत्नी की रही जब भगवत् श्रीकृष्ण महाराज, कौरव पाण्डवों के विरुद्ध मिटाने के निमित्त हस्तिनापुर पधारे तो दुर्योधन ने अपने ऐ-श्वर्य्य के गर्व्व से सन्धि अर्थात् मेल नहीं स्वीकारकिया परन्तु भोजन के शिष्टाचार के हेतु विनय किया तब भगवत् ने आज्ञा की कि बिराने घर भोजन तीन प्रकार से होता है एक तो कं-गालता करके दूसरे सम्बन्ध नाते से, तीसरे हरि भक्त का, अ-थवा परस्पर गुरु चेलों का । सो यहां तीनों बातें नहीं मिलती यह कहकर बिदुरजी के घर पधारे उस समय बिदुरजी घर पर नहीं रहे और उनकी स्त्री स्नान करती थी उसने जो भक्तवत्स-ल महाराज का आगमन सुना तो मारे हर्ष के अंग में न स-माई औ ऐसी प्रेममें मग्नहोगई कि, बेधड़क उस नग्नदशाही में उठदौड़ी लज्जारक्षक भगवान् उसके प्रेमकी यह दशादेख-कर चकितहुये और झटपीताम्बर अपने श्रीअंगका उढ़ायदियो सो समझपड़ताहै, कि जानै भगवत्को उससमय यह वि-चारहुआ कि यह मेरी तद्रूपताको पहुँचगईहै, केवल पीताम्बरै ही नहीं है इसहेतु पीताम्बरभी उढ़ायदेनाचाहिये अथवा यह बातहो कि जब राजा किसी अपनेप्यारे सेवकपर प्रसन्नहोता है तो निजपोशाक इनाममें खिलतदेताहै सो भगवत् महाराजा-धिराजने निज पीताम्बर खिलतदिया अथवा ऐसा मनमें आ-याहो कि जब कोई राजाकी सेवामें जाताहै तो कुछ भेंटदियाकर-

ताहै सो भगवत्ने विदुरजीकी स्त्रीको अपने प्रेमियों की राजा समझकर पीताम्बर भेंटकिया पीछे,भगवत्को अपने घरलेआई औ,परमप्रीतिसे सिंहासनपर बैठाकर अत्यंत प्रेमआनन्दमें बे-सुधिहोगई-कृपासिंधु महाराजने जो उसकी यह दशादेखी-तो अपनीओर-वार्त्तालापमें लानेकी आज्ञाकिया कि कुछभोजन तय्यारहोतो लेआवो,तो,यह बड़भागिनि केले के फललेआई औ पासबैठकर खिलानेलगी,वह तो परमआनन्दमें पूर्णथी तो गिरीको धरतीमें डालदी औ छिलका भोगलगाने को दिया,विश्वम्भर महाराज,जो केवल प्रेमकेभूखेहैं,उन छिलकोंको,सराहि२ खानेलगे उसीसमय विदुरजीभी,आये तो भगवत्के चरणकमलोंको दण्डवत्करके स्त्रीको तर्जन भर्त्सन करनेलगे कि रे मन्दबुद्धि गिरीखिलानेकोछोड़ छिलकेखिलाती है और,आपबड़ेप्रेम से गिरीनिकाल २ कर खिलानेलगे भक्तचित्तरंजन महाराजने कहा कि विदुरजी! यह-केलोंकागूदा,बड़ामीठाहै परन्तु उन छिलकों के सवादको नहीं पहुँचता इसवचन से भगवत्,अपने भक्तोंको शिक्षाकरतेहैं कि जिस,किसीको जितनीप्रीत्ति औ भक्ति मेरेचरणोंमें है तितनाही भोजन इत्यादि जो कुछ मेरे अर्पण करते हैं मैं सब अंगीकार करताहूं दूसरे यह बात्त जताते हैं,कि मेरे दरबारमें चतुराई आदि कुछनहीं चलती केवल प्रेम औ,स्नेह पर रीझहै और एक यह अर्थ भी प्राप्तहोगया कि जो विदुरजी औ उनकी स्त्रीको छिलकों के खिलाने के कारण से लज्जा औ शोकहुआथा सो सब मिटगया और दोनों परमप्रीतिसे भगवत्की सेवामें तत्परहुये॥ इतिसप्ताशीतितमःप्रदीपः ८७॥

राजा भक्तदासका इतिहास॥

भक्त्यायच्छृणुयाद्भक्तस्तत्तथैवाचरेत्पुनः॥
फलञ्चतल्लभते भक्तदासोयथाऽभवत् ८२॥

भक्त, भक्तियुक्त चित्तसे जो सुनता फिर वह वैसाही आचरण

करताहै फिर उसको वैसेही फल की प्राप्तिहोती है जैसे भक्तदासजीभये वृत्तान्त यह है किराजा (भक्तदास) कुलशेपर, जिनका पदहै प्रेमी भगवद्भक्तहुये कथाउनके प्रेम औ भक्तिकी (प्रपन्नामृत ग्रन्थ ) में लिखीहै यहां मूलमात्र लिखते हैं यह राजा श्री रघुनन्दन स्वामी के उपासकथे तो तिनके चरित्र अत्यन्त भक्ति से नित्य सुनाकरतेथे औ अतिप्रेमभावसे लीला उत्साह भगवत् का नित्य भयाकरते थे कथा सुनानेवाला ब्राह्मण, राजा के प्रेम को जानताथा तो जब रामायण में सीताहरण की कथा आया करती तो उस स्थलको छोड़दिया करताथा एकबेर उसके बेचैन होनेपर उसकापुत्र कथा बांचनेकोगया और वही कथा सुनाई कि रावण आया औ जानकीमहारानीको हरकर लेगया इतना वचन सुनतेही राजा, तरवार खींचकर मार २ करताहुआ दौड़ा औ घोड़े पर सवार होकर लंकाकी ओर चला कि इसी घड़ी रावणको मारकर अपनी माता सीताजीके दर्शनकरूँगा मेरेजीते उसको कैसे हरलेजाय जब राहमें समुद्रआया तो निर्भय घोड़ा समुद्रमें डालदिया तो भक्तभावन महाराजजानकी औ लक्ष्मण सहित प्रकटहुये औ कहा कुलशेपर! कहां जातेहो रावणको तो हमने मारदिया जानकी सहित अयोध्याको जाते हैं तब तो राजा चरणोंमें गिरा औ युगलस्वरूपके दर्शनकर नयेप्राण पाये अपनी राजधानीमें आय भक्तिमें मग्नहुआ ॥ इत्यष्टाशीतितमः प्रदीपः ८८ ॥

विट्ठलदासजीका इतिहास ॥

भक्त्यम्बुधिनिमग्नस्य जायतेदेहविस्मृतिः ॥
यथाविट्ठलदासोहि मन्दिरादपतत्क्षणात् ८९ ॥

भक्तिसमुद्रमें मग्नजनको निज देहका स्मरण नहीं होता जैसे विट्ठलदासजी नृत्यकरते बेसुधिहोकर मन्दिर से गिरपड़े। वृत्तांत। ( विट्ठलदासजी ) माथुरचौबे अनहंकारी औरों को

मानदेनेवालेहुये औ सवप्रकार से निर्मल परोपकारीहुये किसी के अवगुणपर दृष्टि नहीं जातीथी जो विद्या जिसमें होतीथी उसहीका वर्णनकरतेथे माला तिलक औ भगवद्भक्तोंका प्रेम, भगवत् के सदृश बुद्धिमें समायगयाथा और हरिगोविन्द श्यह वाणी अनुक्षण जिह्वापर रहतीथी उनके बाप दोभाई सगे राना के पुरोहितथे विट्ठलदासजी लडकेहीथे तवहीं वे दोनों आपुस में लड़कर मरगये जव विट्ठलदासजी सयानेहुये तो भगवद्भक्ति अंगीकारकरी और रानाकेपास आना जाना छोड़दिया एकदिन रानाने लोगों से पूछा कि हमारे पुरोहितका लड़का नहीं आता वह कहांहै शीघ्र लेआओ तौ विट्ठलदासजी न गये जब दोहरायके बुलाया तब शत्रुलोगोंनेकहा महाराज! वह तो रातदिन रागरंग औ वैरागियों के संगमें रहताहै अपनेको भक्तोंमें गिनताहै तब तो रानाने विट्ठलदासजी को कहलाभेजा कि आज जागरण हमारे यहांहै सो अवश्य आना चाहिये। विट्ठलदासजी हरिभक्तों के समाज सहित गये राजाने सवको आदरभावकरके समाज के निमित्त तिखने मकान की छतपर फरश लगवाया जिससमय भगवत्चरित्रोंकाकीर्तन भजनहोनेलगातो विट्ठलदासजीकीदशा उन चरित्रोंके रसमें वेसुधि होगई औ अपने विरानेको भूलकर आप कीर्तन करनेलगे औ गान नृत्यकी दशामें कुछ सुधि अपने शरीर औ मकानकी न रही तो तिमंजले मकानसे नीचे गिरे राजा वह दशा देखकर बड़े शोचमेंहुआ और दुष्टलोगोंको बहुत तर्जना औ भर्त्सना किया साधुलोग विट्ठलदासजीको उठाकर घरपर लेगये और रानाने रुपया औ सामग्री सबभेजी विट्ठलदास जी को तीनदिनपीछे सुधिभई उनकी माताने सबवृत्तान्त राजा की परीक्षा लेनेका औ दुष्टलोगोंकी दुष्टता औ तिमहलेपरफ़रश होनेका कारण सबकहा विट्ठलदासजी रात्रिको अपनेघरसेचले। छठीकरा—गांवमें कि जहां यशोदाजीने छठीकी रीति। रसम श्रीनन्दनन्दन महाराजकी करी है तहां आकर श्रीगरुड़गोविन्द

जी महाराजकी सेवामेंलगे रानाके सेवक जगह २ ढूंढआये कहीं नहीं मिले उनकी माता औ स्त्रीने ढूंढते २ पाया और घरचलने के निमित्त उनसे बहुतकहा औ कई उपाय किये परन्तु उनका मन श्रीगरुड़गोविन्दजी की सेवासे नहीं हटा लाचार होकर उन की स्त्री औ माता उसीगांवमें रहनेलगीं कुछदिनबीते बहुतदुःखी पड़े तो स्वप्नमें भगवत् ने आज्ञाकी कि तुम मथुराजीमें निवास करो तो विट्ठलदासजी को गरुड़गोविन्दजीका वियोग स्वीकार न हुआ जब तीन दिनतक बराबर आज्ञाकी तो बेवश होकर मथुराजी में आये औ अपने सजातियोंको देखा कि भगवद्भक्ति से विरुद्ध हैं इस हेतु एक बढ़ई साधुकेघर उतरे उसकी स्त्री परम सती गर्भवतीरही उसको खर्चपातकी चिन्ताभई तो भगवत् ने मिट्टी खोदते में बहुत धन समेत अपनी मूर्त्तिको प्रकट किया विट्ठलदासजी वह मूर्त्ति औ धनसब बढ़ईको देनेलगे तो उसने हाथ जोड़कर चरणकमल पकड़लिया औ प्रार्थनाकी कि आपही सेवा पूजा कियाकरैं औ यह रुपैया भी खर्च में लगावें तो विट्ठलदासजी ने ऐसी प्रीति से सेवा करना आरम्भ किया कि सिवाय उसके और किसी कार्य्य से प्रयोजन नहीं रक्खा। और थोड़ेही दिनमें उनके भक्तिभावकी ऐसी ख्यातिभई कि बहुत लोग चेले होगये भगवत् उत्साह औ कीर्त्तनका ऐसा समाज रहनेलगा कि मानों भगवत् पार्षदोंकाही। संयोगवश वहां एक नटिनी आई उसने भगवत् के आगे गाननृत्य किया तो विट्ठल दासजी भगवत् प्रेममें ऐसे मग्न बेसुधि होगये कि जो वस्त्र आभूषणथे सब प्रसन्नहोकर उसे दिये और जब उसे भी कम जाना तो रङ्गीरायजी अपने पुत्रको भगवत् की निछावरकरके देदिया रङ्गीराय की चेली रानाकी लड़की थी उसने नटिनी से कहला भेजा कि रुपया वस्त्र जो तुझको चाहिये सो मुझसे लेलेव औ रंगीरायजी को देदेव नटिनीने उत्तर दिया कि धनसम्पत्ति की तो कुछ परवाह नहीं पर रीझनेपर तन मन धन सब देसक्ती हूं

तब रानी की लड़कीने विट्ठलदासजी से विनयकरके फिर समाज करवाया और जो गुणीभक्तजन आयेथे उनको बहुतरुपैया नजर भेंट किया औ आप भगवत् के सामने नृत्यकरनेलगी तो वह नटिनी भी चकितहोगई और रंगीरायजीका शृंगारकर डोले में बैठाकरके भगवत्के सम्मुखलाई तब रंगीरायजी उसनटिनी के कहने से नृत्यकरनेलगे तब तो सब समाज भगवत् प्रेम में बेसुधि होगया और नटिनीने सबधनसम्पत्ति सहित रंगीराय को भगवत् की भेंट करदिया तब रंगीरायजी बिट्ठलदासजीसे बोले कि आप मुझको भगवत्की निछावर करचुके हैं फिर लेना उचित नहीं इससे विट्ठलदासजीने तो रंगीरायजीको न लिया पर रानाकी बेटीने लेलिया तब रंगीरायजीने विचारा कि प्रकट में तन तो निछावर होचुका पर प्राण अबतक निछावरनहींहुये हैं इस हेतु पांचभौतिक तन छोड़कर परमधाम को पधारे ॥ इत्येकोननवतितमःप्रदीपः ८६ ॥

कृष्णदासजीका दृष्टान्त ॥

भक्तस्यनृत्यावसरे तालभंगादिकंप्रभुः ॥
सम्यक्प्रपूरयेसद्यःकृष्णदासेयथाकरोत् ८४ ॥

भक्तके नृत्यसमय में स्वरतालके भंगहोनेको प्रभु शीघ्रही पूर्ण करते हैं जैसे कृष्णदासजीके पैरमें भगवत्ने अपना घुंघुरू बाधदिया । वृत्तान्त यहहै ( कृष्णदासजी ) भगवत्के परमभक्त हुये कि श्रीनन्दनन्दन महाराजने निज अपनेचरणका नूपुर उनको दिया । भगवत्कीर्तनकी रीतिके अच्छे ज्ञातारहे स्वरताल ग्राम औ मूर्च्छना आदि जो कुछ संगीतरत्नाकर आदि ग्रंथों में लिखेहैं उनको ऐसा जाना कि उससमय उनके सदृशकोई न था और अत्यन्तता उनकी यहांतकहुई कि राधिकावल्लभ महाराज कोभी अपने प्रेम और गुणसे प्रसन्नकिया जाति के सुनारथे और खड्गसेन उनके बापका नामथा । एकादिन श्री

राधाकृष्ण महाराजकी सेवा पूजाकरके भगवत्के सामने नृत्य औ गानकरने लगे और भगवत्के रूप औ चरित्र चितवनके रसमें ऐसे मग्न बेसुधि हुये कि शरीरका कुछभानरहा उसी दशामें एक पांवका घुंघुरू खुलकर गिरपड़ा तो समा जो जम रहाथा उसमें विक्षेप होनेलगा तब श्रीरसिकबिहारी- परम रिझवार उससमाजकी ताल भंगसे बेशोभा समझकर उठे औ अपने चरण कमलका नूपुर श्रीहस्तसे कृष्णदासजीके चरणमें पहिनादिया कृष्णदासजी ने नृत्य औ कीर्तन के पीछे जब यह वृत्तान्त जाना तो भगवत् कृपा औ अपने भाग्यको धन्यमानके परम आनन्दमें मग्नरहे और भगवद्भजनमें ऐसी लवलीनहुये कि सिवाय उस प्रेमके और कुछ न जाना और साधुसेवी ऐसे थे कि हरिभक्तोंको भगवत्के समान जानलेरहे जो किसीको ऐसीशंका हो कि भगवत्ने अपने पैरका घुंघुरू क्यों पहिनाया वही घुंघुरू क्यों न सजदिया सो यहहेतुहै कि जो वही घुंघुरू सजिके पहिनाते तो बिलम्बहोता इससे अपनाही घुंघरू पहिनाया और भक्तोंके मनमें अपनीरिझवारता औ चाहको प्रकटकरादिया, और सिवाय इसके यहभीबात सूचितहोती है कि भगवत्ने रीझकर यह घुंघुरू इनाम दिया ॥ इतिनवतितम प्रदीपः ९० ॥

## माधवदासजीका इतिहास ॥

भक्त्यानिश्चेष्टितस्यापि भक्तस्यारोग्यकृत्प्रभुः ॥
यथामाधवदासस्य सद्योऽरक्षद्विपत्तितः ८५

भक्तिकरके चेष्टा रहित चित्तवालेभी भक्तके आरोग्यकारी भगवानही हैं जैसे माधवदासजी को शीघ्रही आपत्तिसे बचाया, वृत्तांत (माधवदासजी) रहनेवाले कृधागढ़के ऐसे भगवत् के प्रमी भक्तहुये कि जब भगवत् चरित्रोंका कीर्तन वा गानसुनते अथवा आपकीर्तन करते तो भगवत्के रूप माधुरीके चिंतवनमें बेसुधिहोकर लोटने लगजाते और कुछ सुधि देहादिकी नहीं

रहती और उनके पुत्रपौत्रोंकाभी भगवत् में अत्यन्त प्रेमथा औ तनमनसे उनकी सेवा टहलकिया करतेथे। नगरका राजा, भगवत्से विमुखथा, तो, दुष्टलोगोंने उसको बहकाया कि माधव संसारको दिखलानेको भगवत् प्रेमके बहाने झूठमूठ धरती पर लोटताहै तब राजा अज्ञानीने परीक्षाके निमित्त अपने स्थानपर समाजठहराया औ तिमंजिलेपर तैयारीकरी तोसमाजके समय माधवदासजीने, नूपुर बांधकर कीर्तन किया औ बे सुधि होकर लोटने लगे और उसी दशामें सकाल की छतसे, एककड़ाह तप्त घृतके में वह उत्सवकेनिमित्त पकवान बनानेकोथा, उसमें गिरे तो भगवान्‌ने ऐसी रक्षाकरी कि किसी अंगमें कुछभी चोट न आई, तब इसचरित्रसे राजाकीआंखें हृदयकी खुलगईं तो भक्तमालके भगवद्भक्तिमान् औ भगवद्भक्तों के आधीन होगया और आपभी परमभगवद्भक्तहुआ॥ इतिएकनवतितमः ९१॥

नारायणदासजीका इतिहासप्रदीपः॥

नर्त्तकेष्वभवच्छ्रेष्ठः श्रीनारायणदासकः॥
नृत्यरक्तोयथास्वीय प्राणान्विष्णौसमर्प्पयत् ८६॥

नर्त्तक भगवद्भक्तों में (श्रीनारायणदासजी) श्रेष्ठभये जिन्होंने नृत्यमें अनुरक्त होकर निज प्राणोंको भी निछावर करादिया वृत्तान्त। नारायणदासजी नर्त्तक अर्थात् नट औ भगवद्भक्तहुये यद्यपि संसार में हज़ारहों नाचनेवालेहुये पर जो भगवत् प्रेमको जो कुछ उन्होंने निबाहा सो दूसरेसे कब होसके विष्णुपद को अक्षरकेरूप से जान भगवत्‌रूपमें मग्नहोकर भगवत् के नित्य विहार में जामिले उनका यह नेम औ प्रणथा कि सिवाय भगवत् के और किसीके सामने नृत्यगान नहीं करतेथे तीर्थ औ भगवत् मन्दिरोंकी यात्रा करतेहुये (हँडिया सराय) में जो प्रयागराजसे छैकोशपूर्व है वहां पहुँचे तो उनके नृत्यगानकी धूम सारे नगरमें पहुँची वहांका हाकिम यवन था उसने बुलानेको अपने

आदमी भेजे तो नारायणदासजीने भगवत् सिंहासनको यवनके सामने लेजाना उचित नहीं समझा और उसका अभिलापभंग करना भी अच्छा नहीं जाना तब वेवशही अपनेजीमें एकउपाय विचारकरगये तो ऊँचे सिंहासनपर तुलसी की माल। जो शास्त्र के वचनसे तुलसी औ भगवत् में कुछ भी भेद नहीं इससे उसे विराजमानकरके नृत्यगानकरनेलगे परन्तु उस हाकिम मुसल्मानकी ओर जो अलग बैठाथा भूलकर भी न देखा जब यह विष्णुपद मीराबाईजीका कि ध्रुपद उसका यह है कि। सांचोप्रीतिही को नातो कैजानै राधिका नागरी कैजानै मनमोहन रंग रातो। कीर्तन किया तो उसके अर्थ औ भावको समझकर प्रिया प्रियतम के चितवन में वेसुधि होगये और उसी वेसुधिताकी दशामें उस विष्णुपदके अर्थानुसार भीतरऔबाहरकी आंखोंमेंवह समाज समायगया कि व्रजमोहन महाराज, औ वृषभानुनन्दिनी परस्परकी प्रीतिसे आनन्दमें भरे खेल विहार औ नृत्यगान में लवलीन हैं और नृत्यदशा में तिरछा देखना और त्रिभंगी लटकवारे रूप व्रजकिशोर महाराज ने और परमशोभा शृंगार व्रज नागरीजीने ऐसाछटा व समाका स्वरूप पकड़ा कि नारायणदास जीको अत्यन्त चावसे कुछ निछावर करना उचित समझा उस समय प्राणोंसे अच्छी कुछ भी वस्तु निकट न पाई तो तुरन्तही निजप्राणोंको युगलस्वरूपमें अर्पणकरके नित्य बिहार औ परम आनन्दमें जामिले॥ इतिद्विनवतितमःप्रदीपः ६२॥

लीलानुकरण का दृष्टान्त॥

लीलानुकरणःसाक्षाल्लीलाकारीबभूवह॥
भूत्वान्नृसिंहस्तत्कार्य्यंकृतवान्शक्तितोयथा ८७॥

(लीलानुकरणजी) साक्षाद्भगवत्के लीलाकारी हुये। जो निज ध्यानके प्रभाव से आपही नृसिंह [illegible] तिन के समान कार्य्य करतेभये। वृत्ता[illegible] ज्ञाति वे[illegible] पुरुषोत्तमपुरी

में ऐसे प्रेमी भगवद्भक्तहुये कि भगवत् रूपके अनुभव में मग्न होकर बेसुधि होजाते थे एकदिन नृसिंहजी की लीलाको परम पवित्र नृसिंह चतुर्दशी के दिन लोगों ने बहुत धूम धाम से तैयार किया और उस ब्राह्मण को भगवद्भक्त औ प्रेमी जानकर नृसिंह स्वरूप बनाया जब उस चरित्र का कीर्त्तन होनेलगा कि हिरण्यकशिपु को नृसिंहजी ने अपने नखों से उदर चीर कर मारडाला तो उस ब्राह्मण को अनुकरण का ध्यानरहा तो जो नृसिंहजी को करना उचित था सोही आप किया अर्थात् जो पुरुष हिरण्यकशिपुका रूप बनाथा उसका उदर अपने नखों से चीर कर मारडाला, औ प्रह्लाद को राज्य दिया तब लोगोंने उसका वध, शत्रुताकरके समझा और भगवद्भक्तोंने यह कहा कि शत्रुतानहीं नृसिंहजीका अंश इस ब्राह्मण में आगया था निदान सबका यही सम्मत ठहरा कि रामलीला के समय इस ब्राह्मण को महाराज (दशरथ) का अनुकरण बनाना चाहिये उस समय वृत्तान्त प्रेम औ शत्रुताका खुलजायगा सोरामलीला में वैसाही किया तो जिससमय में वह चरित्र आया कि जनकनन्दिनी औ लक्ष्मण सहित रघुनन्दन स्वामी वन को गये और सुमन्त मंत्रीने आकर राजा दशरथ को सन्देशा रघुनन्दन स्वामी का सुनाया तब राजा ने उस सन्देश के सुनतेही प्राण त्याग किये तो उस ब्राह्मण ने जो वास्तव में दशरथही होगया था रघुनन्दन स्वामी का सन्देश सुनते ही उसी घड़ी अपना प्राण, भगवत्के निछावर किया औ दशरथ—महाराजसे बढ़कर पदवी पाई अवश्य करके प्रेमका ऐसाही प्रताप है ॥ इति त्रिनवतितमःप्रदीपः ९३ ॥

## मुरारिदासजी का इतिहास ॥

भक्तिःश्रेष्ठानजात्यादिकाश्योनैवाऽत्रसंशयः ॥
यथामुरारिदासोहिचर्मकारजलंपपौ ८८ ॥

भक्ति बड़ी श्रेष्ठहै भक्तिमार्गमें जाति आदि का सन्देह नहीं

करना चाहिये। जैसे मुरारिदास जी ने चमार के हाथ से चरणामृत लेलिया। वृत्तान्त। (मुरारिदास जी) बलबण्डा-शहर में जो मारवाड़ में विख्यात है तहां श्रीरघुनन्दन स्वामी के अत्यन्त प्रेमी भक्त हुये भगवत्का उत्साह औ हरिभक्तों की सेवा और भंडाराकरने में अद्वितीय थे कीर्तन करने में रघुनन्दन स्वामीके चरित्रों में लवलीन होकर प्रेमकी अन्तिम दशा हरिभक्तों को शिक्षा की। एक चर्मकार, भगवत्की सेवा पूजा बड़े भाव से करके उच्चस्वर से पुकारा करता कि जो भगवत् चरणामृतका अधिकारी हो सो ले जावे। मुरारिदासजी ने राह चलते वहशब्द सुना तो उसके घरगये तो वह चमार, डर से कांपउठा तब मुरारिदासजी ने उसकी बहुत आश्वासन करी औ कहाकि भय किसका करताहै केवल चरणामृत के निमित्त आया हूं चमार ने विनयकिया कि महाराज! मैं जाति का चमार हूं आपको कब देसक्ता हूं तो मुरारिदास जी ने उत्तर दिया कि तू हमसेभी अच्छाहै और जो तुझको कुछडरहै तोहम किसीसे नहीं कहेंगे यहकहकर विह्वलहोगये औ आंखोंसे जल बहनेलगा चमारने पूछा कि महाराज तुम किस लिये रोतेहो तो उत्तर दिया कि हमारी आंखेंदुखती हैं फिर चमारने बड़ीविनय औ पुकारसे कहा कि महाराज! आपको मुझनीचका चरणामृत न लेनाचाहिये तब मुरारिदासजी ने न माना औ हठकरके चरणामृत लेलिया भगवद्भक्त को मुख्यसमझा और जातिकर्म आदि पर धूलडाली जानना चाहिये कि मुरारिदासजी ने इस चरित्रसे तीनों प्रकारके लोगोंको शिक्षाकियाहै कि जोकोई भगवत्प्रेम औ भक्तिकी सिद्धदशा को पहुँच गयेहैं उनको तो यह शिक्षाहै कि जाति आदिका बन्धन उनलोगोंकोहै जो भगवत् प्रेममें दृढ़नेमी नहीं हुये सोतुम उसदृढ़तापर स्थिररहना और साधक लोगों को दृढ़ निश्चय कराते हैं कि भगवद्भक्ति औ प्रेममें वह पदवी प्राप्तकरनी चाहिये कि भेद औ द्वैत दूरहोजावे और जो

भगवत्से विमुखहैं उनपर यह कटाक्षहै कि तुमसे चमार भी अच्छाहै जोभगवत् सेवाकरताहै, तब तो मुरारिदासजीका यह वृत्तान्त सारेनगरमें पहुँचा औ सबलोग प्रकटमें बोलीमारनेलगे और राजातक समाचार पहुँचाया तोराजाको भी यहबातअच्छी न लगी औ मनफिरगया एक बेर मुरारिदासजी, राजाके पास आये तोपहिले कीसी भक्तिभाव न देखी तो आपसव त्यागन करके और कहीं जारहे तोउनके जानेसे राजाके यहां भगवत् भक्तोंका आनाजाना निर्मूलबन्दहोगया और राजा जो प्रतिवर्ष उत्साह करताथा औ देश २ के भगवद्भक्त साधुइकट्ठे होते थे कोई न आया और अकालउपद्रव दिखाईदिया तवराजा, शोक दुःखसे व्याकुल होकर मुरारिदासजीको फेरलेआनेको चला औ जाके प्रेमभक्तिसे साष्टांग दण्डवत्किया तोमुरारिदासजीने मुंह फेर लिया कि ऐसे भगवत् विमुखका मुखभी न देखनाचाहिये ऐसे विमुखसे गुरूकीनिंदाहोतीहै तव राजा हाथजोड़े दुःखदानिताकी नदीमें डूबकर खड़ारहा औ फिर दण्डवत् करके प्रार्थना की कि आप मेरे ऊपर बिचारकरके जोदण्डदेना चाहैं उसी के योग्यहूं और यह कटाक्षका वचनभी नियत किया कि मेरे अच्छे भाग्यहोने में कुछ संदेहनहीं कि आप सरीखे गुरूमुझको मिले, परन्तु आपकीदयामें न्यूनता अवश्यकरकेहै कि आपके चरणोंमें बिश्वास नरहा। मुरारिदासजी, इस कटाक्ष युक्त वचनसे बहुत प्रसन्नहुये औ और प्रसंग वाल्मीकि, श्वपचका कि जिसे कृष्णमहाराज ने युधिष्ठिरके यज्ञमें सबसेऊंचे आसन पर बैठलाकर द्रौपदीजीके हाथ सेभोजनकराया औरशवरीका कि ऋषीश्वरोंने जिसके चरण पकड़े औ जिसी चरण के प्रभावसे तड़ाग पवित्र हुआ और निषाद का कि जिसे वशिष्ठजी और ऋषीश्वरोंने बराबर बैठाया। और हनूमान्, बिभीषण, सुग्रीव औ गज, गणिका इत्यादिका वृत्तान्त उपदेशकरके राजा के अज्ञानरूप अन्धकार को दूरकिया और भगवद्भक्ति औ भक्तोंका विश्वास दृढ़करदिया

पीछे राजा के नगर में आये भगवद्भक्तों का वैसाही समाज औ सत्संग रहनेलगा सब उपद्रव औ उत्पात शान्तभये और लोगों ने भगवद्भक्ति अंगीकारकरी । एकबेरसमाजहुआतो जो २ भजन कीर्तनमें प्रवीण औ ज्ञाताथे सब चेलेआये तब कीर्तन के समय भगवद्भक्तोंने मुरारिदासजीसे कहा कि कुछ आपभी भजनकों तो उनके कहनेसे उठे औ घुँघुरू बांधकर नृत्यकरनेलगे वे भगवद्भक्तथे तो सबरागरागिनी सातोंस्वर औ तीनग्राम औ इक्कीसों मूर्च्छना सब आयके प्राप्तभये । और ऐसा समाज हुआ कि जो किसीने भी देखासुना नहींथा जब श्रीरघुनन्दन स्वामीके बनमें जानेका चरित्र भगवद्भक्तों ने कीर्त्तन किया तो मुरारिदासजी भगवत् विरह के तन्मय होगये और चित्रके सदृश ज्यों के त्यों स्थिरहोरहे अथवा यह बात समझी कि उस अरण्यबन में वे परमसुकुमार रघुनन्दनस्वामी औ जानकीमहारानीतथा लक्ष्मण जी की सेवा कौन करैगा इसहेतु इन प्राणोंको संग भेजना उचित है यह विचार करके मुरारिदासजी समाधि लगाय श्रीरघुनन्दन स्वामी की सेवामें पहुंचे वह सबसमाज यह चरित्र देखकर चकित होरहा ॥ इति चतुर्नवतितमः प्रदीपः ६४ ॥

गदाधरभट्टजीका इतिहास ॥

गदाधराख्यभट्टोहि भक्तिनिष्ठोऽभवद्दृढ ॥
चौरोऽपिदृष्ट्वायंसम्यग्भक्तोजातःसुशिक्षितः ८६ ॥

गदाधर भट्टजी भक्ति निष्ठ दृढभक्तभये । जिनका दर्शन करतेही चोर भी शिक्षितहो हरिभक्त होगया । वृत्तान्त । (गदाधर भट्टजी) प्रेमभक्ति के समुद्र, सुशील, मधुर बोलनेवाले सहज स्वभाव निस्पृह अनन्य भगवत् भजनमें आनन्द और लोगों को भगवद्भक्ति में दृढकरने वालेहुये किसी से कुछ चाहना नहीं रखतेथे और भगवद्भक्तोंकी सेवाऐसे प्रेमसे करतेथे मानोंइसीहेतु उनका जन्महुआथा उनका पदविष्णुपद कि । सखीहौं श्यामरँग

रँगी देखि बिकायगई वह सूरति मूरति माहिं पगी ॥ यह जीव गोसाईंजीने सुना.तो एक चिट्ठी लिखकर दोसाधुओं के हाथ भेजी उसमें यह लिखाथा कि "तुमको विना रैनीरँग किसप्रकार चढ़गया यह हमको चिन्ताहै" इसलिखनेका तात्पर्य्य प्रथमयह कि बिना वैराग्य अर्थात् त्याग विनाभक्तिका रंगचढ़ना कठिनहै सो तुमने गृह आदिका त्याग अभीतक किया नहीं फिर रंग में रंगीन किसप्रकार होगये । दूसरे यह कि श्रीवृन्दावन, भगवद्रूप के रंगकी रैनीहै सो वृन्दावनबास बिना रंग किसप्रकारचढ़गया साधुलोग वह चिट्ठी लेकर भट्टजी के घर पहुँचे संयोग वश भट्टजी नगरसे बाहर कुँवेपर बैठेथे उन्हीं से पूछा कि भट्टजी कहां रहते हैं भट्टजी ने उनसे पूछा कि तुम कहां से आये औ कहां रहतेहो साधों ने कहा कि सबधामों का परमधाम श्रीवृन्दावन है तहां रहते औ तहांहीं से आये हैं तो भट्टजी उस परम अभिराम नाम के सुन ते ही प्रेम में मग्न हो गिर पड़े औ कुछ काल पीछे सुधिभई तो परम आनन्द भरे मौनहोकर चित्र के सदृश खड़े रहे तब किसी ने साधों से कहा कि गदाधर जी येही महाराज हैं तो साधों ने वह पत्री उनको दी भट्टजी ने उसे पढ़ी औ शिर पै धारण कर वृन्दावन औ विहारी के रूपमें आनन्द होकर उसी क्षेण में श्रीवृन्दावन को चल खड़े हुये औ आकर जीव गोसाईंजी से मिले दोनों भागवतों को प्रेमकी नदी ऐसी उमड़ी कि उसमे मग्न होगये औ आपुस के सत्संग से निज भाग्य को धन्य मानकर भगवत्की बड़ी कृपा समझी । गदाधर भट्टजी ने जीव गोसाईंजी से सबग्रन्थ भक्ति भगवत् चरित्र औ प्रिया प्रियतम के रास विलास के पढ़े सुने और भगवत् के रूप रंग में रंगीनभये । भट्टजी श्रीमद्भागवत की कथा नित्य कहाकरके (कल्याणसिंह) राजपूत रहनेवाला दरेगांवका जो वृन्दावन के निकटहै, वह कथा सुनकर भगवत्की ओर सावधान हुआ तो अपने घरका आनाजाना त्याग के भगवद्भजन में

रहनेलगा तव उसकी स्त्री ने समझा कि भट्टजी के सत्संग से घरकी चाह औ काम की वासना सब जातीरही तो अपने पति को वे विश्वास करने के लिये एक स्त्रीगर्भवती जो भिक्षामांगती फिरतीथी उसे बीस रुपये देने करके सिखाभेजा कि जिससमय भट्टजी कथा कहें तव यह मेरी शिक्षा अच्छेप्रकार पुकार देना तबतो मेरेसाथ तुमकोवहहेलमेलथा कि गर्भभीरहगया अबऐसी निठुराई है कि खर्च का देनाभी बन्दकिया । उसने जायके वैसा ही कहा तो भट्टजी ने कथा कहते ही में उत्तर दिया कि ठीक है पर मेरी इसमें कौन सी तकसीर है तुम्हींने दर्शन नहींदिया तो कथा में जित ने लोग थे किसी को भी उसका विश्वास न आया औ कहने लगे कि यह निपट झूठ है और यह पापिनी दण्डकेयोग्य है तव राधावल्लभलालजी के गोसाईंको यह समाचार पहुँचा तो बहुत दुःखितहुये तो उस स्त्री को बुलाकर बहुत भय त्रास दिया कि सच कहु नहीं तो जी से मार डालेंगे तो उसने जो बात थी वह सत्यकहदी तव उस कल्याणसिंह ने भी उस निज स्त्री के त्रिया चरित्र को समझा तो तलवार ले कर उसके मारने को तयारहुआ तो भट्टजी ने ही दया करके कहा कि स्त्री को मारना कदापि उचितनहीं है इतनाही दण्ड बहुत है जो उसका त्याग होगया । किसी देशका एक महन्त कथामें आया तो भट्टजी ने सबसे आगे उसे बैठाया तो उस महन्त ने देखा कि सब श्रोता प्रेम से भरे हुये निज २ आंखों से जल बहा रहे हैं तब महन्त ने बिचारा कि मेरी आंख से एकबूंद भी जल नहीं पड़ता है तो ये लोग निश्चयमेरी महन्तता पर बोली मारेंगे । इस हेतु मिरच आंखों में डालली तो जलबहने लगा । एक साधु ने इस वृत्तान्त को देख लियाथा तो भट्टजी से सब वृत्तान्तकहा तो भट्टजी अपने हृदयकी सचाई से यह समझे कि उस महन्त ने इसहेतु निज आंखों में मिरचडाली कि जिन आंखों से प्रेमका जल नहीं निकले ये आंखें फूटीभली

तो जब कथा होचुकी भट्टजी उस महन्तसे अत्यन्त प्रेम करके मिले तो वह थोड़ेही दिनोंमें अन्यप्रेमियोंसेभी अधिक प्रेमीनेमी होगया। एकबेर गदाधरजीके स्थानमें एकचोर आया और वस्त्र आदि वस्तुकी दृढपोटबांधी परन्तु भारीकेकारणसे उठायनसका तो भट्टजी आपआये और वहअसबाबकी गठरीउठवादी तब चोर ने विचारकिया कि यह कौन मनुष्यहै जो पकड़ता नहींहै गठरी उठाये देताहै तोपूछा कि तुमकौनहो तो भट्टजी ने अपना नाम बतलाया तोचोर असबाबको छोड़कर चरणों में गिरा औ गिड़ गिड़ानेलगा तब भट्टजीने कहा कि निर्भयहोकर लेजाओ औरजो चाहिये सो लेलेओ औ शीघ्रचलेजाओ प्रभातहोगई तबतो चोर ने हाथ जोड़के विनय किया कि अबवह निरुपाधिधन मुझ को कृपाकरके दियाजाय कि दोनों लोक सुधरें यहकह रोकर फिर चरण पकड़ लिया तो भट्टजीने कृपाकरके उस को मन्त्रोपदेश किया और इसचोरी से छुटाकर माखनचोरका हाथपकड़ा दिया भट्टजीकी यह रीति थी कि भगवत् की रसोई सेवा सब अपने हाथ किया करतेथे सेवक बहुतथे पर भगवत् सेवा किसी को नही करने देतेथे एकदिन भगवत् रसोईको चौका देतेथे तोकोई राजा दर्शन करनेको आया औ बहुत द्रव्यभेंट करनेको लाया तो एकसेवकने विनयकिया कि चौका छोड़ हाथधोकर शीघ्रगद्दी पर आवैंतो भट्टजी उससेवकपर बहुत क्रुद्धहुये औ कहा कि भगवत् सेवासे अन्यमुख्यकाम कौनसाहै जिससे भगवत् सेवा छोड़ीजावे ऐसे २ गदाधर भट्टजी के बहुत से चरित्रहैं इति पंच नवतितमःप्रदीपः ९५ ॥

रतवन्तीका इतिहास ॥

भक्तोनसहतेपीडां कृतांकेनापिचप्रभोः ॥
रतवन्तीयथाप्राणान्-जहौदास्यादितेप्रभौ ९० ॥

भक्त निजस्वामीकी, किसी करके भीकी भई पीड़ाको

सहता। जैसे रतवन्तीजीने निज स्वामी श्रीकृष्णजी के माता करके रस्सी से बँधनेकी कथासुनतेही निज प्राणत्याग दिये, वृत्तान्त, रतवन्ती बाई वात्सल्य उपासक परम भक्तभई भगवत् भजन औ भोगकी तैयारी आदि में सर्वदा लवलीन रहाकरती एकजगह श्रीमद्भागवतकी कथाहोती थी तो वहां नित्यजाने का नियमथा एकबेर भगवत्का भोग बनारही थी तो उसे छोड़कर जाना उचितनहीं समझा क्यों कि सेवाको विशेषताहै सो बेटे को कथामें भेजदिया उसदिन कथामें यह प्रसंगथा कि श्रीनन्दनन्दन महाराज, माखन चुराकर निज सखाओं को देरहेथे तो यशोदाजीने यह चरित्र आप अपनी आंखों से देख लिया और उसीदिन कितनेहीं उलहने व्रजसुन्दरियों के भी आनपहुँचे तब नन्दरानी ने व्रजभूषण महाराजको ऊखलसे बांधदिया यहकथा बेटेने आकर रतवन्तीजीसे सब कही तो जिससमय उसलड़केके मुखसे यहबात निकली कि रस्सीसे बांधदिया तो विह्वल होगई और यहकहा कि यशोदाबड़ी कठोर है कि उस सुकुमारकोमल अंग वालेको रस्सीकी बन्धन कब सहिसकी होगी हाय २ मेरा वह मनोहर बालकतो रस्सीसे बँधाहै औ मैं सुखसेबैठीहूं यहकह उसी घड़ी निजप्राण निछावर किये और नित्य परम आनन्दको पहुँचकर अपनेआंखकी पुतली औ कलेजेके टुकड़े श्यामसुंदरको ऊखलके बन्धनसे छुटाया॥ इतिषट्नवतितमःप्रदीपः ९६॥

जस्सूधरका इतिहास॥

जस्सूधरोऽपितच्छ्रुत्वा चरितंहिनिजप्रभोः॥
तथैवकृतवान्पश्चाद्धरिणाश्वासितोयथा ९७॥

तैसेही जस्सूधरजी भी निज स्वामीका चरित्र सुनतेही तन्मय होकर तैसाही करनेलगे फिर रघुनन्दन स्वामी ने आकर उनको समझाया। वृत्तान्त। देवदासवंशमें जस्सू स्वामी ऐसे दृढभक्तहुये कि उनके स्त्री पुत्र आदि सबभगवत् परायणथे और

जिस भक्ति भाव से भगवत् में स्नेहथा उसीभाव से भगवद्भक्तों की सेवाकरतेथे और रघुनन्दन स्वामी के चरित्रों में ऐसी प्रीति थी कि चरित्रों को सुनकर भगवत् प्रेममें वेसुधि होजातेथे। यह चरित्र जो रामायण में लिखा है कि विश्वामित्र ऋषीश्वरआये औ दशरथमहाराजसे श्रीरघुनन्दनस्वामी औलक्ष्मणजीकोमांगा औ भक्तवत्सल महाराज, ऋषीश्वर के साथ चलने को तैयार हुयेतो इस चरित्रके वर्णनकरते समय उसी समाजके तद्रूपहो- गये अर्थात् कहने लगे कि महाराज! मैं भी साथ चलताहूं तब भगवत्ने साक्षात्होकर कहा कि तुम यहांहीं रहो हम थोड़ेही दिनमें विश्वामित्रजीका यज्ञपूर्णकरके आते हैं सो जस्सूधरजी ने उसरूपमाधुरी को सम्मुख देखलियाथा कि जिसकी शोभाके एककणकी शोभामें अनेक कोटि ब्रह्मांडोंकी शोभा लीनहोतीहै उसका वियोग कब सहाजाय उनसे रहनेकी आज्ञासुनतेही अ- पने प्राणशोभाधामभगवत्कीनिछावरकरके नित्यपरम आनंदको प्राप्तभये॥ इति सप्तनवतितमःप्रदीपः ६७॥

कृष्णदासजीका इतिहास॥

कृष्णदासोभवच्छ्रेष्ठः शृंगारकरणेमहान्॥
सेवांतस्यचशृंगारं वर्णयेत्कोऽनुरूपतः ६२॥

कृष्णदासजी, भगवत्के शृंगारकरनेमें वड़े श्रेष्ठभये उनकरके कीभई भगवत् सेवा औ शृंगारका कौन वर्णन करसकै। वृत्तांत यह है, (कृष्णदासजी) सनातन ब्रह्मचारी के चेलेभये जब श्री मदनमोहन महाराजका मन्दिर तैयारहुआ औ भगवत् मूर्ति उ- समें विराजमानहुई तो सनातनजी ने कृष्णदासजी को भगवत् सेवामें अतियोग्य जानकर भगवत् सेवा उनको सौंपदी सो ऐसे भक्तिभाव से सेवामें तत्परहुये कि जिसमें भगवत् औ गुरू अति प्रसन्नहोवें तिसके पीछे कृष्णदासजी ने नारायण भट्टको बुद्धि- मान् औ प्रेमी जानकर अपना चेला किया। एक दिन

सजी ने भगवत्का शृंगार किया औ भगवत् छवि को निरखने लगेतो भगवत्के रूपसमुद्रमें बेसुधि मग्नहोगये और प्रेमकीतरंगोंका इतनाझोकवढ़ा कि उपायकरनेसेभीअपने औ विरानेकी कछभी सुधि न रही जिसस्नेह औप्रेमसे शृंगार करते थे उसका वर्णनकिससे कवहोसक्ताहै ॥ इतिअष्टनवाततमःप्रदीपः ६८ ॥

अलखरामजीका इतिहास वर्णन ॥

शिष्टाविशिष्टाःपरदुःखहारिणोमप्राप्तमिच्छंतिधनादिकंबहु ॥ यथाहिवृद्धप्रपितामहोममवृद्धस्यमृद्धोऽलखरामनामधृक् ६३ चकारराज्ञःसदनेमनाटकंप्रदीयमानांजगृहेनसम्पदम् ॥ तुष्टःशताष्टादशसंख्यनन्दिनःकारागृहादाविरमोचयत्स्वयम् ६४ ॥

परदुःखहारी, शिष्टजन, प्राप्त हुये भी बहुत से धनादिक की इच्छा नहीं करते। जैसे हमारे वृद्धप्रपितामह, "श्रीअलखरामजी" ने जयपुर वाले महाराज जयसिंहजी के दरबार में निज शिक्षित महायोगि नाटक किया और प्रसन्नभये उन्हों ने राजा करके दीभई भारी सम्पदा को ग्रहण न की किन्तु प्रसन्न हो उन्होंने अठारहसौ १८०० गिने उमर कैदियों को कैदखाने से शीघ्र प्रकट आप छोड़े ६३ हमारे वृद्धप्रपितामह (श्रीसुखारामजी) के पुत्र श्रीमत् "अलख राम जी" थे। उन्होंने कामरू देशमें जाकर (महायोगि नाटक) रूप मोहिनी विद्या सीखी। तो आतेही समय जयपुराधीश महाराज श्री १०८ सवाई (जयसिंह जी) की सभा में वह महायोगि नाटक किया तिसे देख के सारी सभाके जन मोहित हुये और राजा ने मोतियों का थाल भरकर उनके आगेधरा और कुछ आजीविका करने के लिये प्रार्थना भी की तब निजानन्द से पारपूर्ण भये तिन्हों ने उस समृद्धिको तुच्छ नाशमान जानकर न ली तब तो राजा ने हाथजोड़करकहा महाराज! अलख

नाथजी और कांई चाहिये सो वेगाभणों" तब महात्मा अलख रामजी ने निज रागिनी में गाकर अपनी दयालुता सूचन की जैसे " मेरी चिड़ियों दा वंध कटादे। राज मेरी चि० " अठारहसौ कैदी तेरेवर, सबकी वंध छुटादे रा०„ हेराजन् हमतेरा द्रव्यादिक कुछ नहीं चाहते है किंतु तेरे इन १८०० कैदियों की वेडी हम आप अपने हाथ से काटेंगे। राजा ने सुन तैसा-ही किया तो तिनकायश अबतक संसार में विख्यात होरहाहै॥ इतिनवनवतितमःप्रदीपः ९९॥

अथ प्रसंगात् निज वंश वर्णनम्

सत्रेप्रतापेनसुपूजितोऽभवत् पुरोहितोविप्रवरेषुपूजितः॥स्ववंशवृद्ध्यैजगृहेसुतंवरं मुदास्वनाम्नासहजंसरामकम् ९५ ततानसोऽयंनिजवंशतन्तुमुत्थादयामाससुतानथासौ ॥ अष्टौवसूर्जप्रतिमांश्चतेषुगुणाग्रणीर्धौकलरामशर्मा ९६

फिर तो वे अलखरामजी निजप्रताप से पूजितहुये और ब्राह्मणों के कार्य बोधक अग्रगण्य ( पुरोहित ) भये फिर उन्हीं ब्राह्मण जनो करके निजवंश वृद्धिके अर्थ अर्थात् पुत्रका उपाय करना चाहिये ऐसे प्रेरेभये तिन्होंने सहायदाता ( सहजराम ) नामसे श्रेष्ठ पुत्र गोदलिया ९५ फिर तो तिन्होंने निजवंशरूप तन्तुको ताना बिस्तार किया अर्थात् वंश बधाया सो आठों वसुओं के समान आठपुत्र ( हरसहाय १ गोविन्दराम २ कृष्णसहाय ३ जीतमल ४ नवनिधिराम ५ धौंकलराम ६ और चिमनराम ७ रामरिख ८ ) ये उत्पन्न किये तिनमें भी गुणों करके अग्रगण्य "श्रीधौंकलरामजी" भये ९६॥

अश्वारूढःप्रविचरन्भूरिदेशवरेषुसः ॥ प्रगर्जन्केशरीवासौपूज्यमानोद्विजातिभिः ९७ अथतस्याभवन्नृप

त्राश्चत्वारश्चतुरावशः ॥ धनीरामकन्हीरामा वीश्वरो लालएवच ९८ ॥

ऐसे वे ( श्रीधौंकलरामजी ) श्रेष्ठ अश्वपर सवारभये बहुत से नगरों में विचराकरते औ तहां २ ही ब्राह्मणोंकरके पूजेजाते और सिंहकेसमान गर्जनाकरतेथे ९७ फिर तिन ( धौंकलरामजी ) के (धनीरामजी १ कन्हीरामजी २ ईश्वरीसहायजी ३ लालचन्द्रजी ४ ) ये चारपुत्र उत्पन्नभये जो बड़े चतुरभये ९८ ॥

आग्नेयोसावीश्वरीदत्तवर्य्यः कोवैसर्वांस्तंगुणानुवक्तुमीशः । बिभ्युर्यस्यप्रौढवीर्य्यप्रभावाद्दुष्टाजीवाःप्राणिसंहारिणोऽपि ९९॥

तिन ( श्रीधौंकलरामजी ) के चारों पुत्रों में जो ( ईश्वरीदत्तजी, ) हैं तिनके सम्पूर्णगुण कहनेको कौन समर्थहै । जिनके महाभारी बलके प्रभाव से दुष्टजीव जो प्राणियों को हतनेवाले वृक आदि वेभी डरतेभये और चौर आदिकों ने भी तिनसे भय माना इनका विस्तारसे वर्णन गौरव भयसे नहीं करते इससे संक्षेपसेही लिखाहै ९९ ॥

श्रेष्ठःसूनुस्तस्यगंगासहायः प्रज्ञायुक्तोयाजकेशःप्रवक्ता ॥ तद्भ्राताऽसौशुक्लदेवीसहायोविद्यारत्नैर्भूरिभिर्भूषितोऽस्ति १०० ॥

तिन (श्रीमत्श्रीईश्वरीसहायजी ) के पुत्र प्रज्ञायुत, प्रवक्ता ( श्रीगंगासहायजी ) याजकेशहैं । तिनका कनिष्ठ भ्राता ( शुक्लदेवीसहायशर्म्मा ) है जो बहुत से विद्यारूप अमोल्यरत्नों से बिभूषितहै १०० ॥

शब्दन्यायविदात्मशास्त्रकुशलो ज्योतिःप्रबोधेनयुक्रम्लज्ञस्त्वऽतिकर्म्मकाण्डकुशलस्तन्त्रस्यवेत्तापिच ॥

आयुर्वेदकृतश्रमश्रुतिपरोविद्वज्जनाह्लादकः दृष्टान्तावलि
कांव्यधत्तरुचिरांविद्वद्गणेचेश्वरे १०१ ॥

जो शुक्ल देवीसहाय--शब्द--व्याकरण--न्याय--तर्कशास्त्र इनका वेत्ता और- आत्मशास्त्र -वेदान्तमें कुशल, और ज्योतिषी, रमलजाननेवाला, औ कर्मकाण्डमें [illegible] तन्त्रमन्त्रशास्त्रमेंपरायण । और आयुर्वेदवैद्यक विद्याज्ञाता श्रुति अर्थ वेत्ता, विद्वज्जनों को आनन्ददायक ऐसे इसने इस "दृष्टान्तावली" ग्रन्थको बनाकर विद्वानोंके समूहमें औ ईश्वरमें तथा ईश्वरीसहाय निज पिताजी के चरणों में समर्पण किया इस ईश्वर सेवासे सब जगत्को सदासुख वृद्धिहोवे१०१॥शमितिशम्

समाप्ति समय ज्ञानम् ॥

रसाब्धिनन्दांक १९४६मितेसुसम्वन्मासेसहस्येत्व
थपक्षशुक्ले ॥ शुक्लेनतिथ्यांत्रिमितज्ञकायांशुक्लायग्रन्थःप
रिपूरितोऽसौ १०२

सम्वत् १९४६ पौष शुक्ल तृतीया बुधवारको शुभ भारत भूमि मण्डलान्तर्गत प्रसिद्ध इन्द्रप्रस्थनगरसे पश्चिमकोणस्थ आर्चीकशैलतलवर्ति [illegible]दग्रामनिवासी, श्रीमद्वृद्धसमृद्ध शुक्लोपनामक पंडिताग्रगण्य श्रीमत् "ईश्वरीसहायजी" तिनके सत्पुत्रवर पंडित "गंगासहायजी" याजकेश, तिनके कनिष्ठभ्राता पंडित "देवीसहाय" करके बद्रीनारायण युगल किशोरार्थ तथा समस्त विद्वज्जन विनोदार्थबनाया यह ग्रंथ सम्पूर्ण भया सो सबको सदा सुखदेवे ॥

मंगलम्भगवान्विष्णुर्मंगलंगरुडध्वजः ॥
मंगलंपुंडरीकाक्षो मंगलायतनोहरिः १०३ ॥

इति दृष्टान्तप्रदीपिनी समाप्ता

---

# सारस्वत सटीकका विज्ञापनपत्र ॥
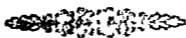
पण्डित लोगोंको उचित है कि प्रथम जिस समय छोटे २ विद्यार्थी उनके पास पढ़नेको आयें उनको अत्यन्त आदरसे अपने पुत्रके समान समझकर बहुत लाड़ प्यारसे उनको अकारादि सब स्वरों और ककारादि सब व्यंजनों को पहिचनवाकर लिखावें पढ़ावें और जिस समय छोटेबालकोंके खेलनेकासमय योग्य समझें थोड़ी देरके लिये छुट्टी भी देदिया करें जिस से बालक आनन्दसे पढ़ें इसप्रकारसे बहुत शीघ्र ऐसी सामर्थ्यकरा देवे कि जिसमें बालको को भाषा और संस्कृत भी पढ़ने की शक्ति अच्छीतरह से होजावे तिस पीछे अनुभूतिस्वरूपाचार्य्य कृत सारस्वत पुस्तकको इसभांति से कि जिस तरह फर्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डितवर उमादत्तशास्त्री और उन्नाम प्रदेशांतर्गत मुरादाबादनिवासि पण्डित शक्तिधरजी ने इसका अर्थकिया है प्रारम्भ करावे इसमें उक्त पण्डित जनों ने प्रथम मूल, पदच्छेद, अन्वय करके भाषामें इसभांतिसे अर्थ किया है कि जिसमें बालकों को सहजहीमें ज्ञानहोकर पूर्णबोध होजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसंधि, प्रकृतिभाव, व्यंजनसंधि, विसर्गसंधि, स्वरान्तपुँल्लिंग, स्वरान्तस्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हसान्तपुँल्लिंग, हसान्तस्त्रीलिंग, हसान्तनपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समासऔर तद्धित को पढ़ाकर तिसपीछे सिद्धान्तचन्द्रिका और रघुवंश और कुमारसंभवादि काव्यों को पढ़ावें इसभांति के पढ़ाने से बहुत शीघ्र विद्वान् होसक्ते हैं यही सोचकर श्रीभार्गववंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्यव्ययकर उक्तपण्डितों से टीका रचाया है आशाहै कि जो विद्यार्थी इसपुस्तकको क्रम से पढ़ेंगे वे शीघ्रही पूर्णबोधहोकर विद्वान्होजावेंगे अन्यथापढ़ाने से बहुतसमय लगकर बोध नहीं होताहै -क्योंकि बहुधा यही

को पढ़ाकर व्याकरण का प्रारम्भ करा देते थे और बालकों को तोते की तरहसे कण्ठही कराते थे जब उन बालकों को अच्छी भांति अक्षरके पहिचान का ज्ञान नहींहै तो वे कैसे पूर्णविद्वान् रट २ के पढ़ने से होसक्तेथे—आशाहै कि जो लोग इसपुस्तक के क्रम से व्याकरणका अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समयमें स्वल्प परिश्रमसे विद्वान्हो जावेंगे—जबव्याकरण में विद्वान्होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक और अठारहोपुराण काव्यादि में कुछभी परिश्रम न करना पड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करने में महान्विद्वान् होजावेंगे--

केनिंकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपंडित गंगाधरशास्त्री ने भी इस पुस्तकको अवलोकनकर सार्टीफिकट के तौरपरअपनी सम्मति प्रकट की है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकों को हितैषी है ॥

---

## मिताक्षरा भाषा टीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का शिरोमणिहै जिसमें आचारकांड व्यवहारकांड और प्रायश्चित्तकांड नामक तीन कांडहैं जिन से गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के सम्पूर्ण कर्म धर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुकद्दमोंकी व्यवस्था वर्णितहै ॥

---

# दृष्टान्तप्रदीपिनी द्वितीयभाग॥

---

## सार्वविषयिकमिश्रनिबंध

जिसमें

प्राचीन भगवद्भक्तिसंबंधी तथा रसिक वा वैराग्यसंबंधी तथा सर्वविषयके अत्यन्त रोचक, चमत्कृत कथोपयोगी दृष्टान्तों का संग्रह प्रत्येक दृष्टान्त श्लोक सहित है

जिसको

पण्डित देवीसहाय शुक्ल नारनौलीय ने निर्मित किया

प्रथमबार

---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपी

आगस्त सन् १८९६ ई० ॥

पंडितों की रीतिहै कि वे स्वर व्यंजन नाममात्रको बालकों को पढ़ाकर व्याकरण का प्रारम्भ करा देते थे और बालकों को तोते की तरहसे कण्ठही कराते थे जब उन बालकों को अच्छी भांति अक्षरके पहिचान का ज्ञान नहींहै तो वे कैसे पूर्णविद्वान् रट २ के पढ़ने से होसक्तेथे--आशाहै कि जो लोग इसपुस्तक के क्रम से व्याकरणका अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समयमें स्वल्प परिश्रमसे विद्वान्हो जावेंगे--जबव्याकरण में विद्वान्होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक और अठारहोपुराण काव्यादि में कुछभी परिश्रम न करना पड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करने में महान्विद्वान् होजावेंगे--

केनिंकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपंडित गंगाधरशास्त्री ने भी इस पुस्तकको अवलोकनकर सार्टीफिकट के तौरपरअपनी सम्मति प्रकट की है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकों को हितैषी है ॥

---

## मिताक्षरा भाषा टीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का शिरोमणिहै जिसमें आचारकांड, व्यवहारकांड और प्रायश्चित्तकांड नामक तीन कांडहैं जिन से गृहस्थादि चारों आश्रम और ब्राह्मणादि चारों वर्णों के सम्पूर्ण कर्म धर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुक़द्दमोंकी व्यवस्था वर्णितहै ॥

# सूचना ॥

देखिये इस संसार में कैसे २ दृष्टान्त रत्न भरे हैं जिनके आगे रत्नाधीश जौहरी आदि न्यून गिनेजाते हैं क्योंकि वे रत्न तो अल्प मूल्य वा बहुमूल्यहैं और ये अमोल्य जिनका मोल न होसके ऐसे और सुलभ हैं पर वे रत्न जहां कहीं थे इससे उन सबोंको एकत्र करके उनकी आदि में प्रायः एक २ श्लोक भी लगादियाहै इस द्वितीय भाग में वैताल पंचविंशति संग्रह भी है पहिले होनेकी अपेक्षा से इतना विशेषहै कि भाषा रसीली यमकादि मधुरतायुक्त और सबकी आदिमें श्लोक और इसमें तथा सर्वत्र समस्त दृष्टांत शिक्षा गर्भित है ॥

आप का शुभचिंतक शुक्लोपाध्यायः पं० ( देवीसहाय ) शर्मा शुक्ल जी श्री गंगासहायजी तथा देवीसहाय महेसरी मुहाल कानपूर रावका मुहल्ला नारनौल ॥

उक्त पते से पुस्तकादि निर्णय करनाहो कीजिये ?

विशेष सूचना यह है कि इसका तृतीय भाग भी तयारहै शीघ्रही छपेगा ॥ इति ॥

# ( इश्तिहार रामायण आल्हा का )

देखहु ! देखहु ! यह देखहु अब, कीरति रघुपति परम उदार ॥

प्रकट हो कि इस यन्त्रालयाध्यक्षने सर्व भारत निवासियों की
रुचि आजकल जैसी आल्हामें देखी ऐसी किसी विषय में नहीं
फिरिवो कौन आल्हा कि जिसमें जौन ब्यहिका जानिपरै तौनहै
सो बनायकै गावै—जैसे लोगगातेहैं कि ( भैंसि बियानी रे कन
उजमाँ पड़वा गिरा महोबे जाय ) अथवा ( बनी रोसइयां ल्वाि
आल्हाके ब्यहिमाँ परी साठिमन हींग ) ऐसेही सम्पूर्ण गाथा वि
जो न किसी पुराण में लिखी न कोई देवताही का आराधन इस
में व्यर्थ समय व्यतीत करने के सिवाय और क्या अर्थ सिद्धि
होसक्ता है इन सब बातोंको अल्पबुद्धी भी थोड़ेही विचार से स
समझ सक्तेहैं और गाना तो वही है जिसमें धर्म, अर्थ, काम, मो
की प्राप्ती हो और श्रेष्ठसे श्रेष्ठ देवताकी आराधनाहो जैसे ( क्यहि
खगेश रघुपति समलेखों । अस स्वभाव कहुँ सुनों न देखों ) य
कागभुशुण्डि जी गरुड़जी से कहते हैं कि हे खगेश हम किसक
श्रीरामचन्द्रजी के समान लेखा करें ऐसा स्वभाव तो हम किसी
को न देखते हैं न सुनते हैं—क्योंकि जो लङ्का रावण को बड़ी क
ठिन तपस्या से प्रसन्न हो श्रीशिवजी ने दी थी वो लङ्का सहजहै
में श्रीरामचन्द्रजी ने विभीषणजी को देदी—अथवा ( उलटाना
जपत जग जाना । वालमीकिभे ब्रह्म समाना ) कि जिनके उल
नाम के जापसे वाल्मीकिजी ब्रह्मके समानभये राम को उलटने
मरा होता है—अथवा ( बसन हीन नहिं सोह सुरारी । सब भूषण
भूषित बरनारी ) कि जैसे स्त्री को सम्पूर्ण जेवर पहनादी जा
लेकिन वस्त्र न हो तो क्या उसकी शोभा होसक्ती इसीतरह संपू

# सूचना ॥

देखिये इस संसार में कैसे २ दृष्टान्त रत्न भरे हैं जिनके आगे रत्नाधीश जौहरी आदि न्यून गिनेजाते हैं क्योंकि वे रत्न तो अल्प मूल्य वा बहुमूल्य हैं और ये अमोल्य जिनका मोल न होसके ऐसे और सुलभ है पर वे रत्न जहां कहीं थे इससे उन सबोंको एकत्र करके उनकी आदि में प्रायः एक २ श्लोक भी लगादियाहै इस द्वितीय भाग में वैताल पंचविंशति संग्रह भी है पहिले होनेकी अपेक्षा से इतना विशेषहै कि भाषा रसीली यमकादि मधुरतायुक्त और सबकी आदिमें श्लोक और इसमें तथा सर्वत्र समस्त दृष्टांत शिक्षा गर्भित है ॥

आप का शुभचिंतक शुक्लोपाध्यायः पं० ( देवीसहाय ) शर्मा

शुक्ल जी श्री गंगासहायजी तथा देवीसहाय महेसरी मुहाल कानपूर रावका मुहल्ला नारनौल ॥

उक्त पते से पुस्तकादि निर्णय करनाहो कीजिये ?

विशेष सूचना यह है कि इसका तृतीय भाग भी तयारहै शीघ्रही छपेगा ॥ इति ॥

# दृष्टान्तप्रदीपिनी सटीक ॥

---

## दूसरा भाग ॥

सार्वविषयिको निबंधः ॥

**अज्ञानतो वंचनतांगतंस्वकं भक्तंहरिर्दर्शनमात नोतिहि । प्रवंचितेसाधुवरेप्रपंथिनाप्रेतेऽपिसद्योनि जदर्शनंददौ १ ॥**

किसी साधुसे एक ठगने कहा कि तुमने भगवत्का दर्शनभी किया? वह सुन कुछ न कहसका तो ठग बोला आव तुम्हें मैं झट से हरिके दर्शन कराऊं ऐसे कह उसे श्मशान में लेगया वहां एक महाभयंकर प्रेत रहताथा वहां इसे बैठाकर कहा कि तू नहायधोय स्वच्छहो एक धोती अंगोछा मात्र धारणकर आंख मूंदकर बैठा रहु तुझसे हरि आकर मिलेंगे वह तो वैसेही बैठगया और उसठगने उनकी चीज वस्तु सब उठाई सोही वह प्रेत आया और साधुको पकड़के खानेलगा तो साधुने आंख खोली सोही वह प्रेतरूप तो भगा और वहांहीं चतुर्भुज रूपसे प्रकटहो हरिने निज दर्शनदेके

उस साधुको कृतार्थकिया उधर उस प्रेतने उस ठगको एक किलकारसे मारके खालिया × हरिकी भक्तिका यह प्रतापहै इति शुक्ल कृतौ प्रथमःप्रदीपः १ ॥

राजा और पंडितका दृष्टान्त ॥

स्वकर्मविहितंद्रव्यं समायात्यप्रदत्तकम् ।
राजाश्रुत्वाकथांसुद्रामात्रतोदाद्धनंमहत् २ ॥

निजकर्म विहित अर्थात् अपने प्रारब्ध में लिखा द्रव्य बिना दिया भी आपही से अपने पास चलाआताहै जैसे एक पंडितने राजाके पास जायके कथा बांचनेको कहा तो राजा बोला महाराज आप क्या लेवेंगे वह बोला जो प्रारब्ध में है वह आजावेगा तब राजाने विचारा कि हम इसको १) रुपयाही देंगे देखें अधिक कैसे मिलेगा निदान उसकी कथा पूरी होनेपर राजाने एकरुपया ही चढ़ाया ब्राह्मण कुछ न कहसका और वह रुपया लेजाकर मोदीको दिया उसके ५) रुपये खुराकके उठेथे इन्हों ने अपना सत्य २ हाल कहा तब वनियेने कहा महाराज जो आपके पास एकहीं रुपया आया तो मेरे पांच क्योंकर पूरेहों ब्राह्मण बोला भाई मेरी पोथी रखले तब उसने दयामें आकर कहा नहीं हम अपना पांच रुपयेका रुक्का कथापर चढ़ातेहैं और आप कल्ह यहांहीं भोजन करना उधर राजाने चढ़ाया तो एक रुपयाही था पर उस ब्राह्मणके अपमान होने से बहुत दुःखपाया तो पंडितों से उसका प्रायश्चित्त पूछने लगा उन्होंने कहा कि बहुतसा धन गुप्तदान करना तो तुर्तही राजाने सौ अशर्फी एक लौकी ( घीया ) में भर कर एक भिक्षुक ब्राह्मणको दियी वह लेकर घरगया तो उसकी स्त्रीने झुँझलाकर कहा कि कहींसे अन्न लाव जिससे पूरेपड़े इसे

कहीं पैसे धेलेको बेचलेना वह बेचनेको चला और उधर उस व-
नियेका नौकर पंडितजीकेलिये शाक लेनेको निकला तो ब्राह्मण
के हाथमें लौकी देख बोला बेचैगा वह बोला हां इसीलिये आया
उसने पैसेमें वह लई और झटआय पंडितजीको दई उन्होंने उसे
सँवारी तो उसमें सौ अशर्फी निकलीं पंडितने रखलई और वह
भिक्षुक ब्राह्मण फिर दूसरे दिन राजाके महलके नीचेसे पुकारता
निकला तो, राजाने उसे बुलाय पूछा कि लौकी कैसी बनी
थी उसने लाचार हो कहदिया कि महाराज! मैंने तो उसे स्त्रीके
कहने पर अन्नके लालच एक पैसेमें उस मोदीके नौकरको बेच
दियी तब राजा उस हालकोजाना और पंडितजीको बुलवाकर
पूछा उन्होंने (स्वकर्मविहितं द्रव्यं) यह श्लोक पढ़ा तो राजाने
सुन प्रसन्नहोके उनको सौ अशर्फी और दियीं इति २ प्रदीपः॥

एकादशीको अन्न न खाना इसपर दृष्टांत॥

**एकादश्यांतुपापंहि चान्नमाश्रित्यतिष्ठति।**
**तस्माज्जनैर्नभोक्तव्यं दृष्टान्तोऽत्रनभोजने ३॥**

एकादशी के दिन पाप, अन्नमें आकर रहताहै इससे जनोंको
उस दिन अन्न नहीं खाना चाहिये क्यों न खाना क्या कारण इस
पर दृष्टांत श्रीविष्णुजी से धर्म उत्पन्नभया तिसकरके सब धर्मात्मा
भये धर्मराजको काम न रहा तो विष्णुजी से जायपुकारे कि हमें
काम नहीं तो विष्णुजी ने बड़ा शोचकिया उनके शोच करते २
पृष्ठभागसे एक पसीनेकी बूंदपड़ी उससे अधर्म उत्पन्न हुआ तो
उसे विष्णुजी ने मृत्युलोकमें भेजा तब बहुत पापी जनभये धर्म-
राजको काम करते २ भोजनका भी अवकाश न रहा तो फिर
पुकारा कि अवकाश नहीं तब विष्णुजी ने अधर्मको

से हटाया वह फिर वहां पहुँचा तो विष्णुजी बोले यहां बैकुण्ठ में तेरा काम नहीं ब्रह्माके पासजा वह ब्रह्मलोक में गया वहां ब्रह्माजी ने खेदा कि यहां कथावार्त्ता होती तेरा कामनहीं फिर वह कैलाश में भी गया तो शिवजी त्रिशूललेकर दौड़े तब तो फिर विष्णुजी ही के पास आकर कहनेलगा कि आपसे उत्पन्नहुआ अब मैं कहां जाऊं तब विष्णुजी ने विचारकरके कहा कि तू सब दिन मृत्युलोक में रहु और एकादशी के दिन अन्नमें रहाकर इससे अन्न न खाना इति २ प्रदीपः ॥

हजार रुपये के श्लोक दृ० ॥

मनुष्यभाग्यंपिहितं नजानेस्यात्कदोदितम् ।
लज्जाभंगोनकर्तव्यः कर्तव्यंरक्षणंह्रियः ४ ॥
शतंविहायभोक्तव्यमितिस्यान्निश्चितामतिः ।
कृतवैरेनविश्वासो नवस्तव्यंतुतत्रवै ५ ॥

एक वैश्यका पुत्र कमानेको गया राहमें एकसाधु मिला दोनों चले रातको एकत्ररहे तो वैश्यपुत्र ने कहा महाराज कोई बात बताओ जिससे मैं कमालाऊं उन्होंने कहा बचा हमारे एक श्लोक के हजार २ रुपये लगते हैं, वह बोला इतनेही देऊंगा तब साधुने ( मनुष्यभाग्यंपिहितंनजानेस्यात् कदोदितम्–मनुष्य का भाग्य दकाहुआ होता अर्थात् किसीको मालूम नहींहोताहै न जाने यह कब उदय होजावे ) यह दो पद बताये औ पांचसौ रुपये उससे लिये फिर उस साधु ने उसे ( लज्जाभंगोनकर्तव्यः कर्तव्यंरक्षणं ह्रियः–किसीकी लज्जा भंग न करनी किंतु उसकी लाजरखनीही चाहिये) यह बातकर पांचसौ रुपये लिये फिर उसने ( शतंविहाय भोक्तव्य मितिस्यान्निश्चितामतिः--सौ काम छोड़के पहिले भोजन

करना यह निश्चय मति रखना) बताकर पांचसौ लिये फिर (कृतवैरेनविश्वासो नतत्रवसनंस्मृतम्–जहां वैरहो तहां विश्वास और निवास नही करना ) यह बताया, फिर वह साधु कहीं चला गया और वह जाय दूसरे ग्राममें बड़े शहर के निकट रहा वहांसे उसने निज नौकरको रसोईका सामानलेने शहरमें भेजा वहां वह पहुंचा रातहोगईथी फाटक बंदपाये तो बाहरही पड़रहा अकस्मात् वहांका राजा मरगया और वहां यह विचार ठहरा कि राजा का मुख्य दायभागी कोई है नहीं इससे जोकोई प्रातःकाल प्रथम फाटक पर आजावे उसेही राजा बनादेवें. निदान प्रातःकाल लोग फाटकपर आये तो उसके नौकरको खड़ा देखा झटलेचले वह बोला मैं तो आटा लेने आयाहूं उन्होंने कहा तुम्हीं से हजारों आदमी आटाले उदरपूर्ण करेंगे यहकह लेजायके झट गद्दी पर जाबैठाया फिर तो वह महा प्रतापीहुआ तो नौकरों से बोला कि फाटकके सामने गांव में हमारा एक नौकरहै उसेलेआकर बागमें उतारो और उसकी प्रीतिसे सेवाकरो और जो कुछ उसे चाहिये सोही खजाने से दिवाओ उन्होंने उसे उतार तैसीही सेवाकियी वह बेचारा अपने नौकरकी चिंता में रहा निदान एकवेर दोनों का सामना हुआ तो वैश्य उसे देखके हँसा तब उसने कहा जो किसी सेतू ने कहा तो बुरा हाल होगा तूही अपने को नौकर बताना तो वह वैसेही रहा एक दिन उस राजाकी स्त्री किसी घोड़ेवाले ( सईस ) से कुकर्म कररही थी उसने उनको देखा तो उसे ( लज्जाभंगोनकर्तव्यः ) यह पद याद आया तो उन्हें अपने दुशालेसे ढकदिये तब उस स्त्री ने विचारा कि यहहमारी बुराई करेगा तो झट दुशाले समेत राजाके पास जायपुकारी कि तुम्हारा

नौकर जो मुफ्त का खाताहै उसने मुझसे ठाढ़करके कुकर्म करना चाहा यह उसका दुशालाहै मैं छुटाकर आईहूं राजाने वह दुशाला पहिचानके उसके मारनेका विचार किया तो उसे एक पत्री देके कहा कि यह फलानी जगह देआव उधर उनसे कहभेजा कि तुम्हारे पास पत्र लेकर आवे उसे मारदेना वह पत्र लेकर चला तो रसोई तैयारथी उसे झटही ( शतंविहायभोक्तव्यं ) पद यादआया तो भोजन करनेबैठा और उसी ( सईस ) ने विचारा कि न जाने इस पत्र में क्या इनाम का कामहै तो उस पत्रको लेकर आपभगा आगे जातेही काम आया राजाने इस बात का ब्यौरा मँगवाया तो ( सईस ) मरा सुना तब तो उस मूर्ख राजाने विचारा कि यह ऐसा चतुर है तो न जाने हमारी क्या २ खराबी करैगा अब इसे मारही देना अवश्य है उधर उसने बाकी रहे ( कृतवैरेनविश्वासो नवस्तव्यंतथैवच ) यह दोपद याद आये तो वहांसे बहुतसा माल लेके चल दिया इति ४ । ५ प्रदीपः॥

साधुका दृष्टान्त ॥

## परघातविचारेणस्वीयघातःप्रजायते ॥
## साधुमारयमाणःस्वपुत्रग्रीवांयथाच्छिनत् ६ ॥

पराया घात विचारने से अपनाही बुरा होजाताहै जैसे एक साधु द्वारकाजीको जाताथा उसके पास सौ अशर्फी थीं तो जहाजवाले ने उसे पहिचानके मारनेका विचार करके ऊपरके रखने पर एकान्त भेज दिया दैववश उसके लड़के को गरमी लगी वह ऊपर जाय सोया उस साधुको नीचे उतार दिया आधीरात को वह दुष्ट साधुको मारना विचारके ऊपर चढ़ा और झटही तलवार से शिर उसका उतार लिया अशर्फी न मिलीं तो चांदने से देखा

तो पुत्र का शिर है तब तो हाय २ पुकार रोता पीटता साधु के चरणों में जा गिरा और उनसे हाल अपने मनोरथ का कहा साधु सुनके बड़े पछताये कि देखो हमारे शरीरके हेतु इसका पुत्र मरा हरीच्छा इति शुक्रकृत ह० प्र० ६ प्रदीपः॥

॥ गुरु का दृष्टान्त॥

अप्रदीक्षितसम्पर्कादोषोऽतोगुरुमाश्रयेत्॥
अदीक्षितोयथाविप्रोगजयोनौयथाऽपतत् ७॥

बिन दीक्षा किये अर्थात् जिसने गुरु न किया उसके संग रहने से भी दोष होताहै जैसे एक कृष्णदत्त ब्राह्मण था उसके घर श्रीनारदजी आये वह घर न था उसकी स्त्रीने उनकी यथाविधि सेवा की तो नारदजीने प्रसन्नहो कहा धन्य है तुम्हारे गुरु को जिसने ऐसा उपदेश दिया तब तो वह घबराकर बोली महाराज! गुरु तो मेरे नहीं है यह सुनतेही नारदजी उदासहो भ्रम खा गिरे फिर सचेतहो बोले कि तुझ निगुरीके हाथ का अन्न जल हमने ग्रहण किया न जाने हमारी कौनगति होगी फिर तो वह चरणों में गिर रो २ प्रार्थना करनेलगी महाराज मेरा उद्धार करो जल्दी चेली कीजिये नारदजीने शीघ्र उपदेश दिया कि नुगुरुके संग कभी खाना पीना बैठना सोवना न चाहिये इत्यादि बताकर नारदजी तो चलेगये और उसका पति आया तो उसने कहा अलग ही रहो मैं नुगुरे के साथ निवास कभी न करूंगी ब्राह्मण चकित हुआ कि यह क्या नारद घरमें आघुसा वह बोली अब तो जब आप गुरु करलेवेंगे तभी दूसरी बात होगी ब्राह्मण, गुरु करने का विचार करतारहा दैववश मृत्यु होगई तो वह द्रविड़देशके राजा की पुत्री हुई और वह उसी राजा के घर हस्ती जन्मा दोनों को ज्ञान

पूर्वजन्म का बनारहा तो वह उसे जाकर कहाकरती कि देख तूने गुरुदीक्षा नहीं लिया इससे हम तुम दोनों को जन्म लेनापड़ा नहीं दोनों सत्यलोकको चलेजाते यह सुनतेही हाथी जीमें बहुत लज्जित हुआ और उस पुत्री का स्वयम्वर ठहरा उसके पिताने देश२ के राजा बुलवाये वह उस व्यवस्थाको देख बड़ा दुःखपाया और चरना पीना कई दिन पहिले से छोड़दिया तो उस स्वयम्वर के उत्साहमें राजाको हाथीका बड़ाभारी शोच उत्पन्नहुआ क्योंकि वह हाथी ज्ञानहोनेसे मनुष्य की तरह समझता था तब तो राजा उदासहो बोला कि हमें हाथी का बड़ा सन्देह है तो पुत्री ने का कहा कि आप कुछ सन्देह न कीजिये इसकी चिकित्सा मैं करतीहूं यह कह हाथीके पास जायबोली कि तू घबरावनहीं मैं तेरेही गलमें फूलमाला डालोंगी हाथी यह सुनतेही चरनेलगा तो राजा बहुत प्रसन्न हुआ और बड़ी धूमके साथ पुत्री का स्वयम्वरोत्सा तैयार किया निदान पुत्री ने सब राजाओं का तिरस्कार करके अपने पूर्वजन्म के पति हाथीही के गल में माला डाली य. आश्चर्य देख सब हाहाकार करनेलगे कि पुत्री भोली है फिर उसने वैसाही किया तो राजा बोला प्रारब्ध इसपुत्रीकी फिर त उस पुत्री ने निज गुरु श्री नारदजी का आवाहन किया वे तुरन्त आये और यथाविधिसे उस हस्ती को मंत्रोपदेश किया वहहस्ती का शरीरतज सुंदरमनुष्य होगया सबलोग अचम्भेमें रहगये गुरु प्रताप ऐसा है श्री शुक्रकृतौ ७ प्रदीपः ॥

हत्याकारी का दृष्टान्त ॥

प्रकुर्वन्स्वशरीरेण देहीवध्योनसंशयः।
पापभिद्रेरोपयित्वा दुःख्यभूत्पाणिकर्तने॥

जो निज शरीर के किसी भी अवयव अर्थात् पैरसे शिर से किसी अंग से भी, पाप हो वह देहवान् पुरुषही को दण्ड दिया जाताहै जैसे किसी दुष्टने गऊ हत्याकियी उसको कैड़ा किया तो उसने कहा कि मैंने यह हत्या हाथों से कियी तो भुजोंका स्वामी इन्द्रहै इससे इन्द्रको हत्यालगैगी हमें क्या तब तो यहहाल समझ सरकारने उसके दोनों हाथ कटवादिये और कहा कि ये इन्द्रहीको हाथ कटे तेरा क्या इति ८ प्रदीपः ॥

रामाधार पण्डित का दृष्टांत ॥

स्वयमेवाप्नुयात्सिद्धिं विपरीतपर्यिकृतम् ।
विश्वासेनहरेरामाधारेसिद्धिर्यथाभवत् ९ ॥

जो निज विश्वासयुक्त हरि के आश्रयहोकर कामकरे वह उलटा भी किया ईश्वर कृपासे सिद्धहोजाताहै जैसे रामाधार ब्राह्मण से राजा ने प्रश्नकिया कि हमारे हाथ में क्याहै तो उस सीधे ब्राह्मणने घबराकर कहा रामासरे हमजानें 'किया' है तोही राजा ने विचारा कि मैंने सब राज निज हाथ में रहने अर्थात वश में करने का प्रश्न कियाहै कि सब काम काज मेरे हाथमें आजावे सोही पंडितजी ने हाथमें किया अर्थात् काज बतायाहै तबतो पण्डितजी को बड़े सन्मानसे अपने पासरक्खे तो और लोग इनसे द्रोहकरने लगे तो इन्हें सीधे जानबोले कि आज तुम राजाकी पगिया उछालदेओ तो हमजानें कि राजा तुम्हारे वशमें है उसने भरी कचहरी में राजाकी पगड़ी उछाली तो उसमें एक सर्प सबको दिखाई दिया सब लाचारहुये पण्डितजीका बड़ा सन्मानहुआ फिर उन्होंने कहा आज राजाको कचहरी से बाहर उठाकर पटकदे तो हमजानें

फिरभी उसने वैसाही किया तो रामप्रतापसे कचहरीकी कड़ीगिरी कई मनुष्योंके चोटलगी तब पण्डितजी का औरभी बड़ाहीसन्मान हुआ कि पण्डितजी न होते तो राजाका मरण होजाता फिर तो उन्होंने राजासे कहदिया कि शिकारखेलने में पं०जी बड़ेचतुर हैं शेरकी शिकार में इनको संगलेचलना तो राजा लेगया और जब सिंह आया तो राजा डर के भगगया और पं० जी औसान पाय एक वृक्षपर जाचढ़े वह सिंह नीचे खड़ा हो ऊपरको मुंहकरके दड़ाता दैववश भयकरके उसके हाथसे भाला छूटकर शेर के मुंहमें पड़ा शेर मरगया उसने परीक्षाके लिये उसपर एक डाली तोड़डाली तो मराजान उतर के शहरमें आय रौला किया कि हमें शेरके पास अकेला छोड़ तुमसब भगआये वहां हमारा राम बिन रक्षक कौनथा वह मरापड़ाहै उसे उठालेआओ लोगजाय लेआये और राजाने उनको अपना (दीवान) बनाया इति ॥

तैसेही एकवैद्यराजने निजगुरुसेहर्र,सर्वगुणकार्य साधकसुनी तो उसीका आश्रयलेकर वैद्य बनचला, एक रोगीको देखा उसको हर्रबतायी उसके उदरव्याधीथी दस्तहोकरआरामहोगया फिरएक कुम्हार ने आय पूछा पं० जी मेरे गदहाका पतानहीं तो पं०जीको हर्र सिद्ध था कहा कि पांच हर्र घोटकर पीले उसने पियी तो दिशा की शंकाभयी गढ़े में गया तो वहां गदहा मिलगया एकबेर राजा पर शत्रुने चढ़ायी कियी तो राजाने पण्डित जीकी शरण लियी उन्हों ने कहा कि पांच २ हर्र तुम सबजने पी लेओ उसने सबसेनाको आज्ञा दियी उन्हों ने पियी तो यह ब्यौरा उस शत्रु की सेनामेंभी पहुंचा तो उन्होंने बहुतसी हैंरंपियीं तो इधरवालों को तो एक २ दो २ ही दस्तहुए और उन सबोंको दिशाजाते

सुधि न रही तो राजाने धावाकर उन सबोंको जीतलिये इति ॥

दृष्टांत

एक बनियाबनियानी, गंगान्हानेगये राहमें एकब्राह्मणमिला तो बनियानी ने उससे (पालागन) करी तब वह बोला अच्छा आज तेरेही भोजन करेंगे वैश्यने कहा ले और (पालागनकर) अब याहि जिमानोपरैगो लाचारघरलेगये पैरधोय भोजन कराया उसने उठकर फिर पैर धोये तो उसका लड़काबोला अरी मा! यह तो फिर पैरधोवनलगा,वहबोली बेटा अवसुभैखाओ इति ६ प्र० ॥

दूतीका दृष्टान्त ॥

दुष्करंकुरुतेकार्य्यं दूतीनोत्राद्‌गतंयथा।
राज्ञाहतंमयूरंयावैश्यंसम्पग्न्यजिज्ञपत् १०॥

दूती, कठिन भी कार्य्यको सिद्धकरदेती हैं जैसे एकवैश्य का मोर उड़कर राजा के महलपर जायबैठा उसकी गर्भवती रानी ने कहा इस मोरके भक्षण करनेमें मेरा दोहद (औजना) है राजाने उसे शीघ्रपकड़वा तैयार करवाकर भोजन करवाया उधर उससाहूकारने बड़ा प्रयत्न उसके ढूंढ़नेका किया तो दूती बुलवाई वह सर्वत्रहोती राजाके यहां भी पहुँच मयूर भक्षण करने के गुण वर्णन करनेलगी तो रानीने उसेपास बुलाकर कहाकि मैंने मोरभक्षणकिया है इसका फल कह तब उसने (भाग्यवान्) पुत्र होनेका समाधान किया और उससे पूरा २ पतालेकर वैश्य के पास आई सब हाल कहा तो वह बोला कि मुझे प्रत्यक्ष दिखावे तब मैं जानूं तब दूती ने एक ढोल में उसे मढ़वाय डोमनी होकर तहां गई और राग गानेलगी कि शाखी सुनले ढोल वहूका बोल सु० अंतरा मोर

आयो फिर कहां कियो। मोहिं पकड़ला राजादियो ॥ सु० १ फिर क्या पाल्यो पिंजरे डार। नाही खायो ताहि बनार॥ सु० २ काहे निष्फल जीव नसाय। लग्यो औजनारह्यो न जाय॥ सु० ३ ज्ञानिनि याको भेद बताय। शुक्लाम्बर देहूं इहिदाय ॥ सुनले ढोल बहू का बोल ४ यह सुनतेही शीघ्र ढोल फाड़के वैश्य,बाहर निकला और रानी को गिरफ्तारकर राजा के पास जाय अपने मोरका दावा किया राजा ने बहुतसा धन देना कहा पर यह न माना लाचार हारकर राजा को उसे अपना दीवान बनाना पड़ा इति शुक्लकृतौ दृ० प्र० १० प्र० ॥

हत्वान्नृपं पतिमवेक्ष्यभुजंगदष्टं देशान्तरेविधिवशाद्गणिकास्मजाता। पुत्रंपतिंसमधिगम्यचिंतां विहाय दृष्टाचगोपगृहिणीतुकिमिदंचतत्क्रम् (तथा चोक्तं विवाहवृन्दावने) मूर्तौक्रूराःस्वात्पराशौतुपापाकुर्य्युर्योगंकार्मुकंकन्यकास्मिन् ॥ हत्वाकान्तंकान्ताविपाद्यैर्वेश्यारामंरंरमीतिस्वरीत्या ११ ॥

जिसके लग्न में क्रूर ग्रहहों औ २। ३ राशि में भी तो यह (कार्मुक) योगाहोताहै इसमें विवाही अपने पति को विषादिदेके मारकर आप वेश्याभयी कर्मकरतीहै इसपर दृष्टांतकहतेहैं एकस्त्री भाग्यवान् घर से सब सुख भोगविलास करतीथी अकस्मात् उसका एक यवन से दुःसंगहोगया वह उससे ऐसी रमी कि अपने पति को भोजनमे विषदेके मारकर पुत्रको तहां छोड़ा उसके साथचली फिर जहांतहां रहते कुकर्मकरते, दैववश वह यार मरगया, उसने और किया तो वह भी कहीं चलागया तब वह वेश्याभई अनेक

परपुरुषों के साथ जारकर्म करनेलगी भावीवश वही उसका पुत्र सौदागरीकरता उस शहर में आया और उसे स्वरूपवती देखकर उसके मकान में आय चढ़ा उसके साथ सुखभोगकिया फिर आपस में बहुत प्रेमहोनेपर उसने पूंछा कहांसे तशरीफलायी हैं वह बोली न पूछिये मैं महाहत्यारीहूं पति को मार यारपाया यार मरा और किया औरभी निकलगया तो वेश्याभई अब यहदशा है आप भी बतलाइये वह सब विचार उसे पहिचानके बोला कि मैं महाही हत्यारा तेरापुत्र हूं पहिचानले यहकहतेही देखते २ उसकी चूंची से दूधकी धारचली उससमय दोनों बेचेतहोगये देह में चेतभया तो पंडितों से पूछा उन्होंने आज्ञा माता के सामने चिता में जलजानेकी दई यह वहांहीं चितालगाय माताके सामने जलगया तब वह दुःखभरी वियोग से तपीवृद्धभई फिर ग्वालिनियों में दही बेचनेजाती एकदिन उसके शिर से गोरसकी मटकी गिरके फूट गयी तो उसने कुछ शोच न किया तब उन्होंने कहा कि तू कैसी धीरहै जो दिनभरकी कमाई खोय शोच नहींकरती तब उसने यह श्लोकपढा और सब निज व्यथा सुनाई वे सुन चकितहो राम २ कहनेलगीं इति ॥

एक (साधु) ने निज शिष्यसेकहा तू खेतमेंसे सिरा, फली तोड़ लाव और कोई आवेगा तो मैं तुझे प्रभाती रागसे समझाताहूं जब देखा कि दो आदमी सामने आते हैं तो गानेलगा प्रभाती बड़जा साध दराड़े बड़जा, आयगया संसारी ब० इति और जब देखा चलेगये तो फिर बोला उसी रागके अंतरे से जैसे निकला साध दराड़ामांसे ऊठगया संसारी। तोड्या २ सब लेआइये है भोजनकी त्यारी। बड़जा साध दराड़े बड़जा इति जबकि किसानोंने

खेतमें सरसराहटदेखा तो लट्ठ ले २ कर आ खड़ेहुये तो तिन्हें तीनों कोनों में खड़ेदेख समझाताहै उसीरागसे जैसे पेटपलिणिया ढैजा साधू पड़ी जीवपरघांरी। पूरब पश्चिम उत्तर रुकिरहि दक्षिणदिशा तुमारी। व० इति सोही वह तैसेही दक्षिणकी राहसे निकलचला किसान देखतेही रहे एक समय नारदजी सत्यभामा के घर पहुँचे उसने इनकीपूजाकियी और पूछा कि हमने पूर्वजन्ममें कोई भारी पुण्य किया था जिससे श्रीकृष्ण महाराज मिले अबभी कोई ऐसा उपाय बतलाइयो जिससे यही कृष्णजी मिलें तो नारदजी बोले तुम इन्हीं कृष्णजी का दानकरो तो फिर भी इन्हीं को पावोगी तब कहा कि आप शीघ्र दान करवालीजिये तो नारदजी बोले लेवै कौन किसी भडरिया ( डकोत ) को बुलाकर देदेवो तब हाथजोड़ बोली महाराज ! आपही लेलीजिये तब तो नारदजीने झट संकल्पले कृष्णजी से जा कहा महाराज ! लँगोटलगाकर हमारे साथ होइये तबतो कृष्ण, घबराये और सत्यभामा भी बोली कि महाराज अगले जन्म में पानेकेलिये दानकिया औ आप अभी लियेजातेहो इति ॥

मारनेवाले से जिवाने वाला प्रबल है जैसे एक व्याधने कबूतरके ऊपर बाणमारा और उसवृक्ष के कोटरसे सर्प निकलकर उसी कबूतरको खाने आताथा और ऊपरसे शिकराभी उसी परझपटा तो दैवयोगसे वहबाण सर्प को बेधकर शिकरेके लगा और वह सर्प झुंझलाकर व्याधपर गिरा उसे काटखाया ऐसेवे तीनों मरे और कबूतर जीवतारहा इति दृ० ११ प्र० ॥

यतोयतोधावतिदैवचोदितं मनोविकारात्मक

मापपंचसु ॥ गुणेषुमायारचितेषुदेह्यसौप्रपद्यमानः सहते॥ १२॥ स्वप्नेयथापश्यतिदेहमीदृशं मनोरथेनाभिनिविष्टचेतनः ॥ दृष्टश्रुताभ्याम्मनसाऽनुचिन्तयन् प्रपद्यतेतत्किमपिह्यपस्मृतिः॥ १३ ॥

यतोयतोधावति, पर तीन दृ० पहिले यंयंवापिस्मरन्भावं, कह कर लिखआये है। अब स्वप्नेयथापर कहते है कि एक भड़भूंजा, भाड़ झोकरहाथा उसके आगे से राजाकी सवारी निकली तो उसने देखकर पश्चात्तापकिया कि देखो मै राख में सनोबैठा और राजा इस ठाट से जाताहै यह कहते २ उसकी आंखलगगयी तो तुर्तही स्वप्न में राजाहोगया सुन्दर रानी के साथ सुखसे रमणकर रहाथा इतनेमें दो ग्राहक आय बोले अरे भड़भूंजे भाड़भूंज तैयार कर वह स्वप्न के आनन्द में मग्नथा कुछ सुधि न भई तो उसकी भड़भूंजी ने आकर उसके दो लातमारी और कहा अरे दई मारे तोहि सूझैनहीं ये दोय ग्राहक कबके खड़ेहै तबतो घबड़ाकर (हाय रानी२ ) कहता उठा तब भड़भूंजी बोली निपूते कबै मै पड़ी सौक रानी औ भाड़में पड़ा तू दाने भूंजे दाने जिससे पेटभरै भड़भूंजा सुन पछताय २ भूंजनेलगा तथा एककी सगाईभई उसके चाव २ मे कूवे के ठानेपर सोगया तो स्वप्न मे विवाह भया औ गौना भीहो गया बहूआई औ दोनों साथसोये तो बहूने कहा जरा सरकना तो सरकताहूं कहकर धम्मसे कुए मे गिर मरगया इति १२।१३ प्र० ॥

आयुर्बल का दृष्टान्त ॥

आयूरक्षतिमर्म्माणिह्यायुरन्नम्प्रयच्छति।
भक्षयित्वापितुर्विषंराजासीजीवितोयथा १

आयुर्बल इस शरीरकी रक्षाकरै औ आयुही जीवरक्षक अन्नो पानदेताहै जैसे राजा विषखाकरभी जीतारहा दृ०एकराजाकेपास दो पण्डित गये राजाने पूछा आप क्या २ पढ़े हैं तो एक बोला मैं ज्योतिष पढ़ा हूं दूसरे ने कहा मैं वैद्यराज हूं तो राजा ने ज्योतिषी से पूछा हमारी अवस्था कितनी है उसने कहा ७५ वर्ष की तो राजाने केवल उनकी परीक्षा के लिये वैद्यराज से कहा कि आपकेपास विषहै वह बोलाहां है तो राजाने मांगा तो उसने दूनी मात्रा दियी राजालेजाके खागया तो शरीरमें दाह उठी तब निकल चलाएक पहाड़की जड़मेंझरना झरताथा उसके नीचे शिरलगाकर बैठारहा ऐसेही तीनपहरबीते तो शीत ने सताया तो तहांसेचला एक प्रेत जलताथा उसकी अग्निसे तापा फिर क्षुधालगीतो जलमें से मछली निकाल उसी अग्नि में भूनकर खाई तो विष उतरगया सावधानहो निजराजगृहमें आया तो ज्योतिषी ब्राह्मणको प्रसन्न होकरबहुतसा धनदिया फिर वैद्यराजसे पूछा कि उसविषका कोई उतार (इलाज) भी आपकेपास लिखाहै उसने कहा हां कदाचित कोई झरनेके नीचे जा तीनपहर बैठे फिर प्रेतकेधुवाँ से तपै औ उसी अग्निमें पकाकर मत्स्य भोजनकरै तो तुरंत आरोग्यहोजाता है। राजा सुन बहुतही प्रसन्नहुआ और उन दोनोंका दरिद्रदूरकरदिया अच्छे पुरुष यथार्थ विषयपर प्रसन्नहोतेहैं इति ॥

तथाएकबादशाहको कुष्ठबाधाभई तो उसने प्राणत्याग श्रेष्ठसमझकर विषखालिया फिरउसकी दाहउठी तो बिनठकाजल गिलास में धराथा उसमें सर्पगरल डालगया उसे उठाकर बेसुधिसे पीगया तो (विषस्यविषमौषधं) के अनुसार उसका विष उतरगया तो आरामहुआ तब वैद्योंसे पूछा कि जो विषखाकर बचाहै तो क्या

करै। उन्होंने किताबमें लिखासुनाया कि अगरचे सांपके गरलका पानी पीलेवे तो आरामहोवे राजाको वैद्यशास्त्र का वड़ा विश्वास हुआ इति ॥ तथा हमारी गऊका वछरा उसी समय जन्मताही कुएमें गिरा तो दैववश उसके आगे के पैर कुए के किसी छेद में अटकरहे तो वह नीचे के खुरफड़फड़ाता रहा मालूम होतेही धीर वीर निर्भयहो ( श्रीगंगासहायजी ) तुर्तही उस कुएमें उतरे और उस वछेरे को निकाला तो ईश्वरकी कृपा से उसका एक वाल भी टेढ़ा न भया शीतऋतुथी अग्निसे तपाया तो शीघ्रही उछलने कूदनेलगा इति ( आयूरक्षति म० ) तथा एक ब्राह्मणने क्काथकी औषधि के भ्रमसे तमाकू का क्काथ वनाकर पीगया तो आराम हुआ इति १४ प्रदीपः ॥

## द्विजोयमोऽमिलित्वाथ ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ सकृद्भाविगृहेयांति सद्योद्विजमृतिर्भवेत् १५

एक ब्राह्मण ने विचारा कि कोई रीति से मैं अमरहोऊं तो यमराज के पास जायके कहा मुझे अमरकरदीजिये यमराज वोला यह मेरे वशकी वात नहीं आओ ब्रह्माजी के पास चलें वहांगये तो ब्रह्माजी भी न कहसके तो वे भी वोले चलो विष्णुजी के पास फिर विष्णुजी समेत सव शिवजीके पासगये शिवजीने भी कहा हमारा वश नहीं यह तो भावी के हाथहै चलो भावी विमाता के घर चलें वहां पहुँचे तो ब्राह्मण को वाहर वैठाकर आप भीतर गये और ( विमाता ) से सव वृत्तान्तकहा उधर उसब्राह्मणके प्राण निकलगये तो (विमाता) वोली तुम तो उसे मारनेको लाये थे वह तो मरापड़ाहै किसे अमर करवातेहो देखो उसके मस्तकमें

मैने क्या लिखाहै उन्होंने झट जायदेखा तो मरापड़ा और उसके माथे में (द्विजोयमोमिलित्वाथ ब्र०) यह श्लोक लिखाहै अर्थात् ब्राह्मण यम और ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ये मिलकर (भावी—त्रि माता) के घर जावें तभी इसके प्राण निकलजावें यह देखतेही चारों चकित होरहे इति १५ प्र०॥

निजक्षयेनशत्रोश्चक्षयश्चापिप्रजायते॥
मत्स्यघातप्रजारेणवकघातोयथाऽभवत् १६

अपने कुल का कुछ नाश होनेपर अपने घातीका भी घात नाश होताहै जैसे एक बगला नित्य मच्छीखाता और उस बगले के बच्चोको एक सर्प उस वृक्ष कोटर में से निकलकर खाजाता था वह दुःख उसने मच्छियोसे कहा वे बोलीं हमको लेजाकर सर्प के बिलसे नौलेके बिलतक हमारी पंक्ति लगादो वह हमको खाता२ उस सर्पको भी जाय खावेगा उसेन वैसाही किया तो वह नौला चला और मच्छियोंको खाते२ उसने सर्पको भी जायखाया और उसके बच्चोंको भी पूरेकिये तथा उसका घोसलाभी तोड़ गिराया और बचोके खाने की ताकमें आतारहा तब बगला महाही दुःखी रहतारहा बुराई करनेका यह फलहै जो कोई दूसरे का कुल नष्ट कियाचाहै तो उसका कुल भी शीघ्रही नष्ट होजावेगा इसमें संशय किसीको कभीभी नहीं करनाचाहिये इति शुक्र देवीसहायकृत दृ० प्र० १६ प्रदीपः॥

कुर्यात्सन्मंत्रियुक्तोऽसौराजासत्कार्यमन्यथा॥
कुकार्य्यंकुरुतेहंसशुकाभ्यांसहितोयथा १७

जो राजा श्रेष्ठ मंत्रियों से संयुक्त होता वह तो सुकर्म करताहै

और दुष्ट मंत्री युक्तहो तो वह कुकर्महो करताहै जैसे एकवनराजा सिंह के यहां हंस शुक दीवानथे क्योंकि जो जिस कामसे सर्वथा अलगहो उसीको उस कामपर रखना यह नीतिहै इसी नीतिको उदाहरण सहित दिखातेहैं कि एक वेर उस सिंहके घर पाहुना-(अतिथि)आये तो सिंहने अपने प्राचीन मंत्री गृध्र शृगाल आदिकोंसे उनके सत्कार करनेके लिये मांस मांगा तो उन्होंने उसे खाय लुटाय और सजातियोंको भुगताय दियाथा तो वे सुनकर कुछ न कहसके तब सिंहने क्रोध करके कहा कि मैं ऐसे २ भारी शिकार मार २ के तुम्हारे पास लाय २ धरता रहाहूं वे कहां गये तवतो वे अतिथि बोले स्वामिन् जिसकामसे जो सर्वथा अलगहो उसे उसकामपर रखना यहनीतिहै तिससे तुम इनसबोंको निकाल कर (शुक-हंसों) को मंत्रीवनाओ तैसेही उनको मंत्री बनाये तो एकब्राह्मण उधर चलागया सिंहने सामनेसे देखा तो जीभ निकाल२ हर्षनेलगा कि देखो कैसा शिकार मेरे लिये चलाआताहै तब शुक हंस मंत्रियों को उसके पासभेजे उन्होंने ब्राह्मणको देखतेही दण्डवत् करके पूछा कि महाराज! आप किधर आगयेहो ब्राह्मण बोला लड़कीके विवाहकी चिंतामें आयाहूं वे बोले यहां तो वन का राजा सिंह रहताहै जीवते चलेजावो तो बड़ी बातहै वह सुनतेही डरता कांपता रोनेलगा तो बोले अच्छा हम राजाको समझाते हैं फिर ( यद्भाव्यंतद्भविष्यति ) जो होनाहै वह होगा यह कह सिंहके पास जायबोले महाराज एकबहुत श्रेष्ठब्राह्मण आपके पास आयाहै उसका दर्शन करो और उसकी इच्छा पूर्णकरो तो सिंह ने प्रणाम किया और पूछा महाराज क्या इच्छा है उन्होंने पुत्री विवाह कहा तब सिंह ने पांचसौ रुपया दिये वह ले चला

फिर कुछकालमें हिला२ चलकर वहां पहुंचा तो फिर वहां काक शृगाल मंत्री होगये उन्होंने देखतेही प्रसन्नहो सिंहसे कहा महाराज! ब्राह्मणकामांस बड़ाकोमल और पवित्रहोताहै इसके भोजन से हमारा आपका बड़ा कल्याणहोगा यह कह ब्राह्मणको लेचले सिंहने उसी ब्राह्मण को देखतेही यह दोहा कहा ॥

हंसा सर में जा बसे सूवा गिरिहिं सिधार ।
जाव विप्र घर आपने कोहि सिंहको प्यार ॥

यहसुनतेही ब्राह्मण चुपहो चलाआया इससे राजाकीबुद्धि मंत्रियोंके आधीन रहतीहै।एकब्राह्मण आजीविकाकेलिये चला तो उसे कहीं कुछ काम न मिला तो लाचार होकर एक सर्पकी बांबी पर जाय पाठ किया तब सर्प निकला और १) रुपया पुस्तक पर चढ़ाया ब्राह्मण फिर दूसरेदिन गया फिर उसने १) रुपया चढ़ाया ऐसेही नित्यजाता १) रुपया लातारहा एकदिन उसब्राह्मणके खेद हुआ तो पाठ न होनेका शोच किया तो उसका पुत्र बोला पिता! क्यों शोच करतेहो मैं सब काम करलाऊंगा तब वह पोथी बगल में दबायचला औ उस सर्प को पाठ जायसुनाया उसने वैसेही १) रुपया चढ़ादिया वह लेआया और मनमें विचार किया इस सर्प की बांबी में न जाने कितने रु० भरेहैं एक २ की कबतक आशा करेंगे इससे इससर्पको मारदेना जिसमें वह सब रुपये मिलैं सोही दूसरेदिन बगलमें एकडण्डाभीलेगया ज्योंही सर्प निकला त्योंही उसने डण्डा फटकारा सर्प बचाकर बिल में जाघुसा औ रुपये आने से बंद रहा इति शुक्ल देवीसहायकृत १७ प्रदीपः ॥

---

गीता पर दृष्टान्त ॥

## गीतासुगीताकर्तव्याकिमन्यैःशास्त्रविस्तरैः ॥
## यास्वयंपद्मनाभस्यमुखपद्माद्विनिसृता १८

और शास्त्र विस्तारसे क्याहै सुन्दर गीताही गान करना जो साक्षात् कमलनाभि ( श्रीकृष्णचन्द्रजी ) के मुखारविन्द से निकला दृष्टान्त । एक ब्राह्मण गीता पढ़नेको काशीजी गया वहां बारहवर्ष पढ़कर आया तो एक राजाके यहां परीक्षा भई वह राजा बड़ा विवेकी था तब बोला कि महाराज ! आपने बहुत अच्छी पढ़ी पर कुछ कसरहै आप ये रुपये लेकर फिर जाइये गीता पढ़िये वह गया औ बहुतकाल तक पढ़ी तब तोउनको और २ ही अर्थ मालूम दिये फिर आया तो राजा बोला अब भी कुछ कसरहै फिर जाइये वह फिर गया तब तो उसको गीता का पूरा २ अभिप्राय मालूम भया तब तो वहां आवना तो भूला और पर्वतकी राहली तहां जाय गुफा में बैठ समाधिस्थ हो ध्यान करनेलगा जब बहुत काल बीता तो राजाने उसके आनेका बड़ा संदेह किया तो घर से चल काशी पहुँच उसका पता लगाया तो लोगबोले कि उसने सीधीराह पर्वतकी लीहै तब राजाजाय पर्वतकीगुफामें उसे एकाग्र मन (यथादीपोनिवातस्थः) जैसे आड़में धरा दीपक तैसा देखकर बोला अबआपको गीताआई उसने राजाके प्रेमवशसे आंखखोली औ बोला हांराजन् ! तुम्हारेउपदेशसे अबआई पर अबमुझसे मत बोलो भजनमें विक्षेप होताहै मैं तुम्हारे उसप्रेमसे तुमसे इतना बोला हूं यहसुनतेही राजाकी भी हृदयदृष्टि खुलगई तो आपभी समाधि लगाय तिसके पास बैठा इति शुक्ल देवीसहायकृत दृ०प्र० १८प्र० ॥

## सार्व विषयिक निबन्ध में ॥

### गीतापर दूसरा दृष्टान्त ॥

जैसे एक राजासे महापाप बनिआया तो उसकी रानीने कहा मैं आपसे स्पर्श नहीं करूंगी इससे आप गीतापढ़ो तब उद्धार होगा राजा गीता पढ़आया तो रानी ने परीक्षा के लिये राजा के देखते २ एक सईसके कन्धेपर हाथधरा राजा देखतेही उसे क्रोध कर मारने दौड़ा रानी ने कहा राजन् ! अभी गीता आई नहीं है फिर जाइये पढिये तब फिर पढ़कर आयो तो मूकवत् रानी के नीचेही भूमिपर बैठगया जब रानी ने उसी सईसके ऊपर हाथधरा तो राजा कुछ न बोला तब जाना गीता आई इति १६ प्रदीपः ॥

## समयानुसारिणी बुद्धिः २० ॥

इसपर यह दृष्टान्त है कि जैसे एक ब्राह्मण अपनी पुत्री के विवाह की चिन्ता में चला तो एक सर्प ने उससे प्रसन्न होकर कहा कि तू राजासेकहदे अबकी अकालपड़ैगा तो तुझको १०००) रुपये मिलेंगे आधे इधर देजाना वह गया और कहा तो वैसाही हुआ तब रुपये मिले तब तो उसने विचारा कि अब सर्पको देने क्यों जायें चलो खावें तब तो खाये पीये फिरभी बुभुक्षित हुये तो स्त्री के भेजे उसी सर्प पै गये उसने कहा अबके अकाल, अचाल दोनों बताना तो २०००)मिलेंगे फिर वह लाया तो वि० उससर्प को मारदेना जिसमें सब रुपये बचें फिर भी बुभुक्षितहो वहीं गया तो कहा कि अब सुभिक्ष बताना उसने बताया तो ४०००)मिले तो उसने ५००)तो अपने रखलिये और ३५०० सर्पको दिये ॥ इति दृष्टान्त प्र० २० प्रदीपः ॥

चुटकले ॥

किसी साधुको एक वेश्याने निज वश में किया तो वह उसे धूनी के पास बैठी देखके बोला ऐ तुम कहां बैठीहो तुम्हारे ये रंगरँगीले दावन राखमें होंगे वह बोली वल्ला आपकी अमौल्य तपस्याही इस राखमें मिलगई तो मेरे कपड़ोंकी क्या फिक्र करते हो इति॥ कोई मनुष्य आठरोजकेलिये राजा बनायागया तो नवेंरोज उसे उठानेलगे तो उसने ६ दिनका हिसाव बताया कि एतवार १ सोम२ मंगल३ बुध४ बृहस्पति५ शुक्र६ शनि७ आज एतवार ८ कल फिर सोम ६ भाई इन आठ दिनों से वाहर तो कोई भी रोज है नहीं निदान वही राजा रहा इति॥पहिले समय में तो यह जन पाषाणकी मक्खी था जो दुःख शोक कुछभी न था फिर बीच के समय में मोह मक्खी शहदपर था लालच से उसे न छोड़ता और अब के समय नाकमल (रीर) की मक्खी है जो वृथा लालच पर फँसाये है इति २१ प्र० ॥

## शास्त्रस्य सूक्ष्मागतिः २२॥

### एक परिडतका दृष्टान्त ॥

एक ज्योतिषी परिडतके वालकहोनेवालाथा उसने उसकी आधानकुंडली से ही सव लग्नकी विधिमिलारक्खीथी जन्महोने के समय उसने पड़देकेभीतर निंबूरखदिया और कहा कि जन्महोतेही यह निंबू इधरफेंकदेना जव जन्महुआ तो उसने वह निंबू अपने हाथ रुधिरसे सनेथे धोकर फेंका तव उतनेही विलम्बसे उनकी गणितमें लग्नविषय में कईअंशोंका भेदपड़गया तो पंडितजी उस लड़केको व्यभिचारसे भया निश्चयकरके घरसे निकलके और एक राजधानीमें जायरहे उधर वह लड़काभी पढ़लिखकर पंडित भया

तो माता से पूछा सचकहु पिताकहां है उसने सवहालकहा वहभी चला वहां पहुँचा तो उसीके पिता ने राजा से कहाथा कि आज एक आकाशसागर से मच्छ इस ठौरपर गिरेगा उसने विचारके कहा कि इसठौरसे आगे वहांपरगिरेगा वहांहौद जलकाभरवादीजिये तव गिरनेकेसमय वह पंडितजीकाकहा भूमिपरहीगिरा उस समय सवके नेत्रशंकासे चकितथे किसीको सुधि न थी और वह मच्छ गिरतेही उछला और उसी हौद में जा डुवका तव सबोंने उसी पंडित के लड़केकी वातको मुख्यरक्खी तो वह पंडित वोला भाई हमारे गणित मे तो यही स्थान आयाथा पर यह फरक कैसे रहा तुम्हारी विधिमिली यह क्या वातहै पुत्र वोला पितामहाराज फरक कुछ नही विधि तुम्हारीहीमिली विचारनेका फरकहै कि जोचीज आकाशसे गिरती वह उछलतीभी और अपना आश्रय चाहैगी सो वहमच्छ तुम्हारे वताये ठौरपरगिरा और उछलाभी फिर हौदमें जा डुवका तवतो वह पिता उसके साथहुआ राह में एक पनिहारन पानीभरके लेजातीथी तो पंडितनेकहा इसके पतिकी खवर मरे की आवेगी उसने कहा नहीं सौ १००) रु० आवैगे वह वोला कैसे तो कहा इसका घड़ाचुवताहै इससे इसकी चूनर जलभीगी लाल मंगलरूपी रंगछोड़रही है इति एक पंडितकथावांचता जो चढता सो उलटा लौटादेता तव एक धनी वैश्य ने दशतोड़े चढ़ाये और लोगों से भी वहुतसे चढवाये तव पंडितजी ने उन्हे चुपचाप उठाके रखवालिये और उनकी निछावर मे तुलसीदल दिया तो वह वोला पंडितजी ! रुपये तो कहाभाई रु० इतनेही और चढवाओ वे तुमले लेना निदान वनिया मुँहमूंदेरहगया इति एक पंडित ने कथावांची कुछ न आयो तो मरनेका स्वांगभर १००) रु० का दुशालालिया

फिर ( यहां नहीं मरे ), यह कहकर चल दिया इति २२ प्रदीपः ॥

( जहां हरिभक्त समाज तहां सब तीर्थ बिराजै ) दृष्टान्त ॥

एक साधुको नियमथा कि गंगानहाये जनका दर्शन करलेवे तभी भोजनकरे तो एक ऐसे देश में चलागया जहां कोई भी गंगा नहाया न मिला तब तीन दिन उसे निराहारबीते तबतो एक संत समाज देखपड़ा वहां जाय पूछा तो वहां भी उसने कोई न पाया तब तो वेहांही पड़ारहा फिर रात को देखा कि एक गऊ बड़ीदुर्बल आकर उस भूमि में लोटी फिर चंगीहो सुन्दर स्त्री भई औ निज लोक को चलीगयी फिर एक बैल आया वह भी लोटा चंगाहो पुरुष बनके लोकपधारा फिर एक काली गौ आई वहभी लोट प- धारी तो यहचरित्र देख उससाधु ने उन्हों से पूछा कि यह क्या आश्चर्य्य है तब वे बोले कि पहिले तो गौरूप गंगाजी आई जो निज पापधोय संतसमाज चरण भूमि मे लोट निज लोक को गई और फिर काली गौ यमुनाजीथी वहभी लोटगई फिर बैल पुष्कर जी थे वह सुन चकित हुआ औ तहांही रहते प्रसादकरनेलगा हरिभक्तोंका यहप्रताप है इति २३ प्र० ॥

तुलसी रामप्रतापते मिटिगे कालडुकाल ।<br>
नारी सेती नर करै ऐसे दीनदयाल २४

दृष्टांत एक राजा के लड़कीहुई उसने राजा के लड़कीका टीकालेनेके लालचसे उसे लड़का बताया विवाहहोगया जब द्वि- रागमनभये निश्चयहुआ कि यह लड़की है तब लोग उसके पीछे२ मारनेको दौड़े दैवयोगसे वह भागा२ श्रीतुलसीदासजी के चरणों में जायपड़ा उन्होंने कहा बचा अमररहु वह बोला महाराज ! मैं तो बचा नहीं बचीहूं और ये मुझे मारनेआते हैं तुलसीदास ने

रामचन्द्रजी से प्रार्थना की तो वह वचोही होगया लोग खिसिया कर चलेगये इति २४ प्रदीपः ॥

तुलसी उत्तम जानकर सती नवायो शीश ।
अमर सुहाग सहीभयो निश्चय विस्वावीश २५ ॥

दृष्टान्त । एक स्त्री सतीहोतीथी तो वह सव शृंगार किये पति के साथ जातीथी राहमें तुलसीदास मिले तो इन्हें उत्तम जान नमस्कारकरी उन्होंने अमर सुहागिन रहु ऐसी अशीप दियी तो वैसाही हुआ पतिसमेत निज घरको आई इति २५ प्र० ॥

(वह पानी मुलतान गया ) दृष्टान्त ॥

एकसमय गोरक्षनाथ, कवीरजी, कमाली उनकी वेटीये रैदास जी के डेरे पर गये सव पियासेथे उनसे पानी मांगा उन्होंने अपनी जूता डुवोनेकी कठौती पानीभरी उनके आगे धरी इन दोनों ने उसमे अशुद्ध जल जानकर पीनेका इन्कार किया परन्तु कमालीजी उसे मनचंगा तो कठौतीहीमें गंगा, समझकर पानकर गई त्योंही उसे आगे पीछेकी सवसूझने लगगई कुछकालमें वह मुलतानवालेके यहा विवाहीगई दैवयोगसे वहां एक वेर गोरक्षनाथजी चलेगये परीक्षाके लिये भिक्षापात्रका पाताल फोड़दिया जो २ भिक्षा उसमे घाले वही पाताल में चलीजावे निदान कमालीही उनके पास गई और उनके फूटे पातालको वन्द किया तो वह भिक्षा से भरगया और और भी जो २ भिक्षा उसमें घली थी वह सव उस पात्र में से उभलआई सवो ने देख वड़ाही आश्चर्य किया इति शुक्ल कृतौ दृ० प्र० २६ प्र० ॥

गूजरि भेप धार मैं गई । चार महीना ख्वायो दही ॥
अपणूं लिख्यो आपही देखो । किसो व्याहमें वीजको लेखो२७

व्याह में वीज को लेखो एक वैश्य विवाहकरके विदेश को चलागया और वहां निज व्यापार में मग्नरहा घरकी सुधि न रही बहुतसे पत्र मा वापों ने भेजे पर वह न आसका तो उसकी स्त्री आज्ञाले उस देशमें गई और पति के पास भुलावादेकर रहनेलगी क्योंकि उसने गूजरीका भेषवनाया और दही उस वैश्य को दे आयाकरती वह भी उसके मिष्टदधि तथा स्वभावसे ऐसा रचा कि रात्रिदिन उसही से रमणकरतारहा जब गर्भरहा तव वह उसकी अंगूठी प्रियजानलेके उससे सीखमांग अपने घरआई समयपर लड़का उत्पन्नहुआ तो उस वैश्य के पास पुत्रहोनेका पत्रगया तब उसने वहुतही आश्चर्यमाना कि मैंतो यहांवैठाहूं मेरे पुत्र क्योंकर हुआ निदान जव उस लड़केका विवाह निश्चयहुआ तव तो उसे लाचार विदेशसे आनाही पड़ा वहां विवाहकी तैयारियां होरहीथीं इधर यह शोकमें वैठा कि किसका व्याह करतेहो यह लड़का किस का है पहिले यह तो निश्चयहोजाय तव सबने समझाया पर इस की समझ में किसी की भी न आई निदान उस वहूनेही जाकर ऊपर लिखीहुई ( गूजरिभेप धारमें गई ) यह सुनाई और वहही अँगूठी दी तव तो वैश्यको सब ज्ञान होगया तुर्तही पुत्रका मुख चूम छाती से लगाया इति २७ प्र० ॥

( नंगी भली कि छींके पांव ) दृष्टान्त ॥

जैसे एक कुटिला स्त्री, निज जेठ अर्थात् पति के बड़े भाई से आसक्तथी, एक दिन उसके देवर पति के छोटेभाई ने स्नानकरते उसे नंगी देखलई तो वह बड़ीक्रुद्धहो उसे गालियां देनेलगी और अन्न जल छोड़वैठी पतिने तथा उसके जेठने बहुतसा समझाया पर इसने किसीकी एक न मानी निदान उसकी ननँद जो उस व्य-

वस्थाको अच्छेप्रकारसे जानतीथी कि अर्द्धरात्रिको यहमेरीखाटके ऊपर से छीकेपर पांव रखकर जेठके पास जायाकरती है वह उसके पास आय बोली भाभी ! खालो पीलो कुछ बात नहीं देवरने नंगी देखी तो वहभी ( द्वितीयोवरः—देवर ) पतिके समानही गिनाजाता है तव तो वह बहुतही रिसाकर बोली बैठी रहु कि मुझेआजतक किसी ने मुँहखुले भी न देखी और देवरने मेरासर्वथा पड़दाफांस किया मैं मारे लज्जाके मरीजातीहूं खाना पीना किसे सुहाता है तव तो ननँदने अवसरपाय उसे खुलासा अर्थ इस साखी से सुनाया ॥ बारहवर्ष पिहिरमें रही । अपने मनकी मनहीं रही ॥ अवही लग्यो कहनको दांव ( भाभी ) नंगी भली कि छीके पांव ॥ यह सुनतेही वह चुपचापहो उससे बोली कि किसी से कुछ न कहना मैं अभी खाये पीये लेती हूं इति २८ प्र० ॥

यद्यज्जाग्रतिकुर्वीत कार्य्यंस्वप्नेतथाचरेत् ॥
यथाकथांतुश्टण्वानो वैश्योवस्त्रमपाटयत् २९

यह मनुष्य जिस २ कामको जाग्रत् अवस्थामें अर्थात् सचेत हुआ व्यापारादि में करता है उसही का ध्यान उसे स्वप्न में भी रहता है दृष्टान्त जैसे एक वैश्य—बजाज कथा सुनरहाथा तो उसे कुछ निद्रा आनेलगी त्योंही वह बज़ाजी व्यापारकी कृत्यका संस्कार उसके मनमें समाया तो पंडितजी का डुपट्टाही लटकरहा था शीघ्र उसके दो करदिये कहा 'बोनी के वक्त पौनेही आठआने देवो यह देख सब श्रोताजन हँसी के मारे लोटगये इति २९ प्र० ॥

नव्यवसितोविचलतेवाचस्यभ्युपतांयितोपिधी

रोयः ॥ अनुतापितः पुरोधानजहौ नियमंस्वकं स्वान्तस्थ २७

जो व्यवसायवाला—निश्चयवान् अर्थात् दृढ़ विश्वासी जनहै वह किसी करके कटु भयानक वचन आदि से उपतापित दुःखी किया वा डरायागया भी त्रलायमान नहींहोता दृष्टान्त जैसे किसी पुरोहितको कहीं से एक गऊ मिली उसने न वेचने तथा दूसरेको न देने के नियम से लियीथी तो वह रात्रिभये पुरोहित से वोली कि तू यहां से मुझे कहीं पहुँचादे नहीं तेरा पुत्र मरैगा वह बोला जो भवितव्य है वह होगा मैं आपको कभी अलग न करूंगा तो उसका पुत्र मरा वह नहीं घबराया फिर वोली कि तेरी स्त्री मरैगी उसने कहा मरने दे वह भी मरगई निदान वह फिर वोली कि अब तेरा भी काल निकट आगया तू मुझे निकाल उसने उत्तर दिया कि माता धन्यभाग्य इस दुःख से पीछा छूटै और भी बहुत से लोग आपस में चरचा करतेथे कि फलाना ऐसी हत्यारी गऊ लेआया कि उसने सब कुटुम्बको मार दिया और उसकी भी तैयारी है पर वह उस गऊको घरसे नहीं खोलताहै और इसके जो हितूथे वे इसे आआकर कहनेलगे कि इस गऊका ध्यान छोड़देवो वह बोला ध्यान छोड़ूं तो कहां रहूं त्रिलोकी में कहीं ठौरहै? तुम कोई मत बोलो मुझे ध्यान करनेदो (गावोममाग्रतःसन्तु गावोमे सन्तुपृष्ठतः। गावोमेहृदयेसंतु गवांमध्येवसाम्यहम्) अर्थ गऊ मेरे अगाड़ी औ गऊ मेरे पिछाड़ीहों तथा मेरे हृदयमें गौवेंहों, ऐसे मैं गौओं मेंही बसारहूं निदान इसप्रकार ध्यान करते २ कालप्रभु भी आनपहुँचे तो गऊ के दृढ़ विश्वास तथा ध्यान करनेके फल

मणि सासको और देके भेजी वहभी उसही बनियें से धौन नाज ले उसी मतिसे गलीको चली तब हारकर उसने एक लाल और दे कहा कि मां बापोंकी तो थाहपाई अब तू तो ठिकाने आता वह पसेरीभरही नाजमें बेचले गलीकोचला वह बेचारी लाचारी शरम की मारी बहुत देर राह देखतीरही निदान उसने लज्जाको त्याग तुर्त मरदाना वेपकर बाजारचली और एकलाल निकाल १००००) को बेच नौकर मुनीमरख कोठी में हुंडीकी दूकान खोली और सि- पाही साथले उस बनियेंकी दुकानपरै गई उससे वे लाल मांगे तो उसने डरते कांपते वे तीनों देदिये अपना नाज व्याज सहित स- वाया लेलिया कई दिन बीते उसके सासुश्वशुर शिरपरईधन बोझा लादे मरते चले आते थे इसने उनको पहिचान बुलाकर इनका बोझाउतराया और बालकटवा नहवा वस्त्रपहिराय भोजनपै बैठाये आप हवा करनेलगी जनाना वेप हटाने पर इन्हों ने भी उसे प- हिचानी तो नीचामुंहकर लाचारहुए फिर पुत्रको याद कर २ रोने लगे तो वह बोली चिंता न करो वह भी तुम्हारी तरह कभी इसी राहसे चलाआवेगा सोही वह ( घासलेओ २ ) करता उसी राह से आपहुंचा झटबुलाय उसको भी मेल में मिलाया सब सुखसे रहनेलगे इससे बनी सराहिये इति शु० कृ० दृ० प्र० ३१ प्र० ॥

विक्रीणीतनजीवंजीवन्महदुपकृतिंकरोतियथा॥
गर्भधृतोपिपुत्रोभूत्वापित्रोर्न्यवारदुःखम् ३२

मनुष्य मनुष्यको कभी न बेचै जो जीवै तथा पास रहै तो ये जीव अपना बड़ा उपकार करताहै जैसे वैश्य से गर्भमेंही बेचे गये निजपुत्र ने उन मा बापों के दुःखको निवारण किया अर्थात्

उनकी कुदशा को सुधार उन्हें सुखी सम्पन्न किये। दृष्टान्त एक वैश्यने निज विपत्ति समय में अपनी स्त्री का गर्भ धरोहर धरदिया उसके बदले में ८००) रुपयेले आया जन्महोतेही पुत्रको वह धनी लेगया वहां वह पला समर्थहो व्यापारकरनेलगा तो उसके यार-वास (मोलड़) कहा करते तो एकदिन दैवयोग उसे निज धरोहर होनेका लेख देखपड़ा तो तुर्त आठसौ रुपयेकी विधिमिलाय उसे दे आप चलदिया एक शहर में गया वहां उसके जन्म पहिले वाले मा बाप लकड़ी ला२ कर एक बनियेकी गोदाममें डाला करते और चवेनाचाब फिर लकड़ियोंको चले जाते उसवैश्यके कोई भारी कामथा उसने बहुतसा इंधन इनसे गिरवारक्खाथा दैववश जहां से ये लकड़ीलाते वहां एक संजीविनीका भी वृक्षथा उसकी लकड़ी बहुतसी उसमें चलीजातीथी तो इन्हें भरोटा धरेआते देख संजी-विनी उसमें पहिचान बोला क्यालेओगे वे बोले चबेनालेतेरहे सो आप देदीजिये उसने गिरवाय उनको ठीकसमझ दिनभरका भो-जन चार आनेदिये उन्होंने प्रसन्नहोले धन्यवाददिया कि हम तो वृथाही ।) का धन भोजनमात्र में डालतेरहे उसने सुन पता पूछा वहांगये तो पुत्रने सबमोल लकड़ियोंका उसे दे लिवालाया और माबापों से बोला कि मॅजूरो! इनलकड़ियों में अमौल्यरत्न यहदेखो (संजीविनी) है इसव्यारकोदेख प्रसन्नहो निजपुत्रको प्रेमसेदेखा तो उसकी माकेस्तनों से दुग्धकीधारवही यहअनुमानसे माबापनिश्च-यकर उनके चरणों में गिरा औरसारीनिजकथाकही इ०३२प्र०॥

श्रुत्वादृष्ट्वाविजानाति ज्ञानीमूर्खस्तुमुह्यति॥
यथाकथांनुश्रृण्वान आर्यदुःखमथास्मरन् ३३

ज्ञानीजन तो कथाको सुन तथा कथादि आचरण देखकर ज्ञान को प्राप्तहोताहै और अज्ञानी जन मोहित होजाताहै दृष्टान्त जैसे एक ग्रामीणजन कथा मे आयबैठा और रोनेलगा पं० जी कथा कहतेरहे वह रोतारहा तो पं० ने विचारा कि कोई यह वड़ाही प्रेमी श्रोताजन है जो इसका कोमल चित्त कथाकी ओर पिघलरहाहै तब सब बोले भाई तेरा प्रेम हमसे अपने मुख से कुछ कहतानहीं रोताहीरोताहै इसका कारणकहु तब तो वह बहुतही रो २ कर कहने लगा भाइयो पं० की दाढ़ी हिलती देख २ के मुझे मेरे मरेहुये बकरे की याद आती है इसमारे रोताहूं यह सुन सबके सब श्रोता जन खिलखिला उठे और पं० जी बिचारे हारे लज्जित होरहे॥ इति शु० कृ० दृ० प्र० ३३ प्र० ॥

## कनकात्कनकंशत धामादक माता सावहेत्त दाधिक्यात् ॥ मायामत्तोद्रव्यं पित्रासंचितसथो वैश्यः ३४

कनक नाम सुवर्ण, कनक—धतूरे से भी विशेष मादक—मद कारक होताहै जैसे दृष्टान्त एक वैश्यकेघर वृद्धअवस्था में पुत्र हुआ वह लगाबधाईबजवाने जब वहसमर्थहुआ तो लगा जूआ खेलने रण्डीबाजी करने निदान ऐसेही सब संचित धन ठिकाने लगाया फिर चोरीकर२ वेश्याओको देतारहा निदान वेश्याओं ने विचारा कि यह नया भँडुवा नित्य चोरी कर २ लाताहै ऐसा न हो कभी हमें भी फँसादे ऐसा शोच उन्होने इसे मदिरा पियाय मुंहवन्दकरके मारडाला इति दृ० प्र० ३४ प्र० ॥

## उदकपात्रसहस्रेषु ज्योतिरेकोऽवभासते ॥

## तथैकआत्मासर्वत्र वस्तुतःभासतेविभुः ३५

जैसे हजारहों जलके पात्र घड़ेआदि भरेहों और ज्योति–सूर्य्य चन्द्रमा का तेज उन सबों में भासमानहोता तैसेही एक परमात्मा सर्वजीव तथा वस्तुओं में भासित प्रकाशमान होताहै जैसे दृष्टांत किसी तीर्थ के निकट मठमठ में कई एक 'रामानुजीय' रामावत, नीमावत उदासीन नानकपंथी दादूपंथी साधु बैठे आपस में मत-वाद का विवाद करते थे कि कोई किसीकी बातको न मानताथा अपने २पंथकी चौड़ाई बड़ाई करतेथे निदान जब झगड़ते २ तोंबे खप्पर फूटनेकी दशा पहुँची तो उनमें से एक अवधूत बोला भाई क्यों वृथा वाद करतेहो इसको समझो ॥

दो० घटघट में मूरति वही लाल जो नहीं विवेक।
जैसे फूटी आरसी खण्ड खण्ड मुख एक ॥

यह सुन सब के सब प्रसन्नहोगये जैसे सांझ समय पक्षी बो-लते २ चुपहो सोरहे इ० शु० कु० दृ० प्र० ३५ प्र० ॥

## कृपणोपिद्रवीभूत चित्तोधृष्टनिषेवितः ॥
## भूयाद्यथागायकेनमोदितोवञ्चदाढ्नम् ३६

अत्यन्त कृपणभीहो पर वह धृष्ट पुरुषकरके सेवितकिया अर्थात् निरुत्तर कियागया द्रवी भूत–कोमल चित्तवाला अर्थात् दानीहो जाताहै जैसे किसी कृपणधनी के पास कहीं से एक कलावत आयबैठा तो उसने कुछगाया तो उसने भी वचनेका दरिद्रता–अर्थात् बातोंकी भी कसर क्योंरक्खें सराहनेमें क्यालगताहै सोही सराहता रहा इतने में नौकर ने आवाज दी कि भोजन तय्यार है तो कलावतकी आफत देख बोला मेरे शिरमें दर्द है ठहर जरा

सोकर खाऊंगा सोरहा थोड़ी देर मुंह ठहरकर दम घड़ २ लिया तो कलावतभी उस फैलको समझकर पगायतों के नीचे पड़रहा कुछ देरमें वह मुंह निकाल बोला अरे वह जंजाल गया भी तो क०ने उत्तर दिया वलैयालेऊं यह बलाय तो चरणों में लगी बिनखाये कब हटेगी यहसुन लज्जितहो कुछ देनापड़ा इ० दृ० प्र० ३६प्र० ॥

विन्दुर्मुक्ताफलंस्वातौ कर्पूरंकदलीदले ॥
संगतेःफलतोभूयाद्विषंसर्पमुखेतथा ३७

दो० स्वातिबूंद सीपी मुकत कदलीभयो कपूर ।
कारेके मुख विषभयो संगति शोभा शूर ॥

अर्थात् स्वाति नक्षत्रविषे सीपी में तो पड़ीबूंद मोतीहोजाताहै और वही केलेकेदल में कपूरहोजावे और वही बूंद संगतिकेफल अर्थात् पासरहनेके प्रभावसे सर्प के मुख में गिरनेसे विषहोजाताहै इससे सज्जनोंकी संगति उत्तम फलदायकहोतीहै इति शुक्रदेवी स० कृ० दृ० प्र० मिश्रनिबंधे ३७ प्र० ॥

लंपटेनहिधर्तव्यं धनंकापिविजानता ॥
स्नानमात्रेधनंसर्वं लंपटेनविनाशितम् ३८

लंपट—मिथ्यावादी कपटी जन को कभी धन नहीं सौंपना चाहिये जैसे किसी सीधेसादे जन ने एकको बीस रुपये देकर कहा तुम ये रुपयेलियेरहो मैं अभी स्नानकरके लियेलेताहूं यह कह स्नानकोगया और झट गोतालगाय आयमांगे तो उसने कहा भाई तेरे रुपयोंका तू मुझसे हिसाबलेले वह बोला अभी देते तो देर न हुई हिसाब कैसा ? ऐसेही ... होने लगा सौ पचास लोग इकट्ठे ... ोंने क... इसके रुपये

किस हिसाबसेदवाये ? वह बोला लेखालीजिये प्रथम जिससमय इसने गोतालगाया तो मैंने जाना डूबगये तो पांचरुपयेदे आदमी इसके घरभेजा फिर यह निकला तो पांच में आदमीकर उसके घर कुशलपत्रभेजा और पांच बधाई में दिये रहे पांच कि मुझसे लिखतम लिखालीजिये बातही क्या है हारमानी झगड़ाटूटा वह बिचारा हारकर बोला अच्छा भाई भरपाये ॥ इति ३८ प्र० ॥

## ग्रामीणाःपूर्वदेशीया इतिमत्वान्टपेणसा ॥
## पृष्टातुगणिकारात्रौ मलशंकांसमादिशत् ३९

पूर्वदेशके पुरुष स्त्री बड़े ग्रामीण-गवाँरहोते हैं यह विचार एक राजा ने निज दरबार में नृत्यसमय वेश्याओंसे रात्रि विषयमें अर्थात् रात्रि कितनीरही यह पूछा तो पश्चिमवाली ने तो कहा महाराज रात्रि थोड़ीरही है तो पूछा तैंने कैसेजाना तो बोली नथके मोती ठण्ढेलगते हैं तैसेही दक्षिणवाली ने थोड़ी रात्रिरही बतायके मान मीठालगताहै कहा और उत्तरवाली ने दीपककी ज्योतिमंद बतलाई और पूर्ववाली से जो पूछा तो उसने झटपटही कहदिया कि मोहिंका हगासलागो है इससे जानो रातिथोरही है यह आलाप सुनतेही सब सभा खिलखिलाउठी इ० शु० दे० कृ० ३९ प्र० ॥

## शतंदक्षाएकमता भवंतिहियथावने ॥
## कुंडेघटशताज्ञाके जलेसर्वैर्निपातितम् ४०

सौ सयाने एक मत अर्थात् किसी सूने गुप्त अरक्षित काम में सौ भी चतुरजन एक मत अर्थात् वैसाही करनेवाले होजातेहैं जैसे एक राजा ने परीक्षाकेलिये सौ मनुष्यों से कहा तुम सब एक २ घड़ा दुग्धका भर २ कर अलग २ उस कुंड में रातको डालआवना

तो उन सबों ने यही विचारा कि जहां निन्नानवे घड़े दूधके पड़गे वहां मेरे एक जल के घड़े को कौन देखेगा निदान यही विचार२ करके सबों ने उसमें जलहीका घड़ा भर २ कर डाला राजाने जाय देखा तो जलही है तब सबको बुलाय २ तंगकरके पूछा तो प्रत्येक ने यही कहा महाराज! मारें या छोड़ें मैंने यह जाना कि निन्नानवे दूधके घड़ों में मेरा एक पानीका घड़ा कहां देखपड़ेगा राजा ने शिक्षा सत्यजानली इति शुक्ल दे० कृ०दृ० प्र०मिश्र नि०४०प्र०॥

ईशएकोऽवगन्तव्यो नानामतनिविष्टकैः॥
भिन्नेकाचेयथामूर्तिर्भिद्यतेवस्तुतोऽपृथक् ४१॥

दो० घटघट में मूरति वही लाल जु नहीं विवेक।
जैसे फूटे काच में भिन्न भिन्न मुख एक॥

अर्थात् नानाप्रकारके मतवादीजनों को वह ईश्वर एकही सर्वत्र जाननाचाहिये जैसे फूटेहुए काच में मुख अलग २ देखपड़ता है यथार्थ में वह एकही है। दृष्टान्त। एक मठ में कई सम्प्रदायवाले नानामतवादी अपने २ मतकी बड़ाईकररहेथे हरएक अपनेको बड़ा और दूसरे को छोटा बताताथा इसमें उनका बहुतही विवादबढ़ गया यहांतक कि खप्पर तोंबे भिड़ २ फूटनेकी नौवत आनपहुँची तो दैववश वहां कहींसे विचरते २ जड़भरतजी सरीखे अवधूतजी आनिकले उन्होंने इनका विवाद मिटानेके लिये शान्तिपूर्व्वक ऊपरकहे श्लोकका आशय दोहापढ़ा सब सुन २ कर शून्यहोरहे कोई भी कुछ न बोलसका सांझसमयभये पक्षियों के समान चीं२ करते सबके सब चुपचापहो बैठे इ० दृ० प्र० ४१ प्र०॥

देयंपश्वादिकस्मैचिद्रक्षितंभोजनादिना॥

अरक्षितःकरीदत्तो राज्ञोलज्जाप्रदोभवत् ४२॥

किसीको कोई पशुआदि धन जो देवे तो उसके भोजन आदि की रक्षा—सहायपूर्व्वक देवे नहीं तो लज्जाहोती है जैसे बादशाहने कलावत को हाथीदिया फिर भूखा मरनेपर वह लज्जाकारकहुआ दृष्टान्त। लाड़कपूर कलावतने एक वेर बादशाह के सामने बहुत अच्छागाया तो उन्होंने रीझकर इन्हें एक हाथी देदिया ये लेआये वर्ष दिनहोगया तो उन्होंने उसका आहारजाकर देखा तो बड़ाही आश्चर्य्यकर चकितहुये कहनेलगे कि यह बड़ीही बलागले में डालदी न किसी को देसकें न कुछ कहसकें इसने हजारहों मन चारा चरडाला और चरैगा जो इसीतरहपर चरतारहा तो कोई दिन में शिरके बालतक चाटजावैगा इससे कोई उपाय कियाचाहिये यह विचारकरके उन्होने हाथी के गलेमें अपना ढोलक तँबूरा बांधकेसरे बाजारसे निकाला सर्वत्र धूमधामहुई किसीने बादशाहसे भी जाय कहा कि आपका हाथी ढोलक तँबूरा बांधे फिररहा है यह सुनतेही क्रोधकर उस हाथी को पकड़वाया और उनको बुलाकर कहा अबे तुमको यह हाथी चढ़नेकेलिये दियागयाथा फिर अब यह तुमने क्या मँगतोंवाला मकारफैलाया है तुम लायक सजाकेहो इतना सुनतेही दोनों भाई खड़ेहो हाथबांध बोले हजूर एकदिन भी चढ़ने की सौ २ सौगंदहैं आपके यहांसे लेगये उसीदिन से इसे तालीम होरही है बड़े यत्नसे मारपीट ज्यों त्यों कर २ के इसे अपना सारा हुनर सिखलायाहै अब इसे शुभ शकुनसे बाहर निकालाहै तो यह समर्थभया अब गाय बजायके अपना भी पेटभरैगा और हमको भी खानेभरे का ला २ कर दियाकरेगा इसीलिये पूत सपूत पाल कर हुनर सिखाकर कियेजाते हैं बादशाह इस अवसर की कही

इनकी सुहावनी बानी सुनकर वहुत खुश हुए उसके खाने दाने का इंतिजाम किया उनको औरभी वहुतसा इनाम दे विदाकिये इति ४२ प्र० ॥

वहज्जलं निर्मलंहि वद्धंदुर्गन्धिमद्भवेत् ॥
तथानैकत्रतिष्ठन्हि साधुःसौख्यंसमश्नुते४३॥

दो० वहता पानी निर्मला बँधा गँधीला होय ।
साधूजन रमताभला दाग न लागे कोय ॥

वहताहुआजल निर्मलहोताहै वँधाजल दुर्गंधिवालाहोजाताहै तैसेही साधुलोग रमते विचरतेही भलेकहातेहैं दृष्टांत एकवनिया किसीवनमें चलागया उसेवहां एक्साधुमिला उसे दंडवत्कर पूछा वावाजी कहांसेआये तोउसनेकहा वन्चाहिंगलाज ज्वालामुखी हरद्वार कुरुक्षेत्र करके तो आयाहूं और काशीहो गंगागोदावरीका मेलाकर सेतुवंधरामेश्वरको जाऊंगा यहसुन वनियाबोला वावाजी क्रोध न करना मैं एकवात कहताहूं साधुबोला दो कहो तो कहा महाराज हमलोग गृहस्थीतो देशविदेश फिरें तो कुछचिंतानहीं पर आपसरीखेसाधु महात्माओंको कौनसे पेटतेका भातभरनाहै जोइधर उधर मारे २ भ्रमते फिरतेहो इसकेउत्तरमें साधुने ऊपरकहे श्लोकका आशय दोहाकहा उसेसुन वह चुपहो चलागया इति दृ० प्र० मिश्र नि० ४३ प्र० ॥

कृतेऽपराधेनिर्मुक्तः पुनस्तत्कर्तुमीहते ॥
वैश्यपुत्रोयथामुक्तो मुहुर्वंधनमाप्तवान् ४४ ॥

किसीको अपराधकरनेपर विनादंड आदिकिये उसेछोड़देवेतो वह फिर वैसाही कुकर्म करताहै जैसे एकवैश्यके प्रियपुत्रथा वह

कोई अपराधकरके राज्यमेंजायबँधा उसके पिन हिकि जोजीतेदट्ट
रुपये खर्चकर छुड़वालिया तो उसने फिर वैसाही य को उदाररहना
बँधा फिर छुटाया ऐसेही उसकापिता उसे छुटाता २ ८ ॥
तो उसके मित्रने कहा कि अबके इसको कुछदिन मत छुटा
ईउपाय इसमेंठीकहै उसनेजब वैसाहीकिया तबतो वहपुत्र लो ४७
हो बोला कि मैं फिर ऐसाकाम कभी न करूंगा मेरेपितासेकहो मुझे
छुटावे निदानपिताने फिरछुटवाया तबसे उसने फिर वैसाकामनहीं
किया ॥ इ० शु० दे० कृ० ह० प्र० मि० नि० ४४ प्र० ॥

भोगान्भुञ्जन्नीशदत्तान्नाशिनोनाविशंकितः ।
निःशंकमासीद्भुञ्जानादासीराज्ञातुताडिता ॥
हसितारुदिताचापि तद्वैराग्यंसमादिशत् ४५

मनुष्यको चाहिये कि भक्ष्य भोज्यआदि भोगोंको ईश्वरसेदिये
नाशसमझकर शंकितहुआ अर्थात् ईश्वरको यादकरताहुआ भोगै
निःशंक न रहै जैसेनिःशंक भोगती दासी स्वामीकरके ताड़ित
कीईगई फिर हँसी रोई और निजस्वामीको वैराग्य उत्पन्न किया
दृष्टांत सुनाजाताहै कि इबराहीम अहमदकीसेज सवामन फूलों
से सवाँरीजातीथी एकदिन बांदीने सेजबनाकर अपनेजीमें विचारा
कि इस विछौनेपर सोनेसे जीको न जाने कैसा सुख होता होगा यह
शोच इधर उधरदेख वहजो उसपरलेटी तो सुखपाते नींद आगई
एकपहरबीते बादशाहभी आया वह फूलोंमें ढकगईथी तो जान
न सका आपभी आयसोया दोघड़ी में जो उसने करवटलिई तो
उसेबड़ा खौफ़हुआ डर पुकारातो बहुतलोग जगआये और धूम
मचीतो बांदी जगउठी तो बादशाहने क्रोधकर उसके सौकोड़ेल-

सुनरहाथा इससे न रहागया तो वह अपने घरजाय बुढ़िया सौवर्ष की उसकी माथी उसे लेगया तो इसे देखतेही राजा ने कहा इसे कौन लेआयाहै चौबे बोला मैं लायाहूं याहू गुमटीपरसों कूदैगी सहस्ररुपया लेवेगी राजा ने कहा इतने जवानों में तो किसीकी सामर्थ्य है नहीं यह मरनचली डोकरी कूदैगी ? तब उसने कहा महाराज जब किसी की भी सामर्थ्य नही तो आपको एक जीव की हत्यालेनी इससे इसही का बलिदान देवो यहसुन राजाबड़ाही प्रसन्नहुआ और बोलाचौबेजीको सहस्र रुपयेदेदेवो इति शुक्ल देवीसहाय कृत दृष्टांत प्र० मि० नि० ५० प्र० ॥

गतेशोकोनकर्तव्ये सकार्य्योंहिपुनर्गमे ॥
यथापुनर्गमभ्रान्त्याभीतोवैश्योऽरुदद्भृशम् ५१

मनुष्य गयेकाशोच न करे किंतु फिर वह न आय जायसके ऐसायत्नकरे एक किसीवैश्यकी छातीपरसे सोते चूहा चलागया, वह उससे चमकउठा और दुहाई तिहाईकर कीक मार२ रोनेलगा लोग जमाहुये तो बोला मेरीछातीपर से चूहा चलोगयो लोगबोलेक्या अंदेशाहै सोकहा मुझेबड़ोभारीभयहै आज़सेयह राहनिकली कल्हको सर्पइसीराहसे निकलैगो मुझे यहशोचहै यह कह २ के फिर रोनेलगा लोग चुपहो चलेगये इससें कोईबात किसीप्रकार सें कुछभी हानिकारकहुईहो उसकाशोच न करे किंतुउसके फिर न होनेका यत्नकरे इ० शु० दे० कृ० दृ० प्र० ५१ प्र० ॥

यदिद्रव्यं गतंपश्येद्विभज्येततदार्द्धकम् ॥
दत्त्वार्द्धस्वंररक्षासौ अर्द्धमेव स्वकंधनम् ५२

ज़ोधनजाताजानिये आधादीजैबांट॥दृष्टांत। एकमहाजनका

गुमाश्ता कहींसे रोकड़लिये चलाआताथा राहमें इसे धाड़ीमिले वेधनछीननेलगे तो यह वोलाभाई ठाढ़ क्योंकरतेहो राजीरजा से आधाधन लेलेओ उन्होनेशोचा खुशीसेमिला आधाहीसहीपीछे काकुच्छ खौफ न रहा यहविचार लेगये आधाउसने लाय मालिक को सौंपा उसने पूछातो कहदिया सारा जाताथा चोरोंके हाथसे वचाकर लायाहूं स्वामीवोलातू आधालाया यहभी कमाईमेंही है इति शुक्लदेवीसहायकृत दृष्टान्तप्रदीपिन्यां ५२ प्र० ॥

दाताददद्यादथाध्यक्षस्योदरार्त्तिःप्रजायते ॥
दत्तेद्रव्येयथाध्यक्षो नशीघ्रंप्रददौयतः ५३

दातादेवे और भंडारीकापेटफूलै जैसे किसीवैश्यसे किसीयाचकको सौरुपये इनामदियेगये तो रोकदिया उसेकालवाद, यहकर, टालदेवे वह वहुतादिन भटकहारा और वहकाल२ ही करतारहा आखिर उसने हारकर एकदिन उसकेआगे यहशाखीपढी जैसे पलक पक्षकीघड़ी महीनाचारघड़ीकीसाल अरेतेरिकवआवेगीकाल यह सुन लाचारहो उसने रुपये गिनदिये इति ५३ प्र० ॥

सूतंनैवतुकर्पासं कुविंदेनविरोधिता ॥
भूमिर्नैवधनंनैव विवादस्तुतदाहृथा ५४

सूत न कपास और कोरीसे लठालठ घरकी धरती न धन वृथाही विवादकरना दृ० जैसे दोजने एकके खेतकेपाससे होनिकले तो आपसमें वोलेभाई जो यहजमीन हाथलगे तो क्याकरो कहवोला आधी २ वांट काममेंलावें फिर एक वोला मैं तो फुलवारी लगाऊंगा दूसरेनेकहा मैं गाय भैंस ... मैं भोला भाई भलामान या बुरा मैं अपनीमें ...

के गुरु भले उपजे अंग स्वभाव ॥ इति देवीसहायकृत दृ० ५९ प्र०॥

उपमातोह्युपमानं समधिकमितिसम्परिज्ञाय ॥
तद्भोज्येमिष्टजलं ददौसमाधायुक्तंसः ६० ॥

उपमासे उपमान अधिक योग्य गिनाजाताहै यहनिश्चयकरके सेवकने निज स्वामीको भोजन के समय घृत के स्थान में मीठा जल-शर्वत दिया जैसे दृष्टांत । एक विद्यार्थी वड़ा कृपण था उसके घर एक प्रिय अतिथि चलाआया उसने अपने भोजनमेंसे आधी खिचड़ी उसे परोसदी वह बोला यार जाफत क्या आफत करदी रोटी भी न की वह बोला सुनभाई इसखिचड़ीके दाने खेत में बोये जाते तो न जाने कितना नाजहोता मैंने तुम्हारे लिये इतना नुक्सान किया है वह रिसाकर बोला जो सहा सोहीसही, पर घी बिना खाऊं क्या तेरे शिरके साथ तब यहलाचारहो पैसा ले घी वाले के पास गया उससे बोला भाई घी अच्छा देना वह बोला ऐसाले चरबीकी जात तो उसने सुन कहा चरबीही लावेंगे वहां चरबीवालेसे कहा अच्छी देना वह बोला ऐसी ले जैसी वरफ तो वरफवालेसे ज[illegible]या अच्छी देन[illegible]ला ऐसी सपेद खांड़ के समान ले त[illegible]पैसेकी खांड़[illegible] कहा अच्छीदेना वह बोला ऐसील[illegible]ान तब तो [illegible]की खोजमे गया

मेंसे यह महातत्त्व निश्चयकर लायाहूं ( उपमानोपमेययोरुपमानं बलीयः ) इस परिभाषासे सिद्धहै इसे पी आप शीतलहोइये वह बिचारा लाचारहो चुपरहा इ० दृ० प्र० ६० प्र० ॥

नजहातिस्वभावोस्यांवार्त्तामापद्गतोपिच ॥
मृतभ्रात्रोपिवैश्योसौव्याघ्रहुंकृतितोऽशुचत् ६१

बाजा मनुष्य आपत्तिमें भीहो पर निज स्वभावकी वार्त्ताचेष्टा को नहीं बदलताहै जैसे वैश्यके भाईकोभी बघेरेने मारलिया वह जानकरभी उसके पास जाय बोला कि अरे तैंने मेरे भाईको किस हिसाबसे खाया वह घुर्राकर इसके पीछेभी भगा तो कहा बसभाई भरपाये "घुर्घुर" हिसाबसे खाया ॥ तथा दो फारसी नवीश जंगल मे जातेथे इनको राहमें डाकुओंने आरोका तो ये बोले बता भाई क्या मामिलाहै वे बोले अबे जोहै सो डालदे यही मामिलाहै तो वे बोले भाई सुनो लाम काफका तो काम नहीं श्राइस्ते से कार्रवाई करो वे बोले अबे दो लट्ठ फोड़देते हैं यही जबरदस्त कार्रवाई है तो ये लाचारहो बोले तो कहदीजिये कि यह शीनेजोरी अदालते कार्रवाई मामिलाहै वे इनकी लामका जवाँ [illegible] हो प्रसन्न हुये और इनको छोड़ दिया इससे बुद्धिमा[illegible] निज सीधा सादापन कभी नहीं बदलते इसीसे वे सज्[illegible]त है इतिशुक्ल देवीसहाय कृतौ दृष्टांत प्र० ६१ प्र० ॥

एकोपियुक्त्यातुबहून्यराजयतिहिक्रमात् ॥
एककपीबलोयुक्त्याचतुरोवशमानयत् ६२

एकभी मनुष्यहो वह युक्तिसे बहुतोको हरासकताहै । जैसे एक

भी खेतवालेने चार मनुष्योंको क्रमसे वशमें किये अर्थात् उनको निकाल खेत बचाया ॥ दृष्टांत एकजमीदारके खेतमें चार मनुष्य ब्राह्मण, रजपूत, बनिया, नाई ये आय घुसे खेतवाला आगया देखकर विचारा कि जोकुछ कहूंगा लडूं तो ये अकेला जान मुझ को मारे पीटेंगे यह विचार इनके पास आय राम २ कर बोला महाराज ! तुम ब्राह्मण-गुरु, रजपूत-गुरुभाई, बनिया-महाजन, इन तीन मनुष्योंकी तो कुछ बात नहीं पर भला इसनाईकेने क्या समझकर मेरा खेत बिगाड़ाहै इसका न्याव तुम्ही विचारो यह बात सुन वे सब चुपहोरहे तब तो इसने नाई केसे सिरेगन्ने छीन लिये और जूतियां मार निकाल दिया । फिर इनसे कहा ब्राह्मण ! तुम गुरु, ये गुरुभाई, हमारा तुम्हारा दोनों का द्रव्य एकहीहै पर इसबनियें ने क्या समझकर मेरा खेत बिगाड़ा है। इसका तुम्ही विचार करो जो हम तुम इसके यहां से कभी रुपयें उधार लावें तो यह अपना व्याज छोड़देगा यह भी सुन वे चुपरहे तो इसने बनियें को भी कंठ पकड़ ( चल लेडे ) कह निकाल बाहर किया फिर इन दोनों से बोला क्योजी तुम दोनो में भाई बराबरका हम रजपूत है तो क्या आपके समान हुआ चाहताहै बराबरी सधचुकी बस देखलिया तुम्हारा भलापन यह सुन भी वे चुपाये तो रजपूत को भी भाई ए (यह रास्ता है ) कह

इससे मनुष्यको युक्तिसे रहना चाहिये तथा जैसे एक गीदड़ ने हाथीको मामाकह साथले जा दलदल कीच में फँसामारा और फाड़नेके मिस हू २ कर सैकड़ों अपने संगियों को बुला फारडाला इत्यादि कई दृष्टान्त हितोपदेशादिके पूर्वभागमें हैं इति ६२ प्र०॥

नाकालेम्रियतेकश्चिद्रोगेयुद्धादिकेपिच ॥
चक्रिकायांयथाधान्येपिष्टेऽपिष्टम्प्रशिष्यते६३

अकाल में अर्थात् अवश्य नाश समय निमित्त विना कोई भी मरता नहीं है जैसे चक्की में नाज पिसनेपर भी विन पिसाही रह जाताहै दृष्टान्त। किसी राजा के यहां विकटका नाम कलावत गाने वजानेमें वहुत प्रतिपन्न हुआ आठपहर उसकी संगति में रहता एक दिन उस राजा पर कोई वैरी चढ़आया तो उसने भी लड़ने की वरावरी की और अपने साथियोंको हथियार घोड़े वांटे उसका राजा ने विकटखां से भी कहा तुम भी शस्त्रशालासे हथियार और घुड़शालसे घोड़ा अपना मनमानालेलो कल तुम्हें भी हमारे साथ लड़नेको चढ़नाहोगा इस वातके सुनतेही उसका तो जी सूखगया पर मारेलाजके वहुतअच्छा कह, घोड़ा, हथियार, चुनले किसी छल से वह अपने घरआया और जोरूसे कहनेलगा कि इस नगरसे अभी भागचलो नहीं तो कल राजाके साथ मरने को जानाहोगा वड़ी चिंताहै वह स्त्री वड़ी चतुरथी वोली जो लड़ाई में जाता वह विनकाल नहीं मरताहै यह कह उसने चक्की में चने दलकर दिखलाये औरकहा कि देख जिसभांति इसमें दलने पर भी दाने समूचे रहगयेहैं तैसेही लड़ाई में भी गया विन मौत मरता नहीं फिर भी वह वोला तो इनमें जो २ पिसगये उन्हीं में

मैं भी हूं उसके इस हेठापनको देख वह स्त्री झुंझलाकर बोली कि जो तू ऐसी स्वामीके साथ कृतघ्नता करेगा तो मैं भी तेरे साथ न रहूंगी यह सुन लजाय निरुत्तरहो लाचार राजाके पास जानापड़ा और जैसे तैसे हथियार लगा घोड़ेपर चढ़ भोरही राजा के साथ हुआ पहुंचा लड़ाई पर तो जिसकाल दोनो दल लड़ाईमें लड़ने को तुल २ कर खड़ेहुये और लगा मारू बजने तो और गोली गोला बाण दोनो ओर से चलने और इसका घोड़ा भड़कने तो विकटखां मारेडरके कांपने लगा और राजा से बोला महाराज हौं गिरतहौं, पर राजा यह समझा कि यह कहताहै कि मैं शत्रुके दल पै गिरों तो बोले ऐसा काम न करो मेरे हाथी के साथ अपना घोड़ा रक्खो दो तीनबार राजा से उसने कहा और राजा ने यही उत्तर दिया निदान घोड़ा वैरी के दलमें उसे लेहीगया तब विक-टखांने कटिसे डुपट्टा खोल फिराया इससे उस राजाके लोग लड़ने से रहगये और इसके पास आये कहा तू क्या संदेशा लाया है वह अवसर पाय बोला मुझे घोड़ेसे उतारो तो कुछ कहूं उन्होने तुरंत इसे घोड़े परसे उतारा तब यह बोला कि तुम किसलिये ल-ड़तेहो जिस रीति का व्यवहार तुम चाहोगे वैसाही हमारा राजा मानलेवेगा तब उस वैरीने कहा दशलाख रुपये दे और अपनी बेटी हमारे लड़के को व्याहदे हम यही चाहते हैं वह बोला यह बात, हमारे राजाको स्वीकारहै मैं इसका उत्तर कल देजाऊंगा तुम नि-श्चितरहो इस बातके सुनतेही प्रसन्नहो उस राजाने इसे भारीखिलत और बहुत से रुपये दे बिदाकिया और तभी से लड़ाई बन्दरक्खी दूसरेदिन भोरहोतेही जब यह राजा फिर लड़नेको खड़ाहुआ तो उस राजाने संदेशा भेजा कि कल तो तुम्हारा मनुष्य हमें दशलाख

रुपये वेटी देना स्वीकारकर लड़ाई बन्द करवागयाहै ये क्या छोरों की सी लड़ाई है तब राजा ने आज्ञाकी कि कौन गया देखो तो लोग निश्चयकरके विकटखांको हाथोंहाथ लेगये और कहा किस के हुक्मसे तू मनोती करआया वह बोला आज्ञा क्या चाहिये जो इस घोड़ेपर चढ़ेगा वही मनौती करेगा यह सुन सबने कहा किस हिजड़ेको साथ लेलिया इति द० प्र० ६३ प्र० ॥

दुःखितस्यस्वहास्योक्त्या शोकंह्यपनयेद्बुधः।
यथासमोदयामास शोचंतंमहिषींमृताम् ६४

बुद्धिमान् निज हास्य उक्ति से दूसरेका शोक निवारणकरदेवे जैसे किसीकी भैसमरगई तो वह शोचकररहाथा तो एक ठठोल पड़ोसी उसके पास आबैठा और बोला भाई हमें तुम्हें कालीचीज से लहनाही नहीं हैं मेरी भी एक काली हँड़िया फूटगई तभी से शोचलगरहा है यह सुन उसको हँसीआगई और भैंसका शोच कमहुआ इति ६४ प्र० ॥

स्वस्वाभिमतविज्ञानं ददंतेसाम्प्रदायिकाः॥
यथातेपुत्रशोकार्तं स्वस्वज्ञानंददुःपृथक् ६५

सम्प्रदायी—साधुजन निज २ मतके समानही ज्ञानदेते हैं जैसे किसी पुत्रशोकवालेको उन्होने पृथक्२ निज२मतके समान ज्ञान दिया। दृष्टान्त। एक कोई दुखियाजन पुत्रके शोक में बैठाथा तो इसके पास कोई साधुजन आयबैठे और अपने २ मतके समान ज्ञानदेतेभये तो उनमें से पहिला बोला ॥

( वह बेनवां पंथवालाथा )

दीद दुनियांका, दम बदम कीजे।

किस्किशादीव किसका गमकीजे ॥
*( फिर दूसरा बोला वह वैरागी था )*
साधो इस संसार में सभी वटाऊ लोग ।
काकोकरै मनावनो काको कीजै शोग ॥
( तीसरा संन्यासी बोला )
आये हैं सो जायँगे राजा रंक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़चले दूजे बँधे जँजीर ॥
( चौथा योगी बोला )
*योगी था वह उठगया आसनरही विभूति ।*

यह सुन उसने निज शोकदूरकिया अथवा जैसे चारवर्णके चार साधुवों ने निज २ मतकी शाखीकही जैसे प्रथम ब्राह्मण ने अपने मतलबकीकही जैसे राम नाम लडुवा गोपाल नाम घी। कृष्णनाम खीर खांड़ घोल घोल पी १ दूसरा क्षत्री था उसने रामनाम शमशेर बनाकर कृष्णकटारा बांधलिया।हरीनामकी ढालबांधकर यम का द्वारा जीतलिया २ तीसरा वैश्य बोला राम मेरे पूंजी कृष्ण मेरे धन । सूधोही हरिनामसे लाग्यो मोरामन३ चौथा शूद्रबोला जात पात पूछे नहिं कोय ॥ हरका भजै सो हरकाहोय ४ इ०दृ०प्र०६५॥

**पुरुषार्थेदृढोयस्याहिदैवंतस्यापिसिद्ध्यति ॥**
**बादशाहस्यपुत्रीहि फकीरेणविवाहिता ६६ ॥**

जो पुरुषार्थकरनेमें दृढ़ विश्वासवान्हो उसका दैव प्रारब्ध भी सीधाहोजाताहै जैसे बादशाहकी लड़की फकीर से निवाहीगईथी दृष्टान्त । एक सिपाही लिखापढ़ा संसार से रूसकर उदासीहोगया और लगा देश २ फिरने किसी नगर के पौरपर ऊपरली चौखटपर

कुछ लिखाथा सो लगाबांचने तो इसने उसमे एक कोने यह लिखा देखा कि हिम्मतमर्दा मदद खुदा। इस वचन के पढ़तेही वह क्रोध कर बोला कि इस नगरकी पौरपर यह झूठलिखाहै इससे इसके भीतर न जानिये क्या कुछ होगा यह कह नगर मे न गया उलटा फिरा तो कितनीएक दूरजाय आपही शोचा कि मैंने बिना परखाये किसी के लिखे को झूठबताया यह बड़ा अन्यायकिया इतना समझ फेरफिरा और चटाईबिछा उसी पौरपर जा बैठा कि बादशाह की लड़की को मैं ब्याहूंगा तो उसको वहां तीनदिन बिना अन्न जल के निकले तब तो नगर के लोग आय खाने पीनेको पूछने लगे तो इसने किसीको भी कुछ उत्तर न दिया निदान बादशाह आपही वजीर कामदार बहुतसे उसके पास आये और कहा साईं साहब! फरमाइये आपकी क्या मुरादहै तो बोला बादशाहकी लड़की ब्याहूंगा वे सुनकर चुपहो चले बादशाह के पास गये उस मुरादको प्रकट न कहसके तो पत्रपर लिखकर बतायी तो बादशाह बहुत घबराया बेगम के पासगया वो बड़ीचतुरथी उसने कहा फकीर से कहदेओ कि सवासेर मोती अविद्धलादे हमारे यहीरीति है उससे लड़कीकी गोदभरे और ब्याहलें जो सच अजमती है तो उसको लड़की देनेमें दोपनहीं जो झूठा पाखण्डी है तो सुनकर चलाजावेगा वे फकीर के पासआये और कहा तो उसने सुन उस शिक्षा को विचारके कहा कि (हिम्मतमर्दा मददखुदा) कुछ बात नही अभी ले आताहूं यह कहके चला समुद्र पास पहुँचा वहां अथाह समुद्रभरा लहरें लेरहाथा तो लगायह (हिं० मर्दा म० खु०) कह हाथों से पानी उलीचने निदान तीन दिन रात बीते समुद्रभी रूपधारके आय बोला साईंजी क्या चाहतेहो बोला सवासेर मोती

तो उसने तुरत खादिये ये बादशाह के पास आया उसको लड़की ब्याहीगई इ० शु० दे० स० कृ० दृ० ६६ प्र० ॥

## अंधकारपुरेनैववसनीयंविजानता ॥
## शिष्यःशूलेरोपितोथ गुरुणामोचितोवसन् ६७

अंधेर नगरमें ज्ञानी जनको नहीं रहना चाहिये जैसे दोजने गुरु, शिष्य, विचरते २ अंधेर नगरी में आ उतरे तो उसके दरवाजे परही यह लिखाथा कि ॥

दो० अंधेर नगरी चौपट्ट राजा । टकेसेर भाजी टकेसेर खाजा ॥

तो यह लिखावांचतेही गुरुने कहा बच्चा इस नगरमें जाना न चाहिये जहां टकेसेर भाजी शाक और टकेही सेर खाजा- खजला मिठाई है तो ऐसे नगरमें न जानें क्या २ अन्याय होता होगा तो गुरुने तो वहांबाहरही डेरालगाया और चेला बोला बावाजी मैं तो जाऊंगा देखना सो भूलना क्याहै गुरु बोला जा भाई देखहम भी बाहरसेही देखते हैं निदान चेलाचला भीतर गया तो घी खांड़ टके सेर आटादाल भाजी सब टकेसेरही बिकतादेख इसकी आंखें चोहैं- दाउठीं कहीं २ से दोचार पैसे मांग सबसौदा खरीदलेजाय गुरुके पासरख कहा बावाजी सबचीज टकेसेर बड़ाही आनँदहै गुरु बोला भाई कुछदिन देख सब फल मिलजायगा इसहीप्रकार वह नित्य२ लाता गुरुको खिलाता खातारहा गुरु कहताभी रहा बच्चा चलदेओ सधचुकी पर वह न माना निदान वह वहां रहखा२ कर ऐसा मोटा हुआ कि पहिचानने में भी नहीं आताथा ऐसेही रहते २ एक दिन राजाके पास कोई चोरीका मुकद्दमा आगया तो उस चोर को शूलीपर चढ़ानेका हुक्महुआ तो उसे शूलीपर लेगया देख-

योगसे वह शूली मोटी और चोर पतलाथा तो न चढ़सका तब रपोटहुई तो तुरंतही हुक्महुआ कि किसी मोटे मनुष्यको लाकर शूली चढ़ादो चोरवरी है तव तो लोग चले २ चेलेकेपास आय बोले यह खूबखा २ कर मोटायाहै ऐसा शहर भरमें कोई भी न मिलेगा यह कह इसे लेगये यह भी लालच में चलागया पहुँचा तो शूलीको देखतेही देवता कूं मनानेलगा हाय २ गुरुजी सत्य कहतेथे एकदिन फल मिलेगा सो आज समय आया अरे देवतो कोई सहाय करो गुरुजी पहुँचियो २ मैं माराजाताहूं फिर आपका वचन न टालूंगा अव इससंकटसे वचावो ऐसेही पुकारते २ गुरुजीभी रौला सुन कहींसे चलेआये तो विचार करके उपायरच बोले भाई हम आगयेहैं यह अलभ्य लाभलेंगे लोग बोले वावाजी क्यालाभ है वतलावो तो सही तव कुछ न वोले तो कोतवालने कहा हमें तो बताओ तो उसके कानमें धीरेसे कहा २४ वर्ष तपकरनेका फल आज इस शूलीमें चढ़नेसे मिलसकताहै यह सुनतेही वह झटच-ला चेलेके गलेसे फांसी निकालगलेमें डालनेलगा तो दीवानने कहा नहीं हम अलभ्य लाभलेंगे तू उतर इतने में महामंत्री आय पहुँच बोला नहीं यहकाम हमाराहै निदानवहांका राजाही अल-भ्य लाभका रौला सुनआया लोग अलगहुये और आप सब के देखते शूलीपर चढ़गया और चारघड़ीमें जानदेगया इससे जिस राजा के नगर में न्याय न हो तहां न रहै न जाने उसपर क्या अन्याय आपड़े ॥

इतिश्रीमच्छुक्कदेवीसहायविरचितायादृष्टान्तप्रदीपिन्यां मिश्रनिवन्धे ६७ प्रदीपः ॥

दलालावादचतुराताक्ज्ञेयायथाहिते ॥
राज्ञाधृताथस्वोक्त्यातेमुक्तास्तेनाथपूरिताः ६८

दलाले लोग बड़े वाक्य चतुरहोते हैं उनकी कभी अवज्ञा तिरस्कार करना नही जैसे एक राजाके यहां किसीने यह अर्जीदियी कि कोई दे कोईले दलाललोग बीचमें पड़कर नाहक दोनों थोकों में हानि करते और अपना कामचलाते तमाम दुनियां को लूट २ खाते हैं तो इसपर हुक्महो सब दलाल लोग बुलाये गये पूछा गया तुम किसबातकी दलाली करतेहो कहो सब बातकी तो हमारा सौदाकर इसमें दलाली करो तो वे विचार २ करकभी कलम हाथ से धरें कभी उठावें तो कहा क्याविचारते हो मोलतोल क्यों नहीं करतेहो तो बोले हजूर मोल कररहेहैं पर तोलमें आप और सब सादे जनोंके समानही हैं पर रत्तीका फरकहै वह रत्तीनही मिलती इससे आपका मोल नहीं निकल सकता फिर कोई ग्राहक कौन कैसे लगै यह सुन सरकार प्रसन्नहुये और उनको इनाम दीगई इति शुक्ल देवीसहाय कृत दृष्टांत प्रदीपिन्यां मिश्र नि० ६८ प्र० ॥

## अकबर की प्रंशसा ॥

आमेरोरासमुद्रादवतिवसुमतीं यःप्रतापेनसद्योदूरेगाःपातिमृत्योरपिकरममुचत्तीर्थवाणिज्यवृत्योः ॥ अप्यश्नौपीत्पुराणंजपतिच दिनकृन्नामयोगंविभर्ति गंगाभोभिन्नमम्भोनहिपिवतिजयत्यकबरःपातशाहः ॥ ६९ ॥

अकबरशाह बादशाह जो सुमेरुसे लगा समुद्र पर्य्यंत पृथ्वीकी

रक्षाकरता निज प्रतापसे युक्तु गउओंको मृत्युसे बचाता और तीर्थ यात्रा वणिज ब्यापारका कर लेना जिसने छोड़दिया और जिस ने पुराण श्रवणकिये और दिनकर सूर्यके नाम जपता तथा योगाभ्यासकरता और जो गंगाजल से इतर जल नहीं पीता ऐसा अकबर बादशाह जयको प्राप्तहो अर्थात् सर्वोपरि वर्तमान अचलराज्याधिकारी होवे १ ऐसे अकबरशाह के दरबारमें वजीर महा मंत्री हमारे यहां के नारनौल निवासी श्रीयुत वीरबल शर्माहुये गौड़ ब्राह्मण के पुत्रथे इनका वहां जानेका ऐसे प्रसंगहुआ कि एकबेर बादशाहने दशगोंड़ी मँगानेका हुक्मदिया तो परवानेमें दशगाड़ी भरके भेजदेओ यह लिखभेजा और (कलई) का नाम नही लिखा तो वह रुक्का तहसीलमें किसीसे सिकरा नही सबने शोचलिया पर किसीकी बुद्धि न चली निदान बीरबलभी नित्य जाताथा पहुँचा तो वह रुक्का आगेधरा गया तो इसने शोच समझके यही निश्चय किया कि आजकल वर्षा समयहै हजूर ऊपर चढ़ेहोंगे तो कलई पानीकेमारे फीकी होगयीहोगी इससे वही मँगाई है यहां यही वस्तु उत्तम होतीहै इससे यही भेजदेनी चाहिये यहबात सबके मनमान गई तो वहीभेजी तो बादशाहने अभीष्ट वस्तुभरी देख उसीवक्तहुक्म दिया कि भेजनेवालेको शीघ्रलेआओ ऐसाही हमें वजीरचाहिये तब तो तुर्तही हरकाराचला यहां पहुँच बोला कलई भेजनेवाले पुरुष को बुलायाहै यह सुनकर सबने हर्षकर वीरबल को उसके साथ भेजा जातेही बादशाह ने देख प्रसन्नहोकर वजीरबनाया तभी से इनका संग बहु प्रसंग विदितहुआ और वीरबलकी स्त्री भी इधरही के पासकी एक जमींदारे गांवकीथी यह प्रसंग ऐसे हुआ कि एक बेर वीरबल सादेभेष घरको आताथा तो एकगांव में ठहरा तो पि-

यासाभया एक ब्राह्मण के घरमें गया तो वह ब्राह्मणी बड़ीचतुरथी इसने जो पानी मांगा तो यह पानीले उसमें कुछ मीठामिला थोड़े तिनुके भी डाललाई इसको दिया यह तिनुके देखके बोला कि ये ऊपरसे मिलाये मालूमहोते हैं इनका कारण कहो तो वह बोली लाला तुम ताव से जल्दी २ चलेआतेहो अभी जो जल पीवोगे तो बिगाड़करेगा इससे इन तिनुकों के निकालनेके बहानेसे आप का खून चलने से जो ताव खारहाहै वह ठंढाहोजावेगा तो जल आपको कुछ बिगाड़ नहींकरसकेगा बस बीरबल इस चतुराई वाक्य को सुनतेही बड़ा प्रसन्नहुआ और मनहीमन विचारनेलगा कि धन्यहै इस स्त्री जातिकी बुद्धिमानी और दयालुता को ऐसी स्त्री जिस घरमेंहो वह अज्ञान दुर्दशाका प्रवेश कभी नहींहोवे परजो मेरे कुछ प्रारब्ध कर्मअच्छेहैं तो इसकी कुक्षि से जन्मी पुत्री भी ऐसीही बुद्धिमान्होगी वह मुझको विवाहीजावे तो अपने भाग्य को सराहूं यह विचार वहां उसके घर सोरहा तो वह ब्राह्मणी भी इसे देख मनमें विचाररही थी कि ऐसा सुन्दर वर मेरी पुत्री को मिलै तो अहोभाग्य है सोही उसका पति भी घर आगया तो दोनोंने विचारकर उसे जगाकर विवाहके लिये पूछा तो वह बोला यही इच्छा कर २ मैं सोयाथा सोही भगवत् ने पूर्णकियी तो तुर्तही उसने टीका बीरबल के करदिया औरकुछ दिनमें धूमधामके साथ यथाविधिसे इसके साथ निज पुत्रीका व्याह बड़ी धूमधाम से किया तो यह स्त्री ऐसी चतुरथी कि जो २ प्रश्न बादशाह ने किये और जिन २ का उत्तर बीरबलसे न होसका उन २ का उत्तर वह आप करती थी जैसे बादशाह को किसी ने कहदिया कि अमुक रोगमें भैंसे का दूध गुणदायक है वह बीरबलके लाये आसक्ताहै तो इसे

हुक्महुआ कि कहींसे भैंसेका दूधतलाश करके लाओ नहीं तुमको दंडहोगा यह सुन चुपहोचला घरमें जायचिंता करनेलगा कि यह असम्भव वस्तु इसके लिये कहां से कैसे लाईजावै नहीं तो वह दुष्ट दंडदेवेगा इसविचारमें इसको छैमहीने बीते और दिन २ शोच में रहते २ इसका शरीर पीला पड़गया तो स्त्री ने पूछा आप को क्या चिंताहै तव उसने बादशाहकी आज्ञा कहसुनाई वह सुनतेही बोली स्वामी आपने मुझसे पहिलेही क्यों न कहदिया वृथाही इतने दिन चिन्ताकर २ निजदेहको दुर्बल किया अब चिन्ता न करो बादशाह से कहदीजिये उड़ती चील्हकामूत्र लादीजिये उस के विना काम अटक रहा है यह सुन बादशाह चुपहो रहे फिर भैंसेका दूध नहीं मांगा इति ६९ प्र० ॥

## ननीचोयवनात्परः ७० ॥

यवन से परे कोई और नीच नहीं इस पर दृष्टान्त एक दिन बादशाह ने बीरबलसे पूछा कि कहो सबसे नीच जाति कौन है वह संकोच करके बोला कि हजूर आपके आगे प्रत्यक्ष नहीं कहसकता कल्ह आपको दिखाही देऊंगा यह कहकर चला आया और सांझसमय-सर्वत्र डौंड़ी पिटवाई कि जितनेभर भंगी हैं सब हाज़िर हों वे सब मुसल्मान किये जावेंगे यह आज्ञासुन उनसबों ने पंचायती करके यह विचार निश्चय किया कि यहां से भग और कहीं जाय बसना पर दीनसे बेदीन नहीं होवेंगे यह कह २ सबोंने सवेरा होतेही अपने २ खाट बिछौने गधे भैंसोंपर लाद २ कर आम खासके नीचे होकर निकलने की राह लियी तो उन का रौला सुन बादशाह बोले यह काहे की धूम है लोगों ने कहा

भंगी निकल २ कर जाते हैं कहा क्यों ? क्या चाहते हैं पूछा जावे पूछा तो वे सब बोले दोहाई हज़ूरकी हम मुसल्मान होना नहीं चाहते आपका देश छोड और कहीं जा बसते हैं यह सुन बादशाह बहुत लज्जितहुये और अपने प्रश्नका उत्तरपाया इसी प्रकार एकदिन शैरकरते तमाकूके खेतमें गधा खड़ादेख बोले देख बीरबल इसको गधा भी नही खाता तो कहा जनाब इसको गधों नेही छोड़ीहै और सभी के योग्य बड़ीही यह प्रियकारक वस्तु है इतिमच्छुक्क देवीसहायकृते दृष्टांतप्रदीपिन्यां ७० प्र० ॥

एकसमय अकबरशाह ने आले में एक सेब फलरखकर बीरबल को बताया कि यह सेब तुम्हारेलिये रक्खाहै उतारलेओ बीरबल ने जबबैठे २ ऊंचाहोकर उसे उतारा तो बादशाह ने इसकी गुदा में अँगुली से चेष्टाकरके हँसदिया फिर यह छेड़पकड़लियी कि हर बात में कहते कि बीरबल ! आले में का सेब तो बीरबल ने भी उस छेड़के मिटाने के लिये यत्नकिया सो कि वहबादशाहसे पहले नंगा होकर पाखाने में जायछिपा और बादशाह जो गये तो यह खाऊं२ कह उसके पीछे दौड़ा और आगेका द्वारआय रोका तो बादशाह घिग्घाकर बोला अयबलाय तू मुझे जानेदे तो उसने कहा न जाने देऊंगा तो बोला जाने भी देगा किसीतरह तो बोला गुदामें थुक-वाले तब जानेदेऊंगा निदान हार झखमार लाचारहोकर बादशाह को बीरबल से गुदा में थुकवानाहीपड़ा जब सवेरा होतेही बादशाह कचहरी में आये और बीरबल से कहा ( आले में का सेब ) तो बीरबलने भी कहा कि देखा (पाखानेका देव ) बादशाह शर्माकर चुपहोरहाइति ॥ एकबेर बादशाहने पूछा बीरबल ! भोजन उत्तम क्या ? तो कहा खीर फिर छः महीनेबाद कभी जंगल में शिकार

को गये एक वटकीछांह में बैठ फिर पूछा कि ( ऊपर क्या ) तो कहा जनाब शक्कर तब कहा छांह में काहेकी में बैठाहै तो बोला वे और कोई देखना यह सुन बादशाह प्रसन्नहुआ इति ॥ एकबेर कचहरी में एक मनुष्य घोड़ा बेचनेआया तो तारीफकरके इनसे ५००) रु० लेगया कईदिन बाद यादआया तो बोले वह घोड़ालेकर न आया तो बीरबल ने पूछा उसका नाम भी पूछा तो बोले नाम तो नहीं जानते तो कहा तुम बड़े उल्लूहो जो बिना नाम ग्राम पूछेही रुपये देदेतेहो तब बादशाह रिसाकर बोले भलाजी जो वह घोड़ालेआया तो ? तो फिर वो चूतिया जो बिनजाने पूछे रुपये लेगया फिर रुपये लेकरआवे मेरा तो एक उल्लू खालीजाने का नहीं है बादशाह सुन चुपहोरहे इति ॥ एकबेर बीरबल से पूछा। [य] हथियारों मे हथियार क्याहै तो कहा जहांपना औसान, तो कहा हथियार भी तो कहु तो बोला हजूर हजार हथियार भी धरेहों पर औसान न हो तो किस कामकेहैं तो इस बात को यादरख इसने बीरबलपर हाथी बेधड़कछुटवादिया तो उससमय बीरबल को यही औसान आयो कि एक कुतिया इसके पासबैठीथी उसकी टांगपकड़ उठाय फेंकके हाथी के शिरसे मारी तो हाथी उसके ( कॉयॅ ) शब्द को सुन चमकके उलटा फिर ऐसा भगा कि कितनेही आदमीमारे इति ॥ एकतसबीर में शेरका कान मनुष्यके हाथमें पकड़ा देख बीरबल से कहा देखलो आदमी कैसी शैहै तो जवाब दिया जनाब इसका बनानेवाला भी तो आदमीहीहै बादशाह सुनकर बोले सचहै इति मच्छुक्क देवीसहायकृत द०प्र०मि०नि०७१ प्र० ॥

एक समय बादशाहकी कचहरी में बीरबलका बहनजा-चतरा गया और बीरबल की बुराई कर कहनेलगा कि मेरे मामाको क्या

आताहै यदि मै उनकी जगहमे रहजाऊं तो आपका उनका काम देदिया करूं बादशाह बोले अच्छा सवेरेकी कचहरीमे तूहीरह जब बीरबल आया तो उसे जवाबहुआ कि तुम्हारा कामदेदेवेगा आप जाइये तो उसने कहा अच्छीबात है सोही बादशाहने पूछा तेरा नाम क्याहै तो कह (चतरा) तो बोले जो चतरासे कोई मूर्ख भ- गड़पड़े तो क्या करे वहसुनकुछ न कहसका और चुपहोकर चल- नेलगा तब बादशाहने कहा या तो इसकाजबाब शामतक लाना तुमको मोहलतदी है नहीं फांसी रखदिया जायगा तैंने सबेरेहीकी कचहरी मे जवाब न देकर सरकारका बड़ा भारी नुक्सान किया है तब तो धोती मे ही दस्त निकल पड़ा और डरता कांपता जैसे तैसे बीरबलकेपास जाय पैरोमे गिर निजकथा कही तो बीरबल बोले आया डरहै घबरानही तब आप कचहरी में गया तो बादशाह खफा होकर बोले बीरबल ! वह कौन अहमक चला आयाथा जरासी बातके कहनेमें चुपहो चलदिया तब बीरबलबोला कि हजूरने क्या फरमायाथा तो बोले कि कहाथा किसी अहमक से काम पड़जावे तो क्या करे तब बीरबल बोला कि हजूर जवाब हो तो गया कि चुपहोरहै यह सुन बादशाह खुश हुये और बीरबल को इनाम दियी ऐसे२ बहुतसे प्रसंगहै बीरबलनामेआदि ग्रन्थोमे देखने यहां ग्रंथ बढनेकी शंकासे संक्षिप्त थोड़ेसेही लिखे है ॥

इतिश्रीमच्छुक्लदेवीसहायकृतदृष्टांतप्रदीपिन्यां
मिश्रनिबंधे ७२ प्रदीप. ॥

कालिदासोगिरांसारं कालिदासःसरस्वती ॥
चतुर्मुखोयथासाक्षाद्विदुर्नान्येतुमादृशाः ॥ १ ॥

कविवर श्रीकालिदासजी गिर जो वाणी है तिसके सारतत्त्व रूप हैं और कालिदासजी ही साक्षात् सरस्वती हैं ऐसे चतुर्मुख ब्रह्माजी ही जानतेहैं और मुझ समान मंदमति कोई क्या जानेंगे यह मल्लिनाथ कवि श्रेष्ठजीकी टीकाकी आदिमें उक्तिहै॥ और भी एक समय निज२ कवित्तमे विवाद करते दंडी और कालिदासजी की मध्यस्थ आय सरस्वती जी उनके विवाद निर्णय मे यह वाक्य वोलीं ( कविर्दंडी कविर्दंडी कविर्दंडी पुनः पुनः ) अर्थ कविदंडी है कविदंडी है कविदंडी है इसमें संदेह नहीं यह सुन दुःखपाकर कालिदासजी बोले क्रोधसे कि ( अहंरंडे ग्रहंरंडे ) हे रांड़ मैं हूं २ तव सरस्वतीजी यथार्थ कहनेलगी कि(त्वंतुमद्रूपएवहि) अर्थत् तो मेरास्वरूपही है ऐसे इससरस्वतीजी के वचनसे निश्चय निर्णय होगया कि कालिदासजी साक्षात् सरस्वतीही हैं इसपर इनकी कथा विस्तारसे कहीजाती है एक राजाके घरकन्या अति उत्तम गुणो वाली उत्पन्नभई वहचौदहविद्या निधानभई जबव्याहनेयोग्यभईतो उसके पिता ने उसकानाम भी विद्याहीरक्खाथा और यह प्रतिज्ञा किई कि जैसी यह गुणवती है ऐसाही सर्वगुणसम्पन्नइसके लिये श्रेष्ठवर देखनाचाहिये यह आज्ञादेकर उसने नाई पुरोहित भेजेवे जहां तहां भटकतेफिरे पर उसके समान वर कहीं नहीं पाया तव तो वे लाचारहुये और यही विचारकिया कि अब इसकेलिये कोई महामूर्खही देखनाचाहिये इस विचार मे चले तो वन मे एक लड़का वकरीचरायरहाथा उसे वस्त्र आभूषण दिखाकर वोले आव हमारे साथचल तुझको ये पहरावेंगे तो वह वोला मैं वकरी घर छोड़कर आताहूं यह कहकर चलागया उन्होंनेकहा यह तो ज्ञानीमाहै इसे वकरी घरछोड़नेकी चिन्ताहै इससे आगेचलें तो चले आगेजाकर

दूसरा लड़का देखातो वह बकरी चरायरहा औरजिसवृक्षकी - पर बैठा उसहीको काटरहाथा तो इसेदेख बोले कि यह ठीकहै ऐसे विचार उसे वस्त्र आभूषण भोजनदिखाया तो वह देखतेही बकरि-योंको वहांही छोड़ और कुल्हाड़ी हाथ से फेक उनके साथहोलिया वे प्रसन्नहुये लेचले राहमे इसे न्हवाय खवाय पहिराय तैयारकिया और उससे कहा तेरी परीक्षाहोगी तो तुझसे पूछेगे कि (अजीर्णे किंवदौषधं) अजीर्ण में कहो क्या औषधिहै तब तू कहना(वारि) अर्थात् जल है सोही वह वारि२ ऐसे यादकरतारहा और राजाकी सभा मे पहुँचा तो इससे( अजीर्णेकिंवदौषधं ) यह प्रश्नहुआ तो इस के वारिके स्थान मे ( चारि ) ऐसा यादरहा तो इसने चारिकह दिया तब तो वे बोले कि यह क्या उत्तरहुआ तो पुरोहित ने बात सहारकर कहा कि ठीक कहा अजीर्ण मे औषध चारिवस्तु शयन निद्रा पंथा वारि, ये चारिहे यह सुनतेही सब बड़े प्रसन्नहुये और विद्याकेसाथ इसका विवाह भी होगया फिर वे दोनो महल में ए-कान्त शयन स्थान मे गये वहां विद्याने इसके आगे सब पुस्तकें धरीं तो ये सबको देख२कर अच्छा कह २ कर धरतारहा वह बोली कुछ पढके सुनाइये तो पढना सुनाना क्या था मौनहोरहे तब तो इसने जानलिया कि हाय इसको कुछ नहीं आताहै इस मूर्खपति से तो विनापति के विधवाहीरहना भलाहै यह विचारकर इनको खिड़कीकी राहसे नीचे धकादेकर डालदिये ये जो गिरे तो नीचे एकप्राचीन मंदिर भगवतीकाथा उसदेवीपर इनकी जिह्वाकटकर गिरीतो देवीजी प्रसन्नहो बोली(वरंब्रूहि२)यहकिसने अर्धरात्रिसमय निज जिह्वाचढाकर मेरा पूजनकिया मैं [illegible] बड़ी प्रसन्नहूं तो इन्होंने समझा कि यह [illegible] मुझको [illegible] यह विचार

( विद्या ) ऐसा कहा जा तेरे मुखमें चतुर्दशविद्या निवासकरें तो तिससमय से ये चौदहविद्यानिधान कालिदासजी भये तो लगे शास्त्रार्थकरने तब तो सर्वोत्तम कविराजभये राजा विक्रमादित्यकी सभा में ये सर्वोपरि अध्यक्ष विद्वान्रहे एक दिन राजा इनको साथले शिकारकोगया तो तहाँ साँझहोगई तो राजा को रानीका मुख देखकर भोजनकरनेका नियमथा तो कालिदासजी ने उस समय राजाकी दया विचार सरस्वतीका ध्यानकरके रानीका चित्र लिखा राजा उसे ज्योंका त्यों देख जांघपर तिलका चिह्ननिहार समझा कि यह मेरी रानी से अवश्य ही संग करता है नहीं इसे तिल क्योंकर मालूमहोता यह शोच घरआकर आज्ञाकियी कि कालिदास को लेजाकर मारआओ यह राजाकी दुराज्ञा सुनतेही नगर मे कोलाहल मचगया और पण्डितो ने कुछ देकर वधिकोंके हाथ से इन्हेंबचाया एक पण्डितने निज पुत्रीवनाकररक्खा। किसी दिन राजा शिकार को गया वहां रात्रिहोगयी तो वहां एक वृक्षके नीचे ठहरा उसपर एक बानर चढाबैठाथा बोला भाई यहां सिंह आवेगा तो तुझे खाजायगा इससे तू भी इस वृक्षपर आजा तो राजा उसके पास जायबैठा बानर ने कहा सोलेओ तो सोया तभी सिंह आया बानरसे बोला कि इस मनुष्यको डालदेव मै फिर तुझमे वैर नहींरक्खूंगा बानरबोला ऐसा नहीहोसकता तैने बारहवर्ष वैररक्खा और चौबीसवर्ष रक्खे तो क्या होनाहै और जो कुछहो तो होवे पर मै आये अभ्यागत को अपने बदले में तुझे बलिदान कभी नहीं देऊंगा। निदान सिंह बहुतही हैरानहोकर चलागया पर बानर ने ऐसी कुमति न विचारी इतनेमें राजाजगा तब बानर ने साराहाल सिंहके आनेका कहा और प्रार्थनाकियी कि कभी ऐसा तू न वि-

चारलीजियो वह बोला कभी नेकीकेसाथ बदीहोसक्ती है ? तू नि-र्भयसोरहु मैं जागरहाहूं इसके विश्वासपर वह सोरहा तो सिंहआया और राजासे बोला तू इस वानरको गेरदे मेरा इसका बहुतदिनका वैरहै सो सफलहोगा तो राजा बोला चल २ कभी ऐसा होसक्ताहै? तब सिंह ने कहा हे राजन् तेरी इस वनचारी वानर के गेरदेनेमें तो कुछ हानि नहीं और न गेरने मे महाही हानि है क्योंकि मैं तेरे इस घोडेको खाऊंगा मुझको तो एक जीवकी बलिलेनी ही है इसमे तूही हानि लाभ विचारले तब तो राजानेकुमतिवश से यही विचारा कि यथार्थही इस वानर के गेरदेने मे तो कुछ ऐसी हानि नही देखपड़ती पर घोड़े को जो यह खाजायगा तो सरासरही पांचसौ रुपये के घोड़ेका नाश है यह विचार सोतेहुये वानरको धक्का दिया तो वानर की जाति चपलहै वह सँभलकर उससे भी ऊंचा होबैठा सिंह तो लजाय मुख मोड़ चलागया और राजा नीचा मुख किये चित्रके समान वहीं होरहा आंख मिलाने और बोलने की सुधि न रही निदान वानरनेही ( अरे तेरी करणी तेरी राह । मेरी करणी मेरी राह ) ऐसा कहकर उसे उतारा पर वह ल-जकाथी जानेमे भी सकुचाया तब सिंहने इसको ( श्वा, से, मी, रा ) यह समस्या कहकर घर की ओर किया तब तो यह(श्वा से मीरा २ ) कहता नगरकी ओर हुआ लोग इसके पीछे २ (राजा पागल होआया ) कहते भगे तो इसे पकड़कर महल में लेगये वहां भी यह हरेक बात मे ( श्वासेमीरा ) ही कहतारहा तो लोग लाचार हुये और विचार लिया कि जब ( श्वासेमीरा ) इस स-मस्या का अर्थ अलग २ इसे बताया जावे तभी यह होशमे आ-वेगा तो पंडितोंको बुलवाकर कहा ( श्वासेमीरा ) का अर्थ करो

तो किसी से उसका अभीष्ट अर्थ न होसका तव तो सबों को (कालिदासजी) का स्मरण हुआ कि बिन उनके इन इस समस्या के पदों का अर्थ कौन करे यह कहकर सबके सब हा! कालिदासजी २ कर पुकारे वहवृद्ध ब्राह्मण पंडित जिसने उनकोपुत्री बनाय छिपाकर रक्खेथे वह बोला जो उनकी जान बख्शी जावे तो मैं हाजिर करूं लोग बोले जान क्या आपको और इनाम बख्शी जावेगी तो ब्राह्मण उनको लेआया वे कोने में एकांत पड़दा करके स्त्रियोंकी भांति जायबैठे और राजासे बोले क्या हाल है तो उसने वही (श्वासेमीरा) कहा तब बोले अलग२ कहो तब तो राजाने कुछ सचेत होकर (श्वासे—मीरा) कहा तो अर्थ किया कि (मीरा) मीर जो प्रमाण दायक श्रेष्ठ पुरुषहैं वे (श्वासेएवसंति) श्वास लेतेही हैं अर्थात् उनसत्पुरुषोंका श्वास लेनाही जीवनहै वे जब चाहें तब श्वासरोक ब्रह्मांडमें प्राणचढ़ाय परमधामको जासक्तेहैं तात्पर्य्य यह कि उनके मरनेमें तो कुछ लगता नहीं है और तुम्हसमान मित्रद्रोही पातकी तो अभी बहुतदिन पाप भोगैंगे इसस्वांग भरनेसे क्याहै यह अपूर्व अर्थ सुनतेही राजाकी आंखें खुलगईं और फिर (श्वासे मी—रा) कहातो अर्थ किया कि अमी—पुरुषाः ये जन जो(रा) दानी हों तो (श्वासे-संति) जीवनमें परायणहैं अर्थात् जो दानकरें तब तो इनका जीवन सफलहै नहीं तो येसब (श्वाऽऽसे) श्वा—श्वान उसके आसे स्थान में है अर्थात् जो दान सत्कार भलाई न करें तो वे कुत्तेके समान जीते हैं,यह अर्थ सुनतेही राजाने इनके चरण आय पकड़े और फिर पूछा कि, श्वासेऽमीरा तो अर्थकिया कि,अमीराः—पुरुषाः अर्थ अम जो रोग तद्वत् अमी अर्थात् रो॰ ॰तेस अमिन—रोगी को जो औषधादि राति—

ददाति देवैसो अमीर। ऐसे जो अमीर जन जीवन देनेवाले हैं वे (श्वासे) श्वासमें हैं अर्थात् उन्हींका जीवन सफलहै अथवा अमी-र–जो वैद्यजनहैं वे ( श्वासे २) श्वास २ में औषध देते हैं अर्थात् रोगीकी सांस जबतक आससमझकरके वरावर उपाय करतेहैं और तूने अच्छे वीछे वानरको मरासमझ ढकेलना विचारा तो तेरी क्या गति होगी यह सुनतेही राजाकंपायमानहो इनके लपटगया और गदगद वाणीसे फिर पूछा ( श्वा, से मीरा ) तो कहाकि (श्वाऽऽ से मीरा ) श्वा–श्वान, तो है वह आसे–आसन अर्थात् स्थान ठहराने में अमीर–वैद्यहै कुत्तेकी जीभमें अमीहोतीहै उससे व्रण आदि रोगजातेहै इससे वहभी तुझसेअच्छा जो जीवदान देताहै यह सुनतेही राजा वोला कि आपने मेराअभीष्ट कहसंदेह निवृत्त किया और चरणों मे साष्टांग प्रणामकर फिर पूछा कि अब आप कृपाकरके इनअक्षरों को अलग २ प्रत्येक अक्षरका भिन्न २ विस्तार अर्थ करके इनचारों अक्षरोंको मेरी जिह्वासे छुटाइये यह कह फिर ( श्वासेमीरा ) कहा तो प्रथम ( श्वा ) पर यह श्लोक कहा ॥

श्वास·सारः शरीरस्य वाचासार महीपते ॥
वाचश्चलन्तिये मूढास्तेनरानारकाःखलु १

इस शरीर के श्वासही सार वलरूप है और वाचा वाक् वाणी भी सारही है यहां वाचा वाक् जैसे निशा दिशाहों तैसेही जानना भागुरि आचार्य्य के मतसे और हे राजन् जो जन (वाचः) वचनसे चलजाते विचलजाते अर्थात् अपनेवचनको पलटजातेहै वे निश्च-यहीनर नरकभागीहोते है यहअर्थसुनतेही राजानेवह(श्वा)तो छो-ड़दिया और (सेमीरा२)कहतारहा तो फिर कालिदासने यहकहा॥

सेतुबंधेकृतंयद्दैयद्रामेश्वरएववा ॥
सत्सर्वंक्षयमाप्नोतिवाक्याद्विचलितेनरः २

जो सेतुबन्ध में किया उत्तम कर्म्म दानादि है और जो रामेश्वरजी में किया पुण्यादि कर्म है यह सब वचनसे विचल जानेसे पुरुष का क्षीणहोजाताहै यह सुन फिर वह (मीरा २) ही कहता रहा तो उसपर कालिदास ने यह श्लोक कहा जैसे ॥

मित्रद्रोही कृतघ्नश्च यश्चविश्वासघातकः ॥
त्रयोवैनरकंयांतियावच्चन्द्रदिवाकरौ ३

मित्रद्रोही कृतघ्न किये को हतने बिगाड़नेवाला और जो विश्वासघात करनेवाला जैसे तैंने वानरसे कियाहै ये तीनों नरक में जाते हैं जबतक सूर्य्यचन्द्रमा हैं इतना सुनवह (रा २) ही कहता रहा तो फिर कालिदासने कहा ॥

राजन्संस्मृत्यसंस्मृत्यसंवादमिदमात्मनः ॥
पश्चात्तापयुतस्त्वंवै प्रायश्चित्तंसमाचर ४

हे राजन् तू अपने इस संवादको वारम्वार स्मरणकर तथा मन में पश्चात्तापकर २ के अर्थात् पश्चात्तापसे भी पापकी शुद्धि धर्म्मशास्त्रमें लिखी है इससे युक्तहोकर तू यथाविधि इसपापकी निवृत्तिके लिये प्रायश्चित्त विधानकर यह सुनतेही राजाने कालिदासजी को निजकंठसे लगाया और फिरउनको पूर्ववत्सर्वोपरि विराजमानकिये इसीप्रकार राजा से इनका बहुतकालसंगरहा और बड़े २ आश्चर्य्य उपाख्यान इनके हैं जैसे एक समय की वार्ता है कि कालिदास जी लोकरीतिसे रसिक भी थे तो एक प्रियाके पास जाया करते और उसी के पास राजा भी जाया करता तो राजाको मालूम

होगया पर ये कविराज उनके कहनेसे कब कायलहोतेथे तो उन्होंने उस बेश्यासे कहा कि कालिदासजी आवें तो तू कहना स्वामी ये बाल तुम्हारे मुखपरके मुझको चुम्बन समय में बुरेलगते हैं तब उसने वैसाही कहा तो कालिदास बोले प्यारी अभी मुड़ाकर आताहूं मुड़ालिये प्रातःकाल कचहरी में गये तो लोगों ने पूछा क्या कारण तो कहा हमारी पितामही की सुनानी आई है फिर राजाने वह समस्या बनाय उनपर आक्षेप करके यह श्लोक ॥

**कालिदासः कविश्रेष्ठः कस्मिन्पर्वणिमुंडितः ॥**

कालिदासजी श्रेष्ठ कवि किस पर्व में मुड़े यह कहा तो कालिदासजी ने जानलिया कि राजाने जानकर यह आक्षेप किया है तो बोले इसका उत्तर कल्ह कहेंगे फिर उस बेश्यासे बोले कि राजाको गधेकी बोली अच्छी आती है तू बुलवाना तो वह रूठ बैठी सांझको राजा गया तो कहा अलगही रहिये कारण पूछा तो कहा कि आप पहिले गधेकी बोली बोल दीजिये राजाने जान लिया कि कालिदासजी पहुंचे तो घनीही समझायी पर वह कब मानतीथी निदान लाचारहो हुचू २ कहनाही पड़ा सवेरे कचहरी में कालिदासजीने आय ॥

**गर्दभायत्रगायन्तेतस्मिन्पर्वणिमुंडितः ॥ १ ॥**

जहां गधे गाते हैं उसी पर्व में मुड़े यह अर्ध श्लोक उत्तर मे कहा तो सब सुनकर सन्नहोगये राजा ने सकुचाय के नीचा मुंह करलिया ॥ इति श्रीमच्छुक्ल देवीसहाय विरचितायां दृष्टान्तप्रदीपिन्यां ७३ प्र० ॥

---

तथा एकवेर कालिदासजी स्नानकरकेचले आतेथे तो धोतीमें मछली बांध आसन लपेटके बगलमें दबाये चलेआते थे तो राजा ने देखकर पूछा ॥

कुक्षौ किं ममपुस्तकं सजलता केयं रसोद्भावना गंधः केतिसराक्षसाहति भवोद्गाथाभवो भाव्यते ॥ इत्थंसम्प्रतिदर्शयेतिगदितो राज्ञातुतं दर्शितं सद्यो वाग्ज्ञपयातदेवविमलंसत्पुस्तकंनिर्बभौ १ ॥

राजाने पूछा कुक्षिमें क्याहै तो बोले हमारी पुस्तक है राजा बोला तो फिर जलसे क्यों टपक रही है तो कहा यह कथा का रस भररहा है फिर कहा गंधकैसा मृतककासा आताहै तो कहा राक्षस मारेगये इस कथाका गंधहै इत्यादि कहकर फिर राजाने कहातो दिखादीजिये फिर दिखाया तो सरस्वती की कृपासे पुस्तक ही होगई इति ॥ राजा भोजकी सभामें यह नियमथा कि कोई नया श्लोक बनाकर लेजावे उसको लाख रुपये मिलें तो एक साधारण पण्डित दरिद्री थे उनकी स्त्री बोली तुम भी तो कोई श्लोक बनाकर लेजाओ लोग लाख रुपये ले २ कर आतेहैं हमारे यहां अन्नका संदेह होरहाहै फिर यह विद्या किसकाम आवेगी तो ब्राह्मणी के कहने से उसने ॥

भोजनंदेहिमेराजन् घृतशाकसमन्वितम् ॥

हे राजन् मुझको भोजनदे उसकेसाथ घृत और शाकभी दे यह साधारण आधा श्लोक बनाकर लेचला तो राहमें कालिदास जी मिले पूछा आज कहां तो बोले राजाको श्लोकसुनाने जाते

है तुमभी कविहो सुनके इसे सुधार लेवो कालिदास ने सुना तो कहा भाई यह तो आधाही है इसमें दोपद ये ॥

माहिषंचशरच्चन्द्रचन्द्रिकाविशदंदधि १ ॥

और भैंसका दधि भी साथदे जो शरद के चन्द्रमाकी चांदनी के समान कांतिमान् निर्मल है यह और लगाय वहलेगया राजाको सुनाया राजाने पिछले दो पद सुनके जानलिया कि इसकोकहीं कालिदासजी मिलगये नहीं उनके विना सामने कहे अगले पदों को पिछले पदोंकरके अतिरसीले कौन बनाता निदान लक्षरुपये ब्राह्मणको दिये इति ७४ प्र० ॥

तथा एक दिन राजाने कहा कालिदासजी तुम वड़े भ्रष्टहो वे बोले हम भ्रष्टके कहेका बुरा नहीं मानते इसपर उन्होंने फटीसी गुदड़ी लपेट राजाको यह स्वांग दिखाया ॥

भिक्षो ! कंथाश्लाघतेनहिनहिशफरीजालम त्स्यात्किमत्सि इति ॥

अथवा । भिक्षो ! मांसनिषेवनंप्रकुरुषे किंतेन मद्यंविनामद्यंचापितवप्रियंकिमधुना वारांगणाभिः सह॥वेश्याप्यर्थरुचिरकुतस्तवधनंचौर्य्येणद्यूतेनवा चौर्य्यंद्यूतपरिग्रहोपिभवतोभ्रष्टस्यकान्यागतिः १ ॥

तो राजा ने कालिदासजी को फकीर बने यवनों के घर में भिक्षा मांगते देखकर कहा अरे भिक्षुक ! तू क्या मांस भी भक्षण करताहै तो कालिदासजी बोले मद्यविना खाली मांसहीसे क्या होताहै ? राजा-तो मद्य भी तुझे प्रिय लगता है ? कालिदास-हां २ साथ में वेश्याजनों के ॥ राजा-तो फिर धन तेरे पास कहां है ?

कालिदास चोरीकर या जुआं खेलकर लाताहूं इतनी सुन राजा बोला अरे ! तेरे में इतने बड़ेभारी गुणहैं तो कालिदासजी बोले हे राजन् भ्रष्ट जनकी और क्या गतिहै इति ॥ तथा एक समय चारलुच्चे विनपढ़े ब्राह्मणों ने भी निज भाषा में हाथी को देखकर यह शाखी बनाई ॥

आगे पीछे पूछा हालै। जाणैं रात अंधेरो चालै ॥
कोठी डूंणा मोटा पाय। जाणैं अंधेरो मूली खाय १

इसमें एकने तो सूंड़ देखकर प्रथमपद बनाया दूसरेने कालादेख दूसरा बनाया और तीसरेने पांव देखकर तीसराबनाया और चौथेने दांत देखकर चौथाबनाया तो ये लेकर सुनाने चले तोराहमें कालिदासजी बोलेआज किधरकृपाकी तो बोले राजाको श्लोक सुनाने जातेहैं तूकह तो बोलेहमेंसुनाओ तो सुनाया तबचौथेपदको अतिही असभ्यदेख वहां ॥ बांध्यो सो है राजदुआर ॥ यहलगाया तो उन्होंने जब कहा तो सुनकर सभाके सबजन हँसने लगे फिर ठठोली से कहा कि चौथे पदमें जराकसररही तब उन्होंने कालिदासजीको बताकरकहा यह इसने ऐसी तैसी करवाई फिर अपना चौथा ( जाणैं अंधेरोमूलीखाय ) कहा तो सबबोले यह ठीकहै ऐसाकह राजा ने उनको भी सौरुपये दिये इति ॥ इसीप्रकारसे इनका बहुतसा प्रसंगहै थोड़ासा विज्ञप्तिमात्र यहां लिखा और अन्यत्र प्रसिद्ध है विस्तारके भयसेनहीं लिखतेहैं ॥ इतिश्रीमच्छुक्लदेवीसहायविरचितायांदृष्टान्तप्रदीपिन्यांमिश्रनिबन्धेपंचसप्तति प्रदीपः ॥

## भास्करोभास्करः साक्षात् ॥

भास्कराचार्य्य साक्षात् भास्कर सूर्य्य ही हैं इसपर इनका इति-

हासहै श्रीभास्कराचार्य्य पूर्व अवस्थामें ब्राह्मणके पुत्रथे जन्मतेही इनका पिता मरगया माता पालनकरती रही ये गुरुजी से पढ़ने जाया करते व्रे इनकी पाटीपर ( ओंनमः सिद्धं ) यह लिखदिया करते थे उसे वहां यादकरते तथा लिखते और घरआकर भूलजाते फिर वही लिखाते घोखते फिर भूलजाते लिखवाते ऐसेही इनको बारहवर्ष उस ( ओंनमः सिद्धं ) हीके पढ़ने लिखने में व्यतीत हुये माता जानती रही कि यह नित्य २ नया २ लिखवाता और सीख लेताहै ऐसेही फिर दैवयोगसे लीलावतीके स्वयंवर का पत्र इनके गुरुके पास भी आया तो वे विद्यार्थी साथलेगये येभी उनके साथ हो लिये वहां पहुंचे तो सभाभी भारी धूमधामसे सजीहुई थी जिधर तिधर बड़े २ राजा महाराजा विद्वान् निज २ विद्यार्थियों के ठट्टलिये बैठे आपसमें अनेक प्रकारसे शास्त्रार्थ कररहे थे ये भी उनमें जा बैठे तो सब शिष्यों का तो ध्यान सभाकी सजावट तथा लीलावती की शोभा देखनेपर था और इन महात्माका तो केवल गुरु जीके चरण कमलही में भ्रमर समान लगाथा तो ये उनके चरणों हीको निहारते रहे और लीलावती मानों साक्षात् विद्या सरस्वती वा रंभा लक्ष्मीहो पुष्प मालालिये निज योग्य पतिको चीन्हनेके लिये सभामें आई और क्रमसे सबकी ओर दृष्टि करतीरही लोगोंने अनेक प्रकारकी चेष्टा निज अभीष्टकेलिये करी जैसे किसीने कमलका फूल भौंरे सहित दिखाकर बताया कि मैं तुझपर इसी तरह लुभायमान रहूंगा और कोई दूसरे की ओर हाथधर-पीछा फेर झुकताथा कि मैं तेरे साथ ऐसेही पांसोंसे खेला करूंगा तो तिसने तिन सबोंको मूर्ख जानकर अर्थात् भौंरा अज्ञानी लोभी अकाल मरता मूर्ख और ( अक्षैर्मादीव्येत् ) इस वेदकी आज्ञा

से पाशे खेलना अयोग्य जान तिनसबोंको त्यागदिये और इनके पास जो कुछ भी चेष्टा नहीं करते और एक दृष्टि लगाये श्रीगुरु चरण सरोज की गंधके लाभके कारण लोभी होरहे इनकी ओर निहारती वह वहांहीं चित्रकी पुतली के समान कुछकाल स्थित रही लोगों ने बहुतसी चेष्टा की और आपस में चरचा भी की कि यह किस मूर्ख के पास जा ठहरी है पर उसने किसी की कुछ भी न सुनी और इनसे बोली कि आपसे मैं कुछ पूछा चाहती हूं वे बोले क्या कहतीहै कहु तब उसने (शास्त्रेषुकः सारः)अर्थ सब शास्त्रोंमें साररूप वस्तु क्याहै, यह सर्व विषय गर्वित, प्रश्नकिया तो इन्होंने इसे अपना बहुत दिनसे पढा (ॐ) यह अक्षर सुना दिया तो उसने बिचारा कि देखिये कैसे भारी विद्वान् हैं जो मैंने तो कुल्हिया में हाथी लाने के समान सर्व शास्त्र सारांश एकही वाक्य से संक्षिप्त करके पूछा और इन्हों ने अति संक्षिप्ततर एकही अक्षरसे उसका उत्तर कहदिया सो यथार्थ है कि सर्वत्र (ॐ) अ-उम् इनतीन अक्षर ब्रह्मा विष्णु महेश, वा जाग्रत् स्वप्न सुषुप्ति अथवा प्राज्ञ तैजस विश्व इत्यादिरूपसे ॐकार मात्रही सब जगत् है जैसे रामगीतामें श्रीरामजी ने कहा है ॥

**पूर्वंसमाधेरखिलंविचिन्तयेदोंकारमात्रंसचराचरंजगत् ॥ तदेववाच्यंप्रणवोहिवाचको विभाव्यते ज्ञानवशान्नबोधतः १ ॥**

हे लक्ष्मण समाधिके पहिले इस सब चर अचर जगत्को ॐ कारही से उत्पन्नहुआहै ऐसाजाने यह जगत् तो वाच्य और प्रणव ॐ यहवाचकहै सोज्ञानवशसे जानाजाताहै कुछ जानने मात्रसेही

नही किंतु अभ्याससे इति ॥ इत्यादि से मुझको ज्ञातहुआ कि आप परिपूर्णही विद्वान् हैं परमैं एक प्रश्न औरभी आपसे करना चाहतीहूं तो ये बोले दोकर तब तो फूलीअंगमें न समाई और (इदं जगत्स-दसद्वा) अर्थ यह जगत्सत् सत्य वा असत्य है इति ॥ यह वेदांत विषयिक प्रश्नकिया तो उन्होंने उसके उत्तर में अपना पढ़ा लिखा हुआ दूसरा अक्षर (न) यह कहा तो उत्तर हुआ कि (नसत् न माया कल्पितत्वात् असत् अपि न ब्रह्मरूपत्वात्) अर्थसत् नहीं है मायाकरके रचितहोने से और असत् भी नहीं है ब्रह्मरूपहोने से "सर्वं खल्विदम्ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन" इति ॥ अर्थ सब जगत् ब्रह्मरूप है इसमें नानापन—भेद नहीं है इस उत्तर से वह निरुत्तरहो बोली मैंने वेदांतके गर्वसे जो आपसे प्रश्नकिया उसका भलीभांतिही उत्तरपाया पर तबभी मैं निर्लज्जता से और प्रश्न करतीहूं यहकह फिर उसी विषयमें (तर्हीदंकिम्) तो फिर यह क्या है जो प्रत्यक्ष भासमान होरहा है तो तीसरा अक्षर "मः" कहा तो समाधान होगया कि यह 'मः' मा अस्यास्तीतिमः—मायासहितो जीव इत्यर्थः अर्थ मा—माया जिसके हो सो (म) अर्थात् यह माया सहित जीवहै इसने मायाके आश्रयहोकर सब जगत् को भासित कर रक्खाहै तबतो वह बोली कि मैं निश्चितहुई और आप मेरे पति होचुके यह कहकर माला गले में डालदियी और परीक्षा में किसी प्रकारकी कसर न रहै इससे कहा महाराज इसका उत्तर और कहदीजिये यह कह कि मायातमनेन—इस प्रश्नोत्तर का फल क्याहै तो इन्होंने भी निजशेपरहे (सिद्धं) येदो अक्षर इकट्ठे ही कहदिये तो फल होगया कि (सिद्धं) यहसिद्ध मंत्रहै अर्थात् 'ॐ' आदि का विचार करने से सिद्ध—मुक्तरूप हुआ ब्रह्मको

प्राप्तहो यह जीव जन्म मरण रूप इस संसारसे छूटजाता अर्थात्
मोक्षरूप परम श्रेष्ठफल पाताहै इत्यादि समाधान निज बुद्धिसेही
विचारकर वह चुपहोरही और विवाहभी इनके साथ धूमधामसे
होगया फिर गुरुजी के चरणों में आकर दंडवत् प्रणाम किया
तो गुरुजी चिरंजीव यह अशीष दियी और कहा भाई तेरे
परिश्रम तथा गुरुभक्तिके प्रतापसे इसके साथ विवाह तो होगया
अवतेरा जीवन प्रारब्धके आधीन है पर मैं तुझको यह यत्नबता-
ताहूं जब तक तू मौनरहैगा तब तक नहीं माराजावेगा ( मौनं
सर्वार्थसाधनं ) अर्थ मौन रहनेसे सब अर्थसिद्ध होते है इससे तू
मौनधारण करलेतो गुरुकी आज्ञा से ऐसाही किया राजपुत्री के
साथ महलोंमे रहनेलगे मौनरहे तो उसनेजाना मुझ मंदमतिवा-
ली दासीपर कृपाकरके कभी बोलभीलेवेंगे यह विचार इनकी
नित्य २ नयी २ सेवा करतीरही इसहीप्रकार बहुत कालबीते एक
दिन उनको ऐसा बुलावलगा कि विन बोले रहा नगया तो बोले
आज रोटी कबकरोगी तो तिसने सुना कि स्वामी कुछ कहते है
तो झट दौड़ इनके पास आयबोली स्वामिन् क्या आज्ञा है तो
इन्होंने भूखा मरना विदितकिया तो बोली स्वामिन् निजकृत ग्रंथ
की दोपंक्तियें शुद्ध करनीरही हैं फिर अभी आपके लिये भोजन
तैयारकरतीहूं तब ये बोले कि लाव येपंक्ती हमहीं शोधलेंगे तब तो
तिसने निजजीवन धन्यमाना कि अहोभाग्य बहुतसमय परिश्रम
करकेबनाये अचर मेरेस्वामी के दृष्टिगोचर होंगे यह कहती निज
भाग्यको सराहती झट भोजन तैयार करतीभई और उधर उन्होने
उसका बनाया ग्रंथ सब आद्योपांत शोधडाला इसप्रकार कि जहां २
उसमें (ॐनमः सिद्धं ) ये अक्षर देखपड़े उनको तो यथावत् रहने

दिये बाकी सब ग्रंथभर पर लेखनी फेर दी और आप भोजन करने को गये और उसने भी चाव २ से आकर निज ग्रंथ देखा तो शुधाशुधाया लोपलाप सफाचट्ट पड़ाहै देखतेही उसने ॐनमः आदि से जानलिया कि इनको इन पांच अक्षरों से अधिक और कुछ आता नहीं है हाय २ इन पांच अक्षरोंके ही बश होकर मैं सर्वथा ठगाईगई हाय २ अब क्या करूं ऐसे पतिसे तो वेपति विधवाही रहना भलाहै यही विचारकर पेट मे दरद २ करके पुकारी और कहनेलगी कि फलाने कुयें का जल आप लायके पिलावो जब आरामहोवे तब वे पानी लेनेकोचले तो आपभी उनके साथ हो लियी कि वहांहीं पीलेऊंगी जिससे चक पड़ेगी कुयें पर पहुंच जो लोटा फांसा तो तिसने उनको कुयें में ढकेल दिया वेगिरे और शिर फूट रुधिर निकलके एक मूर्ति उसमे देवीकीथी उसपर गिरा तो वह बोली ( वरंब्रूहि २ ) वर मांग २ इस कुयें में मेरी रुधिर से पूजा कियी है तब तो इनको विद्याही की इच्छाथी सो प्रार्थना कियी देवी ने तथास्तु कह वर दिया तो समस्त विद्या स्फुरण भयी तब तो इन्होंने पहिले उसके बनाये ग्रंथ का पाठकिया और फिर उस पर निजभाष्य रचकर कथन करनेलगे तो वह ऊपर बैठी थी उसने सब सुना तो पश्चात्ताप करनेलगी कि हाय ये तो वेही साक्षात् भगवान् रूप विद्वान्हैं मेरे सत्य देखनेको इन्होने यह चरित्र रचाहै यह कह शीघ्रही बड़ा यत्न करके कुयेंमेंसे निकाल और हाथ जोड़ नीचा मुखकर गद्गदवाणीसे बोली कि क्षमाकरो २ आप का मुझसे बड़ाही अपराध किया गयाहै वे बोले नहीं २ तैंने हमारे पर बड़ा अनुग्रह किया तेरे प्रसादसे हमारा कल्याण होगया फिर वह पछताय हाय खाय बोली कि अब मेरी कौनगति होगी

वे बोले भगवान् भला करेगे निदान, वे दोनो फिर यथावत् रहने लगे वे भास्कराचार्य्य भये और यह लीलावती विख्यातभयी इसी के नाम से जहां तहां संबोधन देकहा लीलावती ग्रंथ बनाया सो प्रसिद्धहै इति शुक्ल देवीसहाय कृ० दृष्टांत प्रदीप्यां ॐनमः सिद्धं प्रतिपादनंनाम ७६ प्र० ॥

धन्यःस्वामीसेवकार्थेऽसुंदाता धन्यश्चासौसेवकस्तद्विधोऽभूत् ॥ धन्यानारीप्राणदात्रीचपत्युर्धन्यःपुत्रःपितृवश्योहियःस्यात् १ ॥

वह स्वामी वा राजा धन्यहै जो निज सेवकके अर्थ प्राणदेदेवे और वह सेवक भी धन्यहै जिसने स्वामी के अर्थ प्राणदिये॥ तथा वह स्त्री भी धन्यहै जो पति के हित प्राणदेती और पुत्र भी धन्य है जो पिता के वशीहो प्राण देवे दृष्टान्त जैसे एक वर्धमान नगरी और वहांका राजा ( रूपसेन ) नाम था और वीरवर नाम से उसका महामंत्री था वह अत्यन्त दयालु और स्वामिसेवा में परायणथा वह रात्रिको राजा के पास से अपने घरको जाताथा दैववश राजा के कुछ मनमें आई तो विनकहे उसके पीछेहोलिया तो क्या आश्चर्य्यहुआ कि उस मन्त्री को एक अति सुन्दरी स्त्री जो सोलह शृंगार किये रोती मिली उसने पूछा देवी तू कौनहै क्यों रोतीहै तो वोली मैं राज्यलक्ष्मीहूं मेरा स्वामी यह राजा योगिनी के वलिदान में दिया जावेगा इससे अकालमृत्यु शीघ्रपावेगा तव तो वीरवर ने पूछा हे देवी कुछ ऐसा भी उपायहै जिससे राजा वचै और सौ वर्ष जीवे तो वह वोली पूर्व ओर एक देवीका मंदिर है जो तू उस देवीको अपने पुत्रका शिर निज हाथ से काटकर भेट

करै तो राजा सौ वर्षजीवे निज राज्यकरे किसी प्रकारका कोई फिर घात न होवे यह वात सुनतेही वीरवर अपने घरको आया राजा उसके पीछे २ रहा उसने निज स्त्री से सब हाल कहा उसने सुन बेटेको जगाया और कहा वेटा राजा तेरा शिर देनेसे बचैगा तौ२ राज्य भी यथावतरहैगा यहसुन वह बोला माता एक तो आपकी आज्ञा दूसरे स्वामीका काम तीसरे यह देह देवता के काम आवे तो इससे अच्छी कोई और बातनहीं है धर्मशास्त्रकीभी आज्ञा है कि पुत्र निज वशका और शरीर नीरोग,लाभवाली विद्या,चतुर मित्र, आज्ञा में नारी, ये पांच वस्तु मनुष्य को सुखदेनेवाली हैं और वे आज्ञाकारी नौकर, खोटा राजा, कपटीमित्र, कुमार्गिणी स्त्री, ये चार वस्तु दुःखदायकहोती हैं इससे इस काम में विलम्ब न करिये फिर उसने निज स्त्री से कहा कि तू प्रसन्नता से देतीहै? तब बोली मैं बहुत प्रसन्नहूं मुझे बेटा बेटी भाई मा बाप किसी से काम नहीं मेरी गति तो तुम्हीं सेहै शास्त्रकीभी आज्ञाहै कि नारी न तो दान न व्रत तीर्थादिसे शुद्धहोती है किन्तुलँगड़ा लूला गूंगा बहिरा अंधा काना कोढ़ी कुबड़ा जैसा उसका स्वामीहो उसका उसहीकी सेवा करने से धर्म है इससे जो विमुखहै वह स्त्री नरकमें पड़ती है जिस मनुष्य से स्वामीका कामहो उसीका जीना सफलहै और उसीसे दोनों लोक में यहां वहां भलाहोताहै इतना सुन उसकी पुत्री ने भी कहा कि जो माता पुत्री को विपदे और पिता पुत्र को मारे राजा सर्वस्वछीनले तो फिर किसकी शरणलेवे जो विचाराहै उसमें देर न करो ऐसा विचार कर वे चारों देवी के मंदिर को गये राजा भी छिपकर पीछे २ गया वे वहां पहुँच देवीकी पूजाकर हाथ जोड़ वीरवर ने कहा हे देवि मेरे पुत्रकी बलिदेनेसे राजाकी सौ वर्षकी

अवस्थाहोवे इतना कह एक खांड़ा ऐसामारा कि लड़केका शिर भूमि में गिरा भाईका मरनादेख उसकी प्यारी बहन ने निज कंठमें ऐसा खड्गमारा कि रुंड से मुंड अलगहोगिरा बेटे बेटी को मरेदेख वीरवरकी स्त्री ने भी ऐसी तलवारमारी कि धड़ से शिर भिन्नहुआ तो तिन तीनोंका मरनादेख वीरवरने बिचारा कि जब लड़के लड़की स्त्रीही मरगये तो जीना और नौकरीकरना किस अर्थ है यह कहके एक शमशेर गर्दनपर ऐसीमारी कि तन से शीश न्याराहुआ फिर तो तिन चारोंका मरनादेखउस राजाने निज मनमें विचारा कि मेरे लिये इसके कुटुम्बभरकी जानगई अब ऐसे राजकाजको भी धिक्कार है कि जिससे एकका सर्वस्वनाशहो और एक राजकाजकरै यह विचार राजा ने जो खांड़ा मारनाचाहा सोही देवी ने प्रत्यक्षहो आप हाथपकड़ा और कहा कि पुत्र मैं तेरे साहसपर प्रसन्नहुई जो तू मुझसे वरमांगै सोही देवों राजाने कहा माता जो तुम प्रसन्नहुई हो तो इन चारोंको जीवदान देवो देवी बोली, तथास्तु यह कह पातालसे अमृत लायके उनपर छिड़का वेचारों खड़ेहुये तो फिर आधाराज राजाने उसवीरवरको दिया जिसने निज स्वामी के हेतु कुटुंबको बलिदानदिया था और धन्यहै उस राजा को जिसने राज्य और निज जीवनका कुछ भी लालच नकिया इतना कहवेताल बोला हे विक्रमादित्य राजन् मैं तुझसे यह पूछता हूं कि उन पांचों में किसका सत सरस अधिक हुआ तो राजा ने कहा उस राजाका सत अधिकहुआ वेतालबोला किस कारण तो कहा कि स्वामीके लिये निजजीव देना तो सेवकका धर्म है पर राजाने जोनिज सेवकके लिये निजराज छोड़जानको उनके समान समझकर उनपर न्योछावर करनाचाहा इससे राजाका सत

अधिकहुआ इति ॥ आदि यहांपर कुछप्रसंग उपयोगी दृष्टांत वेतालपंचविंशति ग्रन्थकासंग्रहहै ॥ इतिशुक्लदेवीसहायकृतौ दृष्टांत प्रदीपिन्यांमिश्रनिबन्धेस्वामिसेवकधन्यताप्रतिपादनोनाम ७७प्र०

## स्त्रीपुंसोर्दुष्कृतेःसाम्ये योषिद्दोषाधिकायथा ॥ पुरुषोनतथाप्रोक्तोधर्माधर्मविवेचनात् १

स्त्री पुरुषोंके दुष्कर्म--खोटापनकी समता--बराबरी में अर्थात् दोनों कुकर्मी हों तहाँ स्त्री अधिक दोषवाली कही है तैसा पुरुष नहीं कहा उसेधर्म अधर्मका विवेक होने से जैसे दृष्टांत भोगवती नगरीका राजा (रूपसेन) और एक (चूड़ामणि) तोता उसके पास था एकदिन राजाने उस तोतेसे पूछा तू क्याजानताहै तोता बोला मैं सब कुछ जानताहूं तब राजाने कहा जो जानताहै तो बता हमारे योग्य सुन्दरीस्त्री कहां है तब तोतेने कहा महाराज मगधदेश में मगधेश्वर राजाहै उसकी पुत्री चंद्रावतीके साथ आपका विवाह होवेगा वह अति रूपवती सुन्दरहै यह बात सुनफिर एक चंद्रकांत ज्योतिषी को बुलाकर पूछा तो उसने भी शास्त्रके अनुसारवैसाही बताया कि इस दिशामें चंद्रावतीनाम कन्याहै उससे विवाहहोगा यह बात सुन निश्चयकर राजाने ब्राह्मणको बुलवा सब समझा राजा मगधेश्वर के पास भेजा और यह कहा कि हमारे ब्याहकी पक्कीकर आओ हम आपको प्रसन्न करेंगे। यह बात सुन प्रसन्नहो ब्राह्मण बिदा हुवा और उधर मगधेश्वरकी बेटी के पास एक (मदन मंजरी) मैनाथी उसीभांति उसने भी पूछा कि मेरे योग्य सुन्दर वर कहां है तो उसने भी कहा कि भोगवतीका राजा रूपसेन है वह तेरा पतिहोगा निदान इनदोनों के मनही मन प्रीति बढ़ी

देखते २ वह ब्राह्मण भी पहुंचा और राजासे संदेशा कहा उसने भी उसकी बात मानी और अपना ब्राह्मण बुलवा उसके हाथ टीका और सब वस्तु उसव्यवहारकी सौंप उसही के साथ भेजा और यह कह दिया कि हमारी तर्फ से जाकर राजासे विनती करो और राजाके तिलककरके जल्दी चलेआओ जब तुम आओगे तब ब्याहकी तैयारी करेंगे फिर ये दोनों ब्राह्मण यहां से चले और कुछदिनमें राजा रूपसेनके पास जाय पहुंचे सब हाल कहा यह सुनतेही राजा प्रसन्नहो तैयारी करनेलगा और चंदरोजमें उस के देश पहुंचा और शादीकर दान दहेज ले राजा से विदाहोके चला तो राजकन्याने भी वह मदनमंजरी का पिंजरा साथ ले लिया राजा रानी निजदेश में पहुंचे और एकांत महलमें रहने लगे तोता मैनाका पिंजरा टँगाहुआ था तो राजा जीमें विचार रानी से बोला कि हम तुम जैसे केलिकरते हैं तैसे ये भी आपसमें एकत्र रहैं तो अच्छाहै यह कह उनको एक पिंजरे में रखदिये तो तोता मैनासे कहनेलगा कि दुनियांमें भोगही उत्तमहै जिसने जगतमें पैदा हो भोग भोगा नहीं उसका जन्म वृथाही है इससे तू मुझे भोग करनेदे यह सुन मैनाने कहा कि मुझे पुरुषकी इच्छा नहीं है उसने पूछा किसकारण तो बोली कि पुरुष पापी अधर्मी दगाबाज कपटी स्त्रीहत्यारे होते हैं तब तोतेने कहा कि नारी भी दगाबाज झूठी अज्ञान लालची हत्यारी होती हैं जब ऐसे दोनों आपसमें झगड़ने लगे तो राजाने पूछा तुम क्यों झगड़तेहो मैना बोली महाराज पुरुष पापीहो स्त्रीघात करते हैं इसलिये मुझे पुरुषकी इच्छा नहीं मैं एकबात कहती हूं सुनिये कि मर्द ऐसे होते हैं॥ इलापुर एकनगरहै वहांका महाधन नाम एक सेठ था उसके

औलाद नहीं होतीथी इसलिये वह हमेशह तीर्थ व्रतकरता नित्य पुराण श्रवण करता ब्राह्मणोंको बहुत सा दान दिया करताथा निदान कुछसमय बीते बहुत कालमें भगवत् इच्छासे उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसने बड़ी धूमसे उसकी शादीकियी ब्राह्मण भाटोंको बहुत सा दानदिया और उसे पढ़ाया तो वह न पढ़ा और जुआ खेलना आपही सीख गया चंदरोजमें वह सेठ तो मरगया और यह खुद मुख्तियारहो दिनको तो जुआ खेलता और रातको रंडीबाजी करता इसीतरह कई बरसमें उसने धन सब बिताया और लाचारहो देशसे निकल खराब होताहुआ चंद्रपुरनगर में जा पहुंचा वहां हेमगुप्तनाम साहूकारथा उसके द्रव्य बहुत था यह उसके पासगया और अपने बापका नाम निशान पता बताया तो वह सुनतेही प्रसन्नहुआ तो उससे उठकर मिला और पूछा तुम्हारा आना क्योंकर हुआ तब वह बोला कि मैं जहाज ले एक द्वीप में सौदागरी को जाताथा और वहां जा उसमालको बेच और मालकी भरतीकर जहाज भर निज देशको चला तो राहमें एक ऐसा तूफान आया कि जहाज डूबगया और मैं एक तख्ते पर बैठा रहगया सो बहता २ यहां आय पहुंचा हूं पर शरम आती है कि माल दौलत तो सब कहींही रहा परंतु मैं इसभेषसे शहरके लोगोंको जाकर क्या मुंहदिखाऊँगा निदान ऐसी २ बातें जब इसने कही तो वह भी मनमें विचारने लगा कि मेरी चिंता भगवान् ने घर बैठेही मिटादियी ऐसा संयोग भगवत् कृपासे ही होजाता है अब देरकरनी उचित नहीं सबसे श्रेष्ठ यहहै कि कन्याके हाथ पीले करदेवे कल्हकी कौनजाने ऐसा कुछ मनमें विचार मनमें मन सूबा बाँध सिठानी पास आय कहनेलगा कि एक सेठ का लड़का

आया है जो तुम कहो तो रत्नावतीका व्याह उससे करदेवें वहभी सुन प्रसन्नहो बोली कि साहजी ऐसासंयोग भगवान्ही मिलाताहै घर बैठे मनकी कामना पूरीहुई इससे श्रेष्ठ यही है कि देर न करो शीघ्र पुरोहितको बुलाय लग्न शोधाय विवाह करदेवो तब उससेठने ब्राह्मणको बुलवाय शुभलग्न मुहूर्त्तठहराय कन्यादानदिया बहुतसा दहेज भेटकिया निदान जब व्याहहोचुका तो वहीं रहने लगे फिर कितने एक दिन बीते साहकी लड़की से कहा कि हमको तुम्हारे देश में आये बहुत दिन बीते और घर की कुछ खबर नहीं है इस से हमारा चित्त बहुत उदास रहताहै यह हाल हमने तुमसे कहा तुमको उचितहै कि यहीहाल अपनी माता से कहो कि वे राजी हो हमें विदाकरें तो अपने शहरको जावें तुम्हारी इच्छाहो तो तुम भी चलो तब उस ने निज माता से कहा कि बालम देश को विदा हुआ चाहते हैं अब तुम भी ऐसाही करो जो वे प्रसन्न हो कहते हैं तो सिठानी ने निज सेठसे हाल कहा तब वह साह बोला अच्छा विदा करदेंगे क्योंकि बिराने पूतपर अपना कुछ जोर नहीं चलता उसकी इच्छाहो सोही करनी होगी यह कह बेटी से पूछा तुम ससुराल जाओगी या यहां रहोगी तो तिसने सुन कुछ न कहा और वह उलट फिर निज स्वामीके पास आयबोली कि मेरे मा बाप कहचुकेहैं अब विलम्ब किसकाज कररहेहो तब तो तिसने फिर कहलाकर भेजा सोही साहने जमाईको बुलाय बहुतसा द्रव्य दे विदाकिया और लड़की को भी डोली में बैठाय दासी साथ दी तो चले २ एक जंगल में पहुंचे तब उसने साह की बेटी से कहा कि यहां चोरोंका डर बहुत है सो तुम निज गहना सब हमें उतार देवो फिर लेकर पहन लेना तो उसने वैसाही किया तब तो उसने

सब गहनाले कहारों को बिदाकर दासीको मार कुयें में डालकरके उस स्त्री को भी कुयें में डालकर सब गहनाले अपने देश को सिधारा इतने में एक मुसाफिर उधर से आ निकला तो तिसने कुयें में से उसका शब्द रोनेका सुना तो विचारा कि इस उद्यान वनमें मनुष्यकीसी शब्द की सुनाई कहां से हो रही है यह कहके कुयें की ओर आय झुकके देखा तो एक स्त्री रोतीहै उसने उसे निकाली और हाल पूछनेलगा तो वह बोली कि मैं हेमगुप्त सेठ की बेटीहूं मैं निज पतिके साथ ससुराल जातीथी कि चोरोंने आ घेरा और दासी को मार मुझे कुयें में डाल चलेगये और मेरे पति को गहने समेत बांधकर लेगये न जानें मारा या जीताछोड़ा तब तिस मुसाफिरने सुन उसको धीरज देकरकहा तू न घबराव ऐसे कहकर उसके घर लेआया वहां सबोंने इससे हालपूछा तो उसने वैसाही सबको सुनाया तब सब कहनेलगे बाई तू न घबराव चोर धनके ग्राहक होते हैं कुछ जीवके नहीं तू धीरजधर कि तेरा पति फिर भी तुझसे आन मिलेगा तू निश्चय रख निदान वह जो गहना उस का लेगयाथा उसके बदले और गहना उस साहने पुत्रीको बनवा दिया उधर वह गहना लेजाय फिर पूर्ववत् रंडीबाजी जुवा खेलने लगा तो कुछ दिन में वह भी सब धन खो हार झखमार जैसे का तैसा होबैठा जब अत्यन्तही दुःख पानेलगा तो एक दिन मन में विचारा कि अब ससुराल जाकर यह बहानाकरें कि तुम्हारे धेवता पैदा हुआहै उसकी बधाई देनेआया हूं यह बात अपने जीमें जमाकर चला कई दिनमें वहांजायपहुंचा जब सेठने देखा कि घरमें जाघुसूं इतनेही में उसकी स्त्री ने इसे देखलिया कि मेराही पति है पर ऐसा न हो कि यह शरमाकर लौटजावे इससे पहिले उसे आय

समझा दिया कि घबराना मत मैंने यहां ऐसा २ कहदियाहै तब तो वह होशियार हुआ और लोगोंने पूछा तो सब हाल वैसा सुनाया वे सब सुन चुपरहे और ससुरे ने इसे नहवाय भोजन करवाय वस्त्र आभूषण पहिराय सजाय फिर पहिले के समान रखने लगा निदान रहते २ फिर भी उस रंडीबाज जुआरीको जुयें रंडीबाजी की याद आई तो वह कुमतिमें आय उस सोतीभई अबला के कलेजे में छूरीमार सब गहनाले रातको भगगया इति। इतनी बातें कह मैना बोली महाराज यह बात मैंने निज आंखों से देखी है सो कैसे मिथ्या होसके (आंखों देखी पर्शुराम कभी न झूंठी होय) इससे पुरुष ऐसे निर्दयी हत्यारे होतेहैं इससे मुझे पुरुष की इच्छा नहीं है आपही विचारिये कि उस रंडी बेचारी लाचार अबला का क्या दोषथा जो उस निर्दयी ने ऐसी निठुराई की इतना वृत्तांतसुन राजा चुपचाप हुआ चित्रके समान होरहाथा कि यकायक तोते से बोला बतलावे रंडी में क्या दोष होताहै तब तोता बोला महाराज अपनी २ कहानी गुड़ से भी मीठी होतीहै मेरी भी तो सुनिये जैसी रांड़ दगाबाज दारी हत्यारी होती हैं तोता बोला महाराज। कंचनपुर नाम नगर है उसमें (सागरदत्त) सेठ उसके बेटेका नाम श्रीदत्त और एक नगरका नाम जयश्रीपुर वहां का (सोमदत्त) नाम एक सेठथा उसकी बेटी (जयश्री) वह उस सेठके बेटेको ब्याही थी वह किसी शहरमें सौदागरीको गयाथा वह अपने मा बापके घर रहतीथी जब बारहवर्ष बीते और वह युवावस्थाभई तो एकरोज निजसखीसे कहने लगी अयबहन! मेरा यौवन योहीं जाताहै संसारका सुख मैंने आजतक कुछ भी नहीं देखाहै यहबात सुन सखीने कहा धीरजधर भगवान्ने चाहा

तो अब वेगही तेरा पति तुझसे आन मिलेगा यहसुन, वह कोप हो अटारीपर चढ़कर निहारने लगी देखा तो एक जवान चला आरहाहै वह उसको यकटक देखतीरही और वह भी उसे देखता रहा निदान पास २ हुए तो इनकी चौनजरीहुई इसीसे इनका प्रेम वढ़गया तब उसने सखीसे कहा उसको तै लिवालाव तब तो सखी वहां जाय उससे कहने लगी कि सेठकी पुत्री, जयश्रीने तुमको बुलायाहै सो आप मेरे घर आना यहकह निज घरका पता वता दिया वह रातको वहां आया तो उसने ब्यौरादिया तो वह बोली जरा ठहरजा घरके लोग सोजावें तबचलूं निदान सब सोगये और आधीरातका अमल हुआ तब यह चुपके उठकर उसके साथ चली और एक क्षणमें वहां पहुंची और बेधड़क दोनोंने आपसमें भोग भोगा जब चारघड़ी रात बाकीरही तो उठकर निजघरआई और वह भी घरगया। निदान कितनेही दिन बीते उसका पतिभी विदेशसे आया और ससुराल में लेनेको आया,जब इसने निज शौहरको निहारा तो सखीनें कहा कि क्याकरूं कहांजाऊं जीवको चिंताके मारे चैन नहीं पड़ता मेरी भूखप्यास जातीरही न ठंढा सुहावे न गरम गरज शामहुई तो उसकी माने एकांतमें पलंग बिछवाय उसे उस के पास सोनेको भेजी तो वह भौंह चढ़ाय रिसभरी जैसे तैसे ठाट से गई और एक ओर मुंहकरके पड़रही उसके स्वामी ने नयी २ वस्तु जो उसके लिये लायाथा दिखलाई पर उसने सीधा मस्तक न किया और उसीयारकी याद दिल में समायीरही निदान यह भी वेचारा हारा थकाथा तो सोरहा जब आधीरातहुई तो वह वहां से चली और उस यारके पास पहुंची दैववश उसे सर्प डसगयाथा तो वह मरापड़ाथा यह विरह अग्नि से जलती उसकी छाती से जाय

लिपटी तब एक पीपल के वृक्ष में ब्रह्मराक्षस रहताथा उसने देखा कि यह अवसर खालीचलाजाताहै तो शीघ्र उसके देह में प्रवेश करके उससे संगकिया और अति आनन्द में आय उसकी नाक सुँहमें नथसमेत काटलेकर उसी वृक्षपर जाचढ़ा वह यह चरित्र एक चोर बैठा देखरहाथा और यह भी देख घबरायी सखी के पास आई और उससे सब हालकहा तो सखी बोली अब विलम्ब न कर अपने पति के पासजा धूममचादे कि इसने मेरी नाककाटी तो उसने वैसाहीकिया तब सब लोग इकट्ठेहुये और उससे हाल सुन इससे कहनेलगे हेपापी निर्दयी हत्यारे तूने नाहक इसकीनाक क्योंकाटी वह यहस्वांगदेख चिंताकर कहनेलगा कि चंचलचित्त कालेसर्पका शस्त्रधारी शत्रुका विश्वास न करना और त्रिया चरित्रसे डरना चाहिये कवीश्वर क्या वर्णन नहीं करसक्ता, योगी क्या नहीं जानता, मतवाला क्या नहीं बकता, रंडी क्या नहीं करसक्ती है, घोड़ेका ऐबबादलका गर्जना त्रियाका चरित्र और पुरुषका भाग्य यह देवता भी नहींजानते मनुष्यकी तो क्यागतिहै निदान उसके बापने कोतवाल को खबरदियी वहांसे पियादेआये और इसे बांध कर कोतवाल के पास लेगये कोतवाल उसे राजा के पास लेगया और राजा ने उससे सब हाल पूछा तो तिसने कहा मैं कुछ नहीं जानता फिर सेठकी लड़की कोबुलाकर पूछा तो तिसने साफ २ कहदिया और बोली कि आप पूछते क्याहैं प्रत्यक्षमें प्रमाण क्या है मेरी नाककटी न देखलीजिये इसमें सुबूतकी क्या जरूरत है फिर राजाने कहा तू कसूरवारहै तुझको क्या सजादीजावे वह बोला जो जीमेंआवे सो करो तो राजाने उसे शूलीपर चढ़ानेकी आज्ञा दियी तो इसे शूलीपर लेगये तब यह संयोग देख उसचोरने

अच्छीतरहसेजानलिया कि अवबिन अपराध यहवृथा माराजाता है तो आप उसने दुहाईदियी तवराजाने उसेबुलाय पूछा तू कौन है तो बोला चोर हूं मैं इसमुकद्दमे को अच्छी तरहसे जानता हूं तवतो राजाने कहा तू सब सच २ कहदे क्या माजराहै तब सब हाल कहनेलगा और साराहाल यथावत् कहके बोला महाराज नेकको पालना और वदकोसजादेनी यहधर्म सदासे चला आता है इतनी सुन राजा ने तुर्त उसरंडी का काला मुँहकरवा गधेपर चढाय निज नगरके चारों ओर फिराकरमारी इतनी कह चूड़ामणि तोता बोला महाराज स्त्रियें भी ऐसी हत्यारी होती हैं इतनी कथा सुन वेताल बोला महाराज बतलाइये उन दोनों कुकर्मी स्त्री पुरुषों में अधिक पापभागी कौनहुआ तो राजा बोला स्त्रीहुयी तव वेताल बोला कैसे तो कहा कि मर्दकैसा भी दुष्टक्यों न हो पर उसे धर्म अधर्म का विचार रहता है और स्त्रीको धर्म अधर्मका कुछ ज्ञानही नहीं रहता इस से उसनारी का बहुत पापहुआ इति दृष्टांतप्रदीपिन्यां वै० पं० ७८ प्र० ॥

यदैकद्वित्रिभिःकन्याऽलाभिस्वस्वोपकारतः ॥
वैवाहयायुद्धकर्त्रासाजीवंहुत्वाऽऽनयत्यसौ १

जव एक दोतीन वरोंकरके निज २ उपकार से कन्या प्राप्तकरी गईहो तो वह फिर बिवाही उसहीको जायगी जो उसे युद्धकरके लायाहो क्योंकि वह उसे जीवहोमकरके लायाहै इसपर दृष्टांत जैसे वै० पं० वेतालबोला अयराजा उज्जैननाम एक नगरी वहां का महाबलराजा है और उसका एक हरिदासनाम दूतथा उसदूतकी बेटीकानाम महादेवीथा वह अति सुंदरीथी जब बरयोग्य हुई तो

उसके पिताको चिंताहुई इसका वरढूंढविवाहकर देनाचाहिये नि-
दान एकदिन उसने निजवापसेकहा कि पिताजी जो सव गुण जा-
नताहो मुझे उसेदीजो वहबोलाअच्छा ऐसेहीवरसेतेरा विवाहकरेंगे
ऐसा कहदिया फिर एकदिन दूत हरिदाससे उसनेकहा दक्षिण देश
में(हरिचंद्र)नाम राजाहै उसके पासजाय मेरी ओरसे कुशल पूछो
और उसकेसमाचार लेआओ ऐसी इसराजाकी आज्ञापाय विदाहो
उस राजाके देश में गया और उसके पास पहुँच निज राजाका
सँदेशा कहा और उसके पास रहनेलगा निदान एकदिन उस
राजाने हरिदाससे पूछा कि अभीकलियुग का आरम्भहुआ या
नहीं तव यह हाथ जोड़ कहनेलगा महाराज ! कलिकाल वर्त्त-
मानहै क्योंकि संसारमें झूंठ वढ़ा और सत्यगया लोग मुंहपर
कुछ कहते और कुछ करतेहैं धर्म जातारहा पाप वढ़ा पृथ्वीफल
कमदेनेलगी राजा दंडलेने लगे ब्राह्मणलोग लालचीहुये स्त्रियोंने
लाजछोड़ी वेटा वापकी आज्ञा नहीं मानता भाई भाई का एतवार
नहीं करता मित्रोंसे मित्राई जातीरही स्वामीसे लाभ उठगया से-
वकोंने सेवा छोड़ी ऐसी २ जितनी बुरीवातेंथीं वे सव होनेलगीं
जव राजासे यह कहचुका तो सुन महलमें चलागया और हरि-
दास अपनेघर आया तो वहां उसके पास एक ब्राह्मण आया
और वोला मैं तुझसे एक चीजमांगने आयाहूं वह वोला कहुतो
कहा कि कन्या मुझको अपनी व्याहदे तव हरिदास वोला जिस
में सव गुणहों उसे व्याहूंगा तव वोला मैं सव गुण जानताहूं तव
तो तिसने कहा तू मुझको कोई विद्या दिखावेतो जानें तव उस
वँभनेटे ने कहा कि मैंने एकरथ ऐसा वनायाहै उसमें यह साम-
र्थ्य है कि जहां जी चाहे तहां जाय उतारे तव हरिदास ने कहा

उसरथको सवेरे मेरे पास लेआइयो निदान वह भोरको रथले हरिदासके पास आया फिर ये दोनों सवारहो उज्जैन नगरी में आन पहुंचे पर वहां उनके आने से पहिले किसी और ब्राह्मणके बेटेने इसके बड़े लड़के से कहा तू मुझे अपनी बहन व्याह दे मैं भी सब विद्या जानताहूं तो तिसने सुन उससे कहा तुझही को व्याहेंगे और एक ब्राह्मण के पुत्र ने उसलड़की की मासे कहाथा कि तू अपनी बेटी मुझे व्याह दे मैं सब विद्या जानता हूं और शब्दवेधी तीर मारता हूं यह सुन उसने भी कहा था कि मुझे स्वीकार है निदान तब तो तीनो वर आनकर इकट्ठे भये तब हरिदास ने मनमें विचारा कि किसकोदूं किसे न दूं इस चिंताही मे रहा और रात को एक राक्षस आनकर उस कन्या को हरलेगया कहाहै कि बहुतायत किसीभी वस्तुकी अच्छी नहीं अतिरूपवती सीताथी तिसे रावणनेहरी राजा बलिने बहुदान दिया तो पाताल पठायागया और रावण ने अतिगर्वकिया तो निज कुल खोवाया निदान जब भोरहुआ तो सबघरके कन्याको न देख अनेक प्रकारकी चिताकरने लगे और इसबातको सुनकर वे वरभी तीनो आये उनमे एक ज्ञानीथा उससे हरिदास ने पूछा हे ज्ञानी तू बता वह कन्या कहांगई तो उसने घड़ी विचारकर कहा तुम्हारी कन्या को ब्रह्मराक्षस विंध्याचल पर्वतपर लेगयाहै इसमें दूसरा बोला कि मै राक्षसको मारकर उसे लेआऊंगा तो तीसरा बोला हमारे रथपर सवार होजाओ यह सुनतेही झट रथपर सवारहो चले और वहां पहुँच उस राक्षसको मारकर कन्याको तुर्त लेआया फिर तो तिन तीनोंमे विवाद हुआ तो तिसके पिता ने चिंताकरी कि तीनों का अहसान समानहै किसेदूं इतनी कथाकह वेतालबोला कहो राजा

वह किसकी स्त्री हुई तो राजा बोला जो राक्षसको मारकर लाया फिर बोला अहसान सबने किया तो कहा उन दोनों ने अहसान किया उसकापुण्य हुआ और यह लड़जीव जानझोककर लाया इससे उसीकी स्त्री हुई इति द० प्र० ७९ प्र० ॥

**उत्तमांगंशिरःप्रोक्तंसम्यक्शास्त्रेऽस्ययोजनात्॥ याऽऽसीत्स्त्रीपूर्वपुंसःसापरपुंसोयथाऽभवत् १**

*शास्त्र में मस्तकको ( उत्तमांग ) नाम है सो यथार्थ है क्योंकि* केवल मस्तकके ही जोड़देने से जो स्त्री प्रथम पुरुषकी थी वह जैसे अन्य दूसरे की होगई दृष्टांत वेताल बोला हेराजन् (धर्मपुर) नाम नगर है वहां का राजा ( धर्मशील ) और उसके मंत्री का नाम ( अंधक ) उसने एक दिन राजासे कहा महाराज एक मंदिर बनाय उसमें देवी की मूर्त्ति पधराकर पूजा कियाकरो इसका शास्त्र में बड़ाही माहात्म्य लिखाहै तो राजा मंदिर बना उसमे मूर्त्ति विराजमानकर शास्त्रविधि से पूजा करने लगा इसीतरह जब कुछ समय बीता तो एक दिन दीवानने कहा महाराज ! निष्पुत्र का घर सूना, मूर्ख का हृदय सूना और दरिद्री का सब कुछ सूना है यह बात सुन राजा देवीके मंदिर मे जाय हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवि ! ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र ये आठपहर सेवा करतेहैं और तूने महिषासुर चण्ड मुण्ड रक्तबीज से दैत्योंको मार पृथ्वी का भार उतारा और जहां२ तेरे भक्तोंपर भीड़पड़ी तहां २ तू सहायहुई और यही आशाकर मैंभी तेरे द्वारपर आयाहूं अब मेरी इच्छा पूर्ण करो इतनी स्तुतिं राजा जब करचुका तो देवी मंदिरसे आवाज आई कि राजा मैं तुझपर प्रसन्नहुई वर मांग

तेरे मनमें है तव राजा वोला हेमाता! जो मुझपर प्रसन्नहुईहो तो मुझको पुत्र दीजिये देवी वोली जा तेरे पुत्र पैदाहोगा जो महा पराक्रमी प्रतापी तव तो तिस राजा ने गंध अक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य आदि से देवी की पूजा की इसीप्रकारसे नित्य पूजा करता विन पूजा किये भोजन नही करताथा निदान कितनेदिन पीछे राजाके एक लड़का उत्पन्नहुआ तो तिसने वाजेगाजे से उस देवी की पूजा की इत्तिफाक़न् किसी नगर से एक धोवी अपने दोस्त को साथलिये इस शहरकी तरफ चला आताथा कि देवीका मंदिर उसे देखपड़ा उसने दण्डवत् करके इरादा किया कि सोही उसके सामने एक धोवी की लड़की अतिसुन्दरी आई उसे देख मोहित हुआ और देवीके दर्शनको गया और हाथजोड़ दण्डवत् प्रणाम कर प्रार्थनाकरी कि जो इस सुन्दरीको व्याहूं तो निज शीश तुझ पै चढाऊं यह कह विनतीकर दोस्तको साथले निज नगरको गया जव वहां पहुंचा तो उसको उसके विरहने ऐसा सताया कि नींद भूख प्यास सव विसरगई आठोपहर उसीके ध्यानमें रहनेलगा यह वुराहाल उसका देख उसके वाप के पास जाय सव व्योरा कहा उसका पिता भी यह सुनकर भौचक होगया और चिन्ता करने लगा कि इसकी दशादेख मालूम होताहै कि जो उससे सगाई इसकी न भयी तो यह अपने प्राण त्यागदेगा इससे श्रेष्ठ यही है कि उसलड़की से इसका व्याहकरदीजिये जिससे यह वचै इतना विचार पुत्रके मित्रको साथले उसगांवमें पहुंचा उसलड़की के पिता से जाकर कहा कि मै तेरे पास कुछ याचनेआयाहूं जो तू देवै तो मैं कहूं उसने कहा मेरे पास वह पदार्थ होगा तो मैं दूंगा तुम कहो इसतरहसे वचनवद्ध कर कहा तू अपनीलड़की मेरेपुत्र

को दे यहसुनके उननेभी उसकी बात प्रमाणकर ब्राह्मणको बुलवा दिन लगन मुहूरत ठहराकर कहा तुम लड़केको लेआओ मैं भी लड़की के हाथ पीलेकर देऊंगा यहसुन वह वहां से उठ अपने घर आ सब सामान शादीका तैयार करनेलगा और वहभी वहां से अपने घर आ शादी का सामान तैयारकर ब्याहनेको आया, और विवाहकर बेटे बहूको ले फिर अपने घर आया और दुलहा दुलहन आनन्द से रहनेलगे फिर कितने दिन बाद उस लड़की के पिता के यहां कुछ शुभ कर्मथा तो वहां से न्योता इनको भी आया ये स्त्री पुरुष तैयारहो अपने मित्रको साथले उस नगरको चले जब नगरके निकट पहुंचे तो वह देवीका मंदिर नजरआया तब उसकी बात याद आई तब तो तिसने निज मन में विचारने लगा और बोला मैं बड़ाही असत्यवादी अधर्मी हूं कि देवीसे भी झूठ बोला इतनी बात मनमें ठहरा दोस्त से कहा तुम यहां खड़े रहो मैं देवीका दर्शन करआताहूं और स्त्री से कहा तूभी यहां ठहर यहकह मंदिरके पास पहुंचा तो कुंडमें स्नानकर देवीके सम्मुख जा हाथ जोड़ दंडवत् प्रणामकर खड्गउठाय गर्दन पर मारा कि धड़से शिर अलगहोगया फिर कितनी देर पीछे उसके मित्र ने विचारा कि इसे गये बड़ी देरहुई अबतक फिरा नहीं चलकर देखा चाहिये तो उसकी स्त्री से कहा तू यहां खड़ीरहु मैं उसे सिताबी लेकर आताहूं यह कह देवी के मंदिर में गया तो देखता क्याहै कि उसका शिर धड़ से जुदापड़ा है यह हाल देख वह कहने लगा कि संसार बड़ा कठिनहै यह कोई नहीं कहैगा कि इसकी स्त्री जो अति सुन्दरी थी उसे लेनेको इसे मारकर यह मकर रचा है इससे मरनाही भलाहै पर संसारमें बदनामी लेनी ठीक नहीं

है यह तालावमें स्नानकर देवी के सामने हाथ जोड़ प्रणामकर खांड़ा ले गले में मारा कि रुंडसे मुंड जुदाहोगया और वहां वह खड़ी २ उकताकर राहदेख निराशहोके ढूंढ़तीहुई देवीके मंदिर में पहुँची तो देखती क्याहै कि दोनों मरेपड़े हैं फिर इनदोनों को मरादेख उसने मनमें विचारा कि लोग यह तो न जानेंगे कि आप से ये वलिलगेहैं यही कहैंगे कि रंडीकाजिरथी वदकारी करने के लिये दोनोंको मारआई है इस वदनामी से मरनाही भलाहै यही शोच सरोवरमें गोतामार देवीके सन्मुख आ शिरनवाय तलवार उठाके दंडवत् कर गरदनमें मारनेलगी कि देवीने आ हाथ पकड़ा और कहो वरमांग मैं तुझपै प्रसन्न भईहूं वह वोली माता तुम प्रसन्नहो तो इन दोनोंको जीवदान देओ फिर देवी बोली कि तू इनके शिरोंको धड़ोंसे लगादे तो इसने मारे खुशीके घवराय धड़से शिर वदल २ कर लगादिये और देवीने अमृत लाय छिड़क दिया ये दोनों जी उठे और आपसमें दोनों झगड़ने लगे कि वह कहै स्त्री मेरी है वह कहै मेरी है इतनी कथा कह वेताल वोला हे राजन् वह स्त्री किसकीहुई राजाने कहा सूतशास्त्रमें इसका प्रमाण लिखा है कि नदियों में गंगा उत्तम है और पर्वतों में सुमेरु पर्वत श्रेष्ठहै और वृक्षों में कल्पवृक्ष अंग में मस्तकउत्तमहै इस न्यायसे जिसका उत्तम अंगहै उसीकी स्त्रीहुई इतनी वात सुन वेताल फिर उसी वृक्ष में जा लटका और राजाभी उसेवांध कांधेपर रखकर लेचला इ० दृ० प्र० ८० प्र० ॥

चतुर्भिश्चतुरैर्लभ्यास्वस्वोपकृतिभिस्तदा ॥
सजातीयेनसोद्राह्याह्याकृतिग्रहणादिना १

जब चार चतुरवरोंको कन्या प्राप्तहो तो तहां वह उसके सजातीयसमान वर्णवालेको व्याहनी चाहिये दृष्टांत बेताल बोला हे राजन्! ( चंपापुर ) नाम एक नगरहै वहांका ( चंपकेश्वर ) राजा और रानी ( सुलोचना ) और बेटीनाम ( त्रिभुवनसुंदरी ) सो अतिही सुंदरी थी जिसका मुख चन्द्रमाके समान बालकाली घटासे आंखें मृगकीसी भवें धनुष नासिकाकीरके जैसी गला कपोतकासा दांत अनारसे होठोंकी लाली कुंदरूकीसी कमर चीतेकीसी हाथ पॉव कोमल कमलसे रंगचंपेकासा निदान उसके यौवनकी ज्योति दिन२बढ़तीथी जब वहजवानहुई तो राजारानी निजजीमें चिंता करनेलगे और देश २ के राजाओं को यह खबरदिथी कि राजा चम्पकेश्वर के घरमें ऐसी सुन्दर कन्या है कि जिसके रूप को देखके सुरनर मुनि मोहित होरहे हैं फिर तो मुल्क २ के राजों ने निज २ तसवीर लिखवा २ कर भेजी राजाने ले-अपनी कन्याको दिखलाई पर उसके मनमें एक न समाई तब तो राजा ने कहा तू स्वयंवरकर तो तिसने यह बातभी न मानी अपने बाप से कहा रूप बलज्ञान जिसमें तीनों गुणपूर्ण समानहों उसीको मुझे देना निदान कितने दिनबीते तो चारोंदिशाओं से चारवर आये तो तिनसे राजाने कहा तुम चारों निज २ गुण अलग २ वर्णन करो तब तो उनमें से एक बोला कि मुझमें यह विद्याहै कि एक कपड़ा बनाकर पांच लालको बेचताहूं जब उसका मोल मिलता है तो उसमेंसे एक मोल ब्राह्मणको दानदेदेताहूं और दूसरा देवताकी भेट करताहूं तीसरा अपने अंगलगाताहूं चौथा स्त्रीके अंग लगाताहूं पांचवेंको बेच रुपयेले नित्य भोजन करताहूं यह विद्या दूसराकोई नहींजानताहै और मेराजोरूपहै सो जाहिरही है दूसरा

बोला मैं जलथलके सब पशुपक्षियोंकी भाषा जानताहूं मेरे बलका दूसरा नहीं और सुन्दरता मेरी आप के आगेहै तीसरेने कहा मैं ऐसा शास्त्र जानताहूं कि मेरे समान दूसरा नहीं हैं शब्दबेधी तीरमारता हूं चौथा बोला मैं शास्त्र विद्यामें एकहीहूं मेरे समान दूसरा नहींहै और मेरा हुस्न आपके सामनेहै राजा इनचारोंकी बातेंसुन निज जी में विचारने लगा कि कन्या किसको ब्याहूं ये चारों चतुरगुण में समानहै यह शोच उसने बेटीपासजाय उससे चारोंके गुण वर्णन किये वह सुन चुपहोरही लाजकी मारी कुछ भी न कहसकी और नीची गर्दनकर कुछ जवाब नहीं दिया ॥ इतनीबात कह बेताल बोला हेराजन् ! वह कन्याकिसको ब्याहने योग्यहै तो राजा बोला कि जो कपड़ा बनाकर बेचता वह जातिका शूद्र जुलाहा है और भाषाजाननेवाला वैश्यहै और जो शास्त्र पढ़ा सो ब्राह्मणहै और जो शस्त्रधारी शब्दबेधी तीरमारताहै वह उसका सजातीय क्षत्री है यह स्त्री उसके योग्यहै इ० दृ० प्र० मि० नि० ८१ प्र० ॥

सेव्यसेवकयोर्मध्येसत्वाधिक्यंतुसेविनः ॥
सेवित्वेऽप्युपकारित्वाद्राजदूतेयथाऽभवत् १

स्वामी सेवक इन दोनोंके मध्यमें सेवकका सत्त्वभी अधिक होताहै उसके सेवक होनेसे अर्थात् सेवक तो निज नौकरी मात्र ही कर रहता है और यदि वह उपकारका कामकरै तो आश्चर्य्य है जैसे राजदूतने किया दृष्टांत जैसे बेताल बोला हेराजा ! (मिथिलावती) नाम एक नगरी है वहां का राजा (गुणाधिप) था उसकी सेवा करने को दूरदेश से एक ( चिरमदेव ) नाम राजपुत्र आया वह रोज राजाके दर्शन करनेको जाताथा लेकिन मुलाकात

नहीं होतीथी और जितना धन वह लायाथा सो सब वहां बैठकर खागया और वहां घर उसका वैरानहोआया। एक दिनकी बात है कि राजा शिकारको सवारहुआ और चिरमदेवभी राजाके पीछे था निदान उसनेही पुकारकर कहा महाराज लोग सवारीके पीछे रहगये हैं और मैं आपके घोड़के साथ २ घोड़को कोड़ा मारेचला आताहूं राजाने यह सुनके घोड़को रोंका कि जिस में यह बराबर आया राजाने उसे देखके पूछा तू किस वास्ते ऐसा दुर्बल होरहा है तब यह बोला कि जिस स्वामीके पास रहिये और वह ऐसाहो कि हजारोंको पालताहो और अपनी खबर नहीं लेता उसका कुछ दोष नहीं किंतु उसके कर्मका दोष है जैसे दिनको सारा जहान देखता है परंतु उल्लूको नजर नहीं आता इसमें सूर्यका क्यादोषहै हैरतहै मुझको कि जिसने माताके पेटमें रोजी पहुँचायीथी जबकि हम पैदाहुये और दुनियांकी चीज भोगनेके लायक हुये अब वह खबर नहीं लेता न जानें सोताहै या मरगया और अपने नजदीक माल दौलत चाहनी किसी बड़े आदमीसे कि देते वक्त वह मुंह बनावे और नाक भौं चढ़ावे इससे जहर विष खाकर मरजाना भी अच्छाहै पर ये छः बातें आदमीको हलका करदेती हैं एक तो खोटेनरकी प्रीति, दूसरे विनाकारणकी हँसी, तीसरे स्त्री से विवाद करना, चौथे असज्जन स्वामीकी सेवा, पांचवें गधेकी सवारी, छठे विना संस्कृत की भाषा। और ये पांच चीज विधाता मनुष्य के कर्म में पैदाहोतेही लिख देताहै एक तो आयुर्बल दूसरे कर्म तीसरे धन चौथे विद्या पांचवें यश। महाराज! जब तक आदमी का पुण्य उदय होताहै तो सब उसके दास बने रहते हैं और जब पूर्व पुण्य घटजाताहै तब बंधु वैरी होजाते हैं पर यह एकबात मुकर्रर है

स्वामी की सेवा करनी कभी निष्फल नहीं होती है यहसुन राजा ने उन सब बातोंको गौरकर कुछ जवाब न दिया फिर उससे यह कही किमुझे भूंख लगीहै कहीं से कुछ खानेको लाव चिरमदेव ने कहा महाराज यहां आपको भोजन मिलेगा यह कह जंगल में जा एक हिरण मारलाय शीशे से चकमक निकाल आग सु लगा मांस पकाय राजाको खूब खिलाय आपभी खाया निदान जब राजा पेटभर चुका तो तिसने कहा हे राजपुत्र! अब हम नगरको लेचलो हमें मार्ग मालूम नहीं तो उसनें राजाको नगरमें ला उसके महल में पहुँचा दिया तब तो राजाने उसकी चाकरी मुकर्रर करदियी फिर वह राजा की सेवा में रहनेलगा निदान एक दिन राजा ने उसे किसी काम को समुद्र के किनारे भेजा जब वह वहां पहुँचा तो तिसनें एक देवी का मंदिर देखा उसमें जाय देवी की पूजा कियी पर जब वह वहांसे बाहर निकला तब उसके पीछेसे एक नायका सुन्दरी आय उससे पूछनेलगी हे पुरुष तू किसलिये यहां आया है वह बोला ऐश्वर्य के लिये आया हूं और तेरा रूप देखकर मुस्ताक हूवा हूं तो तिसने कहा जो मुझसे कुछ इरादा रखता है तो पहिले इस कुंड में जाकर स्नानकर पीछे तू मुझसे कहै सोही मैं करूंगी वह यह सुनतेही कपड़े उतार गोतामार निकलदेखै तो निज नगरमेंही खड़ा है यह अचरज देख लाचारहो अपने घरजा और कपड़े पहिन राजा के पास आय सब वृत्तान्त कहा यह सुनतेही राजा बोला प्यार मुझे भी यह अचरज दिखा तब वे दोनों सवार हो वहांसे चले कितने दिनों में वहां पहुँचे तो उसी देवी के मंदिर में जाय पूजाकर आये तो वही नायका एक सखी को साथ लिये राजा के पास आन खड़ी हुई और राजाका रूपदेख मोहित

हुई कहनेलगी कि हे राजन्! मैं तुझपर प्रसन्नभईहूं इसीलिये नौकरके द्वारा मेरा तुम्हारा संयोगलगाहै अब मैं आपकी दासीहूं जो आज्ञाहो वही करूंगी तो राजा ने इसमें मुख्यकारण राजपुत्र कोही समझ उसके उपकार करनेकेलिये इससे कहा कि तू उस राजकुँवरकी स्त्री होजा तब वह बोली कि मैंने तो आपके ऊपर चित्तधरकर यह विचार किया है तब तो राजा बोला जो तू दासी हुई और सच्चीहै तो यही कर तब तो वह वचनवश भई लाचारहो उसे यही अंगीकार करनापड़ा इतनी कथा कह वेताल बोला हे राजन्! उन दोनोंमें सत्त्व किसका अधिकरहा तो राजा बोला सेवकका तब वेताल बोला कि राजाका कैसे नहीं जिसने ऐसी सुंदर कामिनी निज नौकर को देदियी जिसकेन देनेका कुछ भी डर न था तब राजा ने कहा कि राजाओंका तो उपकारकरना परमधर्म है वे जानते भी हैं और नौकर जोकोई उपकारकरै तो अचरजहै इससे उसका सत्त्व अधिकहै इति मज्जुक्क देवीसहायकृत द्० कृ० प्र०१॥

## सत्ये नास्तिभयं कचित्

सत्य कहने में भय नहीं होता, इस पर चोरका दृष्टांत वेताल [illegible] मदनपुर नाम नगरहै वहांका वीरवर नाम राजा [illegible] देश में हिरण्यदत्त नाम एक बनियां जिसकी बेटी मदनसेना थी वह एक दिन वसंतऋतुमें सखीके संग [illegible]गमें सैर करने गई और दैववश उसके आनेसे पहिले [illegible] सेठका पुत्रभी (सोमदत्त) मित्रको साथ लिये वन को निहारने केलिये आया तो वह वहांसे फिरताहुआ उसी फुल-वाड़ी में आया तो तिसे देख मोहितहो मित्रसे बोला जो मुझसे यह मिले तो जीवन सफलहो और जो न मिली तो इस संसार

में जीना वृथाहीहै वह ऐसी २ मित्रसे बातें कह विरहसे व्याकुल बेचेत होगया फिर सुधहुई तो जाय निधड़क उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगा कि जो तू मुझसे प्रीति न करेगी तो मैं तुझपर अपने प्राणदूंगा। ऐसा मत कीजो इसमें दोष होता है तब उसने कहा तेरे विरहकी आगने मुझको जला दिया अब बाकी क्या है अब मुझे धर्म अधर्म की लाज नहीं है इस पीर से मेरी सुध बुध सब जाती रही उसने कहा अब तो ऐसा नहीं हो सक्ता पर वचन देतीहूं कि जब मेरा व्याहहोगा तो पहिले मैं तुझ से मिलजाऊंगी पीछे अपने घररहूंगी यह वचनदे सौगंदखा वह अपने घरगई और वह अपने घरगया फिर उसका व्याह हुआ तो वह आधीरातको उससे मिलने चली सब शृंगारकर गहना पहने जातीथी कि राहमें उसे एक चोर मिला वह बोला हे सुन्दरी तू इस आधीरातके समय गहना पहिने कहां जाती है वह सत्य२ बोली कि यह करार यारसे कियाथा सो मैं अब उससे मिलनेको जातीहूं चोर बोला मैं तेरा सब वस्त्र गहना छीनलेऊं तो तेरा सहायक कौनहो वह बोली धनुपधारी कामदेव राजा मेरा रक्षक है और इसी सत्यपर तू मुझे छोड़देवे तो यह गहनावस्त्र सब मैं तुझे लाकर देदेऊंगी फिर मुझे क्या करनाहै तू मेरा शृंगार अब बिगाड़ नहीं यह सुन चोर चकित भया और उसके सत्य वचन पर विश्वास कर उसे छोड़ दियी तो वह वहां पहुँची और उसे जाय जगाया वह अचेत सोता था तो चमककर उठ बोला हे सुन्दरी तू कौनहै वह बोली मैं वही मदनसेना हूं जिसने तुझसे पहिले मिलने का करार कियाथा तब तो उसको ज्ञान हुआ कि धन्य है इस सत्यपर तब उसने भी इसे हाथजोड़ दंडवत करके बिदा

करी फिर राहमें चोर मिला तो उसे सब वस्त्र गहना उतारकर देने लगी तब तो तिसनेभी इसके सत्यपर प्रसन्नहो वह न लिया फिर वह अपने पतिके पास आई और सब बात समझाकर कही तो वहभी इसके सत्यपर प्रसन्नभया इतनी कथा कह वेताल बोला हे राजन्! उन में से किसका सत अधिक हुआ तो राजाने कहा चोरका अधिक है फिर पूछा कैसे तो कहा उसने तो उसके पति की भी शंका मानके उसको उलटी भेजीहो पर चोरने निःशंक होनेपर भी छोड़ी इस से उसका सत अधिक रहा इति दृष्टान्त प्रदीपिन्यां भि० नि० वै० पं० ८३ प्र० ॥

स्त्रीणांसुकुमारित्वेसत्वाधिक्यंभवेच्छुतार्तायाः ॥
स्त्रीणामभूत्त्रयाणां सत्वाधिक्यंतुतस्याहि १ ॥

स्त्री जब सुकुमार हो तो उनमें जो सुनकर पीड़ितहो उसका सत्व अधिकहै जैसे तीनों सुकुमारियोंमें उस सुननेमात्रसे पीड़ित हुईहीका सत अधिक हुआ दृष्टांत। वेताल बोला हेराजन्! गौड़ देशमें वर्द्धमान नाम एक नगर और (गणशेखर) नाम वहां का राजाथा उसका मंत्री एक सरावगी अभयचंदथा उसके सम-झानेसे राजाभी स्रावक धर्म में आया शिवकी पूजा विष्णुपूजा और गोदान भूमिदान पिण्डदान जुआं और मदिरा इन सबको मना किया कि नगरमें कोई करने न पावे और हाड़ गंगामें कोई न गेरै और इनबातों की दीवानने भी राजा से आज्ञाले सारे न-गर में डौंड़ी पिटवादी कि कोई ऐसा काम करै उसका सर्वस्व छीन सजा दे शहर से निकाल दिया जावेगा एक दिन दीवान राजा से कहनेलगा महाराज! धर्म का विचार सुनिये जो कोई

किसी का जीव लेताहै वह अगले जन्म में उस हत्यारे का भी जीवलेता है इसी पाप से संसार में मनुष्यका जीवन मरण नहीं छूटता मरता फिर २ जन्मलेताहै इस जगत् में जन्मपाके धर्मबटोरना मनुष्य को उचितहै देखिये काम क्रोध लोभ मोहवशहो ब्रह्मा विष्णु महेश किसी न किसीका संसार में अवतार ले २ आते हैं बल्कि उनसे गाय अच्छी है जो रागद्वेष मद क्रोध मद लोभ मोह से रहितहै और प्रजाकी रक्षाकरैहै और उसके जो पुत्रहोतेहैं वे भी जगत् के जीवों को बहुत तरहका सुखदेते पालते हैं इससे देवता और मुनिजन सब गौ को मानते हैं इसलिये देवताओं को माननो अच्छा नहीं इससे हाथी से ले चींटीलों पशु पक्षी पर्य्यन्त हरएक जीवकी रक्षा करना धर्म है जहान में उसके सामने कोई धर्म नहीं जो नर विराने मांस को खा अपनो मांस बढ़ाते हैं वे नरकमें जाते हैं और उनके रोमें २ के समान कालखड्ग पड़ेसड़ते हैं इससे मनुष्य को यह उचितहै कि जीवकी रक्षाकरे जो लोग विराना दुःख नहीं समझते और गौरव के मारे जीव मार २ खाते हैं उनकी इस पृथ्वी पर उमर कम होती है और लूले लँगड़े काने अन्धे और कुवड़े ऐसे अंगहीनहो जन्मलेते हैं जैसे २ पशु वे पक्षियोंके अंगखाते हैं तैसे २ ही वे निज अंगगँवादेते हैं और मदपानकरने से भी महा [illegible]

[illegible]

में खाया कि वह जो मंत्री कहता वहही वह करताथा और ब्राह्मण योगी संन्यासी से बड़े दरवेश आदि किसीको भी नहीं मानताथा और इसीमत से राज्यकरताथा एकदिन कालके वशहोकर मरगया फिर उसका बेटा (धर्मध्वज) राजगद्दीपरबैठा और राज्यकरने

जगा एकदिन उसने उसके कर्मदेख नास्तिकभये उस अभयचंद दीवान को पकड़वा शिरपर सात चोटियांरखवा कालामुँहकराकर गधेपरचढ़ाय डौंडीपिटवाकर नगरके चारोओर फिराय देश निकालादिया और निज राज्य निष्कंटककिया एक दिन वह राजा वसंतऋतु में रानियों को साथले सैरकरनेको गया वहां एक वाग में वड़ातालावथा और उसमे कमलफूलरहेथे राजा उस सरोवरकी शोभादेख कपड़े निकाल स्नानकरने को उतरा और एक फूल तोड़ तीरपर आय रानीके हाथमे देताथा कि इसमें वह हाथसे छूटकर रानीके पावँपर गिरा और उसकी चोटसे रानीका पावँ टूटगया तो राजा घवराकर एक वारगी वाहर निकल उसकी औषध करने लगा कि इतने मे रातहुई चंद्रमाने प्रकाश किया तो चांदनी की ज्योति पड़तेही दूसरी रानीके शरीरभरमे फफोले पड़ आये फिर अचानकही कहीं से गृहस्थीके घरमे से मूशलकी आवाजआयी तो तीसरी रानी के शिर में पीरहोआई कि उसकेमारे वह घवराय गिरी इतनीकथा कह वेताल वोला हेराजन्! उनतीनों में अत्यन्त सुकुमार कोमलअंगवाली कौनसी रानी थी राजा ने कहा जिस के शिर मे शब्दसुननेसेभी पीरहुई इससे वहही सव से सुकुमार है इति शुक्रदेवीसहायकृतायां दृष्टांत प्रदीपिन्यां मिश्रनिदर्शने स्त्री सुकुमारतावर्णनंनाम ८४ प्रदीपः॥

अरक्षिताप्रजाराज्ञा नश्यतीतिविचारयन्॥
मंत्रीमृत्युमवाप्यासौतस्माद्रक्ष्यान्नृपेणसा १

राजाकरके अरक्षितभयी प्रजा विनाश को प्राप्तहोती है ऐसा विचारकर मंत्री ने मृत्युपाई इससे राजा को सर्वथा प्रजाकी रक्षा

करनी उचितहै दृष्टांत बेताल बोला हेराजन्! पुण्यपुरनाम एक नगर और (वल्लभ) नाम वहांका राजाथा और उसके मंत्रीकानाम (सत्यप्रकाश) और उस मंत्रीकी स्त्रीका नाम (लक्ष्मी) था उस राजाने एक रोज निज दीवानसे कहा कि जो राजा होकर सुन्दरस्त्री न भोगै तो उसका राज्य करनाही वृथाहै यह कह दीवान को राज्यकाज सौंप आप सुखसे ऐश करनेलगा और निज राज्य की चिंता छोड़ दी दिन रात आनंदमें मग्न रहनेलगा तो एक दिन वह मंत्री अपने घरमें बैठाथा तब उसकी स्त्रीने पूछा कि स्वामी मैं इन दिनोंमें आपको दुर्बल देखतीहूं तो वह बोला मुझे रात दिन राज्यकीही चिंता रहती है इससे दुर्बल होरहा हूं और राजा राज्य तज आठोंपहर अपने ऐश आराम में रहताहै तब वह मंत्री की स्त्री बोली हेपति तुमने बहुत दिनों तक राज्यकाज किया अब थोड़े से दिनों के लिये राजा से बिदाहो तीर्थयात्रा करो उसकी यह बात सुन वह चुपका होरहा जब वहांसे उठा तो राजाके पास जा रुख़सतले तीर्थयात्राको चला जाते २ समुद्रतीर सेतुबंध रामेश्वर पै पहुँचा वहां जाय शिवजीके दर्शनकर बाहर निकला तो क्या देखता है कि एक कंचनका वृक्ष उस समुद्र में से निकला जिसके जमुर्रुदके पत्ते, पुखराजके फूल, मूंगेके फल, तो वह अत्यंत सुन्दर नजरआया और उस वृक्षपर अति सुन्दरी नायका बीन हाथमें लिये मधुर २ कोमल स्वरोंसे गारही है फिर एकघड़ी बाद दरख्त उसी समुद्र में लोपलाप होगया यह तमाशा देख वह वहांसे उलटा फिर निज नगर में आया और राजा के पास जाय हाथ जोड़ बोला महाराज! मैं एक अचरज देख आया हूं राजाने कहा बयानकर तो दीवानने कहा महाराज अगले मनुष्य

कहगये हैं कि जो बात किसी की अक्क में न आवे वह कहनी नही चाहिये पर यह मैने निज आंखोसे प्रत्यक्ष देखाहै इससे कहताहूं कि महाराज जहां श्रीरघुनाथजीने समुद्रपर पुल बांधाहै उस जगह देखता क्याहूं कि सागरमें से सोनेका दरख्त निकला तिस केजमुर्रुद के पात पुखराजके फूल और मूंगेके फलों से ऐसालदा हुआ कि जिसका बयान नही होसक्ता और उसपर महासुन्दरी स्त्री बीन बजाय २ मधुरस्वरसे गायरही परंतु एक घड़ीके बाद वह वृक्ष सिंधुमें छिपगया यह बात सुनकर राजा दीवान से बोला कि अब तू राजसँभाल मैं वहां जाताहूं यह कह अकेला समुद्रके किनारे चला कितने एक दिनों में वहां जाय पहुँचा और शिवजी के दर्शनको मंदिरमें गया जो पूजाकर बाहर निकला तो तहां वहही वृक्ष नायकासमेत निकला तो तिसे देखतेही राजा समुद्र में कूद उसपर जाय चढबैठा तब वह नायका इससे कहनेलगी कि हे वीरपुरुष तू किस कारण आयाहै ? यह बोला तेरे रूपकेकारण आयाहूं तो वह बोली जो तू कालीचौदशको मुझसे न मिले तो मैं तेरे साथ विवाह करूं तब राजा ने यह बात मानी तिसपर उस ने वचन लेकर राजा के साथ विवाह किया निदान जब अँधेरी चतुर्दशी आई तो तिसने कहा हे राजा आज तू मेरे निकट मत रह यह सुनकर राजा खड्ग हाथमें ले वहांसे उठा और एक किनारे जाय छिपकर देखता रहा जब आधीरात हुई तो तहां एक देव आया और उसने आतेही गले लगाया यह देखतेही राजा खड्ग हाथमें लेके धाया और कहा अरे राक्षस पापी तू मेरे सामने इस स्त्री के हाथ न लगा पहले मुझसे संग्रामकर और मुझे तभी तक भयथा जब तक तुझे न देखाथा अब मैं निर्भय हूं इतनी बात

कह वह खांड़ा निकाल उसके एक हाथ ऐसामारा कि रुंडसे मुंड अलगहो भूमिमें गिर तड़फनेलगा यह हाल देख वह बोली कि हे वीर पुरुष तूने यह उत्साह महाभारी कियाहै कि इसके भय से बचाई आप सरीखे शूरवीर पुरुष सब ठौर नहीं होते जैसे लाल सब पर्वतोंमें नहीं होते सतवंते पुरुष सब शहरों में नहींहोते चंदन हरेक वनमें नहीहोता हरेक हाथीके मस्तकमें मोती नहींहोते इससे आप बड़े अद्वितीय वीर हैं फिर राजा ने पूछा यह राक्षस किस लिये कृष्ण चतुर्दशीको तेरे पास आयाथा तब वह कहने लगी कि मेरे पिता का नाम विद्याधरहै तिसकी मैं पुत्रीहूं सुन्दरी मेरा नाम है और यह मुक़र्रर था कि मुझबिन मेरा बाप भोजन नहीं करता था एक दिन भोजनकी समय मैं घरमें न थी तब तो पिता ने क्रोधकर मुझे शाप दिया कि तुझे कालीचौदश को राक्षसस- तायाकरेगा यह सुन मैं बोली पिता शाप तो तुमने दिया पर अब मेरे ऊपर अनुग्रह करके इसकी अवधि भी कहिये तब कहा एक वीर पुरुष आकर उस राक्षसको मारेगा तिस शापसे तब तू छूटेगी सोही उस शापसे छूटी हूं अब मैं अपने पितासे प्रणाम करनेजा- ऊंगी तब राजा बोला जो तू मेरे किये उपकार को मानै तो एक वेर मेरे घर चल मेरा राज्य देखो फिर पितासे मिलना वह बोली बहुत अच्छा जो मरजी आप की फिर राजा उसे साथले अपनी राजधानी में आया तब नौबत बजने लगी और नगरमें खबर भई कि राजा आया तो घर २ बधाई मंगलाचार होनेलगे फिर तो त- माम नगरके मंगलामुखी आकर दरबारमें मुबारकबादी देनेआये तो राजाने बहुतसा दानदे विदा किये फिर कई दिनबाद वहबोली मैंअपने पिताके यहां जाऊंगी राजाने उदासहो कहा खुशी तु-

म्हारी जाओ तो राजाको उदास देख वह जानेसे रहगई तो कहा महाराज मैं न जाऊंगी फिर राजाने कहा कि किसवास्ते तैंनेजाना मौकूफ किया तब वह बोली कि अब मैं मनुष्यके आधीन होचुकी मेरा पिता गंधर्व है अब मै जाऊं तो मेरा आदर न करेगा यह सुन राजा बहुत प्रसन्नहुआ और लाखों रुपया दानपुण्य किया राजाके इस अहवालके सुनने से दीवान की छाती फटी और मरगया इतनी बातकह वेतालबोला हेराजन्! किस लिये वह मंत्री मरगया तब राजाने कहा कि उस मंत्रीने देखा कि राजा तो रात दिन ऐश असरत आनंद करने लगा निज राज्यकाजकी चिंता तजी प्रजा अनाथ हुई अब मेरा कहा कोई भी न मानेगा इसी चिंतासे वह मरगया। इति शुक्ल देवीसहाय कृत दृष्टांत प्रदीपिन्यां मिश्र निबंधे ८५ प्रदीपः॥

## ब्रह्महत्यादिकंपापं कृतमप्यकृतंतथा॥ समाक्रमेत्कथयितुस्तत्संसर्गीयतोहिसः १

ब्रह्महत्यादिक जो पापहै सो किया हो तथा न भी किया हो पर वह कहने वाले अर्थात् उस पाप को किया बतानेवाले को अवश्य ही लगता है इसपर दो दृष्टांत है जैसे नहीं करने पर वेताल बोला हे राजन् ( चूड़ापुर नाम ) नगर है वहां का राजा ( चूड़ामणि ) जिसके गुरुका नाम ( देवस्वामी ) और उसके बेटेकानाम ( हरिस्वामी ) वह कामदेवके समान सुन्दर और शास्त्रमें बृहस्पति के समानथा और धन में कुबेर के बराबर और वह एक ब्राह्मणकी बेटीको कि नाम जिसका ( लावण्यवती ) था वह उसे व्याह लाया उन दोनों में बहुत प्रीति भई। गरज एक

दिन गरमीके मौसममें रातके समय चौबारेकी छतपर दोनों सोते थे कि किसी प्रकार उसकी स्त्री के मुंहपर से ओढ़नी उतर गई और गंधर्व विमानमें बैठा उड़ाजाता था अचानक उसकी नजर इसपर पड़ी तो वह विमानको नीचे उतारलाया और उस सोती हुई को विमानपर रखले उड़ा कितनी देर पीछे वह ब्राह्मण भी सोतेसेउठा तो देखता क्या है कि स्त्री नही है तब घबराया और वहां से उठकर तमाम घरको ढूंढ़ा जब इसे वहांभी न मिली तो सारी नगरीकी गली२ और कूचा२ढूंढ़ता फिरा पर पता कहींनहीमिला फिर निज जी में कहने लगा कि कौन लेगया कहांगई गरज जब वश न चलसका तो आखिर लाचारहो अफ्सोसकरताहुआ घरकोआया और वहां उसे फिर दुबारा भी ढूंढ़ा और जब भी न पाया तब तो उसबिन सूना नजर आया तब बेचैनी और बेकली से व्याकुलहो हायप्राणप्यारी २ कर पुकारनेलगा फिर तो तिसके वियोगसे अति व्याकुलहुआ और गृहस्थी छोड़ वैराग्यले लँगोटी बांध विभूतमल मालाडालके नगर तजकर तीर्थयात्रा को निकला और नगर २ गांव २ तीर्थकरताहुआ एक नगर में दोपहरकेसमय पहुँचा जब भूख के मारे मरनेलगा तो ढाकके पत्तोंका दोनाबना हाथ में ले एक ब्राह्मण के घरजाय उससे कहा कि मुझे भोजन भिक्षादेओ गरज जब बेवश मनुष्य हो तब उसे धर्म जाते औ खातेपीते विचारनही बनता और निरादरहो जहांसे जो मिलता सोही खालेताहै-जब उस ब्राह्मण से इसने भिक्षामांगी तब उसने इससे दोनाले घरमेंजाय खीरसे भरलादिया यह उसदोनेको लिये तालाबके किनारेपर आया और वहां एक बड़का वृक्षथा उसकी जड़पर दोनारखकर सरोवर में मुँह हाथधोकर आया पीछे से उस

वृक्षकी जड़ में से एक कालानाग निकलकर उस दोने में गल से गरलनिकाल डालकरके चलागया तो वह दोना विषसे भरगयाथा इसे यह हाल मालूम न था और भूखभारीलगीहुईथी तो आतेही खीरखायी खातेही विषचढ़ा तो इसने उस ब्राह्मणसे आकर कहा कि तैंने मुझको विषदियाहै अब मैं मरूंगा, यह कह घूमकरगिरा और मरगया फिर उस ब्राह्मण ने इसे मुआदेख अपनी विवाहिता स्त्री को घरसे निकालदिई और कहा हेब्रह्महत्यारी तू यहां से जा इतनी बात कह वेतालबोला हेराजन्! इनमें से ब्रह्महत्याका पाप किसकोहुआ तब राजा बोला कि सर्प के मुख में तो विषहोताहीहै इससे उसे पाप नहीं है और उसब्राह्मणीने स्वामीकी आज्ञासे भिक्षा दीथी इससे उसे भी पाप नहीं है और ब्राह्मण ने उसे भूखा मरता समझकर भिक्षादीथी इससे उसेभी पापनहीं है और उसनेभी विना जाने खीरखाई इससे उसको भी पाप नहीं है निदान इनमें से कोई किसी को पापलगावै उसही के वह पापलगताहै इति शुक्लदेवीसहायकृत दृष्टांतप्रदीपिन्यां मिश्रनिबन्धे ८६ प्रदीपः ॥

तथा एक किसी वन में कोई राजर्षि तपस्याकरताथा वह सब का सन्मान करतारहताथा तो एकदिन अर्धरात्रि के समय में कोई विष्णुरूप अभ्यागत आय बोला मुझे भारी भूखलगी है कुछ है सो ला तो तिससमय राजा के मुखसे यही निकली कि भाई इससमय भोजनतैयार कहांधराहै सब खा पी कर सोगये मनुष्यकी तो क्या कहैं घोड़ों ने भी चरकर लीदकरदीहै अब तो यहीहै तब वह बोला लाव यहही ला तब तो तिस राजाने कुछ तो रिस और कुछ हँसी भी करके वह लीद उसकी तरफ फेंककरमारी तो वह धर्मराजकी पुरीमें जाय जमाहुई कुछ काल में राजा जब मरा और धर्मराजके

पुर मे गया तो तहां तिसकेलिये थाललगायेगये जिनमें नानाप्रकारके भोजन और जरा २ सी लीद भी परोसीभई तो तिस लीद को भी सब थालो में देखतेही राजा घिन घिन घिनाकर बोला कि यह लीद इस सब भोजन मे कैसे मिली है इसका क्या कारणहै तब वहांवाले बोले राजन् अपना कर्म सँभालले लीद भी तैने कभी किसी को दीहीहोगी इतना सुनतेही उसको वह बात यादआई तब तो हाय हाय कर पछितायके कहनेलगा कि सहजही के ऐसा करने में पाप पल्ले बँधने लगा ऐसे कह यह अवकाश विचार बोला कि जो मुझे चारघड़ी जिन्दगी और मिलजावे तो मैं इस पापसे निबटआऊं तब उनके कुछ मनमें आया तोइसकी चारघड़ी भर अवस्थाबढ़ादी तब तो तहांही फिर आया वहां ( राजाजी उठा २ ) लोग यों कहनेलगे और यह जी उठते ही प्रचण्डरूप होगया तो सब नौकरों को मार पीट निकाला फिर सवारीसजाय आज्ञाकी कि गुरूकी पुत्री बहुतसुन्दर है उससे प्रीतिकरनेके लिये चलैंगे तब तो शहर में बड़ाहीरौलाहुआ कि यह राजा जिया क्या यह तो मराहीभलाथा ऐसे राजा बिन हम सब बादसारेंगे उधर वह गुरुजी के घरजा पुत्री के चरणो में साष्टांग प्रणामकर और उसे पारितोषिकद्रव्यदे अशीषलेके फिर आय वैसे ही मरगया और वहां पहुँचा तो उसको पापी २ कहनेसे उसकी वह भोजनकी लीद सब पत्तलों से हटगई इससे पाप को किया कहनेवाले जनों को पाप लगताहै और करनेवाला शुद्धहोजाताहैइति दृष्टांत प्र० ८७प्र०॥

पातालेऽपिवसन्तंचचौरंराज्ञावशंनयेत् ॥
यथाकृत्वावशेच्चौरोराज्ञाशूलेऽवरोपितः १

तेजस्वी राजा पातालमें भी वसतेहुए चोरकोवशमें करलेताहै जैसे राजा करके वशमे किया चोर शूलीपर चढायागया दृष्टांत वेतालबोला हेराजन्! (चन्द्र हृदय) नामनगरहै वहांका (धरणीधर) राजा और उसकी नगरीमें (धर्मध्वज) नाम सेठथा और उसकी वेटीका (शोभनवती) नाम था वह अतिसुन्दरी थी यौवन उसका दिन २ वढताथा और रूप उसका प्रकाशमान होताथा इत्तिफाकन् उस नगरी में चोरी होनेलगी जब चोरोने नगर मे बड़ी धूम मचाई तव सव इकट्ठे होकर राजा के पास जाय बोले महाराज चोरी वहुत होनेलगी अव इस नगरमें रहनही सकते तव राजाने बहुतसे लोग चौकी पहरेपर बैठाये तव भी चोरी होतीहीरही तव तो फिर वे सारे साहूकार जाय पुकारे तो राजाने कहा मैं आप जाकर वन्दोवस्त करूंगा इतनाकह उनको तो विदाकिये और राजा आधीरातके समय अकेला ढालतलवार लिये निकल चला तो आगे जाय देखा तो चोर चलाजाता है राजा उसे मिला और पूछा तो वह बोला तू कौनहै तो राजाने कहा चोरहूं चोरी करने जाताहूं तव तो वह प्रसन्नहो बोला आओ दोनो मिलके चोरी करें यह कहके चले और एक महलमे पैठे और वहां चोरीकर मालमताले नगरके वाहर निकल एक कुयें के पास जाय उसमें उतर कर राजाको दरवाजेपर खड़ा करके वह चोर पाताल लोकमें पैठ गया इतने में उस मकानमें से एक दासी निकसी उसने राजासे कहा हे पुरुष! तू कौनहै इस दुष्टके साथ कैसे चलाआया अव तुझसे भगाजावे तो भग नही वह आतेही तुझे मारदेगा राजाने कहा मुझे राह मालूम न रही तू बताव तवतो तिसने उसे राहबताई तव राजा निज महलमे आया फिर दूसरे दिन राजाने सव निज

सेनाले उसी कुयेंकी राहमे पाताल लोकमें जाकर चोरका तमाम घर वाहर घेरलिया तो उस चोरने किसी और राहसे निकल उस नगरी के मालिक ( देव ) से कहा कि एक राजा मेरे मारनेको आया है अब मेरी सहायता करो नहीं तुम्हारी पुरी से भगजा- वेंगे यह सुन प्रसन्नहो उस राक्षस ने कहा तैंने मेरे भोजन का सामान किया है में तुझपर वहुत प्रसन्नहूं यह कह के चला और जहां राजा कटक लिये हवेली को घेरे खड़ा था वहां वह आय आदमी और घोड़ों को खानेलगा तो राजा उसराक्षस की सूरत को देखकर भगा और भी जिन लोगों से भागागया वे २ तो वचे और वाक़ियों को देवने खाया गरज राजा अकेला भागा जाता था कि चोर ने उसे मरवाने का विचार करके सामने आय लल- कारा कि तू अरे राजपूत होकर लड़ाई से भागाजाता है ? यह सुनतेही राजा फिर खड़ाहुआ और दोनों सन्मुखहो युद्ध करने लगे निदान राजा उसे वशाकर उसे वांध नगर में ले आया फिर उसको नहवाय धुलवाय अच्छे २ वस्त्र पहिराय एक ऊंटपर बैठा कर ढँढोरिया साथदेकर सारी नगरी के फेरादेनेको भेजा फिर उसे शूलीपर चढ़ादेनेका हुक्म दिया इसमें शहरके लोगों मे से जो २ उसे देखते सो २ यही कहतेथे कि इसी चोरने आम नगरको लूटा है अब इसने निज कर्म का फल पायाहै और वह चोर जब कि उस धर्मध्वज सेठकीहवेलीके नीचेसे गयाथा तवतिससेठकी वेटीने ढँढोरेकी आवाजसुन निज दासीको भेजकर पूछा कि यहकाहेकी डौंड़ी वजती है तो वहबोली कि वह चोरथा सो शूलीपर चढ़ाया जाता है यह सुनके वहभी देखने को दौड़ी और चोर का रूप देखतेही मोहित होगई और अपने वापसे आकरकहा कि तुम इस

समय राजाके पास जावो और उसचोरको छुटाओ। सेठबोला कि जिस चोरने राजाका सब शहर लूटाहै उसे वह कैसे छोड़ेगा जिसे केलिये उस राजाका कटकभी कटगया है फिर वह बोली जो वह तुम्हारे सर्वस्व दियेपर भी छूटै तो उसे छुटाओ। यह सुन सेठने राजासे जाकर कहा कि महाराज! आप मुझसे पांचलाख रुपये लेके उस चोरको छोड़ दीजिये तब राजाने कहा इस चोरने सारा शहर लूटाहै और इसके सबबसे तमाम लश्कर गारत होगया इसे मैं किसी तरह से भी नहीं छोडूंगा जब राजाने उसकी बात न मानी तब लाचार फिर यह घरको आया और अपनी बेटीसे कहा कि जितना कुछ कहने का धर्मथा उतनाही मैंने कहा पर उसने एक न मानी इतनी देरमें चोरको नगरफेरी दिखाकर शूलीकेपास लाय खड़ा किया और चोरने उस बनियेंकी लड़कीका जो हाल सुना तो पहिले खिलखिलाकर हँसा और फिर रोया। लोगोंने उसे शूलीपर खैंचलिया और वह बनियें की बेटी उसके मरनेकी खबर पाकर उसी जगह उसके पासआई और चिताचुनी और उसमें बैठ चोरको शूली से उतारकर उसका शिर गोद में रखकर के जलनेको बैठी चाहे कि इतने में वहां एक देवी का मन्दिरथा उसमें से देवीजी तुरन्त निकलकर बोली हे पुत्री मैं तुझपर प्रसन्न भईहूं वरमांग तो वह बोली माता जो मुझपर आप प्रसन्न भई हो तो पहिले इस चोरको जीवदानदेओ तो देवीजी बोलीं तथास्तु ऐसेहीहोवे, ऐसा कह पातालसे अमृतलाय छिड़कके उसे जिवाया इतनी कथा कह वेताल बोला हे राजन्! बतावो वह चोर पहिले किस कारण हँसा फिर किस कारण से रोया? राजाने कहा जिस कारण वह हँसा सो भी वाइस में जानताहूं और जैसे वह

रोया सो भी मालूमहै। हे वेताल! उस चोरने निज जी में विचारा कि यह जो मेरे लिये राजा को अपना सर्वस्वदेती है तो मैं इसका क्या उपकार करूं यह समझकर तो वह रोया और फिर मन में विचारा कि मरनेके समय उसने मुझसे ऐसी प्रीति किया कि निज जीवकोभी कुछ न समझा यह भगवान्‌की गति जानी नहीं जाती है कि कुलक्षणोंको लक्ष्मी दे, कुलहीन को विद्या दे मूर्खको सुन्दर स्त्री दे और पर्वतपर वर्षाकरे, यह विचारकरके हँसा॥

इतिश्री मच्छुक्क देवीसहायकृतायां दृष्टांतप्रदीपिन्यां
मिश्र निबंधे ८८ प्रदीपः॥

## व्यभिचारात्प्रजातोपि तुनाम्नैवगण्यते॥ विवाहादग्निसाक्षित्वाद्यथा वृत्तांद्विजेऽभवत्॥

किसीकी व्यभिचारसे भी उत्पत्तिहो पर वह पिताहीके नामसे गिनाजाताहै क्योंकि पिताके साथ अग्निकी साक्षीसे विवाहहुआ इससे दृष्टांत जैसे किसी ब्राह्मण के विषय में वृत्तान्त बीता वेताल बोला हे राजन्! (कुसुमावती) नाम नगरी है वहांका सुविचार नाम राजा जिसकी बेटीका नाम (चन्द्रप्रभा) था जब वह व्याहनेयोग्यहुई तो एकदिन वसंतऋतुमें सखियोंको साथले बाग में गई वहां एकब्राह्मणका लड़का बीसबरसका जिसका नाम मनस्वी था एक वृक्षके नीचे सोताथा तो राजकन्या भी सैर करती वहां जहां वह सोताथा आई तब वह भी हड़बड़ाहट से उठ बैठा और दोनों की नजर मिली तो कामातुर हो मूर्च्छा खाय गिरे तब राजकन्याको तो हाथों हाथ सखियां लिवालेगई और वह लड़का वहांहीं पड़ारहा तब उस अरसे में वहां दो ब्राह्मण (शशी) और

( मूलदेव ) ये आनिकले तो उसे वेहोशपड़ा देखके कहा हेशशी यह ऐसा बेसुधि कैसे पड़ा है मूलदेव बोला इसके नायका ने निजभौंहकी कमान बना नयनोंके तीर मारे हैं तो मूलदेव बोला भाई इसे उठाया चाहिये तब उस शशी ने कहा तुम्हें उठाने से क्या प्रयोजनहै तब तो तिसने शशीका कहना नहीं माना और उसे पानी छिड़ककर उठाया और पूछा तेरी ऐसी दशा कैसे हुई है वह ब्राह्मण बोला क्या कहूं कुछ हाल कहा नहीं जाता परदुःख जिसके आगे कहना जो दूरभी करदेवे नहीं तो कहने से क्या है वह बोला भला तू अपनी पीर हमारे आगे कहु तेराउपाय किया जावेगा तब वह बोला अभी राजकन्या सखियों को साथ लिये यहां आई उसके देखने से मेरी यह दशाहुई है अब जो वह मिलेगी तो मेरा जीवनहै नहीं उस बिन प्राणजायँगे तब वह बोला तू हमारे स्थानपर चल वहां हम तेरा यत्नकरेंगे यह कह उसे घर लेगया और वहां दो गुटके बनाय एक गुटका उस ब्राह्मणको दे करकहा जब तू इसे मुंहमें रखलेगा तो बारहवर्ष की कन्या होजावेगा और मुँहसे निकालतेही फिर मर्दही बनजावेगा यह सुनतेही उसने निज मुखमें रक्खा तो वह बारह वरसकी कन्याहोगया और दूसरे गुटकेको उस ब्राह्मणने रक्खा तो वह आप अस्सी वर्ष का बुड्ढा बनगया और ये दोनों उसकन्या के लिये राजाके पासगये तो राजाने देखतेही आसन डालदिया तब ब्राह्मण ने एकश्लोक पढ़कर राजाको आशीर्वाद दिया उसका आशय यहहै कि जिस भगवान्की शोभा त्रिलोकी में फैलरही और जिसने बामन बन राजा बलिको छला और जिसने बानर साथलेकर समुद्रका पुल बांधा जिसने पर्वत हाथपर रख इन्द्र के वज्रसे ग्वालबाल बचाये

सोही वासुदेव तुम्हारी रक्षाकरें यह सुन राजा ने प्रसन्न हो पूछा महाराज ! आप कहां से सिधारेहो तब मूलदेव ब्राह्मणबोला कि गंगापारसे आयाहूं और वहांहीं मेरा घरहै और मैं अपने बेटेकी बहू को लेनेगया था पीछे मेरे गांव में भागपड़ी सो मैं नहीं जानता कि ब्राह्मणी और मेरा पुत्र कहां गया और अब मैं उन्हें ढूंढ़नेको जाताहूं इससे श्रेष्ठ यह है कि आपके पास इसको छोड़ जाताहूं मैंन आऊं तब तक इसे आप यत्नसे रखना । यहबात ब्राह्मणकी सुन राजा निजजी में चिंता करनेलगा कि इस सुन्दर तरुणी स्त्रीको किसतरह से रक्खूं और जो न रक्खूं तो यह ब्राह्मण शापदेगा तो मेराराज्य भंग होजायगा यह विचार राजाबोला महाराज जो आज्ञा करी सो मंजूरहै फिर राजा ने निज पुत्री को बुलाकर कहा बेटी इसब्राह्मणके बेटेकी बहूको अपनेपास लेजाके बहुत यत्नसे रक्खो और सोते जागते खाते पीते अपने पास से जुदी मतकीजो यहसुन राजकन्या उसका हाथ पकड़कर अपने महलमें लेगई और रातके समय दोनों एक सेजपरसोई और आपसमें बातें करनेलगीं तो ब्राह्मणके बेटेकी बहूबोली हे राजकन्या तू ऐसी दुर्बल किस दुःखसे होरही है तब वह कहनेलगी कि बहन एक दिन वसंतऋतुमें सखी साथले बागमें मैं सैर करने को गयी थी तो वहां एक कामदेवके समान सुन्दर ब्राह्मणका पुत्र देखा और उसकी मेरी चार२ नजरेंहुई उधर वह बेहोशहुआ और इधर मैंभी बेसुधिहुई तो मुझको तो सखियां घरलेआई और उस का हाल मालूम नहीं क्या हुआ और मैं नाम ठाम उसका नहीं जानती हूं आंखों में सूरत वही समारही है और तभीसे मुझे खाने पीने की भी कुछ रुचि नहीं रही है इस पीरसे शरीर मेरा दिन २ दुर्बलहो-

नेलगा है यह सुन वह ब्राह्मणकी वहू बोली जो तुझे मैं उस से मिलादेऊं तो तू मुझे क्या देवे तब वह बोली कि मैं तेरी दासीहो रहूंगी यहसुन वह गुटका निकाल फिर पुरुषहोगया और यहदेख कर शरमाई तब उस ब्राह्मणके लड़केने गंधर्व विवाहकी रीतिसे उसे व्याही और हमेशा उसीतरह रातकोमर्द और दिनको औरत बना रहता निदान छै महीने पीछे राजकन्या के गर्भ रहा फिर एक दिन राजा निज कुटुंब समेत दीवानकेघर शादीमेंगया वहां मंत्रीके बेटेने उसस्त्री वेषधारी ब्राह्मणके बेटेको देखा देखतेहीमोहित होगया और अपने एक मित्र के पास आकर कहने लगा कि जो यह नारी मुझे नहीं मिलेगी तो मैं अपने प्राणतजूंगा इस अरसे में राजा भोजनकर कुनबे समेत अपने घरआया पर मंत्री के पुत्रकी विरहकी आग से निपट कठिन अवस्था भई और अन्न पानी छोड़दिया यह देख उसके मित्रने मंत्रीसे जाकहा और दीवानने यह हालदेख राजासे जायकहा महाराज उस ब्राह्मण के बेटेकी वहूकी प्रीतिमे मेरे बेटेकी बुरी हालतहोरही है खानापीना छोड़दिया जो आप कृपा कर ब्राह्मण के बेटेकी वहूको देदेवो तो उसकी जानबचै यह सुन राजा क्रोधकर बोला अरे मूर्ख ! ऐसी अनीति करना राजाओं का धर्म नहीं है एक मनुष्य की चीज स्त्री की जाति जो सौंपगया फिर उसकी आज्ञा बिन दूसरे को देनी कैसे उचित है ऐसा कभी नहीं होसक्ता यह सुन दीवान निराश हो अपने घर आया पर फिर उस पुत्रका दुःख देखकर उसनेभी अन्नजल छोड़दिया जब तीनदिन बिन दाने पानीबीता तब सब कारबारियों ने इकट्ठेहो राजा से जा अर्जकियी कि महाराज ! मंत्रीका पुत्र अब तंगहोरहाहै और उसके मरनेपर मंत्रीभी

नहींरहैगा इससे श्रेष्ठ यह है कि उस ब्राह्मणकी बहू को मंत्रीके बेटे को ब्याहकर निज राज्यकी रक्षाकरिये और कदाचित वह आवे तो तिसे धन गांव देदीजियेगा। जो इसपर न राजीहो तो उसके बेटेको और ब्याहकर विदाकरदीजियेगा यहबात सुन राजाने उस ब्राह्मणकी बहू को बुलाकर कहा तू मेरे मंत्री के पुत्रके पासजा तो वह बोली स्त्रीका धर्म नष्टहोताहै अति रूपवतीहोनेसे और ब्राह्मण का धर्म राजाकी सेवाकरनेसे जाताहै और गऊ खराबहोती हैं दूरकी चराईसे और अधर्महोने से धन जाताहै इतना कह वह बहू फिर बोली महाराज जो तुम मुझे मंत्रीके बेटेको देनाचाहते हो तो उस से यह बात ठहरादीजिये कि जो मैं उससेकहूं वह सोहीकरै तब मैं उसके घरजाऊं राजाबोला कहो कि वह क्या करे तो उसने कहा मैं ब्राह्मणी हूं और वह क्षत्रिय है इससे श्रेष्ठ यह है कि वह पहिले तीर्थ-यात्राकरआवे तब मैं उसके घरजाऊं यह बातसुन राजा ने मंत्रीके बेटे को बुलाकेकहा कि तू तीर्थयात्राकरआवो तब तुझको मिलेगी तब उसने सुन कहा वह मेरे घरजारहै और मैं तीर्थयात्रा को जा-ताहूं यह बात राजा ने उस ब्राह्मणी से कही कि तू उसके घरजारहै तब वह जावे तब वह वहां जारही तबतो तिसने निज स्त्री से कहा कि तुम दोनों अच्छीतरह प्रेमपूर्वकसे एकजगह रहना और विराने घर कभी न जाना इतनी सीखदे वह तो चलागया और उधर उसकी बहू (सौभाग्य सुन्दरी) उसका नाम था वह ब्राह्मणकी बहू को साथले एक बिछौनेपरसोयी तो बातें इधर उधरकी होनेलगीं कितनी देर में उस दीवानकी पुत्रवधू ने यह कहा हे सखी ! इससमय मुझको कामदेव ने ऐसा सतायाहै कि उसके मारे मैं मरीजातीहूं मेरा मत-लब कैसे सिद्धहोवे तो वह बोली कि जो जीकी चाहनामिटजावे

तोतू मुझे क्या देवे तो वह बोली मैं तेरी आज्ञाकारिणी दासी बनी रहूंगी तब तो तिसने निज मुख से वह गुटका निकाला तो तुर्त मर्द होगया हमेशह इसीतरह रात को पुरुष और दिन को नारी बनी रहती फिर तो तिन दोनों में बड़ाही प्रीतिबढ़ी इसीतरहसे छः म-हीनेबीते और मंत्रीका पुत्र भी आपहुँचा तो लोग सुन मंगलाचार करनेलगे इधर ब्राह्मणकी बहू ने मुँहसे गुटका निकाल खिड़कीकी राहसे निकल चलदिया फिर कुछ काल में मूलदेव ब्राह्मणके पास जिससे वह गुटका लिया था जापहुँचा और उससे सब वृत्तान्त कहा उसने सब बात सुन वह गुटका उससे ले उस शशी ब्राह्मणको साथलिया और वे दोनों गुटके अपने २ मुखमें रख एक तो बुड्ढा बना और एक उसका लड़का बना दोनों राजा के पास गये राजा ने देखतेही दण्डवत् प्रणामकर आसनदे बैठाये ये भी राजा को अशीष देके बैठगये और उसकी कुशल क्षेम पूछी फिर राजा ने इनसे कहा कि इतने दिन कहांलगे ब्राह्मण बोला महाराज! मैं इसीपुत्र को ढूंढनेगयाथा इसे खोजकर आपके पासलेआयाहूं अब इसकी बहू को दे देओ तो अपने घरलेकरजाऊं तब राजाने ला-चारहो हाथजोड़ सब वृत्तान्त कहा तो तब ब्राह्मण अति प्रचंडहो क्रोधकर बोला कि यह कैसा व्यवहार है जो मेरे बेटेकी बहू को किसी और को देदी अच्छा जो तुमने किया इसका शापलेओ तब राजा बोला हे देवता! तुम क्रोधमतकरो जो कहो सो करूं तब ब्राह्मण बोला जो तू मेरे शापसे डरताहै तो तू अपनी पुत्री मेरे बेटे को व्याहदे यह सुन राजा ने ज्योतिषी को बुलाय शुभलग्न मुहूर्त्तठहराकर उसके साथ निज पुत्रीका व्याह विधिसे किया यह व्याहकर दान दहेज सहित उसे लिये आताथा तो यह खबरसुन

वह मनस्वी ब्राह्मण भी आया और उससे झगड़ा करनेलगा कि मेरी स्त्री है मुझेदे तो तिस शशी ब्राह्मण ने कहा मैं अभी इसे पांच पंचों में व्याहकर लायाहूं यह मेरी है फिर उसने कहा इसमें तो मेरा गर्भरहचुकाहै तेरी किसतरह है ऐसे आपस में विरोधहोनेलगा तब तो मूलदेव ने इन दोनों को बहुत समझाया पर उनमेंसे कोई सा भी न माना इतनी कथा कहके वेताल बोला हे राजन् ! वह स्त्री किसकीहुई तो राजा ने कहा वह स्त्री शशी नाम ब्राह्मणकी भई तब वेताल बोला गर्भ तो तिस ब्राह्मणकारहा इससे उसकी भार्य्या हुई तब राजाने कहा कि उसब्राह्मणसे गर्भरहा तिसको तो किसीने नहींजाना और वह उसेपांचपंचोंमें व्याहकरलाया इससे उसहीकी स्त्रीहुई ॥इतिश्रीमच्छुक्लदेवीसहायकृतदृष्टांतप्रदीपिन्यां८६प्रदीपः॥

## ददातिदुस्त्यजान्प्राणान् परार्थेदययायुतः ॥
## ददौसशंखचूडार्थे प्राणाञ्जीमूतवाहनः १

जो जन दयासहित होता वह पर उपकारके लिये निज प्राण भी देदेता है जैसे राजपुत्र (जीमूतवाहन) ने शंखचूड़ सर्प के जीव बचाने को निज प्राण दिये दृष्टान्त । वेताल बोला हे राजन् हिमाचल नाम पर्वत तहां गन्धर्वों का नगर है और वहां का राजा (जीमूतकेतु) राज्य करता था उसने निज पुत्र प्राप्ति के लिये कल्पवृक्ष का आराधन किया तो तिसपर प्रसन्न कल्पवृक्ष बोला वर मांग जो तू चाहै सोही होगा तो राजाने कहा मुझेपुत्र दो तब तिसने (तथास्तु) कहा फिर कितनेदिनमें राजाके एकपुत्र हुआ तो तिसकी बड़ीही खुशीहुई अच्छे२ ब्राह्मण बुलाय बुलाय बहुतसाधन दे उसका नामकरण कराया और ब्राह्मणों ने उसका

नाम (जीमूतवाहन) धरा जब वह पांच वर्षकाहुआ तो शिवजी की पूजा करनेलगा और सब शास्त्रपढ़के बड़ाही परिडत ज्ञानी ध्यानी साहसी शूरवीरहुआ। उससमय उसके बराबर धर्मात्माकोई न था और जितने उसके राज्यमें मनुष्यथे वे अपने २ धर्म में परायणथे जब वह जवानहुआ तो उसने भी कल्पवृक्षकी बहुतसी सेवाकी तो कल्पवृक्षने अति प्रसन्नहोके कहा कि जिसबातकी तुझे चाहनाहै सोही मैं तुझे देऊंगा तो वह बोला जो आप प्रसन्नहुए हैं तो मेरी राज्यमें जितने मनुष्यहैं उनसबका दरिद्र दूरकरदीजिये और वे सब बराबर धनवान्होजावें जब कल्पवृक्षने ऐसाही बरदिया तब सबलोग दौलतसे ऐसे आसूदा हुये कि कोई किसीका कहना नहीं मानतेथे और न कोई काम किसीका करताथा जब सबलोग ऐसे होगये तो सबों ने ऐसाभी विचारकरलिया कि वे बाप बेटे तो सेवा पूजामें जम बैठे कोई उनका कहना नहीं मानताहै तो अब सब राज्य हम हाथमें लेलेवें तब इन्होंने राजाको गाफिलदेख फौज लेके आय घेरा जब ब्यौरा इसको मालूम हुआ तो पुत्र से कहने लगा कि क्याकरें तो राजकुमार बोला आप विराजिये मैं धर्म के प्रतापसे अभी इनको मारेआताहूं तो राजानेकहा हेपुत्र यह शरीर अनित्यहै और धन प्राण अस्थिरहै और मनुष्य जब जन्मलेता है तो तिसकी मृत्युभी जन्मलेलेती है इससे अब सबराज्य काज धर्मसे धारणकीजिये ऐसे इसशरीरके कारण ऐसाभारी कुकर्मकरना उचित नही है क्योंकि राजा युधिष्ठिरभी भारीभारत युद्धकरके पीछे पछतायेथे इतना सुन पुत्रने कहा अच्छा राज्य ज्योतिषीको दीजिये और हम तुम तपकरने वनमें चलें यहविचार वे निज भाई बंधुओं को बुलाय उनको राज्य काज सँभलाय आप बाप बेटे दोनों म-

लयाचल पर्वतपर गये और वहां जाय कुटी बनाकर रहनेलगे तो जीमूतवाहनकी एकऋषिके पुत्रसे दोस्तीभई एक दिन दोनों उस पर्वतपरसैरकरनेगये तो तहां एककोई देवीकामंदिर नजरआया वहां उसमें एकराजाकी कन्या वीण हाथमें लिये गान कररहीथी तो तहां जीमूतवाहन और उस राजकन्याकी चार २ नजरेंहुई तो दोनों की लगन लगगई फिर राजकन्या तो लाजकी मारी अपने घरको सिधारी और इधर यहभी ऋषि के पुत्रकी शरमके मारे घरआया वह रातदिन दोनों गुलउजारोंको बहुतही कठिन वीती प्रभातहोतेही राजकन्या बीण ले देवी के मंदिरको गई और उधर वह भी सिधारा और उसकी सखीसे पूछा कि किसकी कन्याहै तब सखी ने कहा यह (मलयकेतु) राजाकी पुत्री है (मलयावती) नाम है अभी कुमारीही है यहकह कर इनसे पूछा कहो प्रिय पुरुष आप कहांसे आयेहो तो यह कहनेलगा कि विद्याधरोंका राजा (जीमूतकेतु) है उसका पुत्रहूं (जीमूतवाहन) नाम है राजभंगहोने से हम दोनों पिता सुत तपस्या करनेको यहां आये हैं फिर यहबात सखीने सुन उसराजकन्यासे कहा यहसुन वह बहुत दुःख पाय अपने घरको आई और रातको चिंताकर सोरही इसकी ऐसी दशा देख उससखीने सारी बात उसकी मा से कही वह सुनतेही राजा के पासजाय बोली महाराज आपकी कन्या वरके योग्यहुई अब वर इसका क्यों नहीं देखते हो यहसुन राजा ने निज पुत्रसे कहा तुम इसके लिये सुन्दर वरदेखो तो वह बोला महाराज गंधर्वों का राजा (जीमूतकेतु) तिसकापुत्र (जीमूतवाहन) है वे राज्य तज दोनों पिता पुत्र यहां आये सुने हैं यहसुन मलयकेतु राजा ने कहा यहकन्या जीमूतवाहनकोही व्याहौंगा इतना कह बेटेको

आज्ञादी कि जीमूतवाहनको उसके पितासे कहकर यहां लेआवो यहहुक्म पाय उनके पासगया और उसके पितासे कहा कि अपने पुत्रको हमारे साथ करदीजिये हमारे पिताने कन्यादान देनेको बुलाया है यहसुन राजा जीमूतकेतुने निज पुत्रकोसाथ करदिया तो वह यहांआया और जब विवाह होचुका तब दुलहनको और मित्रावसु उसशालेको लेकर आया फिर तो तीनोंने राजाको दंडवत् प्रणामकरी तो तिनको राजानेभी अशीषदी वह दिन तो योंही गुजरा पर रातहोतेही चावसे दोनों ने मिल आनंद किया फिर प्रभातहोतेही दोनों राजकुमार उस मलयाचल की सैरको चले तो तहां जीमूतवाहनने देखा कि एकसपेदढेर ऊंचासा लगा है तो तिसने उसशाले से पूछा कि यह धोलाढेर कैसा देखपड़ता है वह बोला पाताल लोकसे करोड़ों नागकुमार आतेहै और गरुड़जी आकर तिनको भक्षण करते है यह उन्हीं के हाड़ोंका ढेर लगाहै यह सुन जीमूतवाहन ने निज शाले से कहा मित्र तुम जाकर भोजनकरो मैं इससमय नित्य नियम करताहूं मेरी पूजाका अब वक्तहै यह सुन वह तो गया और जीमूतवाहन आगेको जो बढ़ा तो अचानक रोनेकी आवाजआई तो उसही को सुन धुन बांधकर चला २ वहां पहुंचा तो देखाकि एक बुढिया दुःखसे व्याकुलभई रोती है उसके पासजा रोनेका कारण पूछा तो वह बोली कि शंखचूड़ नाम मेरा बेटा है तिसकी आज बारी है उसे गरुड़ आकर खाजावेगा इससे रोतीहूं तब बोला माता मत रोवै मैं तेरे पुत्रके बदले अपनी जानदेदेऊंगा बुढ़िया बोली बेटा ऐसा मत कीजियो तूही मेरा शंखचूड़है यह कहतीथी कि इतनेमें शंखचूड़ आनपहुँचा और उसनेसुनकेकहा महाराज मुझसे दरिद्री तो बहुत

पैदाहोते हैं और मरते हैं पर, आप सरीखे धर्मात्मा दयावान् इस संसारमें घड़ी २ में पैदा नहीहोते हैं इससे मेरे पलटे अपने प्राण न दीजिये क्योंकि आपके जीतेरहनेसे लाखो आदमियोंका उपकारहोगा और मेरा मरना जीना बराबरहै तब जीमूतवाहन बोला कि यह सत्पुरुषोंका धर्म नहीहै जो मुँहसे कहकर न करें तुम जहां से आये वहांही जाव यह सुन शंखचूड़ तो देवी के दर्शन को गया और गरुड़जी आकाश से उतरे सो कैसेहैं कि पांव तो तिनके चार २ बांस बराबरहैं और ताड़सी लम्बी चोच पहाड़के समान पेट फाटककी मानिन्द आंखें और घटासे पर ऐसे उसने यकायक एक साथही राजापर चोंचपसारी और राजापर दौड़ा तब पहिले तो राजपुत्र ने अपने तई बचाया फिर दूसरी बेर वह चोच में रख इसको लेउड़ा और चक्कर मारनेलगा इतनेमें एक बाजूबंध जिसपर राजकुमारका नाम खुदाथा वह खुलकर राजकन्या के संमुखगिरा वह उसको देख पछाड़खा गिरी जब एक घड़ी बाद चेतहुआ तो तिसने सब वृत्तान्त अपने मा बाप से कहला भेजा वे यह विपत्ति सुनकर आये और वह गहना रुधिरभरा देख रोये फिर तो तीनों मनुष्य ढूंढने को निकले तो तिन्हें राह में वह शंखचूड़ भी मिला तो तिन्हें बैठाकर अकेला वहांगया जहां राजकुमार को देखा था और देख कर पुकारनेलगा हे गरुड़ हे गरुड़ यह तेरा भक्ष्य नही है शंखचूड़ तो मेरा नाम है मैंही तेरा भक्ष्य हूं यह सुन गरुड़ घबड़ा कर गिरा और जीमें शोचनेलगा कि इस ब्राह्मण वा क्षत्रीको सताया यह मैंने क्या कुकर्मकिया फिर राजपुत्र से कहा हे पुरुष सच कहु तू किसलिये जानदेताहै राजकुमार बोला हे गरुड़जी जो वृक्ष छाया तो औरोंके ऊपरकरते हैं और आप धूप में रहतेहैं और पर

उपकार वास्तेही फलते फूलतेहैं आखिर उनका काठभी काम आता है इससे सत्पुरुषोंकाभी यहीधर्म है जो यह देह किसीके काम में न आवे तो फिर इससे क्या प्रयोजन है जैसे जन ज्यों २ चन्दन घिसते त्यों२ दूनी सुगन्ध आतीहै और गन्नेको ज्यों २ छील२ काट२ टुकड़ेकरतेहैं त्यों२अधिक स्वाददेताहै औरकंचनको ज्यों२जलाते हैं त्यों २ अतिसुन्दरहोताहै ऐसेही उत्तम जो,जन हैं वे प्राणजाने पर भी निज स्वभाव को नहीं छोड़ते है उनको किसीने भला कहा तो क्या और बुरा कहा तो क्या है दौलतहुई तो क्या है और न हुई तो क्या? जो अब मरे तो क्या है और फिर मरे तो क्या है जो जन न्यायकी राहमें चलते है और राहमें पांव नहीदेते वे स्वर्गपाते हैं और जिस शरीर से कुछ उपकार न हो उसका जीना निष्फल होताहै और जिनका जीवन बिराने अर्थ है उन्हीका जीवन सफल है योंतो कौआ कुत्ता भी अपना जी जिवाताहै जो ब्राह्मण गौ मित्र स्त्रीके खातिर जीवदेदेते हैं सो निश्चयस्वर्गवासपाते हैं तवतो तिसके वचनसुन गरुड़जी बोले जगमें सव जीव जानकी रक्षाकरतेहैं पर अपना जीव दे दूसरेका जीव बचानेवाले बिरलेहीहैं यह कह कहा हम तेरे साहसपर प्रसन्नहुये हैं अब वरमांग यहसुन जीमूतवाहन ने कहा हे देव अब तो आप प्रसन्नहुयेहो तो अबसे नागोंको मत खाना और जो खाये है उन्हे जिलादो यह सुन गरुड़जी ने जा पाताल से अमृतलाय उस ढेरीपर छिड़का तब सब नाग जागउठे और इससे कहा हे जीमूत मेरे प्रसाद से तेरा गयाभया राज्यभी तुझको फिर मिलेगा यह कह गरुड़जी निज स्थान पधारे और शंखचूड़ अपने घरकोगया और जीमूतवाहन वहांसेचला तो राह में उसका श्वशुर और सास और स्त्री मिली फिर उस समेत अपने

वापके पास आया और यह हाल सुनके उसके चचा और चचेरे भाई और भी भाई लोग सभी लोग मिलके आये और पांवों पड़ तिन्हें लेजाय तिनके राज्यपर बैठाया इतनी कथा कह वेताल ने पूछा हे राजन्! इनमेंसे किसका सत अधिकहुआ तो राजा बोला शंखचूड़ का वेताल ने कहा कैसे राजा बोला कि गयाहुआ भी शंखचूड़ फिर जीवदेने को आया और गरुड़के खाने से इसे बचाया फिर वेताल बोला जिसने पराये लिये जान दियी उसका सत अधिक क्यों न हुआ राजा बोला जीमूतवाहन जातिका क्षत्री है उसे तो जी देने का अभ्यासहोरहाहै औरइससे उसको जीवदेना कुछ कठिन नहीं था और उसे कठिन था इति दृ० प्र० मि० नि० ६० प्र०॥

## राजामंत्रीसतीह्येषु त्रिषुप्रज्वलितेषुच ॥
## सत्वाधिक्यंभवेद्राज्ञोमंत्र्यर्थेजीवदानतः १

राजा रानी मंत्री इनतीनोंके किसी नियमसे सतीहोने अग्नि में जलजाने पर राजाका सत अधिकहोता है क्योंकि उसने मंत्री के काज निज जानदई,मंत्रीका तो यह धर्महीं है दृष्टांत वेताल बोला हे राजा (चंद्रशेखर) नाम नगरहै वहांका रहनेवाला रत्नदत्त सेठथा उसके एकवेटी थी उसकानाम उन्मादिनीथा जब वह यौवनवतीहुई तब उसके वापने वहांके राजासे जाकरकहा महाराजमेरे घरमें एक कन्या जन्मी है जो आपको उसकी चाहदो तो व्याह लीजिये नहीं मैं और किसीको देऊं यहसुन राजाने तीनप्राचीन प्रधानपुरुषों को बुलाके कहा कि तुम उस सेठकी पुत्रीके जाकर लक्षण देखआओ वे सुन सेठके घरगये और उस लड़कीका रूप देखकर मोहित होगये उसका हुस्न ऐसाथा मानों अँधेरे घरका

उजाला आंखे मृगकीसी, चोटी नागिनकीसी, भौंहें कमानसी नाक कीरकीसी, वतीसी दांतोंकी मोतीकीसी लड़, होंठ कुंदुरू के मानिंद, गला कपोतकासा, कमरचीतेकीसी, हाथपांव कोमल कमलकेसे, चंदमुखी चंपावर्णी, कोकिलवैनी मृगनैनी, जिसके रूप को देख इन्द्रकी अप्सराभी मोहितहो लजायजाय इस प्रकारसेसब सुलक्षणभरी सुन्दरी, रूपभरी को निहारहार लाचारहो विचार किया कि राजा जो इसको व्याहलेगा तो फिर इसहीके आधीन हो रहैगा तो उसे राजकाजकी कुछभी सुधि नहीं रहैगी यह विचार कर राजासे कहा कि महाराज ! वह तो कुलक्षणवती हैं आपके योग्य नहीं यह सुनकर फिर राजाने उस सेठसे कहा कि मैं व्याह नहीं करूंगा फिर तो तिस सेठने घरआके क्या काम किया कि वलभद्र नाम जो राजाका सेनापतिथा उसके साथ अपनी पुत्री का विवाहकरदिया वह उसके घर रहनेलगी एक दिनका जिक्रहै कि राजाकी सवारी उस राहसे निकली और वहभी सोलह शृंगार किये अपने कोठेपर खड़ीथी तव तो तिसकी इस राजासे चार २ नजर होगईं तो राजा निज मनमें कहनेलगा कि यहदेवकन्याहै या अप्सरा है वा नरकन्याही है गरज उसका रूप देख मोहितहोगया और वहांसे निपट वेकरारहो अपने मकानको आया तव उसका मुह देख द्वारपाल वोला महाराज आज आपको क्या विथा है राजाने कहा आज मैंने राहमेआते एक कोठेपर सुन्दरी देखी उसे मैं नही जानता कि वह हूर या परी थी उसके रूपने एकवारगी मेरा मन मोह लियाहै इसीसे विकलहूं यहसुन द्वारपाल वोला महाराज यह वहही सेठकी लड़की है जो आप के इन्कार करने पर सेनापति वलभद्रको व्याहीगई थी तव राजाने कहा मैंने तो जिन

लोगोंको परीक्षाके लिये भेजेथे उन्होंने हमसे छल किया यह कह
राजाने उनको बुलाये गरज जब वे राजाके सन्मुखआये तो तिनसे
राजा बोला मैंने तुम्हें परीक्षाको भेजेथे फिर तुमने हमसे कैसाछ-
ल कियाहै जो झूठी बात बनाकर हमसे औरही कुछ कह दिया
और आज हम आप अपनी निगाहसे देख आये हैं वह ऐसीसु-
न्दरी नारी सर्वगुण पूर्ण है वैसी किसीको भी मिलनी कठिन है
यहसुन उन्होंने कहा महाराज ! आप कहते हैं सो सब सचहै पर
हमने हजूरसे उसे कुलक्षणी इसलिये बताई है कि जो महाराज
के घर यह जायगी तो तिसे देखतेही उसी के आधीन होजावेंगे
तो राजकाजकी कुछ भी खबर नहीं रहैगी तब राजभंग होजायगा
इसभयसे ऐसा धोखा किया है यह सुन राजाने समझकर कहा
सच कहतेहो पर उसकी यादमें राजाको निपट बेचैनीथी और सब
लोगोंपर राजापुर बेकरारी जाहिरथी कि इतनेमें बलभद्रभी आपहुं-
चा और उसने राजाके सामने हाथजोड़ खड़े हो अर्ज किया कि
हेपृथ्वीनाथ ! मैं आपका दास हूं और वह दासी है और उसके
हेतु आप इतनाकष्टपावें इससे आप आज्ञादीजिये कि वह हाजिर
होवे यहबात सुन राजा निपट क्रोधकर बोला कि बिरानी स्त्री के
पास जाना महाही अधर्महै यहबात क्या तूने कही क्या मैं अध-
र्मीहूं जो अधर्म करूं बिरानी स्त्री माताके समानहोती है और बि-
राना धन मिट्टीके समान जानना भाई मनुष्य जैसा जी अपना
समझै तैसाही दूसरेका समझना फिर बलभद्र बोला वह मेरी दासी
है जब मैंने उसे किसी और को दी फिर बिरानी स्त्री कैसे रही फिर
राजा ने कहा कि जिस कामकरके इस संसार में कलंकलगे वह
काम करना नहीं चाहिये फिर सेनापतिने अर्ज किया कि महाराज

मैं उसे घरसे निकाल और ठौर रख वेश्या बनाय लाऊंगा तब क-
लंक क्यों लगेगा तब बोला जो तू उस सतीको वेश्या बनावेगा
तो तुझे मैं महादण्ड देऊंगा यहकह राजा उसकी याद में दश
दिन चिन्ताकर मरगया फिर बलभद्र सेनापति ने गुरु से जाकर
पूछा मेरा स्वामी उन्मादिनी के कारण मरा मुझे अब क्या करना
चाहिये सो आज्ञा कीजिये तब तिसने कहा कि सेवकका धर्म है
निज स्वामी के अर्थ जीवदान देदेवे यहसुन वह वहांहीगया जहां
राजाको जलाने के लिये लोग लेगये थे जितनी देरमें राजाकी
चिता तैयारहुई तितनेमें तिसनेभी स्नान पूजनकर जलनेकी तै-
यारी किया जब जलने की तैयारीभई लोगों ने आगलगादी तब
यह चिता के पास गया और सूर्य्य के सामने हाथ जोड़कर कहने
लगा हे सूर्य्य देवता मैं मन वचन कर्मकरके यही कामना मांगता
हूं कि जन्म २ में इसी स्वामीको पाऊं और तुम्हारे गुणगाऊं इतना
कह दण्डवत्कर आग में कूदपड़ा यह खबर सुनकर उन्मादिनी
भी गुरुके पास गयी और उनसे सब बात कहके पूछा महाराज
स्त्रीका क्या धर्म है तब बोले कि पिताने निज कन्याके ताईं जिस
को दियीहो वह उसहीकी सेवाकरने से कुल शीलवती कहाती है
जो नारी निजजीते स्वामी के आगे व्रत तप करती है वह उस
स्वामी की उमर कम करती है और अंतकाल में वह नारी नरकमें
पड़ी सड़ती है उत्तम यहहै कि कैसाही हीन स्वामीहो उसहीकी
सेवा करने से इसकी मुक्तिहोती है और जो नारी श्मशानमें सती
होनेकी कामनाकरके जातीभई जितने पैर धरती में धरती है उत-
नेही अश्वमेध यज्ञोंका फल मिलता है इसमें कुछ सन्देह नहीं है
और सती होने के समान कोई धर्म नही है यह सुनतेही वह भी

दण्डवत्कर घरमें आयी और स्नान ध्यानकर बहुतसा दान दे चिता पास जाय परिक्रमाकर बोली हे नाथ! मैं तुम्हारी जन्म २ में दासी हूं इतनाकह यहभी आगमें जाबैठी और जलगयी इतनी कथाकह बेताल बोला हे राजन्! इनतीनों में किसका सत अधिक हुआ तब राजा बोला उस राजाका बेताल बोला किसतरह राजा का तो कहा कि जिसने सेनापतिकी दियीहुई स्त्रीको छोड़ी और फिर आप उसही के लिये निजजान दियी धर्मरक्खा और स्वामी के लिये सेवकको जान देना तो उचितही है और पतिके लिये सती होना भी स्त्री का धर्मही है इससे राजाकाही सत अधिक है इति दृष्टान्तप्रदीपिन्यां ६१ प्र० ॥

## "देवोभूत्वादेवंयजेत्" इति श्रुतिः॥

"देवरूप होकर देवता का यजन—पूजनकरे" यह वेदवाक्यहै अर्थात् जिस देवता का आराधनकरे तो तिसही के रूपहो एक चित्तसे ध्यानकरै तब वह देवता सिद्ध होता है नहीं तो जरा भी द्वचित्तता होने से सिद्ध नहीं होताहै जैसे दृष्टांत बेताल बोला हे राजा (उज्जैन) नाम नगरीका (महासेन) नाम राजाथा उसके राज्यमें बसनेवाला (देवशर्मा) ब्राह्मण जिसके बेटेका नाम (गुणाकर) था वह बड़ाही जुवारी हुआ यहांतक कि जो कुछ उस ब्राह्मणका धन था सो सब जुयें में हारगया तब तो सारे कुटम्ब के लोगों ने इसको घरसे निकालदिया और उससे कुछ बनन आया लाचार होकर वहां से चला तो कितने दिनों में एक शहरमें आया वहां देखता क्या है कि एकयोगी धूनीलगाये बैठाहै उसे दण्डवत् कर वहां बैठगया तो योगी ने इससे पूछा कि कुछ खायेगा तब

ोला महाराज जो कुछ घोगे तो क्यों न खाऊंगा तब तो योगी ने एक आदमीकी खोपरी में अन्नभरके दिया तो तिसने देखकर कहा कि इस कपालका अन्न नहीं खाऊंगा तब योगी ने मंत्रपढ़ा तो एक यक्षिणी हाथजोड़ इसके आगे आय खड़ीहुई और बोली जो आज्ञाहो सोहीकरूं तो योगी ने कहा इस ब्राह्मणको अच्छा भोजनदे तब तिसने एक अच्छा मंदिर बनाय उसमें सामान सब सुखके रखकर उसे वहां से साथ लेगई और एक चौकीपर बिठाय भांति २ के भोजन व्यंजन पकवान थाल भर २ उसके आगे धरे तब उसने मनमाना भोजन किया और फिर पानदान उसके सं-मुख धरा और केशर चन्दन गुलाब में घिस २ कर उसके ब-दन में लगाया फिर अच्छे २ वस्त्र सुगन्धों से बासितकर पहि-राय फूल माला गले में डाल पलँगपर ला बिठाया इतने में सां-झहुई तो वह भी उसके पास सेज पर आ बैठी तब तो तिसने सारी रैन चैन उड़ाया जब भोरहुआ तो यक्षिणी अपने घरगई और योगी के पास आकर बोला महाराज वहतो चलीगई अब मैं क्या करूं योगी बोला भाई वहतो विद्याके बलसे आईथी और जिसे विद्या आती है उसी के पास रहती है तब इसने कहा स्वामी मुझे विद्या बताइये तो मैं इसे साधूं तब तो तिस योगी ने इसे मन्त्र ब-ताया और कहा कि इसे चालीसदिन जलमें बैठ जप सिद्धकरले उसने वैसाही किया तो कितने प्रकारके भय उसके नजर आये पर वह न डरा फिर योगी के पास आकर बोला महाराज कर लिया फिर योगी बोला अब आग में बैठकर कर तब तो तिसके जी में निज घरका मोह होगया तो बोला पहिले मैं घरवालों से मिल आऊं फिर सिद्धकरूंगा तब योगी ने कहा तेरी मरजी जा सिधार

तब तो यह निज घरआया तो लोग आय२ इसको गले लगा२ के२ कहनेलगे कि हे निर्दयी तू अबतक कहां था हे पुत्र ऐसे कहाहै जो निज पतिव्रता स्त्रीको तजदेताहै वह उसे चाहती और वह उसे नही चाहता वह चाण्डाल के समान होताहै और कहाहै कि गृहस्थ धर्म के बराबर कोई धर्म नही है और घरबारी के बराबर इस संसार में कोई सुख देनेवाला नही है और जे माता पिताकी निंदा करते हैं वे अधम मनुष्य हैं और उनकी गति कभी नहींहोती है ऐसा ब्रह्माजीने कहाहै तब गुणाकरबोला कि यह शरीर रक्त और मांससे बनाहुआ है सो कीड़ोंकी खानि है और स्वभाव इसका ऐसा है कि जो इसकी एक दिन खबर नहींलो तो इसमें दुर्गंधिहो सड़ता कीड़े पड़जाते हैं जे इस ऐसे शरीरसे प्रीतिकरते हैं वे मूर्ख हैं और जे इससे हित नहींकरते वे पण्डित हैं और इसशरीरका यही धर्म है कि बार२ जन्मलेताहै और मरताहै ऐसे इसशरीरका क्या भरोसा कीजे इसे बहुतेरा पवित्रकीजे पर यहपवित्र नहीं होताहै जैसे मल मूत्रकरके भरे घड़ेको बाहरसे कितनाही धोवो पर वह धोने से शुद्ध नहीं होता और कोयलेको कितनेही रगड़ो पर वहकालापन नहीं तजताहै इतना कहके फिर बोला कि किसकी माता किसका पिताहै किसकी स्त्री और किसकाभाई है इससंसारकी यहीगतिहै कि कितनेही इसमें जन्मलेते और कितनेही मर२ जातेहैं और जे यज्ञ योग करनेवाले हैं और जे अग्निको ईश्वरज्ञान मानते हैं और योगी जन निज मनमेंही हरिको चीन्हते है इससे इस ऐसे गृहस्थधर्मको मैं नहीमानता मैं तो योगाभ्यासहीकरूंगा इसने इतनाकह घरसे विदाहो योगी के पासजाय अग्नि में भी बैठके मंत्रसाधा पर यक्षिणी नहीं आई तब तो योगीसे कहनेलगा कि क्यों नहीं आई

तो योगी बोला तुझे विद्या नहीं आई इतनाकह वेताल बोला हे राजा उसे विद्या क्यों नहीं आई राजा बोला वह साधक दुचित्ता था इससे न आई मंत्र एक चित्तकरनेसे सिद्ध होताहै दुचित्त से नहींहोता और ऐसाभी कहाहै कि जे दानसे हीनहैं उनकीकी कीर्त्ति नहींहोती और जे सत से हीनहैं उन्हें लाज नहीं आती है और जे न्याय से हीनहैं तिन्हें लक्ष्मी नहीं मिलती है और जे ध्यानसे हीनहैं उनको भगवान् नहीं मिलते है फिर वेताल बोला कि जब वह आग में बैठगया तो दुचित्ता कैसे ? राजा बोला कि जब वह कुटुम्ब से मिलने आया तब योगी ने जाना कि दुचित्ता है इससे इसे सिद्ध न होगा इस कारण उसे सिद्ध न हुआ और यह भी लिखाहै कि कितनाही पराक्रम मनुष्यकरे पर कर्म उसके साथही रहताहै इति शुक्र देवी सहाय कृत द्व० प्र० मि० नि० ६२ प्र० ॥

## गोलकेनगयायांवै पिण्डेदत्तेकरत्रयम् ॥
## निस्सृतंपितुरेवस्यादधिकारस्तुकर्मणि १

गोलक जो बाप के मरने के पीछे व्यभिचार से उत्पन्नहो ऐसे सुतकरके गयाजी में पिण्ड दियागया तो तीनों हाथ अर्थात् बाप का और उत्पादकका और पालक राजाका ये तीनों हाथ एकबार निकले तो तहां बापही को उस कर्म में पिण्डदेनेका अधिकार है दृष्टान्त। वेताल बोला हे राजन्! ( कमलपुर नाम ) नगर और (सुदक्ष) नाम राजा और उसके नगरमें (धनाक्षी) नाम सेठभी रहताथा उसकी पुत्रीका नाम (धनवती) था छोटी उमरमें उसकी शादी एक (गौरीदत्त) वैश्य से करदीथी कितने दिन पीछे एक लड़की उसकेहुई उसका नाम ( मोहिनी ) था जब वह कईएक

वर्षकीहुई तब उसका बाप मरगया और उस बनिये के भाई बंधुओं ने उसका सर्वस्व छीनलिया वह लाचारहो अपनी बेटीका हाथ पकड़ अँधेरीरात मे अपने बाप के घरकोचली थोड़ीएक दूरजाय राहभूल एक मरघट में जानिकली वहां एक चोर शूलीपर टँगा हुआथा तो लाचार इसका हाथ उसके पांवपर लगा इतने में वह कहनेलगा कि मुझे किसने दुःखदियाहै तब वह बोली मैंने जान कर दुःख नहींदियाहै मेरी तकसीर माफकर उसने कहा दुःख सुख कोई किसीको नहींदेताहै जैसाविधाता कर्ममे लिखदेताहै तैसाही पुरुष भोगता है और जे जन कहते है यह काम हमने किया वे निपट नादानहै क्योंकि मनुष्य तो तागेरूप कर्ममे बँधे है वहजहां२ चाहता तहां २ ही खैंच लेजाताहै विधाताकी गति कुछ जानी नहीं जाती क्योंकि मनुष्य निज जी में तो कुछ विचारे और वह औरही कुछ कर देताहै यह सुन धनवती बोली हे पुरुष तू कौनहै उसने कहा मैं चोरहूं मुझको तीसरा दिन शूलीपर चढेहुआहै और जान नहीं निकली तब यह बोली कि किसकारण तो कहा कि मैं बिन ब्याहाहूं जो तू निज कन्याको मुझे ब्याहदे तो करोड़ अशर्फी देऊं मशहूरहै कि पापका मूल लोभ और दुःखका मूल नेह है जो इन तीनोको छोड़े सो सुखसे रहै पर यह हर किसी से छूट नही सक्ते निदान अंतकाल लोभ लालचकी मारी लाचारी बिचारी हत्यारी धनवती ने कन्या उसको दे देनेकी इच्छा करी और पूछी मैं यह चाहतीहूं कि तेरे पुत्रहो पर किसतरह होगा इसपर कहा कि यह जब जवान उमरहोगी तो तब एक सुन्दर ब्राह्मणको बुलवा उसे सौ अशर्फी दे उससे पुत्र उत्पन्न करवावना यह सुनते ही धनवती ने उसको शूली से गिर्द चार वेर फिरा दी यही शादी

की तो चोरनेकहा कि पूर्व की ओर इन्दर कुयें के पास एक वड़का
वृक्षहै उसकी जड़में वे अशर्फ़ियां गड़ी हैं तू जाकर सँभाल ले
यह कहते २ ही उसकी जाननिकली तव वह वहांसे चली और
वहांहीं जाय उसमें से थोड़ीसी अशर्फियां ले अपने मा वापकेघर
गई उसने यह वृत्तांतकह उनको निज स्वामीके देशसे लाई फिर
एक वड़ीसी हवेली वना उसमे रहनेलगी और वह लड़की दिन २
वढ़ती रही वह जव यौवनवती भई तो एक दिन कोठेपर चढी राह
निहाररहीथी कि एक जवान ब्राह्मण उधर से आय निकला और
यह उसे देख कामके वशहो सखीसे वोली हे आली इस पुरुष को
तू मेरी मा के पास ले आव यह सुन वह उस ब्राह्मणको उसकी मा
के पास ले आई वह उसे देखकर वोली कि हे ब्राह्मण! मेरी वेटी
जवानहै जो तू इस के पास रहैगा तो तुझे सौ अशर्फी देवोंगी यह
सुन वह प्रसन्न हो वोला वहुत अच्छा रहजाऊंगा ऐसे वे वातेंकरते
थे कि सांझ होगई उसे अच्छा २ भोजनदिया उसने व्यालूकिया
सो मसल मशहूरहै कि भोग आठ प्रकारका होताहै एक सुगन्ध
दूसरे वनिता तीसरे वस्त्र चौथे गीत पांचवे पान छठे भोजन सातवे
सेज और आठवे आभूषण ये सवही वहां मौजूदथे गरज जव प-
हर रातगई तो तिसने रंगमहल में जाय उसके साथ सारी रैन चैन
में काटी जव भोरहुआ तो अपने घर गया और यह उठकरसखियो
के पास आई तव उनमेंसे एक ने पूछा कहो दोस्तके साथ क्या२
मौज उड़ी तव उसनेकहा सखी सुन जव कि मैं उसके पास गई तो
एकाएकी डरसा मालूम दिया और जव उसने निज करकमलसे
मेराहाथगहा तव मै उसके वशहोगई और जव उसनेमुझसे सोकर
मनमानाकाम किया तव तो मैं मग्न ऐसीहुई कि कुछ सुध न हुई

क्याहुआ मैं कहनहीं सक्ती ऐसे कहाहै कि एकनामी दूसरेशूरमाती-
सरे चतुर चौथेसरदार पांचवें सखी छठे गुणवान् सातवें स्त्रीरक्षकहो
ऐसेपुरुषको नारी इस जन्ममें तो क्या उस जन्ममेंभी नहीं भूलती
हासिल यहहै कि उसी रातको गर्भ रहा जब कि दिन पूरे हुये
तो एक लड़का पैदाहुआ छठी की रातको तिसकी माने सपने
में देखा कि एक योगी जिसके शिरपर जटा माथेपर चन्द्रमा उ-
ज्ज्वल भस्मलगाये श्वेत यज्ञोपवीत श्वेत कमलों के आसनपर
बैठा सपेद सांपों की सेली पहने गलेमें मुंडमाला डाले एकहाथ
में खप्पर और दूसरेमें त्रिशूल लिये हुये महाभयावनी सूरतबनाये
उसे सोंहीआ कहने लगा कि कल आधीरातके समय इसको
एक पिटारेमें रख हजार मोहर उसके साथ रख राजद्वारपर रखआ
यह कहतेही सुनके चौंक उठी और भोरभये उसने निज मातासे
सब बात कही यह सुन दूसरे दिन उसकी माता उसी तरह पिटारे
में रख उस लड़केको राजाकी ड्योढीपर धरआई और उधर उस
राजाको भी स्वप्न आया कि एक पुरुष दशभुजा पांचशिर एक २
चांद हरएक शिरमें तीन२ आंखें दांत बड़े २ त्रिशूल लिये अति
डरावनी सूरतकिये इसके सामने आन बोला हे राजा तेरे द्वारपर
पिटारे में एक लड़काहै उसे तू ले वही तेरे राज्यका मालिकहो-
गा इतना सुनतेही राजाकी भी आंखै खुलगईं तब रानी से सब
वृत्तान्त कहा फिर वहांसे उठ दरवाजेपर जाकर देखा कि पिटारा
धराहै। ज्योंही पिटारेको खोलकरदेखा तो उसमें एक लड़का और
हजार अशर्फी का तोड़ा है तो तिस लड़के को निकाल लिया
और द्वारपालसे बोला इस लड़के को निकाल फिर महलमें ले
जाय रानीकी गोदमें दिया इतने में प्रभात भया तो राजाने बाहर

आ पंडितों को बुलायके कहा कि कहो इस लड़के के क्या २ लक्षण हैं तब तो तिन पंडितों में से सामुद्रिक जाननेवाला ब्राह्मण बोला कि महाराज इस में तीनलक्षण तो प्रत्यक्ष राज्य भोगने के दीखते हैं एक तो बड़ी छाती दूसरे ललाट तीसरे बड़ा चेहरा सिवाय इसके महाराज जो बत्तीस लक्षणपुरुषके होते हैं सोसब इसमें हैं इससे निस्संदेह यहही आपके राज्यकोकरेगा यहसुन राजाने प्रसन्न हो निज गलसे मोतियों का हार उतारकर उस ब्राह्मण को दिया और सबब्राह्मणोंकोभी बहुतसा दानदिया फिरराजाने कहा इसका नामरक्खो तब पंडितोने कहा महाराज आपगॅठजोड़ा बांध बैठिये और लड़केको गोदमें लेलीजिये और मंगलामुखियोको बुला मंगलाचार करावो तब हम शास्त्ररीतिसे नामकरणकरें यहसुन राजा ने दीवानको आज्ञादी कि जो येकहें सोही करो तो दीवानने सारे नगरमें उसीसमय लड़केहोनेकी डौंड़ीफिरादिया तबसबआये और मंगलाचार होनेलगे तब राजा रानी लड़केको गोदमें लेकर बैठे तब एक ज्योतिषी ने शास्त्रके अनुसार उसका नाम ( हरदत्त ) रक्खा और वह दिन २ बढ़नेलगा निदान वह नौवर्षकी उमरमे छै शास्त्र और चौदह विद्या पढकर पंडित हुआ इस में भगवानका चाहाहुआ कि राजा रानी मरगये और वह राजगद्दी पर बैठा और धर्मराज करनेलगा। कितने दिन बीते वह चिंता करनेलगा कि मैं ने मा बाप के जन्म लेकर वृथाही खोया उनके निमित्त कुछ न किया मसलहै कि जे दयावान्‌ज्ञानी है उनका बैकुण्ठमें बासहोता है और जिनका मन शुद्ध नहीं तिनका जप योग व्रत तप सबवृथा ही है और जे श्रद्धा हीन डिम्भसे श्राद्ध करते है तिनका किया कर्म निष्फल होताहै और उनके पितर निराश हो चलेजाते हैं यह

राजानेशोच समझकर विचारा कि अब पितृकर्मकिया चाहिये ५-
विचार कर हरदत्त गयाजीमे गया और जाकर फल्गु नदीके ती॰
जाय पिंडदान देनेलगा कि उस नदीमे तीन जनोंके हाथनिकले
तो तब वह देख जीमें घबराकर बोला कि किसके हाथमे पिंड देऊं
इतनी कथा कह बेताल बोला कि हे राजन्! इन तीनो मे किसको
पिंड देना चाहिये तब राजा ने कहा कि चोरको देना तब फिर
बेतालबोला किसकारण राजाने कहा कि उस ब्राह्मणका बीज तो
मोल लिया गया और राजाने हजार अशर्फीले पाला इससे उन
दोनोंको अधिकार नहीं हुआ इति दृष्टान्त प्रदीपिन्यां ६३ प्र० ॥

## पितृभ्यांविक्रीतोराज्ञाखड्गेनघातितोबालः ॥ शरणंकंसमुपेयाद्दैवंचेच्छेद्बलिंस्वीयाम् १

जो बालक मा बापों करके बेचागया और राजाने खड्गमे उस
का शिर उतराया और जो दैव आप बलि लेना चाहताहै तो त॰
वह बालक किसकी शरणजावे ॥ दृष्टांत ॥ बेताल बोला हे रा॰
जन्! चित्रकूट नाम नगर वहां का राजा ( रूपदत्त ) नाम वह
एक दिन अकेला सवारहो शिकारको चला तो भूला २ एक म॰
हावन में जानिकला वहां जाय देखता क्याहै कि एक बड़ातालाब
है उसमे कमल खिलरहे और भांति २ के पक्षी कलोलें कररहे ॥
तालाब के चारो ओर वृक्षों की गहरी २ छांह मे ठंढी २ हवा सुगं॰
के साथ आ रहीथी यह भी धूपका सतायाहुआथा तो घोड़ेको ए॰
दरख्त मे बांध उसका जीनपो [illegible] य कर बैठगया फिर एकबड़
[illegible]ती तो [illegible] नि सुन्दर यं [illegible] ऋषिकन्या वहां फूल लें॰

फूल चुन निज स्थानको चली तब राजा बोला यह तुम्हारा कैसा आचारहै हम तुम्हारे आश्रम मे अतिथि आये और तुम हमारी सेवा न करोगी वह यह सुनके खड़ीरही तब राजानेकहा कि शास्त्र यह कहताहै जो उत्तम वर्णके घर कोई नीच चांडाल भी अतिथि आजावे तो वह पूजनीय है और चोरहो या जुवारी शत्रुहो वा पितृघातक परजो वह निज घर आवे तो तिसकी भी पूजाही करनी उचितहै क्योंकि अतिथि सबका गुरुहै जब राजा ने ऐसा कहा तो वह खड़ी हुई और फिर तो दोनों नजर मिलाने लगे कि इतने में मुनिभी आगया तो राजाने तिसे तपस्वी देख नमस्कारकरी तो तिसने भी ( चिरंजीव ) यह कहके अशीष दियी पीछे मुनिने राजासे कहा कि किसकारण यहां आयेहो राजा ने जवाब दिया महाराज शिकारकरने को आया हूं तब वह बोला कि किसलिये यह महापाप करताहै ऐसा कहाहै कि जब एक जन्ममे तो पाप करताहै और अनेक जन्म उसका फल भुगतता है तब राजाने कहा कि हे मुनिजी मुझपर दयाकरके धर्मका विचार कहो तब वह मुनि बोला महाराज सुनिये जो जीव तृण जल खा पी बनवास करते हैं तिनको मारने से बड़ा अधर्म होताहै और पशु पक्षी मनुष्य इनके पालन का बड़ा धर्म है और ऐसा कहाहै कि जो भगवत्की शरणआये उसे वे निर्भय करदेते हैं सो महादानका फल लेते हैं और ऐसा कहाहै कि क्षमा बराबर धर्म नही और संतोपके समान सुखनहीं है मित्रतातुल्य धननही और दयाके सम धर्म नहीं जे नर निज धर्म्म मे सावधान हैं और धन गुण विद्या यश प्रभुताका अभिमान नहींकरते और जेजन निजस्त्री से संतुष्टहैं सत्यवादी हैं ये अंतकालमें मुक्तिपाते हैं और

जे जटाधारी दयाहीन निरायुधको हनते हैं वे नर नरकमें पड़े … ड़ते हैं और जो राजा रय्यत के दुःखदायियों को दण्ड नहीं देता है वह भी नरक भोगता है और जे राजपत्नी या मित्र की स्त्री कन्या या आठ नौ महीने के गर्भवाली से भोगकरते हैं वे महानरक में पड़ते हैं ऐसा धर्मशास्त्र में लिखाहै यह सुन राजाने कहा महाराज आजतक जो पापकिया सो किया पर फिर भगवान् ने चाहा तो अब में ऐसा काम नहीं करूंगा तब तो तिस राजा के ऐसे कहने पर प्रसन्नहुये मुनिने कहा कि मैं तुझपर प्रसन्न हुआ तू अब वरमांग तो तिसने शीघ्रही याचना कियी कि जो महाराज आप मुझपर प्रसन्नहुएहो तो अपनी कन्या मुझको दीजिये तबतो अतिदयावान् तिसमुनिने निज कन्याका उसकेसाथ गंधर्व विवाह करदिया और आप स्थानको गया फिर राजा उस कन्याको ले अपने नगरको चला कि आधीदूर राहमें सूर्य्यअस्त हुआ और चन्द्रमा उदय हुआ तब राजा एक ठौर घने से दरख्त देख वहां उतर घोड़ा जड़में बांध आप जीनपोश बिछाय दोनों सोरहे दोपहररातके समय एक राक्षसआय राजाको जगाकर कहा कि हेराजन् ! मैं तेरी स्त्री को खाऊंगा राजाने कहा ऐसा मतकर जो तू मांगे मैं सोही तुझेदूंगा तब बोला हे राजन् ! जो तू सात वर्ष के ब्राह्मणके लड़केका शिर काटकर देवे तो मैं इसे नहींखाऊं तब तो तिस राजाने निज प्रयोजन … कहा कि मैं ऐसाही करूंगा आजके … तूमेरे न… इसीतरहराजाको वचनबद्ध कर राक्ष… …नको … …र … राजा …

तब मंत्रीबोला कि आप चिन्ता न करो भगवान्‌भलाकरेंगे इतना कह मंत्री ने एक सवामन सोनेका पुतला बनवाकर उसमे जवाहिर जड़वाय एक छकड़ेमें रखवा चौराहे में खड़ा करवाकर उस के रखवालोंसे कहा कि जो कोई इसे देखनेको आवे उससे यहीकहो कि जो ब्राह्मण अपने सात वर्ष के लड़के का शिर काटकर राजाको दे सो सोनालेवे यह कहकर चलाआया फिर लोग जो उसे देखने को आतेथे उनसे चौकीदार यहीकहदेतेथे तब दो दिन तो योंहीं वीते तीसरे दिन तिसी नगरीका एक दुर्बलसा ब्राह्मण जिसके तीन बेटेथे उसने यह बात सुन नगरमें आय ब्राह्मणीसे कहनेलगा कि एक पुत्र अपना राजाको बलिदेनेके लिये दिया जाय तो सवामन सोनेका जड़ाऊ पुतला मिले यहसुन ब्राह्मणी बोली कि छोटेलड़के को न दूंगी तब मँझला लड़का बोला कि पिता मुझको दीजिये उस से कहा अच्छा फिर वह ब्राह्मणबोला संसार में धनही मूलहै और धनहीनको सुख नहीं और दरिद्री हुआ तो तिसका संसारमें आना बृथा है इतनाकह मँझले लड़के को लेजा चौकीदारसे कहा कि यह लो और उस पुतले को लेके घरआया और उस लड़केको लोग मंत्री के पास लेगये और सातवेंदिन वह राक्षसभी आय पहुँचा तो राजाने चंदनअक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य पान फूलसे इसकी पूजाकी और उस लड़केको बुलवा खड्गहाथमें लेकर बलिकेलिये तैयारहुआ तो वह लड़का पहिले तो हँसा फिर रोया फिर राजाने ऐसा खड्ग मारा कि धड़से शिर न्यारा होगया सचहै जो ज्ञानीजन कहगये कि दुःखकी खानि स्त्री है और यहही विपत्तिका घर और साहस की गिरानेवाली मोहकी करनेवाली धर्मकी हरनेवाली ऐसी जो विप

की जड़हो उसे उत्तम किसने कहाहै और ऐसा कहाहै आपत्तिके लिये धनकी रक्षाकरनी और धनदेके स्त्री की रक्षाकरे और धन स्त्री देकर निज जीवको बचावे इतनी कथा कह बेताल बोला हे राजन्! मरने में आदमी रोताहै वह क्यों हँसा राजा बोला वह यों हँसा कि बालक अवस्था में मा रक्षा करती है और बड़ा होनेपर पिता तिसकी रक्षा करता है तथा प्रजापर दुखहो तो तिसे राजा दूरकरे यह तो संसारकी रीति है और मेरा यहहालहै कि माता पिताने तो धनके लोभसे मुझे बेचदिया और राजा खड्गले मारनेको तैयारहुआ और देवता आपबलि लेताहै दया इन तीनों में किसी को न आई कहो किसकी शरण जाऊं इति दृष्टान्त प्रदीपिन्यां ९४ प्रदीपः ॥

## व्यभिचारेपिविरहान्मृतौयोनारिपूरुषौ ॥
## दृष्ट्वास्वामीम्रियतेचेत्सत्वाधिक्यंतुतस्यहि १

व्यभिचार कर्म में आपस में वियोगहोनेके कारणसे मरगये स्त्री पुरुष इन दोनों को देखकर उस स्त्रीका वैवाहिक पति जो मरजावै तो तिसका सत अधिकहोताहै। दृष्टान्त।बेताल बोला हेराजन्! (विशाल) नाम नगर वहांका (विपुलेश्वर) नाम राजाथा तिसके नगर में (अर्थदत्त) नाम बनियां उसकी बेटीका नाम (अनंग मंजरी) था उसकी शादी कंवलपुर में (सुन्नीनाम) बनियें से कर दीथी वह कुछ दिनबीते समुद्रपार बनिजकरने को चलागया और उधर यह जवानहुई तो एकदिन निज कोठेपरचढ़ी तमाशादेखती थी कि एक ब्राह्मणका लड़का (कमलाकर) उधरसे आया तो इन दोनोंकी चार २ नजरेंहुई तो तब मोहितहो बेसुधहुये घड़ीभर

में उनने तो सुरतसँभालरहली और उधर वह उसकी जुदाईकी पीरसे मरीजातीथी इतनेमे सखी ने आनकर इसे उठाई पर इसे कुछ अपनी सुधि न थी फिर उसने इसपर गुलावछिड़का और सुगंधि सुँघाई इतनेमे उसे होशहुआ तो बोली कि हेकामदेव! महादेवने तुझे जलाकर भस्मभीकरदिया पर तू तव भी बुराईसे नहींचूकताहै और विन अपराधहारी विचारी लाचार अवलाओंको आनके दुःख देताहै ये वातेंकररहीथी कि इतनेमें सांझहुई और चांद नजरआया तवतो चांदनी की तरफ देखकेबोली कि हेचन्द्रमा! तेरी किरणोंमें अमृतवताते हे आज वह भी मेरे कर्मका विषहीहोगया फिर सखी से कहा कि मुझे यहां से उठाकर लेचलो क्योंकि मैं मरीजातीहूं इस चांदनी से मेरे शरीर मे आगलगती है तव वह उसे उठाकर चौवारे मे लेगई और कहा कि ऐसी वात कहते तुझे लाज नहीं आती है तव तिसने कहा हे सखी मैं सव जानतीहूं पर विरहकी आग से ज्यों २ जलतीहूं त्यों २ मुझे यह घर जहर नजरआताहै तव सखी वोली हे आली तू खातिरजमारख मैं तेरा दुःखदूरकरूंगी इतनाकह वह सखी तो अपने घरआई औरइसने निज जी में विचारं किया कि इस शरीरको प्यारेके कारण तजदेना चाहिये और दूसरा जन्मपाय तिसे पायके सुख भोगना यहविचार गलेमे फांसी डार उसने चाहा कि इसे खींचे इतनेमे सखी आपहुंची तो तिसने झट उसके गलेसे फांसी निकालली और कहा कि जीनेसे सव कुछ होताहै मरनेमे कुछ नहीं होताहै तव वह वोली कि ऐसे जीने से मरनाही भलाहै सखी ने कहा कि तू एक घड़ी सुस्ता कि मैं उसे जाकर ले आती हूं इतना कह वह वहां गई और देखा तो वहभी उसीके विरहसे व्याकुलहोरहाहै और उसका मित्र तिसपर

शयनेचतुरश्चतुरोभोज्यस्त्रीशयनचतुरतुर्य्येहि ॥
वासःसप्तपुटान्तःस्थकेशंयोऽभिजानाति १०३

भोज्य भोजन चतुर और स्त्री चतुर और शयन सेज चतुर इन तीनों चतुरों में शयन चतुरही चतुर अत्यन्त बुद्धिमान् गिना जाताहै जो सात पड़तों के भीतरके केशको जानलेता तिस पर दृष्टान्त । वैताल बोला हे राजा विक्रमादित्य ! धर्मपुर नाम नगर वहां (धर्मज) नाम राजा राज्य करताथा उसके नगरमें (गोविंद) नाम ब्राह्मण जिसके पट्शास्त्रपढ़े और वह सब कर्मोंमें सावधान था उस ब्राह्मणके हरिदत्त, सोमदत्त, यज्ञदत्त और ब्रह्मदत्त ये चार पुत्र थे वे भी बड़े पंडित और चतुर और पिता की आज्ञामें परा-यण थे कितने एक दिनों पीछे उसका बड़ा बेटा मरगया तो तिसके वियोगसे वह भी मरनेलगा तो तिस समय वहां के राजाका पुरोहित (विष्णुशर्मा) आनकर समझानेलगा कि यह मनुष्य जिस समय माता के गर्भ में आता है तो पहिले वहांही दुःख पाता है फिर जन्ममें और बालपनमें दुःखपाय जवानी में कामके वशहो प्रियतमके वियोग में दुःख पाताहै फिर वृद्धपनमें अपने शरीरके निर्बल होनेसे महाही दुःख सहताहै, गरज इस संसार में जन्मलेने से बहुतही दुःख पाताहै और सुख थोड़ा मिलताहै क्योंकि यह संसार दुःख का कारणहै अगर कोई दरख़्तकी फुनगीपर जा बैठे वा पहाड़की चोटी पर जा चढ़े या पानी में घुसरहे वा लोह के पिंजरे में छिपरहे अथवा पातालमें जाछिपे पर तब भी काल उसे नहीं छोड़ताहै और पण्डित मूर्ख धनवान् निर्धन, धनवान् बलवाला ज्ञानी अज्ञानी निर्बल कैसाही कोई होवे पर यह सर्व भ-

गुलाब जल लाकर छिड़करहाहै और केलेके कोमल २ पत्तों से हवा कररहाहै तिसपरभी वह विरहकी आगमें जलाही जला पुकारताहै और मित्रसे कहताहै कि जहरला जिसे मैं खाकर प्राणतजूं और निज प्यारी से जाय मिलूं इसकी यह अवस्था देख उसने निज जी में कहा कि कैसाही साहसी पण्डित चतुर विवेकी धीर मनुष्य हो पर कामदेव उसे एक क्षण में विकल करदेताहै इतना मनमें विचार सखीने उससे कहा कि अय कमलाकर तेरी अनंग मंजरी ने कहाहै कि तू आकर मुझे जीवदान दे इसने सुनतेही कहा कि यह तो तिसने मुझे जीवदान देहीदिया इतना कहकर उठ खड़ाहुआ और सखी इसे अपने साथलियेहुये अपनी सखी उसकी प्रियाके पास आई यह वहां जाकर देखे तो वह मुयीपरी है फिर इसने भी उसे देख आहका ऐसानअरः मारा कि उसके साथ इसका दम निकलगया और जवसुवहहुई तो तिसके घरके लोग इनको मरघटमें लेगये और चिता चुन उनके आगलगाई थी कि इतने में उसका खाविंद भी परदेश से मरघट की राह आ निकला तव आपलोगोंके रोनेकी आवाज सुनकर यहवहांगया तो देखता क्या है कि इसकी स्वकीया स्त्री पर पुरुषके साथ सती होतीहै तव तो तिसने यह चरित्र देख उसके विरहमें आय आप भी उसही आगमें कूदपड़ा और जलकर मरगया यह अचरज देख नगर के लोग वोले कि ऐसा कभी न देखा नसुनाथा इतनी कथा कह वेताल वोला हे राजन्! इन तीनोमें कौन कामी और किसका सत अधिकहुआ तव राजावोला तिसका खाविंद अधिक कामी हुआ क्योंकि जिसने निज नारी को औरके लिये मरी देख आपप्रेममें मग्नहुआ इससे उसका सत अधिकहै इति द०६५प्र०॥

शयनेचतुरश्चसुरोभोज्यस्त्रीशयनचतुरतुर्य्योहि ॥
वासःसप्तपुटान्तःस्थंकेशंयोऽभिजानाति १०३

भोज्य भोजन चतुर और स्त्री चतुर और शयन सेज चतुर इन तीनों चतुरों में शयन चतुरही चतुर अत्यन्त बुद्धिमान् गिना जाताहै जो सात पड़तों के भीतरके केशको जानलेता, तिस पर दृष्टान्त। बैताल बोला हे राजा विक्रमादित्य! धर्मपुर नाम नगर वहां (धर्मज) नाम राजा राज्य करताथा उसके नगरमें (गोविंद) नाम ब्राह्मण जिसके षट्शास्त्रपढ़े और वह सब कर्मोंमें सावधान था उस ब्राह्मणके हरिदत्त, सोमदत्त, यज्ञदत्त और ब्रह्मदत्त, ये चार पुत्र थे वे भी बड़े पंडित और चतुर और पिता की आज्ञामें परायण थे कितने एक दिनों पीछे, उसका बड़ा बेटा मरगया तो तिसके बियोगसे वह भी मरनेलगा तो तिस समय वहां के राजाका पुरोहित (विष्णुशर्मा) आनकर समझानेलगा कि यह मनुष्य जिस समय माता के गर्भ में आता है तो पहिले वहांहीं दुःख पाता है फिर जन्ममें और बालपनमें दुःखपाय जवानी में कामके वशहो प्रियतमके वियोग में दुःख पाताहै, फिर वृद्धपनमें अपने शरीरके निर्बल होनेसे महाहीं दुःख सहताहै, गरज इस संसार में जन्मलेने से बहुतही दुःख पाताहै और सुख थोड़ा मिलताहै क्योंकि यह संसार दुःख का कारणहै अगर कोई दरख़्तकी फुनगीपर जा बैठे वा पहाड़की चोटी पर जा चढ़े, या पानी में घुसरहे वा लोह के पिंजरे में छिपरहे अथवा पातालमें जाछिपे पर तब भी काल उसे नहीं छोड़ताहै और पण्डित मूर्ख धनवान् निर्धन, धनवान् बलवाला ज्ञानी अज्ञानी निर्बल कैसाही कोई होवे पर यह सर्व भ-

क्षक काल किसीको भी नहीं छोड़ताहै तमाम कमसे कम सौवर्ष की मनुष्यकी अवस्था रहगई तिसमेंसे भी आधी तो रातमें सोने से जाती है और आधी से आधी बाल और वृद्धपन में बीतती है शेष जो रही सो विवाद वियोग संयोगमें गुजरजातीहै और जीव जो है वह जलके तरंगकी तरह चंचलहै इससे इस मनुष्यको सुख कहांसे हो। इस संसारमें सत्यवादी मनुष्य मिलना कठिनहै और दिन २ देश उजड़तेहैं राजा लोभी होते हैं पृथ्वी मंद फलसे फूलती है और चोर दुराचारी पृथ्वीपर कुकर्म करतेहैं और जपयोग व्रत तप इस संसारमे थोड़ा रहाहै राजा कुटिल लालची ब्राह्मण, और सब लोग लुगाई के वश होरहेहैं स्त्री चंचल प्रबल होरही पुत्र पिताकी निंदा करता और मित्र शत्रुता करताहै और देखो जिस का मामा कन्हैया और पिता अर्जुन ऐसे तिस अभिमन्युको भी कालने नहींछोड़ा और जिससमय मनुष्य मरताहै तब सब लक्ष्मी आदि वस्तु घरही में रहतीहैं और मा बाप जोरू लड़का भाई बंधु कोई काम नहीं आताहै भलाई बुराई पाप पुण्यही साथ जाता है और वेही कुटुम्बके लोग उसे मरघट में लेजा जला देतेहैं और देखो इधर दिन होता फिर रातहोतीहै इधर चांद छिपा उधर सूर्य उदय होताहै ऐसेही जवानी जाती है और वृद्धपन आताहै इसी तरह काल बीताजाताहै पर तब भी इस मनुष्यको ज्ञान नहींहोता देखो सतयुग में मांधाता ऐसे राजाहुये जिनका यश सारेसंसारमे फैलगया और त्रेतामें ( श्रीरामचन्द्रजी ) हुये जिन्होने समुद्रका पुल बांधकर(रावणकोमारा) और द्वापरमें राजा युधिष्ठिरने ऐसा राज्यकिया कि जिसका यश आजतक लोग गातेहैं पर कालने उन को भी नहींछोड़ा इससे इस संसारमें कुछ सार नहीं है इससे अब

आप कोई पुण्य काम कीजिये तब तो विष्णुशर्मा ने विचारकर बेटे से कहा कि मैं यज्ञ करताहूं तुम समुद्र से जाकर कछुआ ले आओ यह पिताकी आज्ञा पाय बेधीवरके पासगये और एक रुपया दे कहा कि एक कछुआ पकड़लादे तब उसने कछुआ ला दिया तो तिन में से बड़े भाई ने मँझले से कहा भाई तू इसे उठा ले जो मैं इसे उठाऊंगा तो मेरे हाथोमें दुर्गंधि होजावेगी क्योंकि मैं भोजनमें चतुरहूं तो मुझसे भोजन नही किया जावेगा फिर मँझला बोला मैं स्त्री रखनेमें चतुरहूं और छोटेने कहा मैं सेज में चतुरहूं तो तीनों आपसमें विवाद करनेलगे तो झगड़ते झगड़ते राजा के पास गये राजा से द्वारपाल ने अर्ज किया कि तीन ब्राह्मण दरवाजे पर खड़े हैं तब राजा ने उनको अन्दर बुलवाकर कहा कि किसवास्ते झगड़तेहो तब वे बोले कि हम तीनों तीन काममें चतुरहैं हमारा न्यावकरो तब राजाने तिनकी परीक्षा करने के लिये भोजन चतुरसे कहा कि ठैरो और निज भंडारी को बुलाय कर कहा कि भांति २ के व्यंजन और पिक्वान बनाकर इस ब्राह्मण को भोजन करवावो येहसुन रसोइयेनेजीघ्र रसोईतयारकर भोजन चतुरको थालपर लेजाय बैठाया और इसने ग्रास उठाया और चाहा कि मुंहमें लेऊं पर इसी में उस को ऐसी दुर्गंधि आई कि छी२ कर हाथ धो खड़ाहोगया और राजाकेपास आया तो राजाने पूछा तुमने सुखसे भोजन किया वह बोला महाराज कुछ नहीं खाया उसमें दुर्गंधि आतीथी फिर राजानेकहा कि दुर्गंधि का कारण कह उसने कहा महाराज ! मरघटकी भूमिके चावल थे मुरदे की बास उसमें आतीथी इसकारण न खाया यह सुन राजाने उस रसोइये को कहा कि ये किस गांवके चावलथे उसने कहा (शिव

ाग विना ईश्वर के नाम व्यर्थ है जैसे ( नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाव
ार्जितं नशोभनेज्ञानमलंनिरंजनं ॥ कुतःपुनःशश्वदभद्रमीश्वरे न
ार्पितंकर्मयदप्यकारणं ) ऐसेही अभिप्रायों को समझकर इस
ंत्रालय ने बहुतसा धन देकर वर्त्तमान कवियों में श्रेष्ठ कविवर
ं० बन्दीदीनजी से सातोकाण्ड रामायण का आल्हा ऐसी सरल
ाषा के मनोहर पदों से बनवाया है कि जिसको बिना पढ़े लिखे
ी मनुष्य अच्छीतरह से समझसक्ते हैं और जिनका कि भाषा
ं कुछ भी ज्ञान है वो तो इसके सम्पूर्ण तत्त्वों को समझके राम
क्काधिकारी ही होजायँगे क्योंकि इसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य, शृं-
ार, युद्धादि जौन जहां है तौन तहां गान करने से उसके रूप
ो दर्शाही देते हैं क्योंकि सत् कवियो के काव्य का प्रभावही यह
ै—लङ्काकाण्ड के वीर वृत्तान्तों को सुनके कादरो के रोमांच हो
ाताहै भुजा ओंठ फरकने लगते हैं वीरोंकी कथाही क्या इसी
रह राम वनगमन सुनने से कौन ऐसा पाषाण की मूर्त्ति है कि
जिसके अश्रुओंकी धारा न चलनेलगे इसीतरह यह आल्हा रामा-
यण बड़ीही विशाल इस यंत्रालयमें छपरही है जिसमें बालकाण्ड
व आरण्यकाण्ड व किष्किन्धाकाण्ड और सुन्दरकाण्ड तो छपे
य्यार है और काण्ड ग्राहकों को फरमायश से शीघ्रही मिलसके
है और कीमत भी बहुतही सस्त रक्खीगई जिसमें गरीब अमीर
सभीलोग इसके रसको पासक्ते हैं लेकिन जो शीघ्रता न करेंगे
उनको पहिली आवृत्ति की छपी रामायण आल्हा मिलना दुष्कर
होगा क्योंकि बहुत फरमायश इकट्ठा है ॥

## श्रीगीतगोविन्दकाव्यम् ॥

### वनमाली भट्ट कृत संजीवनी टीकोपेतम् ॥

यह गीतगोविन्द काव्य पण्डित जयदेव कृत वही है जो कि

। इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थि-
ो तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका तिलक
ाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीवनी नाम है अर्थात् इस
क का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ा भी
करण जानते हैं इस तिलक के द्वारा पूर्ण अर्थ मूलका लगा
हैं पण्डित लोगोंकी रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की
हुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज और अधिक
छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलती हैं यद्यपि वहां से यहां
माल आने में ख़र्च महसूल आदि होने के कारण वहां की पु-
ों का मूल्य विशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने
ारण लाचार होके उन लोगोंको लेना पड़ताहै इस यंत्रालय
ह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयार है बम्बई से कोई काम न्यून
हुआ अर्थात् बहुत उम्दा कागज सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई
ाई है शुद्ध होनेमें तो हम कहसक्ते हैं कि बम्बई की छपीहुई
कमें चाहे पांच छः गलती भी होवें परन्तु यह पुस्तक ऐसे
श्रम से शोधीगई [illegible] पण्डित लो[illegible] परिश्रम करके ढूंढने
ी गलती नहीं [illegible] और मूल्य [illegible] तक का बम्बई से

# दृष्टान्तप्रदीपिनी

## तीसरा भाग

शुक्ल देवीसहाय संग्रहीत भाषा विभूषित

जिसमें

राजा भोज वा विक्रमादित्यके पराक्रम का कथन, स्त्री चरित्रका वर्णन तथा स्त्रियोंकी दुर्घट घटना वा अलौकिक-कर्तव्यता, तथा तिनके संग निषेध इत्यादि अनेक विषयके अत्यन्त रोचक चमत्कृत दृष्टान्तों का श्लोक पूर्वक संग्रह शिक्षागर्भित है ॥

श्रीयुत चिरायुष्मान् ( प्रयागनारायण ) जीके अधिकार में

प्रथमवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

एप्रिल सन् १८९७ ई० ॥

लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थि- यों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका वनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीवनी नाम है अर्थात् इस तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ी भी व्याकरण जानते हैं इस तिलक के द्वारा पूर्ण अर्थ मूलका लगा सक्के हे पण्डित लोगोकी रुचि संस्कृत पुस्तकों मे अक्सर बम्बई की छपीहुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज और अधिक शुद्ध छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलती हैं यद्यपि वहां से यहां तक माल आने में खर्च महसूल आदि होने के कारण वहां की पु- स्तकों का मूल्य विशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने के कारण लाचार होके उन लोगोंको लेना पड़ताहै इस यंत्रालय मे यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयार है बम्बई से कोई काम न्यून नहीं हुआ अर्थात् बहुत उम्दा कागज सफेद पर बहुत उम्दा छपाई की गई है शुद्ध होनेमें तो हम कहसक्के हैं कि बम्बई की छपीहुई पुस्तकमें चाहे पांच छः गलती भी होवे परन्तु यह पुस्तक ऐसे परिश्रम से शोधीगई है कि पण्डित लोगोंको परिश्रम करके ढूंढने पर भी गलती नही मिलेगी और मूल्य इस पुस्तकका बम्बई से बहुत न्यून रक्खा गया है हम पूरे तौरसे उम्मेद करते है कि हमारे देशके रहनेवाले पण्डित लोग इसपुस्तक देखके बम्बई की पुस्तक लेना छोड़ देवेंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकारकरेंगे जो लोग संस्कृत कुछ भी नहीं जानते केवल भाषाही मात्र जानते हैं उनके लिये भी यहकाव्य भाषाटीकामें बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ता है क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा रसिक पुरुषों और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृतविद्याके सीखनेवाले विद्यार्थियो आदि इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालयमे यह पुस्तक छापीगई है एक तो भाषा टीका ग क दूसरे संस्कृत टी[illegible]में मिलित ॥

# दृष्टान्तप्रदीपिनी

## तीसरा भाग

शुक्ल देवीसहाय संग्रहीत भाषा विभूषित

जिसमें

राजा भोज वा विक्रमादित्यके पराक्रम का कथन, स्त्री चरित्रका वर्णन तथा स्त्रियोंकी दुर्घट घटना वा अलौकिक कर्तव्यता, तथा तिनके संग निषेध इत्यादि अनेक विषयके अत्यन्त रोचक चमत्कृत दृष्टान्तों का श्लोक पूर्वक संग्रह शिक्षागर्भित है ॥

श्रीयुत चिरायुष्मान् ( प्रयागनारायण ) जीके अधिकार में

प्रथमबार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेख़ाने में छपी

अप्रिल सन १८९७ ई० ॥

लोग इसको अच्छी भांति जानते हैं संस्कृत पढ़नेवाले वि-
द्यों को तो यह काव्य बहुतही लाभकारी है क्योंकि इसका
वनमाली भट्टजी कृत जिसका कि संजीवनी नाम है अर्थात् इस
तिलक का जैसा नामहै वैसाही गुण है जो विद्यार्थी थोड़ी भी
व्याकरण जानते हैं इस तिलक के द्वारा पूर्ण अर्थ मूलका लगा
सक्ते हैं पण्डित लोगोंकी रुचि संस्कृत पुस्तकों में अक्सर बम्बई की
छपीहुई में अधिक होती है क्योंकि उम्दा कागज और अधिक
शुद्ध छपाई यह सब उनपुस्तकों में मिलती हैं यद्यपि वहां से यहां
तक माल आने में खर्च महसूल आदि होने के कारण वहां की पु-
स्तकों का मूल्य विशेष है तथापि दूसरे यंत्रालयमें वैसा न छपने
के कारण लाचार होके उन लोगोंको लेना पड़ताहै इस यंत्रालय
में यह पुस्तक जो अब छपीहुई तैयार है बम्बई से कोई काम न्यून
नहीं हुआ अर्थात् बहुत उम्दा कागज सफ़ेद पर बहुत उम्दा छपाई
की गई है शुद्ध होनेमें तो हम कहसक्ते हैं कि बम्बई की छपीहुई
पुस्तकमें चाहे पांच छः गलती भी होवें परन्तु यह पुस्तक ऐसे
परिश्रम से शोधीगई है कि पण्डित लोगोंको परिश्रम करके ढूंढ़ने
पर भी गलती नहीं मिलेगी और मूल्य इस पुस्तक का बम्बई से
बहुत न्यून रक्खा गया है हम पूरे तौरसे उम्मेद करते हैं कि हमारे
देशके रहनेवाले पण्डित लोग इसपुस्तक देखके बम्बई की पुस्तकें
लेना छोड़ देवेंगे और इसे प्रसन्नता पूर्वक अंगीकारकरेंगे जो लोग
संस्कृत कुछ भी नहीं जानते केवल भाषाही मात्र जानते हैं उनके
लिये भी यहकाव्य भाषाटीकामें बहुतही थोड़ी कीमत से मिलसक्ता
है क्योंकि यह काव्य गान विद्या जाननेवालों तथा रसिक पुरुषों
और श्रीभगवद्भक्तों व संस्कृतविद्याके सीखनेवाले विद्यार्थियों आदि
इन सबको प्रियहै इस हेतु दो प्रकार से इस यंत्रालयमें यह पुस्तक
छापीगई है एक तो भाषा टीका युक्त दूसरे संस्कृत टीकासंमिलित ॥

श्रीगणेशाय नमः

# दृष्टान्तप्रदीपिनी

## तीसरा भाग

---

शुक्ल देवीसहाय संग्रहीत भाषा विभूषित

जिसमें

राजा भोज वा विक्रमादित्यके पराक्रम का कथन, स्त्री चरित्रका वर्णन तथा स्त्रियोंकी दुर्घट घटना वा अलौकिक कर्तव्यता, तथा तिनके संग निषेध इत्यादि अनेक विषयके अत्यन्त रोचक चमत्कृत दृष्टान्तों का श्लोक पूर्वक संग्रह शिक्षागर्भित है ॥

श्रीयुत चिरायुष्मान् ( प्रयागनारायण ) जीके अधिकार में,

प्रथमबार

---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेखाने में छपी

फर्वरी सन १८९७ ई० ॥

हक़तसनीफ़ महफ़ूज़है बहक़ इस छापेखाने के ॥

( सी,

तुश्रीः

# दृष्टान्तप्रदीपिनी

## तीसराभाग सटीक ॥

## मिश्रनिबन्धात्मकः ॥

तत्र पूर्वभागे भोजराज वर्णनप्रसंगात् विक्रमादित्यवर्णनम् तत्र तावत्तदीयनामतः शाकप्रवृत्तिमाह अनुष्टुप्छन्दसा ॥

**विक्रमीविक्रमार्कोहि राजासीत्सार्वभौमपः ॥**
**यस्यनाम्नावरीवर्त्ति शाकोसौजगतीतले १**

अर्थ। विक्रम पराक्रमवाला विक्रमादित्य, सर्वभूमिपति राजाओंका भी रक्षक अर्थात् सब राजों में श्रेष्ठ भया जिसके नाम से शाका संवत् चला वह आजतक वर्त्तमान है उसपरही पुतली ने कथाकही है कि वक्ष्यमाण कहेजानेवाले गुण युक्त राजाको जनों ने निज २,उपकारकारक शत्रुसंहारक समझ तिनहीं के नाम से शुभ संवत्सर प्रवृत्त किया सो तिससमय बहुतसे देश २ से बड़े २ विद्वान् बुलाये उन्होंने इनकेनामसे संवत्बांधा इति १ प्रदीपः ॥

अथ द्वितीय प्रदीपः।

विक्रमंविक्रमार्कस्यवर्णयेत्कःसवैयथा ॥
निमज्जतोजलेसद्योररक्षमनुजत्रिकम् २

अर्थ। राजा विक्रमादित्य के विक्रम पराक्रम को कौन जन वर्णन करसके कि जिसने जलमें डूबतेभये तीन जनोंको आप कूदके बचाये और निज जीवनकाभी लोभ न किया २॥ दृष्टान्त॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य, दरियाके किनारे एक महल में महफ़िल किये बैठेथे रागहोरहाथा और हरएक रंग२की चुहलें होरहीथी कि दिलफ़रेफ़त होजावे एकसे एक उत्तम सहेली संग बैठीथी राजाका जी अत्यन्त अड़िगलगरहाथा कि एकपंथी त्रिया संग लिये और उस त्रियाकी गोद में एकबालक ये घरसे खफ़ा होकर निकलेथे दरियाके किनारे पास महलके पास आकर गुस्से के मारे कूदपड़े मर्द के एक हाथमें हाथ रंडीका और एक हाथमें लड़के का हाथ यों डूबनेलगो तब पुकारे कि ऐसा धर्मात्मा कौन है जो इनतीनोंकी जान बचावे उनमें से मर्द हाय करके पुकारा कि कोई गुस्सा मार न सके तो इसीतरें वे अजल'मरजाताहै और गिरकर फिर वह बहुतही पछताताहै ऐसी उसकी आवाज राजा ने सुनतेही लोगोंसे पूछा कि कौन दुःखी पुकाररहाहै? हरकारोंने खबरदियी कि महाराज एक मर्द और औरत लड़के समेत डूबते हैं उनमेंसे वह मर्द चिल्लारहाहै कि कोई उपकारी ऐसाभी हो कि हम डूबतों को निकालै यह हरकारा कहताही था कि वह फिर पुकारा कि हम तीन जीव डूबतेहैं कोई भगवान् का बंदा हमें पार
यह सुनतेही राजा वहांसे दौड़ा और आकर उस दरियाव में कू

पड़ा जाकर एक हाथमें रंडी और दूसरे हाथमें लड़के को पकड़ लिया तब वह मर्दभी राजासे लपटगया तब सब भारीहोनेसे डूबने लगे तो राजा घबराया और ईश्वरको याद किया और कहा कि हे नाथ! मैं धर्म के हेतु आयाथा और इसमें मेराही जी जाताहै धर्मकरते अधर्महोवे, राजा यहकहकर ज़ोर करनेलगा और ज़ोर कुछ काम नहीं आया तब तो तिसने निज आगिया और कोयला इनदोनों वीरोंको यादकिये तो तुर्तही हाजिरहुये और चारों को उठाकरके किनारेपर धरदिया तब वह विदेशी, राजाके चरणों पर गिरपड़ा और बोला महाराज आपने तीनोंको जीवदान दिया तुमहीं हमारे रक्षक ईश्वरहो फिर राजा उनतीनोंको हाथ पकड़कर रंगमहलमें लेगया और बैठाकर कहा तुम्हें जो चाहिये सोही मांगो तब वह बोला महाराज हमको हुक्महो हम घरजावें और जबतक जीवैं आपको आशीर्वाद देवेंगे ऐसा जीवदान दियाहै जिसकी तुलना नहीं तब राजाने तिनको लाख रुपये देकर विदा किये॥ इतिदृष्टान्तप्र० २ प्रदीपः॥

### अथ तृतीय प्रदीपः।

विक्रमीविक्रमार्कस्यैश्वर्य्यस्याथप्रवर्णनम्॥
कःकुर्य्याद्यस्यराष्ट्रेहिलक्ष्मीर्द्रव्यंप्रवर्षयेत् ३

अर्थ। कौन पराक्रमी विक्रमादित्य के ऐश्वर्य्य का वर्णन कर सके जिसके पुरमें लक्ष्मीने द्रव्यकी वर्षा किया ३॥ दृष्टान्त॥ एक ब्राह्मणने आकर राजा विक्रमादित्यसे बोला कि मेरे बताये शहूर्तमें मकान बनाओ तो बड़ाहीनाम यश पाओगे तब राजाने कहा अच्छा इसबातको प्रकटकर तब ब्राह्मण बोला कि तुला लग्न जब

## अथ द्वितीय प्रदीपः।

# विक्रमंविक्रमार्कस्यवर्णयेत्कःसवैयथा ॥
# निमज्जतोजलेसद्योररक्षमनुजात्रिकम् २

अर्थ। राजा विक्रमादित्य के विक्रम पराक्रम को कौन जन वर्णन करसके कि जिसने जलमे डूबतेभये तीन जनोंको आप कूदके बचाये और निज जीवनकाभी लोभ न किया २॥ दृष्टान्त॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य, दरियाके किनारे एक महल में महफ़िल किये बैठेथे रागहोरहाथा और हरएक रंग२की चुहलैं होरहीथी कि दिलफ़रेफ़त होजावे एकसे एक उत्तम सहेली संग बैठीथी राजाका जी अत्यन्त अड़िगलगरहाथा कि एकपंथी त्रिया संग लिये और उस त्रियाकी गोद में एकबालक ये घरसे खफा होकर निकलेथे दरियाके किनारे पास महलके पास आकर गुस्से के मारे कूदपड़े मर्द के एक हाथमे हाथ रंडीका और एक हाथमें लड़के का हाथ यों डूबनेलगो तब पुकारे कि ऐसा धर्मात्मा कौन है जो इनतीनोंकी जान बचावे उनमे से मर्द हाय करके पुकारा कि कोई गुस्सा मार न सके तो इसीतरे वे अजल मरजाताहै और गिरकर फिर वह बहुतही पछताताहै ऐसी उसकी आवाज राजा ने सुनतेही लोगोंसे पूछा कि कौन दुःखी पुकाररहाहै? हरकारोंने खबरदियी कि महाराज एक मर्द और औरत लड़के समेत डूबते हैं उनमेसे वह मर्द चिल्लारहाहै कि कोई उपकारी ऐसाभी हो कि हम डूबतों को निकालै यह हरकारा कहताही था कि वह फिर पुकारा कि हम तीन जीव डूबतेहै कोई भगवान् का बंदा हमे पार ल० यह सुनतेही राजा वहांसे दौड़ा और आकर उस दरियाव में कू०

पड़ा जाकर एक हाथमें रंडी और दूसरे हाथमें लड़के को पकड़ लिया तब वह मर्दभी राजासे लपटगया तब सब भारीहोनेसे डूबने लगे तो राजा घबराया और ईश्वरको याद किया और कहा कि हे नाथ! मैं धर्म के हेतु आयाथा और इसमें मेराही जी जाताहै धर्मकरते-अधर्महोवे, राजा यहकहकर जोर करनेलगा और जोर कुछ काम नहीं आया तब तो तिसने निज आगिया और कोयला इनदोनों वीरोंको यादकिये तो तुर्तही हाजिरहुये और चारों को उठाकरके किनारेपर धरदिया तब वह विदेशी, राजाके चरणों पर गिरपड़ा और बोला महाराज आपने तीनोंको जीवदान दिया तुमहीं हमारे रक्षक ईश्वरहो। फिर राजा उनतीनोंको हाथ पकड़कर रंगमहलमें लेगया और बैठाकर कहा तुम्हें जो चाहिये सोही मांगो तब वह बोला महाराज हमको हुक्महो हम घरजावें और जबतक जीवें आपको आशीर्वाद देवेंगे ऐसा जीवदान दियाहै जिसकी तुलना नहीं तब राजाने तिनको लाख रुपये देकर विदा किये॥ इतिदृष्टान्तप्र० २ प्रदीपः॥

## अथ तृतीय प्रदीपः।

**विक्रमीविक्रमार्कस्यैश्वर्य्यस्याथप्रवर्णनम्॥**
**कःकुर्य्याद्यस्यराष्ट्रेहिलक्ष्मीर्द्रव्यंप्रवर्षयत् ३**

अर्थ। कौन पराक्रमी विक्रमादित्य के ऐश्वर्य्य का वर्णन कर सके जिसके पुरमें लक्ष्मीने द्रव्यकी वर्षा किया ३॥ दृष्टान्त॥ एक ब्राह्मणने आकर राजा विक्रमादित्यसे बोला, कि मेरे बताये मुहूर्त में मकान बनाओ तो बड़ाहीनाम यश पाओगे तब राजाने कहा अच्छा इसबातको प्रकटकर तब ब्राह्मण बोला कि तुला लग्न ज१

आवे उसमें मंदिरकी नींव उठावे और जबतक वह कामकरे तुला लग्नमेंहीं करे इसीतरह तुला लग्नमेंही वह सारा मन्दिर तय्यार करावे तो तिसका भण्डारभरा अटटरहै और लक्ष्मी उसके घरसे कभी न जावे यह सुन राजा मन में प्रसन्नहुआ और दीवानको बुलायके बोला कि तुम अच्छी जगह ढूंढ़कर महल बनाओ यह सुन तैयारी और तुलालग्नमें मंदिरकी नींवदियी तब देशश्में यह अवाई हुई कि राजा तुला लग्न में महल बनवाता है तो जितने कारीगर थे वे सब तुला लग्नमें काम करतेथे तो तिसमें काम कहीं तो सोने का और कहीं रूपे का और कहीं लोहेका और काठका नई २ तरहसे होताथा ऐसेही दरियाके किनारे हवेली बनाई जिस में चार दरवाजे और सात खण्ड उसमें रक्खे, जगह २ दरवाजेपर जवाहिर अमोल उसमें जड़े और दो नीलमके बड़े नगीने लगाये जो किसीकी नजर न लगै ऐसे वह जड़ाऊ महल कितने वर्षोंमें ऐसा तय्यारभया कि दुनियाके परदेपर किसी ने ऐसा दूसरा न देखा सुना तब दीवानने जाकर राजाको खबरदी कि महाराज वह मंदिर अब तय्यारहुआ अब आप चलकर उसे देखिये और भी कोई जो उसमकानको देखता वह मोहित होजाताथा राजा वहां से मकान देखनेको गया और मुलाहिजा किया तब वहही ब्राह्मण हँसकर बोला कि अय राजा जो ऐसा घर मैं पाऊँ तो सुखसे समय बिताऊँ राजा ने सुन कुछ न शोचकर गंगा जल हाथ में लेकर तुलसीदल ले तुर्त उसे संकल्पकर ब्राह्मण को दानकरदिया वह उसे पाय ऐसा आनन्दित हुआ कि जैसे चकोर रातको होवे चंद्रमासे तब तुर्त वह निज कुटुम्बको ले आया और वहां आकर रहा रात को सोताथा कि पहरभर रातगये लक्ष्मी वहांआई ओ

कहनेलगी वेटा हुक्मदे तो मैं गिरूं और घर वाहर सम्पूर्ण भरूं यह सुन डरकर उसने कुछ नही कहा तव दो पहर रात को फिर आई और वोली अरे अज्ञानी ब्राह्मण मुझको आज्ञादे तव भी न वोला और चिन्ता में रात विताई फिर सवेरा भये राजा के पास आया तो मन मलीन रातके अहवाल से उस रङ्ग जर्द कुँभलाया हुआ तो राजा ऐसे हाल से उसे देख हँसके कहनेलगा कि कल कीसी खुशी हमने आज तक न देखी पर हे ब्राह्मण! अचम्भे की वात है जो तू खुश नहीं है तव ब्राह्मण वोला सुनो स्वामी मेरा दुःख तुम दाता हो और शाके वंध राजा हो जैसे राजा कर्ण और इन्द्रथे तैसेही इस समय में तुम हो पर प्रार्थनाहै कि आप-ने जो मन्दिर मेरे ताईं दिया इसका हाल मैं कहताहूं सो मालूम नहीं कि उसमें भूतहै या पिशाच मुझे उसने रैन भर सोने नहीं दिया है अव आपके प्रताप से या वच्चों के भाग से जीवता वच यहां आयाहूं इससे अव भीख मांगना तो उचितहै पर उस मकान में रहना नही चाहता यह वात तिससे सुन राजा ने निज प्रधान को वुलाया और कहा कि जो उस मकानकी लागतहै वह हिसाव करके इस ब्राह्मणको देओ तो राजा की आज्ञा पातेही दीवान ने हिसाव से तोड़े रुपयो के लदवाकर ब्राह्मण के साथ करदिये और वह अपने घरको गया और राजा साइत देख उस महल में रहने लगा और वैठकर विचार करता था कि लक्ष्मी हाथ वांधकर आई और कहनेलगी धन्य राजा विक्रम तेरे धर्म्म को इतना कह उस समय तो चलीगई और फिर आकर कहनेलगी कि कहांगिरूं तो राजा ने निज मन में धीरधरकर कहा जो गिराही चाहै तो तू इस पलँगको छोड़ कही गिर तो तिसी समय सोने का मेह सारेनगर

भरमें बरसा सवेरा होतेही राजा बोला। हमारी रय्यत बड़ी तंग थी पर अब कई दिन निश्चिन्तहो आरामसे सब रहेंगे इति ३ प्रदीप०॥

अथ चतुर्थ प्रदीपः।

## शकटीचक्रवद्द्वौ भाग्योपायावपिपृथक्॥ निर्णीतौविक्रमार्केण याथातथ्यपरिश्रमात् ४

अर्थ। जो भाग्य उपाय दोनों गाड़ीके पहियेके समान बराबरहैं वेभी विक्रमादित्यद्वारा परिश्रमसे यथार्थ निर्णयकियेगये४॥दृष्टांत॥ एक दिन दो जने आपसमें झगड़ा करने लगे एक ने कहा कि कर्म बड़ाहै और एकने कहा बल बड़ा है फिर भाग्यपक्षवाला बोला कि कर्महीं बड़ा है जो अदनाको आला करदेता है बल पक्ष वाला बोला जोजोरहो तो जहानको जेरकरसक्ताहै इसीतरह झगड़ते दोनों राजा इन्द्रके पासगये और हाथ जोड़के कहने लगे महाराज! हमारा न्याय निबेड़िये जौन इन दोनो मे बड़ाहै सो कहिये तब इन्द्र बोला यह हमसे न होगा इस इन्साफको वहही करेगा जो योग साधन कियाहोवे इससे श्रेष्ठ यहही है कि तुम मृत्युलोकमें जाओ राजाविक्रमादित्य इसन्यायको चुकावेगा यह आज्ञापाय वे राजाके पास आये और राजासे वह न्याय कहा यह कहा सुन राजाने उनसे कहा कि आज तौ तुम निज २ घरको जावो फिर छै महीने में हमारेपास आना यहसुन वे दोनों निज २ घर गये तो राजा जीमे चिंता करनेलगा और विचार चरना पहन कांछचढाय, खांड़ा फरी लेकर, विदेशको निकला और निजजीमें यह नियम किया कि इसका भेद न जाने जबतक रहेंगे ऐसे फिरते २ जब समुद्र के किनारे पर पहुँचा तो तहां तिसने नगर बड़ा

निपट सुहावना जो जनोंसे भरा और उसमें तरह २ की हवेलियां जिनमें करोड़ों रुपये लगेथे जिन में सिवाय जवाहिरात के और कुछ नज़र नहीं आताथा देखकर राजा कहनेलगा कि जिसका यह नगरहै वह राजा कैसा होगा। ऐसेही शहर में फिरते २ शाम होगई और उस शहरका अंत न आया फिर क्या देखता है कि एक दुकानमें महाजन, शिर निहुड़ाये वैठाहै राजा उसके सामने जाखड़ाहुआ तब सेठने कहा कि तुम किस देशसे आयेहो और तुम्हारा मन मलीन क्यों है और किसे ढूंढ़ता व क्या तेरा कामहै सो मुझसे कहो किसकाम वैठाहै और क्या नामहै तब वह बोला सेठजी मेरानाम ( विक्रम ) है मैं आज आपके पास आयाहूं मेरे मनमें था आज राजा से भेंटकरूं पर आज न हुई कल मिलूंगा और की सेवाकरूंगा और जो वे मुझे नौकरकरें तो रहूंगा तबव-नियां बोला। तुम क्या रोज लेओगे राजा बोले लाख टके रोज में रहूंगा तब तो सेठबोला भाई तुम ऐसा क्या काम करतेहो जो तुम्हें लाखटके रोजमें रक्खें राजानेकहा कि जिसके पास में रहताहूं तिस-की गाढ़ीभीड़में कामआताहूं तब सेठ हँसकर बोला लाखटके हम से लेओ और भीड़में हमारे सहायकहो ऐसे कह सुनहुवे नौकर रक्खा और शाम होतेही २५लाख गिनदिये तो तिनमें से तिस-ने आधे तो अपने भगवान्‌नाम संकल्पकर ब्राह्मणको दिये आधे के आधे कंगालोंको और जो बाकी रहे उनका भोजन बनवायके कंगालों को खवादिया रातहुयेपर फिर जो एक फ़क़ीरने सवाल किया उसेभी खड्गबांधकर खाकर भोजन करवादिये आप चने चबाकर गुजरान किया कितने दिन उस साहूकारके पास रहकर रुपये हरदिन योंहीं खर्च करतारहा गरज किस्सा एक किसमतने

यारीदियी तो बोला अब मेरीबारी है कि एक दिन सेठके दिल
ुछ उचाटी हुई एक जहाज तैयार कर किसी देश के जाने
सने इरादाकिया और विक्रमने विचारा कि अब इसकी सहा-
करनी चाहिये यह विचारकर उसके साथहोके कहा कि मैंने
म किया था कि किसी गाढ़ीभीड़में आपका कामकरूंगा सो
मुझे लेतेचलिये यह कहतेही राजाने निज जहाजमें उसेभी
लेया और कितने दिनों में वह जहाज किसी तुहफानमें फँस
और डूबनेकी तैयारी भई सोही वहांपर लंगरडोल कुछरोज
ीपर ठहरोरहा उससे आगे एक टापूथा उसमें विद्यावतीनाम
कन्या रहतीथी उसके साथ सहेली हजार तैयार रहतीथीं इस
ब वह तूफ़ान थँभगया तब सेठने कहा लंगर उठाओ चलो
लंगर कहीं अलभ्फरहाथा तो न हटा जोरकर हारे विचारे ला-
हैरानहोरहे निदान हैराननिराशहोकर परमेश्वरको यादकिया
इस मँझधार में तुम्हारे सिवाय और कोई पार उतारनेवाला
है जहां २ जिस २ पर जो २ भीड़ पड़ी तहां२ तुम तिसीकी
कियी तुम्हारानाम दीनदयालुहै तो इस समय में मेरी सहाय
यहकह फिर राजाविक्रमादित्यसे कहनेलगा कि अब अथाह
धार में पड़ेहुये हैं किनारा नहीं दिखाई देता तिससे इंससमय
रीही बात यादआई कि भीड़पड़े सहारादेओगा तो अब वह
करनाचाहिये जिसमें मेरी तेरी जानबचे राजा इतनी सुनते
ठ और फरी खांड़ा हाथमें लेकर रस्सापकड़ जहाज के नीचे
गया और जाकर वहां हिकमत बहुतसीकरी और कोई काम
ाई तब सेठनेकहा कि पालें इसकीचढ़ादो तो लोगोंने पालेंलीं
ायी और उधर उसने कूदकर लंगर काटडाला तब वह जहाज

चल निकला और कोई रस्ता उसके हाथ न लगा तो वह वहांही रहगया, इससे जो निजमस्तकमें विधाताने लिखाहै वहही होताहै अलकिस्से वह वहांसे ढ़हताहुआ चला और जाते २ उसे एक नगर नज़र आया तो तहांहीजालगा और उसका जो दरवाजाथा उसपर यह लिखादेखा कि सिंहावतीकी शादी राजा विक्रमादित्यके साथ होगी ये देख राजाको अचरज़हुआ यह किस पंडितने लिखाहै जब उस दरवाजाके अन्दर गया तो वहां जाकर एक महलदेखा और वहां परियां थीं मर्द कोई नहीं और पलँगपर सिंहावती सोती है चौकीपर सहेलियों सहित बैठी है यह भी पलँगपर बैठगया और तुर्त उसको जगादिया वह उठबैठी तब राजा ने हाथ पकड़लिया और दोनों सिंहासन पर जा बैठे सब सखियां हाजिरहुई और इस भेदसे वाकिफ़ थीं कि राजा विक्रमाजीत यहां आवेगा और उस- से इसकी शादी होगी राजाको देखा तो फूलोंकी माला ले आई और गन्धर्व्व व्याह किया तो वह राजा जैसा दुःखपाकर पहुंचा था तैसा तिसने सुख भी भोगा, अलगरज वे दोनों आपसमें रहने लगे सखियां सेवामें रहतीथीं और मानिन्द चकोरके चांद सा राजा का मुख देखती थीं, तो चन्द मुद्दत राजाको इसी तरह से गुजरी तब तो तिस राजाको निज राजकाज की कुछ सुधिनहीरही जैसा राजाने वलकिया वैसाही सुख भी भोगा, फिर किसमतने जो ज़ोर किया तो तिनमें से जो राजाको बहुतही प्यारी रहती वो बोली हे राजाजी आप कहां आयफँसे हो इनके पाससे जीते जी निकल जाना बड़ा कठिनहै मुझे तुम्हारा नाम और राजकाज का काम सुनकर रहम हुआ इससे कहाहै कि किसी बहाने सेही यहांसे सटक जाओ तुम न यहां हजारहो जन दुःख पारहेहोंगे यह सुनतेही

किये पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिले तब तो तिसने सुनतेही छड़ी ब्राह्मण को दी और भाटको माल और उनको भेद सब कहदिया तब वे दोनो राजाको आशीर्वाद देकर कहनेलगे कि महाराज। इस समय आप राजा कर्णहो तुम्हारे बराबर आज दिन कोई नहीं है यह कहा और विदा होकर गये फिर वे दोनों झगड़ालू भी तुर्त राजा के पास आय बोले, आपने छै महीने कहाथा हम हाजिर हैं तो राजा बोला कि कर्म्म के बिन कुछ नहीं होता यह सुन वे प्रसन्नहो बोले हमारा न्याय करदीजिये यह सुनकर राजा बोला कि कर्म्म के बिन कुछ नहीं होसकै और बल बिन कर्म्मभी कुछ अकेला काम नहीं आता इससे ये दोनों समान गाड़ी के पहिये जैसे जानने इतिद्व०प्र०४प्रदीपः ॥

अथ पंचम प्रदीपः ॥

## प्रतापिनोविनीतस्य देवोऽपिफलदायकः ॥ विक्रमादित्यराजानं नददाहरविर्यथा ५

अर्थ। प्रतापी और विनयवान् जन को दैव भी फलदायकही होताहै जैसे विक्रमादित्य राजा को पास आनेपर भी सूर्य्यजी ने नहीं जलाया॥ दृष्टान्त॥ एक दिन नृपति, अपनी सभा मे बैठा था एक ब्राह्मणने आनकर एक अचरज की बात कही कि उत्तर दिशा में एक बड़ा बन है और उस बनमें एक पर्व्वत है और उसके आगे एक तालाब और उसमें एक खम्भ स्फटिक का है जब सूर्य्य निकलता है तब उस सरोवर मे से वह स्तम्भ भी निकलता है और ज्यों ज्यों सूर्य्य चढताहै त्यों त्यों खम्भभी बढताहै जब ठीक दोपहर होताहै तब व [illegible] बराबर जा पहुँचता है

राजाको निज राजकाज याद आया तो तिससे पूछा कि कौन उपाय बने सो बताव, तब वह बोली कि राजकन्या के यहां एक घोड़ी घुड़शाल में है वह उदय से अस्ततक जायसक्ती है यह सुन दूसरे दिन राजा निज रानी के साथ टहलता हुआ घुड़शाल में गया और तारीफ करनेलगा तो रानी ने कहा जो तुझे शौक है तो किसीपर सवारहो फिर ये भेद तो तिसे मालूमही था तो दूसरे दिन वहही घोड़ी वहां से मँगवायी और उसपर सवारहो वहां फेरनेलगा और फिर तुर्तही वहां से चल खड़ाहुआ तब सांझ हुये राजा निज अम्बावती नगरी में जापहुँचा वहां नदी के किनारेपर एक सिद्ध बैठाथा, उस सिद्धका जब ध्यान खुला तो राजाभी इसे देख पास बैठा था तो तिस सिद्धने इसे देखकर प्रसन्नहोकर एक फूलमाला दी और कहा यह हमने तुमको दियी इसका यह गुण है जहां२ जाय तहां२ही फतह पाये और तू सबको देखे तुझको कोई न देखसकेगा फिर एक छड़ीभी राजाको देके कहा कि इसका स्वभाव यह है कि यह पहर रातको भी सुवर्ण का जड़ाऊ आभूपण जो मांगो सोही देगी और दूसरे पहर एक सुन्दर नारी देगी जिसे देखतेही मोहितहो और तीसरे पहर जो इस को हाथमें लेओगे तो तुमहीं सबको देखोगे और तुम्हें कोई भी नहीं देख सकेगा और चौथे पहर रातको यहही मानिन्द काल के होजावेगी तो तिसके भयसे भीत भया शत्रु तुम्हारेपास नहीं आसकेगा यहबातकह उस योगी ने राजाको विदा किया राजा जब उज्जैन नगरी के पास पहुँचा तो उधरसे एक ब्राह्मण और भाटको आते देखा वे नजीक जो राजा के पहुँचे तो तिन्होंने आशीष दी और बोले कि महाराज ! आपके द्वारेपर हम अतिथि आये हैं बहुतही दिनों से सेवा

कियी पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ उसका फल न मिला तब तो तिसने सुनतेही छड़ी ब्राह्मण को दी और भाटको माला और उनको भेद सब कहदिया तब वे दोनों राजाको आशीर्वाद देकर कहनेलगे कि महाराज ! इस समय आप राजा कर्णहो तु-म्हारे बराबर आज दिन कोई नहीं है यह कहा और विदा होकर गये फिर वे दोनों झगड़ालू भी तुर्त राजा के पास आय बोले, आपने छै महीने कहाथा हम हाजिर हैं तो राजा बोला कि कर्म के विन कुछ नहीं होता यह सुन वे प्रसन्नहो बोले हमारा न्याय करदीजिये यह सुनकर राजा बोला कि कर्म के विन कुछ नहीं होसके और बल विन कर्मभी कुछ अकेला काम नहीं आता इससे ये दोनों समान गाड़ी के पहिये जैसे जानने इतिद्दा०प्र०४प्रदीपः ॥

अथ पंचम प्रदीपः ॥

## प्रतापिनोविनीतस्य देवोऽपिफलदायकः ॥
## विक्रमादित्यराजानं नददाहरविर्यथा ५

अर्थ । प्रतापी और विनयवान् जन को दैव भी फलदायकही होताहै जैसे विक्रमादित्य राजा को पास आनेपर भी सूर्य्यजी ने नहीं जलाया ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन नृपति, अपनी सभा में बैठा था एक ब्राह्मणने आनकर एक अचरज की बात कही कि उत्तर दिशा में एक बड़ा वन है और उस वनमें एक पर्व्वत है और उस के आगे एक तालाब और उसमें एक खम्भ स्फटिक का है जब सूर्य्य निकलता है तब उस सरोवर में से वह स्तम्भ भी निकलता है और ज्यों ज्यों सूर्य्य चढ़ताहै त्यों त्यों खम्भभी बढ़ताहै जब ठीक दोपहर होताहै तब वह खम्भ सूर्य्य के रथके बराबर जा पहुँचता है

तब उस जगह रथ खड़ा रहताहै और वहां जब सूर्य्य कुछ भोजन करलेता है तब रथ चल निकलता है और खम्भभी घटता जाताहै निदान शामके वक्त पानी में लोप होजाता है इसको देवता या देव कोई नहीं जानता यह बात ब्राह्मणसे सुनकर राजा ने अपने मन में रक्खी जाहिर न की उसकेताईं कुछ रुपये दे बिदा किया और तालवैतालको याद किया वे दोनों वीर आकर हाजिरहुये उन्होंने कहा हमें जो इस वक्त आपने याद कियाहै सो आज्ञा कीजिये कहिये स्वर्गको लेजावें कहिये पाताल को कहिये समुद्रपार इस तीनों लोक में आपकी मर्जीहोय तहां लेचलें तब हँसकर राजा ने कहा एक कौतुक देखने हम जाया चाहते हैं सो वह उत्तराखंड में है वहां तुम लेचलो यह बात सुनकर वीर कांधेचढ़ा राजा को लेउड़े और उस जगह तुर्त जापहुँचाया राजाने वह तालाब देखा कि चारों घाट उसके पुख्तः हैं हंस बगुले उसमें फिरते हैं और मुर्गाबियां चकोरें पनडुबियां कलोलें करती हैं कमल के फूलोंकी सुगन्धोंके साथ पवन चलीआती है और मेवेदार दरख्तकी डालियां चलके खाती हैं उनपर भौंरें गुंजरहे हैं मोर बोलरहे हैं कोयल कूक रही हैं और तरहबेतरह के पक्षी हुलास में हैं राजा यह समा देख कर बहुत खुशहुआ रातभर वहीं रहा जब सुबहहुई सूर्य्य निकला जो कुल ब्राह्मण ने कहाथा वह सब वहां देखकर वीरों से कहा एक बात मेरेजीमें आती है कि मेरे तईं ले जाकर इस खम्भपर बिठला दो और भगवान् का ध्यानकर अपने स्थानको जाओ तब वीरों ने खम्भपर लेजाकर बिठला दिया और वे अपने मकानको गये ज्यों ज्यों वहसतून बढ़नेलगा त्यों त्यों राजा अपने दिलमें खौफ़ करनेलगा जितना सूर्य्य के नज़दीक पहुँचताथा उतनाही गर्मी

से जलाजाता था निदान सूर्य्य के निकट पहुँचा जलकर अंगारा होगया जब खम्भ बराबर रथके पहुँचा और रथवान ने एक मुर्दा जलाहुआ देखा अपने रथके घोड़ोंकी बागखैंची सूर्य्य ने झुककर देखा कि स्तम्भपर जलाहुआ एक आदमी लगरहाहै सूर्य्य त्राहि त्राहिकर बोला यह साहस आदमी का नहीं यह कोई योगी है या कोई देवता या गन्धर्व्व इस मुर्दे के होते मैं इस जगह किसतरह भोजन करूंगा यह कहकर सूर्य्य ने अमृतले इसपर छिड़कदिया राजा राम राम कह पुकारउठा और देखकर सूर्य्यको दण्डवत् कर हाथ बांध कहनेलगा धन्यभागहै मेरे और मेरे कुलके जो आपके दर्शन पाये और मैंने इस जन्म यज्ञदान जो किये थे उसी के सबब तुम्हारे चरण देखे जिन्दगी का जो फलथा सो मुझे मिला इच्छा संसारमें सबको है लेकिन जिसपर तुम्हारी मिहरबानी हो उसीको दर्शन मिलते हैं यह सुनकर सूर्य्य बोला तू कौनहै और तेरा क्या नामहै तुझे देखकर मेरेजी में तरसआताहै अपना नाम तू जल्दी कह तब राजाबोला स्वामी नगर अंबावती में गंधर्वसेन जो राजाथा उसका बेटा मैं विक्रमहूं आपकी कथा मैंने एक ब्राह्मण से सुनीथी मुझे आपके दर्शन की इच्छाहुई और आपकी जुहमें आपके चरण देखे अब मेरेतईं आज्ञा दीजिये तो मैं विदा होऊं यह सुन सूर्य्य ने हँसकर अपना कुण्डल उतारकर राजा को दिया और कहा अब तू निडर राजकर फिर सूर्य्यका रथ आगेचला और स्तंभभी घटनेलगा जब राजा अकेला रहगया तब वीरों को बुलाया वीरआकर हाजिरहुये उसके कांधोंपर सवार होकर अपने मकानको आया जब शहर में दाखिल होनेलगा सामने से एक गुसाईं आया उसने राजासे अपने योग कीमती से कहा म-

हाराज जो तुम कुंडललायेहो वह मुझे दान कीजिये और यश धर्म बड़ाईलीजिये राजा बोला अय योगी मतिहीन ऐसायोग तूने कब कमाया जो तू कुण्डल मांगताहै वह संन्यासी कहनेलगा महाराज मैंने योग तो कुछ नहीं साधा पर सुनाथा कि राजा बड़ा दानी है इससे मैंने आपसे याँचा राजाने हँसकर कुण्डल उतार उसके हाथदिया आप खुशहोताहुआ अपने घरमें आया ॥ इति श्रीदृष्टांतप्रदीपिन्यांविक्रमादित्यवर्णनेपंचमप्रदीपः ५ ॥

अथ षष्ठ प्रदीपः ॥

किमदेयंज्ञानिनोहि दुस्त्यजंकिंधृतात्मनः ॥
सद्योलब्धान्नपूर्णापि विक्रमेणार्पिताद्विजे ६

अर्थ । ज्ञानी जनको क्या अदेय है और धृतआत्मा संतोष वाले को क्या दुस्त्यजहै अर्थात् ज्ञानवान् संतोषी जन चाहे सो देते तथा त्याग करते हैं जैसी सद्य तत्कालभी प्राप्तभई अन्नपूर्णाकी प्रतिमा विक्रमादित्य ने तुर्तही ब्राह्मणको दान करदी ॥ दृष्टांत ॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य अर्द्धरात्रिको सोताथा और तमाम शहर नीदमें यह गाफ़िलथा जो किसी आदमी की आवाज़ न आती थी कि उत्तरदिशा नदीके पास एकस्त्री पुकार २ के रोती है वह आवाज़ राजाके कानपड़ी राजा मनमे चिंता करनेलगा हमारे नगरमें कोई दुःखी आया है कि वह अपने दुःख से रोरहाहै यहबात दिलमें विचार ढाल तलवारले हाथ उधरको चला और नदीकिनारे पहुँचकर वसनछोड़ लँगोटामार पैरकर पारहुआ तो क्या देखताहै कि एक अति सुंदरी जवाननारी खड़ी कूकरही है उसकेपास जाकर राजाने पूछा पुरुषका तुझे वियोगहै या पुत्र

का तुझे शोगहै या तुझे सौतका शालहै इतने दुःखोंमें किस दुःख
से तू रोती है जो कुछ तुझे व्यापाहै सो मुझे कह तब कहनेलगी
सुन राजा हमारा बालम चोरी करताथा शहरके कोतवाल ने उसे
पकड़कर शूली दियाहै और मैं उसकी मुहब्बतसे कुछ खानाखि-
लानेको लाई हूं चाहतीहूं उसे भोजन करवाऊं पर शूली ऊंची है
और मेराहाथ उसके मुंहतलक नहीं पहुँचता इस दुःखसे मैं हैरान
हूं और जितना यत्न करती हूं पहुँचने नहीं पाती नरपतिने कहा
यह तो थोड़ीसी बात है इसके वास्ते तू क्या रोती है उनने जवाब
दिया कि मुझे यह थोड़ी बहुतही बड़ी है तब राजाबोला मेरेकां-
धेपर चढ़कर उसे खिलादे वह कंकालिन राजाके कांधेपरचढ़ी उस
शूलीपरचढ़ चोर जो टँगाथा उसेखानेलगी रक्त मुँहसे उसके राजा
के बदनपर गिरनेलगा राजा मनमें शोचा कि यह कोई और है
और उसने मुझे धोखादिया अपनेजीमें राजाने यह शोचकरपूछा
कह सुंदरी तेरा पिया भोजन करता है कि नहीं तब वहकंकालिन
न बोली रुचिसे खाचुका अब इसका पेटभरा मुझेकांधेसे नीचेउतार
जब टेहलउतरी राजाने कहा उसने चाहसे खाया तब कंकालिन
हँसकर बोली तू मांग जो तुझे चाहिये मैं तुझ से बहुत खुशहुई
मैं कंकालिनहूं तू मुझ से अपनेजीमें मतडर वह बोला मैं तुझसे
क्या डरूंगा और क्या मांगूंगा तैंने तो मुर्दा मेरे कांधे चढ़खाया
है तू मुझे क्या देगी वह फिर बोली कि राजा तू इसके खयाल
मत पड़ कि मैंने क्या किया और क्या न किया जो तुझे इच्छाहै
सो तू मुझसे मांगले राजाने हँसकर कहा अन्नपूर्णा मुझे दे और
जगमें यशले वह बोली अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहिनहै तू मेरेसाथ
चल मैं तुझे दूंगी इसतरह आपसमें दोनों वहां से वचनकर

आगे आगे कंकालिन और पीछे पीछे राजा नदी किनारे जापहुंचे वहां एकमंदिरथा उसके द्वारे कंकालिन ने तालीमारी और अन्नपूर्णाने प्रकटहोके उससेकहा कि यह राजाविक्रमहै इसने मेरीसेवा की है और मैंने इससे वचन हाराहै अगर मेरी मुहब्बत तेरे दिल में है तो इससे अन्नपूर्णा दे हँसकर उसने राजा को एक थैली दी और कहा इसमें से जितनी खानेकी चीजमांगोगे सब पावोगे— राजा ने हाथफैलालेली वहां से खुशहो नदी किनारे आ स्नान ध्यानकर निश्चिंतहुआ बाद एक ब्राह्मण आनपहुँचा उसको राजा ने बुलाया और कहा कुछ भोजनकरोगे उसने कहा भूंख लगीहुई है आप देवो तो मैं भोजन करूं राजा बोला क्या भोजन करोगे किस चीजपर मन है ब्राह्मण बोला इसवक्त पक्कान्न खाऊंगा राजा अपने जी में शोचनेलगा जो इसदम पक्कान्न न पहुँचेगा तो मैं ब्राह्मणसे झूठाहूंगा इतनी बात मन में विचार थैली में हाथ डाल कर जो निकाला तो देखा कि पक्कान्नही निकला ब्राह्मणने पेटभर कर खाया और बोला महाराज भोजन तो मैंने किया अब इसकी दक्षिणाभी दीजिये राजाने कहा जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा ब्राह्मणबोला कि यह थैली मैं दक्षिणा पाऊं तो आनन्दसे अपने घर जाऊं थैली ब्राह्मण को देकर राजा अपने घरको चला इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां तृतीयभागे मिश्रनिबन्धे षष्ठप्रदीपः ६ ॥

अथ सप्तम प्रदीपः ॥

तथापरिश्रमाल्लब्धं मणिंबालेनिवेदितम् ॥
श्रुत्वापिखेदंनप्रायदुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् ७

अर्थ । तैसेही अत्यन्त परिश्रम से प्राप्तभयी भी मणिको बालक

के लियेदियी सुनकर विक्रमादित्य, खेदको न प्राप्तहुये सो ठीकही संतोषी पूर्णजनोंको क्या दुस्त्यज है एक दिन वीर विक्रमादित्य अपने दरवार में बैठाथा सव राजा मुजरेको हाजिर थे उसवक्त एक वढ़ई ने आकर सलाम किया और कहा महाराज में आपके द-र्शन को आयाहूं और एक तुहफः आपके लिये लायाहूं राजाने आज्ञाकी लेआ वढ़ई ने जो हिकमत घोड़ा वनायाथा नज़र किया राजाने घोड़ेको देखा उससे पूंछा कि इसमें क्या २ गुणहैं नज्जार ने कहा महाराज इसमें ये गुणहैं न कुछ खाता न कुछ पीता है और जहांचाहो तहां लेजाता है दरयाई घोड़े के वरावर है घोड़ा उसवक्त चलताथा फिर किसी जगह ठहरता न था कूदं फांद रहाथा ज्यों ज्यों राजा देखता था रीझता था आखिर पसन्द करके कहा कि इसको मैदानमें फेरकर दिखादे ज्योंहीं उसने कड़ा किया फिर तो गर्दही नज़र आती थी और घोड़ा मालूम न होता था जव ऐसे गुण घोड़े में राजा ने देखे दीवान को वुलाकर कहा लाख रुपयेदो दीवान ने अर्ज़की महाराज ये काठका घोड़ा और लाख रुपये इनाम मुनासिव नहीं राजाने दो लाख रुपये फर्माया और अपने दिलमें शोचा जो कुछ और तकरार करूंगा तो और वढ़ेंगे वह वढ़ई रुपये ले अपने घरको गया घोड़ा थानपर वांधा और वह चलतेहुये तव ये कहगया था कि इसपर सवारहोते न कड़ाकीजो न एंड़ मारियो पर किसमतका लिखा कोई मिटा नहीं सक्ता जो वात हुआ चाहती है सो होती है कई दिन वाद राजाने घोड़ा मँगवाया और अपने मुसाहिवसाहिवों से फरमाया कि कोई तुममें से सवारहोकर इस घोड़ेको फेरे तो हम देखें यह वात राजासे सुनकर एकएक का मुंह देखनेलगा घोड़ेकी चालाँकी से कोई न

बोला कि हम यतीके सामने न होंगे हमारा कुछ वह कर न सकेगा पर स्त्री हत्या हमें लेनी उचित नहीं क्योंकि स्त्री हत्या लेनेसे आखिर को नरक भोग करना पड़ता है फिर राजाने कहा कि उस सिद्ध ने तुझे कहांपाया तव वह वोली कामदेव मेरा बापहै और पुष्पावती मा है मैंने उनके कुल में अवतार लियाथा जव वारह वर्ष की मैं हुई तव उन्होंने मुझे एक आज्ञाकी और मैंने भंगकी तव माता पिताने क्रोधकर यती को देडाली और यह मुझे अपने वशकरके इस वनमें लेआया वन्दरी करके रूखपर चढ़ाया इस शकलसे एकवर्ष गुजरा कि मैं इस वनमें हूं सच है कि किसमत के लिखे कोई मिटा नहीं सक्ता यही शोचकर मैं चुपकीहूं तव राजा वोला मेरा जी चाहता है कि तुझे अपने घर लेजाऊं वह वोली महाराज मेरे दिलमें यही है पर क्योंकर जाऊं कि तुम्हारा नगर समुद्रपार है तव राजाने वचन दिया कि मैं तुझे लेचलूंगा समुद्र नाँघनेकी फिक्र कुछ मतकर इसतरह लेजाऊंगा कि तुझे मालूम भी न होगा यों दोनोंने आपस में वातेंकर रैन आनन्द से निकाली भोरकी ओर सवेराहोतेही पानी दूसरे कुयें से निकाल उसपर छिड़का फिर वह वँदरियाहो कूद दरख्तपर जाचढ़ी राजा वहीं छिपरहा उसीदम योगी आनपहुँचा वही यत्न योगीने छिन एक वहांसुस्ता खुशीकी जब चलनेलगा तब वह सुंदरी वोली महाराज मेरी एक विनती सुनिये कुछ प्रसाद मैं तुमसे मांगतीहूं सो तुम मुझे दो यहसुन योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसेदिया और यह कहा कि एक लाल यह हररोजदेगा और कभी न कुँभलायेगा इसे तू अच्छीतरह रखना यहसुनकर उसने अपनीचोली में रखदिया और दिल उसका खुशहुआ योगी फिर उसे वन्दरी

वनाके चलागया राजाने फिर कुयेंसे पानी निकालकर उसे नारी वनाया और उसने यह कमलका फूल राजाको दिखाया और कहा महाराज एक अद्भुत चरित्र है कि इसमें से एकलाल रोज निकलेगा यहवात सुन राजाने कहा इसका अचरज नहीं भगवान्की सव कुदरतहै और वह क्या क्या नहीं करती ये वातेंकर रातऐश से काटी प्रभातहुआ तव उस कमलमें से एकलाल गिरा दोनोंने यह तमाशादेखा तव राजानेकहा कि चल अव यहांठहरना उचित नहीं विहतर यह है कि मेरे देशको चल यहवात राजाकी सुनकर वह वोली सुनो महाराज एक मेरी आधीनी मैं पांवपड़ करजोर कहतीहूं कि तुम वड़ेदानीहो ऐसादानी मैंने कहींनहीं सुना ऐसा न हो कि किसी को मुझे दानकरदो मैं दासी हो हरवक्त तुम्हारी सेवाकरूंगी तव राजावोला यह नहींहोसक्ता कि कोई अपनीनारी परपुरुषको दे यह धर्म विरुद्ध और लोक विरुद्धहै इसतरह उसकी खातिरजमा कर दोनों वीरोंको वुलाया वे हाजिरहुये उनसे कहा हमारे देशको लेचलो वीर तख्तपर विठा उनको हवाकी तरह लेउड़े वे तो यों अपने शहरकी तरफ़गये और वहयोगी यहां जो आया और उस सुन्दरीको न पाया तो अचता पचता मनमार मुरझा रह गया निदान राजा अपने नगरके पास आया और सिंहासन से उतर उस राजकन्याका हाथथाँभ शहरको चला रास्तेमें देखा उस ने किसीका एकखूवसूरत लड़का दरवाजेपर खेलरहाहै राजकन्या के हाथमें कमलकाफूल देखकर वहलड़का रोनेलगा और विलक विलकवोला कि मैं यहफूललूंगा राजाने कमल उसके हाथसे ले लड़केको दिया लड़का फूलले हँसताहुवा अपने घरमेंगया राजा भी अपने मंदिरमें जाविराजा जव सुवहहुई तव उस कमलकेफूल

अथ नवमप्रदीपः ।

तथास्वजीवबलितो लब्धाप्यतिमनोरमा ॥
कन्याऽर्पितावियोगार्तेदुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् ९

तैसेही निज जीवको बलिदान देनेसे भी प्राप्तभई सुन्दर कन्या को राजाने तिसके विरहसे व्याकुल जनको देदी सो पूरेजन क्या नहीं त्याग देते हैं ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन वसन्तऋतु में टेसू फूला हुआ था मोर मौराया हुआ कोयल कूकरही थी ठण्ढी हवा चल रही राजा विक्रमादित्य अपने बाग़ में बैठाहुआ हिंडोला सुनता था इतने में एक वियोगी किसी देश से भूलाभटका आ निकला राजा के पांवपर गिरपड़ा और कहनेलगा स्वामी मैंने बहुत दुःख पायाहूं और अब मैं आपके शरण आयाहूं और उसकी यह सूरत बनगई थी कि तमाम लोहू बदनका सूखगया था और आंखसे कम सूझताथा अन्न पानी सब छोड़ दिया था किसी तरह धीरज नहीं धरताथा राजा ज्यों ज्यों समझाताथा त्यों त्यों वह विरहसे व्याकुलहोहो रोताथा तब राजा ने कहा तुम अपने जी को सँभालो और इतने दुःखी क्यों हो और अब जो यहां आयेहो तो आपको तसल्ली दो किस क तुम्हारी यह नगई है कहौ किस

वापने वहां एक आग भड़काई है और एक कराही भर घी चढ़ा रक्खाहै वह घी पड़ा खौलताहै और यह शर्त है कि उस कराह में स्नानकर जीता बच निकले उससे कन्याकी शादीकरूंगा यह बात उस योगी से सुनकर मैं भी वहां गयाथा सो मैंने अपनी आंखों से देख हैरानहुआ और वहां हजारों राजा देश देश के लाखों नौकर चाकर साथलेकर आते हैं उनमेंसे जो इरादः करताहै कराहमें गिरकर जलभुन जाता है जबसे शकल उस राजकन्याकी नजर आई है सुधबुध मैंने गँवा अपनी हालत यह उसके इश्कमें बनाई है यह बात सुनकर राजाने कहा आज तुम यहां रहो कल हम तुम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिलादेंगे अपनी खातिरजमा रक्खो यह बात कह उसे स्नान करवा कुछ खिला अपनी सभा में बिठला यह काम किया कि जितने सांगीत विद्यावाले हैं सब तैयार हो हो आज यहां आकर हाजिर होवें और अपना २ मुजरा बजालावें राजा की आज्ञा पा आन हाजिर हुये और अपने २ गुण जाहिर करनेलगे राजा ने उससे कहा कि इनमें से जिस पातुरको तुम चाहो हम तुम्हें दें तुम यहां बैठकर सुख भोग करो और उसका खयाल दिलसे भुलादो यहसुनकर वह वियोगी बोला महाराज सिंह अगर सात दिन उपासकरे तो भी घास न चरे सिवाय उसके मुझे किसी औरकी इच्छानहीं इसीतरह तमाम रात बीती जब तड़का हुआ तब राजाने स्नान पूजाकर उन वीरों को याद किया वे तुर्त आन हाजिर हुये और अर्जकी महाराज क्या हुक्महै हम किस देशको तुम्हें लेचलें राजा बोला जहां यह प्रेमी कहै उसने कहा राज कन्याके नगर में लेचलो जिस जगह वह नग्रहै उसी देशको चलो राजा ने तख्तपर उसको भी बिठला

नगरीको गया और अपने सब आदमियोंको विदाकर आप वहां रात को रहा और आराम भी किया अर्द्धरात्री की समय में एक उत्तर दिशाकी ओर से एक औरत पुकारती है कि कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबरले इस पापी से मुझे बचावे और जी दानदे दममें मरी मरी पुकारतीथी और दममें चुपहोजातीथी उसकी आवाज़ सुनकर राजा चौंकपड़ा ढाल तलवारले अँधेरी रात में उधर अकेला उठचला किसीको खबर न हुई जब वन में राजापैठा वह सुन्दरी फिर रो रो पुकारउठी तब राजा वहीं जापहुँचा देखा कि वहां क्या है तो एक देव उस स्त्री से रति मांगताहै और वह नहीं मानती तब शिर के बाल पकड़ पकड़ ज़मीनपर दे दे पटकताहै राजा ने कहा अरे पापी तू त्रियाकूं क्यों मारताहै नरक से भी नहीं डरता राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारनेलगा राजा ने कहा तू इसे छोड़दे नहीं तो मैं तुझे मारताहूं यह सुनकर वह राजा के सन्मुखहोगया गुस्से से शोरकर बोला यातो तू भाग नहीं तो मैं तुझे खाजाताहूं और तू कौनहै जो यहां आयाहै तब राजा ने गुस्से में आकर एक तलवार ऐसीमारी कि शिर से धड़ उसका जुदा होगया रुंडमुंड से दो वीर निकले राजा के दोनों हाथों से लिपट गये राजा ने छलबलकर उनमें से एकको तो मारा दूसरा रैनभर लड़तारहा भोरहोते भागगया देव जब भागगया तब उस औरतसे राजा ने कहा अब तू जल्दी मेरे साथचल और कुछ जी में अंदेशा न कर वह राक्षस मेरे डरसे भगगया फिर न आवेगा तब वह सुन्दरी बोली कि सुनो भूपाल जो मैं सातद्वीप नवखण्ड पृथ्वी में जहां भागकर छिपरहूंगी पर उससे न बचनेपाऊंगी वह आकर लेजायगा उसके बिनमारे मेरी ज़िन्दगी न होगी उसके पास एक

मोहनीपुतली है वह उसके पेटमें रहती है जहां मैं छिपूंगी उसके बलसे ढूंढ़निकालेगा और उस पुतली में यह ताक़तहै कि एक देव मरने से चार देव बनासक्ती है यह बात उसकी सुनकर राजा उसी वनमें छिपरहा सुबहहोते वह देव आया उस औरत से फिर ख्वाहिश करनेलगा जब उसने न माना तब बाल शिरके पकड़ जमीन पर पटकनेलगा वह तो धाड़करनेलगी उसकी आवाज सुनतेही राजा निकलआया और लड़ने को तयारहुआ देव भी रण्डी को छोड़ राजा के सामनेहुआ चाहे कि राजा को मारे इतनेमें राजा ने ऐसा खांड़ामारा कि धड़ से शिर अलगहोगया उस धड़ से वही मोहनी निकलआई अमृत लेनेचली राजाने उन्हीं वीरोंको आज्ञा करी कि यह जाने न पावे वीर दौड़कर उसे चोटीपकड़ खैंचलाये और राजा के सामने हाजिरकिया राजाने उससे पूंछा कि तू चंपा-वरनी मृगनयनी गजगामिनी कटिकेहरी चन्द्रमुखी नख शिख से ऐसी कि तेरी हँसीसे फूलझड़ते हैं और तेरी सुगन्ध से भौंरा मंड-लाते हैं बता कि तू देव के पेटमें क्योंकर रहीथी तब वह बोली सुन राजा पहिले मैं शिवगणथी एक आज्ञा शिवकी मैं चूकगई तिससे उन्होंने शापदिया मैं मोहनीरूप होगई और इस दैत्य ने महादेवकी बहुत तपस्याकी तब सदाशिव ने मेरेतईं इसको बख्शदई फिर इस पापी ने मुझेलेकर अपने पेट में डाललई तबसे मैं मोहनी कहलाई पर शिवकी आज्ञा ये थी कि इसकी सेवा कीजियो और जो यह कहै सो मानियो यों इसके वशहोकर मैं रहतीथी मेरा माजरा था जो मैंने तुमसे कहा अब यह बैताल मुझे क़ाबूमें कर तुम्हारे पास लायाहै और आदमीकी इतनी कुदरत नहीं थी बल्कि जो तुम भी बहुतेरा उपायकरते तौभी आपकेहाथ न आती अब राजा मैं तुम्हारे

वशहूं राजाबोला अब तू क्याकरैगी तब वह बोली तू राजाहै और मैं मोहनी हूं तेरे पास रहूंगी ज्यों महादेवके साथ पार्वती यह कह वचनदिया एक वहमोहनी और दूसरी वहरंडी जिसे देवसे छुड़ाया था राजाके साथहुई ये बातेंकर परमावती पुतली बोली सुन राजा भोज उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्यने व्याहकिया और जो कुछ आगे राजाके पराक्रमहैं सो मैं कहती हूं तू कानदेकर सुन वह स्त्री दैत्यसे जो लीथी उससे राजाने यों कहा सुन सुन्दरी मैं तुझसे पूंछताहूं देवने तुझे कहांपाया कौनद्वीपहै और कौन नगरहै तेरा और कौन बापहै तेरा नाम ले उसका अपना सब ब्योरा मुझसे कह और सब बातें तुर्त बता देरमतकर सुनकर तेरी व्यवस्था जैसी तू कहेगी वैसाही मैं विचारकरूंगा वह स्त्री बोली महाराज मेरी कथा सुनों कि किस्मत का लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ विधाताने कपाल में लिखदिया है वह नहीं मिटताहै इन्सानको भुगतना होताहै एक ब्रह्मपुरी है समुद्रके पास जिसे सिंहलद्वीप कहते हैं ब्राह्मणकी बेटी हूं एक दिन सखियोंके साथ तालाबपर स्नानकरनेगई थी और वह तालाब ऐसा था कि घने २ दरख्तों से सूरज नजर न आताथा वहां सखियोंके साथ स्नान पूजा करके घरको आतीथी कि सामने से यहराक्षस नजर आया और रति मांगनेलगा ज्यों २ मैं न मानतीथी त्यों त्यों मुझे दुःखदेता था और मैं अनव्याही अपना धर्म क्योंकर गँवाउती कितने दिनोंसे मुझे सताताथा और नरकपड़ने से न डरताथा राजा तुमने मेरा धर्म रक्खा तुझे संसारमें यशहोगा जैसा तुमने उपकार किया वैसीही तू आशीश ले हज़ार वर्ष तक जीतारह और किसीके वश न रह तेरा नित्यप्रति सत और तेजबढ़े साहस तेरा ऐसाहो कि कोई न जीते इतनी आशीश जब वह

देखुकी तब उसे बेटी कह राजाने पास बिठालई और मोहनी को भी उठाकर तख्तपर बैठ बैतालों को हुक्म किया कि हमारे नग्र कोलेचलो बैताल उसी वक्त लेउड़े पलमारते महलमें ला दाखिल किया राजाने आतेही दीवानको यादकिया वह मंत्री तुर्त आकर हाजिर हुआ कहा कोई पण्डित सज्ञानी ब्राह्मण ढूंढकर जल्दी लेआ प्रधानने आज्ञा पाय नगर नगर ब्राह्मणको भेजा वह ब्राह्मण एक सुन्दर ब्राह्मण विद्वान् को बुलालाया उस ब्राह्मणका नाम मारकंडेय जब आया प्रधान राजाकेपास लेगया राजाने हाथजोड़ कर कहा एक ब्राह्मण की लड़की हमारेपासहै उसे हम तुमको दिया चाहतेहैं तुम भी यह बात क़बूलकरो ब्राह्मणबोला राजा वह कन्या हमको दो जग में यशलो और आप बड़ाई धर्म लो राजाने यह बात सुनतेही ब्राह्मण को तिलक दे शादी का सामान कर दान दहेज तयारकिया फिर ब्राह्मणको बुला संकल्पकर कन्यादानदे विदा किया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांदशमःप्रदीपः १० ॥

अथ एकादशः प्रदीपः ॥

## द्रष्टुंतुदानिनंयातो ज्ञात्वातत्कारणंतुसः ॥ लक्षदंमणिमासाद्य देवराज्ञेन्यवेदयत् ११

अर्थ। तैसेही राजा विक्रमादित्य एक दानी राजाको देखनेके लिये गया तिसके दान कारणको जानकर लक्ष रुपये रोज़ देने-वाली मणि देवीजी से लाय राजाको दी पराक्रमी राजा ऐसे होते हैं ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य अपनी सभामें बैठकर कहनेलगा कि कलियुग में और भी कहीं कोई दानी है यह सुनतेही एक ब्राह्मण बोला सुन राजा प्रेमको हितकारी तेरे बराबर

तौ साहसी और दानी कोई नहीं पर एक वार्ता मैं कहा चाहताहूं शर्म से कह नहीं सक्ता राजा ने कहा सत्य बात में लाजकाहेकी है तुम हमारे आगे साफकहो हम उस बात में खफ़ा न होंगे वह ब्राह्मण बोला एक राजा समुद्र किनारे रहताहै और सदा धर्म काज करता है जब वह सवेरे स्नान करता है तब लाख रुपये ब्राह्मणों को दान देताहै फिर वह जलपान करता है यह तो मैंने एक उस के दानकी रीतिकही और भी बहुत कुछ दान देताहै ऐसा राजा धर्मात्मा हमने न देखा और न उसके सिवाय दूसरा है यह बात राजा सुनकर राजाके जी में इच्छाहुई कि उसी राजाको चलकर देखिये यों अपने जी में विचारकर बैताल को याद किया बैताल आय तख़्तपर बैठा समुद्र किनारे चला और जब उसके नग्र के पास पहुँचा तब सिंहासन से उतर बैतालको कहा अब तुम देश को जाओ और हम इस राजाकी सेवा करनेपर तय्यार हुये तुम वहां से हमारी खबर लेते रहियो तब बैताल बोला इसका विचार क्या है राजा ने कहा तुझे इस बातसे क्या गर्ज है जाओ हम तुम से जो कहें सोकरो यहबात सुनकर बैताल अपने नग्रकोआया और राजा पैरों २ शहर में दाखिल हुआ जब फिरताहुआ नग्रमें राजा के द्वारे पहुँचा द्वारपालों से कहा कि अपने स्वामी को समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारे द्वारे सेवा करने के लिये खड़ाहै इस की बात ड्योढ़ीदारोंने सुनकर राजासे जा अर्जकी राजा तुर्त सुन- तेही बाहर हँसताहुआ निकल आया विक्रम ने जुहारकी राजा ने जुहार लेकर पूंछा क्षेम कुशल से हो तब बोला आपकी दया से फिर राजा ने कहा किस देशसे आये हो तुम्हारा नाम क्या है और तुम्हारा अर्थ क्या है सब सुनाओ राजा विक्रमादित्य बोला

सुनों महाराज मेरा नाम विक्रम है राजा विक्रमके देशका रहने-
वालाहूं कुछ मेरे जी वैराग्य हुआ इससे आपके दर्शनको आया
हूं आपका दर्शन मैंने किया सब मेरा शोच दूरहोगया राजाबोला
तुम्हें हम क्या रोज़ करदें और कितने में तुम्हारा निर्वाह होगा तब
राजाविक्रमादित्य बोला चार हज़ार रुपयों मे मेरी गुज़रान् होजाय-
गी यह सुन राजा बोला ऐसा क्या काम करते हो जो चार हज़ार
रुपये रोज़ीनः हम तुम्हे दे वह काम हमसे कहो कि हम यह करेंगे
फिर विक्रमबोला जिस राजाके पास मैं रहताहूं उसकी गाढी भीड़
में काम आताहूं इसतरह से चारहज़ार रुपये रोज़ लेकर वहां रहने
लगा जब नौ दस दिन गुज़रे तब राजा विक्रमादित्य अपने मन
मे विचारा कि जो लाखरुपये रोज़ दान करताहै उसका नित नेम
क्या है इसे मालूम किया चाहिये किस देवता का इसे बलहै इसी
शोच में रहनेलगा एक दिन क्या देखता है कि अर्द्धरात्रि के
समय राजा अकेला वन को जाता है यह देखतेही उसके पीछे
पीछे विक्रम भी होलिया इसतरीक-शहर से बाहरहुये एक वन
में पहुँचे, वहां जाकर देखा तो एक देवीका मन्दिर है उस मन्दिर
के बाहिर कराह चढा है और उसके नीचे आग जलरही है और
घी औटता है-और वह राजा तालाब में स्नान करके देवी का
दर्शनपाय उस कराह में कूदपड़ा और पड़तेही भुनगया त्योंही
चौंसठ योगिनियां आन के राजाका तलाहुआ बदन प्रसन्न हो
खानेलगी कंकालिन इतनेमें अमृतले आई और उसके हाड़ोंपर
छिड़का वह राजा राम राम करता उठखड़ाहुआ तब देवीने मंदिर
से लाख रुपयेदिये और वह लेकर अपने घरको आया तब योगि-
नियां अपने धामकोगई यह बातका तमाशा देखकर राजाविक्रमा-

दित्यभी कूदपड़ा और उसीतरह जलगया फिर तुर्त योगिनी दौड़ीं और उसको भी खागई उसीतरह कंकालिन अमृतला इसपर भी छिड़का राजा जीउठा मंदिरसे लाखरुपये उसेभी देवीने दिये रुपये ले फिर दुबारा वह कराहमें गिरा योगिनियां फिर जलाहुआ गोश्त बदनका नोचकर खागईं और कंकालिन अमृत लेआइ छिड़क जिलादिया फिर देवीने दो लाख रुपये दिये गरज इसीतौरसे राजा सातबेर गिरा औ उसी तौरसे रुपये पाये जब आठवींदफ़ा इरादा गिरनेका किया तब देवी ने आनकर उसके शिरपर हाथ धरा और कहा कि जो तुझे चाहिये सो मांग फिर राजा हाथजोड़कर बोला मैं मांगूं जो मांग। पाऊं देवीने कहा जो तेरी इच्छामें चाहे सो मांग वही मैं तुझेदूंगी राजाने कहा देवी जिस थैली में से तुमने रुपये दिये हैं वह थैली मुझे कृपाकर दीजिये यह सुनतेही उन्ने वह थैली दी यह खुशहो उसी राजाके स्थानपर गया और उसके दूसरे दिन फिर राजा वनमें गया और वहां उसने देखा कि न देवीका मंदिर है न कराह है स्थान भंग पड़ाहै यहदशा वहांकी देख शोच में डूबगया फिर जो यादआया तो धाय मारमार रोनेलगा आखिर को लाचारहो उलटा फिर आया महलों में उदासहो सोरहा भोर होतेही सभाके लोग आये राजा को देखा कि बेहाल पड़ा है न हँसता है न किसीसे बोलताहै बल्कि जो कोई राजकाज की बात करता है राजा सुनकर मुँह फेरलेता है यह हालत राजा की देख दीवान ने विनती कर कहा महाराज आपके मन मलीन होनेसे सारी सभा उदास होरही है राजा ने यह जवाब दिया तुम बैठकर दरबार करो मेरा शरीर मांदा है तब प्रधान बैठ राज काजकी बातें करनेलगा और जो कोई आता था अपने मनमें जो चाहता था

विचारता था कोई कोई कहता था कि राजा को कोई मोहगया और कोई कहताथा कि राजा है नहीं पर राजा की व्यवस्था किसी को मालूम न थी इतने में अपने समय पर राजा विक्रमभी आगया और पूंछा कि तुम्हारे मनमें क्या दुःखहै सो कहो क्योंकि मैंने तुम से प्रतिज्ञाकरी थी कि मैं तुम्हारे मुश्किल में काम आऊंगा सो मेरा वचन क्या आप भूलगये मेरे आगे सब व्यवस्था व्योरेवार कहिये तब राजा बोला कि मैं तेरे आगे क्या कहूं पर मेरे जीमें एक है कि प्राण घात करूंगा विक्रमादित्य ने कहा पृथ्वीनाथ एक बेर तो मेरे आगे अपनी बात कहो फिर पीछे और यतन कीजियेगा राजाने कहा एक देवी मेरे पासथी सो मैं नहीं जानता वह कहा गई लाख रुपये मैं नित्य दान किया करता और अब मुझे बड़ा कष्टपड़ा है मेरी नित्यक्रिया निभेगी नहीं इसवास्ते मैं प्राणदूंगा [illegible] देखता कि जिससे मेरा निर्वाह [illegible] ये न होगा तो मेरा जीना संसार में वृथा है यह बात उसकी सुनकर राजा विक्रमादित्य ने वह थैली हाथ दी और कहा महाराज अब स्नान ध्यान कीजिये और इस थैली से जितने रुपये खर्च करोगे कम कभी न होंगे वह सुनतेही खुशहुआ और बैठकर वही थैली हाथसे ले अपने प्रधान को बुलाया उसमें से रुपये निकाल खर्च को दिये और कहा जितने ब्राह्मण सदा दानपाते हैं उनको उसीतरह से दो दीवान मुवाफ़िक़ हुक्म के अपने काम में शुरूहुआ राजा विक्रमादित्य ने कहा महाराज मुझे आज्ञादीजिये तो मैं अपने घर देश को जाऊं बहुत दिन गुजरे हैं तब वह राजा बोला हम आपका गुण कहांतक मानेंगे तुमने हमें जी दानदिया है फिर कहा जो तुम अपने देश

पहुँचो संदेशा हमें भेजदेना कि हम क्षेमकुशल से पहुँचे और ठीक अपना ठिकाना बताजावो जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुँचे तव उसने कहा मैं महाराज विक्रमादित्यहूं अम्बावतीनगरी का राज करता हूं तुम्हारा नाम सुनकर दर्शन के लिये आयाथा सो तुम्हें देखा और चित्त प्रसन्नहुआ तुम अच्छीतरह राज्यकरो और हमें विदा दो तुम्हारा साहस वल धर्म्म हमने देखा यह सुनतेही वह राजा उसके पांवपर गिरा और हाथ जोड़कर कहनेलगा वड़ा अपराधहुआ और मैंने तुम्हारा मर्म न जाना तुमने मेरी सेवाकी सो तुम अपने जीमें कुछ न लाना और जैसा धर्म्म मैंने आपका सुनाथा वैसाही देखा और धन्य है तुम्हारे धर्म्म साहस और पराक्रम को यह कह राजा को तिलक दे विदा किया राजा वीरों को यादकिया वे आन हाजिरहुये राजा विक्रमादित्य अपने नगर में आया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिवन्धेएकादशःप्रदीपः ११ ॥

## अथ द्वादशः प्रदीपः ॥

**तथापरिश्रमाल्लब्धां भिक्षवेद्रव्यपेटिकाम् ॥**
**स्वीयाश्वंतुक्षुधार्ताय दत्वाराजायशोदधौ १२**

तैसेही अत्यन्त परिश्रम से भी प्राप्तभया जो वटुआ राजा ने भिक्षुक को दिया और [illegible] घोड़ा भू[illegible] [illegible]त को खवाया तो तिसने यशको धारण [illegible] न्त [illegible] न राजा विक्रमादित्य शिकारखेलने [illegible] ओर से [illegible] मुसाहि[illegible] राजपुत्र [illegible] सं[illegible] [illegible] अपने जानवर [illegible] उड़ [illegible] में [illegible]

हजार कोस के धावे का तुरंगथा राजा अपने घोड़ेपर सवार था और वह घोड़े छालावा के बराबरथे, राजकुमार अपने अपने शिकारी जानवर बाज बहरी जुर्रा शाहीन कुहीलगड मँगवा मँगवा अपने अपने हाथोंपर लेले साथहुये और राजा ने भी एक बाज अपने हाथपर बिठालिया मीरशिकारों को हुक्म पहुँचा कि जो जो शिकारी जानवर जिस जिसके पास तयारहै लेकर शिकार में हाज़िरहोवे इसतरह बनठनके एक बनकी राहली और वहां जाकर किसी ने बहरी किसी ने बाज किसी ने कुहीं किसी ने शाहीन उड़ाई और उधर राजा ने भी जितने मीरशिकारथे उन्हें हुक्मकिया कि इस जंगल में सब शिकारकरो मैं तमाशा देखूंगा जो शिकार करलावेगा सो इनाम पावेगा और जो शिकार न करलावेगा सो नौकरी से बेतरफहोवेगा। यह बात सुनतेही जितने मीरशिकारकरते थे उन सबों ने उस बनमें चारोंतरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म बहेलियों को किया कि तुम भी शिकार करो इसीतरह सब शिकार करते थे राजा खड़ा तमाशा देखताथा फिर राजा ने भी एक परिंद बाज उड़ाया और आप उसके पीछेलगा। जिधर जिधर वह बाज जाताथा राजा भी पीछाकिये जाताथा इसमें कई कोसों निकल गया देखै तो शामहोगई तब सुर्तआई और फिरकर पीछे देखा तो वहां कोई आदमी नज़र न आया और यहां तमाम फ़ौज राजा की शामहोनेपर शिकार लेलेकर आई राजाको ढूंढ़ा पता न मिला तब नगर में दाखिलहुई और वहां सून्य बन में राजा भटकता फिरताथा और कहीं राह नहीं पाताथा जब अँधेराहोगया और रात बहुतगई एक नदी के किनारेपर पहुँचा उतरकर अपने हाथ जीनपोश बिछा घोड़े को एक वृक्ष में बांध बैठरहा फिर जो देखा तो

क्या है कि वह नदी बहतीआती है फिर निगाहकी तो एक मु
बहाचला आताहै और उसके साथ साथ एक बैताल और यो
एक २ से ऐंचखैंच करतेहुये आते हैं और आपस में यों झग
हैं कि योगी कहताहै बैताल से तूने बहुत मुर्दे खाये हैं और
मुर्दा मैंने अपने औसरपर पाया है तू छोड़दे मैं इसे लेजा
अपना योग कमाऊंगा बैताल बोला भाई मैं अजान नहीं हूं
तू मुझे फुसलावे क्योंकर अपना आहार मैं छोड़ दूं इसीत
आपस में दोनों झगड़तेथे और कहतेथे कि कोई तीसरा श
इसवक्त ऐसा नहीं कि हमारा न्यायकरे फिर योगी कहनेलगा
बैताल तू मेरीबात सुन कल प्रभातकूं हम तुम सभाकरें जो सभ
न्याय चुके वही तुमभी मानलेना और मैं भी इतने में एक
राजाकी ओर बैताल की जापड़ी देखकर दोनों हँसे और क
लगे वह कोई मनुष्य नदी किनारे में नजर आताहै वहीं च
कि वह न्याय निबेड़े यहकह मुर्दा ले दोनों किनारेपर आये रा
को तमाम क़िस्सा सुनाकर कहा कि स्वामी तुम धर्म्मात्माहो
विचारके हमारा न्याय निबेड़ो योगी बोला महाराज मैं कहत
सो आप ध्यान देकर सुनों इस बैताल ने बहुत मुर्दे खाये हैं
यह मुर्दा मैंने अपने दांवपर पाया है यह नाहक़ मुझसे रार
रता है और कहताहै कि मैं तुझे न दूंगा मैं इसे विनती करके
गताहूं और कहताहूं कि यह मैंने तुझसे प्रसाद पाया यह न
मानता राजा ने बैताल से कहा कि तू अपने जीकी भी मुझ
बात कह वह बोला महाराज यह योगी बड़ा मूर्ख है जो इसने
से राह में झगड़ा लगाया मैं हज़ार कोससे इस मुर्देको लेआ
यह मुझ से मांगरहाहै मैं इसे क्योंकरदूं कि मैंने इस मुर्दे के

वहुत कष्ट किया है यह नाहक देखके मन चलाता है मैं क्याकहूं कि जो जो मैंने इसके वास्ते दुःख उठायाहै अब अहार के समय इस दुष्टने आन सताया इसका न्याय तेरे हाथ है क्योंकि तू धर्मात्मा राजा है जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है तव राजा कहने लगा तुम दोनों बड़ेहो प्रसाद में हमें कुछदो हम तुमसे मांगते हैं तव तुम्हारा न्याय चुकादेंगे यह सुन योगी ने हँसकर झोली में से एक वटुआ निकाल राजा के हाथ देकर कहा राजा तू जितना द्रव्य चाहे उतना यह वटुआदेगा इसमें से कभी कम न होगा फिर वैताल बोला राजा मैं तुझे एक मोहिनी तिलक देताहूं इसे जव तू घिसकर टीका करेगा तव सव तुमसे दवेंगे तेरे सामने कोई न होगा ये दोनों ने प्रसाद राजाको दिया उसने हाथ बढ़ाकर लिया और बोला कि सुन वैताल तू इस मुर्देको छोड़दे मेरे घोड़े को खा यह मुर्दा योगी को दे क्योंकि तू भूखा है भूखा न रह और उसका काम भी बन्द न हो यह सुनतेही वैताल घोड़ेको चावगया और योगी मुर्दाले अपना मन्त्र सिद्ध करनेको गया राजाने वीरों को बुला अपने देशको चला रस्ते में एक भिक्षुक सन्मुखसे चला आताथा उन्ने चीन्हा कि राजा साहव आते हैं डरते डरते उस ने सवाल किया कि महाराज आपके नग्रमें मैं वहुत दिन रहा लेकिन कुछ कार्य मेरा सिद्ध न हुआ अव मैं तुमसे कुछ मांगताहूं मेरेतईं दीजिये यह सुनतेही राजा ने वह वटुआ निकाल उसके हाथ दिया और उसका भेद वताया वह आशीशदेता अपने घरको गया और राजा अपने महलों को गया॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिवन्धेद्वादशःप्रदीपः १२॥

अथ त्रयोदशः प्रदीपः ॥

समुद्रतस्तथालब्धान्मण्यश्वान्प्रददौद्विजे ॥
स्वयशोहाऽतुलंभूमौ ख्यापयांमासमर्वतः १३

तैसेही समुद्र से प्राप्त भये मणि अश्वों को राजाने ब्राह्मण के अर्थ तुर्तही दान किये और निज यश सबठौर विख्यात किया॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य ने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मैं यह काम करूंगा जिससे पुण्य होसके और आगेको विस्तारहोवे दीवानने सुनतेही देशदेशको न्योता भेजा जहांतलक राजाकी प्रजाथी उनको बुलाया करनाटक, गुजरात, काश्मीर, कन्नौज, तिलंगान इन नगरोमेभी न्योता भेजा जितने ब्राह्मण थे उन्हें बुलाया और सातोंद्वीप मे न्योताभेजा वहां से राजाओं को तलबकिया फिर एक वीरको पातालके राजाके पास न्योता भेज उसको बुलाया और दूसरे वीरको स्वर्गको रवानेकर देवताओं को न्योता भेज बुलाया और एक ब्राह्मण को बुलाकर कहा कि तुम समुद्रको जाकर हमारी दण्डवत्कहो और निवेदन करो कि राजाने यज्ञारम्भ कियाहै और आपको विनतीकर बुलाया है वह ब्राह्मण तुर्तही वहां से चला और कितने दिनों में सागरके तीर पर जा पहुँचा तो तहां वह देखता क्या है कि कोई मनुष्य न पशु पक्षी केवल जलही जल है तहां यह जी में विचारकर पुकारा कि राजा विक्रमादित्य के यज्ञका न्योता मैं दिये जाताहूं तुम सुन जल्दी पहुँचना इतना कह वह वहां से जब चला तब शहर में एक वृद्ध ब्राह्मण के स्वरूपसे समुद्र उसके पास आया और बोला कि राजाने हमको कैसे बुलाया है तब बोला कि यज्ञमें सब आये हैं

आपभी अवश्यही पधारिये तब समुद्र ने कहा कि मैं चलूं पर मेरे जानेपर जल जो है वह बढ़ैगा तो तिससे हानिहोकर सो मेरीओर से विनती कर राजासे कहना कि मेरे आनेका कुछ भी पछितावा न कर मैं इस सबबसे पहुँच नहीं सकताहूं यह कह समुद्र ने पांच लाल ब्राह्मणको दिये और एक घोड़ा जो सजाभया राजाकी सौगात भेजा आप वहीं रहा और ब्राह्मण विदाहो राजाके पासगया और वे पांचों रत्न राजा को दिये और घोड़ा ला खड़ा किया फिर सब वृत्तान्त वहांका कहा तब तो राजाने प्रसन्नहो कहा कि ये लाल और घोड़ा जोड़ा तुम्हीलेओ यह हमनें तुमको दिया यह कह राजाने उस ब्राह्मणको विदा किया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांशुक्ल देवीसहायसंग्रहीतायां तृतीयभागेमिश्रनिबन्धेविक्रमवर्णनेत्रयोदशःप्रदीपः १३ ॥

अथ चतुर्दशः प्रदीपः ॥

तथापाताललोकात्तु लब्धंमणिचतुष्टयम् ॥
अदायिविक्रमेणाशु विप्रायपरिसीदते १४

तैसेही पाताललोकसे जो चारमणि मिलीं तो तिस विक्रमादित्य करके दुःखी ब्राह्मणको देदीगई एकदिन राजा विक्रमादित्य निज सभामें इन्द्रसमान बैठाथा गंधर्व मधुर मधुर स्वरसे गारहे थे, पातुर नृत्यकर निज निज हावभाव दिखारहीथीं कहीं भाट खड़ेहुये यश वर्णन कररहेथे और किसी ओर हरि, चीता, बाघ, मेढ़े शिकारके लिये तैयारहोरहे थे और जितनी तैयारी राजाओंकी चाहियेंथीं और उस सभामें एकसे एक पण्डित, चतुर और शूरवीर ये सब बैठे थे उनमें राजा भी निज राज्यासनपर इन्द्र के समान बैठाथा और

सब सामान इन्द्र के अखाड़े कैसाथा इसमें राजा ने निज जी में विचारकर पण्डितों से कहा कि तुम एक बात मेरी अधूरी है यह सुन पूरीकरो तब पूछनेपर राजा ने कहा कि स्वर्गलोकका तो राज्य राजा इन्द्रकरता है और मृत्युलोकका पालन मैं कररहाहूं परन्तु पातालका कौन राजा राज्यकरताहै यह मेरेजी में संदेह होरहा है तब पण्डितलोग बोले पातालका राजा शेषनागहै हजार जिसके फनहैं जिसके पास पद्मिनी नागिन है और जहां रोग मृत्यु शोक आदिक कुछ नहीं होता तहां वह निज राजकाज करताहै जिसके बराबर संसार में कोई भी सुखी नहीं है यह कहा सुन राजा को उस शेषराज से मिलनेकी आशाभई तो तिसने निज बेताल को बुलाया वह हाथजोड़ खड़ाहुआ आज्ञा मांगनेलगा तबकहा हमको पातालमें शेषनाग के पास लेचल वह सुनतेही तुरन्त लेचला और शीघ्रही पाताल में शेषनाग के निकट स्थान में पहुँचाया राजा ने दूरसे सुवर्णका मंदिर जो उसका देखा तो वह अचरज कररहा जो जगमगारहा जिसकी चमकके आगे दिन रात कुछ मालूम नहीं होताथा द्वार द्वार पर फूलोंकी बन्दनवार बहारदेरही उससे सब घर घर शोभा है तब राजा निज जी में कुछ डरताहुआसा तिस शेषनागके राजद्वारपर जापहुँचा और द्वारपालों से दण्डवत्प्रणामकर खड़ाहुआ और कुछदेर खड़ाहो उनसे बोला कि आपके राजाजी से निवेदनकरो कि मृत्युलोकका राजा विक्रम आपसे मिलने आयाहै दरबान ब्योरा करनेगया और राजा निज जी में धन्यवाद देताथा कि मैं यहां आपहुँचा धन्यहै और वहां चारोंओर से राम राम कृष्ण कृष्ण कीही आवाज आतीथी और राजमन्दिर से वेदध्वनि कान में सुनी तो राजा परमआनन्दितहुआ उधर वह

दर्वान निज राजा के पास जाय बोला कि महाराज! एक राजा द्वारपर खड़ाहै और द्वारे को हजारहों दण्डवत्‌कर अपनेको धन्यवाद देरहाहै बल्कि जिसे देखता तिसके भी पैरोंपड़ताहै आपके दर्शनकी अभिलाषा से बेचैन हैरानहोरहाहै यह कहतेही शेषनाग द्वारेपर आया तो तिसे देखतेही राजा ने चरणों में गिरकर साष्टांग प्रणामकिया और पैरोंपड़ारहा तब राजा ने उसे उठा कंठसेलगाया और पूछा कि तुम्हारा नाम क्याहै और किस देश से आयेहो यह सुन राजा ने कहा स्वामी विक्रम मेरा नाम है मैं मृत्युलोकका रखवाराहूं आपके दर्शनकी बड़ी अभिलाषाथी सो मन इच्छा पूरी भई आज मुझे करोड़यज्ञका फलमिला और चौंसठ तीर्थ स्नान मानों करलियाहो राजा विक्रमका नाम सुनतेही शेषजी से हिला मिला और उसका हाथपकड़कर निज राजमहल में लेगया और श्रेष्ठस्थान में आसनपर बैठाय उससे क्षेमकुशल पूछी तब कहा कि आपके दर्शन से सब आनन्दमंगल है फिर कहा कि किसलिये आयेहो राह में आते तुमने महाही कष्टपायाहोगा ? राजा सुन बोला महाराज जो कष्ट मुझको मिला वह सब खेद दर्शनकरतेही दूरहोगया फिर उस ने इन राजाको रहने का एक अति सुन्दर स्थानबताया और बहुतसे लोग टहल करनेके लिये लगाये और कहा कि मुझसे भी अधिक सेवा इनकी करना इसतरह पांच सात दिन राजा वहांरहा बाद एकदिन हाथजोड़के कहा पृथ्वीनाथ! अब मुझे आज्ञाहो तो निज नगर को सँभालूं घरजाऊं वहां आपके गुणगाऊं यह सुन शेषनाग ने हँसकर कहा कि अभी घरजानेकी इच्छाहोगई! भला कुछ प्रसाद आपको देतेहैं वह तो लेतेजाइये यह कह चार लाल निकाल राजा के हवालेकिये और उन्होंका

निज निज गुणकहा कि एकमें तो यहहै जितना गहना चाहोगे तितनाही पावोगे और दूसरे से हाथी घोड़े पालकी जो जो सवारी चाहोगे वह वहही तैयार पावोगे तीसरे से लक्ष्मी यथेच्छमांगो सो मिलेगी और चौथे से जो जो भजन हरिभक्तिकरनाहो वहही तुम्हारी परिपूर्णकरेगा ये इन चारों लालों के अलग अलग गुणहैं और राजा को विदा किया तब राजा निज हाथजोड़ खड़ाहो कहने लगा कि मैं आपके गुणोंका वर्णन कहांतककरूं पर आप मुझे दास समझकर कृपारखियेगा यह कह राजा वहां से रुख़्सतहुआ और वीर वेतालों को बुलाय सवारहो निज नगरको आया जब कोसभर शहररहा तो तब वेतालों को छोड़ आप पैरों से चलने लगा फिर देखता क्याहै कि दुर्बल भूखा भिखारी ब्राह्मण उसके पास आय बोला महाराज मैं भूखामरताहूं जो कुछ भी भीख मुझ को देओ तो जाय निज कुटुम्बका पालनकरूं राजा सुन निज जी में चिन्ताकरनेलगा कि कौनसा लाल इसब्राह्मणको देऊं यह विचार कर ब्राह्मण से बोला कि देवता मेरे पास चार लालहैं और चारोंके ये ये गुण हैं जौनसा इनमें से चाहे वहही मैं देऊं तब ब्राह्मण ने कहा कि पहिले अपने घर हो आऊं फिर तुमसे कहूं यह कहकर ब्राह्मण निज घरको आया और राजा वहांहीं खड़ारहा वह घरजाकर अपनी स्त्रीपुत्र बहू इनसे कहनेलगा कि उन चारों लालों में से कौनसा लाल लेनाचाहतीहो सो कहो तो वह ब्राह्मणी बोली कि मालिक ! वह लाललेओ कि जो लक्ष्मीदेवे और सब ख्याल टाल देओ क्योंकि लक्ष्मीहीं से सब सिद्धहोते हैं फिर उसका पुत्र बोला कि पिताजी सामान निज पास नहींहो तो वह लक्ष्मी भी कौन कामकी है जो सामान सहितहो तो राजाकहावे और सब संसार

तिसे शिरनवावै सरंजाम से शत्रु भयभीतहो और संसार में शोभा पावै जो लक्ष्मी भी मिली और इस संसार में आकर जिसने शोभा न पाई तो वह लक्ष्मी किसकामकी है इससे तुम वहही लालले‌ओ जिससे सब सामान आभूषणादि तैयारमिलै और उसके बेटेकी बहू ने कहा कि तुम वह लाललीजो जिसे राँड़ भी पहिरे वह अति सुन्दरी दरशै और विपत्ति पड़ेपर बेच बेच कर बहुतसा धनले और जितना मांगोगे उतनाही उससे पाओगे बस सास खसम मेरेकी न मानो मेराही कहनाकरो यह सुन ब्राह्मण ने निज जी में विचारकिया कि ये तीनों अज्ञानी हैं मेरी तो इच्छा केवल भजन धर्म्मपरहै और नहीं क्योंकि धर्म्म से संसार में सबफल मिलते हैं और धर्मकरने से राजा बलिको पाताललोक मिला और धर्म्म से इन्द्र ने स्वर्गका राज्यपाया और धर्महीसे यह काया अजर अमर होजातीहै और गर्भवास से जन छूटजाताहै इससे सब तुम मेरा धर्म न डुलाओ और मैं भी अपना सत्य नहींछोड़ूंगा इसमें जो हो सो होवे इसीतरह चारों ने चारमतिकी बातेंकही एककी एकने न मानी तब वह ब्राह्मण फिरकर राजा के पास आया और आय सब हाल कहसुनाया कि महाराज मैं तो घरभी गया पर बात कुछ न बनआई अपनी अपनी सब कहते हैं हमारी चारोंकी चारही मतिहैं और आपने खड़ेहोकर हमारेलिये यह महाही दुःखउठाया तिसपर भी हमारा मता न बनआया यह सुन राजा ने कहा कि महाराज! तुम मनमें उदासहो निराश मतहोओ ये चारों लाल अपने घर लेजाओ मैं खुशी से देताहूं क्योंकि जिसमें तुम्हारे कुटुम्बभरका कामचले वहही कामकरो तुम्हारा भी इसीसे कल्याण है निदान राजा ने निज चारों लाल निकाल ब्राह्मणकी भेटकिये ब्राह्मण ले

आशीशदेकर निज घरकोपधारा ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीय भागेमिश्रनिबन्धे चतुर्दशः प्रदीपः १४ ॥

अथ पंचदशः प्रदीपः ॥

**तथैवोड्डानयानंस्वं राजावैश्यायचार्प्पयत् ॥**
**पुनर्दत्तंनजग्राह दुस्त्यजंकिंधृतात्मनाम् १५**

तैसेही राजाने निज उड़नखटोला वनियेको देदिया और फिर लौटादेनेपर उसे उसहीको देदियासो सद वनियों को क्या अदेय है वे सब देदेते हैं ॥ दृष्टान्त ॥ राजा विक्रमादित्यजी की उज्जैन नगरी में सबवर्ण सदा सुखी रहते थे वहांका एक नगरसेठ जिसके पास बहुत धन था और बड़ा प्रतापी था नगरके लोगोंको व्यवहार करने के लिये बहुत माया दिया करता था जो जन उसके पास जाता वह निज मनोरथ से शून्य आताथा उसका एक बेटा रत्नसेन जो बहुत सुन्दरथा और अति विद्यावान् माता पिताओं की टहल करने में निशि दिन रहता उस सेठ के मनमें आई कि कहीं अच्छी कन्या ठहराय इसका ब्याह करदें तो ब्राह्मणों को बुला २ देश २ भेजे और कहा कि कहीं अच्छी कन्याहो वहांहीं का टीका लेके तुम आओ तो तुमको कुछ बहुतसा माल मिलेगा यह कहके कुछ द्रव्यदे ब्राह्मणको विदाकिया ऐसे कई ब्राह्मण देश

[illegible]

तलाशहै यह सुनकर एक जहाजपर सवारहो समुद्रपार जाय वहां उस सेठका ठिकाना पूछकर उसके द्वारपर ठहरा और खबर की कि उज्जैननगरी से एक ब्राह्मण वहां के सेठका आयाहै यह सं

वर सुन उस सेठने उसे बुलाया और दण्डवत्कर आसनदे बिठाया ब्राह्मण आशीश देकर बैठा तो तिससे सेठने पूछा कि किसकारण से आना हुआहै तब ब्राह्मणने कहा कि हमारे सेठके यहां लड़का है उसकी शादी के लिये आये हैं सो जहां कुलीन कन्याहो वहांहीं का टीकालेके जानाहै सेठ यह बात सुनकर बोला मेरी भी यहही इच्छाथी कि कहां व्याहकरूं पर मेरी कन्याके भाग्यसे श्रेष्ठ विधि वरबैठेही मिलगई फिर कहा कि कुछ दिन तुम हमारे घर आराम करो मैं अपना पुरोहित आपके साथ करदूंगा वह जाय लड़के को देख टीका देगा और तुमभी लड़कीको देखलो और उस सेठ से कहो कि हम आंखों से देखआये हैं वह वहां कितने दिनोंरहा और उस कन्याको देख उस सेठके भी ब्राह्मण को साथले उज्जैन नगरी को चला और उस सेठने निज ब्राह्मणसे यह कह दिया कि टीकादे व्याहकी जल्दी भी करआना ये दोनों द्विज वहांसे चले और जहाज़पर चढ़ कितने दिनों में उज्जैननगरी में आनपहुँचे ब्राह्मणने सेठको खबरदी कि मैं कन्या देख आयाहूं और उस सेठ के पुरोहित को भी साथ लायाहूं तो तिस सेठने उस दूसरे ब्राह्मण को बुलाय लड़केको पास बैठाय दिखलाया उसने देखतेही तिलक करदिया और अपने सेठकी तरफ़से हाथजोड़ विनतीकरके कहा कि अब बरातलेकर आप शीघ्र आइये अमुक शाहे लग्नपर विवाह होगा ? यह कह वह उस सेठसे विदाहोकर गया और वहां जा उस सेठसे सब हालकहा सेठ सुनतेही व्याहका सामान तैयार करनेलगा और इधर यहभी बरातकी तैयारी करने में लगा कारखाने में नौबत बजनेलगी और घर २ में मंगलाचार होनेलगे तरह २ की तैयारियांकी जितने कुटुम्बके लोगथे उन सबोंको नये २ जोड़े

पहिनाय वरात के लिये तैयार किये रागरङ्ग गान नृत्य होनेलगा इसतरह सब शहर बिरादरीकी जाफत करते और वरातकी तैयारी करते २ वह विवाहका दिन भी निकटही आनपहुँचा और जाना उन्हें दूर का था तो चिन्ता करनेलगे कि कैसे वहां पहुँचनाहोगा इसका अन्देशा उसके सब भाईबन्धु करनेलगे और शादी की खुशी को भूलगये तो एक शख़्स ने आकर सेठ से कहा कि वर कन्याकी प्रारब्धहै तो इसी शाहेपर विवाह होगा और मैं एकयत्न भी वताताहूं कि जिससे कामहो भगवान् चाहें वह तुम्हें मिलजाय जो कि राजाके पास एक उड़नखटोलाहै उससे जहांचाहो तहांहीं जासक्तेहो राजाने उसे बढ़ई को दो लाख रुपये देकर खरीदाहै वह अब राजा के घरही है तुम जाओ राजा से जो यह मिलजावे तो सब काम सिद्धहो यह सुनतेही प्रसन्नहो राजद्वारपर पहुँचा और द्वारपाल से बोला कि राजासे विनतीकर कहो कि नगर सेठ द्वारेपर हाज़िर है जो आज्ञाहो तो दर्शनपावे तो हुक्महुआ कि बुलालो तब दीवानने आकर कहा चलिये तब उसने दीवान को दण्डवत् प्रणामकर कहा कि महाराज के दर्शन के लिये मैं ज़रूरी कामसे आयाहूं यह सुन मन्त्री ने कहा कि राजा निज महलमें पधारे हैं यह सुनतेही वह अति उदास निराशहो बोला कि काम मेरा ज़रूरी का था कि लड़के की शादी और समुद्रपार बड़ी दूर जाना ज़रूरी है चारही दिन बाक़ीरहे जो वरात नहीं पहुँची तो मेरे कुल के कलंक लगेगा तब वनियें की यह बात सुन मन्त्री ने जाकर राजासे अर्ज़की कि नगर सेठ खटोला मांगने आयाहै तो तुरंतही हुक्महुआ कि शीघ्र देदेओ और भी जो कुछ उसके साथमें मांगे वहही देओ यह आज्ञापाय मन्त्री ने तुर्तही उसे खटोला निकाल

कर दिया और चीजों के लिये भी कहा तो वह बोला सब आनन्द है ऐसे वह खटोला लिये घरआया और निज पुरोहित को बुला लड़का नाई और आप उसपर बैठ वहांसे चला २ कुछ काल में वहां जाय पहुँचा वह देखा सारे नगरभरमें द्वार २ पर बन्दनवार बँधी नित्य २ नये २ मंगलाचार होरहे है और सब बरातकी राह देखरहे है जब लोगों ने देखे तो देखतेही हाथों हाथ उतारे और एक सुन्दर मकान में इनका डेरा लगाया और अपने सेठको खबर दी कि आपका समधी बरात ले आ पहुँचा है तब वह सेठभी उसकी अगवानी करने आया और इन तीन आदमियों को देख अपने जीमें बहुत पछिताया और पूछा कि क्या कारण, जो तीन जने जनेत में आये हो तबतो तिसने निज व्यवस्था कही सुनतेही उस सेठ ने निज गुमास्ते से कहा कि कल व्याह हे आज बरातकी तैयारी सारी भारी रीति के साथ करो कि जिसमें शहरके लोग हँसें नही तैसेही उसने सब सामान तैयार करदिया यह सेठ दूसरे दिन निज बरात सजाकर धूमधाम से व्याहने चला और शुभ लग्नमें विवाह हुआ उस सेठने हाथी घोड़े जोड़े पालकी मियाने जड़ाऊ गहने और बहुतसा दान दहेज दिया वह वहांसे ले सब रख जहाज मे सवारहोकर चला और निज नगरमें आया तो तहीं फिर बहुनसे ब्राह्मण बुलाय जिमाय उनको धन दिया और वह खटोला जो राजा के यहां से लेगयाथा उसे फेरनेको गया जब राजद्वारपर पहुंचा तो द्वारपालसे कहा खबरदेओ उसने कहा सुनतेही राजा ने उसे बुलालिया यह जो कुछ लेगयाथा सो निज राजा के भेट किया और वह खटोला लौटाकर बोला महाराज ! आपके प्रताप सेही यह काम मेरा सिद्धहुआ है राजा ने कहा कि खटोला तूही

लेजाय हम दई चीज़ उलटी नहीं लेते निदान वह फिर लेगया दानी ऐसे होते हैं ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्र निबन्धेपंचदशःप्रदीपः १५ ॥

अथ षोड़शः प्रदीपः ॥

तथाहियतितोलब्धं चित्रकोशमनुत्तमम् ॥
सकृद्दत्तन्तुराज्ञीभ्योदुस्त्यजंकिंनुदानिनाम् १६

तैसे संन्यासी से प्राप्तहुआ जो चित्र लेखन कोश जो उत्तम चित्र लिखित को प्रत्यक्ष दिखाता तिसे रानियों को एक बेर मांगतेही देदिया दानीजनों से क्या नही दियाजावे वे सब कुछ देदेते हैं ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन दो संन्यासी, आपस में यों झगड़ते थे कि कोई कहता कर्म वा मन वड़ा है और एक कहता ज्ञान वड़ा है निदान दोनों झगड़ते २ राजा के पास आये और अपना २ झगड़ा छेड़ा तो राजाने कहा कि अलग २ समझाकर कहो कि किस बातपर मुख्य विवाद होरहाहै तो तिन दोनों में से एक संन्यासी बोला महाराज ! मैं यह कहता हूं कि मन के वश में ज्ञानहै मनही के वश आत्मा है और देहभी मनही के वशहै और भी माया मोह पाप पुण्य ये सब मनसेही होते हैं तथाच और भी जितनी बातें हैं वे सब मनहीं से होती हैं यह मन सबके शरीरका राजा है और जितने अंग हैं वे सब मनकेही आधीन हैं जो जो काम मन, तिनसे कराता वे वह२ही करते रहते हैं, तब दूसरा संन्यासी कहनेलगा कि महाराज ! ज्ञानहै वहही राजा है और मन उसका सेवक है जो निज अमल मन कुछ कियाचाहे तो ज्ञानसे उसका कुछ भी वश नहीं चलसकता मन उसही के काबूमें है और

इन्द्रियां चाहें भी कि कुछ कर्म करवावें पर ज्ञान नहीं करनेदेताहै
जब जनके मनमें दैववशसे उत्पन्न होताहै तो वहमनको मारकर
बाहर निकालदेताहै और पांचों इन्द्रियां भी ज्ञानरूप खड्गसे काटी
हुईही हैं जब मनुष्य से मन और इन्द्री का विकार छूटता तब वह
निर्भय भया इस संसारसमुद्रसे पार होजाताहै ये दोनों उनकी बातें
सुनकर राजा हँसा और बोला कि तुमने कहा सो मैं सब समझा
इसका उत्तर तुम्हें विचारकर देऊंगा फिर कितनी एक देर बाद
विचारकर राजा ने कहा कि सुनो योगेश्वर ! चार वस्तु एक सार
रही है अग्नि जल वायु आकाश, इन चारों से शरीर है और मन
इनका स्वामी है पर मन के वशही में जो ये चलें तो घड़ी पहर में
नाशकरदें परन्तु उनपर ज्ञानही बली है वह मनके विचारको पूरा
नहीं होनेदेता है और जो जन ज्ञानी हो उसकी काया नष्ट नही
होसकती वे इस संसारमें अजर अमर रहते हैं और योगी जबतक
मनको ज्ञानसे न जीते तबतक उसका योग सिद्ध नहीं होताहै ये
बातें राजाकी योगियोंने सुनीं तो निज मनका हठछोड़ा और एक
योगीने निज प्रसन्नतासे राजाको एक खड़िया देकर कहा कि इस
में यह गुण है कि जो २ इससे दिनमें तुम लिखोगे वहही रातको
प्रत्यक्ष अपनी आंखों देखोगे यहकह वे दोनों योगीचलेगये राजा
ने निज जी में अचरज माना कि कहीं यह सत्य होसकती है ?
फिर राजाने एक मन्दिर खालीकरवा बुहराय धुवाके लिपवाकरके
अकेले उसमें जाय बिछौना बिछाय अन्दर दीवारमें मूर्तियें लिखने
लगा तो प्रथम श्रीकृष्णजीकी मूर्ति लिखी फिर सरस्वतीकी पीछे
सब देवताओं की, इतने में सांझहुई कि एकबारगी जय २ शब्द
होनेलगा जो २ देवता लिखे थे वे २ सब प्रत्यक्षही देखे तो राजा

मोहितहुआ और जो २ बातें वे आपसमें करते तिन सबको राजा सुनता रहता पर भयसे किसीको कुछ कह नहीं सकताथा इतने में प्रभातभया और देवताओंने उठ निज२ राहली तो वे पुतलियांहीं रहीं फिर राजाने दूसरी दीवार में हाथी घोड़े रथ पालकी लिखे फिर जब रातहुई तो तिसने सब सामा तैयारदेखा तो देख देख राजा निज जी में अतिही प्रसन्नहोता और तिस संन्यासीको याद कियाकरता था कि कैसा पदार्थ मुझको वहदेगयाहै और जब भोरभया तो फिर वह चित्रका चित्रही रहगया फिर तीसरेदिन राजा ने पहिले एक मृदंग लिखा फिर गन्धर्व लिखा पुनि अप्सरायें भी खैंचीं फिर तो तालवीन, रबाव, तँबूरा, मुरचंग, सितार, पिनाक, बांसुरी, करताल, अलगोजा, ऐसे एक एक साज एक एक मूर्ति के हाथ में देकर लिखी जब सन्ध्या के समयआया तो प्रथम एक सादा शब्दहुआ फिर गन्धर्व अप्सरा प्रकटहो सांगीतरीति से गाने बजाने नाचने लगे और सब साजबाज सातोंस्वरों के साथ होताजाताथा इसी तरह से राजा नित्य नित्य नये नये आनन्द से रातबिताताथा और दिनभर नया नया आनंद लिख लिख कर रातको निरंतर भोगता रहताथा तो तिसनें निज रनवास में जाना तजदिया तब रानियों के जीमें चिंताहुई कि किसकारण से महाराज निज महलों में नहीं पधारते हैं किंतु अलगरहते हैं यह मालूमकिया चाहिये यह विचार रानियें आपस में कर राजा के खोजलेने में तैयारहुईं तो चार रानियां उन सबों में कहनेलगीं कि हमारा जीना भी धिक्कारहै और धर्म कर्म भी सब वृथाही है जो राजा हमको तज अलगहोरहाहै हम यहां विरहकीमारी भारी दुःखभोगरहीहैं यहकह वे रातको सवार हो उस मन्दिर में दाखिलहुईं जहां वह राजा नित्य नित्य नये नये

कौतुकदेखरहाथा तो तिससे ये रानियें हाथजोड़ शिरनाय विनती कर कर कहनेलगीं कि महाराज! ऐसा हमसे क्या अपराधहुआ है जो आपने हम् सबों को विसाराहै यह सुनकर राजा हँसा और कहनेलगा कि सुनो सुन्दरियो तुम्हें किसने सिखायाहै कि जिससे तुम यहां आईं क्या तुमको किसीने कुछ कहा है जो तुम्हारा मुख मलीन दीखताहै राजाकी यह बात सुनकर शिरझुकाय उन्होंने कहा हे स्वामी! जो बातहै वह हम कहती हैं कि हम अबलाहैं और कभी भी दुःखदेखा नहीं है सुखमेंही सब उमरबिताई है अब एकबारही हमसब दुःसह विरहसे व्याकुलहोरही हैं यह हमारादुःख आपके सिवायकौनदूरकरै और किससेकहैं आपने हमेंवचनभीदियाथा कि हम तुमकोकभीभी पीठन देंगे अबएकबारही निश्चिंतहोरहे हेस्वामी! यह विरहहटाओ अबतक तो लाचार हाररही अब हरगिज रहानहीं जाताहै राजा को उनकी ऐसी ऐसी बातें सुनते सुनतेही सवेरा होगया फिर रानियों ने कहा कि महाराज जबसे आपने मंदिरका वासलिया तभी से रनवास सूनाहै यह सबका पाप आपही को लगताहै क्योंकि आप स्वामी हैं फिर राजा हँसकर बोला कि कहो अब जिसमें तुम सब प्रसन्नहो सोही हमकरें और जो मांगो सोही देवें तब तो रानियें प्रसन्नहो बोलीं कि स्वामी मुँहमांगा आपदें तो यह ढेला हमें देदेवें तब सुनतेही राजा ने निज हाथ से वह ढेला देदिया रानियों ने ले सवारहो निज निज महलों में आईं और राजाजी को भी लाचारहो लौटआनाहीपड़ा ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे मिश्रनिबन्धे विक्रमादित्यवर्णनेनाम षोडशः प्रदीपः १६ ॥

---

अथ सप्तदशःप्रदीपः ॥

## विक्रमी विक्रमार्कोऽभून्मृतसञ्जीवनप्रभुः ॥
## यथामृतन्द्विजंराजाऽमृतसेकादजीवयत् १७

विक्रमादित्य मरेके जिवानेमें भी प्रभु समर्थभया जैसे मरेभये ब्राह्मण को राजा ने अमृत से सिंचनकरके जिवाया ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन विक्रमादित्य ने प्रसन्नहोकर रासमण्डली के प्रधानको आज्ञादी कि यह कार्त्तिकका महीना परमपवित्रहै इसमें कुछ हरि भजन मनलगाकर करनाचाहिये इससे शरदपूनो को रासलीला करो प्रधान ने राजाकी आज्ञापाय देश देश के राजा और पंडितो को न्योताभेज बुलवाये और जितने नगर के योगी थे उनको भी बुलवाये और जितने देवता थे तिन सबोको भी निज मंत्रो से आवाहनकिया तव रासहोनेलगा और चारोंओर से जय जय शब्द होनेलगा और राजा एक एककी शिष्टाचार से मनुहार करनेलगा ठाकुरका प्रसाद फूलमाला सबको देतारहा जबराजाने जो देखा कि सब देवताआये और चन्द्रमा नही आया तो निज जी में विचार वेतालपर सवारहोकर चन्द्रलोक को गया वहां जाय सन्मुखहो दंडवत्की और हाथजोड़ बोला स्वामी मेरा क्या अपराध है जोकि आपने कृपा न की और सब पधारे केवल तुम्हारेबिन मेरा काम अधूराहै अब विजयकीजिये और मेरा काम सुधारिये आपको धर्म होगा मुझे इस संसार में यशमिलेगा जो कदाचित् इस काम में विलंबकरेंगे तो मैं हत्यादेऊंगा तब चन्द्रमा ने हँसकर कोमल मधुर वचन से कहा कि राजा मै तुमसे सत्यकहताहूं तुम निज जी में उदास न हो मेरे जानेसे संसार मे अन्धकार होजावेगा इससे मेरा

जाना नहींहोता तुमको मेरा दर्शनभया तुम्हारा काम सफलहोगा तुम निज नगर में जाओ निज काज जो आरम्भ कियाहै तिसे सम्पूर्णकरो इसतरह राजा को समझाय अमृतदे विदाकिया राजा ने निज शीशचढ़ाय लेलिया और दण्डवत्कर निज नगर को पधारा तब राह में देखा कि किसी ब्राह्मणको दो यमकेदूत लिये जातेहैं तो तिसे देख राजा ने जानलिया और ब्राह्मण ने भी राजा को दूरही से देख जानलिया, कि इस राजा से भेट है जब राजा ने उस ब्राह्मणकी आवाज सुनकर कहा, कि भाई तुम कौनहो तब तिन दोनोंने कहा कि हम यमराज के भेजे उज्जैननगरीको गये थे इस ब्राह्मणको ले अपने स्वामी के पास जाते हैं तो राजा ने कहा पहिले इसे हमको दिखादेओ फिर जाना तब दूत राजा को साथ लेकर नगर में आये और जहां उस ब्राह्मणकी देहपड़ी थी उसे दिखाई तो तिसे देखतेही राजा ने कहा कि यह तो हमारा पुरोहितही है फिर राजाने उन दूतों को बातों में लगा नजरबचाय वह अमृत उसके मुख में डालदिया तो वह रामरामनामले उठ बैठा हुआ तो राजाने प्रणामकिया ब्राह्मणने आशीषदी और कहा कि मैंने निज जीवदान आपसे पाया यह देख दूतों ने निज जी में अचरज कर विचारा कि राजा ने यह क्या किया अब यमराज से जाकर क्या कहैंगे निदान उन्होंने जाय सब हाल कहा यमराज सुन चुपहोरहा और राजा ब्राह्मणका हाथपकड़ अपने घरको ले गया और बहुतसा दानदे तिसे विदाकिया राजा का यह यश संसार में फैला ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबंधे सप्तदशः प्रदीपः १७ ॥

अथ अष्टदशः प्रदीपः ॥

## वियोगिनोऽपिसंयोगे विक्रमीविक्रमोह्यभूत् ॥
## वियोगिनंद्विजंकामकन्दलाढ्यंयथाऽकरोत् १८

वियोगवाले विरही के संयोग करने में भी विक्रमादित्य विक्रमी पराक्रमीभया जैसे माधव ब्राह्मणको कामकन्दलासे मिलाकर प्रसन्नकिया ॥ दृष्टान्त ॥ एकमाधव नाम ब्राह्मण जो बड़ाही गुणी जिस की वड़ाई न होसके वह योगीहोकर सारी पृथ्वीपर फिरआया कहीं ठहरकर रहने न पाया मानों कामदेवका अवतार था स्त्री जिसे देखतेही मोहित होजातीथीं वह सब विद्या पढाथा और अत्यन्त चतुर था ऐसा जनलोक में कम पैदाहोताहै वह जिसराजाकी सेवाकरने जाता तहांहीं दश एकदिन तो उसका आदरहोता और जब वह निज गुण प्रकाशकरता तो तिसे राजानिज देशसे निकालदेताथा इसतरह वह देश देश भटकता दुःखपाता कामानगरीमें आन पहुँचा कामसेन वहांका राजा था उसके यहां कामकन्दला एक पातुर थी वहगोया उर्वशीका अवतारथी गंधर्वविद्यामें अतिही चतुरथी वह राजाकी सभा में नृत्यकररहीथी तो माधव भी उस राजद्वारपर पहुँचा और द्वारपालों से कहा कि राजा से जाय हमारा समाचार कहो कि आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आयाहै ड्योढ़ीवान् उसकी बात सुनी अनसुनीकर रहगया वह हारमारकर वहांहीं बैठगया और ज्यों ज्यों मृदंगकी आवाज और गानेका शब्द आताथा त्यों त्योंहीं यह शिर धुन धुनकर कहताथा कि राजा मूर्ख और उसकी सभा भी मूर्खही है जो विचार नहीं करते यहही बात पांच चार बेर कही तो तिस द्वारपालने क्रोधकर ब्राह्मण देखके कुछ नहीं कहा पर

राजाके सन्मुख जाय हाथ जोड़कर कहा कि एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल द्वारपर आनबैठाहै और शिर डुलाकर कहताहै कि राजाकी सभाके लोग अति मूर्ख हैं जो गुणका विचार नही करते हैं तब तिन द्वारपालों से कहा कि जाकर उससे पूछो कि क्यों तू ऐसा कहताहै तब तिसने निज स्वामीकी आज्ञा पाय आय उससे पूछा कि महाराज ने आज्ञादी है कि क्या उनके गुण में दोष है वह बताओ तो तुम्हारा कहना सचमानें उसने कहा कि बारह आदमी जो चार २ तीन तरफ खड़े मृदंग बजाते हैं उनमें पूर्व मुखवाले का एक मृदंगी का अँगूठा नही है इससे समयपर थाप हलकी पड़ती है इससे मैंने सबको मूर्ख कहा है न मानो तो तुम जाकर देखलेओ वे दौड़ेहुये राजा के पास आये और सब बातें सुनाई तो राजाने पूर्व मुखके चारों मृदंगियो को बुलाय एक २ का हाथ देखा तो उन्होमें एकका अँगूठा मोमका बनाहुआ था यह तमाशा देख प्रसन्नहुआ और उस ब्राह्मणको बुलाया वह जा राजा के सम्मुख हुआ जब राजा ने दण्डवत्की तो तिसने आशीष दी फिर शिष्टाचारकर गद्दीपर बैठाया और जैसे वस्त्र आभूषण आप पहिने था वैसेही मँगाकर ब्राह्मणको पहिनाये और कामकंदला को बुलाय आज्ञाकी कि यह महागुणी है इसके आगे तुम अपना गुण प्रकाशकरो जिससे यह प्रसन्नहोवे कामकंदला राजा की आज्ञा पाय अपना गुण प्रकट करनेलगी सांगीत नृत्यका आरम्भ भया शीशेरंगके भरे शिरपर धर मुंहसे मोती पिरोतीहुई हाथों से चट उछालती भई नाचनेलगी सब साज मिलायेहुये गारहीथी इसमें फूलोंकी और इतरकी खुशबू पाकर एक भौंरा उड़ताहुआ उसकी कुचकी भिटनी पर आ बैठा और डंकमारा उसके वदन मे

पीरहुई तव विचारा किजो कुछ भी हरकतकरूं तो ताल भंग हो-
जावे तो मेरे गुणकी हँसीहोगी यह शोच भंडारविद्याकर श्वास
रोकके कुचकी राहसे निकाला पवन लगतेही वह भौंरा उड़गया
माधवने इस गुणको देखतेही कहा कि धन्यहै तुझे और तेरे गुण
को यह कह प्रसन्नहोकर जो वस्त्र और आभूषण राजाने दिये
थे सव उतार दिये यह देख राजा मन्त्री आपस में कहनेलगे कि
देखो इसने कैसी मूर्खताकी है कि इस वेश्याको ये वस्त्र आभूषण
एकवेरही वख्श दिये यह जातका भिखारी हमारे आगे उदारता
दिखाताहै तो राजा ने खफ़ाहोकर ब्राह्मण से पूछा तू इसके किस
गुणपर रीझाहै वह मेरे से कह तव वोला राजा तू मूर्ख और तेरी
सभाभी मूर्ख है जो तेरी सभामें ऐसे गुण जारीकरे और कोई गुण
का विचार न करे इसके कुचपर भौंरा आनवैठाथा सो इसने अ-
पना श्वासरोक कुचकी राह निकाल उड़ाय दिया यह काम देख
सव कुछ मैंने इसको वख्श दिया माधव ने जव यह वातकही तव
राजा लज्जित होरहा और वोला कि इसी समय मेरे देशसे नि-
कलजा जो सुनूंगा कि इस नगर में है तो तुझे वँधवाकर दरिया
में डुववादेऊंगा तव माधवने कहा महाराज ! मुझसे ऐसा क्या अ-
पराध भया जो निज देशसे निकालतेहो राजा वोला जो कुछ मैंने
तुझको दिया वह सव इस वेश्याको देदिया क्या कुछ मेरे पास
देनेको न था जो तू ने दिया यह सुन मनमलीन हो माधव वहां
से वाहर जाय एक दरख़्तके तले व्याकुल खड़ाहो कहनेलगा कि
जो निज वेटेको माताही विषदेदेवे और पिता पुत्रको वेचदेवे और
राजा जो सर्वस्व छीनलेवे तो फिर किसकी शरणलेवें राजा ने
निज नगर से निकाला अव मैं कहांरहूं योंहीं अनेक प्रकार की

चिन्ताकर कामकंदला का नामलेलेकर रोताथा और उधर काम-
कंदलाभी राजासे वहानाकर विदाहुई और एक आदमी दौड़ाया
कि यह ब्राह्मण जाने न पावे उसे लेजाकर मेरे मकानमें बैठा वह
आदमी गया और ब्राह्मण को लेजाकर उसके मन्दिर में बिठाया
इधरसे यहभी तुरन्त जापहुंची दोनों आपसमें प्रेमकी बातें करने
लगे तब ब्राह्मणने कहा कि मुझको राजाने देशनिकाला दिया
है और तू ने अपने घर बुलालिया यह बात जो राजा जानेगा मेरे
प्राण जायँगे तो मैं दुःखसे छूटूंगा पर तुझको भी कष्टदेंगा इससे
ऐसी उचितनहीं है जो जान जातीरहे और जगमें हँसीहोवे प्रेम जो
है वह महाही दुःखकी खानि है जिस जनने प्रेमके पैड़ेमें पांवदिया
उसने कभीभी सुख नहीं पाया ये बातें माधवकी सुनकर कामकं-
दलाने कहा कि अब तो मैं इसपंथमें आगई जो कुछकरे सो भगवान्
इतनाकह सब साज़बाज मँगवाकर अपनी विद्या दिखानेलगी जि-
तनीविद्या उसे यादथी सब दिखाचुकी तब माधवने उनयंत्रोंकेसाथ
अपना भी गुण दिखाया जब थोड़ीसी रातरहगई तब कामकंदला
ने कहा कि तुमने श्रम बहुतकिया अब चलकर आराम कीजिये
यह कह माधव को रंगमहल में लेगई और जितनी खुशीथी सब की
जब जी में जो राजाकी बात यादआई तो सब सुधिजातीरही घब-
राकर माधव ने कहा कि सुन सुन्दरी रात तो आनन्द में बीती पर
अब जो मैं यहां रहूं तो दोनों के प्राण जायँगे इससे कुछ यत्नकी-
जिये जिससे निर्वाहहोवे मैंने निज जी में एक बात विचारी है कि
अब मैं यहां से जाऊं और कुछ उपायकर फिर आय तुझको भी
लेजाऊंगा तू निज जी में ढाढसबांध कि मैं तुझे आकर जरूर ले
जाऊंगा यह वचनदेकर जाताहूं इतनी बात सुनतेही वह तो मूर्च्छा

खाय गिरी और माधव ने उठाली वहां से निकल वन वन फिरने लगा और हाय कामकन्दला हाय कामकन्दला कह कह कर पुकारनेलगा इधर इसेमी सखियों ने गुलाबका नीरछिड़ककर उठाई तब तिसे कुछ होशआया तो वह भी माधव माधव कह पुकारने लगी खाना पीना सोना सब आराम त्यागदिया बहुतेरा सखियां समझातीथीं पर उसके जी में एकभी नहीं आतीथी ज्यों ज्यों गुलाब चन्दन चोवा इतर लगातीथीं त्यों त्यों वह चौगुनी दाह होतीथी किसीतरह भी शीतलता नहीं होतीथी जब कोई माधवका नाम गुण सुनाताथा तब तिसे चैनपड़ताथा इधर माधव भी भटक के निज जी में विचारनेलगा कि अब इस संसारमें कौनहै जिसके पास जावें जो दुःख दूरकरे इसमें यादआया कि सुनते हैं राजा वीरविक्रमादित्य परदुःखहारी है भला उसके पास जावें और देखें कि लोग सचकहते हैं या झूठ यह विचारकर उज्जैननगरीको चला गया वहां लोगों से पूछा कि यहां के राजा से भेट कैसेहोसके तब एक नगरनिवासी बोला कि गोदावरी के किनारेपर एक शिवजी का मठहै वहां राजा नित्य दर्शनकरने आताहै तहां तू जा जो तेरा मनोरथ है वह पूराहोगा यह सुन वह वहांहीं गया और उस मठके द्वारकी चौखटपर लिखा कि मैं विदेशी दीनदुःखी ब्राह्मण विरह से अति व्याकुल तुम्हारे देश में आयाहूं सुनाहै कि राजा परदुःखहारी है जो राजा यह मेरा दुःखमिटाये तो जी रहसक्ताहै नहीं तो तीसरे दिन गोदावरी में गोतालगाकर मरजाऊंगा यह विचार मैंने निज जी में ठानाहै तुम राजा महाराजाहो और सदाही गो ब्राह्मणकी रक्षाकरतेरहेहो अब भी करोगे यह मनकी मैंने कामना प्रकटकी है तो उस राजाका यह नियमथा कि किसी दुःखीका दुःखदूर जबतक

नहीं करदेते तवतक अन्न जल तो क्या दांतनतक नहीं करते जब जो राजा भोरही दर्शन को गया तो दर्शनकर परिक्रमा करने लगा जो राजा ने निज दृष्टि ऊंचीकरके देखा कोई दुःखी निज दुःख लिखगया है तो राजा ने सब बांच महादेव को दण्डवत्कर मन्दिर मे आय आज्ञाकी कि माधव नाम ब्राह्मण हमारे नगर में आयाहै जो कोई उसे ढूंढ़लावे वह मुँहमांगा द्रव्यपावे यह बात सुन नगर के लोग ढूंढ़ने को निकले घाटबाट टोला मुहल्ला गली बाग बगीचा सब नगर ढूंढफिरे पर पता न पाया तो राजा ने निज दूतीको बुलाकर कहा तू तिसे ढूंढ़लावे तो द्रव्यपावे वह यह सुन बोली महाराज ! यह कौन कठिनबातहै मै अभी जाकर पतालगाती हूं यह कह उसने सीधीराह शिवमंदिरकी ली जहां उसने लिखाथा उसके पास जायबैठी तो सांझ समय वह भी भटकताहुआ आन पहुँचा उसने इसे देखतेही जानलिया कि हो न हो यहही वह है क्योंकि मुँहपीला आंशू बहरहे वह वहांआकरबैठगया और एक दम हायकामकंदला कहके पुकारा तो तिसने झटही हाथजापकड़ा और कहा कि मैं तुमको ढूंढ़नेकेलिये राजाकी आज्ञापाकर आई हूं तू जल्दी मेरे साथ चल तेरा मनोरथ पूराहोगा तेरे दुःख से राजा बेचैनहै यह सुनतेही वह उसके साथ हो लिया तो तिसे साथ लिये वह भी राजाके समीप पहुंचके कहनेलगी कि यह वहही वियोगी है जिसके लिये आपने ऐसा दुःख उठाया है तब राजा ने ब्राह्मण से पूछा तू किसके वियोग से ऐसा व्याकुल होरहा है मेरे आगे कहु तब तिसने एक आहकर कहा महाराज ! कामकंदलाके वियोगसे मेरी यह दुर्गति होरही है वह राजा कामसेन के पास है तू धर्मात्मा है मै तेरे पास इसीलिये आयाहूं तू उसे दिलादे तो जीव

बचे यह सुनतेही राजा बोला सुन विप्र ! वह वेश्याहै तू ने उसके प्रेम में अपना धर्म कर्म छोड़ा यह तुझे उचित नहीं है माधव ने कहा महाराज ! प्रेमका पंथ निराला है जो जन प्रेम करते हैं सो अपना धर्म कर्म तप तेज उसी के अर्पण करदेते हैं प्रेमकी अकथ कहानी है मुझसे कही नहीं जाती है राजाने जो ये बातें सुनीं तो तिसे अपने मकान में लेगया और सब रानियों को आज्ञादी कि तुम बनाव शृंगारकर आओ तो रानियां सब शृंगारकर आईं और उस विप्रसे राजाने कहा कि जिसे चाहो उसे इन रानियों में से लेओ और अपने मनका दुःख विसारो और सुखसे चैनकरो उसने जवाब दिया कि महाराज ! मैं आपके आगे सत्य कहताहूं कि मेरी आंखों में वहही बसरही है इससे मेरी दृष्टि में कुछ नहीं आता चातककी तृषा स्वातीकी बूंदसेही बुझती है और जलपर उसकी रुचि नहीं होती है ऐसी प्रेमकी दृढ़ता तिस विप्रकी देख राजा ने निज मनमें विचारा कि इसे लेजाकर कामकंदलाको देदूं बिना उसके इसके मनकी थिरता न होगी तो राजाने यह विचार ब्राह्मणसे कहा हे देवता तुम स्नान पूजनकर कुछ खालेओ तब तक मैं भी अपने लोगोंको बुला तुम्हें साथ लेचलूं और उसे दिला दूं तुम अपने जी में किसी बातकी चिन्ता मतकरो मैंने तुमसे यह वचनहाराहै तब विप्र अपने खानेदाने में लगा और राजाने निज प्रधानको बुलाकर आज्ञाकी कि मेरे डेरे बाहर शहरसे करदे चार घड़ी बाद मेरा कूच कामानगरी को होगा सबको खबरकरो इसमें कितनी एक देरके पीछे राजा तैयारहो विप्रको साथले कूचकर डेरों में जा दाखिलहुआ और जितने राजाके नौकरथे सब रकाब में पैररखके तैयारहुये वहां से कूचदरकूच जाताथा कितनी एक

मंजिलों बाद कामानगरी से दश कोश इधर डेराकिया और उस राजाकोपत्र लिखा कि हम इसलिये आये जो कि कामकंदला पातुर तुम्हारे यहांहै उसे तुम भिजवादो नहीं तो युद्धकी तैयारीकरो यह पत्र लिख एक दूतके हाथ भेजदिया राजाको, खबर भई कि एक दूत राजा विक्रमादित्यका ख़त लेकर आयाहै यह सुनतेहीं राजाने उसे सामने बुलवाया उसने मुजराकर राजाके हाथमें ख़त दिया राजाने उस पत्रको, बांचकर कहा कि अच्छा कहो अपने राजासे चलेआवें हम युद्धकरनेको तैयारहैं तब दूतने आय राजासे कहा महाराज वह लड़नेको तैयारहै तब तो राजा ने निजसेनाको भी लड़नेकी आज्ञादियी फिर राजाके जो जी में आया कि जिस के वास्ते हम आये हैं उसकी भी तो प्रीतिकी परीक्षा लेनीचाहिये यह विचारकर वैद्य का स्वांग बनाय राजा कामानगरी में गया और लोगोंसे कामकंदला का मकान पूछ, दरवाजे पर जा वैद्य हकीम कर पुकारा तब आवाज सुन एक दासी बाहर आ निकल कर पूछनेलगी तुम वैद्यहो तो हमारी नायका का इलाजकरो जो वह अच्छी होगी तो तुम्हें बहुतसे रुपये मिलेंगे यहकह, दासी उसे भीतर कामकंदला के पास लेगई राजा ने देखी कि निर्जीव पड़ी है तब राजाने उसकी नाड़ी देखके कहा कि कोई रोग इसके ऐसा नहीं जो दवासे मिटे केवल, इसका वियोग विरह की बीमारी है वहही इसकी दुर्गतिका कारणहै यह कहतेही कामकंदलाने निज आंख खोल देखा और बोली कि कुछ इसकाइलाज़ तुम्हारे पास हो तो करो तो राजा बोला इलाज तो था पर अब कुछ कहनेकी बात नहीं वह बोली अवश्य कहो तो कहा कि माधवनाम एक ब्राह्मण था उसे हमने उज्जैननगरी में वियोगी दुःखी देखाथा सो वह अब

दुःख पाकर मरगया यह सुनतेही उसने भी हायकर निजदेह छोड़ा यह दशा देख सब घरबाहरके रोनेलगे तब इसने कहा कि कुछभी चिंता न करो इसे मूर्च्छा आगयी है कुछ देरमें सुध होजावेगी तुम इसकी चौकसी करतेरहो मैं जाकर अपने घरसे दवालेआऊं राजा उलटा फिर अपने दल में आया और माधवसे कहा कि ऐसे वह मरगयी तो तिसने भी इतना सुनतेही निज देह छोड़ी यह दशा देखकर राजा निज जी में विचारने लगा कि जिसके लिये इतनी सेना साजकर जिस भूमि में आया उसकी यह दशाभयी ये दो हत्या मेरे शिरपर हुईं इससे अब अपनाभी प्राणरखना उचित नहीं यह निजजी में ठान राजा जीतेजी जलने को तैयार भया तो प्रधानने मनाकिया न माना जो चाहा कि चिता में आग लगावे कि वेतालने आय हाथ पकड़ा और कहा कि काहेको तू वृथा निज जीव खोताहै यह बोला दो जीव मेरी जानके पीछे गये इससे मरना ही भलाहै तब वेताल बोला राजा मैं अमृत लाताहूं तिससे उन दोनोंको जिलादे यहकह झटही वेताल,पातालसे अमृत लेआया और उस ब्राह्मणपर छिड़का, वहजीउठा फिर लेजाकर कामकन्दला पर छिड़का तो वहभी जी उठी और माधव २ पुकारनेलगी और राजाकी सूरत देखकर कहा कि तुम कौनहो कहांसे आयेहो मुझसे कहो तब राजाने कहा कि मैं वीर विक्रमादित्य हूं माधवका विरह दूरकरने के लिये उज्जैननगरी से यहां आयाहूं तू धीरजधर तुम्हें हम माधव से मिलादेंगे यह सुनतेही वह उठ राजा के पांवों पर गिरपड़ी कि राजा यह तुम मुझको जी दानदेवोगे जैसा यश सुनते थे आप वैसेही हो यह सुन राजा वहां से फिर लश्कर में आया और दूसरेदिन फौज ले कामा नगरीपर चढ़ा और वहांके राजासे

युद्धकिया तो तिसने हारमानी और क़बूलकिया कि कामकन्दला को भेजदेंगे और हमने जो युद्धकिया वह आपके दर्शनके वास्ते किया कि किसीतरह आपके चरण इस नगरमें पड़ें यहकह वहांका राजा मुलाक़ातकर निज नगरमें लेगया और बहुतसी भेंट आगे धर कामकन्दला को बुला राजाके आगे खड़ीकिया फिर वहांसे कूचकर निज नगरमें आये और माधव को बहुतसा धनदे बिदा किया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे माधवविरहवर्णनंनामाष्टादशःप्रदीपः १८ ॥

अथोनविंशः प्रदीपः ॥

बुद्ध्यादिगुणमाप्नोति जन्तुर्वैपूर्वकर्मणा ॥
नहिमात्रादिशिक्षातोयथावैविक्रमेक्रमः १९

यहजन निजबुद्धि आदि गुणों को पूर्व जन्म के कर्म सेही प्राप्त होताहै कुछ माताआदिकों से सिखाने सेही नहीं जैसे विक्रमादित्य में क्रम व्यवस्था वृत्तान्त भया ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन राजा वीर विक्रमादित्य ने पूछा कि मनुष्य बुद्धि अपने कर्म से पातेहैं या उनके माता पिता सिखाते हैं सुनकर मंत्री बोला कि महाराज यह नर पूर्वजन्म में जैसा कर्मकरै है तैसा विधाता उसके कर्म में लिखदेताहै तिसी में मानबुद्धि होती माता पिताके सिखाने बुद्धि होतीनहीं कर्म लिखाही फल पाताहै आदमी २ को क्या सिखाये और जो सीखे से बुद्धि हो तो सभीपंडित हों इसमें महाराज कर्म के लिखेमिटती नहीं राजाने कहा कि हे दीवाने दीवान यह क्या कहा यह तो सर्वत्रही प्रसिद्धहै कि जन्मतेतेही लड़का जो २ निज माता पिता के आचरण बोलतेहैं और जो देखताहै

उसी व्यवहार से चलताहै इसमें कर्मकालिखा क्याहै यह सिखाये से सिखताहै और जैसी संगति मे बैठताहै तैसी उसकी बुद्धिहोती है इतनी बात सुन मंत्री बोला कि धर्मावतार आपकी बराबरी हम नहीं करसक्के यह अपने मन में विचार करके तुम समझो कि कर्मका लिखाही फलमिलताहै तब राजाने कहा अच्छा इस बात की परीक्षा ली चाहिये तब राजाने एक महावन मे मंदिर बनवाया कि जहां मनुष्य की आवाज भी न जाय एक अपने बेटे को पैदा होतेही उस मंदिरमें भिजवादिया और उसके साथ एक दाई ऐसी करदी कि आंखों से अंधी कानो से बहरी मुंह से गुंगी वही उसे दूध पिलाती थी और परवरिश करती थी फिर इसी तरह से एक दीवान के बेटे को और एक ब्राह्मण के सुतको एक कोत-वालके पुत्रको जन्मतेही गूंगी बहरी दाई दे उसी मंदिरमे भिजवा-दिया दिन बदिन बढने लगे और ऐसी गाढ़ी चौकी उस मन्दिर के दोदोकोस गिर्द में बैठादी मनुष्य के जानेकी तो क्या सामर्थ्य थी ढोलनकोरकी भी आवाज न जावे इस तरहसे बारह बरस जब बीत गये तब एक दिन ब्राह्मणीने अपने स्वामी से कहा कि एक युग पूरा होचुका और मैने अपने पुत्रका मुंहनही देखा कदाचित् जी निकलजाय तो मन में देखनेकी अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब राजाके निकट जाकर कहो कि महाराज बारहबरस बीतचुके मैंने बेटेका मुंहनहीं देखा अब मेरे जीमें है कि पुत्रको घर सौंपकर दंडीहो तपस्याकरूं यहब्राह्मणीकी बात सुन ब्राह्मण तैयारहो राजा के पास गया राजा ने देखतेही दण्डवत्की और उसने भी अ-सीसदी राजा बोला तुम आनन्दमङ्गल से हो ब्राह्मण ने कहा कि महाराज आपकी कृपासे सब आनन्दमङ्गल है पर मे एक कामना

कर आपके पास आयाहूं यह सुनकर राजा ने कहा कि जो तु-
म्हारा काम है सो कहो तब उस ब्राह्मण ने अपना वह अहवाल
सब कहा सुनतेही राजा ने प्रधानको बुला आज्ञाकी कि उन चार
लड़कों को अब बुलाओ कि बारहवरस होचुके दीवान सुनतेही
आप तुरन्त सवारहो उन लड़कों को लेनेगया पहले उनमें से
राजकुँवर को लेआया नख और केश बढेहुये शरीर तमाम मैला
कुचैला इस वेष से राजा के सन्मुखला खड़ाकिया राजा ने देख
कर कहा कि सुत तुम कुशलसे हो इतने दिन तुम कहां थे और
अब कहांसे आये सब ब्यौरा अपना हमसे समझाकर कहो यह
सुन कुँवर ने हँसकर महाराज से कहा कि आपकी कृपा से सभी
कुशल है और आजका दिन भी कुशलका है जो आपके दर्शन
पाये यह सुनकर अपने मन मे हर्षितहो राजा ने मन्त्रीकी तरफ
देखा मन्त्री उठ हाथजोड़करके बोला कि महाराज यह सब कर्मही
का लिखाहै फिर दीवान के पुत्र को बुलवाया आकर वह भी राजा
के सन्मुख भयानक वेष से खड़ाहुआ जैसे वन से भालु रीछ को
पकड़लाते हैं नख और बाल उसीतरह बढेहुये शरम से नीची ग-
र्दन कियेहुये खड़ाथा राजा ने पूछा कि तुम अपनी कुशल कहो
कहां थे और किधरसे आयेहो तब वह बोला महाराज कुशलक्षेम
कहांहैगी इधर संसार में उपजे है उधर विनशे है जैसे घड़ी भरती
और डुबजाती है नर जानता है दिन जाता है दिन जाने है नर
जाताहै यही जातका व्यवहार है इसमें कुशलक्षेम काहेकीकहूं ये
उसकी बाते सुन राजा ने दीवान से कहा इसे यह किसने सिखाया
है जो कुछ तू ने कहाथा यह सब सचहै यह फल कर्मसेही इसने
पाया फिर राजा ने कोतवाल के बेटेको बुलवाया उसने आनेही

राजाको सलाम किया और हाथजोड़ खड़ाहुआ राजाने कुशल पूछी तब उसने कहा पृथ्वीनाथ दिन रात नगर का पहरा हम देते हैं इसमें भी चोर आन चोरी करता है बदनाम हम होते हैं विना अपराध कलंकलगे तो फिर कुशल काहेकी है राजाने फिर ब्राह्मणके पुत्रको बुलाया जब वह सन्मुखआया राजाने दण्डवत्की उसने मन्त्रपढ़ असीसदी राजाने उसकी कुशलपूछी उसनेकहा कि महाराज आप पूछे हैं मुझसे यह बात तेरे शरीर में कुशल है सो कुशल कहां है मेरे शरीर में दिनबदिन उमर घटती जाती है महाराज कुशल तो तब कहने में आवे कि मनुष्य चिरंजीव होवे जीवन मरण साथहै उसकी क्या खुशीकहूं चारोंकी चार बातें सुन कर दीवान से कहा कि सचहै पढाने से पण्डित नहीं होता पण्डिताई जो कर्म में लिखी होय तो मिले यह कह दीवानके ताईं सब प्रधानका सरदार किया और अपने राजकाजका भार दिया और उन चारों लड़कों के ब्याह करदिये और बहुत धनदौलतदी ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेएकोनविंशःप्रदीपः १६ ॥

अथ विंशः प्रदीपः ॥

**पुराचीनो यथा मन्त्री कार्य्यं कुर्य्यात्प्रभोःश्रमात्॥**
**न तथामन्त्रिणोनव्याअनुभूतंतुविक्रमे २० ॥**

जो प्राचीन पुराना मन्त्री निज स्वामीका काम परिश्रम से करे तैसे नवीन मन्त्री नहीं करें यह विक्रमादित्य में अनुभव किया गया ॥ दृष्टान्त ॥ जिस समय में राजा विक्रमादित्य, शंखको मार राजआसन पर बैठा तब शंख के [illegible] को बुलाकर कहा कि तुमसे मेराकामनहीं [illegible] तू पी[illegible] बुलादे जो राज

काजके योग्यहों तुमसे इस कामका बन्दोबस्त न होगा मैं उनसे सबकाम लेऊंगा तब राजा की आज्ञा पाय बीस आदमी उसी नगर से ढूंढ़कर लेआया कुल में वयसमें सुन्दरता में सबके सब अच्छे थे राजाके सामने खड़ेकरदिये राजा उनको देखतेही बहुत प्रसन्न हुआ और उसीसमय बागे पहना के कहा कि तुम हमारी खिदमत मे सदा हाज़िररहो फिर उसके कई दिनके बाद उनमें से किसी को दीवान किसी को कोतवाल किसीको फौजदार किया गर्ज इसीतरह से हरएकको एक काम दे पुराने लोगों को जवाब दिया और सब नया बन्दोबस्त किया पर एक उस पुराने दीवान को जवाब न दिया दीवान जब अपने घरमे बैठा करता वे सब पुराने लोग आकर हाज़िर हुआ करते आपस मे चर्चा करते कि यह राजा बुद्धिमान्है जो राजाको नियां और बन्दोबस्त यों किया कई दिन के बाद दीवान ने उनलोगों से कहा कि तुम मेरे पास न आयाकरो इसलिये कि काम तो मेरे हाथ तुम्हारा निकलता नहीं और नाहकको राजा सुनेगा तो खफाहोगा और कहेगा कि यह अपने घर में क्या मता किया करता है मैं अपनी बदनामी से डरताहूं तुम कुछ इस मेरे कहनेका बुरा न मानना यह सुनकर उनमें से फिर कोई उसके पास न आया यह अपने मनमें विचार करनेलगा कि ऐसा कुछ विचार कीजिये कि जिसमें राजा संतुष्ट हो रात दिन यही विचार करताथा एक दिन वह प्रधान नदी किनारे स्नान करनेगया वहां स्नानकर कमरभर पानी में खड़ाहुआ जप करता था उस नदी में एक फूल अति सुन्दर कि ऐसा कभी दृष्टिमें न आयाथा बहताहुआ देखा अपना जप छोड़कर आगे बढ़ फूललेकर जी में विचारा कि यह राजाकी भेट करूंगा तो वह

देखकर बहुत खुशहोवेगा वह फूल हाथमें ले खुशी २ अपने
में आ कपड़े दरबार के पहन राजा के पास गया और फूल न
किया राजा फूलले बहुत खुशहोकर बोला कि अपने राजपाट
तुझे प्रधान किया उनने उठके भेटदी और आदाब बजाला
फिर राजाने कहा इसफूलका वृक्ष मुझे लादे अगर लादेगा तो
तुझसे बहुत खुशहूंगा और जो न लादेगा तो अपने नगरसे नि
कालदूंगा यह राजाकी आज्ञाले अपने मन्दिर में आया और
में विचार करनेलगा कि मैंने पूर्वजन्म में ऐसा क्या पाप किय
जो ऐसी सुन्दर वस्तु राजा को दी और राजा ने प्रसन्नहोकर
फिर यह क्रोध किया कर्मकी गति बूझी नहीं जाती कि भला
रते बुराहोवे अकेला बैठ बहुत चिन्ता करनेलगा कि अगर रा
की आज्ञा न मानूं तो देश निकाला मिले और ढूंढ़ने जाऊँ
कहांसे ढूंढ़कर लाऊं जो दुःख पाकर कहींजाऊं और ढूंढ़े न पा
तो और भी दूना दुःखहोगा मैं यह जानताहूं कि काल मेरे निक
आ पहुंचा है इससे अपयश का मरना भलानहीं अगर योंहीं
रनाहै तो वनमें जाऊं जो ढूंढ़े मिलजाय तो लेआऊं नहीं
वहीं मरजाऊं इतनी बातें अपने जी में विचार धीरजधर बैठा अ
पने दीवानको बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढ़ईको बुला
कि एक नाव ऐसी हमें तैयार करदे कि बगैर मल्लाह और बिन
खेवटिये के जिधरको चाहें लेजायें वोही कारीगर बढ़ईको बुल
दीवान ने हाजिरकर दिया बढ़ई ने कहा कि महाराज कुछ मु
खर्चकी आज्ञा होवे तो मैं जल्द बनालाऊं मन्त्री ने दीवान
कहा जितने यह रुपये मांगे उतने इसेदो तो यह जल्द बनाला
रुपये उसे दिये यह घरको लेगया और कितने दिनों के बा

। तैयारकरके खबरदी कि नाव तैयार होचुकी वोहीं दीवानने
ने स्वामी से जाकर कहा महाराज आपने जो नाव बनाने
आज्ञा दी थी सो तैयार है यह सुनतेही दीवान उठ नदी के
ारे आ नाव को देख प्रसन्न हो उस बढ़ई को घोड़ा जोड़ा दे
ं गांव दत्तकर दिया दीवान अपना सरंजाम नाव पर रखवा
ा कुटुम्ब से बिदाहो हाथजोड़कर कहनेलगा कि जो हमजीते
गे तो फिर तुमसे मिलेंगे और जो मरगये तो यही बिदाहमारी
यह यह जब कहकर रुख़सत हुआ तमामघरके लोग फूकमार
लगे फिर यह भी जी भारी कियेहुये उस नावपर बैठा पाल
किस्ती खोलदी जिसतरफ़ से वह फूलबहता हुआ आयाथा
तरफ़ को वह चलाजाताथा और दोनों किनारों के दरख़्तों
देखता जाताथा कितने दिनों में चला २ एक महावन में जा
ा और खाने की जिन्स भी तमाम होगई तब उसने अपने
ं विचारा कि अब नावपर बैठे रहना उचित नहीं जिसकामको
हैं उस कामकी फिकिर कियाचाहिये यह अपने जीमें कहता
और किस्तीपालपर उड़ाये जाताथा कि एक पहाड़ दरमियान
दरिया के नजर आया और उसी पहाड़ से पानी आताथा
ती वहींलगा आप उतरकर पहाड़पर गया क्या देखताहै कि
तहां हाथी गैंडे शेर हिरने दहाड़रहेहैं सिवाय उनकी आवा-
के कोई बात कान नहीं पड़ती सुन २ आवाजें अपने जी में
ाजाताथा इसपर भी आगेही पांव धरता था जब उस पहाड़-
ांघगया वहां जाकर देखे तो एक ऐसाही फूल बहाचलाआता
स फूलको देख जी में ढाढससी हुई कहनेलगा कि ऐसा फूल
भी देखा भगवान् चाहे तो वृक्षभी नजर आने जो २ आगे बैठा

तों तों फूल और भी देखे वह अंदेशा उसके जीमें कमहुआ और दिलमें कुछ करारआया आगे देखता क्याहै कि एक बड़ा पहाड़है और उसके नीचे एक मंदिरहै उस मंदिर को देखकर अपने मन में विचारा कि ऐसा सुन्दर मन्दिर इस जगह बनाहुआहै चाहिये कोई मनुष्य भी हो यह कहताहुआ उस मंदिर के पास जापहुंचा और वहां जाकर देखै तो एक तरुवरमें तपसी जंजीर पांवोंमें बांधे हुये उलटा लटकरहाहै हाड़ मांस चाम सूखकर काठहोगयाहै और उसमें से एक बूंद रक्तकी उस नदी में गिरती है और वह फूलहो वहां से बहता चलाजाताहै ऐसे अचरज को देख जी में यों कहने लगा कि भगवान् की लीला कुछ बुद्धिमें नहीं आती नीचे निगाह करके देखे तो बीसयोगी ऐसेही जटाधारी बैठे हैं और सूख के वे भी खडंख होगये हैं और चारों तरफ उनके दंडकमंडलु पड़े हैं और जिस ज्ञानध्यान में जैसे बैठेथे ऐसेही बैठे हैं यह दशा वहां की देख प्रधान उलटा फिर अपनी नाव पास आया नावपर सवारहो कितनेदिनो में अपने नगरमें आनपहुंचा लोगों ने खबर उसके आनेकी पाई पेशवा लेनेको गये और उसे लेआये जो कोई आताथा मिलकर क्षेमकुशल पूछकर बधाई देताथा घरमें भी उसके नौबत बजने लगी मंगलाचार होनेलगा यह खबर राजाने सुनी और एक प्रधान को भेज दीवान को बुलाया वह आनकरलेगया यह जाकर राजाके पांवप्रर गिरपड़ा राजाने उठ छाती से लगा क्षेम कुशल पूछी और कहा कहांतलक तू गयाथा और कहां ठिकाना उसका तू करआया यह सुनतेही वे फूल जो लायाथा भेटकिये और हाथ जोड़कर कहनेलगा कि महाराज एक अचंभेकी बात है जो मैं कहूंगा तो आप न पतियावेंगे फिर राजाने कहा कि जो

तूने अचंभा देखाहै सो वर्णनकर तब वह बोला महाराज मैं यहां से चलाहुआ एकजंगल में पहुँचा और वहां जाकर एकपहाड़ देखा उस पहाड़ पर जब मैं चढ़ाथा और एक पहाड़ नजर आया इस तरह के पहाड़ लांघ जब मैं आगे गया एक पहाड़के तले सुन्दर मन्दिर देखा जब मैं उसके पास गया तो एक पेड़पर तपसी पांवों में जंजीर बांधेहुये उलटा लटकता हुआ नजर पड़ा मांस चाम उसका सब हाड़में सटरहाहै और रक्त उस देहसे जो टपकता है सो फूल बनकर बहता है और उसके देखा तो बीस तपस्वी आसिनमारे जिस ध्यान में बैठे थे वोंके वोंही रहगये है और जान एकमें भी नहीं यह सुनकर राजा हँसा और मंत्री से कहा कि तू सुन मैं उसका विचार तुझसे कहताहूं कि वह जो तपस्वी शृंखल में लटकता देखा वह तो मेरा देहहै मैंने उस जन्म ऐसी कठिन तपस्याकी थी उसका फल यह कि राज्य मुझे मिला है और वे जो बीस सिद्ध तूने देखे सो बीसों दासहैं ये जो तूने लादिये और उस तपस्या के तेज से मेरे आगे कोई नहीं ठहरसक्ता और उसी बल से मैंने शंख को मारा और यह पूर्वजन्म का लिखाथा इस में दोषमेरा नहीं कुछ जबतलक मैं इस पृथ्वीमें अखण्डराज्यकरूंगा तू तबतक मंत्रीरहेगा तू अपने जीमें चिन्ता मतकर इसमें दोषतेरा भी कुछ नहीं जैसा पूर्वजन्मका लिखाथा सो हुआ और जैसी तब उन्होंने मेरी सेवाकी थी ऐसाही अब उसका फल भोग करेंगे और तब उन्होंने मेरे साथ जी दियाथा इसलिये मैंने उनबीसों को अपने निकट रक्खाहै यह अपना परचा देनेकेलिये तुझसे निठुराई की थी अब तेरा मन पतियाय और तूने हमारा मर्म बूझा क्योंकि सबलोग कहते हैं कि विक्रमने अपने बड़े भाई को मारा

और अपने मकसद को पहुँचा है ये बातेंकर वह राजा के पास चला और गणेश को मनाय राजा के सन्मुख जा खड़ारहा राजा ने दण्डवत् की और वह असीस देकर बोला कि बहुत भूमि फिर आयाहूं आपका यश मुझे यहां लेआया है आप इसलोक में इन्द्रका अवतार हैं और गुणके निधानहैं आपके बराबर दानी संसार में कोई नहीं इससमय में आप दान देनेको राजा हरिश्चंद्र हैं तमाम पृथ्वीमें आपका यश छारहाहै और स्वामी मैं कालका सुत भाट वंशमें आनकर अवतारलियाहै अब तुम्हें यांचनेआया हूं मेरा मनोरथ पूरा करदो मैंने संसारमें फिर कर खूबदेखा कि सिवाय तुम्हारे मेरी आशका पूरनेवाला और कोई नहीं तब हँसकर राजाने कहा कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह जो मैं तेरी कामना पूरीकरूं भाटने कहा यों मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं आप वचन दीजिये तौ मैं खातिरजमा से कहूं तब राजा वचन देनेलगा तब भाट बोला कि महाराज! जो कुछ आप को देनाहै वह अपने सामने मँगाकर देदीजिये मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं है और न इस संसार में मुझे किसी का भरोसा है सो काम मेरा यह है कि आप मुझे मुँह मांगा द्रव्य दीजिये जिससे मैं कन्याका विवाहकरूं बीस वर्ष की कन्या मेरे है इससे आपको यांचने आयाहूं यह सुन राजाने निज मंत्री से हँसकर कहा कि यह जो २ मांगे वह २ ही इसे देओ सोही उसने दश लाख रुपये रोक और हीरे लाल मोती सोने रूपे के गहने थाल भर भरकर दिये और वह ले असीस दे अपने घर में आया जो कुछ लाया था सब ब्याह में लगाया और राजाने पीछे उसके दो जासूस करदिये थे कि तुम देखो कि यह धनको ले जाकर क्या

इसमें दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्मका लिखाहै सोही रहताहै आजसे मैंने अपना प्रधान किया और जिस में राजकाज अच्छा होवे वह कीजो यह बात किसीके आगे मत कहियो इसलिये कि जो सुनेगा राज्यके लोभसे योग कमावेगा ॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयभागेविंशःप्रदीपः २० ॥

अथैकविंशः प्रदीपः ॥

**दत्तोवित्तेऽप्यसौपश्चाद्दद्यादन्यदपिप्रभुः ॥**
**प्रसन्नस्तेनदानेन यथाऽदाद्विक्रमोधनम् २१**

प्रभु समर्थ दान दिये पीछे उस दानसे प्रसन्नहुआ और भी दानदेताहै जैसे विक्रमादित्यने दान दिया॥ दृष्टान्त॥ एक दिन एक भाट दरिद्री खराब हालथा सब पृथ्वीके राजाओं के पास फिर आया था और एक कौड़ी का किसी से उसने फ़ायदा न पाया था जब अपने घरमें आया तो देखा कि बेटी जवान ब्याहने के लायक हुई है यह अपने जीमें चिंताही करताथा कि उसकी भाटिन बोलउठी तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई करलाये सो कहो तब उसने जवाब दिया कि मेरी प्रारब्ध में धन नही है इसलिये कि तमाम राजाओं के पास मैं गया और शिष्टाचार उन्होंने सब किया पर एक दाम हाथ न आया अब मेरे जीमें एक बात आती है राजा वीर विक्रमादित्य बाकी रहगया है उसके पास भी जाकर मांगूं जो मेरे जीका संदेह मिटे फिर वह भाटिन बोली अब तुम कहीं मतजाओ और संतोषकर रहो कर्म का लिखा फल यहीं बैठेपावोगे फिर भाटने कहा कि राजा वीर विक्रमादित्य बड़ा दानी है उसके पास जो अपनी कामना लेगया सो खाली नहीं फिरा

और अपने मकसद को पहुँचा है ये बातेंकर वह राजा के पास चला और गणेश को मनाय राजा के सन्मुख जा खड़ारहा राजा ने दण्डवत् की और वह असीस देकर बोला कि बहुत भूमि फिर आयाहूं आपका यश मुझे यहां लेआया है आप इसलोक में इन्द्रका अवतार हैं और गुणके निधानहैं आपके बराबर दानी संसार में कोई नहीं इससमय में आप दान देनेको राजा हरिश्चंद्र हैं तमाम पृथ्वीमें आपका यश छारहाहै और स्वामी मैं कालका सुत भाट वंशमें आनकर अवतारलियाहै अब तुम्हें यांचनेआया हूं मेरा मनोरथ पूरा करदो मैंने संसारमें फिर कर खूबदेखा कि सिवाय तुम्हारे मेरी आशका पूरनेवाला और कोई नहीं तब हँसकर राजाने कहा कि तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह जो मैं तेरी कामना पूरीकरूं भाटने कहा यों मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं आप वचन दीजिये तो मैं खातिरजमा से कहूं तब राजा वचन देनेलगा तब भाट बोला कि महाराज! जो कुछ आप को देनाहै वह अपने सामने मँगाकर देदीजिये मुझे अपने कर्म का भरोसा नहीं है और न इस संसार में मुझे किसी का भरोसा है सो काम मेरा यह है कि आप मुझे मुँह मांगा द्रव्य दीजिये जिससे मैं कन्याका विवाहकरूं बीस वर्ष की कन्या मेरे है इससे आपको यांचने आयाहूं यह सुन राजाने निज मंत्री से हँसकर कहा कि यह जो २ मांगे वह २-ही इसे देओ सोही उसने दश लाख रुपये रोक और हीरे लाल मोती सोने रूपे के गहने थाल भर भरकर दिये और वह ले असीस दे अपने घर में आया जो कुछ लाया था सब व्याह में लगाया और राजाने पीछे उसके दो जासूस करदिये थे कि तुम देखो कि यह धनको ले जाकर क्या

करताहै उसकी खबर ठीक मुझे लाकरदो। जब वह शादी करचुका और उसके पास एकदिनके खानेको भी न रहा तब उन हरकारों ने जाकर राजाको खबरदी कि महाराज ! उस भाटने ऐसा विवाह बेटी का किया कि इस कलियुग में कोई और नहीं करसक्ता जो कुछ आपके यहांसे धन दौलत लेगया था सो छिनभर में बेटीको व्याहदिया यह सुन राजाने और कई लाख रुपये उसके घर भेज दिये और अपने चित्तमें बहुत प्रसन्नहुआ कि धन्य भाग मेरे हैं जो मेरे राज में ऐसे हिम्मतवाले लोग हैं ॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यां तृतीयभागे एकविंशः प्रदीपः २१ ॥

अथ द्वाविंशः प्रदीपः ॥

## विक्रमीविक्रमार्केण समोऽन्योनमहीपतिः॥ आसीद्यःशंकरात्सद्यःस्वमृत्योर्ज्ञानमाप्तवान् २२

॥ विक्रमादित्य ऐसा पराक्रमी राजा और नहीहुआ जिसने शिव जीके सकाश से निज मृत्युको भी जाना ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन राजा विक्रमादित्य सभामें बैठाथा एकदासी ने आकर अर्ज़ की कि महाराज ! उठिये पूजा का समय जाता है यह सुन राजा ने विचारा कि इसने सत्त्र कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे ज्ञान धर्म पूजा बन नहीं आई इससे उत्तम यह है कि इस राज काजकी माया भुलाय अब योग कमाइये जो कि और जन्म में काम आये यह राजाने अपने जी में विचारा कि धन जन राज पाट मिथ्या समझकर तपस्या करनेको एकबनमें चला और यह विचार करताजाता था कि इस संसार में जीना सबेरे की ओस समानहै और जीनेके भरोसेपर मैंने अपना काम अकारथ गँवाया

यह विचार करताहुआ राजा एक महावनमें जा पहुँचा वहां जाकर देखे तो एक मण्डली तपसियों की बैठीहुई है धूनी एक २ के आगे जग रही हैं आसन मार २ अपने २ ध्यान में लीनहोरहे हैं कोई ऊर्द्धबाहु कोई कपाली आसन कोई पंचाग्नि इसरीतिसे अनेक २ प्रकारकी साधना कररहे हैं और कोई उनमें बैठा शरीर से मांस काट २ होम कररहाहै इसतरह से उनकी तपस्या देख राजा तप करनेलगा आप भी तपस्या करताथा और उनकी भी तपस्या देखता था कई दिनमें तपसियों ने अपना सब शरीर होम दिया उनकी देखा देखी राजा भी अपना शरीर होमनेलगा कई महीने में राजाने एकदिन शिर भी अपना काट होमदिया वहां जो एक शिवका मंदिरथा उसमें से एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपसियोंकी धूनी में से राख समेटकर जुदी २ ढेरी की और फिर जा शिवको खबरदी कि महाराज जो आपने कहा था सो मैं कर आया, तब शिव ने आज्ञा की कि यह अमृत ले जा और उनके ऊपर छिड़क आ यह आज्ञा पाय अमृत ला ज्यों ज्यों छिड़का त्यों त्यों उनमें से एक एक राम राम शिव शिव कह २ उठ खड़ा रहता था सबपर तो उसने छिड़कदिया पर राजाकीधूनी भूलगया और सब तपसी मिलकर शिवकी स्तुति करनेलगे कि महाराज आप भक्तराज है और अनाथ नाथ जिनने आपका शरण लिया तिसका तभी तुमने फलदिया और जहां जहां सेवकों को संकट हुआहै तहां तहांहीं उन के सहायक हुये हो यह स्तुति करके उन सेवकों ने कहा महाराज! एक नृपति भी हमारे साथ तपस्या करता था पर मालूम नहीं कि उसको आपकी आज्ञाहुई कि नहीं यह सुन महादेवने उस गणकी तरफ़ देखा देखतेही उसने

अमृतला जाकर जो धूनी बाकीरहीथी उसपर छिड़का तो राजाभी राम २ कर उठबैठा और हाथजोड़ स्तुति करनेलगा कि महाराज! संसारके सबजीवोंकी आपही सहाय करते हैं और पालनाकरते हैं आप बिना इस संसारसागर से पार कौन उतार सक्ता है जिसने जगमें जन्म ले आपको नहीं पहिचाना उसने निजजन्म निष्फल खोया फिर जितने तपस्वी वहां थे शिवने उनको मुँहमांगा बर दिया और सबको बिदाकिया सबके पीछे जब राजा अकेला रह गया तब उससेकहा जो तेरी इच्छामें आवे सो तू वरमांग मैं तुझे दूंगा यह सुन राजाने कहा महाराज! आपकी दयासे सबकुछ है पर एक यह मांगता हूं संसार के जन्म मरणसे मेरा निबेड़ा करो जैसे और भक्तोंका निबेड़ा किया तैसे मुझसे परमपापी आधीन दीनको तारो यह राजाकी विनती सुन दयाकर शंकरजी ने हँस कर कहा कि तेरे समान कोई कलिकाल में नहीं और तू ज्ञानी योगी दाता साहसी तपस्वी है तथा राजाओंका उद्धार करनेवाला है और मैं तुझसे कहताहूं कि अब जाकर तू निज राजकाज कर जब तेराकाल निकट आवेगा तब तू मेरेपास कैलास में विराज-मान होगा यह मैंने तुझको वचन दिया है इस से अब तू जाकर मृत्युलोक में राज्यकर फिर राजा करुणा करके बोला महाराज! संसार में तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहींजाते यातो अब आप मुझे निस्तारो नहीं तो मैं निजजीव खोता हूं तब हँसकर शंकरजी ने कहा कि जो तू जीखोवेगा तो यम तुझे मृत्यु बिना हाथसे न छुवे-गा और फिर आयुर्बल के दिन भोगने पड़ेंगे इससे तूजा उठ मेरा वचन जी में रख इतना कह शिव तो कैलासको गये और राजा के हाथमें कमलका फूलदे यह कहगये कि जब यह कमल मुर्झा-

यगा तब तू जानियो कि मैं छः महीने में मरूंगा फूल ले राजा अपने नगर को आया और मन के विचार किसी से न कहा कितने एक वरस पीछे वह कमलका फूल मुर्झागया तब राजाने जाना कि छः महीने में मरूंगा जितना कुछधन और दौलत थी सो ब्राह्मणोंको संकल्प करदी स्त्री और पुत्रके खानेको दानकरदी इसतरह दान पुण्यकर राजा सदेह कैलासको चलागया ॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयभागेद्वाविंशःप्रदीपः २२॥

अथ त्रयोविंशः प्रदीपः ॥

## विक्रमीविक्रमार्केण समोऽन्योनमहीपतिः ॥
## येनेन्द्रमुकुटंचापि तत्प्रसादात्समाप्तवान् २३

विक्रमादित्यके समान पराक्रमी पृथ्वीपर कोई नहीं है जिसने इन्द्रका मुकुट भी तिस इन्द्रके प्रसाद प्रसन्न होनेसे पाया ॥दृष्टांत॥ एक समय राजा विक्रमादित्य ने वेतालों को बुलाकर कहा कि पाताल में राजा बलिके पास लेचलो यह सुनते ही वेताल तिसे तुर्तही ले उड़े और दमभरमें पहुँचा दिया राजा उस नगरको देख अचंभे में रहा और मन में कहनेलगा कि ऐसा शहर आजतक कहीं नहीं देखा जो कैलास समान भासमान है धन्य राजा बलि को जो इस नगर का राज्य करता है इसतरह राजा नगर देखता हुआ राजाकी सिंहपौर पर जा खड़ाहुआ और हाथजोड़ विनती करकर द्वारपालों से कहने लगा कि निज राजासे मेरे आने का समाचार कहो कि महाराज ! मृत्युलोक से राजा विक्रम आप के दर्शनको आयाहै यह सुन दरवानने निज राजा के पास खबरदी सुनतेही राजा बलि कहनेलगा कि मैं मनुष्यका मुख न देखूंगा

तब दरवानने आकर राजा से कहा कि तुमको दर्शन न होगा तो राजा विक्रम बोला कि जो राजा निज दर्शन न दें तो मैं यहांहीं रहताहूं तब वह बोला कि तुम तो क्याहो जो राजा इन्द्रसी आवे तब भी दर्शन न पावे फिर कई दिन के बाद राजाने निज शिरको काटडाला यही तमाशा देख दरवानने राजा से खबरदी तो वह नंगे पैरों उठधाया और राजा के पास आय तिसकी ऐसी दशा देख बोला कि क्या अपराध बनआया यह हत्या अब कैसे छूटे यह विचार राजा बलि निज जी में अनेक प्रकारसे पश्चात्ताप करनेलगा कि कैसे अब इसकी जिवारी होवे निदान ऐसेही शोचते तिसका अनुचर वेताल अमृतले पहुँचा और राजापर छिड़का सोंही राजा राम २ कह उठ बैठा बलि ने निज जी में जाना कि इसे मूर्च्छाथी फिर इसे उठा कण्ठसेलगा हिलमिल बहुतसा मणि रत्न माला दे विदा किया और अपने को धन्यवाद दे फिर निज राजकाज करनेलगा॥ इति॥ तथा एकदिन राजा निज राज्यासन पै बैठा सभासदों से वार्त्तालाप करता था कि किसी पण्डित ने कहा महाराज यदि इन्द्रसे भी आपका परिचय मेल होजावे तो अति उत्तम है यह सुन राजा चुपहोरहा और भोर होतेही वेतालों को बुलाके कहा कि इन्द्र की पुरी को लेचलो वे सुनतेही लेउड़े और तुर्तही वहां जा उतारा तो राजा ने जाय इन्द्र को दण्डवत् प्रणाम किया और हाथजोड़े खड़ारहा तो तिसे देख इन्द्रने निज निकट बैठने की आज्ञादी और पूंछा कि कौन किस देशसे किस सिद्धिके लिये आयेहो तब राजा बोला स्वामी विक्रम मेरा नामहै मृत्युलोक का रक्षकहूं यह सुनतेही प्रसन्नहो इन्द्रने तिसे कण्ठसे लगालिया और बोला कि धन्य है तूने निज धर्मराजपन से उस

मृत्युलोकको भी स्वर्गके समान बनारक्खाहै हे विक्रम हम तुझपर प्रसन्न हैं अब तेरा जी चाहे सोही हमसे मांग ले तब राजाने कहा स्वामी आपका दिया सभी कुछ मेरे पास है मैं किसी वस्तु की आशा से आप के पास नहीं आया हूं केवल आप का नामही पण्डितों से सुन दर्शन की अभिलाषा करके आया सो आपका प्रिय दर्शन पाया और सब दुःख गवाँया राजाकी ऐसी बातें सुन इन्द्र बहुतही प्रसन्नहुआ और निज मुकुट झट शिरसे उतारकर ठाट से इस के शिरपर धर करके कहा कि मृत्युलोक का इन्द्र तू है॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयभागेत्रयोविंशःप्रदीपः २३ ॥

अथ चतुर्विंशःप्रदीपः॥

स्त्रीचरित्र वर्णनम्॥

स्त्रियाश्चरित्रंनहिकेऽपिजानते पतिंतुहत्त्वापि भवन्तिसत्यः ॥ विज्ञातमेतत्त्वयिविक्रमेण वृत्तंयथावत्तुपरिश्रमाद्धै २४ ॥

स्त्री चरित्रको ऐसे कौन जन हैं जो जानें क्योंकि वे पतिकोभी हतकर फिर आप उसके साथ सती होती है यहभी वृत्तान्त यथावत् परिश्रम से विक्रमादित्य करकेही जानागया २४ ॥ दृष्टान्त ॥ एक दिन राजा विक्रमादित्य नदी के किनारे दशहरे के नहाने से गया तो तहां क्या देखताहै कि एक बनियें की स्त्री अति सुन्दरी नदी के तीर खड़ीहुई बाल सुखाती है और उसके सामने एक साहूकार बचा बैठा तिलक देरहाहै और आपस में दोनों की सैन चलरही है कभी तो हँसती हाथ नचाती भौं मटकाय बाल सुखाती है और कभी शिरका अंचला छाती से सरकाकर बदन दिखाती है फिर

छिपाती है कभी आरसी दिखा चूम छातीसे लगाती है इसतरह अनेक २ चेष्टाकरती है और वह भी इसीतरह इशारे कररहाथा उन दोनों की हालतें देख राजाने निजजीमें विचारा कि इनका तमाशा देखा चाहिये कि क्याकरते हैं ऐसे राजा निज स्नान ध्यान करता तिसकी ओर भी देखतारहा इतने में वह स्त्री स्नानकर चादर ओढ़ घूंघटकर अपने धामको चली और साहूकार बचा भी उसके पीछे २ चला राजाने एक हरकारे को कहदिया कि इन दोनों का मकान देख सब से वाक़िफ़ हो आ और हमें जल्दी खबर दे जब वह औरत अपने घर में गई तब उसने फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया फिर छातीपर हाथ धर अपने मंदिरमें गई और सेठके बेटेने भी अपनी छातीपर हाथ रक्खा यह खबर हरकारे ने आ राजा को दी राजा भी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पण्डित से पूछा कि कोई त्रिया चरित्र हमें सुनाओ कि हमारा जी सुनने को चाहताहै तब पण्डित ने उत्तर दिया कि महाराज मेरी तो क्या सामर्थ है जो मैं त्रिया चरित्र आपके आगे कहूँ त्रिया का चरित्र और पुरुष का भाग्य ब्रह्मा भी नहीं जानता आदमी तो क्या कुदरत है और यह देखेही बनआवै जुबानसे कहा नहीं जाता यह बात पण्डितसे सुन राजा चुपहोरहा और अपने जी में कहा यह चरित्र देखा चाहिये इतने में शाम होगई राजा उस महलमें गया कुछ खा तुर्तही बाहर निकल आया और उस हरकारे को बुलाकर कहा कि तू इस बातका ब्योरा कुछ समझाहै उसने कहा कि महाराज कुछ मेरे जीमें आयाहै पर आपके आगे कहते शंकाहोती है राजाने कहा कि जो तू समझाहै निडर होकर बयानकर वह बोला महाराज उनने जो शिर खोलकर छाती पै हाथ

रक्खा सो उन्ने कहा जिसवक्त अँधेरी रात होगी तब मैं तुझसे मिलूंगी और उन्ने भी छातीपर हाथरख जवाब दिया कि अच्छा दासकी समझमें यहकुछ आयाहै राजाने कहा तू तो सच समझाहै यही उनका मतलब है मैंने भी बड़ी देरतक घाटपर बैठ उन्होंका हाल मालूम किया है पर अब तू मुझे वहांही लेचल हरकारे ने कहा बहुत अच्छा चलिये राजा हरकारेको लिये उसके मकान पै पहुंचा फिर उसे तो भेजदिया और वहां पर चौबारेके पीछे एक खिड़की थी उसमें से दीपककी ज्योति देखनेमें आतीथी और कभी कभी जो वह जागती थी तो तिसकी झलक भी मालूम होतीथी जब दो पहर रातबीती और खूबअँधेरीहोगई तब वह जाना कि वहही शख्स आपहुँचा तो तिसने निज गहना निकाल एक डिब्बेमें लगाया और ले निकलकर राजा के पास आई और बोली कि प्यारेयार कहीं लेचल तब राजाने कहा कि इस तरहसे मैं नहीं ले चलूंगा क्योंकि तेरा खाविंद जीता है जो वह खबरपावे तो राजा के दरबार में पुकारेगा तो राजा मुझे मारडारेगा इससे तू पहिले उसे मारआव फिर मेरेसाथ निश्चिन्त हो चलना हमतुम निर्भय भोग करेंगे यह सुनतेही तिसने कुछभी विलम्ब न किया तुर्तही घरमें जाय पीतम के कलेजे में जो कटारी मारी मारी तो तिसके प्राण गये फिर आई और जवाहिर का डिब्बा राजाको दिया इस तरह से दोनों नगर से बाहर गये आगे २ राजा और पीछे २ रंडी जब कि नदीके किनारे पर पहुँचे तो राजा वहां खड़ाहुआ और निज जीमें विचारने लगा कि जिसने निज स्वामीही के मारने में विलम्ब न किया तो तिसे दूसरे के मारदेने में क्या शंकाहोगा अब इससे किसी रीतिसे अलगही होना ठीकहै और इसका चरित्रभी

देखलेना कि क्या २ अब ये प्रबलोकरे यह विचार राजाने कहा हे सुन्दरी ! मैं देखूं पहिले इस नदी में कितना जल है जो जल के थल थाह पाऊं तो तुझे भी लेजाऊंगा यह कहकर राजा नदी में जब उस पार जाय पहुंचा तब पुकारकर कहा कि मैं तो जैसे तैसे पार उतर आया परन्तु तुझे नहीं लेजासक्ता क्योंकि पानी अथाह ही है यह कह राजा ने आगेकी राहली तब तिस औरत ने विचारा कि द्रव्य उसके हाथ लगी और स्वामी मेरा मरा खैर अब रात कुछ बाक़ी है फिर घर चलें और निज स्वामी के साथ सती होइये यह कह घर आई और उसके पास जाय हाय २ कर कूक मार २ रोने लगी और पुकारी दौड़ो २ चलो २ मेरे स्वामी को चोर मारकर जाता है और सब मालभी लेगया लोग दौड़े आकर पूछा कि किधर गया तो तिसने सीधी राह बाहरकी बतादी वे ढूंढ़ते २ लाचार हारकरके उलटे लौटआये इधर यह शिर पीट २ रो २ कर पुकार रही थी कि मेरा स्वामी मरा और सुहाग लुटा तब सब लोग उसे समझाने लगे कि यह भगवान्की मायाहै इसमें किसी का वश नहीं है इसके दिन पूरेहोचुके चलदिया और कौन किसीको मार सक्ता है अब तू ढाढ़सबांध अपनी गुजरानकर तब वह बोली अब गुजरान कैसी मैं तो इसके साथ सती होऊंगी लोगों ने बहुतसी समझाई पर इसने न किसी की भी मानी निदान यहही निज जी में ठान नदी किनारे प्यारे मरेको लेकर चली और चिताचिन उसे अपनी गोदी में बैठाय सती होनेलगी तहांके सब लोग उसे देखने को आये राजा भी उधर आय पहुंचा था जब आग लगाई गई और उसके कपड़े जलकर बाल जलनेलगे तब घबराकर उसेछोड़ निकलनेलगी लोग देख २ हँसे और यह चितासे कूद नदी में

जाय घुसी तब तो तिस राजासे चुप नहीं रहागया तो तिससे कहा हे सुन्दरी! यह क्या है वह बोली सुनो राजा इसका मर्म मुझ से क्यों पूछते हैं आप भी अपना घर सँभालें कि क्या २ होरहा है मैं जो निज कर्म में लिखालाई थी सो फलभोगा पर तुझने निज घरका भी भेद न पाया औरोंकी तलाशी लेने चला है हम सात सखियें इस नगरकी हैं उनमें से एक मैं हूं और छः तेरे महलही में हैं यह कह वह तो पानी में तिरगई और राजा जल्दी महलमें आया और छिप के किसी को दिखाई न दिया और एक दिन रात तक वहांही रहा जब दूसरी रात हुई तो आधीरातको उसकी छओं रानियां हाथों में कंचनके थाल लिये मिठाई भोजन भरे महलकी खिड़की से पिछाड़ी फुलवाड़ी में आई उससे आगे एक वनथा उसमें एक मढ़ी तहां एक योगी ध्यान लगाये उनकी ताक में बैठाथा ये छओं रानियां उसे साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करके चरण निकट जाय बैठीं और राजा जो उनके पीछे २ साथथा यह हवाल देखनेलगा जब सिद्ध चेतकर उनसे हँस २ कर बातें करने लगा और जो ये मिठाई पकवान सामान लेगईथीं वह उसने सब भोग लगाया और पानखाकर फिर योगयुगतसे उसने निज एक देहकी छै देह बनाई और अलग २ उन छओं रानियों से संगकिया फिर वे छओं रानियें कुकर्म कराय बिदा हो २ निज २ महल में खिड़की की राहसे निकल के दाखिल हुई राजा यह चरित्र देख निज जी में विचारनेलगा कि इस सिद्ध ने क्या किया जो निज योग जप तप जन्मसे साधन किया सो सब कुसंगसे गवाँया और उनका कर्म धर्म खोया यह विचार कर राजा उस सिद्ध के पास जाय बोला कि आप बड़ेही सिद्ध महात्मा हैं तब सिद्धजी बोले

तू भी अपना भावकह किस लिये आयाहै तब राजा ने कहा कि मुझे आपके दर्शन की तथा एककी छै देह बनानेकी विद्या सीखनी है इतनी जो सुनी तो वह कुछ शङ्कितहो बोला कि इनवातों से आपको कौन कामहै तब राजानें डराकर कहा कि शीघ्र बताव नहीं अभी एककी दो देह तो मैंहीं करदेताहूं तब तो तिसने डरकर राजाको निज योगयुगत सिखाई और राजाने उसे अजमाय भी ली फिर तलवारसे उसकी कई देह करदी और आप निज महलों में पधारा और जहां वे छओं रानियें बैठीथी वहांही आकर बैठा राजाको देखतेही सब उसकी सेवामें लगीं दासी ने पंखा हिलाया किसी ने हाथ मुहँ धुलाया और किसी ने निर्मल जल पिलाया इस तरह सब निज प्रीति राजा से प्रकाश करनेलगीं और ज्यों २ वे प्यार करती थीं त्यों २ ही वह दाह राजा के तन बदनमें दूनी २ उठती थी फिर राजा बोला सुनो सुन्दरियो मैं तो तुम से अत्यन्तही हित करता और तुम किसी दूसरे का ध्यानकरो यह आपको कभी भी उचित नहीं है यह सुनतेही रानियें बोलीं कि महाराज ! हमारे रक्षक तो आपही हैं हम अबला और किसका ध्यान करें हमें तो तुम्हाराही ध्यान आठपहर रहता है आप बाहर जाते हो तब चंदा बिन चकोरकी तरह तुम्हारे मुख देखने को तरसती हैं और जैसे जल बिन मछली तैसे तड़फती हैं और क्षणभर भी अलगहो तो कमलके दल समान कुम्हलाय जाती हैं यहसुन राजा ने निज क्रोधको ठाढसे थांभ कुछ मुसकुराकर कहा कि सच है सुन्दरियो यथार्थही मुझ बिन चैन नहीं है जैसे सिद्ध एक सिद्ध के छै सिद्धों बिन रहा नहीं जाता तो सब मिल बोलीं कि कहीं ऐसा होसक्ता है महाराज आज क्या ऐसा नशाहै जो अनहोनी

कहानी अचरज की कहनेलगे एक देहकी छै देह कहो कैसे हो-सक्ती है भला आप शोचिये तो सही इस बातको कौन मानेगा तब राजा ने कहा कि नहीं तो चलो देखलेओ यह कह छहो को साथले उसी राह से उस फुलवाड़ी में जाय उसी गुफा का मुख खोल दिखलाय कहा कि कहो अब तो जाना कि नहीं यह सुन-तेही रानियों ने नीची गरदनें करलीं और निज २ जी में जान लिया कि राजाने हमारा कर्तव सब देखलिया तब सब चुपहोरही कुछ भी न कहसकीं राजा उन्हें बधके योग्य समझ उनका शिर काट काट उसी गुफा में फेंक मुहँ बंदकर चलाआया और आतेही नगर में ढंढोरा फेरदिया कि जितने ब्राह्मण और उनकी कन्या हैं वे सब यहां हाजिरहों यहसुन सबके सब हाजिरहुये तो जितनेभर रानियों के गहने वस्त्रथे राजाने उनसबोंको पहिराये और जितनी कन्याथी उनको दान दहेज दे ब्याहकर बिदाकीं और आप निज राजकाज करनेलगा॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांशुक्लदेवीसहायसंग्रहीतायां तृतीयभागे मिश्रनिबन्धेविक्रमादित्यवर्णनप्रसंगेस्त्रीचरित्रकथनंनामचतुर्विंशः प्रदीपः २४॥

दृष्टान्त प्रदीपिन्यां मिश्रनिबन्धात्मक तृतीय भागः॥

## षट्कर्णेपुनकर्तव्यं नकर्तव्यंकदापिच॥
## षट्कर्णस्यप्रसंगेनराजाभूद्दुःखितोमहान् १

किसीभी निज गुप्त वृत्तान्तको छै कानोंमें न करना अर्थात् दूसरे से तीसरे को न मालूमहो नहीं तो वह वार्ता षट्कर्ण गता गता छै कानों में गई सो सर्वत्र फैलजाती है इससे षट्कर्णों में निज वृत्तान्त कभी न प्रकाशित करना चाहिये जैसे षट्कर्णों में करने

से राजा महादुःखी होतामया १ ॥ दृष्टान्त ॥ राजा भोजको समस्त विद्याओं से बड़ा प्रेमथा और वह मृतसंजीविनी विद्याकी खोजमें था तो कहीं पतापाया कि वनमें एक महात्मा आय टिके हैं उनको मंत्र यादहै तो राजा घोड़ेपर चढ़के केवल नाईको साथले उनके पासगया नाईको घोड़ा सौंप बाहर ठहराय आप भीतर मढ़ीमें जाय महात्माके चरण ग्रहण कर बोला आप अनुग्रह करके मुझे मंत्र बताइये तब तिनों ने निज मंत्र बताया और वहीं १०८ बेर याद करवाया तो नाई भी उस बातको जानगया था तो तिस मंत्रको सुन २ उसने भी याद करलिया वहां से सीखकर चले तो राहमें राजाने उस विद्याकी परीक्षाके लिये एक दरिद्री ब्राह्मण का देह शून्य देख उसमें प्रवेश किया तो नाई भी ताकमेंथा शीघ्रही अवसर देख राजाके शरीर में घसगया और आप राजा बना घोड़ेपर सवार होचला नगरमें पहुंचतेही इसकी अगवानी भई लोग बड़ीही अभिलाषा कर रहे थे हाथोहाथ इसको राजभवन में लेगये यह उनके साथ राजा भोजके समान वर्तितारहा पर नकल असलमें न मिली मुलम्मेका शरीरही राजाथा और अंतर्य्यामी पुरुषनाई हीथा लोग बनावटकी देख सुरसराहट भी करते रहे पर इसके रुआब के कारण कुछ कह नहीं सके यह हाल रनवासमें भी मालूम हुआ निदान सांझभये महलमें पधारे तो नयेपनसे सादी तरह भीतरगये रानी ने इसका हाल बदला देखकर जी में शंकाकरी और इनको आइये महाराज ऐसाही कहके आदर किया अर्थात् प्रथम श्री न लगाई तो तिसे कुछ अभिमान न हुआ शीघ्रही रानीके पास जाय बैठा और लगा चुपड़ी २ औरसी बातें बनाने तब रानी ने जान लिया कि कुछ औरही बनविटहै निदान जब इस कुजातिने उससे

स्पर्श व्यवहार करना चाहा तो रानी ने हाथजोड़ अर्जकी कि महाराज! आजसे मैंने नियमलिया है कि एकनवीन धर्मशाला बने उसमें अच्छे२ महात्मा पण्डित आदि सब जन आतेरहे और उनके अन्न वस्त्र आदिका यथावत् निबन्ध किया जावे यहकाम पूर्णहो तभी मैं आपसे दर्श स्पर्श करसकूं यह सुन उसने तुर्तही आज्ञाकी और उस कामका आरम्भ किया उधर रानी राजा की खोजमें निपट हैरान उदासीन तनक्षीन मनमलीनरही कुछदिनों में वह मकानभी बनकर तय्यार हुआ और उसमें वैसाही सबका सम्मान होतारहा और रानीने राजाकी खोजके लिये उस मकान के दरवाजे पर ॥ षट्कर्णेपुनकर्तव्यम् ॥ यह समस्या लिखदी तो जो२जन वहां आते वे सब उस समस्याको देखते रहे पर यथार्थ उत्तर किसी से कब होनाथा निदान कुछ कालबीते राजाभी दरिद्री ब्राह्मणके शरीरमें प्रविष्टहुआ नाईके निज देहमें प्रवेश होने तथा रानी के पातिव्रत धर्म भंगहोने के भयसे भीतभया उस मकान में आयपहुँचा और दरवाजे पर उस समस्याको लिखी देख पूर्ण करने लगा ॥ नकर्त्तव्यंकदापिच । षट्कर्णस्यप्रसङ्गेन राजाभूद्दुःखितो महान् ॥ इस उत्तरको रानीने यथार्थ पहिचान राजाको बुलवाया और श्रीमहाराजकह आदरकर बैठाया और दुःखी दरिद्री ब्राह्मण के शरीरमे प्रवेशभया देख निरन्तर दुखियारी भई रोनेलगी राजा भी उस दशामे मोहवशहुआ रोनेलगा तो रानीने फिर धीरजधार उनको समझाय फिर हँसकर बोली राजन् कैसी विद्यासीखे? राजा बोला ऐसी सीखे ॥ षट्कर्णंगतागता ॥ होगई अर्थात् छे कानों में होने से विद्यासीखी भी दुःखदायी होगई रानी बोली आप धीर धरिये कुछ चिन्ता नहीं विद्यासीखी चाहिये कुछ काल में वैसेही

होजावोगे पर अब आपको मेरे मकान में गुप्त रहना चाहिये क्योंकि उस शरीरमें वह हाकिमहै जोचाहै सो करसक्ताहै और न मैं आप से इस शरीर में स्पर्श करसकी हूँ ईश्वर जब उस दुःख से छूटे आपको उस देह में प्रवेशकरावे तभी मेरा आपसे संयोग होगा सो ईश्वर कृपा करेंगे ऐसें कह राजा को गुप्त रक्खा ऐसेही बहुतदिन बीते एक दिन उसने एकतोतेको भींच कर मार दिया और आप रोने लगी नाई राजा जो आये तो रोतीदेख हैरान होबोला रानीजी आज क्यों रोतीहौ वेगबताओ रानीने रो २ कर कहा हाय मेरा तोता अचानकही मरगया मुझे बड़ाप्रियथा मरते समय दो २ बातेंभी नहीं करसका मुझे यह बड़ाही धोखारहा यह सुनतेही नाईठाकुर झटही बाँह चढ़ाकर बोलउठा कि रानीजी यह तो सहजही मेरे वशका काम है यह कह मंत्र पढ़ तोते के शरीर में घसा उधर रानी ने शीघ्रही राजाको कोठे से निकाल कर नाई का देह बताया राजा निज देहमें प्रवेशकर उठ बैठाहुआ नाईजीने निज देहकी और जीवनकी आशतज अवकाशपाय उठकर वन की राहली इससे मनुष्यको चाहिये कि बातको कहने में दूसरे से तीसरा न जानसके ऐसा यत्नरक्खे जिसमें ऐसी हानि न होवे॥ इतिश्री मच्छुक्कदेवीसहायसंगृहीतायांदृष्टांतप्रदीपिन्यांमिश्रनिबंधे तृतीयभागेपट्कर्णप्रसंगवर्णनोनामायंप्रथमःप्रदीपः १ ॥

स्त्रीचरित्रवर्णनम् ॥

## स्त्रियाश्चरित्रंपुरुषस्यभाग्यं देवोनजानाति कुतोमनुष्यः १ ॥

स्त्रीके चरित्र और पुरुषके भाग्यको देवताभी नहीं जानताफिर

मनुष्य कहां से जानै १ इसपर अनेक दृष्टांत हैं प्रथम व्यभिचारिणी स्त्रीके प्रसंग में घृतान्ध ब्राह्मणका दृष्टान्त ॥

अथ द्वितीयः प्रदीपः

**किंत्वंहससिरेकाक! नसर्पोभेकवाहनः ॥**
**कालंनीत्वाग्रसिष्यामिघृतान्धोब्राह्मणोयथा २**

श्रीगंगाजी के तटपर प्रातःकाल सूर्य्योदयमें शीत बहुतथा इससे सर्प जड़वत् होगया तो उसके फणपर एक मेढ़क उछलकर चढ़ गया तो एक कौआ यह आश्चर्य देख हँसा तो सर्पने यह ॥ किंत्वं हससिरेकाक! यह श्लोकपढ़ा अर्थ अरेकाक तू क्या हँसरहाहै यह सर्प मेढ़ककी कुछ सवारी नहीं है केवल शीतसे मैं फण टहला नहीं सक्ताहूं और समयपाकर शीतहटे मैंही इसको भक्षणकर लेऊंगा जैसे घृतान्ध ब्राह्मणने कामकिया था इसपर दृष्टांत एकब्राह्मण का पुत्रथा उसका व्याहहुआ स्त्री आई तो वह व्यभिचारिणीथी अपने बापके घर जन्मसेही किसी कुसंग वशसे कुकर्म करना सीखी तो फिर वैसाही करतीरही जब ससुराल में आई तो उसे पतिके आधीन रहना बुरा जानपड़ा तो उसने प्रथम दिनही यह चरित्रकिया जब उसका पति स्पर्श करनाचाहा तो वह बोली कि काशी पढ़ना ब्राह्मण का धर्म है यज्ञोपवीत में भी भेजते हैं सो तुम काशीजी जाय पढ़आओ तब मेरे हाथ लगाने लायक होओगे ब्राह्मण के यह बात जी में समागई तो शीघ्र लुटियाले काशी को गया वहां बारह वर्ष रह चार वेद षट्शास्त्र चौदह विद्या निधान होकर बड़े चावसे घर आया उधर उसकी स्त्री को फिर शोकहुआ तो दूसरे फिर उसने यह चरित्रकिया कि जब ब्राह्मणने इच्छाकर स्पर्श क-

रना चाहा तो बोली, क्या २ पढ़े बताओ, तो तिसने, प्रसन्नहो अहो भाग्य कह सब विद्या संक्षेपसे सुनाई उसने सुन कहा, कि, यह क्या बकवादकर चले कहो स्त्री चरित्र भी पढ़ा कि नहीं पढ़ा तो ब्राह्मण के होश उड़गये और सूखे से मुखसे बोला कि भाग्यवति ! स्त्री चरित्र तो मैंने न पढ़ा और न सुनाहै और तो सब कुछ जानताही हूं वह बोली छी २ निगोड़े स्त्रीचरित्रही नाहीं पढ़्यो तो कहापढ़्यो कुढ़्यो जाव स्त्री चरित्र पढ़आव फेरि मोसों बोलबतलाइयो, ऐसा कह पीठदे सोरही वह रात्रि उस ब्राह्मणको कोटिकल्प समान काटनीपड़ी निदान सवेरा होतेही फिर दण्ड कमंडलु पोथीबांध काशीजीकी राहली जब मंजिलपर पहुंचा तो एक गांवके निकट कुवां वहां बहुतसी पनिहारिन पानी भरती थीं वहां वहजाय न्हाय धोय बैठा तो उन्होंने कुछ पहिचानकर आपस में चरचाकी कि हे सखियो यह ब्राह्मण तो कल्हके दिन इधरसे गयो वोही जानपरै है इससे यासों कारण पूछो तो सखी बोली हे ब्राह्मण तू काल्हि इधर सों गयो फिरि लौटि काहे आयो तेरी कछु प्रिय वस्तु रहगई जाहि लेवेजाय है वा काहूसे घरमें लड़के उलटआयो अथवा तेरी स्त्रीने तुझे भ्रमाय भेजो है इतनी बात सुनतेही ब्राह्मणने उन स्त्रियोंको परिक्रमाकर साष्टांग दण्डवत् प्रणामकरी और बोला कि धन्यहो आप सर्वज्ञ घट २ की ज्ञाताहो मैं बारहवर्ष काशीजी रहा पर यह परचित्त ज्ञान विद्या न पाई अब मुझे पूर्ण आशाहै कि और भी कुछ मेरा मनोरथ पूर्णहोगा यहकह कहनलगा कि मेरी स्त्री जिस दिनसे मैं ब्याहकर लाया उस दिन से मुझसे बेमन रहती है सो पहिले तो मुझको विद्या पढ़ने के मिससे काशी भेजा फिर मैं विद्या भी पढ बारहवर्ष में आया तो फिर अ [illegible] । मिस ले भेजा

है, सोही अब मैं, जहांकहीं स्त्री चरित्र मिलैगा वहांही से पढ़कर आऊंगा इतनी बात सुनतेही स्त्री बोली, हे ब्राह्मण! तू घबरा न तेरी स्त्री व्यभिचारिणी है वाने अवकाश पायवे को, तोहिं फिर भ्रमाय भेजो है सो तू कहीं जानेको परिश्रम, न कर यह विद्या तो हमही सिखादेवेंगी तू यहांही रहु ऐसे कह उनमे से पहली ब्राह्मणकी स्त्री उससे बोली आव मेरे पीछे २ चलाआव यहकह उसे लेगई और घड़ा रख फिर आय उसके गले लग लगी पुकार २ रोने तो पड़ोसिन सुन २ आय पूछनेलगी तो यों यह मेरा मामाको बेटा भाई बारहवर्ष पीछे काशी पढ कर आयो है यह सुन सब चुपहोरहीं उसने उसके लिये रसोई चढ़ाई और बनाय जिमाय कोठेपर पलँग बिछाय सुवाय रातको आपभी उसकी सेवामें पहुंची पैर दवाये और कामोद्दीपन चेष्टाकी तोउसने उसकी कुमनसा जान उत्तरदिया कि हे वहिन ऐसी कुमति, मनसे कभी न विचारनी चाहिये क्योंकि तूतो मुझे भाई बना चुकी है तब वह बोली हे ब्राह्मण हमारे शास्त्र में मा बहिन भाई भेद दृष्टिसे भिन्न कोई नहीं है यहां तो॥स्वदार परदारेषुयथेच्छंविहरेत्सदा—अपनी पराई, स्त्रियो मे सदा रमण करतारहै यह मुख्य मतहै जो तुम्हे यह शास्त्र सीखना है तो ऐसाही कर नहीं तो मैं तुझको राजमे बँधादेऊंगी यह सुनके बेचारे हारे ब्राह्मणने लाचारहो हरे २ राम २ कह वह काम किया सबेरा हुये फिर उस कुये पर गया, तो दूसरी बनैनी ने कहा तू आधीरातको बाबाजी बनकर मेरे घर चला आइयो ऐसे कह उसे साथ लेजाय घर बताया, और आप शिरसे घड़ा पटक पीड़ लगी आई २ कर२ दर्द २ पुकारने तो घरकोंने औषधि किया, कब आराम होताथा निदान आधीरातको वेही बाबाजी भी आन पहुंचे हाथ देखकर

बोले यह तो चौराहे की फेर में आयगई आराम होना कठिन है सब बोले बाबाजी कोई यत्न बतावो तो बाबाजी विचारकर बोले जो इसकी खाट घरके लोग शिरपर धरकर चलें और मैं झाड़ा देताचलूं तव आराम होवे तो घरके बोले यह तो सहजही बातहै इसमें कहा लगै है यह कह खाट उठा लेचले और बाबाजी ने यथेच्छ झाड़ा फेरा तौ आरामहुआ फिर तीसरी गूजरकी स्त्री बोली आज सांझ समय मेरे उस घरमें आजाना जब वह गया तो तिसने उसे जुदा कर पतिसे कहा कि आंखें बांधकर दूध आज यातो तुम निकालो नहीं मैं निकालती हूं वह बुड्ढा बोला हमहीं निकालेंगे यह कह आय धार निकालने लगा उधर उसने उससे काम करनेकी चेष्टा कियी वह कहने लगा तेरा पति पासहै तो बोली कुछ चिन्ता नही तब लाचार वह करने लगा तो पीठ स्त्री की निज पतिकी पीठसे लगी भई थी तो उसके प्रहार करने के धक्के पतिकी पीठमें लगे तो वह बोला यह कहा होयहै तो बोली बछरो थोवा मारे है और कहा होयहै निदान वह कामकर कर बाहर गया पतिने आंख खोली फिर चौथे दिन कुयेंपर जाय सखियों से सब वृत्तान्त भिन्न २ कहा तो सुनकर मालीकी स्त्री बोली क्या हुआ आंखों के पड़देसे वा अँधेरे में किया तो क्या किया कल्ह तू मेरे बागमें दिन धौले मध्याह्न में खजूर लेने के मिससे चला आइयो वह गया तो उसने माली से कहा इसको खजूर तोड़लादे वह चढ़कर तोड़ने लगा तो तिसने उससे करने की चेष्टा किया वह बोला तेरा पति ऊपर से प्रत्यक्षही देखताहै तो वह बोली इस ही का नाम तो स्त्री चरित्रहै तू निस्संदेह कर तब तो तिसने किया ऊपर से पति देखही रहाथा तो बोला रांड यों कहा करै है तो बोली कुछ नहीं करूं तोहि कहा सूझै

है फिर वह बोला यह पुरुष तुझसे कुकर्म कर रहाहै वह बोली नि:
गोड़े मुँह सँभाल बोल क्या बकताहै ल्याव मैं तोड़ देऊं यह कह
काम करवाय आप अलगहो बोली उतरआव मैं तोड़लाऊं यह
कह आपचढ़ी वह उतरआया तो आप झूठही निज पतिसे बोली
कि यह मर्द तेरी गुदा भंजन क्यों करताहै वह बोला बागवान् बस
उतरआव यह तो इस वृक्षका स्वभावही ऐसाहै यह कह चुपहोरहा
इत्यादि बातें बताय सखियों ने उससे कहा कि यहही स्त्रीचरित्र है
तुझको आगया अब तू निज घर जा तब वह घरआया तो उसकी
स्त्री ने फिर झुंझलाकर पूछा स्त्री चरित्रभी पढ़िआयो तब तो वह
बोला-भलीभांति सीख पढ अजमाय आयेहूं तब तो वह जानी
इसको किसी ने कहदिया तो कपटी श्रेष्ठ आचरणसे रहनेलगी कि
नित्य प्रातःकाल स्नानकर शिवालय में जावे और सब उपचारों
से उनकी पूजाकर प्रार्थना करती थी कि हे शिवजी यातो आप
मेरे पतिको-मारदेओ अथवा इसकी आयु शेषहो तो अन्धाही
करदीजिये इस आचरण को देख ब्राह्मणने विचारा कि (व्यभि-
चारेकुतोभक्तिर्मांसाहारेकुतोदया) अर्थ व्यभिचारमें भक्ति कहां और
मांसाहार में दया कहां ऐसा अचरज कर एक दिन इसके साथ
पीछे २ गया और सब हाल प्रत्यक्ष देखा फिर आय दूसरे दिन
उससे पहिलेही उस शिवालय में जा छिपा और उसने जब पूजन
कर प्रार्थनाकी कि हे शिवजी मेरे पतिको मारो या अन्धाकरो तो
वह बोला घृतंदेहि२ घी खुवाव २ अन्धा होजावेगा यहसुन वह प्र-
सन्नहो घरआई और पतिसे आतेही यह पूछा कि कहो तो आज
चूरमा बनालूं यह बोला बहुत अच्छी बात है नेकी क्या पूछनाहै
तब तो तिसने घी मिलाकर अति उत्तम मलीदा बनाया और ब्रा-

ह्मण ने खाया और खातेही जानबूझकर बोला कि मुझे कुछ धुंधलासा देख पड़ता है न जानें अचानकही यह क्या हुआ वह बोली स्वामिन् गर्मी से आंखें चौंहदा उठीहोंगी मनमें कहा शंकर धन्यहो निदान ब्राह्मण तो घृतान्ध होकर लाठी लिये ढिंढोले मारनेलगा और उसने भी इसे अन्धा जान निज पौली में एकओर टूटी खटिया पै पटक दिया और कहा कि निपूते कुत्ते हांकाकर ब्राह्मण ने कहा जो आज्ञा पौली में पड़रहा तब शाम होतेही एक जार आया तो तिसने कुत्ते के मिस उसके शिरमें ऐसी लट्ठमारी कि खोपड़ी फट गिरा तो ब्राह्मणी शब्द सुन पौली में आई देखे तो यार मरापड़ा है उससे बोली यह क्या किया तब वह बोला कि कुत्ता था उसे माराहै और क्या किया तब तिसे गठरी में बांध एक मजदूर को बुलाय उसके शिरपर गठरी रखके चली जबतक गंगा जी में छोड़के आवे तबतक तिसने एक और यार मारा तो तिसने उकाब देख नौकर से कहा कि अरे यह बोझा तो फिर चलाआया इसे फिर लेचल तब मजदूरी मिलेगी यह कह लेचली और पति से बोली सोरहो तो बोला सो कैसे रहूं यह कुत्ते नहीं सोने देते इन्हें मारलेऊं तब सुखसे सोऊं यह सुन वह जी में कुछ लाचार हुई और आकर देखे तो एकयार और धराहै वह तिसेभी वैसेही लेगई ऐसेही उसने रात भर में कई यार मारे निदान भोर भये जब वह पिछले मुरदार यार को लेचली तो तिसके पीछे २ आपभी लट्ठी लिये चला जब वह पहुँची और गठरीडारके चली तो ब्राह्मण ने तिसे आती देख उसकेभी शिर में ऐसी लट्ठी क्रोध से मारी के कपाल क्रिया होगई और ब्राह्मण भी न्हाय धोय उसे तिलांजली देचला उधरसे निकला तो सर्पने इसे देख कन्ने से किंचहँससि

काक॥ यह पूर्व्वोक्त श्लोक पढ़ा॥ इतिश्रीदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीय भागेमिश्रनिबंधात्मकेस्त्रीचरित्रवर्णनेद्वितीयःप्रदीपः २॥

अथ तृतीयःप्रदीपः

**स्त्रियोहिव्यभिचारार्ता वंचयन्तिस्वकंपतिम्॥**
**लक्ष्मीःप्रवंचयांचक्रे स्वपतिंजारशंकया ३॥**

व्यभिचार से लाचारभई स्त्रियें निज पतिको भी बंचनकरतीं अर्थात् ठगलेती हैं जैसे लक्ष्मी ने निज सीधे पति को भी जारपुरुषकी आशंका से बंचन किया॥ दृष्टान्त॥ एक चन्द्रावतिनाम नगरी है भीमसेन राजा राज करता था वहां मोहन नाम सेठरहताहै जिसका बेटा सुधन्वा बहुत प्रवीण गुणवन्तहै उस देशमें हरदत्त नाम कायस्थ तिसकी लक्ष्मी नाम स्त्रीहै और जैसानाम तैसाही रूप और महा प्रवीणहै तिसके पीछे एक दिन सुधन्वा ने लक्ष्मी को देखा मनमें लालसा हुई विचारा कि इससे रति कीजिये ऐसा विचार दूती के घरगया और उससे पूछा तेरानाम क्या तब दूती बोली कि मेरानाम सोमपास है तबतो बोला सुन सोमपास मेरा एक कामहै लक्ष्मी के बीच मेरा मनलगाहै सो उसे मिलायदो तबदूती ने कहा कि मैं उसको संकेत स्थानमें तुझसे मिलादूंगी तू चिन्ता मतकर तेरा काम बखूबी पूरा होजायगा ऐसा कह दूती लक्ष्मीके घरगई और उस वक्त हरदत्त न था जाकर बैठी और सोमपासने उपदेश किया कि हे लक्ष्मी संसार में दूसरे के भलेके बराबर कोई धर्म नहीं है ऐसी २ अनेक बातें कहकर कुछ लक्ष्मीकोभी लालचादिया तबतो मनमें चलायमान हुई कि परपुरुष से रतिकरूं तब फिर दूती शामके वक्त संकेत में लेगई पर सुधन्वा नहीं मिला

सेठथा तो एक दिन शशीप्रभाको वीरसेनने देखा, और देखतेही आशक्त होगया तब तो वीरसेन, शशीप्रभा की दाई से मिला और कहा कि राजकुमारकी बहूमे मेरा मन लगाहै उससे मिलादो तब दाई शशीप्रभा के महल मे, गई और देखा कि शशीप्रभा शृंगार किये महलमें बैठीहै फिर दाईने जाकर शशीप्रभा से राम २ कहा और वह बोली कि हे शशीप्रभा तेरी सुन्दरता देखकर मेरे मनमें बहुत दुःख होताहै तिससे एक बात मैं तुझसे कहतीहूं जो बुरा न माने तो तब शशीप्रभा बोली कि जो तू कहेगी सोही करूंगी तब दाई बोली कि तेरा जीना धिक्कार है जो पराये पुरुषका सुख अबतक नही देखा जब इस सुखको जानेगी तब बहुत प्रसन्न होगी तब राजबधू बोली कि तू कहे सो करूं तब दाई बोली कि जो मेरा कहा मानेगी तो बहुत अच्छा होगा तब शशीप्रभा बोली कह तब दाईने कहा वचन दे तो कहूं तब शशीप्रभाने वाचा दिया तब दाई प्रसन्नहो बोली कि एक वीरसेन नाम सेठ तेरी इच्छा करता है तू उसका मनोरथ पूराकर ऐसे कहकर फिर दाई ने कहा कि मेरे जाने के पीछे तू मूर्च्छा खा गिरियो और काहूकी औषधि मूरी से नीकी मतहूजो पाछे मैं आकर तुझे अपने घर लेजाऊंगी और मनोरथ सिद्ध कराऊंगी यह कर दाई तो विदा हुई और आकर वीरसेनको, खबर सुनाई कि तेरा मनोरथ सिद्धहुआ समझ अब चिन्ताको त्यागदे प्रातःकालही तेरा काम होगा, इधर शशीप्रभा ऐसी मूर्च्छा खागिरी मानो दण्डगिराहै सबको बड़ा शोचहुआ कि अचानक यह क्या हुआ सबने झाड़ फूंक कराया दवाई दी मगर आराम नहीं हुआ और नगर मे ढिंढोरा फेर दिया कि जो कोई शशीप्रभाको अच्छा करदे उसको सब कुछ मिलेगा तब यह खबर

शशीप्रभा की दाई तक पहुँची तो उससे कहा कि मैं अच्छी क
दूंगी पर मैं कहूं सो करना तब तो राजाने इसे बुलाया और कहा
कि जो तू कहेगी सोही करूंगा मगर मेरी प्राणप्यारीको अच्छ
करदे तब दाई बोली कि आठरोज आपकी बधूको मेरे मकान प
रहने दो तब राजाने कहा कि अच्छा शीघ्र इसे लेजा तब दा
अपने मकान पर लेगई और वीरसेनको बुलाकर आठ रोजतक
मनशा पूरन कराई बाद आठ दिनके शशीप्रभाको उलटा महल
में भेजा और राजा देख बहुत प्रसन्नहुआ और यशोदेवीको बहुत
धन दिया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीभागेमिश्रनिबंधेस्त्रीचरि-
त्रेनामचतुर्थःप्रदीपः ४ ॥

अथ पंचमःप्रदीपः ॥

## समलोविमलोजातो धूर्त्तोवैमाययासकृत ॥
## परीक्षायांपुनस्त्वासीद्विमलोविमलस्तुहि ५ ॥

एक धूर्त्त निज माया से समल मल सहित भी विमल नाम
बनियें के समान मायासे एक बेर हो भी गया पर फिर परीक्षा होने
में तो विमल जो था वहही विमल रहा ॥ दृष्टान्त ॥ एक विलास
वती नाम नगरी थी तिसका सुदर्शन नाम राजाथा तिसके गां
में विमल नाम बनियां बसताथा तिसकी स्त्री एक तो सुरसुन्दरी
और दूसरी रुक्मिणी थी तो सुरसुन्दरी को रूप देख एक कुटिल
महाधूर्त्त मनुष्य आशक्तहुआ और मनमें विचारा कि क्या करूं
किस तरह से आवे ऐसे चिन्तवन कर अम्बिका के मन्दिरमें गय
और देवी की बड़ी सेवाकी तब तो देवी ने कहा कि वरमांग मैं
तेरे पर प्रसन्नहुई तब धूर्त बोला कि विमल बनियेंकासा रूपदीजे

देवी ने कहा तथास्तु ऐसाही होगा कहनेमात्र विमलकासा रूप बनगया और कुटिल धूर्त्त घरआया और इत्तिफ़ाकसे विमल अपने घर न था उस वक्त घरमें बैठ दासदासिन को प्रसन्नकिया घर में रहनेलगा और कहा कि मेरासारूप कोई विमल बनियां बनाये आवे तिसको बैठने न देना ऐसा कह घरमे रहनेलगा और उसकी स्त्री के साथ अपना मनोरथ सिद्ध किया पीछे विमलभी आया तो उस धूर्त्त ने जो विमलकासा रूप बनाये बैठाथा विचारे विमलको घुसने न दिया और गारी देनेलगा कि मेरे घर क्यों आयाहै फिर दोनों में बड़ी लड़ाई हुई और हरएक अपना २ घर बनाने लगे शहर के लोग जमाहुये और दोनों का एकसा रूप देख आपस में कहनेलगे कि घर किसका है तब शोचकर उन दोनोंको राजा के सामने लेगये तब राजाने शोचकर इस तरह न्याय करनाचाहा कि राजाने विमल की दोनों स्त्रियां बुलाईं और जुदा २ बुलाके उनसे पूछा कि कहो तुम्हारे बापका क्या नाम है और तुम्हारी माताका क्या नामहै और जब विवाहहुआ और घरआई तब ऋतु समय विमलने तुम दोनोंको क्या दिया तब उन दोनोंका वृत्तांत राजाने पत्रपर लिखलिया और विमलसे पूछा तब उसने भी वही कही सब बात मिली पर जब विमल रूप धूर्त्त से पूछा तो उसकी बात एकभी न मिली तब तो राजाने उस धूर्त्तको गांवसे निकलवादिया और विमलको उसकी दोनों स्त्रियों समेत उसके घर विदा किया और घर आकर चैनसे रहनेलगा ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धात्मकेस्त्रीचरित्रेनामपंचमःप्रदीपः ५ ॥

काम के वशहुये तो मनमें विचारहुआ कि भोगकरें तो तिससमय मोहनी को बहुत मनसे पान इलायचीदी तब गोविन्दने भी इसका सत्कार किया और इससे बोला यार तू पासरहु मैं एक काम कर आऊं यह कहके गोविन्द तो गया और वह उसे लेकर भगा तो गोविन्द भी आय पहुँचा देखके बोला कि खड़ारहु कहां लिये जाताहै तब तिसने उत्तर न दिया तो इन दोनों की लड़ाई भई लड़ते २ राजाके पास गये और पुकारा कि विष्णुशर्मा लिये जाताहै और उसने अपनी स्त्री बनाई तब राजा के प्रधानने तिन का न्याय किया सो विषकन्या को बुलाकर पूंछा कि जिसदिन तेरे पति गोविन्द से संगम भया तब क्या २ बातभई थी तो तिसने सब हकीकत कही सो पत्रपर लिखली पीछे गोविन्दसे पूंछा तो तिसने भी वेही बात बताई पर उससे पूंछा तो वहचुप होरहा तो तिसे धक्के देकर निकाला और गोविन्द को उसकी स्त्री देकर कहा इस स्त्रीको रखनी नहीं चाहिये ऐसेही शास्त्रभी कहताहै श्लोकः ( वैद्यंपानं रतंनटंकुपठितं मूर्खंपरिव्राजकं रिद्धिकापुरुषंतुरङ्गमजवं स्वाध्यायहीनं द्विजम् ॥ राज्यंबालनरेन्द्रमंत्रिरहितं मंत्रंछलान्वेषणं भार्य्यांयौवन गर्वितांपररतां मुञ्चन्तिशीघ्रंबुधाः १ ) वैद्य जो मद्य आदि पान में रत हो नट जिसने अच्छी कला न सीखीहो संन्यासी जो मूर्ख हो तुच्छ मनुष्य जो समृद्धिमान् हो घोड़ा जो श्रेष्ठ गति हीनहो और ब्राह्मण जो पढ़न हीनहो और राज्य जो बालक राजावाला और मंत्र सलाहजो छल देखनेवाली और स्त्री जो यौवन से गर्वाई पर पुरुषमें रतहो तो इन सबको बुध ज्ञानीजन शीघ्रही छोड़ देते हैं इसप्रकार बहुत समझाने पर भी गोविन्द ब्राह्मण ने विषकन्या को त्याग नहीं किया वहां से उठ आगे को चला तो एक मनुष्य

अथ षष्ठःप्रदीपः ॥

**महतांवचनोल्लंघे महद्दुःखंप्रजायते ॥**
**यथागोविन्दशर्मासीद्दुःखीदुश्शीलिकास्त्रियः ६**

महज्जनोंके वचन उल्लंघन करने में महाहीं दुःखहोता है जैसे गोविन्दशर्मा ब्राह्मण दुश्शीला विषकन्या को व्याहकर दुःख को प्राप्तहोता भया ॥ दृष्टान्त ॥ एकभद्रावती नाम नगरीथीवहां का प्रतापसेन राजाथा उस गॉवमे सोमप्रभु नाम ब्राह्मण बसता था और पण्डित बहुत था तिसकी शोभानाम स्त्रीथी तिस की मोहनीनाम बेटी थी सो वह विषकन्याथी सो सब जानतेथे उसको कोई नही व्याहता था इससे उसके पिताको बहुत शोच हुआ आखिर को लाचार एक शहरमे गया और एक गोविंद शर्मासे मुलाकात की और उस ब्राह्मणसे कहा कि मेरे एकमोहनी नाम बेटी है तुझे देताहूं मैं तुमको बहुत धनदूंगा तुम उसको व्याहलो लेकिन विषस्वरूप है ऐसी बात सुनकर गोविन्द शर्मा ने कबूल किया पर उसको भाईबन्धु मनाकरते रहे परउसने किसीकाकहना नहीं माना एकतो स्त्रीका लालच दूसरे धनका लालच हुआ और व्याह करलिया और बहुतसा द्रव्यलिया अपने घरआया वोमूर्ख कन्याथी अपनेपतिको देख जलाकरती एकदिन अपनेपतिसे कहा कि मुझको मेरे पिताके घर पहुंचादो जब ऐसा कहा तो गोविन्द उसे लेचला जब राहमे आया तो स्त्रीसे कहा कि तू यहां बैठ मैं आता हूं इतना कहकर आपतो एक गॉवमे गया और पीछे से एक विष्णुशर्म्मा नाम ब्राह्मण आया और देखा कि एक औरत बडीसुन्दर बैठी है तबतो इन दोनोंकी आपस मे दृष्टिमिली और दोनों

काम के वशहुये तो मनमें विचारहुआ कि भोगकरें तो तिससमय मोहनी को बहुत मनसे पानइलायचीदी तव गोविन्दने भी इसका सत्कार किया और इससे बोला यार तू पासरहु मैं एक काम कर आऊं यह कहके गोविन्द तो गया और वह उसे लेकर भगा तो गोविन्द भी आय पहुँचा देखके बोला कि खड़ारहु कहां लिये जाताहै तव तिसने उत्तर न दिया तो इन दोनों की लड़ाई भई लड़ते २ राजाके पास गये और पुकारा कि विष्णुशर्म्मा लिये जाताहै और उसने अपनी स्त्री बताई तव राजा के प्रधानने तिन का न्याय किया सो विषकन्या को बुलाकर पूंछा कि जिसदिन तेरे पति गोविन्द से संगम भया तव क्या २ बातभई थी तो तिसने सव हकीकत कही सो पत्रपर लिखली पीछे गोविन्दसे पूंछा तो तिस ने भी वेही बात बताई पर उससे पूंछा तो वहचुप होरहा तो तिसे धक्के देकर निकाला और गोविन्द को उसकी स्त्री देकर कहा इस स्त्रीको रखनी नहीं चाहिये ऐसेही शास्त्रभी कहताहै श्लोकः ( वैद्यंपान रतंनटंकुपठितं मूर्खंपरिव्राजकं रिद्धिकापुरुषंतुरङ्गमजवं स्वाध्यायहीनं द्विजम् ॥ राज्यंबालनरेन्द्रमंत्रिरहितं मंत्रंछलान्वेषणं भार्य्यायौवन गर्वितांपररतां मुञ्चन्तिशीघ्रंबुधाः १ ) वैद्य जो मद्य आदि पान में रत हो नट जिसने अच्छी कला न सीखीहो संन्यासी जो मूर्ख हो तुच्छ मनुष्य जो समृद्धिमान् हो घोड़ा जो श्रेष्ठ गति हीनहो और ब्राह्मण जो पढ़न हीनहो और राज्य जो बालक राजावाला और मंत्र सलाहजो छल देखनेवाली और स्त्री जो यौवन से गर्व्वाई पर पुरुषमें रतहो तो इन सबको बुध ज्ञानीजन शीघ्रही छोड़ देते हैं इसप्रकार बहुत समझाने पर भी गोविन्द ब्राह्मण ने विषकन्या को त्याग नहीं किया वहां से उठ आगे को चला तो एक मनुष्य

देखपड़ा तब विपकन्याने पतिसे कहा इसे मारले तब आगेको चलूं जब ऐसा हठकिया तो तिसे उसको भी मारना पड़ा इत्यादि दुःख वहुत से होते हैं इस से मनुष्य को चाहिये वड़ोंकी आज्ञामें रहै॥

इतिश्री दृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धे स्त्रीचरित्रेषष्ठःप्रदीपः ६ ॥

अथ सप्तमःप्रदीपः ॥

**द्विजोपिविकलोभूत्वावंचयत्सर्वतोजनात् ॥**
**राज्ञाप्रमोचितःसोहि सद्योवैकल्यशंकया ७॥**

तैसेही एक द्विजने भी सवजनोंको विकल वावला होकर वंचन किये तो वह राजाकरके विकल जान छोड़ागया ॥ दृष्टांत ॥ एक विद्यावंत नाम राजाथा तहां राव ब्राह्मण कामीथा एक दिन राव ब्राह्मण तालाव को गयो तहां एक रूपवंत वनैनी देखी तो वासों कही कि मोसों रतिकर तो उसने इन्कारकिया तवभी ब्राह्मण नहीं माना और उसके पास घड़ा उठाने के वहाने से गया और घड़ा उठाती समय वनैनी के अत्यन्त कुच मर्दन किये ताही समय वनियां आगयो और कहा कि तैंने जो मेरी स्त्रीको छेड़ाहै इसलिये तेरी सरकार में अर्जीदूंगा तव तो ब्राह्मणडरो अपने वितर्कनाम दोस्तके पास गया और कहा कि भाई मैं एक वनैनी के कुचमर्दन कर रहाथा इतनी देरमें उसका पति आगया और मुझसे कहा कि तैंने जो मेरी औरतको छेड़ाहै इसलिये तेरी अर्जी दूंगा सो कह भाई अव मैं क्याकरूं तव वितर्क ने कहा कि हांहां और वच२ यह दो जवान जो कोई पूछे उससे कहना इसके पश्चात् महाजन ने अर्जी दई और ब्राह्मण देवता को वुलाया तव तो वेही दो वात

(हीं २ वच २) राजा प्रति कही तब तो राजाने उसको पागल समझकर उसका कसूर माफ़ किया॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांमिश्रनिबन्धेतृतीयभागेसप्तमःप्रदीपः ७॥

अथाष्टमःप्रदीपः॥

वल्लभाजलमानेतुंगतारेमेऽतुतत्रहि॥
पश्चाद्विलंबभयतोमग्नासरसिसाछलात् ८॥

वल्लभा स्त्री जललेनेको गई तो तहांहीं यारसे रमण करतीभई फिर विलम्ब होने के कारण छल से सरोवर में डूबी॥ दृष्टान्त॥ एक प्रतिष्ठान नाम पुरहै तहां का राजा देवपाल तहां शुभकरण नाम बनियां तिसकी स्त्री वल्लभा थी एक दिन शुभकरण स्नान को बैठा तिसी समय का संकेत तिसने निज यारको बताया था तो औसान विचार बोली स्वामी जल नहीं है कहो तो तालावसे भरलाऊं पति बोला अच्छी बात है सोही यह चली और वहांहीं जायके मनोरथ पूर्ण किया उसमें पहर एक लगा तो विचारा कि पूछेंगे कहां रही तो क्या कहूंगी यह विचार बहुतसे जन जहां पानी भरते थे तहां गई देखे तो बड़ी भीर है वहां जल भरती गिर पड़ी लोगों ने जाय शुभकरण से कही कि तेरी स्त्री जोहड़में गिरपड़ी यह सुन सब रिस मिटगई फिर कुछ नहीं कहा॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेअष्टमःप्रदीपः ८॥

अथ नवमःप्रदीपः॥

भोगाख्याकुंभकारीतुजारंराज्ञाध्रृतंतथा॥
स्वामिनेज्ञापयामासमुक्तातेनासमापुरा ९॥

और भोगा कुँभारी ने यारको राजाका दण्डनीय पुरुष निज

स्वामी से बताया और आप पहले उससे काम कराचुकी थी॥ दृष्टान्त ॥ एक नवलनाम नगर तहांका नरपति नाम राजा है तहां महाधन नाम कुम्हार बसता तिसकी स्त्री का नाम (भोगा) वह अतिही व्यभिचारिणी एक दिन उसका भर्ता घर नहीं था उस समय एक पुरुषको बुलाय, तिससे रति करने लगी तिसी समय भर्ता भी आया तहां करीर जो उसकी बावल पर चढ़ादिया तो वह नामी बटोही डरका मारा उस बावल पर से फिसल पड़ा और भागा तब तो तिसके पतिने कहा यह कौनहै ? तब वह हँसी और बोली कि आज बड़ाही अचरज भया कि यह जो मनुष्य है इसे राजाके जन पकड़ने आये थे तब यह भगा और कुछ न बनपड़ी तो हमारे घरमें आयछिपा इतने में आप जो आये तो इसने जाना कि कहीं वेही आगये तो बावलपर चढ़ा और हड़बड़ा के कपड़े भी न पहिन सका है तिससे मुझको हँसी आई कुम्हार सुन चुप होरहा ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेनवमःप्रदीपः ९ ॥

अथ दशमःप्रदीपः ॥

## शृंगारीघृतमानेतुं गतारेमेऽथतत्रहि
## पृष्टाचवञ्चयाञ्चक्रे घृतपातभयात्पतिम् १०

तैसेही शृंगारी जल लानेकोगई तो तहांही जारसे रमणकिया और पतिने पूछी तो तिसे घृत गिरपड़ने के मिससे वचन किया दृष्टान्त ॥ एक नागपुर नाम नगरहै तिसका राजा नरसिंह नाम था तिसके गांवमें धनपाल बनियां तिसकी स्त्री का नाम शृंगारी वह बड़ी चतुरथी परन्तु धनी उसका मूर्खथा तो वह पर पुरुषोंको बुला २ कर रतिकिया करती पर पति ने न जानी एकदिन निज

पतिको भोजन जिमाती थी तभी वह समय आया समझी तो वारीमें से झांकी और यारसे समस्या की कि मैं आई तू चलयह कहके तिसी समय बुद्धि उपाई पांवसे घी डालदिया सबगिरगया तब पति बोला जल्दी घी लेआ तब घी के मिससे चलीगई और तिससे सम्यक् प्रकार रतिकरी पहर एक व्यतीत भया तब मनमें विचारी कि पति क्रोध करेगा तब बुद्धि विचार कर रोवती भई चौहट्टे में जाय बैठी गोदी में धूलभरी और घर आई तब पति ने देख शांतहो पूछा रोती क्यों हो तो कहा जल्दी में पैसे गिरगये धूल भर लिआई हूं ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांमिश्रनिबन्धेतृतीयभागेदशमःप्रदीपः १० ॥

अथैकादशःप्रदीपः ॥

सुप्तापिभर्त्रासाकंतु परपुंसायथेच्छया ॥
रमतेस्वैरिणीस्वैरं रत्नदेवीयथारमत् ११ ॥

व्यभिचारिणी स्त्री निज भर्ता के साथ एक सेजपर सोनेपरभी पर पुरुष से संग यथेच्छ करती है जैसे रत्न सुन्दरी ने रमणकिया दृष्टान्त ॥ एक शंखपुर नगर तहांका शंखचूड़ नाम राजाथा तहां रात्र वनियां तिसकी स्त्री रत्न सुन्दरी देवी उसने निज यारसे प्यार कर कहा आज हमारी विद्या देखो जो पतिके साथ सोते तुमसे संग करूं यह कहके जायसोई और वह भी जाय एक ओर सो रहा तो तिसने निज पीठ फेरकर तिससे काम कराया जब काम होचुका तो तिस यारने निज इन्द्री निकाली वह उसके पतिकी पीठसे लगी सोही स्त्रीने चोर २ कर पुकारा तो तिसके पतिकेहाथमें उसके यारका लिंग आगया उसने पकड़ लिया और स्त्रीसे

बोला इसे पकड़े रहु जो मैं दीवा जलाय लाऊं वह उसे थँभाय दीवा लेने गया तो तिसने तिसे तो छोड़ दिया वह भागा और उसने पड़वा की जीभ पकड़ली जब पति दीवा ले आया तो पड़वाकी जीभदेख लज्जित हो चुपहुआ ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यामेकादशःप्रदीपः ११ ॥

अथ द्वादशः प्रदीपः ॥

**रुक्मिणीतुस्वकेशान्वै देव्यैदत्तान्समादिशत॥**
**जारलुंचितकेशापि भुक्तातेनाससापुरा १२.॥**

रुक्मिणी ने निज केशों को देवी के भेंटकिये बताये और वह जारसे उखाड़े गयेथे प्रथम भोगभी कियाथा ॥ दृष्टान्त ॥ एक विशाला नाम नगरी है तहां विजयसेन राजा राजकरताथा तिस के गावँमें धर्मदास सेठ तिसकी स्त्री रुक्मिणी वह भर्तासे कपटकर स्नेह रखती तो तिसने जाना पतिव्रता है तो वह एक समय परदेश गया पीछेसे वसन्तऋतु आई काम उद्दीपनभया तिस समय दूतीको बुलाई और कहा मैं रतिकरना चाहतीहूं कोई अच्छा पुरुष लेआव तब दूती बहुत अच्छा कहगई और एक पुरुष को लेआई वह बहुत चतुरथा तिसे देख बहुत प्रसन्न हुई स्नेह किया तो वह नित्य आवै रतिकरै बहुत प्रसन्नरहै एक दिन उसी मित्रसे लड़ाई भई तो क्रोधकर तिसने उसकी चोटी काटली तिसी समय भर्त्ता भी आया और पूंछा क्हो राजीहो तो बोली ठहरो न्हाय आऊं नित्य नियम करलेऊं तब बैठूं ऐसे कह पूजाको एक घड़ी लगाई फिर आई तो तिसके पतिने देख पूंछा कि चोटी कहां है तो तिसने उत्तर दिया कि तुम परदेश गये तो मैंने देवीकी आराधना कर

मनोरथ विचारा कि जो आज मेरा प्राणप्रिय आवे तो तेरी पूजा करके निज चोटी चढ़ाऊंगी सो आज आप आये मैंने निज चोटी देवीजी के भेंट चढाई ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्र निबन्धेद्वादशःप्रदीपः १२ ॥

अथ त्रयोदशः प्रदीपः।

धृष्टादृष्टापिलज्जांच मनुतेस्वैरिणीनहि ॥
पश्यतोलज्जयांचक्रे जयंतीश्वशुरंयथा १३

धृष्ट व्यभिचारिणी देखीगई भी लज्जा नहीं मानती है जैसे जयन्ती ने निज श्वशुरको देखनेपरभीलज्जितकिया॥ दृष्टान्त ॥ राजा विजयसेन की विशाला नगरी में एक समरथ वनियां रहताथा तिसकी स्त्री जयन्ती तिसका पुत्र गुणकर चतुर प्रवीण था सोही वहजयन्ती निश्शङ्क किसीकी शंकानहीं सब घरके जाने पर पुरुष सों रतिकरे एक दिन जारसे प्यारकरती थी दोनों सोयेथे तो तिसी समय सुसरेने जाय पांयका जेवर उतार लिया वह जानगई तो सच्ची होने के लिये भर्ता के पासआई झकझोरिकेजगाई और बोली कि मैं तुमसे क्या कहूं तुम्हारा बाप मेरा जेवर उतारलेगया मैं तुम्हारे पास निश्शङ्क सोतीथी यह सुन क्रोधभया बापके पास जाय बोला ऐसी बात आपको चाहिये नहींथी जो निज बहू का जेवर उतार लायेहो यहसुन उसका पिता लजायके बोला किसी से कहना मत मैं भूलगया देखो सुसरेको लाजआई और वह बहू नहीं लजाई॥इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे मिश्रनिबन्धे त्रयोदशःप्रदीपः १३ ॥

---

अथ चतुर्दशः प्रदीपः ॥

## मुग्धिकातुस्वभर्त्तारं जानंतंकूपपाततः॥
## वृथाहिवंचयामास कपाटंविदधावथ.१४॥

और मुग्धिकाने निज पति को जानलेने पर भी कुयें में गिरने के मिससे वंचितकिया फिर आपहीने किवांड़ मूंदलिये दृष्टान्त॥ एक विशाला नाम नगरी तहां का विजयसेन राजा राज करताथा तिसके नगरमें वल्लभ बनियां रहता तिसकी स्त्री मुग्धिका महाही व्यभिचारिणी चौहट्टों में रहती उसे सब जानते थे कि पर पुरुष से रतिकरै किसी से डरै नहीं बाहररहा करै किसीका कहा नहीं मानतीथी तब सब मिल राजाके पास जाय पुकारे कि यह स्त्री मानती नहीं है तो राजासे आज्ञाभई कि कोई बाहर रह नहीं सके तबसब भीतर रहें और वह बाहरही रहाकरै यह हुक्म सुनके भी पांचघंटे तक रातको बाहर रही यारसे मिल पीछे आई तो पतिने किवांड़ लगालिये बहुतेरी पुकारी परकोई बोला नहीं तब तिसने बुद्धिउपायके कहा कि तुम नहीं खोलते हो तो मैं कुयें में पड़ने जातीहूं यह कह जायके कुयें में बड़ापत्थर छोड़ा तो तिसके धमके से सब बाहर आये पतिभी गया तिसी समय वहभीतर आय धसी और किवांड़े भेड़लिये तब सब पुकारे कि किवांड़ खोल तब बोली न खोलोंगी तबसब लाचार हो बोले कि किसी तरहसे खोलै भी तब बोली कि तुम सब सौगंदखावो कि कभीहमतेरे बाहरजानेकी कहने का नाम न लेंगे तब खोलूं निदान उन सबों को ऐसा ही करार करना पड़ा॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धे चतुर्दशःप्रदीपः १४॥

---

अथ पञ्चदश प्रदीपः ॥

धृष्टोलभेद्धनंस्त्रीतोमाययावणिजोयथा ॥
धनीभूत्वागतोवेश्यातद्भूषामथसोग्रहीत् ॥ १५ ॥

धृष्टपुरुष स्त्री से छलकर धनभी पालेताहै जैसे वणियां धन-
ान् होकर वेश्याकेगया फिर उसहीका आभूषण उतारचल दिया
दृष्टान्त ॥ एक विशाला नगरी में विजयसेन राजाथा और वहां
नाहुक ब्राह्मण तिसकी स्त्री (सरूपा) सो तिसको छोड़ परदेशगया
जयन्ती नगरी में जायपहुँचा तो तहांबनजारेका वेषभरा सो मैला
वेषभर एक झोलेमें खांड़लगाई शहरभर में फिरने लगा तब सब
ने जानावनजारा है वहां एक (मदन) नाम वेश्याथी तिसकी
दासीने इससे पूछा तू कहांसे आया है तो तिसने कहाबनजाराहूं
खांड़का व्यापार करता हूं राजा से मिल सौगात देऊंगा तब तो
तिसने धनाढ्यजाना आदर सत्कारकिया और घरमें राखा विचारा
इससे द्रव्यलेना चाहिये यह विचार रातको संग सोई और बेचेत
हुई तो तिस बनजारेनेही दोहजारका जेवर उसका उतारकर निज
राह लियी जब सवेरा भये मदन ने उठ सँभाला तो थैलातथैली
जेवरचादेवट्टेमें गया हाय खायपछिताय बैठरही ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्र-
दीपिन्यांतृतीयभागेपञ्चदशःप्रदीपः १५ ॥

अथ षोडशःप्रदीपः ॥

केलिकातुपतिंस्वीयंशिवदर्शनछद्मतः ॥
सद्यःप्रवंचयांचक्रेसख्याशिक्षयितासती ॥ १६ ॥

औरकेलिकाने निजपतिको शिवजी के दर्शनरूप मिससे वं-
चन किया सखी ने तिसे सिखलादियी थी ॥ दृष्टान्त ॥ सरस्वती

के तटपरशंखपुर नामनगर वहांका राजा (सुदर्शन) नामतहा (सुरोदय) नाम नटरहता था तिसकी स्त्री (केलिका)थी तिसका प्रिय मुहकरण ब्राह्मण वह नदी के उसतटपर रहताथा महादेवका पुजारीथा एकदिननिजपरोसन संगले वह पानीकोगयी तो पति भी पीछे २ हो लिया तब केलिकाने निजपरोसनसे कहा कि उस पार मेरा यारहै कहै तो तिससे प्यारकरआऊं तुम घर जाओ ऐसे कह घड़े के सहारेसे उसपारजाय यार संग प्यारकर प्रसन्न किया पीछे घर आई आतेही देखा तो पति तिसपरोसन के किवाँड़ से लगा खड़ाहै तब तिसे आंखकी सैन से समुझाई तो केलिकाको कहा कि तूने बहुत अच्छी बातकरी जो शिवजी के दर्शन कर आयी तेरे पतिकी उमर बढ़ी मुझको चिंताथी अबपांच दिनतक जावे तो तेरा पति सौ वर्ष की आयु पावै तब केलिका बोली जो निज पति उमर पावे तो दश दिन और जाऊंगी पतिसन बहुत प्रसन्नहो बोला मैं धन्यहूं जो पत्नी पतिव्रतापाई ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेषोडशःप्रदीपः १६॥

अथसप्तदशःप्रदीपः॥

**व्रीडिकास्वपतिंभोज्यच्छलतश्चाप्यवंचयत्॥**
**तथास्वप्नावबुध्यासावशंकृतवतीमुहुः १७॥**

व्रीड़िकाने निजपतिको भोजनके छलसे भी वंचनकिया तथा स्वप्ने के ज्ञान से तिसे निजवश में किया ॥ दृष्टान्त ॥ एक उमज्जनामगांव में दानशील राजाहै तिसमें सोमदास कारखानी है तिसकी स्त्री (व्रीड़िका) वह गरीब राहसे रहै एकदिन सोमदास तो खेतकोगया तिसके खानेके लिये वह भात रोटी लेचली

ई में (सुरपालयार) मिला उससे भोगकरनेलगी रोटी भात लग धरा-ऊंचे कि कउवा न लेजासके इतने में (मूलदेव) म- ग्रादी आया उसने ऊंचे से भातउतार भोगलगाया और उसमें ऊंकी मेंगन भरदिया उसने भोगकरके देखी तो तिसमें ऊंट की गन देख पति रिसायके बोला यह क्याभरलाई है तब कहा कि तको मैंने ऐसा सपना देखाहै कि तुमको अच्छा नही है इससे ापके लिये करवानेको यह टोटका कियाहै इससे कष्टमिटेगा तो ासके, पतिने सब मेंगनभोगलगायी॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां तीयभागेसप्तदशःप्रदीपः १७॥

अथाष्टादशःप्रदीपः॥

## जारहस्तगृहीतारं मोहिन्यावंचयत्पतिम्॥
## पाडहस्तमिषेणेव भ्रमंतस्यसमादिशत् १८॥

और मोहिनी नें निज पतिको यारका हाथ पकड़लेने पर भी चन किया सो उसे पाडका हाथ पकड़ा कर भ्रम उत्पन्न कर दिया ष्टान्त॥ एक शंख पुर नाम नगर तहां सोमेश्वर राजा राज करता हां धन सेठ तिसकी स्त्री (मोहिनी) अति चंचलथी जिसने गर में कोई छोड़ा नहीं परन्तु देवादित्य ब्राह्मण के साथ परम म से संग किया करे तो तिसके पतिने विचार कर तिसे अकेली छोड़ी तब तिसने दूती को भेज यारको कहा कि यहांहीं आ ाना रातको तो वह गया तहां स्त्री पुरुष सोतें थे तब यह धूर्त भी क ओर सोरहा जब तिसके पतिने जाग छातीपर हाथ धरते सरा हाथ जाना तो तिसका हाथ पकड़लिया और चोर २ कह २ ५ पुकारा और स्त्रीसे बोला दीवा ला वह बोली मुझको

ताहै तो तिसे उसका हाथ पकड़ाय आप तो दीवालेनेको गया आप उस स्त्रीने उसका हाथ तो छोड़ा वह भगगया और पड़ा का हाथ पकड़लिया पति दीवाले आ देखे तो पड़ा का हाथ है तब खिसियानाहोके मोहिनी से लाचार हुआ वह बोली स्वामी यहां चोर चार कोई नहीं तुम्हींको भ्रम होरहा है॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांनामाष्टादशःप्रदीपः १८॥

अथोनविंशःप्रदीपः॥

देवकींवंचयांचक्रे जारभूतभयात्पतिम्॥
प्रेतंमत्वातुतंभर्ता भयाद्रूयोविलज्जितः १९

और देवकीने यारको प्रेत बताकर पतिको वंचित किया वह उसे प्रेत जानकर डरा फिर लज्जित हुआ॥ दृष्टांत॥ पाटन कुँवरपाल राजा तहां भासकरन कुनवी मूर्ख है तिसकी प्रिया बहुत गरीब वह ब्राह्मण से आसक्तथी एक दिन उस कुनवी से सबने कही तेरी स्त्री ब्राह्मणसे फँसी है वह यह सुन संकेत समझाय वृक्ष पर चढ़ गया देखनेलगा तो तिसकी स्त्री देवकी प्रभाकर ब्राह्मण दोनों रति कर रहे हैं इसे देख बहुत क्रोध किया पुकारा पर प्रभाकर ने उसे न छोड़ी फिर वृक्षसे उतरा तो तिसके पतिको देखकर भगा और वहबोली इसवृक्षमें भूत रहता वह मुझसे कुकर्मकरताथा तुम ने छुटाया नहीं पतिबोला जो वह मुझसे लड़े तो भूतहै नहीं तो धूर्त तब स्त्री बोली कि मैं तो वृक्षपर चढ़तीहूं चढ़ी और पुकारी कि इसमें भूत है यहकहतेही वहही ब्राह्मण भूत बनकर आया उसने पहिले कुनबीको पछारा सोही वह बोली यहीहै इसने मुझसंग हठ से भोग कियाथा बेचारेहारे पतिने उससे लाचारहो चचाकहकर

गेलछुटायी और स्त्री से कहा कि तू सत्यकहती है॥ इतिश्रीदृष्टान्त प्रदीपिन्यांतृतीयभागेनामैकोनविंशःप्रदीपः १६ ॥

॥ अथ विंशःप्रदीपः ॥

रंभिकावंचयांचक्रे पतिंपितृविशंकया ॥
सोपतिंपितरंमत्वा भूयंश्चासीत्प्रहर्षितः२० ॥

और रंभिका ने निज पति पितृ शङ्कासे वंचित किया तो वह भी यारको निज पिता समझ के हर्षित हुआ ॥ दृष्टान्त ॥ शंख पुरनाम नगरहै और सिद्धेश्वर राजा जिसे शिवपूजा से अधिक प्रेमथा तिसके गांव में एक शंकरमाली था तिसकी स्त्री रम्भिका वह अतिही सुन्दरी थी सो पर पुरुषसे संगकिया करती एक दिन शंकर मालीके पिताका श्राद्ध आया तो तिसने निज कुटुम्ब के लोग बुलाये तो तिसने निज यारकोभी न्योत बुलाया वहआया तो तिसे आदर से वैठाय खीर खांड उसके आगे धरी तो तिसके पतिने तिसे नवीन जान उससे पूंछा कि यह कौनहै तो वह बोली आपने न्योता दिया वेहीहैं यह सुन वह बोला मैंने न्योता इसको नहीं दियाहै सोही वह हर्षकर बोली कि वेही पितृ रूपहैं जिनका आप श्रद्धा से श्राद्ध कररहे हो इतना सुनतेही पतिने कहा धन्य है तेरी श्रद्धा भक्ति को जो तुझपर प्रसन्नहो पितृने निज साक्षाद्दर्शनदिये और तेरेही इस प्रसादसे मैंभी कृतार्थहो प्रसन्नभया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेविंशःप्रदीपः २० ॥

अथैकत्रिंशःप्रदीपः ॥

जारेणवंचिताचापि जायतेस्वैरिणीक्वचित् ॥
गुणदत्तःस्वकांमुद्रां स्वैरिणीतोऽलभच्छलात् २१

कहीं व्यभिचारिणी यारसेभी वंचत कीजातीहै जैसे गुणदत्त ने निज मुंदरी वैश्यकी स्त्रीसे,छल करके लेली ॥ दृष्टान्त ॥ एक मनोरा नगरहै तहां का मनोहर दास राजा तिसके गांवमें गुण-दत्त नाम वनियां रहता वह निर्धन था सो तेलका व्यापार करता रहता तो एक दिन तेल बेंचनेको धीरपुर गया तो तहां सागरदत्त सेठथा तिससे जाय मुजरा किया और बोला सेठजी हमारा तेल पांचमनहै चाहिये लेलेवो वह बोला लेलेंगे लेआ तो ले जायबेंच दिया और रातहोगई इससे उसही के घर सोया सेठ दूकान पर जाय सोया तो तिसकी स्त्री इससे हँसी करनेलगी तो तिसने भी तिससे संग करनेकी चेष्टाकी तो वह व्यापारी धनीजानकेबोली जो निजहाथ की मुंदरी देओ तो हाथ लगाओ तिसने तिस संग लोभसे निकालदियी और रातभर रतिभोग विलास किया सबेरे ही मुंदरीलेने का विचारकर तिस सेठसे जायके कहा कि मैं तुम्ह ओछे मनुष्यसे व्यवहार रखना नहीं चाहता जो तेरी स्त्रीने निज मेरे हाथकी मुंदरी मँगाई अब उलटीनहीं देती सेठने तुर्तही निज नौकर को भेजकरके तिसकी मुंदरी लौटवादियी ॥ इतिश्रीदृष्टां-तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेनामैकविंशःप्रदीपः २१ ॥

अथद्वाविंशःप्रदीपः ॥

## वंचयेद्वंचकोजारः स्वैरिणिमाययायथा ॥
## मुद्रांमाधवदासःस्वांवैश्यस्त्रीतोऽलभत्स्नकाम् २२॥

वंचकछलियायार स्वैरिणीकोभी मायासे वंचितकरलेताहै जैसे माधवदास ने वैश्यकी स्त्री से निज मुद्रा लियी ॥ दृष्टान्त ॥ एक प्रजलखंडनगर तिसका ( व्रज ) नामराजा तहां माधवदास रहता

वह महाही वाचाल सदा जुआ खेलता तो वह ब्राह्मण एक दिन परदेशको गयो और एकगांवमें पहुँचा तो तहां एक (सुदर्शन) नाम बनियां रहताथा तिससे यह मिला तो तिसने इसे निजघर में रक्खा तो तिसकी बनैनी मृगनैनी नीकी चंचलथी सदा आनन्द में रहतीपर लोभिन बहुतथी सो तिसे धनीजान विचारा कि इससे संगकरैं तो द्रव्यहाथ आवै यह विचार तिससे संगकरनेलगी एक दिन रातको उसके हाथकी मुंदरी निकाललियी सबेरा भये मांगी तो न दियी तबतो तिसने तिस सेठसे जाय कहा कि तेरी स्त्रीने मेरी अँगूठी निकाली देती नहीं मैं सरकारके दरबार में पुकार करताहूं यह सुन, सेठने निज स्त्री से अँगूठी दिवाय दियी ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेद्वाविंशःप्रदीपः २२ ॥

अथ त्रयोविंशःप्रदीपः ॥

## व्यभिचारंप्रकुरुते रक्षितापिजनैर्भृशम् ॥
## जारंभुक्तवतीरत्न सुन्दरीनापितामियात् २३

व्यभिचारिणी स्त्री बहुत से जनों से रक्षित कियी भी व्यभिचार करती है जैसे रत्नसुन्दरी ने पहरे भीतर भी नाइन के वेष से यार को भोगा ॥ दृष्टान्त ॥ हंसपुर नाम नगर तिसका राजा हंस था तिसका सुत सिंहारसुन्दर वह नपुंसक था तिसकी रानी रत्नसुन्दरी सो काम से पीड़ित रहती परन्तु तिसका कुछ वश नहीं चलता था क्योंकि बाहर की ड्योढीपर पांच सौ सवार पहरा देते तिससे वश नही एक दिन नगरकी विश्वरजनी नाम नाइन राजमहल में आई और रत्नसुन्दरी के पास बैठी तो तिसे दुर्मन देखके नाइनने पूछा अजी तुमको ऐसा क्या दुःखहै? तो तिसने कहा कि

मेरा पति नपुंसक है तिससे महादुःखी हूं जो तू किसी पुरुष को लावे तो प्रसन्नहोऊं यह सुन नाइन बोली मैं जाती हूं यह कहके शहरमें गई बहुत तलाशकी परकोई राजाके डरसे कबूल न करसका तब तो तिसके प्रधान के बेटे ने कहा कि जो तू रत्नसुन्दरी को मिलादे तो तेरा गुण मानूं पर मेरे घर लें आवे तब सब कामसरै यह सुन नायन रानी के पास गई और सब वृत्तान्त कहा तो तिसने सुन जवाब दिया कि कैसे जाऊं यहां तो पांचसौ सवार पहरे पर बैठे हैं तो नायन ने कहा कि तू मेरे कपड़े पहिनले और उसके पासजा और अच्छीतरह रतिकरआ ऐसे कितनेही दिनोंतक काम चला तब एक दिन राजकुमार ने निज रानी को पुकारा तो यह नायन बोली तब कुंवरने आय हाथ पकड़ा देखे तो वह हाथभारी है तब तो जान लिया कि कोई औरही है यह विचारकर छुरी निकाल उसकी नाक काटली पर वह नायन बोली नहीं तो कुंवरने निज मन में विचारी कि संसार बुरा कहैगा सो कहो यह कहके सोरहा और नायन अपने घर गई पिछवारे पतिको पुकारो एक उस्तुरह दे उसने फेंका यह रोई अरे तू ने यह क्या किया वो दौड़ देखे तो तिसकी नाक कटगई घरआई रानी वरगई भोर होतेही राजा जो देखा तो बहुत लज्जित भया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां तृतीयभागेत्रयोविंशःप्रदीपः २३ ॥

अथ चतुर्विंशःप्रदीपः ॥

**शुद्धभावेनलभते जनोद्रव्यंनचेर्ष्यया ॥**
**यथाचंपद्विजोहीर्ष्यांकुर्वन्नासीत्तुदुःखितः २४**

जैसे जन शुद्धभाव से द्रव्य आदिको पाता तैसे ईर्षा करने

वाला नहीं, पाता है जैसे चंप ब्राह्मण ईर्षा करता दुःख को प्राप्त भया ॥ दृष्टान्त ॥ शंखपुर नाम नगर है तहां शिवराज राजा है तिसकी स्त्री शुभ सुन्दरी थी वहां चारों वर्ण सुखीथे वहां एकचंपानाम ब्राह्मण तिसकी स्त्री कनकावती तिसके बेटे बहुतथे पर सब की मति न्यारी २ रही एकदिन किसी कामको गया तो तिसे तहां फिरते २ एक धर्मशील ब्राह्मण मिला वह एक गोदान नित्यकरताथा तब चंपाने देख अचरज करके पूंछा कि तेरेपास इतनाद्रव्य कहां से आया जो रोज पुण्य करते हो ब्राह्मण बोला मैं एकदिन घरसे निकला तो एक स्त्री जो श्वेत वस्त्र पहिरे नखशिखसे शृंगार किये आवती देखी तो ब्राह्मण मनमें बहुत प्रसन्न हुआ कि यह शकुन अच्छा भया तब वह बोली हे ब्राह्मण मैं लक्ष्मी हूं मुझे घरले चल तेरा भलाहोगा ऐसी कही तबतो मैंने नमस्कार करी और उसे घरलाया और बहुतसी पूजाकी तो तिसने प्रसन्नहोवरदान दिया कि जहां तू खोदे तहांहीं द्रव्य निकलैगो इससे मैं रोज पुण्य करताहूं यह सुन उसने विदा मांगी और अपने घरआया तो जो स्त्री इसे राहमें मिले उसीसे कहे घर पधारो ऐसे सब ठौर पुकारता कहता रहे इस चिंता में भूख प्यास जातीरही घरकों ने पूंछा पर कुछ न बताया ऐसे पांचसात दिनबीते तो एक स्त्रीश्वेत वस्त्रोंवाली भी इसे मिली तो शीघ्र नमस्कार कर तिसे घरलेगया पूजाकर पांवों परा फिर गढ़ा खोदा कुछ नहीं निकला घरके रोने लगे चंपा ब्राह्मण बहुत लाचार हुआ ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां तृतीयभागे चतुर्विंशःप्रदीपः २४ ॥

अथ पंचविंशःप्रदीपः ॥

## द्रव्यंलभेद्रताभिज्ञस्तंभनादियुतस्तुयः ॥
## तदभिज्ञःकृष्णदासोवेश्यातोलब्धवान्धनम् २५ ॥

रत रमणकाज्ञाता जो स्तंभनआदि गुणसहित हो वह द्रव्य पाताहै जैसे तिस रतको जाननेवाले कृष्णदासने वेश्यासे द्रव्य पाया ॥ दृष्टान्त ॥ एकविशालपुर नगर तहांका शत्रुमर्दन राजाथा तिसगांव में कृष्णदास ब्राह्मण बसताभया सो महाही सुन्दर चतुरथा तिसे मा बापोंने कुलक्षणदेख छोड़दिया तो वह वेश्या से भोगकरनेलगा और भी कई स्त्रियों से भोगकरे सबसे विजयपावे कारण यह कि उसको एकस्तंभनका मंत्रयादथा तिससे वह जीतताथा यहबात एकवेश्याने सुनी तो कृष्णदासको बुलाया वार्त्तालापहुआ वेश्या बोली मैंने कोई ऐसा मर्द न देखा जो मुझसे रतमें जीते तब कृष्णदास बोला हमजीतेंगे पर हारे वह लाखटका दे इसपर उनका रतहोनेलगा पहर एकबीतो वह वेश्या दुःखीभयी और बोली मैं हारी तू जीता छोड़दे और अपनी मासे बुलाकर कहा इसको द्रव्य देदेना नहीं तो मेरे प्राण निकलजावेंगे तिस की माने कही कि बेटी हमारा यहही रोजगारहै यह राजीरहे वह ही कामकराती रहो फिर रही चारघड़ी में फिर त्राहि २ पुकारी तो तिसने कहा जो मेरा द्रव्य दुगुना करके देवे तो छोड़ूं उसनेदेना स्वीकार कियाहीथा कि बुढ़ियाने क्यौरापाय झटबाहर वृक्षपर चढ के मुरगे की बोली बोली तो तिसने सवेरा जान तिसे छोड़दियी बाहर आकर देखै तो पहररात पड़ी है तो फिर आया तब तिसने निजबहिन को अपनी जगह उसके संग सुवा दी वहभी चारही

घड़ीमें चिल्लाउठी निदान इन्होंने सव घरभरका द्रव्य दिया तव गैल छूटी ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेपंचविंशःप्रदीपः२५ ॥

अथपड्विंशःप्रदीपः ॥

## द्रव्यमश्वपरीक्षाज्ञोलभतेस्वामितोयथा ॥ सकडालेयथाश्विन्याज्ञानाद्द्रव्यंतुलब्धवान् २६

अश्वकी परीक्षा करनेवाला भी स्वामी से धनपाताहै जैसे सकडालने घोड़ीके जाननेसे द्रव्यपाया ॥ दृष्टान्त ॥ एक नंदन पुरकाराजा मदनकुँवर जिसका मंत्री ( सकडाल ) सो धर्मात्मा बुद्धिमान् किसीदिन राजाने किसी के वहकाने से इसे क़ैदकर दिया और मंत्री वैठाया वह कामकरे तो एकदिन वंगालेके राजा ने परीक्षाके लिये दो घोड़ी भेजीं और पूछा कि इन में मा वेटी कौन हैं सो कहो एकमहीनेतक,वताओ तव राजाने सबोसे पूछा पर किसीने न वताया महीनावीता तव सन्देह हुआ कि जो यह वात न वनाई गई तो वहां कहैंगे कि कोईभी वुद्धिमान् उस सभा में नहीं है निदान शोच करते २ सकडालयाद आया तो तिसे शीघ्रवुलाया और उसका वहुतसा आदर किया शिरोपांव दिया दंड माफकिया और कहाकि इसघोड़ी की परीक्षा करो कि इनमें मा वेटी कौनसी है वह वोला वहुत अच्छा यहकह उसने दोनों को पट्टीदिवाई फिरठहराई तो मा निज वेटीका माथा थकी जानसूंघने लगी,तिसने पहिचान पिछान कर राजाको वताई राजाने भेजी तो तिसका वहुतसा इनाममिला ॥ इतिश्रीदेवीसहायसंगृहीतायां दृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेपड्विंशःप्रदीपः २६ ॥

अथसप्तविंशःप्रदीपः॥

## परस्त्रीवञ्चयेत्सद्यो माययास्वामिनंयथा ॥ आयातमपिसद्यस्तं व्रीडयत्कुसुमावती २७ ॥

परस्त्री शीघ्रही निज मायासे स्वामी को वंचनकर लेती है जैसे आये भये भी पति को कुसुमावती ने वंचित किया ॥ दृष्टान्त ॥ एक चक्रवती नगरी तहांका सुदास नाम राजा असकुँवरधन नाम मन्त्री तिस गांव में विरम वनियां तिसकी बेटी कुसुमावती वह पुरुषोत्तम को व्याही थी एक समय पुरुषोत्तमदास सेठ परदेशको गया वहां आठ वर्षरह द्रव्य कमाया इधर कुसुमावती दश दिन तो शीलता से रही फिर निश्शंक भई तो तिसने निज दासी से कहा कि कोई उत्तम जनको बुलाला मुझको काम व्यापा है तो तिस दासी ने कहा कि जो बुरा न मानो तो कहा चाहती हूं वह बोली बोल तो बोली एक गांवमें कामावंती वेश्या रहती तिसके यारका व्यवहारहै तिससे उस पास जाऊं तो तुम्हारा कामकर ले आऊंगी यह कह पांच मोहरले वेश्या के घरपर गई और बैठके मोहरदीनी और कहा कि यह काम है तो तिसने लौंड़ी के हाथ उसे बुलवाई ममौला लौंड़ी इससे आय बोली कि आपको बुलायाहै तब कुसुमावती बोली आजही सेठजी आवैंगे मैं कैसे चलूं सो तू जायकह तब फिर जाय कहा तो कामावती बोली तू फिर जाकर कहु कि जो आनाचाहै तो आव नहीं तेरी मरजी निदान गई तब तो तिसने बिनजाने निज तिसके पति सेठ के पासही भेजी जो वह सामने गई सोही देखै तो निज पतिही है और उसने निज स्त्रीको ॥ पहिचानली तब अवकाश से बुद्धि उपायकर बोली कि वाह२

अजी तुम ऐसा काम करतेहो मैंने निज पति से सिवा किसी का मुख देखा नहीं और तुम परस्त्री से आसक्तहो मैंने निज आंखों से देखलिये कि कामावती के पास आये अभीतक कानोंसेही सुनती थी यह सुन पति खिजलाय के बैठरहा ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यां तृतीयभागेमिश्रनिबन्धेसप्तविंशःप्रदीपः २७ ॥

अथाष्टाविंशःप्रदीपः ॥

## व्यभिचारैकदोषोपि गुणसिंधौनिमज्जति ॥
## आसक्तोपियथाराज्ञां राज्ञाविद्वान्क्षमीकृतः२८॥

व्यभिचार रूप दोष भी हो पर वह गुणरूप समुद्र में मग्नही होजाता है जैसे राजाकी स्त्री मे आसक्तभी भया गुणवान् द्विज था वह राजाकरके क्षमापराध किया गया ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे एक धारा नगरी तहांका भोजराजा और सुमति नाम प्रधान वह महा प्रवीणथा एक दिन भोज राजा की एक रानी चन्द्ररेखा वह बहुत चंचल थी उसका मन एक शुभकर्ण नाम पण्डित से लग गया यह रानी एकबेर रात्रि समय पण्डित के पास गई तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और तिससे भोग किया ऐसेही बहुत दिन बीतेएक दिन जो रतिकोचली तिससमय राजाभी तिसके पीछे २ निकल चला और उस व्यवस्था को समझ घरआ पलंगपर सोरहा फिर रानी भी आई और सो रही प्रभात होतेही राजाने सभा करी पहर एक पीछे सबको शिपदई पण्डितको रहनेदिया और रानीकोभी बुलाई कथा वार्त्ताकी चरचा करी पण्डित प्रसन्नभयो तब रातकी बात पूंछी महाराज रातको कौन बात करी सो मुझसे सच कहो तब पंडितजीचकित भये और रानीभी जानगई तब पण्डित ने

विचारके यह कहा क्षमाकरो सुनतेही राजा प्रसन्न हुआ फिर विचाराऐसा परिडत मिलना नहीं स्त्री तो वहुत मिलसक्ती हैं यह कह वहुतसा धन दे विदाकिया ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे नामाष्टविंशःप्रदीपः २८ ॥

अथोनत्रिंशःप्रदीपः ॥

तथायष्टिपरीक्षातो लब्धवान्मानमुत्तमम् ॥
अतोवैविदुषांज्ञेयं चातुर्यम्भूषणम्परम् २९ ॥

तैसेही लाठीकी परीक्षा से उत्तम मानपाया इससे चातुर्य्यचतुराई यह विद्वानों का श्रेष्ठआभूपण है ॥ दृष्टान्त ॥ एकदिन अम्बधर राजा सभामें वैठाथा तो एक लकड़ी जो रंगीन वड़ी सुन्दर थी सो विरपुर से विरसिंह राजा ने परीक्षा के लिये भिजवाई थी सो वकीलने कहा इसकी परीक्षा करद्यो अच्छी है या वुरी तव राजाने दी तो सवही ने देखी पर यथार्थ परीक्षा किसीसे न होसकी इतनेमें सकडाल मंत्री आगया राजा को सलाम करी तव राजा वोला हे दीवान ये लकड़ी राजा विरसेन के से आईहै सो वतावो अच्छी है या वुरी है तो वोला ये वड़े २ आदमी वैठे हैं इनसे पूंछो राजा कहा तुमहीं वतावो इनसे क्या होनाहै तव कहा इसे वहते पानी में डालदेवो अच्छी होगी तो ठहरजावैगी नहीं वह जावैगी सोही छोड़ी तो वह पानीमें ठहरगई राजाने प्रसन्नहो वहुतधनदिया॥इति श्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांमिश्रनिवन्धेतृतीयभागेऊनात्रिंशःप्रदीपः२९॥

अथत्रिंशःप्रदीपः ॥

वंचकोवंचयेन्नारी छलादिसहितस्तुयः ॥
यथाशंभुद्विजोनारी वंचयामाससमायया ३० ॥

वंचक जन जो छल बलवलवालाहोय वह स्त्रीकोभी वंचनकर लेता है जैसे शंभू ब्राह्मण ने मायाकरके स्त्री को वंचितकरी ॥ दृष्टान्त ॥ एक सिद्धपुर नाम नगर है तिसका शिवभंक्त राजा और सुन्दर नाम प्रधानथा तहां शंभू ब्राह्मण महाप्रवीण वह एक समय तीर्थयात्रा को चला राहमें एक सुन्दर स्त्री मिली परन्तु वह लोभिन थी दोनों का सामना हुआ कामदेव व्यापा ब्राह्मण ने कहा आ रमणकरें स्त्री बोली बिना लिये न करनेदूंगी उस समय ब्राह्मण के पास और कुछ न था तो तिसने निजकण्ठी निकालदी दोनों ने रमण किया जब उसने कण्ठी मांगी तो वह बोली मैंने निज देह बेचके ली है तब उसने औसान विचार उसके खेत में से सिरा तोड़के भगा वह पीछे २ भगी गांव में आये लोगों ने पूछा तो शंभू बोला मैं भूखा ब्राह्मण तीन दिनसे भूखाहूं इसके दो सिरे तोड़े तो इसने मेरी कण्ठी उतारली तब सबों ने तिस स्त्रीको कायल कर उससे उसकी कण्ठी दिवाई ॥ इतिश्रीशुक्लदेवीसहायकृतायांदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेत्रिंशःप्रदीपः ३० ॥

अथैकत्रिंशःप्रदीपः ॥

## स्त्रियंस्नेहवतींदृष्ट्वा देवोपिस्निह्यतेस्वयम् ॥
## आलिंगितायथाशीला देवदृष्टाधराभवत् ३१॥

स्नेहवती स्त्रीको देखकर देवता भी आप स्नेहयुक्तही होजाता है जैसे शीला ने गणेशजी का आलिंगन किया तो गणेशजी ने तिसका होठ दांतों से दबालिया ॥ दृष्टान्त ॥ एक लोहपुर नगर है वहां का लोकपाल नाम राजा है तिसका मन्त्री भीमसेन तिसकी दुश्शीला भार्या सो महा ग़रीब तिसके साथ तीन और

स्त्री मिल चारों सूत बेचनेको पद्मावती नगरी में गई राह में गणेश जी का मन्दिर था उन चारों ने जाय शिरनाय दण्डवत्करी एक तो बोली जो मेरे सूत में द्रव्य मिलै तो मैं तुम्हारा भाग धरूंगी दूसरी बोली मैं आप के धूपदीप करूंगी और बोली मैं आप के भेंट चढ़ाऊंगी और चौथी दुश्शीला बोली मैं आपसे नग्नहोकर आलिंगन करूंगी ऐसे कह सूत बेचो सबको नफारहा फिर सब संग चली गणेशजी के भी पास आई अपनी अपनी भक्ती पूरी कीं और दुश्शीला गणेशजी के नग्नहोकर लिपटी और चुंबनकरो तो श्रीगणेशजी ने निज लीला से तिसके होठ मुखमें दबालिया और छोड़ानहीं फिर तिसके पतिने आय बहुत बिनती करी तब प्रसन्नहो हँसे होठ मुखसे छूटा ॥ इतिश्रीदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेनामैकत्रिंशःप्रदीपः ३१॥

अथ द्वात्रिंशःप्रदीपः ॥

दृष्टान्तप्रदीपिन्यांमिश्रनिबन्धेस्त्रीनिषेधः॥

तहां पहिले स्त्री चरित्र वर्णन कर अब स्त्रियों का निषेधकरते हैं तहां भर्तृहरिजी के ये दो श्लोक कहेजाते हैं॥

शास्त्रंसुचिन्तितमपिप्रतिचिन्तनीयमाराधितो पिनृपतिःपरिशङ्कनीयः॥ अंकेस्थितापियुवतिःपरिरक्षणीया शास्त्रेनृपेचयुवतौचकुतोवशित्वम् ३२ यां चिंतयामिसततंमयिसानुरक्ता, साचान्यमिच्छति जनंसजनोऽन्यसक्तः॥ अस्मत्कृतेतुपरितुष्यतिकाचिदन्या धिक्तांचतंचमदनंचइमांचमांच ३३॥

यह शास्त्रजो है वह चिन्तन किया भी फिर चिन्तन करना अर्थात् विचारनाहीं चाहिये और आराधन किया अर्थात् सब प्रकारसे प्रसन्न भयाभी राजा शंकनीय शंकाके योग्यही है अर्थात् तिससे भयही मानना चाहिये और निज स्त्रीजो पासमेंभी हो फिर भी पर पुरुष से उसकी रक्षाहीं करनी शास्त्रमें और राजा में तथा स्त्री में वशहोना नहीं बनसक्ता श्रीभर्तृहरिजी कहते हैं कि जिस रानीका मैं निरन्तरचिंतन करता और वह मुझमें अनुरक्त स्नेहवाली थी वह अन्य पुरुष को चाहती और वह पुरुष अन्य स्त्री में आसक्तथा और हमारे लिये वह अन्य स्त्री प्रीतिवाली होती तिससे तिस स्त्रीको और तिस पुरुषको और उस कामदेवको तथा इसरानी को और मुझको भी धिक्कार है॥ दृष्टान्त ॥ राजा भर्तृहरिजी के राज्यमें एक ब्राह्मण तपस्या करता था वह धुआंही पीकर रहता था और भूख प्यासके दुःखको सहता था उस ब्राह्मणकी तपस्या को देखके देवता प्रसन्न हो उसे वरदेनेलगे तो उसने कुछ न लिया तब आकाशवाणी भई कि हम अमृत फल भेजदे हैं वहतूले तब एक मनुष्य की मूर्तिमें देवता आकर देवता फलदे यह कहगया कि तू इसे खावेगा तो अमर होवेगा वह फल ले प्रसन्न हो घर आया और ब्राह्मणी के हाथमें वह फल देकर कहा कि यह देवता ने मुझे दियाहै जो इसे खावे वहही अमर होगा यह बात सुनतेही ब्राह्मणी व्याकुल हो बोली कि यह दुःख और पाप भोगनेमेंही हम हैरान होरहे हैं जो इसे खावें तो और भीख मांगते २ दुःखकाटेंगे खाल मांस सब हाड़में मिल जायँगे ऐसे जीनेसे मरन भला है मरनेवाले को इतना दुःख नहीं होता इससे योग्य यहहै कियह फल लेजाय निज राजाजी को दीजिये और उससे कुछ धनली-

जिये यह सुनकर वहभी निज जीमें समझा कि सचहै इस संसार में इतना जंजाल कौन सहै इसी तरहकी बातें आपसमें करके वह ब्राह्मण राजा के पास चला जब राजाके द्वार पर पहुँचा तो द्वारपाल से कहा कि राजाको खबरदेवो कि कोई ब्राह्मण आपकेलिये एक फल लेकर आयाहै तो दरवान ने राजा से जाकर विनयकी कि एक ब्राह्मण आपके लिये फल लायाहै द्वारपर हाज़िर है जो आज्ञा हो राजा ने सुनतेही कहा कि उसे अभी लाओ हलकारे ने हाज़िर किया और ब्राह्मण ने राजाको आशीश दी कि धर्म लाभहो और वह फल राजा के हाथमें दिया राजा ने उसे हाथमें लेकर पूछा कि इसका वृत्तांत कहो तब ब्राह्मण कहनेलगा स्वामी मैने जो तपस्याकी थी सो देवताओं ने उसकावर अमरफलमुझे दिया सो मैं अमर होकर क्या करूंगा इसे आपखाय अमर होइये क्योंकि आपसे लाखों जीव पलतेहैं यह सुनकर राजा हँसा और उसे लाख रुपये दिये और गांव वृत्तिदेकर विदाकिया फिर राजा निजजीमें विचारने लगा कि मैंतो पुरुष हूं कुछ कमजोर नहीं हूं गा यह फल रानीको दिया चाहिये वह मेरे प्राणका आधार वह जीतीरहै तो मै सब सुख भोगोंगा यह जीमें ठानकर जा महलमें दाख़िल हुआ फल रानीको दिया वह पूछने लगी कि महाराज यहक्या चीजहै जिसे बड़ेयत्नसे लिये आयेहो [illegible]का ब्यौराकहो तब राजाने कहा सुन सुन्दरी [illegible]सको खा[illegible] [illegible]दा यौवनवती रहैगी दिन २ रूप बढ़ैग[illegible] [illegible] हो[illegible] [illegible] अहवाल सुनकर फल राजाके हाथ[illegible] [illegible] मैं इ[illegible] खाऊंगी र[illegible] देकर ब[illegible] [illegible] एक मि[illegible] कोतवाल [illegible] उसे बु[illegible]

यह हमें राजाने देकर कहाहै कि इसे खावेगा वह अमरहोगा तुम मेरे प्यारेहो इससे इसे खावो औरअमरहोओ तो मुझे बड़ी खुशी होवे यह सुनतेही कोतवाल ने खुशहोकर फल रानी के हाथमे ले लिया और अपने मकानको गया उसकी आशना एक कसबी थी उसे फल देकर कहा यह अमरफल तेरे लिये लायाहूं तू इसे खा यह सुन, उसने उससे फल लेलिया और उसे बिदा किया फिर अपने जी मे विचारा कि एक तो मै कसबीहूं और अमरहूंगी तो कितनेही और पाप कमाऊंगी इससे श्रेष्ठ यह है कि फलले राजा को दीजिये जो राजाजीवे तो मुझे याद करैगा और पुण्य होगा पाप सब कटेंगे यह शोचकर राजाके दरबार में गई और वहफल राजा के हाथ मे दिया तो तिसे देखतेही राजा बेसुध होगया और निज जी में यह कहनेलगा कि फल तो मैने रानी को दिया था यह विचार हँसकर कहनेलगा कि यह तुझको किसने दियाहै वह वेश्या सब बातें जानती थी पर राजा से फकत यहही कहा कि मुझे कोतवालने दियाहै [illegible] उसने जानलिया कि रानी ने बुरा काम किया तो तिसवेश्या को कुछ धन दे बिदाकिया और कोतवालको बुलाय तंगकर पूछा तो तिसने रानी से पाया बताया तब तो राजा अचंभेमें रहगया और कहनेलगा कि मैने तो निज मन रानी को दिया और रानी ने मन कोतवाल में लगाया अब ऐसे जीनें से मरना भला या इस राज्यको तजिये इन सबको धिक्कारहै यह कह राजा फल लिये महल मे आया और रानी से पूछा वह फल क्या किया तो बोली उसे खा लिया इसीलिये आपने दिया था तब राजा ने वहही फल निकाल रानी को दिखाया वह देखतेही जर्द होगई और राजा से आंखे नहीं मिलासकी राजा ने

उसके देखते २ वह फल खा लिया और राजपाट धन दौलत माल खजाना आदि सब ठाट तज फ़क़ीरहोकर चलदिया रानी लाचार होरही इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेद्वात्रिंशः प्रदीपः ३२ ॥

अथ त्रयस्त्रिंशः प्रदीपः ॥

यांचिन्तयामिसततंमयिसानुरक्ता साचान्यमिच्छतिजनंसजनस्तथैवम् ॥ शेतेतयासहविचिन्त्य चरित्रमेतद्धातुर्दुरत्ययगतिस्त्विवतितर्कयामि ३४ विशंकितोभ्रातृपुरंप्रतस्थे तत्रापिचाश्चर्य्यतरंह्यपश्यम् ॥ तेनाथधैर्यंतुकथंचिदाप्तवान्नारीसतीकापिनलभ्यतेहिता ३५ ॥

शाहजमां कहताहै कि जिस प्यारी स्त्रीका मैं निरन्तर चिंतन करता और वह मुझ में अनुरक्तथी वह अन्य पुरुषको चाहती वह उस मेरी स्त्री के पास सोता है ऐसे इस विचित्र चरित्रका चिंतन करके विधाताकी गति बड़ी दुरत्ययहै अर्थात् जानी नहीं जातीहै ऐसीही तर्कणा करताहूं फिर इसही सन्देहसे शंकितभया मैं अपने भाई के नगर में गया तो तहां महाही आश्चर्य्य उससे भी विशेष देखा तो तिससे मैं कुछेक धैर्य्यको प्राप्तहुआ और निश्चय जान लिया कि हितकारक [illegible] अद्वित [illegible] कहीं नहीं मिलती है ॥ दृष्टान्त ॥ प[illegible] देश भी [illegible]के समान तथा चीनके समान था अ[illegible] देश उस[illegible]न थे वहां का राजा म[illegible]पी अति[illegible] और न्या[illegible] प्रजा उससे अ[illegible] उस रा[illegible]पुत्रथे [illegible]ड़े का नाम शहर[illegible]

कुँवर अपने पिता के सदृश गुण और शीलवान् थे जब राजा कालवश हुआ तो उसका बड़ा पुत्र शहरयार गद्दी पर बैठा और उसने निज छोटे भाई शाहजमां को जो उससे अतिप्रीति रखता था तातारदेश बहुतसी सेना और खज़ाना दिया शाहजमां निज बड़े भाई का कृतज्ञहोकर बिदाहुआ और देशप्रबन्ध के लिये समरकन्द को जो उस समय सब शहरों से उत्तम और बड़ा था अपनी राजधानी बना अति आनन्द से रहनेलगा जब उनको न्यारे हुये दश वर्ष बीतगये तो शहरयार को अपने छोटे भाई के मिलनेकी अति लालसा भई और उसने इच्छाकी कि किसीको भेजकर उसे अपने पास बुलाऊं निदान उसने निज मन्त्री को बुलाकर उसे लाने की आज्ञादी वह मन्त्री राजा की आज्ञा पाय, धूमधामसे बिदाहुआ जब वह निज राजधानी के निकट आया तो तिसे शाहजमां निज सेना साथले अगवानी लेनेआया और वह उसे देखतेही अतिप्रसन्न हुआ और अपने भाई शहरयारकी कुशल पूछनेलगा तो मन्त्री ने नियमानुसार दण्डवत्करके शहरयारकी कुशल पूछी सो कही तब शाहजमां जो निज भाईका बड़ा प्रेमी आज्ञापालक था और उससे प्रीति रखताथा सो मन्त्री से बोला कि मेरे बड़े भ्राता ने जो निज प्रेम से मुझे लेने भेजा इससे मुझे अत्यन्त हर्ष हुआ और उनकी आज्ञा मेरे शिर माथे पर है परमेश्वर चाहा तो दशदिन में मैं सफ़रकी तयारी करके और किसी को निज कामके लिये प्रबन्धकरके तुम्हारे साथचलूंगा पर तुम्हारी सेना के लिये खाने पीनेका सामान यहांहीं तयार होजावेगा इसलिये तुम यहां ठहरो निदान उसीजगह सब सामान वहांही तयार होगया और वे वहां रहे इस अवसर में राजाने या-

आकी सब वस्तु मँगवाईं और अपने स्थानपर विश्वासपात्र मंत्री को नियत कर दशवें दिन सायंकाल निज–राजधानी जो तिसे बहुतही प्यारीथी उससे विदाहोकर अपने सेवकों समेत समरकंद से चला और कितनेही दिनों बाद मंजल दर मंजल चल ने लगा पर उस समय चलतेही उसके यादआई कि एक वेर रानी से तो और मिलआवें उस समय आधीरात को आपही अकेला मिलने को आया तो तिस रानी को उसके लौट आनेकी कुछ भी शंका न थी तब वह एक नीच अनुचर के साथ सोरही थी राजा ने जाना कि रानी मेरी अन्तिम भेटसे अत्यन्त प्रसन्न होगी, पर दूसरे मनुष्यके साथ सोती देखकर अतिविस्मित हो एक घड़ीतक मूर्च्छित रहा जब होश आया तो विचारने लगा कि कदाचित् मुझे भ्रम न होगयाहो फिर अच्छीतरह देखकर निश्चय किया और पछताने लगा कि बड़ा अनर्थ है कि अभी मैं समरकंद की सामासे भी नहीं निकलाहूं और ऐसे २ कुकर्म होनेलगे यहशोच वहीं अत्यन्त क्रोधित हुआ और उसी कोपाग्निसे खांड़ा हाथमें ले एक हाथ ऐसा मारा कि दोनों के शिर धड़से अलग होगये फिर उन दोनोंकी लोथोंको पिछवाड़े की खिड़की से गढ़े में फेंक अपने डेरेको लौटा और किसी से रात्रिका समाचार न कहा दूसरे दिन भोर होतेही वहां से यात्राकी मार्ग में सेनाके सब लोग तो प्रसन्नथे परन्तु शाहजमां रानी के उस अनुचित कर्मकी सुधिकरके अत्यन्त दुःखित और उदासथा और प्रतिदिन उसका मुंह पीला होता जाता था इसी तरह उसको सम्पूर्ण मार्ग बड़े कष्टसे कटा जब वह हिन्दुस्तान की राजधानी के निकट पहुँचा तब शाहरयार उसके पहुंचने का समाचार सुन सम्पूर्ण दरबारियों को साथले

अगवानी के वास्ते आगा जब दोनोंकी सवारी निकट पहुँची तो दोनों राजा निज २ घोड़ों से उतरकर परस्पर मिले और एक दूसरे की भेटसे प्रसन्नहोकर देरतक कुशलक्षेम पूछ फिर बड़ी धूमधाम से रवाना हुये शहरयार ने उसे उस मकान में जो उसने पहिले से सजवाकर रक्खा था और जहां से फुलवाड़ी देखपड़ती थी लेजाकर उतारा वह मकान ऐसा बड़ा और सजाहुआ था कि उसमें राजाओं की पहुनई अच्छी तरह होती थी फिर शहरयार ने अपने भाई को स्नान कराकर कपड़े बदलने की आज्ञादी और जब वह स्नान करचुका तब वे दोनों भाई महलके चौबारे में बैठकर परस्पर वार्त्तालाप करते थे और दरबारी लोग दोनों राजाओं के पास अपने २ यथोचित स्थानोंपर खड़े थे निदान वे दोनों भाई भोजन कर फिर वार्त्ता करनेलगे जब शहरयार ने देखा कि बहुत रात्रि आगई तो वह शोकसे रोताहुआ निज सेजपर लेटा और अपने कष्टको भाई से छिपाये था उसके उठने के उपरान्त वही चिन्ता उस पर फिर सवारहुई और उसके जी में ऐसी चिन्ता थी कि मानो प्राणान्त होता है अपनी रानी का अनुचित कर्म उसके हृदय से कभी भी नहीं छूटता था वह बहुधा हाहा खाता और ठण्डी सांसें लिया करता था और रातों में उसे निद्रा न आती थी इसीशोक और क्रोध में वह घुलाजाता था यहांतक कि धीरे २ दुर्बलहोने लगा शहरयार ने उसका यह हाल देखकर विचार किया कि मैं तो शाहजमांसे बड़ी प्रीति रखता और उसका भलीभांति सन्मान करताहूं तौ भी सदैव इसे शोकमेंही मग्न देखताहूं नहीं मालूम कि वह निजदेशकी चिन्तामें पड़ा है अथवा अपनी प्रिय रानी के वियोगमें दुःखित रहताहै मैंने इसको बुलाकर वृथा शोक

समुद्र में डाला अब यही उचित है कि इसको अच्छी २ सौगात देकर और समझा बुझाकर यहां से समरकंद को भेजें जिससे इसका दुःख मिटे यह शोचकर उसने उत्तम २ बहुमूल्य वस्तु हिन्दुस्तान की किश्तियों में लगाकर भेजी और उसकी प्रसन्नताके लिये नानाप्रकारके नाच तमाशे कराये परन्तु वे सब उसके शोक को अधिक बढ़ानेवाले हुये और उसका मन कभी प्रसन्न न हुआ इसी अवसर में शहरयार ने दरबारियों को आज्ञादी कि मैंने सुना है यहांसे दो दिनकी राहपर एक वनहै जिसमें बहुतसे मृग आदि पशु हैं इसलिये मैं वहां शिकार को जाऊंगा तुम भी शीघ्रही तैयारहो और मेरे भाई से भी कहो कि वह भी मेरे साथ चले शिकार में उनका जी लगेगा और प्रसन्नता प्राप्त होगी शाहजमाने निवेदन किया कि महाराज मेरा चित्त अच्छा नहीं है इस कारण मैं न जाऊंगा-शहरयारने कहा कि अच्छा यदि तुम यहीं रहने में प्रसन्न हो तो रहो पर मैं तो अपने सेवकों समेत शिकार को जाता हूं शाहजमाने उसे बिदाकर अपने मकान के भीतर के किवाड़ बन्दकर लिये और एक खिड़की में जहां से राजा की फुलवाड़ी देख पड़ती थी जा बैठा कि पक्षियों की मधुरवाणी और सुन्दर पुष्पों की सुगन्ध से अपने हृदय का शोक दूर करे कभी उस मकान की सज धज और बनावट को देखकर अपने जी को बहलाता और कभी रानी के अनुचित कर्म का स्मरण कर नखरूपी शोकसे हृदय को चीरता जब सन्ध्या हुई तो क्या देखता है कि राजमन्दिर का चोर दरवाजा खुलगया और उससे २० स्त्रियां जिन के बीच में इक्कीसवीं रानी थी दिव्यवस्त्र और आभूषण पहिने निकलकर बाग में आईं उन सब को निश्चय था कि राजा

शिकार खेलने गये हैं शाहजमां इस युक्ति से खिड़की में बैठा था
के छिपकर उन सब को देखे कि वे क्या करती हैं लौंडियों ने
अपने बड़े और लम्बे कपड़ों को जो वे पहिन कर महल से नि-
कली थीं उतारडाला और उन की सूरत स्पष्ट मालूम होने लगी
शाहजमां यह हाल देखकर बड़ा आश्चर्य्यमान हुआ कि उन
बीसों में जिन को वह स्त्री जानता था दश हब्शी थे हर एक ने
पहिचान २ कर एक २ स्त्री का हाथ पकड़ लिया केवल रानी
बिना पुरुष के रहगई तब उस ने मसऊद २ कह के पुकारा और
एक अतिहृष्ट पुष्ट महातरुण सीदी जो उस के शब्द के ताक
र था पेड़ से उतर कर उस की ओर दौड़ा और रानी का हाथ
पकड़लिया अब मुझे उनका हाल वर्णन करते लज्जा आतीहै कि
उन ११ हब्शियों ने उनदशों स्त्रियों और ग्यारहवीं रानी के साथ
क्या किया इस तरह वे अर्द्धरात्रि तक उस बाग़ में रहे और फिर
तालाब में स्नानकर और अपने २ वस्त्र पहिन उसी चोर दरवाज़े
से राजमन्दिर में चलीगईं और मसऊद भी बाग़की दीवार फांद
कर चलागया शाहजमांको यहघटना देखकर कुछ धीर्यहुआ और
सोचा कि मुझको तो दुःख थाही परन्तु मेरे भ्राताको मुझसे भी
अधिक दुःखहै यदि वह अत्यन्त तेजस्वी और प्रतापवान् है परन्तु
उससे इस बुरे काम की रक्षा न हो सकी अब मुझे इतना शोक
न रखना चाहिये अब मुझे अच्छी तरह विदित होगया कि ऐसा
कुत्सितकर्म्म संसार में बहुधा होता है तो अपने को शोकसमुद्र
में डुबाना वृथा है यह सोच उसने सब चिन्ता त्यागदी और पूर्व्व
जो उसे भूख और प्यास न लगतीथी सो फिर क्षुधा लगनेलगी
और नानाप्रकारके भोजन मँगवाकर रुचिपूर्व्वक खाने और गाना

बजाना सुनने लगा भाई के लौट आनेके समाचार पाकर अ
हर्षितहुआ और उससे भेंटकी राजाने शिकार किये हुये बहुत
मृगआदि उसे दिये और कहा कि पश्चात्ताप है जो तुम शिका
को न चले वहां अत्यन्त आश्चर्य था शाहजमां राजा को ह
प्रश्नका उत्तर हर्षसहित देताथा शहरयार जानता था कि अब
शाहजमां को उसी शोक में पाऊंगा पर अपने विचार के विपरी
उसको हर्षित और प्रसन्नतायुक्त पाकर बोला हे भाई परमेश्वर
धन्यवाद है कि मैंने तुझे थोड़ीही अवधि में नीरोग और प्रस
पाया अब मैं तुमसे एक बात सौगन्द देकर पूछताहूं उसको तु
अवश्य बताना शाहजमांने कहा कि जो बात आप मुझसे पूछें
ज़रूर बताऊंगा शहरयार ने कहा कि जब तुम अपनी राजधान
से यहां आयेथे तो मैंने तुम को शोकसमुद्र में डूबाहुआ पाय
था और मैंने तुम्हारे दुःख के निवारणार्थ बहुत उपाय किये औ
तमाशे दिखाये परन्तु तुम उसी अवस्था में रहे मैंने कितनाह
विचार किया कि इस शोक का कारण मालूम करूं परन्तु केवल
प्रियरानी और निज देशके वियोग के विशेष कोई कारण मे
विचार में न आया अब क्या हुआ जो एकाकी तुम्हारा हाल बद
लगया शाहजमां ये बातें सुनकर चुपहोरहा और जब शहरया
ने बहुतही जिद्द की तो बोला कि आप मेरे बड़े और स्वामी
इसका उत्तर मैं आपको नहीं देसक्ताहूं क्योंकि उसमें अति ढिठा
और निर्लज्जता है तो शहरयार ने कहा कि इसके विना मेरे मन
को धीरज न होगा। निदान शाहजमां ने लाचारहो प्रथम त
अपनी रानी का अनुचितकर्म विस्तार से वर्णन किया और कह
कि यह ही हेतु मेरे दुःख का था तब शहरयारने कहा कि हे भ्रात

तुम ने तो बड़े ही आश्चर्य और अचंभे की बात कही अच्छा किया कि तुम ने ऐसी कुकर्मिणी को उसके जार समेत मारडाला इस विषय में तुम को कोई भी अन्यायी न कहैगा यदि मैं होता तो विना सहस्र स्त्रियोंके मारे नहीं रहता अब मुझको तुम्हारे शोक का हाल मालूम होगया अब इस विषय में तुम जितना शोक करते वह उचित था अब यह बताओ कि मेरे पश्चात् यह शोक क्योंकर निवृत्तहुआ उसने कहा कि उसका वर्णन करते मैं भयभीत होताहूं कि ऐसा न हो कहीं तुमको मुझसे भी अधिक कष्ट होवे शहरयारने कहा कि हे भ्रातः तुम ने ऐसी बात कही है जिसे सुनने से मैं अत्यन्तही व्याकुल और विह्वल हुआ हूं अब ईश्वर के लिये यह वृत्तान्त विस्तार करके कह तब तो शाहजमा ने लाचार होकर उन स्त्रियों हब्शियों और रानीका सभी भेद वर्णन किया और कहा कि यह अघटनीय दुर्घट घटना मैंने निज आंखोंसे प्रत्यक्षही देखी है और यह भी समझा कि सब स्त्रियें ऐसी ही व्यभिचार भरी हैं इसलिये लोग इनका भरोसा न करें मुझे इसी हालके देखने से कुछ २ तसल्ली हुयी है और उसीसमय से मैं प्रसन्न और नीरोगहूं यह हाल निज भाई के मुखसे सुनकर भी भरोसा शहरयार को न भया तो क्रोध करके कहने लगा कि क्या हिन्दुस्तान की सभी स्त्रियें कलंक वाली हैं मुझे पूरा २ एतबार नहीं है जबतक कि मैं भी इस वृत्तान्त को निज आंखोंसे न देख लेऊं क्योंकि कदाचित् तुम को भ्रमही होगयाहो शाहजमाने कहा हे भाईजी जो मेरे कहने पर विश्वास नहीं है तो फिर शिकारके लिये आज्ञा करिये हम तुम दोनों सेना समेत कूचकरके बाहर को चलें दिन भर तो डेरोंमें रहें फिर रातको चुपचाप इसी मन्दिर

में आकर बैठजावें ताते निश्चय है कि आप भी सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मैंने कहा है वहही निज आंखों से देखलेओगे शहरयार ने यह बात ठीक मान निज दरबारियों को आज्ञा किया कि कल मैं फिर शिकार करनेको जाऊंगा निदान दूसरे दिन भोरभये ये दोनों भाई शिकारको चले और शहर के बाहर चलकर डेरों में ठहरे जब रात्रि हुई तो शहरयार ने निज मंत्री को बुलाकर कहा कि मैं किसी काम के लिये जाताहूं तू किसी मेरे मनुष्य को इस सेना से बाहर जाने न देना निदान वे दोनों निज २ घोड़े पर सवार हो छिपे छिपे नगर में आये और शाहजमा के महल में जाकर प्रभात भये से पहिलेही उसी खिरकी में जायबैठे जहां से शाहजमा ने उन हब्शी और रानियों को देखाथा तो सूर्य्य न निकलाथा कि एकबारगी महल का चोरदरवाजा खुला और थोड़ीही देर पीछे रानी भी उन्हीं हब्शियों समेत जो स्त्री बनरहे थे निकलकर बाग में आई और मसऊद को पुकारा शहरयार जो वह समाचार जो कहने सुनने योग्य न था देखकर मन में यह कहनेलगा कि हे परमेश्वर! यह क्या अनर्थ है कि मुझ ऐसे बादशाहकी औरत होकर इसकदर व्यभिचार करे फिर शाहजमा से बोला अब यहही उत्तम है कि हम इस असार संसार को जो एकही क्षण में मन को प्रसन्न करता और दूसरे क्षण दुःख में डाल देताहै इसका त्याग करें और अपने देश सेनासे अलग होकरके दूसरे देशों में बस निजजन्म को काटें और इस निर्लज्जता को किसी से भी नहीं कहें यदि शाहजमा की यह बात अंगीकार भी न थी परन्तु तिस शहरयारको अधीर देखकर अन्यथा उत्तरदेना असभ्य समझकर बोला भाई मैं तुम्हारा अनुचरहूं और आपकी

आज्ञा को मन वच कर्म्म से मानूंगा और इस शर्त्त से तुम्हें साथ देऊंगा किसी और मनुष्य को अपने से अधिक व्यथा में पावो तो निज घर को लौटआना ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे मिश्रनिबन्धे त्रयस्त्रिंशः प्रदीपः ॥

अथ चतुस्त्रिंशः प्रदीपः ॥

**अहंहिदुःखीतिनरोनचिन्तयेत्ततोपिदुःखप्रचुरो थलभ्यते ॥ यथापिशाचोयुवतिस्वगोपितां शतो पभुक्तांनहिसस्मरेयतः ३६ ॥**

यह जन मैंहीं दुखियाहूं ऐसा न जानलेवे किन्तु तिससे भी भारी दुःखवाला कोई मिलजाता है जैसे पिशाच स्त्रीकी आपभी वड़े यत्नसे रक्षा करता था तिसपर भी तिसे सैकड़ो मनुष्यो से भोगीभई नही जानता था ॥ दृष्टान्त ॥ शहरयार ने निज भाई से कहा कि कोई भी मनुष्य हमारे जैसा दुखियारा कोई नहीं होगा तब शाहजमा बोला कि यह तो थोड़ेही सफर मे हमें मालूम होजा-वेंगा निदान वे दोनों छिपकर अप्रसिद्ध राहसे चले और दिनभर चलकर रातको किसी एक वृक्ष के नीचे सो रहे फिर दूसरे दिन प्रभात भये वहां से भी आगे गये और चलते २ एक शोभायमान फुलवाड़ी में पहुंचे जो अति उत्तम नदी के तीरपर थी वहां ये दूर २ तक वड़े २ उत्तम २ सघन वृक्ष लगे थे वहां ये एक वृक्ष के नीचे सुस्ताने को वैठगये और आपस में बातचीत करनेलगे पर थोड़ी देर न वीती थी कि एकवार भयानक शब्द हुआ तिसे सुन दोनों भाई भयभीत और कम्पायमान भये इतने में नदी का जल फटा और उसमें से एक काला खम्भा निकलनेलगा जो इतना ऊंचा

हुआ कि बादल में पहुँचकर गुप्त होगया उसे देख वे दोनों बहुत डरे और वहांसे भागकर एक ऊंचे वृक्षकी डालियों में जाय छिपे तो क्या देखते हैं कि वहही काला खम्भा उस स्थान से नदी के तटपर आया और तुरन्त एक महा पिशाच बनगया और शिरपर एक शीशेका सन्दूक धरे जिसमें पीतल के ताले चार लगेहुये थे उसी वृक्ष के नीचे आया और उस सन्दूक को उतारकर चारों कुंजियों से जो उसके पासथीं खोला तो तिसमें से एक अतिसुन्दरी स्त्री उत्तम भूषण और वस्त्रों से सजी निकलआई तो तिस जिन्द ने उसको अपने पास बैठाकर प्रीतिकी दृष्टि से देखा और कहा कि हे प्यारी तू अपनी सुन्दरता में एकही है बहुत दिन हुये कि मैं तुझको बरातकी रातिही में ले आया था और तेरी अनूप छवि को देख मोहित हुआ उसी दिन से तुझे निष्पाप पाताहूं इस समय मुझको निद्राका अतिही वेगहै इसलिये चाहताहूं कि तेरे पास सो रहूं यह कह वह महा कुरूपपिशाच उसकी जांघपर शिररखकर सो रहा उसके पांव इतने बड़ेथे कि नदीतकपहुँचे और उसके श्वास का शब्द बादलके शब्द समान गूंजरहाथा दैवयोग से उस स्त्रीनें जो ऊपरकी ओर देखा तो तिसकी तिन दोनोंपर दृष्टिपड़ी सोही सैनसे उसने उनको बुलाया कि चुपकेसे नीचेउतर आओ वे उसके अभिप्राय को समझकर भयभीतभये और उसे सैन से समझायी कि कृपाकर हमें यहांही बैठे रहने देवो फिर उसने धीरे से उस पिशाच का शिर अपनी गोद से उतारकर पृथ्वीपर रखदिया और आप उठ उनको धीरज देके कहनेलगी कि तुम दोनों शीघ्रही पेड़ से उतरकर मेरे समीप आओ यदि तुम मेरा कहना नहीं मानोगे तो मैं इस पिशाच को जगादूंगी यह इसी समय तुमको

मारडालेगा इस बात को सुन वे बहुतही डरे और चुपके से उस वृक्ष से नीचे उतर आये वह सुन्दरी मुसकुराती भई उन दोनों का हाथ पकड़कर थोड़ी दूर वृक्ष के नीचे लेगई और अपने साथ भोगकरने की इच्छा प्रकट की प्रथम तो तिन्होंने इन्कारही किया पर पीछे डरकर उसका कहा करनापड़ा फिर उस स्त्री ने दो अँगूठी उन से मांगलीं और एक छोटा संदूक निकाला जिस में बहुतसी अँगूठियां थीं उनदोनों को भी उन में ही रखलीं और कहा कि तुमने जाना यह क्या बात है तो ये बोले कि हम नहीं जानते हम को बतलादो उस मृगनयनी ने कहा कि यह उन लोगों के चिह्न कि जिनको मैंने तुम्हारे समान इस कार्य में उद्यत किया था, यह ९८ अँगूठी हैं और अब तुम्हारी दो मिलने से सौ होगईं जिन्नकी इतनी रक्षा और प्रबन्ध से भी मैंने सौ बेर अपना मन प्रसन्न किया है यह दुराचारी जिन्नजो मुझपर मोहित है और अपने तीर से क्षणमात्र भी अलग नहीं करता एवम् अति प्रबन्ध से इस संदूक में बन्दकर समुद्र में छिपाकर रहता है पर इतनी चातुरता और रक्षा से भी मेरा जो मन चाहता है मैं करती हूं और उसकी रक्षा कुछ काम नहीं आती मेरेहाल से तुम समझलो कि जब स्त्री पुंश्चली होती है तो उसको कोईभी दुष्टकर्म्म से नहीं बचा सक्ता बहुधा मनुष्य स्त्रियों के निष्पापहोनेपर विश्वास रखतेहैं पर उनके विचारके विपरीत वे कुकर्मिणी होती हैं निदान वह उनकी अँगूठीले वहीं जाबैठी और जिन्न के शिर को उठा अपने घुटनेपर रख सैन से कहा कि तुम यहां से चलेजाओ वह दोनों वहां से चले और जब बहुत दूर निकलगये तो शाहजमा ने अपने भाई शहरयार से कहा कि देखा इतनी रक्षा और प्रबन्ध करनेपर भी वह स्त्री मनमानता काम करती है

हुआ कि बादल में पहुँ ... मास है ...
डरे और वहां से भा ... पव ...
तो क्या देखते ...
तटपर आय ...
एक श ... किसी स्त्री से विवाह ...
उसीके ... निष्पाप स्त्री का मिलना कठिन है निदान
भ्राताके कहने अनुसार किया और वहां से अपने ...
चला तीन रात्रि पीछे वे दोनों अपनी सेना में पहुँचे शहर ...
हर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को फिर
गया महल में जाकर मंत्री को आज्ञा दी कि इसी समय रानी
मारने के वास्ते लेजा और मंत्री ने आज्ञानुसार उसको मार
डाला फिर राजा ने रानी की दासियों को अपने हाथसे मार वि-
र किया कि ऐसा उपाय कियाजाय कि विवाह करने के पीछे
स्त्री बुरे कर्म करने का समय न पासके इसलिये उसने यह ठह-
राया कि रातको विवाह कियाकरूं और भोरहोतेही उसे मरवाडालूं
इसके उपरान्त उसने अपने भाई शाहजमा को विदा किया और
वह उत्तम उत्तम वस्तु सेना आदि साथ लेकर अपनी राजधानी
समरकन्द को चलागया शाहजमा के चलेजाने के पीछे शहर-
यार ने अपने बड़े मंत्री को आज्ञाकी कि किसी बड़े सरदार की
बेटी मेरे साथ विवाहके वास्ते ला मंत्री ने बादशाहकी आज्ञानुसार
एक बड़े अमीरकी पुत्री लादी और बादशाह उसकेसाथ विवाह
कर रातभर उसके साथ रह भोरहोतेही मंत्रीको आज्ञा दी कि इसी
समय इसे मारडाल और रातको दूसरीनवीन सुन्दर कन्या लाइयो
मंत्री ने उस दुलहिन को मारडाला और रात के वास्ते और किसी

अमीर की लड़की लाया और बादशाह ने भोर होतेही उसे भी मरवाडाला इसी तरह उसने बहुत दिनों तक सैकड़ों अमीरों और बादशाहों की लड़कियां विवाहीं और मरवाडालीं जब नगर की लड़कियों की पारी आई और इस अन्याय का समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भय कोलाहल और रोना पीटना पड़ा कहीं तो पिता अपनी पुत्री के वास्ते आठ २ आंसू रोताथा और कहीं माता अपनी प्यारी पुत्री के वास्ते हाहा खा विलाप करतीथी जो कन्या बचरहीथीं उनके माता पिता और सम्बन्धी अत्यन्त भय में रहते थे दुःखित हो देश छोड़ अन्यदेश में जा बसे, निदान वहां के मंत्री की दो पुत्रियां अनव्याही थीं बड़ी का नाम शहरज़ाद और छोटी का नाम दुनियाजादथा शहरजाद अपनी छोटी बहन और बराबरवालियों से समझ और बुद्धि में अधिक थी जिस बात को वह श्रवण करती वा पुस्तक में देखती फिर कभी विस्मरण न करती और वाक्चालतामें भी अति प्रवीणथी उसे बहुत से प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व दृष्टान्त याद थे और आप भी रचनेकी शक्ति में अत्यन्त निपुण थी सिवा इसके सुन्दरतामें भी अद्वितीय थी एक दिन उसने अपने पिता से कहा कि मैं आपसे कुछ कहना चाहतीहूं उसे अंगीकार कीजिये मन्त्री ने कहा कि यदि तेरी बात मानने योग्य होगी तो मैं अवश्य मानूंगा शहरज़ादने कहा कि मेरा विचारहै कि मैं बादशाह को इस अन्याय से हटाऊं और जो लड़कियां उसके मारने से बचरही हैं उनके माता पिता को निश्चिन्त करदूं मंत्री ने कहा हे पुत्री तुम इस विषय को किस तरह रोकसक्ती हो और उसके बन्द करने के लिये कौनसा उपाय शोचाहै शहरज़ाद ने कहा कि इस-

पर जिन्न को उसपर कितना विश्वास है और उसके निष्पाप होने की कितनी प्रशंसा करताथा अब आप न्याय से कहिये कि इस जिन्नपर हम से अधिक कष्ट है वा नहीं हम जिस बात की खोज में थे उसको पाया और अब हमें उचित है कि अपने देशों को चलें और कभी किसी स्त्री से विवाहही न करें क्योंकि इस समय में निष्पाप स्त्री का मिलना कठिन है निदान शहरयारने अपने भ्राताके कहने अनुसार किया और वहां से अपने नगरकी ओर चला तीन रात्रि पीछे वे दोनों अपनी सेना में पहुँचे शहरयारने फिर आगे जाने की इच्छा न की और अपनी राजधानी को फिर आया महल में जाकर मंत्री को आज्ञा दी कि इसी समय रानी को मारने के वास्ते लेजा और मंत्री ने आज्ञानुसार उसको मार डाला फिर राजा ने रानी की दासियों को अपने हाथसे मार विचार किया कि ऐसा उपाय कियाजाय कि विवाह करने के पीछे स्त्री बुरे कर्म करने का समय न पासके इसलिये उसने यह ठहराया कि रातको विवाह कियाकरूं और भोरहोतेही उसे मरवाडालूं इसके उपरान्त उसने अपने भाई शाहजमाको विदा किया और वह उत्तम उत्तम वस्तु सेना आदि साथ लेकर अपनी राजधानी समरकन्द को चलागया शाहजमा के चलेजाने के पीछे शहरयार ने अपने बड़े मंत्री को आज्ञाकी कि किसी बड़े सरदार की बेटी मेरे साथ विवाहकेवास्ते ला मंत्री ने बादशाहकी आज्ञानुसार एक बड़े अमीरकी पुत्री लादी और बादशाह उसकेसाथ विवाह कर रातभर उसके साथ रह भोरहोतेही मंत्रीको आज्ञा दी कि इसी समय इसे मारडाल और रातको दूसरीनवीन सुन्दर कन्या लाइयो मंत्री ने उस दुलहिन को मारडाला और रात केवास्ते और किसी

अमीर की लड़की लाया और बादशाह ने भोर होतेही उसे भी मरवाडाला इसी तरह उसने बहुत दिनों तक सैकड़ों अमीरों और बादशाहों की लड़कियां विवाहीं और मरवाडालीं जब नगर की लड़कियों की पारी आई और इस अन्याय का समाचार सारे संसार में फैलगया तो नगरभर में अत्यन्त भय कोलाहल और रोना पीटना पड़ा कहीं तो पिता अपनी पुत्री के वास्ते आठ २ आंसू रोताथा और कहीं माता अपनी प्यारी पुत्री के वास्ते हाहा खा विलाप करतीथी जो कन्या बचरहीथीं उनके माता पिता और सम्बन्धी अत्यन्त भय में रहते थे दुःखित हो देश छोड़ अन्यदेश में जा बसे। निदान वहां के मंत्री की दो पुत्रियां अनब्याही थीं बड़ी का नाम शहरजाद और छोटी को नाम डुनियाजादथा शहरजाद अपनी छोटी वहन और बराबरवालियों से समझ और बुद्धि में अधिक थी जिस बात को वह श्रवण करती वा पुस्तक में देखती फिर कभी विस्मरण न करती और वाचालतामें भी अति प्रवीणथी उसे बहुत से प्राचीन महात्माओं के काव्य और अपूर्व दृष्टान्त याद थे और आप भी रचनेकीशक्ति में अत्यन्त निपुण थी सिवा इसके सुन्दरतामें भी अद्वितीय थी एक दिन उसने अपने पिता से कहा कि मैं आपसे कुछ कहना चाहतीहूं उसे अंगीकार कीजिये मन्त्री ने कहा कि यदि तेरी बात मानने योग्य होगी तो मैं अवश्य मानूंगा शहरजादने कहा कि मेरा विचारहै कि मैं बादशाह को इस अन्याय से हटाऊं और जो लड़कियां उसके मारने से बचरही हैं उनके माता पिता को निश्चिन्त करदूं मंत्री ने कहा हे पुत्री तुम इस विषय को किस तरह रोकसक्ती हो और उसके बन्द करने के लिये कौनसा उपाय शोचाहै शहरजाद ने कहा कि इस-

को उपाय तुम्हारे हाथ है तुमको मेरी सौगन्द है कि मेरी विवाह वादशाह के साथ करो मंत्री यह वात सुनकर कम्पायमान हो बोला हे बेटी तेरी बुद्धि भ्रष्ट होगई है कि मुझ से ऐसी अनुचित इच्छा करती है क्या तुझे वादशाह का प्रण विदित नहीं है? विचारपूर्वक मुखसे वात निकाल तू क्यों वृथा अपनी जान देगी और किस प्रकार उसे रोकेगी लड़की ने कहा कि मैं वादशाह का वृत्तान्त भली भांति जानतीहूं पर इस इच्छाको न छोडूंगी यदि और लड़कियों के सदृश मैं भी मारीगई तौ इस असार संसारसे छूटूंगी और जो मैंने वादशाह को इस अन्याय से हटादिया तो अपने नगर वालोंका वड़ा स्वारथ करूंगी मंत्रीने कहा कि मैं किसीतरह तेरी इच्छा अंगीकार नही करसक्ता और तुझको जान बूझकर ऐसी बलामें न डालूंगा वड़े आश्चर्य्य की वात है कि मैं ऐसा खड्ग तेरे हृदयमें मारूं किसी पितासे अपने प्रिय सन्तान के निमित्त ऐसा कर्म न होगा चाहे तू अपने प्राणको प्यारा न समझ परंतु मुझसे यह न होगा कि अपने हाथों को तेरे रुधिर से भरूं शहरज़ादने कहा कि हे पिता किसीतरह तो मेरी प्रार्थना को अंगीकारकर तब मंत्री बोला कि इस विषयमें तेरा विशेष कथन मेरे क्रोध को अधिक करती है तेरा हाल उस गर्दभके समान होगा ॥ इति दृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबंधेचतुस्त्रिंशःप्रदीपः ३४ ॥

अथपंचत्रिंशःप्रदीपः ॥

गर्दभ और उसके पालक की कथा ॥

अविचार्य्योपदेशंयः कुरुतेमन्दधीःपुनः ॥
दुःखीस्याद्गर्द्दभोदत्त्वोपदेशंगव्यकीयथा ३७

जो जन किसी को बिन विचार करके उपदेश देदेताहै वह अंत में फिर दुःखही पाता है जैसे गधे बैल विषे गधा उपदेश देकर पश्चात् अकी दुःखवान् भया दृष्टान्त एक बड़ा व्यापारी था जिस के गांवमें अनेक घर और कारखाने थे जिनमें नानाप्रकार के पशु रहते थे। दैवयोग से वह एक दिन निज कारखाने को देखने के लिये स्त्री समेत गांव में गया और उस पशुशाला में जहां वह गधा और बैल बंधेथे वहां जाकर देखा कि वे दोनों आपस में वार्तालाप कर रहे हैं वह व्यापारी जो कि हर एक पशु पक्षी की बोली को समझ लेताथा ध्यान दे कान लगाय उनकी वार्ता सुनने लगा बैलने गधे से कहा कि तू बड़ाही भाग्यवान् है जो सदा सुखसे रहताहै मालिक सदा तेरीखबरदारी करता मलदल के तुझे न्हलाता और दोनों दिन रातसन्ध्या में, दाना यव खिलाता तथा सुन्दर शीतल निर्मलजल पिलाताहै और इस पालनके सिवा तेरा काम इतनाही है कि जब कभी काम पड़ताहै तो तेरा मालिक तुझपर सवारहोकर थोड़ी दूरपर जाताहै निदान जितना तू भाग्यवान् है तितनाही मैं भाग्यहीनहूं जो भोर भयेही मेरी पीठपर हल धरकर हरवाहा चाबुक से मुझे मार २ हांकता है और हलके भार तथा रगड़ से मेरा कंधा छिलरहाहै प्रभातसे रातलक ऐसा कठिन काम लेकर भी सांझको सूखा सड़ा भूसा मेरे आगे डालता जिसे मैं खा नहीं सक्ताहूं और रातभर भूखा, प्यासा अपने मूत्र और गोबरसे सना पड़ा रहताहूं और तेरे इस चैनपर सदा ईर्षा करताहूं तो गधे ने यह उत्तर दिया कि भाई सचहै और यथार्थही तुझपर ऐसा कष्टहै परन्तु तू तो इसी से प्रसन्नहै और आपही नहीचाहता है कि अपने को इस आपत्तिसे बचाऊं यदि तू ऐसा श्रम करता२

मरजाय तौभी तुझपर तरस ये लोग न करेंगे पर एक उपायको जो तू करै तो तुझसे ये इतनी मिहनत नहीं लेवेंगे और तू भी सुखसे सदा रहैगा तो बैल बोला वह कौनसा उपाय है गधेने कहा कि कल तू अपने को रोगी बनाकर रातको निज दाना भूसा न चर और चुपचाप पड़ारहु यह सब बात सुनकरके बैल बोला अच्छा ऐसाही करूंगा तैंने यह उपाय बहुतही अच्छा बतायाहै परमेश्वर तुझे आनन्द में रक्खे इतना कहके वे दोनों चुपहोरहे और भोर भये हरवाहे ने चाहा कि बैल खोल हलमें लगावें पर क्या देखा कि रातकी सनीसनाई सानी नांदमें ज्योंकी त्यों भरी धरी है और बैल पृथ्वी पर पड़ा हाँफरहाहै कि नेत्र उसके बन्दहैं और पेटभी फूलरहा है तब हरवाहे ने उसे रोगी जान हल में न लगाया और व्यापारी से जाय कहा कि आज बैल रोगी होगयाहै वह व्यापारी सुनतेही समझ गया कि बैलने अपने को रोगी बनायाहै इसलिये हरवाहे से कहा कि आज बैल का काम इस गधे से लेलियाजावे निदान हरवाहे ने उस गधेको जोत उससे सारे दिनभर का काम किया तो गधा कि जिसे उस काम का अभ्यास न था थकगया और उसके हाथ पांव ठण्ढे होगये सिवाय श्रम करने के उसने इतनी मारखाई कि संध्याको लौटती समय चल नहीं सक्ता था उधर बैल उस दिन बहुतही आनन्दसे रहा और जो कुछ उसकी नांद में था उसे उसने आनंद से पाय खाय गधेको आशीर्वाद दिया जबगधा थकित हुआ खेत से आया तो तिस से बैलने कहा कि तेरे उपदेश से मैं आज बहुतही आनंदमें रहाहूं गधा मांदगी के कारण कुछ उत्तर उसका उसे न देसका और आतेही अपने थान पर गिरपड़ा और वह अपने को मन में बुरा भला कहनेलगा कि हे

अभाग तूने वृथा इसको ऐसी शिक्षा देकरके अपने को कष्ट में डाला मंत्रीने यह कह निज पुत्री को समझाया कि क्यों तू उस गधेके समान निज जानको फँसाती है और जो तू हठ करके इस वातका पीछा न छोड़ैगी तो तुझे वहही दण्ड होगा जो निज स्त्रीको उसी व्यापारी ने दियाथा और उस गधे बैलकी क्या अवस्था भई सो सुन ॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धे पंचत्रिंशःप्रदीपः ३५ ॥

अथ षट्त्रिंशःप्रदीपः ॥

**हठेऽतिक्रियमाणेहिदण्डयोगम्प्रसाधयेत् ॥**
**दंडेव्यापारिणामुक्ते हठःशान्तःस्त्रियोयथा ३८**

जब कोई बहुतही हठ करै तो तहांपर दण्डयोग का साधन करना अर्थात् तिसे ताड़ना देनी जैसे व्यापारी की स्त्री का हठ दंडा छोड़ने अर्थात् मंत्री ने कहा दूसरे दिन वह व्यापारी रात्रिको भोजन से निश्चिंतहो अपनी स्त्रीसमेत उन दोनो पशुओं के पास जा बैठा और सुना कि गधा उस बैलसे पूछता है कि कहो भाई कल भोर को जब हरवाहा तुम्हारेवास्ते दाना घास लावेगा तब तुम क्या करोगे बैलने कहा जैसा तुमने मुझे उपदेश किया है वैसाही करूंगा गधे ने कहा कहीं ऐसा काम भी न कीजियो नहीं तो जानसे माराजायगा कल संध्या को फिरते समय मैंने सुना कि हमारा स्वामी अपने रसोईं वनाने वाले से कहता था कि भोर होतेही कसाई और चर्मकार को बुलालाना और बैल जो कल से बीमार है उसे मारकर उसका चर्म और मांस उनके हाथ बेचडालना मैंने जो सुनाथा मित्रताकी राहमे तुझ से कहा

अब मेरे विचारमें तेरे लिये यही उत्तमहोगा कि सवेरे जब च
तेरे आगे डालजाय तो शीघ्र उठकर खाना और नीरोगबनज
बस स्वामी तुझे नीरोग जानकर तेरे मारने का उपाय न क
यह बात सुन बैल भयभीतहो बोला कि भाई परमेश्वर तुझे
नन्द रक्खे तूने मेरे प्राणबचाये अब मैं वही करूंगा जो तूने
क्षाकी है व्यापारी गधे और बैलकी वार्तासुन ठट्ठामारके हँसा
उसकी स्त्री उसके एकाएकी हँसनेपर आश्चर्यवान् हुई और पू
लगी कि विना प्रयोजन तुम क्यों हँसे उसने कहा वहबात व
की नहीं है पर इतना कह सक्ताहूं कि मैं गधा और बैलकी
सुनकर हँसा स्त्रीने कहा कि यह भेद बताओ तो मैं भी पशु
की वार्त्ता समझूं पर जब व्यापारीने न बताया तो स्त्रीने कहा
तुझे इस विद्याके बताने में क्या शोच है व्यापारीने कहा कि
भेद के बताने से मैं न जीऊंगा वह बोली कि तू मुझे धोखा दे
है क्या जिसने तुझे सिखाया था वह मरगयाथा जो तू भी का
वश होगा यह तेरा कहना असत्य है जिस तरह होसके मुझे
भेद को सिखा और यदि तू मुझे न बतायेगा तो मैं अपने
ण तज दूंगी यह कह वह स्त्री अपने घरको चली गई और
ठरी का किंवाड़ मूंदकर बैठी और रातभर क्रोधित हो चिल्ल
रही व्यापारी रात को तो सोरहा पर दूसरेदिन भी उसे उसी द
में देख समझाने लगा कि तू किस शोच में पड़ी है वह बात
सीखने योग्य नहीं स्त्री ने कहा कि जबतक तू मुझे यह भेद
बतावेगा मैं अन्न पानी न करूंगी और इसी विधि चिल्लाती
रोती रहूंगी व्यापारीने कहा कि यदि मैं तेरी मूढ़तापर चलूं
अपने प्राण से हाथ धोऊं वह बोली मेरी बला से तू जी या

पर मुझ को यह विद्या बता कि मैं पशुओं की बोली समझूं व्यापारीने उस महामूर्ख स्त्री को उसी हठ में देखकर अपने और उस के नातेदारों को बुलाया और कहाकि तुम इस मूर्खा को समझाओ कि इस विचार में न पड़े निदान कितनाही उन सबों ने उसे समझाया परन्तु वह अपनी हठ से न हटी और अपने पति मरने पर प्रसन्न हुई छोटे लड़के उसकी विह्वलता और व्याकुलता देख रोने और हाहाकार करनेलगे व्यापारी से कोई उपाय न बन पड़ता था कि अपनी स्त्री को समझाये और उस को इस विद्या के पूछने से हटारक्खे निदान वह बड़े संशय में पड़ा कि यदि मैं यह भेद बताता हूं तो मेरी जान जाती है और जो नहीं बताता तो स्त्री मरती है इसीशोच विचार में वह अपने घरके बाहर जा बैठा तो क्या देखता है कि उसका कुत्ता मुर्गको मुर्गियों से भोगकरते देख भूंका और क्रोधित होकर कहनेलगा कि तुझे धिक्कार है जो आजदिन विशेषकर ऐसे समय में भी तू इसकार्य्य से अलग नहीं रहता मुर्गने पूंछा कि क्या कारण है जो मैं अपनी प्रसन्नता से हटूं कुत्ते ने कहा कि क्या तुझे मालूम नहीं कि आज हमारा स्वामी अतिचिन्तावान् और व्याकुल है उसकी महामूर्ख स्त्री ऐसे भेद को पूछती है कि जिसके बताने से वह तुरन्तही मरजावे और यदि न बतावे तो स्त्री मरजावेगी इस कारण उस के घरके सम्पूर्ण स्त्री पुरुष रुदन करते हैं और तेरे सिवा हम सबभी अपनी स्त्रियों से शोकवान् हैं मुर्गे ने उत्तरदिया कि हमारा स्वामी मूर्ख है जो केवल एक स्त्री रखता है सो भी उसके आधीन नहीं मैं पचास मुर्गियां रखता हूं और सब मेरे आधीन हैं यदि वह एक उपाय करे तो अभी उसका शोक दूर हो जावे कुत्ते ने पूछा

कि वह कौनसा यत्नकरे कि जिससे उसकी स्त्री हठछोड़े मुर्ग ने कहा कि वह उस मकान में जाय जहां उसकी स्त्री है और उस कोठे का किंवाड़ बन्दकर उसे एक लकड़ी से अच्छीतरह मारे तो इस दण्ड से वह उसी समय हठ छोड़ देगी और फिर कभी उस बात का नाम न लेगी व्यापारी मुर्गे की यह बात सुनकर उठा और एक लकड़ी लेकर जिस स्थानपर उसकी स्त्री रुदन करती थी जा उसे मारनेलगा और यहांतक मारा कि उस स्त्री को अपनी हठ छोड़ने के सिवाय कुछ न बन आया वह घबराकर अपने पति के चरणोंपर पड़ी और कहनेलगी कि बस अब न मार मैंने अपनी हठ छोड़ी और फिर कभी ऐसी हठ न करूंगी इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेषट्त्रिंशःप्रदीपः ३६ ॥

अथ सप्तत्रिंशः प्रदीपः ॥

व्यापारी और पिशाच की कथा ॥

सत्यप्रयुक्तंसुजनं मृत्योरक्षतिहीश्वरः ॥
व्यापारिणोयथामृत्युः पिशाचादिनिवारितः ३९॥

सत्यवान् श्रेष्ठजन की ईश्वर मृत्यु से भी रक्षा करता है जैसे व्यापारी की मृत्यु से भी परमेश्वर ने रक्षाकी ॥ दृष्टान्त ॥ अगले समय में एक अतिधनी व्यापारी था यद्यपि उसके कारबारी कोठियां, गुमाश्ते और सेवक हरजगहपर नियत थे परन्तु आप भी प्रायः व्यापारके वास्ते देश विदेश जाया करता था एक बेर उसे किसी बड़े कार्य्य के लिये एक किसी दूर देशको उसे जाना पड़ा तो वह अकेलाही घोड़ेपर सवारहोकर चला जहां उसे जाना था वहां किसी भांतिकी खानेकी वस्तु नहीं मिलती थी इसलिये उस

ने निज खुरजी में कुलचे और छुहारे भर लिये और वहां पहुँच कर काम करचुकनेपर लौटा और चौथे दिन भोरभये वह राह छोड़ किसी पेड़की छायामें ठहरा और वहांहीं विश्राम लेनेकी इच्छाकी निदान दूसरे सघन वृक्षों के नीचे एक सुन्दर निर्मल जलवाला कुण्ड देख घोड़े से उतरा और उसे एक वृक्षके बांध उसी कुण्ड के कूलपर जा बैठा और कुलचे छुहारे निज थैली से निकालकर खानेलगा जब पेट भरगया तो छुहारों की गुठलियां निकाल २ इधर उधर फेंकदी और अपने परमेश्वरकी वन्दना करनेलगा कि इतने में उसने एक पिशाच महाही विकट देखा जो निज हाथ में खड्ग लिये उसकी ओर झपटकर आया और अत्यन्त क्रोधकर ललकार करके बोला इधरआव तुझे मैं मारूं तब व्यापारी उसका विकरालरूप और भयंकर बातें सुनकर भयभीत हुआ और कंपायमानहो यह कहा स्वामी मुझसे ऐसा आपका कौन कसूरहुआ जो बे अपराध मुझे मारते हो पिशाच ने कहा कि तूने मेरे पुत्र को मारा मैं तुझे मारूंगा व्यापारी बोला मैंने आपके पुत्रको क्यों कर मारा मैंने तो तिसे देखा भी नहीं है पिशाच ने कहा कि क्या तू अपना रस्ता छोड़कर नहीं बैठा अपनी झोली से तू ने छुहारे निकाल नहीखाये और उनकी गुठलियां निकाल२ कर इधर नहीं फेंकी हैं तब व्यापारी ने निरुत्तरहोकर कहा कि स्वामी सब सच है मैं इन बातोंको झूठ नहीं कहसक्ता पर मारनेकी कोई बात नहीं है तब उस पिशाच ने कहा कि जब तू छुहारे की गुठलियां चारों ओर फेंकताथा तो एक गुठली उछलकर मेरे पुत्रके शिरमें लगी तिससे वह मरगया उसके बदले में मैं तुझे मारताहूं फिर व्यापारी लाचारहोकर बोला किस्वामी प्रथम तो मैंने आपके पुत्रको जान

बूझकर नहीं माराहै और जो मुझसे अज्ञानता में यह अपराध होगया तो तिसकी मैं आपसे प्रार्थना करके क्षमा मांगताहूं पिशाच ने कहा कि न तो मैं क्षमा करना चाहता हूं और न तरस करना क्या तुम्हारे धर्मशास्त्रमें वधके बदले वधकरना नहीं लिखा है मैं तुझे अवश्य मारूंगा यह कह उस व्यापारी की बांह पकड़ उसे पृथ्वी पर गिरादिया और मारनेको तैयारहुआ तब तो व्यापारी निज स्त्री पुत्रों को याद कर २ के रोनेलगा और परमेश्वर और देवताओं की सौगन्द दिलाने लगा कि मुझे छोड़दे तो उस पिशाच ने तिसका अत्यन्तही रोना पीटना सुनकर तिसे छोड़दिया और चाहा कि यह रोने से रहै तबही इसे मारें पर व्यापारी ने रोना पीटना न छोड़ा कि हाहाकार कर करके महाही विलाप करतारहा पिशाचने कहा कि जो तू आंशूके बदले रुधिर भी बहावै तब भी मैं तुझे नही छोड़ूंगा व्यापारी ने कहा बड़ा पश्चात्ताप है कि तुमको किसी प्रकार करके भी दया नहीं आती है अन्याय से मुझ दीन निष्पाप जनको मारते हो और मेरे रोने पर भी विचार नहीं करते हो क्या सचमुच मुझे मारही डालोगे पिशाच बोला कि अब इसमें कुछ सन्देह रहाहै इतने में भोर भया जब व्यापारी ने देखा कि यह पिशाच मुझे अवश्यही मारेगा तो तिससे बोला हे दयालु यदि मैं तुम्हारे हाथ से मारने योग्यही हूं और मुझे मारे विन किसी प्रकारभी न छोड़ोगे तो मैं इच्छा करता हूं कि आप इतना अवसर मुझे दीजिये जो मैं निज स्त्री पुत्रोंसे विदाहोआऊं और अपना मालमता निज परिवारके नाम लिख आऊं कि मेरे मरनेपर परस्पर विरोध नहीं होसके और मैं सत्य प्रण करताहूं कि इन सबकामों के करचुकनेके पीछे मैं इसी स्थान

पर आय मिलूंगा उस समय जो जी में आवे वहही आप कीजियेगा तो पिशाच ने कहा कि जो मैं तुझको इतना अवकाश देऊं और फिर तू न आवे तो व्यापारी बोला कि जो मेरे इस सत्य कहनेपर तेरा विश्वास नहीं है तो मैं उस परमेश्वरकी कि जिसने निज इच्छासे इस आकाश भूमिमण्डल को रचा है उसकी सौगन्द खाताहूं कि अपने सम्पूर्ण काम होनेपर मैं शीघ्रही तेरेपास आजाऊंगा तब पिशाच ने कहा कि कहु तुझे कितना समय चाहिये व्यापारी बोला कि केवल एक वर्षमात्र कि जिसमें मैं निज सब कामों को सम्पूर्णकर आयसकूं और कोई वांछा मेरे जी में नहीं रहसके इससे आपके आगे यह प्रतिज्ञा करताहूं कि एकवर्ष के उपरान्त इसी दिन मैं तुम्हारे पास आय अपने प्राण तुम्हारे शरण में अर्पण करूंगा तब तो तिस पिशाच ने कहा कि इस सत्यप्रतिज्ञा पर परमेश्वर को साक्षी दे तब तो तिस व्यापारी ने दृढ़ शपथ खाकर ईश्वरको बीचमें दिया इस प्रणयपर वह पिशाच इस व्यापारी को उसी कुण्डके तटपर छोड़कर अन्तर्द्धान हुआ और व्यापारी उस अकस्मात् दुःख से छूट घोड़ेपर सवार होकर अपने घरकी ओर चला तो राहमें वह अपने छूटजाने से प्रसन्न और कभी उस पिशाच के कठिन प्रणका स्मरण करके शोकवान् होता था निदान वह अपने घर पहुंच और उसकी स्त्री और नातेदार उसे देख अतिप्रसन्न हुये और उसकी भेंटको दौड़े पर व्यापारी किसीसे न मिला और रुदन करनेलगा उसकी यह दशादेख वे समझे कि व्यापारमें कुछ टोटाहुआ अथवा किसी और प्रकार की हानिहुई कि जिसकारण यह इतना रुदन करताहै जब उसका रोना बन्दहुआ तो उसकी स्त्री ने पूछा कि हम सब तो तुम्हारे आने

से प्रसन्नहुये परन्तु तू क्यों रोता है व्यापारी ने उत्तर दिया कि मैं रुदन क्यों न करूं केवल एक वर्ष मैं जीऊंगा फिर उनसे सम्पूर्ण अपना और पिशाचका वृत्तान्त वर्णन किया तो वे हालको सुन बहुत रोये विशेषकर उसकी स्त्री शिर पीटने और बाल खसोटने लगी और लड़केवाले बड़े शब्द से रुदन करनेलगे निदान वह दिन तो तिसको रोने पीटने में कटा और दूसरे दिन निज संसारी कार्य्य करनेलगा तो तिसने सब कामों से प्रथम अपना सबऋण चुकाया फिर अपने मित्रोंको अच्छी २ वस्तुयें दीं याचकोंको बहुत सा धन दिया दासी दासोंको बन्धन से छुटाया समस्तधन निज सन्तानको बांटदिया असमर्थ सन्तानों के हेतु रक्षक नियत किये और अपनी स्त्री को भी बहुतसा धन दिया इस समयांतर में वह वर्ष भी पूराहोगया तो वह लाचारहोकर चलनेमें उद्यतहुआ तब बिदाहोनेके समय उसने निज कफनके लिये भी कुछ द्रव्य खुरजी में रखलिया उससमय सब परिवार में महाही हाहाकार होरहाथा और सब के सब उससे लपट २ करे रोरहेथे और यह भी चाहते थे कि उसके साथ में निज प्राणोंको भी खोदेवें पर उसने निज जीको स्थिर करके कहा कि तुमजाओ मैं परमेश्वर की इच्छा पर जाताहूं तुम सब धीर्य्य धरो कि एक दिन मरनाही है मृत्यु से वश किसी का भी नही है निदान निजजनोंको समझाता व्यापारी उनसे ढाढस कर छूटकर चला और उसी स्थानपर पहुँचा जहां पिशाच से भेट भईथी वहां घोड़े से उतरा और उसी कुण्ड के निकट जाय अत्यन्तशोकयुक्त हो पिशाच की राह देखने लगा इतने में कोई वृद्धपुरुष जो निज साथ में एक हरिणी लिये उसके पास आया और कहने लगा कि ऐसे निर्जन वनमें जहां विकट पिशाच रह-

तेहैं तुम्हारा क्योंकर आनाहुआ बहुधा मनुष्य इस वृक्षके तले जानेसे धोखा खाकर जातेहैं कि यह विश्राम का स्थान है यहही समझ वे इसकी छाया में आय बैठते हैं फिर पिशाचों के हाथ से दुःख पातेहैं तो व्यापारी ने उस वृद्ध मनुष्य को उत्तर दिया कि तुम सत्यही कहतेहो मैं इसी धोखे में पड़कर पिशाच के हाथ से दुःखित हुआ हूं फिर उसने उससे सम्पूर्ण वृत्त वर्णन किया तिसे सुन वृद्धने बड़ा आश्चर्य्य किया उसने कहा कि संसार में इससे विचित्र कोईवृत्तान्त न होगा कि तूने जो परमेश्वरकी सौगन्द खाई थी उसे पूरीकी तू बड़ा सत्यवान् है और तेरी इस सत्यतापर धन्य है अब मैं बिना यह देखे कि वह पिशाच तेरे साथ क्या करताहै यहां से नहीं जाऊंगा यह कह वह वृद्ध उस व्यापारी के निकट बैठ गया और परस्पर वे दोनों वार्त्ताकरते थे कि इतने में दूसरा वृद्ध जिसके साथ दो काले कुत्ते लगेहुये वह आया और उनसे समाचार पूछने लगा तो पहिले वृद्धने तिस व्यापारी का सब वृत्तांत कहा और बोला कि यहही आश्चर्य्य देखने को मैं यहां ठहर रहाहूं तो वहदूसरा वृद्धभी उस वृत्तान्तको आश्चर्य्यमान उन दोनों के पास यह अघटित घटना देखने को ठहरा उसे थोड़ीदेर हुईथी कि एक तीसरा वृद्ध जो खच्चर साथमें लिये आया और उन दोनों वृद्धों से पूछने लगा कि यह व्यापारी क्यों इतना शोक करता हुआ तुम्हारे पास बैठाहै तब तिनदोनों ने भी इस व्यापारी का सब वृत्तान्त कहा तब तिस तीसरे वृद्धने भी इच्छाकी कि उस पिशाच और व्यापारी में क्या होताहै निदान वह भी वहां ठहर गया और अभी उसने दमभी नहीं लियाथा कि उन सबोंने बन में एक अपने सम्मुख बड़ा धुंधाकार धुवां उठता देखा जो उनके

निकट पहुँचकर एकबारगी दृष्टिसे छिपगया और आंखोंकी झिल मिलाहट में उन्होंने देखा कि एक अति उग्र पिशाच हाथमें खड्ग लिये व्यापारी के निकट आया और उससे बोला उठ तुझे मैं मारूं तूने मेरे पुत्रको माराहै पिशाचकी यह बात सुनकर व्यापारी और वे तीनों वृद्ध कम्पायमान हुये और रुदन करनेलगे यहां तक कि उनके रोनेसे उस वनमें अतिशब्द हुआ तो उस वृद्धने जिसके पास हरिणीथी क्या देखा कि वह पिशाच व्यापारी का हाथ पकड़ एक ओर को लेगया और उसको निर्दयतासे मारे डालताहै तब वह उठा और पिशाच के चरणों में गिरा अति आधीनता से बोला कि हे पिशाचाधिपतिजी! मैं तुम्हें एक प्रार्थना करताहूं आप क्रोध को थांभकर उसे सुनिये मैं चाहताहूं कि अपना और इस हरिणी का समाचार सुनाऊं और जो वह वृत्तान्त व्यापारी की इस दशा से अद्भुतहो तो आशा रखताहूं कि इसके तिहाई अपराध का क्षमालाभहो यह सुन उस पिशाचने कहा कि कहो यह मैंने नियम से अंगीकार किया तो वह वृद्ध निज कहानी कहनेलगा॥ इति दृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेसप्तत्रिंशःप्रदीपः ३७॥

अथाष्टत्रिंशः प्रदीपः॥

वृद्ध मनुष्य और उसकी हरिणी की कथा॥

वृद्ध ने कहा हे पिशाच तुम ध्यानदेकर मेरा वृत्तान्त सुनो कि यह हरिणी मेरे चचाकी लड़की तथा मेरी स्त्री है जब इसके साथ मेरा विवाह हुआ तब यह बारह वर्षकी थी तो यह मेरी आज्ञा पा-लनेवाली पतिव्रताथी जब विवाहहुये तीस वर्ष व्यतीत हुये और संतान इसके न हुई मैं संतान की कामना अत्यन्तही रखता था इस कारण मैंने एक बांदी मोलली उससे बहुत दिनों के पश्चात्

एक पुत्र उत्पन्न हुआ। तो मेरी स्त्री उस लड़के और उसकी माता से गुप्त डाह रखनेलगी अतिपश्चात्ताप है कि उसकी उस डाह का हाल मुझे बहुत दिनमें मालूम हुआ सो कि संयोगवश मुझे किसी देशको अवश्य जाना पड़ा तो मैंने उस दासी और पुत्र के लिये अपनी स्त्री को ताकीद करके कहा कि जबतक मैं लौट न आऊं तू इनकी रक्षा करना परमेश्वर चाहा तो मैं वर्ष दिन में लौट आऊंगा निदान उस ने फिर तिससे भी अधिक वैर करना आरम्भ किया वह जादू भी जानती थी लिखती रहती इस स-मय तक वह जादू की विद्या में अतिनिपुण होगई तो तिस अभागिनी ने निज डाह से मेरे प्रियपुत्र को जादू का बछड़ा बनालिया और अहीर को जो मेरा नौकर था बुलाकर कहा कि इस बछड़े को मैंने मोल लिया है अपने घर लेजाकर पालले और इसे खिला पिलाकर पुष्टबनाले और उसकी मा बांदी को भी गौ बनाकर अहीर के घर भेजदी तो मैंने आकर अपनी स्त्री से निजस्त्री और पुत्रका समाचार पूछा कि दोनों कहां हैं तो तिसने कहा कि बांदी तो तुम्हारी मरगई और तुम्हारे पुत्रको मैं दो मास से नहीं देखती हूं कि न मालूम कहां है मैं यह सुनकर उसी लौंडी से तो निराशहुआ और पुत्र के खोजानेपर आशाकी कि कभी न कभी वह मेरे हाथ लगेगा इस में आठमहीने बीते कि मैंने निज पुत्रको न पाया यहांतक कि ईदका दिन आगया तो मैंने निज जीमें इच्छा की किसी पशुका बलिदान करूं तो तिस अहीर को बुलाकर कहा कि एक गौ मुझेलादे तो संयोगवश वह मेरीही बांदी को लेआया और मैंने जो बलिदानदेने के लिये उसके हाथ पांव बांधे तो वह अत्यंतदीनता से रो २ पुकारती

और अश्रुधारा नेत्रों से वहाती थी तिसका यह हाल देखकर मुझे दया आई तव तिसके गले में मुझ से छुरी न चलसकी तव तो तिस से कहा कि इसे लेजा और कोई दूसरी गौ मेरे लिये ले आव इस बात को सुन मेरी स्त्री अत्यन्त क्रुद्धहुई और दुर्वचन कह के कहा कि तू इसही से वलिदानदे तो तिसके कहने से मैं फिर छुरी लेकर मारने को तयारहुआ तव वह गाय औरभी चिल्लाय२ रो २ पुकारी तो तिस समय में मैंने निरुपाय हो अहीर के हाथ में छुरीदेकर कहा कि तू इसे मारदे इस के रोने और चिल्लाने से इस पर मेरा हाथ नही उठसक्ता तो वह अहीर निर्दयी था उसने उस गौ को मारहीडाली तो तिस की खाल उधेड़ीगई तव तो तिसके शरीर से सिवाय हड्डी चर्म के कुछ और न निकला और वह माया के कारण देखने में तो अत्यन्तही रुष्ट पुष्ट मालूम होती थी तव मैं तिस सेवक पर क्रुद्धहुआ और मरीभई गौ उसे देकर बोला कि इस को तो तूही लेजाकर निजखर्च में लेआ मेरेलिये और ला तव तो वह शीघ्रही एक वहुत मोटा बछड़ा जो देखने में अत्यन्तही सुन्दरथा उसे लेआया मुझ को उसका कुछ वृत्तांत मालूम न था कि वास्तव में मेरा यह पुत्रही है तौ भी मेरे मन में उसके देखने से प्रीति उत्पन्नहुई और वहभी मुझे देखतेही रस्सी तोड़ मेरे पैरोंपर आकर गिरपड़ा इस दुर्घट घटना से मेरे हृदय में और भी अधिक प्रीति हुई और प्रेम के कारण मैंने विचारा कि क्या इसे मारूं मैं इस प्रीति से अत्यन्त शोकवान् हुआ और उस वच्छे के नेत्रोंसे आंशू वहनेलगे तव तो तिससे भी अधिक प्रीति उमगी फिर मैंने उस अहीर से कहा कि इस वछड़े को लेजाकर रक्षा से रख और कोई दूसरा पशु इस के वदले ले आव इस वात को सु-

नकर फिर भी मेरी स्त्री ने कहा कि अयअभाग तू इस ऐसे मोटे बच्छे को भी भेंट क्यों नहीं देता है मैंने कहा कि यह बच्छा मुझे अच्छा मालूम होता है और मेरामन नहीं चाहता है कि इसे मैं मारूं तू इस बात में कुछ न कह उस कर्कशा स्त्री ने इस विषय में बहुतही तकरार करी और डाह से बेर २ उसके मारनेकोही कहती रही फिर मैं निरुपायहो पैनी छुरी लेकर अपने पुत्रका गला खोलने चला तो फिर उसने मेरी ओर देखा और मैं भी उसके नेत्रों से आंशूबहते देखकर व्याकुल होगया और छुरी मेरे हाथ से गिरपड़ी तब मैंने निज स्त्री से कहा कि दूसरा बछड़ा मेरे पास है मैं उसे भेंटकर देताहूं फिर वह अभागिनी निज डाह से उसीके हेतु मारने के लिये हठ किये गई तो तिसके बकनेपर मैंने विचार न किया पर उस के धैर्य्य के लिये यह प्रण किया कि मैं इसे ईदुज्जुहा के रोज़ अवश्य भेट करूंगा तो अहीर फिर उसे अपनेघर लेगया फिर भोरभये एकान्त में आय मुझ से कहने लगा कि मैं कुछ कहूंगा जिस से तुम मुझपर प्रसन्न होओगे कि मेरी पुत्री जादू विद्या बहुत अच्छी जानती है कल जो मैं उस बछड़े को लौटाकर लेगया तो वह उसे देखकर हँसी और रोई मैंने उस से उन दोनों विपरीत बातों का कारण पूंछा तो तिसने उत्तर दिया कि हे पिता यह बछड़ा जिसे तुम लाये हो यह हमारे स्वामी का प्रियपुत्र है इससे इसे जीता देखकर तो मैं हँसी और कल के दिन इसकी गौरूपमाता हतीगई इससे मैं रोई इनदोनों मा बेटों को हमारे स्वामीकी स्त्री ने सवतियाडाह के कारण जादू से गौ और बच्छा बनालिया है मैंने जो निजपुत्री से यह बात सुनी सो तुम से यथार्थ कहदी हे पिशाचपति तुम मेरी उस समय की दशा को

समझो कि कितना शोक इनबातों को सुनकर हुआ हुवा होगा इतनी कहानी कह वृद्धने पिशाच से कहा कि फिर मैं उसी अहीर के साथहुआ और उसकी लड़की के निकट गया कि इस बातको मैं भी उसके मुख से सुनूं पहिले मैं उसके घर में पहुंचकर पशुशाला में जहां मेरा पुत्र था गया अभी मैंने उसके पास जाकर प्यार नहीं किया कि उसने मुझे देखतेही इतनी प्रीति जनाई कि मैंने जानलिया यथार्थही मेरा यह पुत्र है फिर मैंने उससे प्रीतिकर वह हालजो उस लड़की से सुनाथा पूछा कि किसीप्रकार तू इस बछड़े को मनुष्य के शरीरमें भी लासक्ती है उसने कहा कि निःसंदेहही लासक्ती हूं मैंने कहा कि जो ऐसा करे तो मैं सर्वस्व अपना तुझी को देऊं तो तिस लड़की ने मुसकरा करके कहा कि तुम हमारे स्वामीहो हम तुम्हारे सेवक हैं इसलिये दो शर्तोंपर मैं तुम्हारे पुत्र को फिर इस शरीर में लाऊं एक तो यह कि तुम उसका विवाह मेरे साथ करो दूसरे यह कि जिसने इसका ऐसा स्वरूप बनाया है उसे कुछ दण्ड देनाही चाहिये तो मैंने उसशर्तको अंगीकारकरी कि तेरा विवाह उसके साथही करूंगा और तुम दोनोंको इतना देऊंगा कि फिर कभी तुमको कुछ इच्छा नहीं होगी और दूसरी शर्तमें उसे तूही तेरीइच्छा के अनुसार जो चाहे वहही दण्डदेना पर उसे मार न डालना उस लड़की ने उत्तर दिया कि जैसा उस ने तेरे पुत्र के साथ किया तैसाही तू तिस के साथ कर मैं उसे दण्ड देऊंगी यह प्रतिज्ञा कर उसने एक प्याला जल से भरकर उस पर कुछ पढ़ उस बछरे के सम्मुख होकर कहा कि हे परमेश्वर यहजीव वास्तव में मनुष्य है पर जादू के कारण से बछड़ा बना है तो तेरे अनुग्रह से फिर भी यह मनुष्यही होजावे यह

कह ज्यों जल मंत्रित करके उसपर छिरका त्योंहीं वह तुरन्तही जन बनगया तो तिसे मैंने प्रीतिपूर्वक हृदय से लगाया और अत्यंतही प्रसन्नहो तिससे यह कहा कि परमेश्वर ने इस लड़की के द्वारा तुझे मनुष्य बनाया इससे तू तिसका कृतज्ञहो और इस के साथ अपना विवाह कर जो मैंने निज नियम मनसे किया है मेरे प्रिय पुत्रने उस बातको हर्षसे स्वीकार करी फिर उस लड़की ने मेरी स्त्रीको निज जादू करकर हरिणी बनाई निदान मेरेपुत्रने उस लड़की के साथ विवाह किया पर थोड़ेही दिनपीछे वहकाल वशहुई इससे मेरा पुत्र किसी देशान्तर को चलागया और बहुत दिन हुये मुझे उसका समाचार नहींमिला इसलिये मैं उसे ढूंढ़ता फिरताहूं मुझे किसीपर भी भरोसा न था कि हरिणीरूपी निजस्त्री को उसके पास छोड़ अपने पुत्रको ढूंढ़ने जाता इसलिये मैं इसे साथलिये फिरताहूं यहही मेरी औरइस हरिणीकी कहानी है इस का विचार कीजिये कि यह अद्भुत है वा नहीं पिशाच ने कहा यह कहानी निस्सन्देहही अति अद्भुतहै इससे मैंने इस व्यापारी का तृतीयांश अपराध क्षमाकिया॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीय भागेमिश्रनिबन्धेऽष्टत्रिंशःप्रदीपः ३८॥

अथैकोनचत्वारिंशः प्रदीपः॥

दूसरे काले कुत्तोंवाले वृद्धकी कथा॥

जब प्रथम वृद्धने निज कहानी को समाप्तकी तो दूसरावृद्ध जन जिसके साथमें दो कृष्ण श्वानथे वह उस पिशाचसे कहने लगा कि मैंभी अपना और इन दोनों श्वानों का हाल आपके हवाले करताहूं जो वह पहले हालसे उत्तमहो तो आशाकरता हूं कि उसे श्रवणकर व्यापारी के अपराध का तृतीयभाग और भी

क्षमा कीजिये पिशाचने कहा ठीकही जो हरिणी की कहानी से तेरी उत्तम होतो तीसरा हिस्सा अवश्यही क्षमा करूंगा तब दूसरे वृद्धने कहा हे पिशाचाधीश! ये दोनों काले कुत्ते मेरे सहोदर भाई हैं हमारे पिताने मरने के समय में तीन हजार रुपये हमारे पास छोड़े थे और हमतीनों उन्हींसे निज २ गुजरान करतेथे तोतीनों हम उनसे व्यापार करने लगे मेरे बड़े भाईको देशान्तरों के व्यापार करने की इच्छाहुई इसहेतु तिसने निज सबवस्तु बेचडालीं और जो वस्तु अन्य देशमें महँगी बिकती थीं उन्हें मोललेचला उसे गये जब अनुमान एकवर्षके बीता तो एकभिक्षुक मेरीदूकान पर आकर बोला परमेश्वर तेरा भलाकरै मैं बोला तेराभी भलाकरे वह बोला कि क्या तुम मुझे नहीं जानते तब तिसे मैंने निज ध्यान से पहिचाना और गले लगाय हिल मिलके पास बिठाया और अत्यंत पश्चात्तापकर कर कहाभाई! मैं तुम्हें इस हालमेंभला क्योंकर पहिचानता फिर मैंने परदेशका हाल पूछा तो तिसनेउत्तर दिया कि तुम मुझे इस ऐसेहालमेंभी देखकर क्या पूछतेहो निदान मेरे बार२ फिर२ विनय करने पर उसने निज दुःख जो जो उसमें बीताथा सो सो सम्पूर्ण वर्णनकिया और बोला कि इससे अधिक कहना दोनों के दुःखका कारण है यहहाल उसका सुनकर मुझे सब कामों का विस्मरण होगया और उसे शीघ्रही स्नान कराय उत्तम२वस्त्र मँगाकर दिये फिर मैंने निज हिसाब किताबको देखकर मालूम किया कि मेरे पास इस समय छहजार रुपये हैं इसलिये मैंने निज तीनहजार रुपये भाईको दिये और कहा हे भाई अपनी पहिलेकी हानिको भुलादो और अब इन तीनहजार रुपयों सेअपना व्यापारआदि करो उसने निज अत्यंतही प्रसन्नता से वे रुपये

लेलिये और फिर नये सिरसे व्यापार करनेलगा निदान हमदोनों आगेकीतरह रहनेलगे इसके बाद मेरे छोटेभाईकीभी इच्छाहुई कि अपने बड़ेभाई के समान अन्य देशों में जा २ कर व्यापार करें तो तिसे मैंने बहुतही समझाया पर उसने न माना और सब वस्तु वेचकर जो २ वस्तु वहांके लेने योग्यथीं लीं फिर मुझसे विदाहोकर वह एक गोल के साथ जो उधरको जाताथा चलागया और एक वर्षके उपरांत वहभी बड़े भाई के समान निज सर्वस्व खोकर योगी रूपसे मेरे पास आया मैंने उसी प्रकार से उसका भी हाथ पकड़ा और फिरतीन हज़ार रुपये जो मुझे उस व्यापारके माल से मिले थे दिये और वह उनसे एक दूकान मोलले उसी नगर में व्यापारादिक करनेलगा थोड़े दिनों के पीछे मेरे दोनों उनभाइयों ने निज २ जी में विचारकर यह सम्मत किया कि मैं भी उनके साथ किसी अन्य देशको जाऊं पहिले मैंने न माना और कहा कि तुम्हें सफ़र करने से क्या प्राप्तभया जो अब मुझे भी चलनेको कहते हो तब तो तिन दोनों ने मुझको उपदेश देना ऐसे आरंभ किया कि क्याजाने तेरेही प्रतापसे हमारा वांछित कार्य सिद्धहोवे निदान उनको कहते इसी अभिलाषामें पांच वर्ष व्यतीत होगये और उन्होंने इस समयांतरमें बहुतही कहा तब लाचार होकर मैं सफ़र करने को तैयार हुआ और व्यापारकी सब वस्तु मोललीं उसी समय मुझको विदित हुआ कि वहसंपूर्ण धन जो मैंने उनको दियाथा वह सब उन्होंने खर्च करडाला परंतु तब भी मैंने उस विषय में उनसे कुछभी नहीं कहा और उस समय मेरे पास जो १२०००) रुपये थे उनमें से आधे उनको देकर कहा कि भाइयो ! अग्रशोची और बुद्धिमानी यह है कि हम अपने आधेधनको ज़मी-

पारमें लगावें और आधा घरमें रक्खें क्योंकि परमेश्वर न करे कि जो तुम्हारे समान सफ़र में मुझे भी किसी प्रकारकी हानिहो तो वह आधा उस समय में काम आवे और उसीसे हम फिर व्यापार करके अपनाकाम चलावेंगे निदान मैंने उनको तीन २ हज़ार रुपये देकर उतनेही आप भी लिये और तीनहज़ार अपने कुयेंमें डाल दिये तदनंतर हमने व्यापारकी सब वस्तु मोललीं और जहाजपर सवारहो किसी देशको सिधारे तो एक महीने में हमकुशल क्षेमसे एक नगरमें पहुँचे कि जहां हमारे व्यापार में अत्यंत लाभ हुआ और हमने उस देशकी बहुतसी वस्तु अपने शहरके लिये मोललीं जब हम उस स्थानपर लेन देन करचुके और जहाजपर सवार होनेकी तैयारी करी तो एक अति रूपवती स्त्री जो मैलेवस्त्र पहिने मेरे सम्मुख आई और निकटआय दंडवत्कर और मेरेहाथ को चूम करके मुझसे विवाह करनेकी इच्छाको प्रकट करनेलगी तो तिस बातको मैं अनुचित समझ उसके सम्मुख नहीं भया पर जब उसने अतिही दीनता से मेरी विनती की तो तिसकी ग़रीबी पर मुझको भी दया उत्पन्न होआई तो तिसकी अभिलाषाको स्वीकार करके मैंने उसके साथ विवाह किया और उसे जहाजपर चढ़ाया जब वहां से आगे चले तो राहमें उसे चतुर और बुद्धिमान् पाकर मैंने उससे अधिक प्रीतिकी पर मेरे दोनोंभाई डाहकर मुझ से गुसैर करते रहे यहां तक कि एक रात्रिको उन दोनों ने हम दोनोंको निद्रावश देख समुद्रमें ढकेल दिया मेरी स्त्री जो वास्तव में अप्सराथी उसको किसी प्रकार का दुःख नहींपहुँचा और उसने मुझेभी डूबने से बचाया सो कि गिरतेही वह मुझे झटही महान् द्वीपमें लेगई जब भोरभया तो तिसने मुझको कहा कि मैंने तुम्हारे

प्राण बचाये मैं अप्सराहूं उस दिन जब तुम जहाजमें चढ़ने लगे तो तुम्हारी तरुणाई और सुन्दरता देखकर मैं मोहित होगई और तुम्हारे साथ विवाह करनेकी इच्छाकी परमैंने विचारा कि तुम्हारी परीक्षालेऊं इसलिये गरीबों का वेषकर मैले वस्त्र पहिरकर तुम्हारे सम्मुख आई और तुमने मेरी इच्छा पूर्णकी इस में मैं अत्यंत प्रसन्न हुई अब मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे ऋणसे निवृत्त होजाऊं परंतु तुम्हारे भाइयों से अप्रसन्नहूं कहो तो तिन्हें मैं मारडालूं ? मैं उसकी ये बातें सुनकर आश्चर्य में हुआ और उसका अति उपकृतहो दीनता से बोला कि मेरे भाइयोंको जानसे न मार यद्यपि उनके हाथोंसे मुझको कष्टभी पहुँचाहै पर तब भी तिनको इतना दंडदेना नहीं चाहताहूं परंतु जितनी मैं उन भाइयोंके बारे सिफ़ारिश करता तितनाहीं उसे रिसबढ़ता जाताथा फिर उसने कहा कि मैं यहां से उड़कर उन दोनोंको जहाज समेत डुबोदेऊंगी तब तिसे मैंने परमेश्वरकी सौगन्ददी और कहा कि कहीं ऐसा न करना बुराईके भी बदले भलाईही करना अच्छा है अपने क्रोधको ठंढा करो और मारडालने के सिवाय दूसरादंड जौनसा तुम देनाचाहो वहही उन्हेंदो निदान मैंने ऐसी २ बहुतसी बातें कह२के उसे शांत करी पर मैं यह बातें करहीरहाथा कि उसने मुझे वहांसे लेजाकर मेरे घरकी छतपर बैठादिया और कहा कि यहां रहो और आप गुप्त होगई मैं कोठेसे उतरकर घर में आया और कोठरी का दरवाज़ा खोल और तीनहज़ार रुपये उस कुयेंसे निकाल अपनी दूकानपर जाबैठा और कारबार करनेलगा और जब मैं दूकानसे घर आया तो इन दोनों श्वानोंको देख बड़ाही आश्चर्यवान् हुआ वे कुत्ते मुझे देखतेही पूंछ हिला २ कर मेरीओर दौड़े और अपना शिर

मेरे पैरोंपर रखने लगे, कि उसी समय, वह अप्सराभी भवन में आई और मुझसे कहनेलगी कि हे पति! तुम मतघबराना ये दोनों तुम्हारे भाईही हैं यह सुनतेही मेराखून सूखगया और घबराकर मैंने उस अप्सरासे पूछा कि ये दोनों कुत्ते क्योंकर बनगये? उसने कहा कि मेरी एक बहिन है जिसने मेरे कहनेसे तुम्हारे जहाजपर की सब वस्तु समुद्रमें डुबोदी और तुम्हारे इन दोनों भाइयों को दश वर्ष के लिये कुत्ते बनादिये हैं यह कह वहतो अन्तर्द्धान होगई और जब दशवर्ष बीतगये तब मैं उसको ढूंढ़ने २ इस ओर आ निकला और इस व्यापारी तथा वृद्धमनुष्यको कि जिसके पास हरिणी है यहां देखकरठहरगया हे पिशाचाधिपते! यहही मेरी कहानी है जिसे आपने सुनी है कहो यहविचित्रहै या नहीं है तो पिशाच ने कहा कि सच मुच तेराप्रसंग महाही अद्भुतहै मैंने उसको अपराधका तृतीयांश और भी क्षमाकिया, इतने में तीसरे वृद्धने औरों के सदृश उस पिशाचसे कहा कि अपना वृत्तांत निवेदित करता हूं जो तुम तिसे और कहानियों से उसे अद्भुत पाओ तो तिस अपराधका तृतीयांश और भी क्षमाकीजियेगा पिशाच ने अंगीकार किया तब तीसरा वृद्ध अपना वृत्तान्त कहनेलगा॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेऊनचत्वारिंशःप्रदीपः ३९॥

अथ चत्वारिंशः प्रदीपः॥

तीसरे खच्चरवाले वृद्धकी कथा॥

तब तो तिस तीसरे वृद्ध ने निज वृत्तान्त ऐसे वर्णन किया हे पिशाचों के बादशाह! ये खच्चर मेरी स्त्री है। संयोगवश से मैं किसी परदेश को गया और वहां से फिर वर्षभर में लौटकर आया तो तहां रात्रि को निज घर में पहुँचा तो देखता क्याहूं कि मेरी

स्त्री एक हब्शी गुलाम के साथ बैठीहुई हास्य कररही है और उससे प्रीतिपूर्व्वक संगकरना चाहती है यह हालदेख मैं तो अत्यन्तही आश्चर्य्य में हुआ और चाहा कि उसे कुछ दण्डदें कि इतनेमेंही वह एक पात्र जलका भरलायी और किसी मंत्र से उसे मंत्रितकरके मुझपर छिड़का तो तिससे मैं कुत्ता वनगया, फिर उसने मुझे निज घरसे निकाल दिया और निज जी में अति प्रसन्नहो मन माना काम करनेलगी उधर मैं व्याकुल हुआ एक कसाई की दूकानपर पहुँचा और वहांसे हड्डियां उठा उठा कर खानेलगा तो एक दिन मैं उस कसाई के घर जा निकला तो तिस कसाई की पुत्री मुझे देखतेही पड़दे में जाय वैठी और देरतक वाहर नहीं निकली तव तिस कसाई ने उससे आश्चर्य्य करके कहा कि क्यों तू वाहर नहीं निकलती है तव तो तिसने कहा कि क्या मैं परपुरुष के सामने वाहर आऊं तव तिस कसाई ने इधर उधर देखकरके कहा यहां तो कोई भी पुरुष देख नहीं पड़ता है तो पुत्री ने कहा हे पिता ! यह कुत्ता जो घर में आया है इसका वृत्तान्त तुझे विदित नहीं है यह पुरुष है और इसकी स्त्री जादूविद्या में अत्यन्त प्रवीण है यह उसीकी मंत्रविद्या से कुत्ता वनगया है पर जो तुम्हें विश्वास नहीं हुआ हो तो इसीसमय इसको फिर मनुष्य वनासकतीहूं तो तिस कसाई ने कहा कि परमेश्वर के वास्ते तू इसे शीघ्रही मनुष्य वना इसके कष्ट से इसे छुटाव कि जिसमें इसके लोक और परलोकका धर्मरहै यह सुनतही उसने थोड़ासा जल मंत्रितकरके मुझपर छिड़का और कहा कि यह चोला छोड़ और अपनी निज योनि को प्राप्तहोजा यह कहतेही मैं मनुष्यही वनगया और वह स्त्री फिर पड़दे में चलीगई तैंने तिसकी कृतज्ञताकर यह आशी-

र्वाददिया कि हे भाग्यमती ! तुझको दोनों लोकों की प्रसन्नता प्राप्तहोवेगी अब मैं इच्छाकरताहूं कि मेरी स्त्री को कुछ दंड दिया जावे यह सुन उसने थोड़ासा जल और मंत्रितकर मेरे पिता के हाथ बाहर भिजवाया और कहा कि इसको उसपर छिड़क और जिस रूपमें उसे रखनाचाहै उसीका उच्चारण करदेना कि तू अपना स्वरूप छोड़ अमुक रूप में होजा बस परमेश्वरचाहे उसका वैसाही स्वरूप होजावेगा तब मैं तिस जल को हर्ष से उठाय घर लेआया और अपनी स्त्री को सोतीहुई पाकर उस जल के कई छींटे उसपर मारे और तिसे खच्चर के रूप में लेआया हे राजन् ! जब तीसरा वृद्ध भी निज वृत्तान्त कहचुका तब तिस पिशाच ने आश्चर्यवान् हो उस खच्चर से पूछा कि क्या यह यथार्थ है तो तिसने निज शिर हिलाकर कहा कि हां यथार्थही है तब तो तिस पिशाच ने उस व्यापारीका और भी तृतीयांश अपराध क्षमाकिया और छोड़नेके पीछे व्यापारी से कहा कि तुझे उचितहै कि इन तीनों वृद्धोंका कि जिनके कारण तेरे प्राणबचे हैं इनका कृतज्ञहो जो ये तेरी सहायता न करते तो तेरे प्राण कदाचित् भी नहीं बचते यह कह वह पिशाच तो गुप्तहोगया और व्यापारी तिन तीनोंका अत्यंतही कृतज्ञ हुआ वे तीनों वृद्ध उस व्यापारी के प्राण बचने से प्रसन्नहोकर अपने २ स्थान को सिधारे और वह व्यापारी भी वहांसे अपने घर में आया और निज स्त्री पुत्रोंके साथ शेष अवस्थाको प्रसन्नतासे व्यतीतकरी ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांशुक्रदेवीसहायसंग्रहीतायांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेव्यापारीकथा चत्वारिंशःप्रदीपः ४० ॥

अथैकचत्वारिंशःप्रदीपः ॥

धीमर का इतिहास ॥

**कृतेपिकार्य्येव्यसनेप्राप्तेयत्नंविनामृतिः ॥**
**निष्कासितःपिशाचोपि धीवरंहन्तुमुद्यतः ४०**

कार्य्य करनेपरभी जो कोई किसीप्रकारका दुःख वा विघ्न आन पड़े और तहां यत्न न कियाजावे तो मृत्युका भयहोताहै जैसे निकासाभया भी वह पिशाच उस धीमर को मारनेंके लियेही तैयारभया दृष्टान्त ॥ एकअतिधर्मनिष्ठ धीमर बड़ेश्रमसे अपने स्त्री पुत्रोंका पालनकरताथा वह प्रतिदिन नियम से उठ भोरभयेही नदीपर जाता और चारबेरही नदी में निज जालडालता फिर घरको लौटआताथा एकदिन उसने सबेरे उठ नदी के तटपर जाय जालडाला और निकालते समय उसे भारीपाकर अतिप्रसन्नहुआ कि इसमें कोई बड़ा मत्स्य फँसआयाहै परन्तु जब उसे बाहर निकाला तो तिसे मछली के बदले एक भारी गधापाया तिसे देख वह हैरानहुआ फिर उसने निज जाल को उस गधे के बोझसे कई जगह फटगया था सुधार कर दूसरीबेर फेंका तो तब भी तिसमें कीचड़ और मिट्टीही फँस आयी तो वह अत्यंतही शोकितहो निज भाग्यहानि माननेंलगा कि मैं अपने स्थान से निज जीविका के लिये निकला था और दोबेर जाल में कुछ न आया मैं तो इस उद्यम के सिवाय और कोई काम भी नहीं करता कि जिससे निज जीविका प्राप्तहो निदान तिसने तीसरे फिर नदी में निज जाल सँभालके डाला तो तबभी तिसमें कंकर गुठली और कीचड़ही निकली इतनेमें भोर भया तब धीमरने परमेश्वरका आराधनकर इसप्रकार प्रार्थनाकरी

कि हे सर्वज्ञ और दीनदयालु तुझे विदित है कि मैं चारही वेर नदी में निज जालडालताहूं और आज तीनवेर फेकचुकाहूं पर अब तक उसमें कुछ न आया मेरा सब श्रम वृथाहुआ अब एकहीवेर फेंकना शेषरहगया है इसलिये तू इस नदी को मुझपर ऐसी संतुष्ट कर जैसी कृपा तूने पहिलेसमय में मूसापर कियीथी यह कह उसने फिर चौथीवार सँभार तैयारकरके पसारा तो तिसे बहुतभारी समझ निज जी में जाना कि अबकीवेर तो इसमें अवश्यही मछलियां हैं निदान अति कष्ट से उसे खैंचा तो तिसवेर पीतल के लोटे के सिवाय और कुछ न देखपड़ा तो तिसे वह भारी देख समझा कि इसमें कोई वस्तु भरीभयी है उसका मुख शीशे से ऐसा दृढ़बंध था कि न खुले और उसपर मोहर थी फिर धीमर ने विचारा कि यदि इसमें से कुछ भी न निकला तो इस लोटे को वेचकर कुछ अन्नले आजका कामचलाऊँगा फिर तो तिसने उस लोटे को चारो ओर से उलटपुलट कर अच्छेप्रकार से देखा कि इसमें कौनसी वस्तु है परन्तु तिसमें तनक भी शब्द न हुआ तब तो तिसने छुरी से उसका मुख खोल शिर नीचे को कर देखनेलगा पर जब भी उसमें से कुछ न निकला तब बहुतही आश्चर्य्य में आ उस लोटे को हाथ में से फेंकदिया फेकतेही वह क्या देखता है कि उसमें से धुन्धाकार धूआं निकलरहा है वह यह हाल देख भयभीतहो कुछ पीछे हटकर खड़ाहुआ और वह धूआं नदीपर पहुँचकरके आकाशतक फैलगया फिर थोड़ी देर बाद एक जगह सिमटगया और एक अति विकट निकटही पिशाच देखपड़ा धीमर ने ऐसा विकराल रूप कभी न देखाथा इससे भागनेकी इच्छाकी परन्तु वह महाही भय से भाग भी न सका इतने में उसने सुना कि वह पि-

शाच कहताहै कि हे सुलेमान मेरा अपराध क्षमाकर फिर मैं कभी तेरी आज्ञा भंग न करूंगा और तुम्हारा सदैवही आज्ञापालक और भक्तरहूंगा तो धीमर ने उस पिशाच से ये बात सुन निज जी को दृढ़थांभ उससे यह कहा कि हे पिशाच! तू यह क्या झूठ बक रहाहै सुलेमान को तो मरे १८०० वर्ष से भी अधिक समयभया तू अपना वृत्तान्त कह कि कौनहै और किसकारण इस पीतल के लोटे में बंध है तो तिस पिशाच ने घृणाकी दृष्टि से धीमरकी ओर देखकर कहा कि तू ढिठाई से बातकरता और मुझे भूत पिशाच कह पुकारताहै धीमर ने कहा तो क्या मैं तुझे गधाकहके पुकारता तो ठीक था तब तिस पिशाच ने कहा कि नौकर्सरह कहें जा जब तक मैं मारि न लेऊं पर मुँह सँभाल बातचीतकर धीमर ने कहा कि मुझे तू क्यों मारेगा क्या तू इस बात को भूलगया कि अभी मैंने इस बंधन से तुझे छुटाया है पिशाच ने उत्तरदिया कि यह बात तो मुझे अच्छेप्रकारसे स्मरणहै परन्तु तू बच नहीं सक्ता पर एक उपकार तेरे साथ करताहूं कि जिसप्रकार तू मरनेपर तैयारहो चाहै उसीतरह तुझे मैं मारूं धीमर बोला हे अन्यायी! मैंने ऐसा कौन सा तेरा अपराध किया कि जिससे तू मुझे माराचाहताहै क्या बंध छुटानेका बदला यही है पिशाच ने कहा कि तेरे मारनेका कारण दूसरा औरभी है तिसे सुन मैं उन पिशाचों में हूं जोकि नास्तिकथे पिशाच प्रथम समझते थे कि सुलेमान परमेश्वरका पैगम्बर है और सबउसीकी आज्ञामें रहते थे परन्तु मैं और शाकरनामक पिशाच ने उसकी आज्ञा न मानी तब तिस बादशाह ने क्रुद्धहोकर अपने बड़े मंत्री आसफबनबरहया को यह आज्ञादी कि इसे पकड़कर मेरे निकट लेआ मंत्री यह आज्ञापाय मुझेउसके सम्मुख पकड़लेगया

तब सुलेमान ने चाहा कि मैं मुसल्मानहोकर उसे पैगंबरकहूं और उसकी आज्ञापर चलूं परन्तु मैंने निज अहंकारकरके उस बात को अंगीकार न करी और उसने मुझे दण्डदेने वास्ते इस पीतलके लोटे में वन्दकरके इसके मुख को शीशे से वन्दकरदिया और मंत्रित किया और फिर एक पिशाच को आज्ञाकी कि इसे नदी में डाल दो सो वह मुझे नदी में डालगया तब मैंने नियमकिया कि कोई मुझे पहिली सौ वर्षकी अवधि में इस नदी से निकाले तो तिसे मैं इतना धन देऊं कि वह निज जन्मभर आनन्द में रहैगा और उसके मरने पर भी उसकी सन्तान के लिये रहजावेगा परन्तु हे मनुष्य किसी ने मुझे इस अवधि में नदी से न निकाला तब मैंने यह प्रतिज्ञा की कि जो जन दूसरे सौ वर्षकी अवधि मे नदी से निकाले उसे मै सम्पूर्ण पृथ्वी के कोप दिखाबूंगा पर फिर भी मुझको किसीने न निकाला फिर मैंने नियम किया कि जो मुझे तीसरे सौ वर्ष में निकाले तो तिसे मैं बहुत वड़ा वादशाह बनाऊं-गा और उसके पास जाकर हरदम उसकी तीन इच्छा पूर्ण किया करूंगा इस अवधि में भी जव मुझे किसी ने न निकाला तो मैने अति झुंझलाकर यह प्रण किया कि जो जन मुझे इस चौथी सौ वर्षकी अवधिमें निकालेगा तो तिसे मै वड़ी निर्दयता से मारूंगा परन्तु तिससे सलूक इतना करूंगा कि जिस प्रकार वह अपनी इच्छा से मरना चाहे तैसेही तिसे मारूंगा निदान इतनी अवधि के पीछे आज तूही यहां आ निकला और मुझे निकाला इससे अव तू वता कि किस प्रकार करके तुझको मैं मारूं तव धीमर यह वात और भी भयभीत हो यह शोचनेलगा कि मैं कैसा अ-भागाहूं कि ऐसे इस उपकारके वदले मैं मरन योग्य दंडनीय हुआ

फिर पिशाचसे विनय पूर्वक प्रार्थना करके बोला कि हे पिशाचों के बादशाह ! तू अपनी इस प्रतिज्ञाको छोड़ मेरे प्रिय परिवारपर दया कर और मेरा अपराध जो समझा है उसे क्षमाकर तो तेरा भी परमेश्वर अपराध क्षमा करेगा तब उस पिशाचने कहा कि मैं तुझे हरगिज जीता नहीं छोड़ूंगा अब तू यह बता कि किस प्रकार से मैं मारूं तब तो धीमर तिस पिशाचको अपने मारने में अटल उद्यत हुआ देखकर बहुतही डरा और अपने मरिजाने पर स्त्रीपुत्रों की दुर्गति का स्मरण करके बहुतही घबराया फिर उसने पिशाच के क्रोध शान्तिके लिये यह कहा कि हे पिशाचराज ! जो मैंने निज शरीर से तेरा उपकार किया उसके बदले यह अपकार करता है पिशाचने कहा कि यही उपकार तेरे अपकार का कारण हुआ तब धीमरने कहा बड़ेही अन्यायकी बात है कि भलाई के बदले यह बुराई पाई यह दृष्टांत कि नेकीके बदले बदी सो तुझमें ठीकही पायाहै तब पिशाचने कहा कि इन दृष्टांत और प्रश्नोत्तरों से मैं तेरे मारनेसे रहूंगा तब तो तिस धीमरने एक यत्न निज जी में शोच पिशाच से कहा कि मैं तेरे हाथ से किसी प्रकार न बचूंगा और परमेश्वरकी जो यहही इच्छा है तो मैं प्रसन्न हूं परंतु मैं मरनेका विचार जब तक न शोचलेऊं और तुझे उसी पवित्र नामकी सौगन्द है कि जिसको सुलेमानने निज मोहरमें खोदाथा तू मेरे इस प्रश्नका उत्तर दे तब वह पिशाच ऐसी सौगन्दसे निरुपायहो कंपायमानहोकर कहने लगा कि तू प्रश्नकर मैं उत्तर देऊंगा धीमर ने कहा कि तू ऐसा लंबा चौड़ा होकर इस लोटे में क्योंकर समागया पिशाचने उत्तर दिया कि मै उसी सौगंद से कहताहूं कि उसी लोटेमें था तो धीमरने कहा मुझे तेरी बातको

निश्वास नहीं होता जब तक कि मैं तुझको उसी लोटे में समायी नहीं देख लेऊं इतना सुन वह पिशाच धुवां होगया और संपूर्ण नदीपर फैलगया फिर एक स्थानपर इकट्ठाहो उसी लोटे में धीरे भरगया जब कुछभी उसमें से शेष नहींरहा तो तिससे शब्दहुआ कि हे धीमर ! अब तो तुझ को विदित हुआ कि मैं सम्पूर्ण इस लोटे के भीतरहूं धीमरने उसके उत्तर देनेके बदले उसका ढकना उठाकर मुंह बन्द करदिया और कहा हे पिशाच ! अब तेरी पारी है कि तूही अपना अपराध क्षमाकरा और अपनी मृत्युका उपाय विचार कि किस प्रकारसे तुझे मैं मारूं अब मुझे यहही उचितहै कि तुझको इसी नदीमें डालदेऊं और यहांही रहाकरूं कि जो धीमर जाल डालने आवे उसे कह देऊं कि इस स्थानपर एक वि-कराल पिशाच रहताहै उसे न निकालियो क्योंकि उसने यह सौ-गन्द खाई है कि कोई मुझे निकालेगा मैं उसी को खा लेऊंगा पिशाच इस बातको सुन अति व्याकुल हुआ और किसी प्रकार अपने को उस लोटे में से निकलना चाहताथा परंतु तिस में से निकलना अतिही कठिनथा क्योंकि सुलेमान की वह मोहर उसे निकलने नही देती थी निदान वह वहां से निकलना अतिही कठिन समझकर अपने क्रोधको पीगया और बड़ीही आधीनता करके धीमरसे कहनेलगा हेधीमर! चैतन्यरह कहीं ऐसा कामनहीं कीजियो जो मुझे फिर नदीही में डालदे मैं तो तुझसे हँसीकरता था और ये बातें केवल तुझसे छेड़ने और हास्यके लिये करताथा पर पश्चात्ताप है कि तुझने ये बातें सब सत्यही समझलीं धीमरने कहा कि हे पिशाच ! तू इस लोटेके बाहर बड़ा पिशाचों का सर-दार मालूम होता था और अपने को अत्यंत अधीर और तुच्छ

बनाताहै अब तू अवश्य इसनदीमें अवश्यही फेंकाजावेगा और प्रलयपर्यंत तेरा इसबन्धनसे छुटकारा नहीं होवेगा पिशाचने कहा कि परमेश्वरके वास्ते तू मुझपर दयाकरके इसनदी में फेंकने का इरादा न कर इसीप्रकार तिस पिशाचने अत्यन्तही दीनहो बहुत विनय करके चाहा कि उस धीमर को अपने पर प्रसन्न करे पर धीमर प्रसन्न नहीं हुआ तब तो तिस पिशाचने कहा कि यदि तू मुझे इस बन्धनसे छुटावेगा तो तिसके बदले में मैं तुझको बड़ाही सलूक करूंगा धीमर ने उत्तरदिया कि तू महाही धूर्त है क्योंकर तेरी बातपर विश्वासहोसके यदि मैं तुझे अबभी छोड़ूं तो तुझे दूसरी बेरभी अपने मारने में उद्यत करूं और तू मेरे साथ वहही अपकारकरे जैसा कि ग्रीकने डुबां वैद्यके साथमें किया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमित्रानिबन्धनेनामैकचत्वारिंशःप्रदीपः ४१ ॥

अथ द्विचत्वारिंशः प्रदीपः ॥

ग्रीकबादशाह और डुबां वैद्यका दृष्टान्त ॥

कृतोपकारोह्युपकारिणन्तुयो हन्तिस्वयंचापि तथासहन्यते ॥ ग्रीकोयथावैद्यवरंविघातयन् स्वयं तुतत्पत्रनिदेशतोमृतः ४१ ॥

जिसजनने जिसके साथ में उपकार कियाहो और वह कदाचित् उलटा उस उपकार करनेवालेही को मारे तो वह आप भी मरजाताहै जैसे ग्रीक बादशाह ने डुबां वैद्य को मारा तो आप भी उसके बताये पत्रों को उलटते जहरचढ़कर मरगया इतिहास ऐसे है जैसे पारसदेश में एक रूमा नगर था उसके बादशाह के शरीर में कुष्ठ होगया इसकारण वह रात्रि दिन व्याकुल रहाकरता था.

द्यपि वहां के वैद्योंने सवप्रकारकी औषध और वहुतसे उपाय किये पर तब भी वह आरोग्य न हुआ संयोगवश से एक बड़ा बुद्धिमान् वैद्य जो निज विद्या में अद्वितीय और जो प्रत्येकदेश ग्रीक फ़ारसी अरबी आदि भाषाओं में निपुणथा ऐसा वह डुबां नामी वैद्य था वह उसके नगर में आकरके उतरा तो तिसे यह विदित हुआ कि यहां के बादशाह के कुष्ठका रोगहै जिसकी औषध यहांके सब वैद्य करचुके परंतु वह किसीसे भी अच्छा नहीं होताहै तब तो तिसने निज आगमनकी खबर बादशाहको भी दी और स्वेच्छानुसार उसकी आज्ञापाय उसके पासजाय शिर नवायके विनय किया कि मैंने सुना है सब नगर के वैद्यलोग आपका इलाज करचुके पर आपके रोगहेतु काममें न आया इसकारण मैं यह चाहताहूं कि यदि आपकी इच्छाहो तो मैं खिलाने और मर्दनकरनेकी औषधके विना ही परमेश्वरकी कृपासे आपको अच्छाकरदूं बादशाहने यह सुनकर वैद्य से कहा कि जो तू मुझे इसीतरह से चंगाकरदेगा तो तेरे साथ वड़ाही उपकारकरूं तो डुबां वैद्य ने विनयकी कि ईश्वरकी कृपासे मैं आपको इसीप्रकार से नीरोग करूंगा कल से अवश्य आप मेरी औषध कीजियेगा यह कह वह वैद्य बादशाह से विदाहोकर अपने स्थानपर आया और उसी समय कुष्ठनाशक औषधियों का एक गेंद और लकड़ी की थपकी बनवायी कि और दूसरे दिवस उन्हें लेकर बादशाहके पास गया और रीति के अनुसार दंडवत् करके विनयकरी कि आप अपने घोड़ेपर सवार होइये और गेंद खेलने के लिये गेंदघर चलिये बादशाह उस वैद्य के कहने के अनुसार सवारहोकर गेंदघर गया तो वैद्यने वहही गेंद थपकी हाथ में दी और कहा कि इस गेंद और थपकी से आप खेलिये

खेलते २ जब आपका शरीर गरम होजावे जब सब औपधें जो २ इन दोनों में भरी है वे आपके सब शरीर भरमे भरजावेंगी और जब सब शरीरमें अच्छे प्रकारसे पसीना आजावे तब गरम जल से स्नानकरना पश्चात् आपके शरीर में अच्छे प्रकार से नाना भांतिके औपधमयी तैल मर्दनकिये जावेंगे-फिर उसके पीछे आप सोरहे तो आशा है कि दूसरे दिन अवश्यही आप नीरोगहोंगे तो यह सुन वादशाह उस गेंद को हाथ में ले घोड़ेपर चढ़ा और हृदय में उत्साह बढ़ाकर निज सेवकों के साथ गेंद खेलनेलगा इधर वादशाह गेंद को थपकी से मारताथा और उधरसे वह सब गेंद को वादशाहकी ओर फेंकते इसीप्रकार बड़ी देरतक गेंदका खेल होतारहा और यहां तक हुआ कि गरमीके कारण वादशाह के शरीर से पसीना टपकने लगा और औपधियों का सम्पूर्ण गुण उसके शरीर में प्रवेश करगया उसके वाद वादशाहने निज उत्साहसे गरम जल करके स्नान किया और फिर जो २ विधान और २ भी उस वैद्यने बताये वे २ किये दूसरे दिवसके बाद बादशाहने निज शरीरको नीरोग देखा और ऐसा उज्ज्वल पाया कि मानों कदापि रोग न हुआहो तब वादशाह इस उपाय और औपधि से अति आश्चर्य्यवान् हुआ और अतिही हर्ष से उत्तम २ वस्त्र पहिरकर सज धज के साथ निज सभा में आया और निज राज्यासनपर बैठा इतने में सब सभासद लोग भी आनहाज़िर हुये और उसी समय दूवां वैद्य भी आपहुँचा और वादशाहको सब अंग प्रत्यंग से अनंग के समान सावधान चमचमाता देख उमंग में आकर राज्यासन को चूमने लगा तो तिसे वादशाह ने निज राज्यासन पर अपने पास बिठा लिया और उसीसभा

में जहां कि अनेक प्रकारके सभासद लोग विद्यमान थे वहां उस की बहुतही प्रशंसा की और उसके नेहरूपी मेह से ऐसा भीजा कि भोजनके समय भी द्वां वैद्यको अपने साथलेके बैठता संध्या को जब सब सभासद दरबारी लोग बिदाहुये तो तिसने एक अति उत्तम जड़ाऊ वस्त्र जैसे कि बड़े २ सरदार पहिरकर बादशाह के दरबार में जाया करते थे वह और ६०००० हज़ार रुपये उसे पारितोषिक दिये और प्रतिदिन उसकी अधिक२ ही प्रतिष्ठा करनेलगा परन्तु तिसपर भी हरेकसमय यहही विचार करता कि ऐसे इस कामकी अपेक्षा मैंने वैद्यको कुछभी नहीं दिया और उसके गुण के आगे मुझसे उसका आदर कुछभी उसके योग्य बन नहीं पड़ा कुछ दिन तक तो इसी प्रकार बादशाह शोच २ कर पारितोषिक आदिसे उसका सन्मान करतारहा कि इतने में उस बादशाह का मंत्री इस वैद्यपर ऐसी सुदृष्टि भई देखकर निज जी में डाह और वैर रखने लगा और यही इच्छा की कि किसी प्रकारसे इस वैद्य को बादशाह की दृष्टिसे गिरा देना और बादशाह का चित्त उस से अप्रसन्न होवे ऐसा यत्न करें यहही निज जी में विचारकर एक दिन बादशाह से एकांत में विनय की कि मुझे कुछ आपसे कहना है बादशाह ने कहा कहो मंत्री ने कहा कि ऐसे दूसरे शहर के मनुष्यको कि जिसका हाल कुछभी विदित नहीं उसका ऐसा विश्वास करना नीतिके विपरीत है आपने जो इतनी कृपा द्वां वैद्यपर की है यह सभासदों का सम्मत नहीं काहेसे कि वह वैद्य महाधूर्त्त है चाहता है कि आपके बैरियों को मारडालें इसी वास्ते उसने आपके मन में जगह की है बादशाहने उत्तर दिया कि हे मंत्री तुझे क्या हुआ जो तू ऐसी बातें उसके वास्ते कहताहै और

उसको अपराधी बनाता है मंत्रीने विनयकी कि हे स्वामिन्! मैंने इस बात को अच्छे प्रकार से निश्चय करलिया है तब आप से विनय की है अवश्य वह मनुष्य विश्वास योग्य नहीं यदि आप सोतेहों तो चैतन्य होजायँ क्योंकि मैं फिर कुछ विनय करता हूं यह कि दूवां वैद्य अपने ग्रीक देशसे यहां यही इच्छाकरके आया है जोकि मैंने आपसे वर्णन किया बादशाह ने कहा वह कदापि ऐसा मनुष्य नही जैसा कि तू बताता है मैंने तो उसको बुद्धिमान् और गुणवान् पाया उसके समान दूसरा मनुष्य नही क्या तूने नहीं देखा कि मेरे रोगको उसने किस उपाय से नाशकिया यदि इस औषधि और उपायको आश्चर्य कर्म कहैं तो उचित है और जो कदाचित् उसकी इच्छा मेरे मारने की होती तो ऐसे कठिन रोग को क्यों विनाश करता उसके वास्ते ऐसा विचार न करना चाहिये अब मैं तीन हज़ार रुपये उसका मासिक नियत करता हूं काहे से कि सज्जन मनुष्यों का यही धर्म है कि जो कोई किंचिन्मात्र भी अपने साथ उपकार करे उसको जन्मभर न भूलै जैसे कि केवल जानकीजी का संदेशही लाने से श्री रामचन्द्रजी ने हनुमान्जी को अयोध्याकी राज्य भी देना तुच्छ समझी और नम्रीभूत होकर यह कहा कि इसतुम्हारे ऋणसे हम कदापि अऋण न होंगे ऐसेही जो मैं अपना सम्पूर्ण धनभी उसे देडालूं तो वह भी थोड़ाहै उसके केवल इतनेही सत्कार और पारितोषिकपर तू क्यों डाह करताहै यह विचार मतकर तेरे इस निंदा करनेसे मैं उसके साथ अपकार नहीं करूंगा मुझको वह कहानी स्मरणहै कि बादशाह सिन्दबादको उसके मंत्रीने बेटे के मारनेसे मनाकिया था मंत्री ने पूंछा कि वह कहानी क्योंकर है बादशाह

श्रीकने कहा कि बादशाह सिन्दबादकी सासने इसइच्छासे उसके पुत्र को किसीप्रकार का अपराध लगाया कि जिसमें बादशाह अपने पुत्रको मारडाले और उसीप्रकार बादशाह ने बेसमभेबूभे उसके छल मे पड़कर अपने पुत्रके वध करने की आज्ञादी उसके मंत्री ने विनयकी कि हे बादशाह इस आज्ञा के देने में शीघ्रता न कीजिये और यह शोच लीजिये कि किसी काम में शीघ्रता करना अच्छा नहीं इसके विषयमें शास्त्रों ने भी प्रमाणदी है कहीं ऐसा न हो कि शीघ्रताके कारण फिर आपको पश्चात्तापहो जैसा कि एक सत्पुरुष को शीघ्रता के करने में दुःखहुआ था बादशाह सिन्दबादने पूंछा कि किसतरह तब मंत्री इसप्रकार वर्णन करने लगा॥इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेद्विचत्वारिंशःप्रदीपः४२॥

अथ त्रिचत्वारिंशःप्रदीपः॥

एक पुरुष और तोते का दृष्टांत॥

## सहसाविदधीतनक्रियामविवेकात्परमाप्यतेविपत् ॥ सहसैवविनाशितःशुकस्तद्दुःखाययथाभवद्भृशम् ४२॥

किसी कामको शीघ्रता से बिन विचार करके न करना बिन विचारकर करनेसे महाही विपत्ति प्राप्त होती है जैसे उस पुरुष ने शीघ्रतासे बिन विचारही तोतेको मारा तो वह उसके दुःखका कारणही होताभया॥इतिहास॥ पूर्वसमयमें एकबड़ाश्रेष्ठपुरुष किसी ग्राम में रहता था उसकी स्त्री भी परमसुन्दरी थी उससे वह अति ही प्रीतिरखता था यदि एकघड़ी भी वह स्त्री अलग होती तो उसके वियोग से व्याकुल होजाता था दैवयोग से एकदिन वह किसी

आवश्यक कार्य्य के निमित्त एकनगर को गया तो तहां एक जगह पर नानाप्रकार के चित्रविचित्र पक्षी विकरहे थे तो तिसने भी एक तोता बोलताहुआ मोललेलिया जो कि वातचीत कर लेताथा और उसमें एक और भी विशेष गुण यह था कि जहां वह रहता तहां कोई बातहोती तो तिसे निज स्वामी से निवेदनकरता अर्थात् वतादेता दैववश किसीदिन वह मनुष्य परदेश जाने को तय्यारहुआ तो तिसने निज शुकका पिंजरा उस स्त्री को सौंपकर कहा कि जबतक कि मैं परदेशसे लौट न आऊं तबतक तू इसकी रक्षाकरना यह कह वह परदेशकोगया और कुछ दिन बीते जब वह निज नगर में आया तो तिसने निज घरका हाल उस तोते से ही प्रथम एकान्त में बैठकर पूछा कि कह पीछे से मेरे घर में क्या क्या हालहुआ है तो तिस तोते ने सब वृत्तान्त जो जो उसके पीछे से हुआ वह वहही वर्णनकिया तो तिसने निज स्त्री को किसी किसी बातमें ताड़नादियी तब स्त्रीने शोचा कि मेरे इसभेदको इससेकिसी वांदी ने कहाहोगा यह शोच उन को ताड़ना देनेलगी तो तिन्होंने सौगन्दें खाखाकर कहा कि यह भेद हमने कुछभी नहीं कहा है तब वह स्त्री उन वांदियों को निर्दोष समझकर जान गयी कि बस इस तोते ने ही मेरी चुगलीकी है यह विचारकर उसस्त्रीने निज जी में यह शोचा कि किसीप्रकार इस तोते को झूठा ठहरादेना चाहिये जिसमें मेरा पति आगेको उसपर विश्वास नहीं करे और मेरी ओर से उसके मन में जो दोष है वह दूरहोवे यह विचारकर उसने एक दिन निज पति के कहीं किसी आवश्यक कार्य के लिये जाने [illegible] निज दासियों से कहा कि तुममें से एक तो तोतेपर रातभर छिड़कती रहो और एक उसके ऊपर चक्की पीसे और

शीशा दिखाती रहो स्त्रीकी यह आज्ञा सुन उन्होंने वैसाही किया और प्रातःकाल होतेही वह काम बंद करदिया दूसरे दिन निज घरका स्वामी जो आया तो तिसने निज तोतेसेही यह कहा कि कहो शुक आजकी रातको क्या २ हाल बीता तब तो तिस तोते ने कहा हे स्वामिन्! आज रात्रिभर जल वर्षता रहा और गर्जाभी तथा बिजली भी चमकती थी बस सुन उसने निज जी में जान लिया कि आज रातको न तो मेह था न बादल गर्जता न बिजली थी यह झूठाहै और सदाभी झूठही हाल कहता रहाहै और मेरी स्त्रीका जो २ हाल कहा वह भी सब निपट झूठही है यह कह वह उस तोते से अप्रसन्न होकर उसके पिंजरे को धरती पर फटकार कर मारता भया तो तिस तोतेके प्राण निकलगये फिर कितने दिन पीछे उसने निज स्त्री की बुराई परोसियों से भी उसी तरह सुनी तो अति लज्जित होरहा इतना कह धीमरने उस पिशाचसे कहा कि बादशाहने यह कहानी निज मंत्रीसे कह कहा कि तू डाहसे चाहता है किडुवां वैद्य जिसने तेरे साथ किसी प्रकार की बुराई न कियी मेरे हाथ से निरपराध मरवाडाले सो मैं उस मनुष्य के समान नहींहूं जिसने निज तोतेको बिना अपराध मारडाला मंत्री ने बादशाह से कहा कि स्वामी उस तोते का निर्दोष माराजाना तो कुछ बड़ी बात न थी और यह जो मैंने आपसे विनय कियी है वह बहुतही बड़ी बात है इसका शोच विचार और यत्न अवश्य करना चाहिये यदि आपके लिये किसी एक सादे आदमी का मरण होजावे तो तो कुछ पछतावे की बात नहीं है पर आपको किसी प्रकारका खतरा होजावे तो महाही हानिका स्थानहै क्या उसका कुछ थोड़ासा अपराधहै जो सब कहतेहैं यह भेदिया आप

कि मारने को आयाहै मुझे कुछ उससे ऐसा डाह वैर नही जैसा आप कहते हैं मैंने तो केवल आपके हितकी वात कही है मुझको कुछ उसके भले बुरे से काम नहीं है आपकी आयु चाहताहूं यदि यहवात असत्यहो तो मैं वहही दंड पाऊं जैसे उसमन्त्रीने दंडपाया था और मारागयाथा वादशाह ग्रीकने पूछा उस मन्त्री ने कौनसा कर्म किया था कि जिसकारण वह मारागयाथा मन्त्री ने विनय कियी कि जो निज ध्यानधरकर आप सुनें तो इस कहानीको मैं वर्णन करूं॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांशुक्लसंग्रहीतायांतृतीयभागे मिश्रनिबंधेत्रिचत्वारिंशःप्रदीपः ४३॥

अथ चतुश्चत्वारिंशः प्रदीपः॥

एक कुकर्मी मन्त्रीका दृष्टान्त

कोई समय में किसी शाहजादे को आखेट का वड़ा प्रेम था और उसका पिता तिससे वड़ी प्रीति करता और जिस वात में उसकी प्रसन्नता होती तिसे कभी दुलखता न था इसी हेतु मन्त्री से ताकीद करके कहा कि कभी आखेटमें इससे न्यारा न हूजियो एक दिन भोर होतेही वह शाहजादा शिकारको गया तो शिकार खेलनेवाले जो उसके साथथे उन्होंने एक वारासिंगा उस वनसे निकाला तव शाहजादेने उसके पीछे घोड़ा दौड़ाया और कई कोशतक उसका पीछा किया फिर थकित होकर ठहरगया और इच्छाकी कि वहां से लौट उसी स्थानपर आवे जहां से उसने निज घोड़ा दौड़ायाथा और उस मंत्री से जिसने इसको अकेला छोड़ दियाथा उससे आकर मिले परन्तु राह भूलने से न पहुंच सका कितनाही उसने निज घोड़े को थाँभ देखा पर राह नहीं पाया तो तिसने दैवयोगसे फिर क्या देखा कि कोई स्त्री अति

सुन्दरी रुदनकर रही है तो तिसने स्त्रीसें पूछा कि तू कौनहै और क्यों रोरही है स्त्री ने कहा कि मैं हिन्दुस्तान के बादशाह की पुत्री हूं मैं घोड़ेपर सवारहोकर जाती थी पर अकस्मात् मैं नींद करके गिरपड़ी और घोड़ा वन में किसी ओर भागगया न मालूम कहांहै शाहजादे को उसका वृत्तान्त सुन दया उत्पन्नभयी तो तिसे अपने आगे घोड़ेपर बिठालियी और वहांसे चला जब एक उजाड़ वन के निकट पहुँचा तो तिस स्त्री ने किसी बहाने से उतरनेकी इच्छाकियी तब तिसे शाहजादे ने उतारदियी और आप भी वन को उसके साथचला परन्तु इस बात को सुन उसने आश्चर्यकिया कि एक मकानकी चारोंके बीच में जाकर पुकारा कि हे बचा प्रसन्नहो मैं तुम्हारे लिये एक तरुण हृष्टपुष्ट मनुष्यका शिकारकरके लायीहूं और उसके प्रत्युत्तर में यह भी सुनायी दिया कि हे माता वह कहां है उसे शीघ्रही हमें खाने को देओ हम भी भूखे मररहे हैं शाहजादा यह शब्द सुन अति भयभीतभया और समझा कि यह स्त्री उन वनवासियों में है जो इस उजाड़ में परदेशियों को धोखादेकर मारखाती हैं शाहजादा इस वचनको सुन कर कंपायमानभया शीघ्रही निज अश्वपर सवारहोकर चला और उस स्त्री ने जो बाहर आकर देखा तो वह शिकारही हाथसे जाता रहा फिर भगकर उस शाहजादेसे कहा कि तू भयभीतभया कौन है और किसे ढूंढ़ता है बता तो शाहजादे ने कहा कि मैं अपनी राहढूंढ़ताहूं तब वह बोली तू परमेश्वरपर भरोसारख कि वह तेरी कठिनता को दूरकरेगा तब शाहजादे को विश्वास न हुआ कि कदाचित् इस स्त्री ने मुझे धोखाही दियाहो फिर उसने निज दोनों हाथ उठाकर परमेश्वरसे प्रार्थनाकरी कि हे परमेश्वर ! जो तू सबपर

बलवान् है तो मुझे बचा और कठिनवैरी से छुटा तब तो तिस प्रार्थना के करतेही वह मनुष्यभक्षिणी उद्यानवन की ओर चली गयी और उस शाहज़ादे को कुछ मार्ग्ग देखपड़ा जिससे शीघ्र ही वह निज स्थान को पहुँचगया और अपने पिता से राहका समस्त समाचार उस मनुष्यभक्षिणीका कि मंत्री के अलग होने से हुआथा वह कह सुनाया तब बादशाह यह हाल सुन निज मन्त्री से अतिही अप्रसन्न भया और उसे प्राण से मरवाडाला इसप्रकार वह मन्त्री इस मन्त्रीकी कहानी कहके फिर दुवां वैद्यकी बातें बादशाह से कहनेलगा कि मैंने यह अच्छी प्रकार से सुना है कि वह भेदियाहै आपके किसी वैरीने इसे भेजा है यदि आप को इसने निज उपाय से नीरोग किया है परन्तु तिस औषधि के गुणसे आपको ऐसा कोई दुःख पहुँचेगा कि आपके प्राणों पर आबनेगी बादशाह निर्बुद्धिथा मन्त्री के डाह और वैर यथार्थ प्रतीत न करसका और मंत्री के बहकाने से उसका चित्त दुवां वैद्यसे फिर गया तो कहने लगा कि हे मंत्री! तू सत्य कहता है वह वैद्य मेरे मारनेकोही आया है किसी समय मुझको कोई ऐसी औषधि सुंघावेगा कि जिससे मेरे प्राण अंतको प्राप्त होंगे मेरे चित्तमें भी अब यहबात दृढ़होगई जब मंत्रीने यह देखा कि मेरा मंत्र चलगया तो बादशाहसे बोला कि अब बचने के लिये आप शीघ्रही उस वैद्यके मारनेकी आज्ञादीजिये तब बादशाहने कहा कि अच्छा मैं अभी मरवा डालताहूं यह कहकर किसी सरदारको आज्ञाकी कि दुवा वैद्यको शीघ्र बुलाओ वह बुलाया गया और बोला कि किसलिये आपने बुलवाया बादशाहने कहा कि तू सब जानताहै जिसलिये बुलायाहै वह बोला मुझे मालूम नहीं-

आप मुझे विदित कीजिये तब कहा कि मैं चाहताहूं कि तुझे मरवाकर तेरे इस मकरसे छूटूं वैद्य इस बातको सुन सुन्न होरहा और उस बादशाहसे विनय किया कि स्वामी मेरे मारनेका क्या कारणहै तब बादशाहने कहा कि तू भेदिया अर्थात् जासूसहै मेरे मारनेको आयाहै यदि तू मुझे सायंकालमें मारनेकी इच्छा करै तो मुझे उचित है कि भोरही तुझे मैं मारूं यह कह बादशाहने उस सरदारको आज्ञा दियी कि तू इसे अभी मार जो मैं इसके हाथ से बचूं यह मेरे मारनेको आयाहै दुवां उस बादशाहके चित्त को एकही दिनमें अपने से ऐसा फिरा देखकर शोचने लगा कि इस बादशाहको लोगों ने डाह से सिखाकर मेरा वैरी बनादिया हैं अत्यन्तही पश्चात्तापहै कि क्यों मैंने निज चिकित्साकर इसे आरोग्य किया यह कह चिरकालतक अपनी निर्दोषताको बादशाह से कहता रहा पर उसने कुछ न सुना और दूसरी बेर उसे मारनेकी आज्ञा दियी फिर उस वैद्यने बादशाहसे विनयकी कि हेस्वामिन्! यदि निर्दोष मुझे मारोगे तो तिस परमेश्वर से बदला पाओगे इतना कह धीमरने उस पिशाचसे कहा कि जो ग्रीक और उस दुवां वैद्य में भई वहही मेरे और तेरे में है जिस समय वधिक अपने स्वामीकी आज्ञानुसार उसको निज नेत्रों में पट्टीबांध मारनेलगा तब सब सभासदों ने निरपराध उसको मरता समझ बादशाह से बहुतसी प्रार्थनाकियी पर बादशाहने उन सबको झिड़कके ऐसा उत्तरदिया कि फिर उनकोइस विषय में कहनेकी आवश्यकता न रही जब दुवां वैद्य ने देखा कि मैं बिनअपराधही माराजाताहूं तो बादशाहसे विनयकी कि हे स्वामिन्! मुझे इतना तो अवकाश दीजिये कि अपने घरपर जाकर पिछाड़ीकी शिक्षादेआऊं और

अपनी पुस्तकें किसी अधिकारी मनुष्य को देआऊं और उन पुस्तकों में से एक पुस्तक जो अपूर्व्व है वह आपके पुस्तकालय के लिये ले आऊं तो बादशाह ने कहा वह कौनसी ऐसी पुस्तक है कि जिसकी तू ऐसी बड़ाई करता है तब वैद्यने कहा कि उसमें बहुत भेदकी बातें हैं उस में से एक यहभी बात है कि जब मेरा शिर काटा जावे तब उस पुस्तकको खोल उसके छठे पत्रके बायें सफेकी तीसरी पंक्तिको पढ़कर जो २ प्रश्न आपकरेंगे उन २ सबों का उत्तर मेरा शिरही देगा बादशाह यह बात सुन अति आश्चर्य में हुआ और विचारा कि ऐसी अपूर्व वस्तुको देखना अवश्य है यह विचार आज्ञाकी कि आज इसे रक्षापूर्वक पहरे में करके घर लेजाओ जब वैद्यको उसके घर लेगये उसने एकही दिन में सब कार्यकर एक बड़ी पुस्तक वस्त्र में बँधीहुई बादशाहको दे विनय की जब मेरा शिर काटाजावे उस तस्तरी में इस पुस्तक के बंधने पर रखना रखतेही रुधिर बन्द होजायगा इसके उपरान्त जो तुम उस शीशसे पूंछोगे उत्तर ठीक पावोगे फिर उससमयभी बादशाह से कहा कि हे स्वामिन्! मैं निर्दोषही माराजाताहूं क्षमा कीजिये बादशाह ने कहा अब मैं तेरी बात नहीं सुनता यह कह बादशाह ने उसके हाथसे वह पोथी लेली और वधिकको उसके मारने की आज्ञा दी तो हिंसक ने दुबां वैद्यका शिर काट उसी तस्तरी में रक्खा उसी समय रुधिर शिरसे निकलना बन्द होगया बादशाह और सभासदोंने यह देख बड़ा आश्चर्य किया फिर तिस शिरने नेत्रखोल बादशाह से कहा कि अब इस पुस्तकको खोल बादशाहने उसके छठे पृष्ठको गिनकर उलटना चाहा कि दूसरेसफेकी तीसरी पंक्तिको बांचें परंतु वे पत्रे दूसरे से ऐसे चिपकेथे कि बादशाह

उनको सुगमता से उलट न सका तो वह थूक लगाकर पत्रे उलटनेलगा जब छठे पृष्ठपर पहुंचा तव बादशाहने उस स्थानपर कि जहां वैद्यने कहा था कुछ न पाया तो तिसने वैद्य के शिरसे कहा कि वहां तो कुछ भी नहीं लिखा है शिरने उत्तर दिया कि और पत्रों को उलटकर तब तो बादशाह वेर २ अंगुली में मुंहसे पानी उलटनेलगा तो यहांतक कि विष जो उस पुस्तक के प्रति पृष्ठपर लगाथा मुखमें प्रवेशकरगया इसीवास्ते कि कई वेर मुखमें अंगुली लगाने को लेगया था और इसी प्रकार क्षण २ में उसका हाल बदलता गया और दृष्टि भी उसकी जातीरही निदान व्याकुल हो वह निज सिंहासन से नीचे गिरा जब वैद्य के शिरने देखा कि बादशाह को विषकी ज्वाला अच्छेप्रकार व्यापगई और पलमात्र ही जीतारहैगा तव बड़े शब्द से कहा कि हे अन्यायी निर्दयी! निर्दोषके मारने का यह फल तूने देखा इतना सुनतेही बादशाह मरगया और अपने किये के दण्डको पहुंचा॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेचतुश्चत्वारिंशःप्रदीपः ४४॥

अथ पंचचत्वारिंशःप्रदीपः॥

धीमर और पिशाच का वर्णन॥

इतनी कहानी कहके शहरजादने शहरयार से विनयकी कि यह कहानी मैंने बादशाह ग्रीक और दुवां वैद्यकी थी सो सुनायी अब मैं फिर धीमर और उस पिशाचका वर्णन करतीहूं कि जब वह धीमर यह कहानी कहचुका तो तिस पिशाच से कहनेलगा कि हे पिशाच! यदि वह ग्रीक बादशाह दुवां वैद्य को न मारता तो तिसका परमेश्वर भलाकरता परन्तु जब उसके रोनेपीटनेपर भी दृष्टि न करी तो तिसे परमेश्वर ने तैसाही दण्डदिया हे पिशाच!

तेरा भी यही हाल है यदि तू भी मेरे मारनेकी इच्छा न करता तो इस बन्धन में न पड़ता तूने तो बन्धन से छूटतेही मेरे मारनेकी इच्छाकी अब मैं तुझे क्योंकर इस बन्धन से छुटाऊं और तुझपर दयाकरूं अब अवश्यहै कि तुझको इस लोटेसमेत नदी में डाल देऊं कि तू प्रलय पर्य्यंत इस बन्धन में पड़ारहै तो पिशाच ने कहा हे मेरे मित्र! फिर मुझसे ऐसा अपराध न होगा यह समझो कि बुराई के बदले भी भलाई करना उचितहै सो तू मेरे साथ ऐसीही भलाईकर कि जैसी इम्माने अतीका के साथ कियीथी धीमर ने पूछा उसकी कहानी किसप्रकार है धीमर ने कहा जो तुम इस कहानीको सुनाचाहतेहो तो मुझे छोड़दो मैं सुगमता से इस लोटे में वार्त्ता नहीं करसक्ती और यह कहानी क्या वस्तु है मैं बहुतही उत्तम वृत्तान्त और कई कहानियां तुमको सुनाऊंगा जिससे तुम प्रसन्नहोगे तो धीमर ने कहा कि मैं तेरी कहानी सुना नहीं चाहता तेरा मुझे विश्वास नहीं यही उत्तम है कि तुझे इस नदी में डालदूं तब पिशाच ने कहा कि हे धीमर तू मुझे छोड़दे तो तुझे एक ऐसी बात बताऊं कि जिससे तू अतिधनीहोगा धीमर ने कहा कि मुझको तेरे कहनेका कुछ भी विश्वास नहीं यदि तू इस्मआजम की सौगन्दखाये कि मेरे साथ छूटनेपर पीछे धोखा न करसके तो तुझे छोड़दूं तू सत्यप्रतिज्ञाकर तब तो पिशाच ने, वहही सौगन्द खाई तो धीमर ने लोटेके मुखका ढकना उठालिया तो तिस लोटे में से धुवां निकला फिर फैलकर पिशाचका स्वरूपही होगया और लोटे को ठोकरमार नदी में गिरादिया धीमर इस बात को देख अत्यन्त भयभीतभया और बोला कि हे पिशाच! तूने, यह क्या किया तू अपनी प्रतिज्ञापर स्थिर नहीं और वह प्रतिज्ञा जो मेरे

साथकीथी पूरी नहीं करता मैंने तो तेरे साथ वही भलाईकी है कि जो दूवां वैद्य ने बादशाह के साथकीथी तब धीमर के डरने से पिशाच हँसा और बोला कि धैर्य्यरख मैं अपनी उसी प्रतिज्ञापरहूं अब तू अपना जाल मेरे पीछेलिये चला आ फिर दोनों नगर के अन्दर से होकर एक पहाड़की चोटीपर चढ़गये और वहांसे उतर कर एक लम्बे चौड़े मकान में गये जिसमें उनको एक तालाब जिसके चारोंओर चार टीले थे देखपड़ा जब उस तालाब के तटपर पहुँचे तब पिशाच ने धीमर से कहा कि इस तालाब में जाल डाल मछलियां पकड़ तब वह वहां बहुत से मच्छ उसमें देख प्रसन्न हुआ कि बहुतसी मछलियां पकडूंगा और उन मछलियों को रंग बरंगी देख आश्चर्यित हुआ और उसमें निज जाल डालकर खींचा तो तिसमें केवल चार मछलियां चाररंगकी श्वेत, लाल, पीली औरकाली आईं तो पिशाचने कहा कि इनको तू बादशाह के पास लेजाव वह तुझे इतना द्रव्य देवेगा कि जिसे जन्मभर कभी न पायाहोगा इस तालाब में केवल एकबेर जाल डालना इसके विपरीत न करना नहीं तो दण्ड पावेगा-इतनी बात उस पिशाच ने उसे बुझा पृथ्वी में ठोकरमारी धरती-फटगई और आप उसमें समागया फिर वह पृथ्वी बराबरहोगई धीमर मछलियां बादशाह के निकटलेगया इतनाकह शहरजाद ने शहरयार से कहा कि मैं कुछ वर्णन नहीं करसक्ती कि वह कितना उन मछलियों को देखके प्रसन्नहुआ-मंत्री से कहा इन मछलियों को लेजा उस रसोइन को जिसे ग्रीक बादशाह ने मेरे लिये सौगात समझकर भेजाथा जाकरदे मैं जानताहूं कि वो इनको अच्छेप्रकार से बनावेगी मंत्री ने चारों मछलियां ले जाकर उस चेरीको दीं और कहा

कि इनको अच्छे प्रकार से तैयारकर बादशाह ने तुमको वास्ते तैयारकरने के आज्ञादी है जब मंत्री उन मछलियों को देकर बादशाह के निकटगया तब तो बादशाह ने उससे चार सौ ४०० मोहरें उस धीमर को पारितोषिक दिलवाई धीमर उन अशरफ़ियों को पाकर इतना प्रसन्नहुआ कि जिसका वर्णन नहीं हो सक्ता फिर शहरज़ादने शहरयार से कहा अब उस रसोईदारिन का हाल सुनिये कि उसका क्या हाल हुआ कि जिसके कारण वह महाव्याकुल हुई जिस समय उसने उन मछलियों को काट और साफ़ करके गर्म तेलमें भूनने के लिये छोड़ा और एक ओर से वह मछलियां पकके लालहोगईं तो ज्योंहीं दूसरी ओर उलटा त्योंहीं एक अद्भुत बात देखपड़ी तत्काल पाकागारकी दीवार फट गई उसमें से एक स्त्री अति रूपवती और बड़ेटीमटाम और तमक से निकलआई और वस्त्र आभूषणादिक से बहुत सजीहुई थी मानों मिश्रदेशही से आईथी और कानमें वाले और गले में बड़े२ मोतियों की माला और सोनहरे बाजूबन्द जिसमें लाल जड़ेहुये थे विशेष इसके नाना भांति का बहुत मोल गहना पहने हुये एक उत्तम छड़ी हाथमें लेकर उस पात्रके समीप कि जिसमें मछलियां तलीजाती थीं आय खड़ीहुई और एक मछली को छड़ी से मार बोली हे मछली हे मछली तू अपने प्रणपर स्थिर है वह कुछ न बोली उस स्त्री ने फिर उस बातको दुहराके कहा तब वह चारों मछलियां उठकर एकहीवार बोलीं कि सत्यहै जो तुम हमें मानोगी तो हम तुम्हें मानें जो तुम अपना ऋणदो तो हम अपना ऋण देंगे यह कहतेही उस स्त्री ने उस पात्रको कि जिसमें मछलियां तलीजाती थीं उलट दिया और आप उस फटीहुई दीवारमें चली

गई, फिर वो दीवार वैसीकी वैसीही होगई, रसोईदारिन इस अद्भुत दशाको देख मूर्च्छित होगई जब सुधि सम्हाली तो अत्यन्त आश्चर्य्यवान् हुई, और उन मछलियों के उठाने को जो गर्म राखपर चूल्हेकी गिरीथीं गई तो उन्हें जलेहुये कोयले के समान काला पाया व्याकुल होकर रुदन करनेलगी और शोचनेलगी यदि यह बात जो मैंने अपने नेत्रों से देखी है बादशाहसे कहूं तो उसे विश्वास न आवैगा इसी चिन्ता में थी कि मंत्री ने आकर उससे पूंछा कि वह मछलियां पकचुकीं रसोईदारिनने उस हालको मंत्री से वर्णन किया मंत्री यह सुनकर अति अचम्भित हुआ और उस समाचार को बादशाहसे न कहकर कोई दूसरी बात बनाकर उससे कही और शीघ्रही उस धीमरको बुलवाया जब वह आया उससे कहा कि तू शीघ्रही उसी भांतिकी चार मछलियां कि जैसी पहिले लायाथा लेआ धीमरने वह वार्त्ता कि जो पिशाच से हुई थी न कह दूसरी बात कही कि आज वैसी मछलियां नहींलासक्ता कल अवश्य लाऊंगा। दूसरे दिन धीमर उसी तालाबपर गया और जाल डालकर वही चार रंगकी मछलियां कि जैसी पहिले दिन जाल में आईथीं पकड़ीं और शीघ्रही मंत्री के सम्मुखले आया मंत्री उनको पाकागारमें लेगया किवाड़को भीतरसे बन्दकरलिया और रसोईदारिन ने उनको साफ़कर पहिले दिवस के सदृश तैल में डाला फिर उसी प्रका[illegible]लटती समय [illegible] वहांकी तड़कगई और वह स्त्री छड़ी ह[illegible] [illegible]येहुये दीव[illegible] [illegible]ई और उसी मछलीवाले तवे को [illegible] [illegible]र एक मह[illegible] [illegible] यही बात कही कि जो पहिले कह[illegible] [illegible]न सब म[illegible] अपने [illegible]

ने उसी पात्रको उलट वह मछलियां फेंकदी और आप उसी फटी हुई दीवारमें गुप्तहोगई मंत्री ने इस सारे समाचारको अपने नेत्रोंसे देख चित्तमें विचारा यह तो अति अद्भुत चरित्र है और इसे बादशाहसे अवश्य कहना चाहिये तदनन्तर बादशाहके निकट जाय इस बात को ज्योंकात्योंही कह सुनाया बादशाह सुन अति आश्चर्यितहुआ उसने इस विचित्र चरित्रको निज नयनों से देखना चाहा और धीमरको बुलवाकर कहा कि हे मित्र वैसीही चाररङ्ग की मछलियां फिर भी लासक्तेहो धीमर ने विनयकी कि मैं तीन दिन के पश्चात् लासक्ता हूं तीन दिन के पीछे धीमर मछलियां पकड़ बादशाहके सम्मुख लेगया बादशाह उनको देख अतिआनन्दितहुआ और चारसौ अशरफियां उसी धीमरको अपने कोष से दिलवादीं और एकान्त स्थान में जाय सब सामग्री पकनेकी मँगवाय मंत्रीको आज्ञाकी कि तू मेरे सम्मुख इन मछलियोंको भून मंत्री ने किवाड़ उस मकानके बन्दकर आपही उन मछलियों को पकाना आरम्भ किया जब तलने के पात्र में उन मछलियों को डालें और वह एकओर से लालहोगईं उसने उनको दूसरीओर पलटा पलटतेही दीवार उस एकान्त स्थलकी फटगई और उसमें से उस सुन्दरी की जगह एक हब्शी सेवकों के समान और हरी भारी छड़ी लेकर उस दीवार से निकला और उस पात्र के पास कि जिसमें मछलियां तलीजातीथीं उसी छड़ी से छूकर बड़े भयमान शब्द से कहा हे मछलियो ! तुम अपने वचनपर स्थिरहो उन मछलियों ने अपने शिरों को उठाकर कहा कि हम तो उसी बातपर हैं इतनी बात कहतेही उस हब्शी ने उसी पात्र को उलट मछलियां फेंकदीं और नष्टकरदीं और आप उसी फटी दीवार में

जाय गुमहुआ बादशाह ने यह समाचार देख मंत्री से कहा कि यह अपूर्व हाल जो मैने अपने नेत्रों से देखा बिनाभेद के नहीं है और मछलियां भी कुछ चिह्न जानपड़ती हैं मैं चाहताहूं कि इस भेदको विदितकरूं फिर उस धीमरको बुलवाकर पूछा कि उन मछलियोंका तो मैंने अद्भुत चरितदेखा मुझे बता-तू यह रंगीन मछलियां कहांसे लायाथा उसने उत्तरदिया मैं उनको उस तालाव से जो चारोंओर टेकड़ों से घिरा है पकड़लायाथा बादशाह ने उस मंत्री से पूंछा कि तूने वह तालाव देखा है मंत्री ने कहा कि मैंने तो सुना भी नहीं यद्यपि मैं पहाड़ के चारोंओर साठवर्ष से शिकार खेलने को जायाकरताहूं परंतु मैंने वहां कोई भी तालाव नहीं देखा फिर बादशाह ने धीमर से पूंछा कि वह तालाव यहांसे कितनीदूर परहै उसने उत्तरदिया कि यहांसे तीनघड़ी के रास्तेपर है बादशाह ने यह बात सुन उसीसमय कि थोड़ादिन-शेषरहगया था अपने सभासदों को आज्ञादी कि शीघ्र तैयारहो तदनन्तर वह सवारहो धीमर के पीछेहोलिया और उन्हीं पहाड़ोंपर चढगया जब दूसरी ओर उस पहाड़के उतरा तो वहां एकबहुत बड़ावन दृष्टिमें पड़ा कि कभी उसको किसी ने न देखाथा फिर बादशाह अपनी सेना और सभासदों सहित दूसरी ओर उस वन के जाय एक तालाव जिसमें चारोंओर चार टेकड़े कि जैसा धीमर ने कहाथा देखा और जल उसका ऐसा निर्मल था कि जिसमें से चाररंगकी मछलियां उसी [प्र]कारकी कि जैसी धीमर बादशाह के निकट लेगयाथा बहुतसी [दे]खीं बादशाह उसी तालाव के तटपर उतरा और उन मछलियों [क]ो देख अति विस्मितहुआ और अपने सभासदों और सरदारों [स]े पूछा कि तुमने और भी कभी यह तालाव देखाथा उन सबों ने

विनयकी कि हमने तो कभी भी इस तालाव को नहीं देखा और न सुना बादशाह ने कहा कि जबतक मैं इस तालाव और चाररंग की मछलियों का वृत्तान्त अच्छेप्रकार से न जानूंगा यहांसे न जाऊंगा यह कह आज्ञाकियी कि सब मनुष्य इस तालाव के चारों ओर उतरें सो डेरा उस तालाव के चारोंओर खड़ाकिया जब सायंकाल हुआ बादशाह अपने डेरे में आया और मंत्री को आज्ञाकी कि मैं इस विषय में अति लज्जितहूं कि एकही वेर यह तालाव कैसे देखपड़ा और उस हब्शीका मेरे एकान्त स्थल में आना और मछलियोंका बोलना किसकारण था अति आश्चर्य्यकी बात है कि मेरा चित्त इस बात से व्याकुल है इसलिये मैंने यह शोचा है कि अपनी सेना को छोड़ अकेलाहोजाऊं और तू डेरों में रह मेरे जानेकी किसी से न कहना भोरहोतेही जब सब सभासद और दरबारीलोग मेरी सभा में आवें तू उनसे यह कहदीजियो कि बादशाह कुछ रोगी है यह कह उन सबों को विदाकरदीजियो और जबतक मैं इस स्थानपर लौट न आऊं तू यहांही ठहरारहियो यहां रह मेरे कहनेको कीजियो मंत्री ने बादशाह को बहुत समझाया कि इस विषय में अत्यन्त भयहै क्या आश्चर्य्य है कि श्रम के पश्चात् यह भेद आपको मालूम न हो तो क्यों इस श्रम और भय में पड़ते हो परन्तु बादशाह ने न मानी और राजसी वस्त्र उतार शिकार के वसन पहन खड्ग हाथ में ले रात को ऐसे समय में कि सब सेना के मनुष्य वेसुध सोरहे थे तब डेरे से निकलकर पहाड़की ओर चला और अत्यन्त सुगमता से उसपर चढ़ दूसरी ओर उतरगया और एकओर जिधर एक बड़ावन कि जिसका वारपार न था चला इतने में भोरसीभयी तो उसने सूर्य्यके

प्रकाश में एक अतिउत्तम मकान और वहुतसा वखेड़ा देखा तो अति प्रसन्नहुआ कि वहाके जानेसे इसका भेद भी अवश्य मिलेगा जव उसके निकट पहुँचा तो तिसे वड़ाभारी जान जो राजमंदिर के समान अति विशाल कालेपत्थर से वनाहुआ था और नीचे ऊपरतक उसके लोहे के पत्र आदि अति उत्तम और साफ़ अति शिकलकिये जड़े थे कि दर्पण के समान चमकते थे उसे देख वादशाह को कुछ धैर्य्यहुआ कि यहांसे मेरी अभिलाषा अवश्य सिद्धहोगी फिर वहुतवेरतक देखाकिया फिर उस गढ़के पास जाय खड़ाहुआ यद्यपि उसे विदित था कि उस गृहका दरवाजा अन्दर से खुलाहुआ है परन्तु फिर भी उसने तालीवजाई और वहुतवेर तक राह देखतारहा कि कोई ताली सुनकर आवेगा जव कोई भी वाहर न आया तो उसने विचारकिया कि किसीने न सुनाहोगा फिर उसने किवाड़को वल से खुड़काया तौभी क़िसीने उत्तर न दिया तव अति आश्चर्य्य में हुआ और चित्त में विचारा कि वड़ा पश्चात्ताप है कि ऐसा उत्तम भवन वनाहुआ निर्जनरहै इसमें तो एकभी जीव नहीं जो वाहरआय मुझे उत्तरदेवे और उससे इस स्थानका भेदमिले [illegible] तू यहां कवतक [illegible] रहेगा विना शोच विचार चल जो [illegible] सम्मुखआवे [illegible] वचाना फिर वह उस मंदिर के वीच [illegible] और ड्यो[illegible] [illegible] वड़े शव्द से

ओर से वह मकान कालेवस्त्र से मढ़ाहुआथा और दर्वाजों के पड़दे जड़ाऊ मखमल के कि जिसमें सुनहरी और रुपहरी बूटे कढ़ेहुये लटकरहे थे और उसकी बारहदरी में एक कुंड था जिसके चारोंकोनों में चार शेर सुनहले वनेहुये थे और उनके मुखसे फुहारे छूटते थे जब उनका जल संगमरमर के फर्शपर गिरता था तो सहस्रों टुकड़े हीरेके और असंख्य मणि माणिक्य दृष्टिपड़ते थे और उस कुण्ड के बीच में एक फव्वारह इतना ऊंचा उठता था कि बारहदरी के छततक पहुँचता था और उसमें कुछ आर्बी अक्षरों में खुदाहुआ था और उस स्वच्छ भवन में तीन उत्तम बाग अत्यन्त शोभायमान जिनमें नानाप्रकार के उत्तम फल और सुगंधित पुष्प और अनेक उत्तम वस्तु अपने अपने उचित स्थानों पर रक्खेहुये थे कि जिसमें वह बाग चित्तको अत्यन्तही आनन्ददायक था और नानाप्रकारके पक्षी वृक्षोंपर प्रियवाणी बोल रहे थे और उन्हीं में रात्रि दिन रहते थे क्योंकि उन वृक्षोंपर चारों ओर जाल पड़ेहुये थे कि जिससे कोई भी पक्षी बाहर नहीं जासक्ताथा बादशाह एक मकान से दूसरे मकान में जाता और सैर करता तथा हरेक उत्तम वस्तुको देखकर प्रसन्नहोता इतना उन मकानों में फिरा कि थकित होगया तदनन्तर एक मकान में बैठ बागका तमाशा देखने लगा कि दैवयोग से एक दुःखित शब्द सुनपड़ा कई बेर उसने ध्यानकर सुना कि कोई मनुष्य अतिदुःखी हुआ अपनी व्यथा कहरहा और अपने बुरे भाग्यपनका धिक्कार देरहाहै बादशाह ने उसके क्लेश का वृत्तान्त सुन उस मकान का पड़दा उठाया और देखा कि एक जवान रूपवान् जो बादशाही वस्त्र पहनेहुये एक ऊंची चीज़पर जो सिंहासन के समान विदित

होती है बैठाहुआ अति विलाप करताहै बादशाहने उसके निकट जाकर प्रणाम किया उसनेकहा मुझे क्षमा कीजिये कि मैंने उठके तुम्हारा आगत स्वागत न किया मैं लाचार हूं तुम कुछ बुरा न मानना बादशाह ने कहा कि मैं तुम्हारे इस शीलसे अत्यन्त प्रसन्न हुआ कोई ऐसा कारण होगा कि आप नहीं उठसके परन्तु तुम्हारे क्लेशका हाल सुन मुझे अति दुःखहुआ मैं केवल तुम्हारी सहायताके वास्ते यहां आयाहूं अपने दुःखसे मुझे शीघ्रही विदित कीजिये कि मैं उसका उपायकरूं मुझे विश्वासहै कि तुम अपना वृत्तान्त अवश्य कहोगे पहिले तुम उस तालावका हाल जो यहां से समीप है और उसमें चार रङ्गकी मछलियां हैं वर्णन करो फिर इस मन्दिरका वृत्तान्त कि किसने बनायाहै और तुम इस हालसे अकेले इस स्थानपर क्योंहो वह यह बात सुन रोया और कहने लगा कि मैं अपने वृत्तान्त को क्या वर्णनकरूं अपना वस्त्र ऊपर उठाया बादशाहने देखा कि वह शिरसे नाभितक आदमी है और कमरसे चरणतक काले पत्थरका बनाहुआ है यह देख अति विस्मित हुआ और उस मनुष्यसे कहा कि मैं तो यहांकी बहुतसी वस्तु देख चिन्ता करताथा परन्तु तुमने मुझे यह हाल दिखलाकर अति विस्मित और विह्वलकिया परमेश्वरके वास्ते अपना वृत्तांत शीघ्रही कहो मालूम होताहै वह रंगबरंगी मछलियां इसी वृत्तान्त से सम्बन्धितहैं आप मुझसे अवश्य कहिये कि जब कोई दुःखित मनुष्य अपने क्लेशको वर्णन करताहै उस समय उसे धैर्य्य प्राप्त होता है उसने कहा यद्यपि मुझे अपने वृत्तान्त कहनेकी सामर्थ्य नहीं परन्तु आपकी आज्ञानुसार कहता हूं ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेपंचचत्वारिंशःप्रदीपः ४५ ॥

अथ षट्चत्वारिंशः प्रदीपः ॥

काले द्वीपों के बादशाह का दृष्टान्त ॥

**अलौकिकैवघटना स्त्रीणांवैदृश्यतेयथा ॥**
**प्रसुप्तंस्वपतिंहित्वा रेमेयापाकशासिना ४३**

स्त्रियोंकी बड़ीही अलौकिक महाही दुर्घट घटना चेष्टा होती है जैसे काले द्वीपोंवाले बादशाह की स्त्री उसे सोता छोड़ रसोइये से नित्यही रमण करती इतिहास ॥ शहरजादने शहरयार से कहा कि उस पुरुषने अपना वृत्तान्त इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि पिता मेरा महमूदशाह काले द्वीपों का बादशाह था जो विख्यात चार पहाड़हैं और राजधानी उस स्थानपर थी कि जहां अब वह तालाब है अब जो मैं कहताहूं इस वृत्तान्त से तुमको इन सब का हाल ब्योरेवार विदित होजावेगा हे बादशाह जब मेरा पिता ७० वर्षका होकर मरगया उसकी जगह में सिंहासन पर बैठा मैंने अपने चचाकी पुत्री के साथ विवाह किया वह स्त्री मुझसे बहुत प्रीति करती थी उसीप्रकार मैं भी उसे चाहता था पांच वर्षतक हम प्रीतिपूर्व्वक रहे इसके पश्चात् मैंने प्रीतिमें कुछ अन्तर पाया एक दिन भोरके भोजन के पश्चात् वह स्नानकरने गई मैं जाकर एक कमरे में लेटरहा और दो बांदियां जो उस रानी के पंखा हिलाने के वास्ते नियतथीं मेरे पास आकर एक शिरकी और एक पांव के निकट बैठगई और मेरे आनन्द के हेतु पंखा करनेलगीं और मुझे सोता जान परस्पर वार्त्ता करनेलगीं और मैं भी कि जगता था अपने को सोया हुआ बनाकर उनकी बातें सुननेलगा एकने दूसरीसे कहा कि हमारी रानी अतिनिर्दयी है कि ऐसे रूपवान् और

कोमल बादशाहको प्यार नहींकरती दूसरी ने यहसुनकर उत्तरदिया कि तू सत्य कहती है नहीजानपड़ता कि रानी इसे अकेला छोड़ रात्रिको कहांजाती है और इसको यह बात मालूम नहीं पहिली चेरी ने कहा इस गरीबको उसके जाने का हाल किसप्रकार विदित हो रानी तो प्रतिरात्रि तिसे शर्बतमें नशा मिलाकर पिलातीहै उसके नशे में वह ऐसा बेसुध होजाताहै कि कुछ खबर नहीं रहती और वह यह अवकाश पाकर जहां चाहती है तहांहीं चलीजाती है फिर भोरभये आय बादशाह को कुछ सुगंधित वस्तु सुंघाकर फिर चैतन्य करलेती है हे प्रियमित्र ! मुझे यह बात सुन इतना खेद हुआ कि कुछ कहा नहीं जाताहै उससमय में मैंने निज क्रोध को थॉभा और इस उपायसे उठा कि मानों सचमुचही सोताहुआ उठाहो फिर वह रानी स्नानकरके आयी और रात्रि को भोजनकर मैंने शयनकरनेकी इच्छाकी कि वह वहही प्याला कि जिसे सदैव पिलातीथी सो मेरे पिलाने को लाई मैंने उसके हाथसे ले और उसकी दृष्टि बचाय खिड़की से पृथ्वी पर फेंकदिया और खाली प्याला उसके हाथ दिया कि वह यह जानले कि मैंने पीलिया तदनन्तर हम दोनों शय्या पर सोरहे तो रानी मुझे सोताजान शय्यापर से उठी और उसने निज एक मंत्रपढ़ा और मेरे ओर मुखकरके कहा कि ऐसा बेसुध सोरहि कि कभी न जागे फिर शीघ्रही वस्त्र पहिन उस कमरे के बाहर आयी उसके बाहर निकलते हीं मैं भी उठा और तुर्तही वस्त्र पहिन खड्ग हाथ में ले उसके पीछे पीछे चला इतना पास और मिलाहुआ उसके साथ जाताथा कि उसके पैरों का शब्द मुझे सुनपड़ता और मैं उसके पैरों के चिह्न के चिह्नपर पैर रखताहुआ बड़े विचार से उसके पीछे चला था कि

उसे मेरे चलनेका शब्द न सुनपड़े वह कई दरवाजों से कि जिनमें ताला दियाहुआ था होकर निकली और वह दरवाजे उसकी आवाज जादू से आपही खुलतेजाते थे जब वह सबसे पिछले दरवाजेपर कि उस ओर बाग़ था उसमें होकर अन्दर को चली मैं उस दरवाजे में लगके खड़ाहुआ कि मुझे वह न देखसके और वहांसे उसे देखतारहा तो वह एक पुष्पवाटिकासे आगे बढ़ी और जाते जाते एक छोटे बनमें कि जिसका रास्ता चारोंओर से घिरा हुआ था और सघन वृक्षों से घिराहुआ भी था वह वहांगई तो मैं भी और राहसे वहां पहुँचकर एक झाड़ी के अन्दर छिपकर खड़ा हुआ और वहांसे उसे देखा कि क्या करती है तो वह एक पुरुष के साथ टहलतीहुई वार्त्ताकरती जाती है तो मैंने निज ध्यानधर उसे देखा कि क्या कहरही है तो सुना वह यह कहरही है कि मैं तुमको प्राणों से प्रिय समझतीहूं और रात दिन तुम्हींपर मोहित रहतीहूं परन्तु तिसपर भी तुम मुझे भला बुराकहते और धिकारही दियाकरते हो इसका कारण मुझे मालूम नहीं होताहै यदि तुम मेरी परीक्षाही लियाचाहतेहो तो मैं तुम से इतनी प्रीति रखतीहूं कि कहो सो करूं और तुमको मेरी सामर्थ्य भी इतनी विदित है कि मैं क्या२ काम नहींकरसक्तीहूं यदि आप चाहतेहो तो मैं सूर्योदय पहिले इस सब नगर और उत्तम २ घरों को मैदान करदेऊं कि जिसमें भेड़िये और उल्लू रहनेलगें और पत्थरों के कि जिनकी दीवारें दृढ़ बनीहुई हैं कोहकाफ़ पहाड़ के और फेंकदूं केवल तुम्हारी आज्ञाही चाहतीहूं वह रानी यह कहतीहुई अपने प्रियके कर में करदिये टहलतीथी तो उस झाड़ी के निकट जहां मैं छिपरहा था आई और दोनों वहां से न लौटे और जब उसका प्यारा मेरी

ओर से होकर निकला तो तभी मैंने म्यानसे तलवार निकालके एक हाथ ऐसा मारा कि उसका शिर कुछ कटा और वह लड़खड़ाय के गिरपड़ा और मुझे मालूमहुआ कि वह मरगया और रानी जो निज मेरे चचाकी पुत्री थी इसीलिये मैंने उसे छोड़दिया और तत्कालही वहांसे दबेपैरों लौटा कि रानी को यह बात न मालूमहुई यदि उसके प्यारे को वहुतभारी घावलगा था पर तौभी वह खड्गलगने के कारण ऐसा होगयाथा कि न तो जीतों में गिना जाता और न मरों में था तो मैंने लौटतीसमय रानी को सुना कि अपने प्रिय के घायलहोने से रोती और पीटती है मैंने उसके रुदन करनेपर कुछ विचार न कर उसे अकेली वहांहीं छोड़ निज गृह में आया और कमरे में शय्यापर जा लेटा तो तिसके मारने से मुझे कुछ धीर्य्य हुआ और मैं सोरहा फिर भोरभये निज रानी को अपने पासही सोतीदेखा पर अच्छेप्रकार जानपड़ा कि वह सोती न थी वहाना किये थी मैं उसे इसी दशा में छोड़करके उठखड़ा हुआ और राजसी वस्त्र पहिनलिये फिर राजसभा में गया जब दरबार से निज मंदिर में आया तो निस रानी को गमी के काले वस्त्र पहिने देखी जिसने शिर के वाल खोललिये और खोसखसोट मुझसे वोली कि स्वामी मुझे शोककी दशा में देख अप्रसन्न न होना कि मैंने तीन बुरे समाचारपाये इसीसे मेरी यह दशाहै मैंने पूछा प्रिये वे क्या हाल हैं तो वोली एक तो यह कि मेरी माता अति प्रिय थी मरगई दूसरा यह है कि मेरा पिता युद्ध में मारागया तीसरा यहहै कि मेराभाई ऊंचे से गिरकर मरगया मैंने यह सुनके कुछ शोक न किया तो क्योंकि मैं सब भेद जानताही था उसके वर्णन से मुझे सूचितहुआ कि उसे उसके यारके मेरे हाथ से मारे

जानेका हाल मालूम न था तो तिससे कहा कि यह बात कुछ अप्रसन्नताकी नहीं किन्तु जो तुम ऐसे अशुभ समाचार को सुन कर कुछ शोक न करते तो निस्संदेहही मैं विलग अर्थात् निपट क्रूर मानता तदनन्तर वह एकवर्षतक इसीप्रकारसे कमरे में जाकर रोती पीटती रही इसके पश्चात् तिसने मुझसे कहा कि मैं एक मक़बरा बनवाकर उसमें रहा करूंगी। मैंने उसको इस विषय में भी न रोका तो तिसने एक बड़ाभारी मन्दिर गुम्मज़दार बनवाया जो यहांसे दिखाई दे रहाहै और उसका नाम ,शोकागार धरा जब वह गृह बनचुका तो वह अपने प्यारे सहित तिस शोकागार में गई और कोई ऐसी औषधि अपने विचार से उसे खिलाती कि इतना घायल होनेपर भी वह न मरा और प्रतिदिन उस शोकागारमें अवश्य औषधि खिलाने जाती परन्तु वह इतने मंत्र और उपाय करनेपर भी नहीं खड़ा होसक्ता था और न उसमें चलने की सामर्थ्य थी और बातें भी नहीं करसक्ता केवल देखाही करताथा रानीको उस के देखने से धैर्य्य होता था और उससे प्यार और प्रीति की बातें करकेही अपने मनको धैर्य्य दियाकरती थी सो दिनमें दो बेर उस के समीप जाती और बहुत देरतक वहां रहती थी यदि रानी का वह वृत्तान्त मुझे विदित भी था पर मैं जानकर अनजानहीं बना रहा तो एक दिन उस शोकागार में जाय ऐसे स्थान में छिपकर बैठा कि जहां सब कुछ मैंने सुना और रानी ने मुझे न देखा तो वह अपने प्यारेसे कहतीथी कि बड़ाही अनर्थ है जो निज आंखों से मैं तुम्हें ऐसी विपत्ति में देखती हूं और तुझे देख मुझे इतना क्लेश होताहै कि तेरेसे मेरी बुरीदशा होजाती है हे मेरे प्राण हे मेरे प्यारे मैं नित्य २ तेरे निकट आ २ कर वार्त्ता करती हूं पर

कभी भी मेरी एक बातका उत्तर न दिया इसी चिन्तामें मैं मरती कि कबतक चुपरहोगे यदि मुझसे एकभी बात करो तो मुझे अत्यन्त धीर्य्य होवे जबतक मैं तेरे निकट बैठी रहती हूं मेरे चित्त में धीर्य्य रहता है और केवल तेरे देखनेसेही मैं प्रसन्न रहती हूं इस प्रकार अपने प्यारेसे कहती और रुदन करतीथी मैं इतनी विह्वलता और व्याकुलता देख धीर धर न सका तो जब वहां से उस पहिले गृहमें जहां कि रहताथा वहां वहआई तो तिसे कहा हे सुन्दरि तुमने अतिचिन्ता और शोक किया अब उचित है कि तुम इसे छोड़ो सदैव इस शोकमें रहना तुमको उचित नहीं रानी ने कहा हे स्वामी मुझसे इस विषय में आप कुछ न बोलो मुझे इसी दशामें रहने दो मेरे चित्त से अभीतक शोक नहीं गया और न कुछ कमही हुआहै निदान मैंने निजस्त्री को कितनीही समझाई परन्तु तिसने एक नहीं मानी और मेरा समझाना उस के शोक का कारण अधिक हुआ फिर मैंने उसे कुछ नहीं कहा और उसे उसी दशामें छोड़ी यहांतक कि उसे इसी दशा में दो वर्ष व्यतीत होगये फिर मैं दूसरी बेर उसी शोकागार में गया और छिपकर ऐसे स्थान में बैठा कि जहां से उस की सब बातें सुनाई दें तो तिस प्यारे के निकट बैठी मेरी रानी कहती थी कि अब तीसरा वर्ष आरम्भ भी भया तिसपर भी तूने एकबात मुझ से न की और रुदन करने चिल्लाने और हाहाकार करने और अधीरता तुझे तुच्छ समझ मुझ से नहीं बोलतापर प्यारे महाही पश्चात्ताप है कि मेरी प्रीति तो चित्तमें कुछभी प्रवेश नहींकरती सदैव निज नेत्रोंसे कि मैं जिनसे निहाल होतीहूं और मेरे जीवन का कारण है बन्द किये रहता है परमेश्वर के लिये इनको खोल

मेरी ओर देख मैं रानी की ये बातें सुन अत्यन्तही अप्रसन्न हुआ और क्रोधकरके बोला कि हे गुम्मज तू किसलिये इस स्त्री सहितदेव को जो मनुष्य के वेषमें है इसे निगल क्यों नहीं जाता है इतना कहतेही वह रानी कि अपने हब्शी प्यारे के निकट बैठीथी वहांसे क्रोधकरके बावरे के समान झपटकर मेरे पास आई और कहने लगी कि हे अभागी दुष्ट तूही मेरे इस दुःखका कारणहै तेरेही इस अन्याय से मेरे प्यारेकी यह दशाहुई है कि जिसमें वह अबतक घायलहै मैंने कहा हां मैंनेही इस देवको माराहै और वह इसी के योग्यथा और तू भी इसी दण्डके योग्य है किसलिये कि तूनेही मेरी प्रतिष्ठा भंगकरी है यह कह मैंने निज खड्ग निकालना चाहा कि उसे मारूं पर उसकी जादूकी राहसे मेरा हाथ ऐसा रुकगया कि मै उसे चला नहीं सका और उसने निज कुछ मंत्र पढना आरम्भकिया कि मंत्रके बलसे कहती हूं कि तू नीचे के धड़से पत्थर होजा और ऊपरके से मनुष्य बनारह उसके इतना कहतेही जैसा कि देखतेहो वैसाही मै बनगया जबसे न तो मैं मरों मेहूं न जीतों में फिर उसने मुझे इस शोकागारसे उठाकर इस गृहमें लारक्खा और मेरे नगरको झील और तालाब बना दिया और निर्जन करदिया कि जैसा तुमने देखा और मेरे सभासदादि सब प्रजाओं को रंगकी मछलियां बनाकर इस तालाव में डालदी सफ़ेद मछलियां मुसल्मान हैं और लाल रंगकी अग्निपूजक तथा काली अंगरेज़ पीली यहूदी और चार बड़े द्वीप कि मेरे राजधानी से सम्बन्धितथे उनको चार पहाड़ बनाडाला और मुझे आधेधड़से पत्थर का बनारक्खाहै तिसपर भी उसका क्रोध शान्त नहीं हुआ यहां प्रतिदिन आकर सौ कोड़े मेरे कंधों और पीठपर मारती है

कि हरएक कोड़े की चोटसे मेरे शरीरसे रुधिर निकलरहा है फिर मारपीट कर एक मोटी काली बकरी के बालों की बनीहुई कमरी मेरे ऊपर डाल और उसके ऊपर बहुतभारी सुनहला वस्त्र पहनाती है वह भी मेरी प्रतिष्ठा के हेतु नहीं है और कहती है कि यह दुष्ट कि बहुत बड़ा कालेद्वीपों का बादशाह है और अपने को इस अनादरपूर्व्वक मारपीट से बचा नहीं सक्ताहै इतना कह शहरयार ने कहा कि फिर वह निज नेत्रों को ऊपरकी ओरकर परमेश्वर से इसप्रकार प्रार्थना करनेलगा कि हे सामर्थ्यवान् हे सर्वोत्पादक तेरेही न्याय से आशारखताहूं कि यदि तेरी इच्छा और अप्रसन्नता इसीमें है कि मुझपर इसीप्रकार अनर्थ हुआकरे तो मैं इसीपर राजीहूं और धन्यवाददेताहूं मुझे तेरीही पूर्णकृपापर विश्वासहै कि एकदिन अवश्यही मुझे इस दुःख से छुटावेगा जब उस बादशाह ने यह अद्भुत वृत्तान्त सुना तो अत्यन्तही चिन्ता करनेलगा और चाहा कि इस बादशाहको कि जिसपर अन्याय हुआ है रानी से बदलालें तो पूछा कि वह निर्लज्ज जादूगरनी अब कहां है और वह दुष्ट प्रिय उसका कहां रहता है कि जिसके पास वह प्रतिदिन जायाकरती है बादशाहने कहा कि मैंने पहिले आपसे नहीं कहा कि वह शोकागार में जिसे गुम्मजकी ओर बनाया है वह शोकागार इसीसे मिलाहुआ है उसकी राह भी इसी मकान में आगयी है और उस जादूगरनी के रहनेका स्थान मुझे मालूम नहीं परन्तु वह भोरभये प्रतिदिन मेरे दण्डदेने के लिये आती तदुपरान्त अपने प्यारे के पास जाय उसे किसी प्रकारका अर्क पिलाती है [illegible] वह अब [illegible] है बादशाह ने यह

यह अद्भुत वृत्तान्त इतिहास समाचारकी तरह लिखरक्खा जावे
फिर उस बादशाह ने उस दुःखित शाह से निज इच्छा सूचितकरके
धीर्यदिया और रात्रिहोने हेतु तहांहीं वहभी सोरहा वह वेचारा
बादशाह उसीप्रकार जागतारहा कि वह जादू के असर से लेटने
वा सोने के योग्य न था फिर दूसरेदिन बादशाह वहां छिपकर गया
उस शोकागार में कि जहां उत्तम उत्तम सैकड़ों सुनहरे दीपक
जलते थे और उस गृह को सजाहुआ देखकर अति आश्चर्य्यित
हुआ फिर जहां वह हब्शी पड़ाहुआ था वहांहीं मैंभी गया और
एक हाथ खांड़ेका ऐसामारा कि वह हब्शी अर्द्धमृतक मरगया
और लोथ उसकी खैंचकर कुयें में डालदी और आप उसी जगह
जहां वह हब्शी पड़ाथा खड्गले लेटरहा इस विचारसे कि समय
पाय उस जादूगरनी को भी मारें जब वह जादूगरनी मकान में
आयी तो पहिले वह वहांहींगयी जहां कि कालेद्वीपोंका बादशाह
था और उस वेचारे को बहुतही मारना आरम्भकिया यहांतक कि
उसके रुदनकरने से सारा मकान कँपनेलगा वह वेचारा कितनाही
उसे सौ सौ सौगन्ददे कहा कि मुझपर दयाकर परन्तु वह दुष्टा
अभागिनी विना सौ चाबुकमारे विना रहती न थी फिर उसपर
कम्मल डाल सुनहरा वस्त्र पहिराकर फिर शोकागार में गई और
अपनी प्रीति और विरहका हाल वर्णन करनेलगी और उस म-
कान के समीप जिसमें उसका प्यारा पड़ारहता था जाकर कहने
लगी कि क्या अनर्थ है कि तूने निज अप्रीति से मेरा चैन खो
दिया हे मेरे प्यारे इतने अन्याय होनेपर भी मुझे बुराभला कहने
से नहीं रहताहै कि मैं अत्यन्त निर्दयीहूं जब मैं तुझे ऐसी दशा
में देखतीहूं तो मुझको क्रोध बहुतही होताहै और चाहतीहूं कि

कि हरएक कोड़े की चोटसे मेरे शरीरसे रुधिर
मारपीट कर एक मोटी काली बकरी के बालों की
मेरे ऊपर डाल और उसके ऊपर बहुतभारी
ती है वह भी मेरी प्रतिष्ठा के हेतु नहीं है और कह
हुए कि बहुत बड़ा कालेद्वीपों का बादशाह है
इस अनादरपूर्वक मारपीट से बचा नहीं सक्ता है
रयार ने कहा कि फिर वह निज नेत्रों को ऊपर
श्वर से इसप्रकार प्रार्थना करनेलगा कि हे सा
त्पादक तेरेही न्याय से आशारखताहूं कि य
अप्रसन्नता इसीमें है कि मुझपर इसीप्रकार

उबलनेलगा फिर दालान से कि जहां उसका पति था गई और उस पर वही जलछिड़का और कहा कि यदि परमेश्वर ने तेरा स्वरूप ऐसाहीं बनायाहै और वह तुझ से प्रसन्नहै तो तू इसी दशा में रह और जो तेरा यहस्वरूप नहीं तो तू मेरे इसजादूसे जैसाकि पहिलेथा वैसाही होजा इतना कहतेही वह बादशाह अपने पहिले स्वरूप में आगया और अति प्रसन्नता से उठ खड़ाहुआ और परमेश्वर का धन्यवाद किया जादूगरनीने उससे कहा कि इस भवन से शीघ्रही निकलजा फिर यहां कभी न आइयो नहीं तो माराजायगा वह इस का उत्तरदिये विना शीघ्रही वहां से चलदिया और किसी मकान में जाय छिपके बैठरहा और इसअद्भुत चरित्रके देखनेकी लालसा रख परमेश्वरका स्मरण करनेलगा उसे विश्वासथा कि बादशाह सबकार्य कर मेरे ढूंढ़नेको अवश्य आवेगा फिर वह जादूगरनी वहां से उसशोकागारमें आई और बादशाहसे कि जिसको हब्शी जानतीथी कहा कि मैंने आपकी आज्ञानुसार उसको अच्छाकरदिया अब तुम उठो जिससे मुझको धैर्य्यहोवे तो तिस बादशाहने फिर हब्शी के समान निज ऊंचे स्वरूपसे कहा कि यह जो तूने किया सो मेरे नीरोगहोनेके लिये बुरानहीं है अभीतक तेरा अन्यायपन दूर नहीं हुआहै उसने कहा हे मेरे हब्शी प्यारे आपका क्या प्रयोजन है बादशाह ने कहा कि तू सम्पूर्ण नगरको रहनेवालों समेत कि जिसे तूने निज जादूसे उजाड़कर रक्खाहै उनको निज २ योनि में ला प्रतिदिन अर्द्धरात्रिको सब मछलियां शिर निकाल २ शाप देती हैं कि इसी कारण मैं नीरोग नहीं होताहूं तू शीघ्र जा और उन सबोंको निज २ पूर्व रूप में ला जब ये कामकर आवेगी तो तुझे मैं अपना हाथदूंगा तू तिस समय मुझे सहारा देना और उ-

इससे अधिक माराकरूं और तेरे से उसका बदलालूं और तेरे बैरी को उससे अधिक माराकरूं और बादशाह के आगे कि हब्शीकी जगहमें था जायके कहा कि अब तू चुप और ने बोलनेसे चाहताहै कि मैं मरजाऊं पर परमेश्वर के वास्ते एक बात तो मुझसे कर कि मुझे धीर्य्यहो बादशाह ने अपने को ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रा से जगे फिर हब्शियों के शब्द के समानहीं उस रानी को उत्तरदिया कि सिवाय परमेश्वर के कि जो सर्व्वोपरि है किसीको सामर्थ्य और बल नहीं जादूगरनी इस बात को कि जिसकी उसे आशा न थी सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहुई और बोली कि हे स्वामी यह तुमने उत्तरदिया कि कुछ मुझे धोखापड़ा बादशाह ने कहा कि हे दुष्ट स्त्री क्या तू इस योग्य है कि तेरे प्रश्नका कोई उत्तरदे रानी ने कहा कि हे मेरे प्रियतम मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ जो तुम ऐसा कहते हो उसने कहा कि तेरे भर्त्ता के चिल्लाने से कि जिसको तू प्रतिदिन माराकरती है मेरा सोना और आराम करना बन्दहोगया है मैं तो बहुत दिनों से अच्छा और नीरोग होगया होता और वार्त्ता करनेकी भी सामर्थ्य अच्छेप्रकार आजाती परन्तु तूने उसपर जादू कररक्खा है और उसे प्रतिदिन माराकरती है उस तेरे अन्याय से मेरा जी नहीं चाहता कि मैं तुझसे बोलूं और तेरी बातका उत्तर देऊं जादूगरनी ने कहा कि जो तुम्हारी प्रसन्नता इसीमें है कि मैं उसे दण्डदेना छोड़दूं और उसे पहले स्वरूप में लाऊं तो मैं अभी ऐसा करसक्तीहूं बादशाह ने कहा हां हां मैं यही चाहताहूं कि अभी तू जाकर उसे चंगाकर कि जिससे उसके रोने से मेरा जी न बिगड़े तो रानी तुर्त्तही उस शोकागारमें गयी और एक प्याले में जल भरकरके कुछपढ़ा जिससे वह पानी

उबलनेलगा फिर दालान से कि जहां उसका पति था गई और उस पर वही जलछिड़का और कहा कि यदि परमेश्वर ने तेरा स्वरूप ऐसाही बनायाहै और वह तुझ से प्रसन्नहै तो तू इसी दशा में रह और जो तेरा यहस्वरूप नहीं तो तू मेरे इसजादूसे जैसाकि पहिलेथा वैसाही होजा इतना कहतेही वह बादशाह अपने पहिले स्वरूप में आगया और अति प्रसन्नता से उठ खड़ाहुआ और परमेश्वर का धन्यवाद किया जादूगरनीने उससे कहा कि इस भवन से शीघ्रही निकलजा फिर यहां कभी न आइयो नहीं तो माराजायगा वह इस का उत्तरदिये विना शीघ्रही वहां से चलदिया और किसी मकान में जाय छिपके बैठरहा और इसअद्भुत चरित्रके देखनेकी लालसा रख परमेश्वरका स्मरण करनेलगा उसे विश्वासथा कि बादशाह सबकार्य कर मेरे ढूंढनेको अवश्य आवेगा फिर वह जादूगरनी वहां से उसशोकागारमें आई और बादशाहसे कि जिसको हब्शी जानतीथी कहा कि मैंने आपकी आज्ञानुसार उसको अच्छाकरदिया अब तुम उठो जिससे मुझको धीर्यहोवे तो तिस बादशाहने फिर हब्शी के समान निज ऊंचे स्वरूपसे कहा कि यह जो तूने किया सो मेरे नीरोगहोनेके लिये बुरानहीं है अभीतक तेरा अन्यायपन दूर नहीं हुआहै उसने कहा हे मेरे हब्शी प्यारे आपका क्या प्रयोजनहै बादशाह ने कहा कि तू सम्पूर्ण नगरको रहनेवालों समेत कि जिसे तूने निज जादूसे उजाड़कर रक्खाहै उनको निज २ योनि में ला प्रतिदिन अर्द्धरात्रिको सब मछलियां शिर निकाल २ शाप देती हैं कि इसी कारण मैं नीरोग नहीं होताहूं तू शीघ्र जा और उन सबोंको निज २ पूर्व रूप में ला जब ये कामकर आवेगी तो तुझे मैं अपना हाथदूंगा तू तिस समय मुझे सहारा देना और

इससे अधिक मारा करूं और तेरे से उसका बदला लूं और तेरे बैरी को उससे अधिक मारा करूं और बादशाह के आगे कि हब्शी की जगह में था जायके कहा कि अब तू चुप और न बोलने से चाहता है कि मैं मरजाऊं पर परमेश्वर के वास्ते एक बात तो मुझसे कर कि मुझे धीर्य्य हो बादशाह ने अपने को ऐसा बनाया कि जैसे कोई निद्रा से जगे फिर हब्शियों के शब्द के समान ही उस रानी को उत्तर दिया कि सिवाय परमेश्वर के कि जो सर्व्वोपरि है किसी को सामर्थ्य और बल नहीं जादूगरनी इस बात को कि जिसकी उसे आशा न थी सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई और बोली कि हे स्वामी यह तुमने उत्तर दिया कि कुछ मुझे धोखा पड़ा बादशाह ने कहा कि हे दुष्ट स्त्री क्या तू इस योग्य है कि तेरे प्रश्न का कोई उत्तर दे रानी ने कहा कि हे मेरे प्रियतम मुझसे ऐसा कौन अपराध हुआ जो तुम ऐसा कहते हो उसने कहा कि तेरे भर्त्ता के चिल्लाने से कि जिसको तू प्रतिदिन मारा करती है मेरा सोना और आराम करना बन्द होगया है मैं तो बहुत दिनों से अच्छा और नीरोग हो गया होता और वार्त्ता करने की भी सामर्थ्य अच्छे प्रकार आजाती परन्तु तूने उसपर जादू कर रक्खा है और उसे प्रतिदिन मारा करती है उस तेरे अन्याय से मेरा जी नहीं चाहता कि मैं तुझसे बोलूं और तेरी बात का उत्तर देऊं जादूगरनी ने कहा कि जो तुम्हारी प्रसन्नता इसी में है कि मैं उसे दण्ड देना छोड़दूं और उसे पहले स्वरूप में लाऊं तो मैं अभी ऐसा करसक्ती हूं बादशाह ने कहा हां हां मैं यही चाहता हूं कि अभी तू जाकर उसे चंगा कर कि जिससे उसके रोने से मेरा जी न बिगड़े तो रानी तुर्त्तही उस शोकागार में गयी और एक प्याले में जल भरकरके कुछ पढ़ा जिससे वह पानी

अब आपका देश एक वर्षभरकी राहपर है उसने निज जादूसे उसे पास ला रक्खाथा उसने सुन अचम्भाकिया तो तिस बादशाह ने कहा यह जादूके आगे कुछ आश्चर्य्य नहीं पर दूरहै तो क्याहुआ मैं आपका सर्व्वथा सहायकहूं आपने मेरा ऐसा भारी उपकार कियाहै जन्मभर न भूलूंगा और यह नियम भी किया मेरे पुत्र नहीं है सो मेरे मरेपर राज्यासनपर तुमहीं बैठोगे यह कह निज यात्रा की सामिग्री साथले वहांसे चले जो जो चीजें कालेद्वीपों के बादशाह के यहां उत्तमथीं साथलीं और पचास सवार, तथा अन्य भी सामानले यात्राकियी, तीन सप्ताह वहां रहकर चले और चले चले चन्दरोज में निज राजधानी के निकट पहुँचे सोही द्वीपों के राजा ने निज हलकारे भेजे वे जाय ब्यौराकहते भये तब सब सरदार सेना तय्यारकर उनकी अंगवानी लेनें को आये और निज राजकाज की कुशल कही कि आपकी प्रजा अति आनन्दमें है फिर वहां से बड़ी धूमधाम के साथ निज नगर में आय महलों में पधारे फिर दूसरे दिन सवेरेही सब सरदारों को इकट्ठेकरके कालेद्वीपों के बादशाहका अद्भुत वृत्तान्त सुनाकर कहा कि इसीलिये मुझे देर भी भई और इसको मैं निज राजकाज देऊंगा यह भी सबको सुनादिया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागे मिश्रनिबन्धेपट्चत्वारिंशःप्रदीपः ४६॥

अथ सप्तचत्वारिंशः प्रदीपः॥

दासोदासीचाप्यमीनाजुबैदा एकत्रासन्योगिनश्चत्रिकाणाः ॥ राजामंत्रीजाफरश्चेतिसर्वे गाथास्स्वीयावर्णयामासरेवम ४४॥

ठाना तो रानी ने निज प्यारे से ऐसी बातें सुन अत्यन्त प्रसन्नहो कर कहा बहुत अच्छा ऐसाही करूंगी यहकह उसने शीघ्रही उस तालावके तटपर जाय थोड़ा जलले मंत्रपढ़ उस तालावपर छिड़का जल छिड़कतेही वे सम्पूर्ण मछलियां अपने २ निज २ स्वरूप में आगई और सब उसके जादू से छूटे गृह दूकानें मनुष्य सहित पूर्ववत् बसगये उन्होंने निज २ वस्तु जहां छोड़ी थीं वह ज्यों की त्यों पाई बादशाह की सभा और सरदार कि जो नगर के निकट उतरे थे वे बहुत दूर होगये और अपने को बस्ती के बीच देखके अत्यन्त प्रसन्न हुये और वह जादूगरनी सबको निज २ स्वरूप में लाकर उस शोकागार में गई और बड़े शब्द से बोली हे प्राणनाथ! मैंने आपकी आरोग्यता और जीवनके निमित्त सबको निज निज पूर्वरूप में करदिया अब आप उठिये और निजहाथ मुझे दीजिये तब बादशाहने उसे हब्शियों की वाणी से कहा कि आगे आ वह आई तो कहा और आ वह आई तो तिसने निज शीघ्रतासे उसके एकही हाथ ऐसा फटकारा कि वह इतना अवकाश न पासकी कि कुछ और बचके करदेती फिर उसकी भी लोथ उसी कुये में डाली और आप उस बादशाह के ढूंढ़ने में कि वह भी राह देखरहा था गया और धैर्य्य दे बोला कि अब तू निर्भयहो उससे न डर तब तो तिसने इसका धन्यवाद दिया और सहस्रों आशीर्वाददे कहा कि आपने मुझको पुनर्जन्म दानदिया अब मुझे आज्ञाहो और आप भी मेरे स्थानपै पधारें और कुछ भोजनकरके चलेजाना तो यह बोला कि क्या तुम मेरे निज नगर को निकट नहीं जानतेहो वह बोला हां तुम्हेंहीं निकट मालूमदेता है वह बोला मैं दो चारघड़ीमेंहीं तो यहां आया था तो वह बोला

में जगह न रही तब मजदूर ने कहा जो मुझे मालूमहोता कि आप इतनी वस्तुलेंगी तो मैं एक घोड़ा या ऊंट अपने साथ लेते आता निदान वह मजदूर टोकरा उठाकर उसके साथ हुआ जाते जाते एक बड़े मन्दिर के दरवाजेपर कि जिसका शिरा पीलपावों से सजाहुआ था और किवाड़े हाथीदांत से जटित थे वह दोनों पहुँचे स्त्रीने ठहरकर तालीबजाई जबतक कि दरवाजा खुला, मजदूर बड़े विचार में रहा कि स्त्री यह सौदा सुलफ लेनेवाली बांदी है या घरकी मालिक है परन्तु उसकी सजधज देखने से बांदी विदित न होतीथी इतने में एक स्त्री ने आकर द्वारखोला मजदूर उस के रूप अनूप और हावभाव को देख विह्वल होगया, और उस विह्वलता में उस के शिरपर से भार गिरने लगा वह स्त्री जो अपने साथ उसे लाई थी उसकी बेसुधि का तमाशा देखने लगी दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मजदूर भार से दबा जाता है घर में शीघ्र लेजा उतरवाले तदनन्तर मजदूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने किवाड़ अन्दर से बन्दकर लिये फिर वह दोनों स्त्रियां मजदूर सहित एक बड़े मकान में गईं, जिसके चारों ओर बरामदे पीलपावों के बनेहुये थे और उसके बीच में बड़ाभारी दालान था इसके विशेष एकओर बैठनेका उत्तम स्थान उत्तम २ वस्तु और बर्त्तनों से सजाहुआथा उसमें एक सुन्दर सिंहासनथा सन्दलवऊद की लकड़ीका बिछोथा और बिछौना अति सुन्दर-तासे कि जिसके चारोंओर उत्तम २ मणिमाणिक जटित थे बिछा था और हौज सङ्गमरमर का जिसमें फव्वारे जोसिम छुटरहे थे यदि मजदूर भार उठाने के कारण थकित होगया था परन्तु उत्तम मकान और सामग्री बर्त्तन जो उचित२स्थानपररक्खेहुयेथे देख अतिप्रसन्न

दास, मजदूर, दासी, साकी और अमीना, जुबैदा ये दोनों वहिन और तीन कानेयोगी तथा राजा और मंत्री ये सब दैववश से एकत्रभये तो तिन्होंने निज निज कथा इसप्रकार से कथनकरी दृष्टान्त ॥ बादशाह हारूंरशीद का प्रायः यहही स्वभावथा वह निज वेष बदलकर निज नगरकी रखवाली के लिये निकलताथा यह वार्त्ता आगे प्रकटहोगी इसी बादशाह के यहां बुगदाद नगर का एक दास था जो बड़ाही ठठोल और वाचालथा एकदिन वह घर से बाहर मजदूरीकरने को चला तो बाजार में टोकरा शिरपर से उतार रखकर बैठाथा कि कोई उसे भार उठाने के लिये बुलाये संयोग वश एक स्त्री परमसुन्दरी जालीका वस्त्र अपने मुखपर डाले आई और उसने उससे मुसकराय कहा अपना टोकरा उठा और मेरे साथ चल वह मजदूर उस स्त्री की मीठी मीठी बातें सुन अत्यन्त प्रसन्न हुआ और टोकरे को अपने शिरपर रख उसके पीछेहोलिया और चित्तमें यह कहताहुआ चला आजका दिन क्या उत्तम है कि ऐसी अच्छी स्त्री से कामपड़ा उस स्त्री ने आगेबढ़ एक बन्द दरवाजेपर जाकर ताली बजाई थोड़ीदेर पश्चात् एक वृद्ध लम्बी और श्वेत दाढ़ीवाले नसरानी ने आकर दरवाजा खोला उस स्त्री ने कुछ रुपये उसके हाथ में रखदिये नसरानी ने उसका अभिप्राय समझ घरसे एक बड़ी ठिलिया उत्तम मदिराकी लादी स्त्री ने मजदूर से कहा कि इसे ले अपने टोकरे में रख उसने रखली फिर वहां से मजदूर के साथ बाजार में आई और उत्तम २ फल सेव नाशपाती आदि और नानाप्रकार के रङ्ग के अति सुगंधित पुष्प, इत्र, स्वादिष्ट अचार, मुरब्बा, मांस और सूखा हुआ मसाला हरएक दूकान्दार से इतनी सामग्री मोल ली कि मजदूर के टोकरे

में जगह न रही तब मजदूर ने कहा जो मुझे मालूमहोता कि आप इतनी वस्तुलेंगी तो मैं एक घोड़ा या ऊंट अपने साथ लेते आता निदान वह मजदूर टोकरा उठाकर उसके साथ हुआ जाते जाते एक बड़े मन्दिर के दरवाजेपर कि जिसका शिरा पीलपावों से सजाहुआ था और किवाड़े हाथीदांत से जटित थे वह दोनों पहुँचे स्त्रीने ठहरकर तालीबजाई जबतक कि दरवाजा खुला मजदूर बड़े विचार में रहा कि स्त्री यह सौदा सुलफ लेनेवाली बांदी है या घरकी मालिक है परन्तु उसकी सजधज देखने से बांदी विदित न होतीथी इतने में एक स्त्री ने आकर द्वारखोला मजदूर उस के रूप अनूप और हावभाव को देख विह्वल होगया और उस विह्वलता में उस के शिरपर से भार गिरने लगा वह स्त्री जो अपने साथ उसे लाई थी उसकी बेसुधि का तमाशा देखने लगी दूसरी स्त्री ने कहा कि यह बेचारा मजदूर भार से दबा जाता है घर में शीघ्र लेजा उतरवाले तदनन्तर मजदूर के घुसने के पीछे पहली स्त्री ने किवाड़ अन्दर से बन्दकर लिये फिर वह दोनों स्त्रियां मजदूर सहित एक बड़े मकान में गईं जिसके चारों ओर बरामदे पीलपावों के बनेहुये थे और उसके बीच में बड़ाभारी दालान था इसके विशेष एकओर बैठनेका उत्तम स्थान उत्तम २ वस्तु और बर्त्तनों से सजाहुआथा उसमें एक सुन्दर सिंहासनथा सन्दलबऊद की लकड़ीका बिछीथा और बिछौना अति सुन्दरतासे कि जिसके चारोंओर उत्तम २ मणिमाणिक जटित थे बिछा था और हौज़ सङ्गमरमर का जिसमें फ़व्वारे जोसम छुटरहे थे यदि मजदूर भार उठाने के कारण थकित होगया था परन्तु उत्तम मकान और सामग्री बर्त्तन जो उचित२स्थानपररक्खे हुयेथे देख अतिप्रसन्न

हुआ मुख्य तीसरी स्त्री को कि उस सिंहासन पर बड़े सजधजसे बैठी हुईथी देख अपना श्रम भूलगया फिर उसको विदितहुआ कि इस तीसरी स्त्रीका नाम जुबैदा है और इस घरकीस्वामिनी यही है और दूसरी स्त्रीका नाम साफ़ी और वह स्त्री कि सब सामग्री खरीद करलाई उसका नाम अमीनाहै जुबैदाने कहा हे बीबियो इसबेचारे मजदूर के शिरसे शीघ्रही भार उतारो कि वह दमलेकर हलकाहो उसके कहने से साफ़ी और अमीनाने टोकरे को थाँभ भार उसके शिरसे उतारा और टोकरा वस्तुओं से खाली करनेलगी जुबैदाने द्रव्यकी उसकी मजदूरी से कहीं अधिकथा मजदूरको दिया उसने वह द्रव्य पाय अत्यन्त प्रसन्न होजाने की इच्छाकी परन्तु उन सुंदर स्त्रियों के देखने से उसका चित्त न अघाताथा अबतक वहांसे चला न था कि अमीना ने अपने मुखसे वस्त्र उतारा मजदूर तो केवल उसकी छबीली चाल और कोमल अंगपर मोहितथा औ वह उसके रूप छवि अनूप को देखकर खड़ारहगया और आश्चर्य्य यह था कि इस गृहमें तीन स्त्रियों के सिवाय चौथा न था परन्तु खानेपीने की सामग्री इतनी खरीदी थी कि ३० मनुष्योंको पूर्णहो जुबैदा उसके खड़े रहने से समझी कि थकगयाहोगा सु स्ताने के वास्ते ठहरगया जब वह चिरकालतक ठहरारहा उसकी ओर देखकर कहा क्या तू कुछ और चाहता है क्या तूने मजदूरी अपनी इच्छानुसार नहीं पाई फिर उसने अमीनासे कहा कि इस को कुछ और दे विदाकरो मजदूर ने कहा हे स्वामिनी मैंने मजदूरी अधिक पाई है परन्तु कुछ विनय किया चाहताहूं यदि तुम्हारे सम्मुख ऐसी विनय करनी अति ढिठाई और अपराध का कारण है आशा रखताहूं कि उसे क्षमा कीजिये यह कहकर कहा कि

किसी स्त्रीको तुम्हारे समान रूपवान् और सुन्दर नहींपाता इससे मैं अत्यन्त आश्चर्यितहूं और स्त्रियों के बीचमें पुरुषका न होना यह भी आश्चर्य है जैसा मर्दों में स्त्रीका न होना इस विषय में मजदूर ने उत्तम २ दृष्टान्तकहे और वह दृष्टान्त भी जो बुग़दाद नगर में ख्यात थे कहे अर्थात् जबतक चार मनुष्य इकट्ठे होकर भोजन न करें वह भोजन वेस्वादहै तबतक खानेवाले अघाते भी नहीं ऐसे दृष्टान्तों से उसका अभिप्राय यहथा कि उन तीन स्त्रियों में भोजन के समय चौथे पुरुषका होना अवश्यहै ज़ुबैदा मज़दूर की यह बातें सुन बहुत हँसी और कहा मजदूर तू अपनी निर्बुद्धिताकी बातें अपने पास रख केवल हम तीन बहिनें हैं हमतीनों अपने कार्य्य को अच्छेप्रकार सिद्धकर लेती हैं कि कोई दूसरा मनुष्य उसे न जाने और विचार रखती हैं कि कोई हमारा भेद न जाने मजदूर ने कहा कि हे स्वामिनी तुम बड़ी बुद्धिमान्हो मुझे बहुत कुछ स्मरण और मालूम है परन्तु अपनी दुर्भाग्यतासे लाचारहूं कि मजदूरी करताहूं यदि मेरा कार्य्य अति तुच्छ है परन्तु चैतन्यहूं और मैंने बहुतसी पुस्तकें इतिहास आदिकी देखी हैं यदि आज्ञाहो तो कोई कहानी सुनाऊं बुद्धिमान् अपने भेदको चतुरसे गुप्त न रक्खे क्योंकि वहभेद गुप्त रखना भलीभांति जानताहै मुझ से भेद कहना इस प्रकारहै कि जैसे किसी वस्तुको किसी गृहमें बन्दकर दिया और उसकी कुञ्जी खोगई है ज़ुबैदाको मालूमहुआ कि यह मज़दूर बड़ा योग्य और समझदार और सत्संग करने के योग्यहै इसको अपने साथ भोजन कराना अवश्यहै हास्यसे कहा कि तू जानता है कि हमने अपने हाथों इस भोजन को अत्यन्त श्रम और द्रव्य खर्चकर बनाया है तूने तो खर्च नहीं किया इस

हुआ मुख्य तीसरी स्त्री को कि उस सिंहासन पर बड़े सजधजसे बैठी हुईथी देख अपना श्रम भूलगया फिर उसको विदितहुआ कि इस तीसरी स्त्रीका नाम जुबैदा है और इस घरकीस्वामिनी यही है और दूसरी स्त्रीका नाम साफ़ी और वह स्त्री कि सब सामग्री खरीद करलाई उसका नाम अमीन है,जुबैदाने कहा हे बीबियो,इसबेचारे मजदूर के शिरसे शीघ्रही भार उतारो कि वह दमलेकर हलकाहो उसके कहने से साफ़ी और अमीनाने टोकरे को थाँभ भार उसके शिरसे उतारा और टोकरा वस्तुओं से खाली करनेलगीं,जुबैदानें द्रव्यकी उसकी मजदूरी से कहीं अधिकथा मजदूरको दिया उसने वह द्रव्य पाय अत्यन्त प्रसन्न होजाने की इच्छाकी परन्तु उन सुंदर स्त्रियों के देखने से उसका चित्त न अघाताथा अबतक वहांसे चला न था कि अमीना ने अपने मुखसे वस्त्र उतारा मजदूर तो केवल उसकी छबीली चाल और कोमल अंगपर मोहितथा और वह उसके रूप छवि अनूप को देखकर खड़ारहगया और आश्चर्य्य यह था कि इस गृहमें तीन स्त्रियों के सिवाय चौथा न था परन्तु खानेपीने की सामग्री इतनी खरीदी थी कि २० मनुष्योंको पूर्णहो जुबैदा उसके खड़े रहने से समझी कि थकगयाहोगा सुस्ताने के वास्ते ठहरगया जब वह चिरकालतक ठहरारहा उसकी ओर देखकर कहा क्या तू कुछ और चाहता है क्या तूने मजदूरी अपनी इच्छानुसार नहीं पाई फिर उसनें अमीनासे कहा कि इस को कुछ और दे बिदाकरो मजदूर ने कहा हे स्वामिनी मैंने मजदूरी अधिक पाई है परन्तु कुछ विनय किया चाहताहूं यदि तुम्हारे सम्मुख ऐसी विनय करनी अति ढिठाई और अपराध का कारण है आशा रखताहूं कि उसे क्षमा कीजिये यह कहकर कहा कि

किसी स्त्रीको तुम्हारे समान रूपवान् और सुन्दर नहींपाता इससे मैं अत्यन्त आश्चर्य्यितहूं और स्त्रियों के बीचमें पुरुषका न होना यह भी आश्चर्य्य है जैसा मर्दों में स्त्रीका न होना इस विषय में मजदूर ने उत्तम २ दृष्टान्तकहे और वह दृष्टान्त भी जो बुग़दाद नगर में ख्यात थे कहे अर्थात् जबतक चार मनुष्य इकट्ठे होकर भोजन न करें वह भोजन बेस्वादहै तबतक खानेवाले अघाते भी नहीं ऐसे दृष्टान्तों से उसको अभिप्राय यहथा कि उन तीन स्त्रियों में भोजन के समय चौथे पुरुषका होना अवश्यहै जुबैदा मजदूर की यह बातें सुन बहुत हँसी और कहा मजदूर तू अपनी निर्बुद्धिताकी बातें अपने पास रख केवल हम तीन बहिनें हैं हमतीनों अपने कार्य्य को अच्छेप्रकार सिद्धकर लेती हैं कि कोई दूसरा मनुष्य उसे न जाने और विचार रखती हैं कि कोई हमारा भेद न जाने मजदूर ने कहा कि हे स्वामिनी तुम बड़ी बुद्धिमान्हो मुझे बहुत कुछ स्मरण और मालूम है परन्तु अपनी दुर्भाग्यतासे लाचारहूं कि मजदूरी करताहूं यदि मेरा कार्य्य अति तुच्छ है परन्तु चैतन्यहूं और मैंने बहुतसी पुस्तकें इतिहास आदिकी देखी हैं यदि आज्ञाहो तो कोई कहानी सुनाऊं बुद्धिमान् अपने भेदको चतुरसे गुप्त न रक्खे क्योंकि वहभेद गुप्त रखना भलीभांति जानताहै मुझ से भेद कहना इस प्रकारहै कि जैसे किसी वस्तुको किसी गृहमें बन्दकर दिया और उसकी कुञ्जी खोगई है जुबैदाको मालूमहुआ कि यह मजदूर बड़ा योग्य और समझदार और सत्संग करने के योग्यहै इसको अपने साथ भोजन कराना अवश्यहै हास्यसे कहा कि तू जानता है कि हमने अपने हाथों इस भोजन को अत्यन्त श्रम और द्रव्य खर्चकर बनाया है तूने तो खर्च नहीं किया इस

उस जगह सुगन्ध और दीपक जलाये कि जिससे सम्पूर्ण गृह सुगन्धित होगया फिर वह स्त्री अपनी बहनों और मज़दूरसहित भोजनपर बैठे और सबने कुछ खा पी अपने भाषाकी काव्य और विचित्र रागगाये कि इतनेमें उन स्त्रियों ने सुना कि कोई मनुष्य दरवाजह खुलवाताहै खड़ीहोगई सोसाक़ी कि जिसका यहीकार्य्य था दौड़के सबके आगे बढ़गई और किवाड़ खोलके फिर आई और जुबैदा से आकर कहा कि तीन योगी। एकही स्वरूप के दरवाज़ेपर खड़े हैं और तीनों दाहिनी आंखों से काणे हैं तुम उनको देख बहुत हँसोगी उनके शिर डाढ़ी मूछें भवें सब मुड़ी हैं और इसीसमय बुग़दाद नगर में उतरा चाहते हैं और कहते हैं कि एक रात्रि के निमित्त हमको स्थानदो कि जहां पड़कर सोरहें भोर को चलेजावेंगे हे बहिन उनको आनेदो वह हम सबको रातभर प्रसन्न करेंगे और हमको किसीप्रकारका कष्ट न देंगे जुबैदा ने साक़ी के कहने के अनुसार कहा कि यदि तेरी इच्छा यही है तो उनको जा लेआ परन्तु सब बातें उनको समझादीजियो कि हमारे कार्य्य में न बोलें और जो किवाड़ के पाटपर लिखाहै पढ़लें साक़ी इसबात को सुन प्रसन्नहोकर किवाड़ खोलने दौड़ीगई और शीघ्रही उन तीनों योगियों को अपने साथ लिवालाई योगियों ने जुबैदा और अमीना को झुककर प्रणाम किया उन्होंने प्रणामका उत्तर दे कुशलक्षेम पूंछी और भोजनकरने में अपने साथ बैठाया योगियों ने मज़दूर को देख पूंछा कि यह मनुष्य अरबका रहनेवाला जान पड़ता है परन्तु धर्म्म के विपरीत मदिरा पानकरताहै मज़दूर ने इस बातमें अत्यन्त अप्रसन्नहो उत्तरदिया कि तुम आपही अधर्मीहो कि डाढ़ी और मूछ मुड़वाकर अन्यों को उपदेश करतेहो इसीप्र-

कार जबमजदूर और योगियोंकी इसप्रकारकी बातें स्त्रियोंने सुनीं तो उसपरस्परके झगड़ा दूरकरनेको योगियोंको बैठा मदिरा पिलाई जब वह मदिरा में उन्मत्तहुये तो उन्होंने कहा कि यदि कोई बाजा होता तो हम बजाते साक़ीने बाजा और बांसुरीआदि लादिये योगी लोग उन बाजोंको प्रसन्नहोकर बजानेलगे और उन तीनोंस्त्रियोंने बाजोंसे अपना स्वर मिलाकर मीठे स्वरोंसे गाना आरम्भकिया और कभी परस्पर हँसते और कभी वाह २ करते उसबाजे के बजने और गाने और ठट्ठेका बड़ा शब्द हुआ सम्पूर्ण भवन गूंजउठा इसी समयान्तर में उन्होंने सुना कि कोई मनुष्य दरवाज़ेपर ताली बजाताहै साक़ी गानाछोड़ दौड़ीगई कि मालूमकरै कि दरवाज़ेपर कौनहै रानी शहरज़ादने शहरयारसे कहा कि इस स्थानपर मुझे अवश्य है कि मैं तुम्हें यह बात बतलाऊं कि किस मनुष्य ने दरवाजे पर आकर ताली बजाई ख़लीफ़ा हारूंरशीद का सदैव यह नियमथा कि रात्रिको अपना वेप बदलकर सम्पूर्ण नगर में अपनी प्रजाका हाल मालूम करने के हेतु फिरा करता सो वह अपने बड़े मंत्री जाफ़र और खोजियों के सरदार मसरूर नामक सहित नगर में निकला था वह तीनों व्योपारियों का वेप बनाय दैवयोग से कि जिस स्थानपर वह तीनों स्त्रियां रहती थीं होकर निकले ख़लीफा ने रागोंका शब्द और हास्य ठठोल का शोर सुन जाफ़रसे कहा कि इस गृहका किवाड़ खुलवा मैं इसके अन्दर जाकर इस शब्दका वृत्तान्त मालूमकरूं मंत्री ने ख़लीफ़ा से कहा कि यहां तो स्त्रियोंका गाना सुनाई पड़ताहै कि उन्होंने भोजनकर मदिरा पीह उसके नशे मे गाय बजा रही हैं आपको उचित नहीं कि उनके हास्यमें कुछ विघ्नकरो कि ऐसा न हो कि वह कुछ बुराभला

कहउठें खलीफ़ाने मंत्री की यह बात स्वीकार न की और आज्ञा की कि तू शीघ्र जाकर उनके किवाड़ खुलवा यह आज्ञा पाय जाफ़र ने उस दरवाजे पर ताली बजाई साक़ी ने किवाड़ खोला मंत्री उसके रूपको दीपक के प्रकाश में कि वह अपने हाथमें ले कर गई थी देख आश्चर्य्यित हुआ और एक उपाय अपने चित्त में ठहरा कहा कि हे मृगनयनी हम तीन व्यापारी नगरमें वस्सल के वासी हैं तीन दिन व्यतीतहुये कि बहु मूल्यवस्तु व्यापारकी ले इस नगरमें आये हैं और एक सराय में उतरे हैं आजकी रात इस नगरके एक व्यापारी ने हमको न्योता दियाथा सो हम उसके गृह गये उसने उत्तम व्यञ्जन खिलाये और मदिरा पिलाई जब हम मत वालेहुये तब उसने नृत्यके वास्ते आज्ञाकी इसमें रात्रि बहुत व्यतीतहुई और सभामेंबाजे और नृत्यआदिसे बड़ाशब्दहोनेलगा संयोग वश कोतवालने अपनी रौंद साथलेकर वहांआ उस गृहका किवाड़ खुलवाया उससभाके बहुतसे मनुष्योंको क़ैदकरलिया हम भाग्यवश बचगये कि दीवारपरचढ़ बाहर कूदपड़े इसनाकह फिर मंत्री ने कहा कि हम इसनगरमें अजानकार भयभीतहैं कि ऐसा न हो कि हम फिर कहीं राहमें दूसरी रौंद या उसी कोतवालके हाथसे पकड़े जावें और उस सरायतक कि जिसमें हम उतरे थे पहुँचने न पावें यदि वहां पहुँचेभी तो सरायके किवाड़ बन्द पावेंगे जो बिना भोर हुये नहीं खुलता तो भोरहोने तक हम इधर उधर फिरतेरहें सो हे सुन्दरी यहां हमने गाने बजानेका शब्द सुन जाना कि इस गृहके मनुष्य अभी नहीं सोये सब जागते हैं किवाड़को खड़काया अब हम आशारखते हैं कि कोई मकान हमको बतादो कि हम उसमें पड़रहें यदि हमको संगति के योग्य जानो तो इस गीत नृत्यमेंभी

मिलाओ क्योंकि तुम सब अच्छे प्रकार गाते बजातेहो और हम भी तुम्हारी इस विषयमें सहायता करसक्ते है उसने उत्तरदिया कि मैं इस गृहकी स्वामिनी नहींहूं यदि थोड़ीदेर ठहरो तो मैं तुम्हारी वातका उत्तरलादूं साक़ीने यह सम्पूर्ण वृत्तान्त जो मंत्रीसे सुनाथा अपनी वहनों के सम्मुखजाय वर्णनकिया उन्होंने कुछ शोचविचार अतिथि पोषणकी राहसे साकीको आज्ञादी कि तू जा उन तीनों व्यापारियों को भी अन्दर लेआ सो खलीफा और मंत्री जाफ़र और मसरूर सहित अन्दर आये और वड़ीअधीनतासे उन स्त्रियो और योगियों को प्रणाम किया उन्होने उनको व्यापारी समझ उसी प्रकारसे उनके प्रणामका उत्तरदिया जुबैदाने कि सबसे बड़ी और बुद्धिमान् थी उनसे कुशल क्षेम पूंछी और कहा जो हमतुम से प्रश्नकरें तुम बुरा न मानना मंत्री ने कहा वह कौनसी वातहै कि तुम ऐसी सुन्दरियो के कहने से बुरी जानपड़े जुबैदा ने कहा जो यही वातहै तो जो कुछ तुम देखो किसी वातमे प्रश्न न करना और २ जो विषय तुमसे सम्वन्धित नहीं उसका वृत्तान्त न पूंछना नही तो तुम्हारी अप्रसन्नता का कारण होगा मन्त्री ने कहा हे सुन्दरी हम तुम्हारी आज्ञानुसार करेंगे हमें किसी व्यर्थ विषयको पूछना अवश्य नहीं यह परस्पर प्रतिज्ञाकर हरमनुष्य को भोजन कराये और मदिरा पिलाई जवतक मंत्री जुबैदा से वार्त्ता करता रहा खलीफा उन स्त्रियो के रूप छवि अनूप और बुद्धिमानीको देख अति आश्चर्य्यित हुआ विशेष कर उन तीन योगियों को कि तीनों दाहिनी आंखसे काणे थे वहुत चाहता था कि इस अ-न्त न्मित्त्को उनसे पूछे परन्तु उसने साथियो ने पूछने न दिया

देख चित्तमें कहता था यह सब वस्तु जादू और मंत्र विद्यासे अवश्य सम्बन्ध रखतीहै इतने में एक योगीने अपने देशकी रीति पर नृत्यकरना आरम्भ किया स्त्रियों ने उसका नाच अत्यन्त प्रसन्न किया और उन सब योगियों से अधिक प्रसन्न हुई खलीफ़ा और उसके साथियों ने भी अत्यंत प्रशंसा कर धन्यवाद किया जब योगियों का नृत्य होचुका जुबैदा अपने स्थानसे उठी और अमीनाका हाथ पकड़ कहा कि हे बहिन तुम जानती हो कि ये सम्पूर्ण सभासद हमारे अधीन हैं इनका होना हमारे कार्य्यमेंविघ्न नहीं करसक्ता हम अपने कार्य्यको न करें अमीना इस बातकेसुनतेही उसके अभिप्राय को समझ गई फिर उसने शीघ्रहीमदिरा की बोतलें और भोजन के पात्र और गाने बजाने की सामग्री जिनको योगी बजाते थे उठाई साक़ीने भी अपनी अमीनाबहिन के साथहो उस कमरेको साफ़किया और प्रति वस्तुको सँवार के रक्ख दियोंके गुलकाटे और चन्दन और सुगंधित तेलकीबत्तियां जलाई और फिर तीनों योगियों और खलीफ़ा आदिको एक और दालान में बिठलाया और मज़दूर से कहा उठकर कामकर तुझ ऐसे बलवान् को उचित नहीं कि निकम्मा बैठारहे मज़दूर ऊँगता था और विवेकके कारण से उस हास्य ठट्ठेमें उद्यत न था तत्काल उठ खड़ा हुआ और पहिरने के वस्त्र को कमर में लपेट कहा मैं तत्पर हूं क्या आज्ञा है साक़ी ने उत्तर दिया कि आस्तीन भी ऊपर चढ़ालो फिर थोड़ी देरके पश्चात् अमीना ने एक चौकी दालान में बिछाई और मज़दूर को अपने साथ लेजाकर एक कोठरी से दो काली कुतियां निकाललाई प्रत्येक कुतियों के गले में पट्टे बँधे हुये थे फिर मज़दूर उन दोनों को खींच दालान में

लेगया जुबैदा कि वहीं बैठी थी उन्हें देख बड़ी तमक से उठी और उस मजदूर के समीप गई और ठंढी सांसेभर आस्तीन ऊपर को चढ़ाई और चाबुक को साक़ी के हाथसे ले मजदूर से कहा एक कुतिया मेरी बहिन अमीना को दे और दूसरी मेरे पास ला मजदूर ने उसकी आज्ञानुसार किया कुतिया लातेही चिल्लाने और मुँहफेर के जुबैदा की ओर देखने और उसके चरणों पर शिर रखके मलनेलगी जुबैदा ने उसके रुदनकरने और चिल्लाने पर विचार न कर चाबुक मारना आरम्भ किया और यहांतक कि मारते २ उसका श्वास चढ़गया और जब थकगई तो मारना छोड़दिया और जंजीर मजदूर के हाथ से ले उसके अगले पञ्जे पकड़ खड़ाकिया और अति पश्चात्तापकर एक दूसरे को देख राई फिर रूमाल से उस कुतिया के आंसू पोंछ प्यार किया और मुख चूमा और मजदूर को देकर कहा इसको लेजा और दूसरीको ला मज़दूर ने उस कुतिया को जो मारीगई थी मकान में लेजा बांधा और दूसरी अमीना के हाथसे ले जुबैदा के निकट लाया जुबैदा ने कहा इसे तू पकड़ेरह फिर उसको भी उसीप्रकार मारा जैसे पहिली कुतिया को मारा था फिर उसके आंसू पोंछ मुख चूम मजदूर को दिया मजदूर उसको भी मकान में लेजा-बांध आया वह तीनों योगी और खलीफ़ा और उसके साथी इस वृत्तांत को देख अति विस्मितहुये और अपने अपने चित्त में कहने लगे जुबैदा क्यों इतने कठोरपनसे उन कुतियों को मार उनके साथरोई ये पशु मुसल्मानों के विचार में अपवित्रहैं उनके आंसू पोंछ और मुँह चूमा इसीप्रकार वह सब परस्पर होले २ इसकी वार्त्ता करते थे विशेपकर खलीफ़ा इस अद्भुत चरित्रके मालूमकरनेकी अति लालसा रखता

उसनें उसीदशा में अपने पहिरने के वस्त्र को उतार फेंकदिया और
उसके कन्धे जो दाग़ों से कालेहोगये थे सव लोगों को दिखाई पड़े
जैसा किसीने उसे मारा है और दाग़ पड़गये हैं सव देख अति
आश्चर्य्यितहुये कि ऐसी सुन्दरी कोमलाङ्गी को किसने मारा है
उसके कन्धे और वाहें दाग़ोंसे काले होगये हैं और क्यों इस दशा
को प्राप्तहुई जवअमीना वेसुधहोय गिरपड़नेपर हुई तव ज़ुवैदा और
साक़ी ने दौड़कर थांभा तव एक योगी ने कहा यदि हम वन
पड़ेरहते और रात्रि को वृक्ष के नीचे व्यतीतकरते तो इससे
उत्तम था कि हम इस वृत्तान्त को देखते और उसका कारण
नहीं सक्के खलीफ़ा ने इस वात को सुन उसके समीप आके
कि तुमको इस स्त्रीका और कुतियों के मारेजानेका वृत्तांत
है योगी ने उत्तरदिया हम इस वृत्तान्त को नहीं जानते
हिले कभी इस घर में नहीं आये केवल आजहीकी रात को
आने के दो चार घड़ी पहिले आये हैं इस वात के सुनतेही
और भी अधिक आश्चर्य्यितहुआ और उस योगी से कहा
जो मनुष्य तुम्हारे साथ हैं कुछ इसे हाल मालूमहुआ होगा
योगी ने मज़दूर को सैन से अपने निकटवुलाय पूछा तू कुछ
नताहै किसवास्ते वे दोनों कुतियां मारीगई और अमीना के
पर क्यों दाग़हैं मज़दूरने सौगंदखाकर कहा कि मैं
नहीं जानता आजके दिनके सिवाय कभी इस घरमें नहीं
और मैं इस घरके रहनेवालोंसे जैसा कि तुम
घरमें केवल तीन स्त्रियां हैं वह सव जानते थे कि मज़दूर
का सेवक होगा जव विदितहुआ कि
गाना है तव खलीफ़ाने कहा हम सात

था मंत्री से सैनकी मंत्री सुनी अनसुनी वातकर, दूसरी ओर देखने लगा फिर राजा ने सैन से पूंछा उसने सैन से विनयकी कि यह समय पूंछनेका नहीं फिर जुबैदा उनदोनों कुतियोंको मारने के पश्चात् थोड़ीदेर सुस्ताने को वैठी जब सुस्ताचुकी साफ़ी ने उससे कहा हे मेरी प्यारी बहिन तुम अपने स्थानपर आवैठो तो हम अपना कार्य्यकरें जुबैदा ने कहा अच्छा फिर वह सभामें आय इसप्रकार से आवैठी कि खलीफ़ा और उसके साथी दाहिनी ओर और तीनों योगी और मजदूर बाईं ओर बैठे एक घड़ीतक वह चुपकीथी कि साफ़ी उस चौकीपर जो दालान मे बिछीहुई थी आय बैठगई और अमीना से कहा वहिन उठो तुम हमारे अभिप्राय को जानतीहो इस बात को सुन अमीना उठी और दूसरी कोठरीमें गई और वहांसे एक संदूक उठालाई जो पीली साठिन से मढ़ाहुआ था और गिलाफ उसकी हरीकार चोबीका था उसने उसे खोल एक नली निकाल अपनी वहिनको दी साफ़ी ने उसके शब्द में वियोग और विरहमयी राग गाना आरम्भकिया जिसको खलीफा आदि सभासद सुन अति हर्षयुक्तहुये जब उसने देरतक गाय वजाय सबको प्रसन्नकिया वांसुरी अमीना को देकर कहा हे वहिन मे थकगई अब तुम इसे ले वजावो और सभा को अपने गाने से प्रसन्नकरो अमीना ने उस नली को लेकर थोड़ीदेरतक उसका स्वर मिलाया फिर एक उत्तम राग वजाया निदान उस अपूर्व राग में मूर्च्छितहोगई और जुबैदा ने उसके गाने वजानेकी अत्यन्त प्रशंसाकी और कहा अब तुम्हारी दशा चिन्ता से वदली हुई मालूमहोतीहै अमीना विह्वलता से उसके प्रश्नका उत्तर न देसकी और उसकी ऐसी दशाहोगई कि वेसुधहोय गिरपड़ी और

उसनें उसीदशा में अपने पहिरने के वस्त्र को उतार फेंकदिया और उसके कन्धे जो दाग़ों से कालेहोगये थे सब लोगों को दिखाई पड़े जैसा किसीने उसे मारा है और दाग़ पड़गये हैं सब देख अति आश्चर्य्यितहुये कि ऐसी सुन्दरी कोमलाङ्गी को किसने मारा है उसके कन्धे और बाहें दाग़ोंसे काले होगये हैं और क्यों इस दशा को प्राप्तहुई जबअमीना बेसुधहोय गिरपड़नेपर हुई तब जुबैदा और साफ़ी ने दौड़कर थांभा तब एक योगी ने कहा यदि हम वन में पड़ेरहते और रात्रि को वृक्ष के नीचे व्यतीतकरते तो इससे बहुत उत्तम था कि हम इस वृत्तान्त को देखते और उसका कारण पूंछ नहीं सके खलीफ़ा ने इस बात को सुन उसके समीप आके पूछा कि तुमको इस स्त्रीका और कुतियों के मारेजानेका वृत्तांत मालूम है योगी ने उत्तरदिया हम इस वृत्तान्त को नहीं जानते और पहिले कभी इस घर में नहीं आये केवल आजहीकी रात को तुम्हारे आने के दो चार घड़ी पहिले आये हैं इस बात के सुनतेही खलीफ़ा और भी अधिक आश्चर्य्यितहुआ और उस योगी से कहा कि यह जो मनुष्य तुम्हारे साथ है कुछ इसे हाल मालूमहुआ होगा उस योगी ने मजदूर को सैन से अपने निकटबुलाय पूछा तू कुछ जानताहै किसवास्ते वे दोनों कुतियां मारीगई और अमीना के कंधों पर क्यों दाग़हैं मजदूरने सौगंदखाकर कहा कि मैं इस वृत्तान्त को नहीं जानता आजके दिनके सिवाय कभी इस घरमें नहीं आया और मैं इस घरके रहनेवालोंसे जैसा कि तुम समझतेहो नहीं इस घरमें केवल तीन स्त्रियां हैं वह सब जानते थे कि मजदूर इन स्त्रियों का सेवक होगा जब विदितहुआ कि मजदूर भी हमारेसमान बेगाना है तब खलीफ़ाने कहा हम सात पुरुषहैं और वे केवल तीन

रियांहैं सब मिलके उनसे इसभेदको पूंछें यदि उन्होंने प्रसन्नहोकर बताया तो उत्तमहै नहीं तो हम जोरसे पूंछेंगे जाफ़र मंत्री नें जो इस सलाह में न था सुन खलीफा के कानमें कहा कि हम सबको इस सभासे अति प्रसन्नताहुई और अबतक बड़े आनन्दमें है और आपको अच्छीतरह मालूमहै कि इन स्त्रियों ने किस प्रतिज्ञा से हमको अपना अतिथि बनायाहै और हमने उस प्रतिज्ञाको स्वीकार किया है इस पूंछने से वे क्या कहेंगी जो परमेश्वर न चाहे इसप्रणके तोड़नेसे किसी प्रकारका दुःखपहुंचे तो अत्यन्त लज्जा प्राप्तहोगी और इसको भी विचारिये कि उन्होंने जो हम सबसे ऐसा दृढ़प्रणकिया है तो हम सब मनुष्यों को अच्छीतरह दंड न दे सकैंगी उन्होंने भी तो कुछ समझाहोगा जो हमसे ऐसा प्रण किया फिर जाफ़र मंत्री ने यहांतक खलीफ़ासे कहा कि रात बहुत थोड़ी है जो आप इससमय चुपरहें तो भोरको मैं इन तीनों स्त्रियों को आपके सम्मुखले आऊंगा उस समय जो आपको पूंछना है उनसे पूंछ लीजियेगा यद्यपि यह बात बहुत अच्छी थी परन्तु बादशाह ने उसे न माना और मंत्री से कहा कि चुपरह मैं प्रभात

होकर ख़लीफ़ा आदिक से कहनेलगी क्या यह बात सत्यहै कि तुमने इस बात के पूंछने को इस मनुष्यसे कहाथा सबने एक मत होकर कहा कि सत्य है केवल जाफ़र मंत्री नहीं पूंछना चाहता ज़ुबैदा ने अत्यन्त कोपित होकर कहा कि तुमने अपनी प्रतिज्ञा अच्छी निबाही हमने दयासे तुमको अपने घरमें रहने को जगह दी और तुम्हारा यथाविधि सन्मान किया और पहिले प्रतिज्ञा करली थी कि तुम किसी हमारी बातको न पूंछना परन्तु तुमने प्रण अपना भंग किया और इसमें कुछ भी भय न किया अब तुम्हारी प्रतिष्ठा हमारी दृष्टिमें नहीं इतनाकह ज़ुबैदा ने पांव धरती पर मारे और तीनबेर ताली बजाकर कहा तुरंत आवो इतना कहतेही एक किवाड़ खुलगया उसमें से सात हब्शी अति बलवान् और हृष्टपुष्ट नंगी तलवारें लियेहुये निकले और हरएकने एक२ को पृथ्वीपर पछाड़ा और उसी दालानके भीतर मारडालना चाहा अब समझना चाहिये कि ख़लीफ़ाको कितनी लज्जा और व्याकुलता मंत्री के उपदेश न सुनने से हुईहोगी इतने में एक हब्शी ने ज़ुबैदा आदिक से पूंछा हे सुंदरियो तुम्हारी आज्ञा है कि हम इनको मारडालें ज़ुबैदाने उत्तरदिया ज़रा ठहर जाओ पहिले इनसे इतना हाल पूंछलें फिर हरएकसे हाल पूंछनेलगीं सबके पहिले मज़दूर ने कहा ईश्वर के वास्ते मुझ निर्दोष को न मारो मैं निपट निर्दोषहूं ये सब अपराधी हैं और रोकर कहनेलगा कि बड़ा पछतावा है कि मैं किस चैन में था इन योगियों के कारण इस दुःखमें पड़ा इनके कुरूप और कुशकुन चरणों से बहुतसे नगर निर्जन होगये होंगे मुझपर दयाकीजिये ज़ुबैदा उसका रोना पीटना सुन हँसपड़ी और कहा कि हरएक मनुष्य अपना ठीक २ हाल कहे

अपना २ वृत्तांत और इस घरमें आनेका कारण वर्णनकरें जब अपना २ वृत्तांत कहचुकें तब उनको छोड़दो जिधरको चाहें उधर चलेजायँ और जो अपना वृत्तांत न कहे उसको वधकरडालो फिर तीनों योगी और खलीफ़ा अपने साथियों और मजदूरों सहित दालान में क़ालीनपर आ बैठे और प्रति मनुष्यके शिरपर एक २ हब्शी तलवार नंगी लिये खड़ाहुआ था कि जुबैदाका हुक्मपाय उनको वधकरे सबके पहिले मज़दूर ने अपना इस प्रकारसे वृत्तांत कहना शुरू किया ॥

मज़दूरकी कहानी जो उसने संक्षेप में वर्णन की ॥

मज़दूरने कहा हे सुंदरी तुम्हारे घरमें आनेका कारण यहहुआ कि आज भोरको मैं बाज़ारमें अपना टोकड़ा लियेहुये इस आशा पर खड़ा था कि कोई मुझे मजदूरी के निमित्त बुलाये कि मैं उसका कार्य्यकर अपने निमित्त जीविका प्राप्तकरूं इतनेमें तुम्हारी बहिनने मुझे बुलाया और अपने साथ लियेहुये कलवारकी दूकानपर गई और वहांसे कुँजड़ेकी दूकान से तरकारी मोलले फिर वहांसे फल बेचनेवाले के निकटगई और वहांसे उत्तम उत्तम वस्तु खरीद और टोकड़ेमें भर मेरे शिरपर रख घरमें लाई और तुमने कृपाकर मुझको अबतक यहां रहनेदिया इस तुम्हारे उपकारको विस्मरण न करूंगा मेरा यह वृत्तान्त है जिसको मैंने विनयकिया जब मज़दूर ने अपनी कहानी को शीघ्र छूटजाने के हेतु पूराकिया जुबैदाने उससे कहा अपने घर चलाजा फिर मेरे सम्मुख कभी मत आइयो मज़दूरने विनयकी यदि मुझे आज्ञाहो तो मैं ठहर के इनलोगोंकीभी कहानी सुनूं जैसा कि उन्होंने मेरा वृत्तांत सुनाहै फिर वह जुबैदा की आज्ञानुसार दालानके एक कोनेमें जा खड़ाहोरहा फिर जुबैदा

अर्थात् कौनहै और कहा से आया है और क्या २ गुण रखता है और यहां आनेका क्या कारणहै यदि थोड़ा भी झूठ बोलेगा तो निस्संदेह उसकी गर्द्दन मारी जावेगी बादशाह औरों से अधिक व्याकुलहुआ कि उस कुपित स्त्रीसे बचना कठिनहै इसीव्याकुलता में शोचा यदि यह मेरीपदवी मालूमकरेगी तो निश्चय मुझको छोड़ देवेगी तदनंतर उसने मंत्रीसे जो उसके समीपथा उससे पूंछा परंतु उस बुद्धिमान् मंत्रीने चाहा कि अपने स्वामीकी प्रतिष्ठा न खोवे कोई और बहानाकरे इतनेमें जुबैदाने उनतीनों योगियोंको जो एक आंखसे काणेथे पूंछा क्या तुमतीनों भाई २ हो उनमें से एकनेकहा नहीं एकवेष अवश्यहैं और इसी विधि अपना जन्म काटते हैं फिर उसने योगियों से पूछा कि क्या अपनी माताके उदरसे काणे उत्पन्न हुयेथे एकने कहा नहीं एक दुःखके कारण हमारे नेत्रजाते रहे कि वह लिखने के योग्य है और उससे हरमनुष्य को उपदेश हो उस आपत्ति के उपरांत हमने अपनी डाढ़ी मूछें और भवें मुड़वा डालीं और योगी बनगये जुबैदा ने दूसरे योगी से भी पूंछा उसने भी वही उत्तर दिया और तीसरेने भी यही कहा किंतु उसने अधिक हाल वर्णन किया यदि आप हमपर दयाकरें तो हम अपने२ वृत्तांतको वर्णनकरें हम तीनों शाहजादे हैं आज सन्ध्या को हममें परस्पर भेंट हुईथी हम परदेशी हैं और विश्वासकर जानिये कि वे बादशाह जिनके हम तीनों पुत्रहैं बड़े नामवर इस संसार में हैं और हमसे प्रति मनुष्य अपने २ दुःखका वृत्तांत जो हमपर पड़ा है विस्तारपूर्व्वक वर्णन करेगा जुबैदा का क्रोध इन बातों को सुन कुछ शांतहुआ और उन हब्शी गुलामोंको आज्ञा दी कि इनके हाथ पैर छोड़दो कि वह अपनी २ जगहपर बैठकर

अपना २ वृत्तात और इस घरमें आनेका कारण वर्णनकरें जब अपना २ वृत्तांत कहचुकें तब उनको छोड़दो जिधरको चाहें उधर चलेजायँ और जो अपना वृत्तांत न कहे उसको वधकरडालो फिर तीनों योगी और खलीफ़ा अपने साथियों और मज़दूरों सहित दालान में क़ालीनपर आ बैठे और प्रति मनुष्यके शिरपर एक २ हब्शी तलवार नंगी लिये खड़ाहुआ था कि ज़ुबैदाका हुक्मपाय उनको वधकरे सबके पहिले मज़दूर ने अपना इस प्रकारसे वृत्तांत कहना शुरू किया॥

मज़दूरकी कहानी जो उसने संक्षेप में वर्णन की॥

मज़दूरने कहा हे सुंदरी तुम्हारे घरमें आनेका कारण यहहुआ कि आज भोरको मैं बाज़ारमें अपना टोकड़ा लियेहुये इस आशा पर खड़ा था कि कोई मुझे मज़दूरी के निमित्त बुलाये कि मैं उसका कार्य्यकर अपने निमित्त जीविका प्राप्तकरूं इतनेमें तुम्हारी बहिनने मुझे बुलाया और अपने साथ लियेहुये कलवारकी दूकानपर गई और वहांसे कुँजड़ेकी दूकान से तरकारी मोलले फिर वहांसे फल बेचनेवाले के निकटगई और वहांसे उत्तम उत्तम वस्तु ख़रीद और टोकड़ेमें भर मेरे शिरपर रख घरमें लाई और तुमने कृपाकर मुझको अबतक यहां रहनेदिया इस तुम्हारे उपकारको विस्मरण न करूंगा मेरा यह वृत्तान्त है जिसको मैंने विनयकिया जब मज़दूर ने अपनी कहानी को शीघ्र छूटजाने के हेतु पूराकिया ज़ुबैदाने उससे कहा अपने घर चलाजा फिर मेरे सम्मुख कभी मत आइयो मज़दूरने विनयकी यदि मुझे आज्ञाहो तो मैं ठहर के इनलोगोंकीभी कहानी सुनूं जैसा कि उन्होंने मेरा वृत्तांत सुनाहै फिर वह ज़ुबैदा की आज्ञानुसार दालानके एक कोनेमें जा खड़ाहोरहा फिर ज़ुबैदा

ने उनतीनों योगियोंसे कहा कि अब तुमभी अपना२ वृत्तांत वर्णन करो सो एकने अपनी कहानीको इसप्रकार कहना आरंभ किया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेसप्तचत्वारिंशःप्रदीपः ४७॥

अथाष्टचत्वारिंशःप्रदीपः॥

पहिले योगीकी कहानी॥

**स्त्रीणांदुर्घटघटनाकथनेग्लानिरद्भुता ॥**
**याभ्रात्रापिमुहूरेमेपित्रासंरक्षिताऽन्यथा ४५ ॥**

स्त्रियों की दुर्घट घटना के कहने में भी महाही ग्लानि उत्पन्न होती है जो निज भाई के साथभी निरन्तर रमण करतीभई पहिले योगी ने घुटने के बल खड़ेहो जुबैदासे कहा कि हे सुन्दरी मैं यह वर्णन करताहूं कि मेरी दाहिनी आंख क्यों गई और क्यों मैंने अपने को योगियों के समान बनाया मैं एक बड़े बादशाह का पुत्रथा और उसका एक बड़ा भाई भी उसी बादशाह के समान ऐश्वर्यवान् उसके नगरके समीप रहता था उसके दो सन्तान थे एक पुत्र मेरे बराबरका था और दूसरी पुत्री थी मैं प्रति वर्षमें एक वेर अपने पिताकी आज्ञानुसार अपने चचाकी भेंटको जाता वहां एक दो मास रह फिर अपने देशमें लौट आता इस आने जानेसे मुझमें और चचाके लड़के में अत्यन्त प्रीति होगई एक दिनकी भेंटमें मैंने उसेअधिक प्रसन्नपाया और उसने पहिलेसे अधिक मुझ से प्रीतिकी और अत्यन्त प्रतिष्ठाकर मुझे भोजन कराया और अद्भुत तमाशे दिखलाये और बहुत देरतक वे तमाशे देखाकिये फिर मैंने और उसने मिलकर भोजन किया उसके पश्चात् उसने मुझसे कहा मैंने कितना अच्छा और कितनी जल्दी तुम्हारे जानेके पीछे

बहुतसेकारीगर लगाकर एक मकान बनवाया सो वहघर बनचुका है अब मेरी इच्छा रात्रिके शयन करनेकी है जो उस घरको देखोगे तो बहुत प्रसन्नहोगे परन्तु प्रथम तुमको क़सम खाना अवश्यहै कि इस भेदको किसी से वर्णन न करना यह केवल दो बातें तुमसे मित्रता और पुरातन प्रीति के कारण कहता हूं मैं उससे इन्कार न करसका तुरन्त मैंने उससे सौगन्द खाई फिर उसने मुझसे कहा कि तुम ठहरो मैं अभी आता हूं फिर थोड़ी देरके पीछे एक स्त्री परम सुन्दरी अपने साथ लेकर आया न तो उसने मुझसे बताया कि वह स्त्री कौनहै और न मैंने उस स्त्रीका वृत्तांत पूंछना उचित समझा तदनन्तर हम दोनोंभाई और वह स्त्री बैठकर इधर उधरकी वार्त्ता करनेलगे और गिलास भर २ मदिरा पीतेरहे यहांतक कि शाहज़ादे ने कहा अब यहां अधिक न ठहरना चाहिये यह कह उठा और मुझसे कहा कि तुम इस सुंदरी को अपने साथले इस मार्ग से उस श्मशान में जाओ और जहां कहीं नवीन क़बर गुम्बद के समान देखना तो जानना कि यही दरवाज़ा उस घरका है जिसको कि मैंने अभी तुमसे वर्णन कियाथा तुम दोनों उस घरके भीतर जाय मेरे आने की राह देखना मैं तुरन्त वहां आऊंगा फिर मुझसे कहा हे भाई परमेश्वर के वास्ते इस भेदको किसी से वर्णन न करना फिर मैंने अपना हाथ उस स्त्री के हाथ में दे उसी चिह्न और पतेपर कि जिसे मेरे चचेरेभाई ने बतायाथा चला और मार्गके भूलने विना चन्द्रमा की चांदनी में बहुत आनन्द से उसी सुंदरी को लेके पहुँचा क्या देखा कि वह शाहज़ादाभी पानीका लोटा भराहुआ और चूनेकी टोकड़ी लिये हुये वहां पहिले पहुँचा और फडहे से मिट्टी भरी हुई निकाली और पत्थरों

की भला प्राण तो बचे आंखगई तो गई उसदिन तो मैंने चलने की सामर्थ्य थोड़ी भी न पाई दिनभर छिपा रहा रात्रि को गुप्त मार्गोंसे अपने बलके अनुसार थोड़ा२ चल चचाके नगरमें पहुंचा और उसके निकट जाकर सम्पूर्ण वृत्तांत अपने दुःख और तुरन्त लौटआनेका वर्णनकिया चचाने हाहाखा कहा बड़ा पश्चात्ताप है कि बुरेसमय ने मेरे पुत्रके खोजानेपरभी मुझे अपने भाई के मरने का समाचार सुनाया कि जिसको मैं अपने प्राणसेभी अधिकरखता था और मुझको इस दुःखमें पाया कितनाही उसने अपने पुत्रको ढूंढा परन्तु उसका कहीं चिह्न न पाया निदान अपने पुत्रकोयाद कर रोया करता था मैं अपने चचाको ऐसी बुरी दशामें न देख सका और उसके रोते [illegible] दुःखित हुआ धीर्य न करसका और उस वाक्यके प्रतिपालन की मुझमें शक्ति न रही निदान मैंने वह सम्पूर्ण वृत्तांत जो मेरे नेत्रोंके संमुख हुआथा अपने चचासे कहा इस हालको सुन उसे धीर्य हुआ और मुझसे कहा भतीजे तूने सत्यकहा तेरे कहने से मुझे उसके मिलने की आशाहै मुझे आगेसे विदित है कि उसने एक क़बर यहां से समीप बनवाई है उसमें अवश्य होगा फिर मैं और चचा दोनों वेष बदल कि कोई अन्य मनुष्य उस शाहज़ादेका भेद न जाने बाग़ के दरवाज़े से कि वनकी ओर था निकल कर चले थोड़ी दूरगये थे कि वह क़बर मिलगई मैंने तुरंत उसे पहिचान लिया जब हम उस गुम्मज़ के अन्दर गये तो उस लोहे के कि-वाड़ को जिसके साथ सीढ़ी लगी हुई थी बड़ी कठिनता से खोला क्योंकि शाहज़ादे ने उसको भीतर की ओर से गच और चूना लगा बन्द कियाथा जब हमने उस किवाड़को खोला तो

को वहां से उठाय एक ओर लगाया जब सब पत्थर उससे नि-
काल चुका तब पृथ्वी में छिद्र किया कि वहां हमें एक दरवाजा
देख पड़ा उसने उसे खोला कि उसमें एक सीढ़ी लकड़ी की थी
उससमय मेरे चचेरे भाई ने उस सुन्दरी से कहा कि यही मार्ग
उस द्वार का है जिसका कि मैंने तुमसे वर्णन किया था वह सुन्दरी
इस बात के सुनतेही वहां आई और सीढ़ी के मार्ग से नीचे उतर
गई और शाहज़ादा भी उसी के पीछे चलागया और उस मकान
में उतरने के पहिले मुझ से कहा कि मैं इस बड़े श्रम से जो मेरे
कारण तुमने उठाये हैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूं अब मैं तुम से
विदा होता हूं तुम्हें परमेश्वर को सौंपा कितनाही मैंने उससे पूंछा
कि तुम कहां जाते हो और यह सब कार्य्य क्या है उसने कुछ न
बताया परन्तु इतना कहा कि दरवाज़े पर मिट्टी डाल बराबर कर
देना और जिस मार्ग से आये थे उसी मार्ग से चले जाओ मैं
लाचार होकर दरवाज़े पर मिट्टी डाल और वहां से विदा होकर
अपने चचा के मन्दिर पर आया और शिर की पीड़ा के कारण
कि मदिरा के नशे से होती थी अपने मकान पर जाय सोय रहा
जब प्रभात को उठा रात्रि की बात को स्मरण कर चिन्ता युक्त
हुआ फिर मैंने उन सब बातों को विचारा कि स्वप्न था या सच
मुच फिर मैंने अपने सेवक से कहा कि तू तुरन्त जा मेरे भाई
शाहजादे का समाचार ला कि उसने जग कर वस्त्र बदले हैं या
शयन करते हैं उसने वहां से लौटकर कहा कि रात्रि में वह अपने
स्थानपर न थे और यह भी कोई नहीं जानता कि वह कहां हैं
और किधर गये इस कारण सब उनके सेवक चाकर और घर के
मनुष्य अति विस्मित और चिन्तामें हैं मैंने विचारकिया अवश्य

की भला प्राण तो बचे आंखगई तो गई उसदिन तो मैंने चलने की सामर्थ्य थोड़ी भी न पाई दिनभर छिपा रहा रात्रि को गुप्त मार्गोंसे अपने बलके अनुसार थोड़ा२ चल चचाके नगरमें पहुंचा और उसके [illegible] और तुरन्त लौटआनेका [illegible] पश्चात्ताप है कि बुरेसमय ने मेरे पुत्रके खोजानेपरभी मुझे अपने भाई के मरने का समाचार सुनाया कि जिसको मैं अपने प्राणसेभी अधिकरखता था और मुझको इस दुःखमें पाया कितनाही उसने अपने पुत्रको ढूंढा परन्तु उसका कहीं चिह्न न पाया निदान अपने पुत्रकोयाद कर रोया करता था मैं अपने चचाको ऐसी बुरी दशामें न देख सका और उसके रोने पीटने पर और भी अधिक दुःखित हुआ धीर्य न करसका और उस वाक्यके प्रतिपालन की मुझमें शक्ति न रही निदान मैंने वह सम्पूर्ण वृत्तांत जो मेरे नेत्रोंके सम्मुख हुआथा अपने चचासे कहा इस हालको सुन उसे धीर्य हुआ और मुझसे कहा भतीजे तूने सत्यकहा तेरे कहने से मुझे उसके मिलने की आशाहै मुझे आगेसे विदित है कि उसने एक कब्र यहां से समीप बनवाई है उसमें अवश्य होगा फिर मैं और चचा दोनों वेष बदल कि कोई अन्य मनुष्य उस शाहज़ादेका भेद न जाने बाग के दरवाजे से कि बनकी ओर था निकल कर चले थोड़ी दूरगये थे कि वह कब्र मिलगई मैंने तुरंत उसे पहिचान लिया जब हम उस गुम्मज़ के अन्दर गये तो उस लोहे के किवाड़ को जिसके साथ सीढ़ी लगी हुई थी बड़ी कठिनता से खोला क्योंकि शाहज़ादे ने उसको भीतर की ओर से गच और चूना लगा बन्द कियाथा जब हमने उस किवाड़को खोला तो

प्रथम चचा उस घरमें उतरे उनके पीछे मैंने जाकर देखा तो उस घरकी ड्येढ़ी धुयेंकी बुरी सुगंध से भरीहै वहां फिर बैठनेकी जगह में गये जहां अतिस्वच्छ दीपक जलतथे वहां एक छोटा तालाव दृष्ट पड़ा कि जिसके चारों ओर खानेपीनेकी सामग्री बहुतरक्खी थी हम किसी मनुष्य को वहां न देख अत्यंत विस्मित हुये फिर अपने सम्मुख कुछ ऊंचेपर बैठनेका स्थान और देखा कि जिसके किवाड़ों में पर्दे पड़ेहुये थे चचा सीढ़ी के द्वारा उस बैठने की जगह पर चढ़गये और पर्दा उठा अपने पुत्र और एक स्त्रीको एक शैय्यापर इकट्ठे देखा परन्तु वह दोनों परमेश्वर की क्रोध रूपी अग्नि से दग्धहो कोयलेके समान काले होगयेथे कि जैसा कोई उनको ज्वलित अग्नि में डाले और राख होने के पहिले निकाले इस वृत्तान्त को देख मैं अत्यन्त भयभीत हुआ और पश्चात्ताप किया परन्तु मेरा चचा कुछ भी विस्मित न हुआ और न इस विषय को देख कुछ पश्चात्ताप किया उसने उस जलेहुये शाहजादे के मुख पर थूंक दिया और क्रोधित हो कहा देख इस लोक में तूने कितना दुःख पाया और परलोक में इससे भी अधिक पावेगा इस थूकने और कहने से भी उसका बोध न हुआ फिर उसने पांवसे जूती उतार उसके मुखपर कई मारी इस बातसे मैं अत्यंत शोकवान् और विस्मित हुआ कि उसने क्यों अपने मृतक पुत्रसे ऐसा अनुचित किया मैंने क्रोधकर उससे कहा एकतो मुझे शाहजादेकी यह दशा देखनेसे शोकहुआ उससे अधिक आपके इस कर्मपर पश्चात्ताप है आप मुझसे यह कहिये कि इस मृतक शाहजादे से ऐसा बड़ा कौनसा अपराधहुआ कि जो आपके ऐसे क्रोधका कारण हुआ चचाने उत्तर दिया कि हे भतीजे

उसी घर में होगा मुझ को उसके न होने और न देखने से अति चिन्ता हुई फिर छिपकर उसी श्मशान में गया और संपूर्ण दिवस उस गृह के ढूंढने में व्यतीत किया परंतु उस घरका कुछ भी चिह्न न पाया इसीप्रकार चार दिनतक उसकी ढूंढ में भटकता रहा परन्तु कहीं ठिकाना और पता उसका न लगा हे सुन्दरियो मुझे लज्जित है कि इस बात को तुम्हें बताऊं कि उन्हीं दिनों में मेरा चचा आखेट को कई दिन से बाहर गया हुआ था और मैं उसके आगमन की देरी में अति दुःखित हुआ निदान अपने पिता के पास जाने की इच्छा की और मंत्री से यह कहा कि मैं अबकी बेर आगे से अधिक रहा मेरा पिता मेरी ओर से चिन्ता युक्त होगा जब चचा जी आखेट से लौट आवें मेरी ओर से प्रणाम कहने के पश्चात् वही बात कह देना परन्तु मैंने मंत्री को शाहजादे के खोजाने से अत्यन्त व्याकुल और चिन्ता युक्त पाया और मैं शाहजादे का वृत्तान्त उसी सौगन्द के कारण न कह सका था फिर मैं वहां से अपने पिता की राजधानी में आया और वहां तो मैंने घरके दरवाजे पर बहुत सी सेना का पहरा देखा उन्होंने मुझे देखतेही कैद करलिया मैंने कारण पूछा तो एक सेनापति ने उत्तर दिया कि हे शाहजादे यह सेना बड़े मंत्री की है उसने तुम्हारे पिता के स्वर्गवास के पश्चात् इस मंत्री को अपनी जगह बादशाह किया है अब उस नवीन बादशाह ने तुम्हारे पकड़ने के निमित्त हमें आज्ञा दी थी कि जहां कहीं पावो शाहजादे को पकड़लावो सो तुम्हारे ढूंढने की सेना चारोंओर गई है आज तुम हमारी भाग्य से आपही यहां आगये इसवास्ते तुमको पकड़ लिया यह कहते ही एक सेनापति मुझे उस अन्यायी के निकट

ले गया है सुन्दरी उससमय के मेरे कष्ट और दुःखको समझना चाहिये वह दुष्ट पहिले से अपने चित्त में वैर रखता था उसके वैर का यह कारणथा कि मुझको बालकपनमें गुलेल खेलने का बड़ा व्यसन था सो एक दिन मैं गुलेल लिये हुये अपने घरकी छत पर खड़ा था कि एक चिड़िया उड़ती हुई मेरे सम्मुख आई मैंने एक गुलेल उसकी ओर चलाई संयोग वश वह उस मंत्री के नेत्र पर कि अपने घर के कोठेपर टहलता था लगी उससे उसकी आंख फूट गई मैं इस हाल को जानकर आप उसके निकट गया और विनती की फिर भी उसके चित्त में मेरी ओर से वैर रहा और चाहता था कि समय पाय उसका बदला मुझ से ले जो कि अब उस ने मुझे दीन और असहाय पाया मेरे उस विषय को कि भूल से हुआ था स्मरण कर मुझे देखते ही दौड़ा और अत्यन्त क्रोध से अपनी अंगुली डाल मेरी दाहिनी आंख निकाल डाली यही मेरी दाहिनी आंख फूटने का कारण हुआ और उस अन्यायी ने एक पिंजड़े में मुझे कैद किया और बधिक को आज्ञा दी कि इसको नगर के बाहर ले जाके वध कर और इसका मांस काट पशु पक्षियों को खिलादे बधिक घोड़े पर चढ़ और बहुत से मनुष्य अपने साथले मुझे नगरके बाहर लेगया जब मेरे वधकरने की इच्छाकी मैंने बहुत रोदन कर बधिक से विनती की तब उसको मुझपर दया आई और मुझ को छोड़दिया और कहा कि इसदे-शमें नि[illegible] है फिर कभी इधर मतिन करना

तुम भी मेरे समान अन्य देश के वासी जान पड़ते हो उसने उत्तर दिया कि तुम सत्य कहते हो मैं इस नगरमें अभी पहुँचा हूं यह वार्त्ता पूरी न हो चुकी थी कि इतने में तीसरा योगी आय पहुँचा और प्रणाम कर कहा मैं भी अन्य देश का वासी हूं फिर हमें तीनों ने एकही रूप और प्रकार के कारण भाइयों के समान परस्पर मिले अलग होने की इच्छा न की हम सब इसी विचार में थे कि रात को कहां रहेंगे क्योंकि पहिले कभी इस नगर में न आये थे और न किसी स्थान और नगर के वासी को जानते थे कि जहां जायं रात्रि व्यतीत करें निदान अपने अच्छे भाग्य से हम तुम्हारे दरवाजे पर आये तुमने आतिथ्य के भांति पालनकर हमको अपने स्थानपर रख अति आनन्द दिया कि हम उसका धन्यवाद नहीं कर सक्ते हे सुन्दरी यह मेरा वृत्तान्त है जो मैं आप की आज्ञानुसार वर्णन कर चुका जुबैदा ने कहा तेरा अपराध क्षमा किया यह सुन उस योगी ने विनती की कि यदि मुझे आज्ञा हो तो यहां ठहर दोनों अपने साथियों और तीन उन मनुष्यों का वृत्तान्त जो वर्त्तमान हैं सुनूं फिर मैं चला जाऊंगा जुबैदा ने उस को आज्ञा दी वह एक ओर जा बैठा यह पहिले योगी की कथा सब को अद्भुत अपूर्व जान पड़ी फिर दूसरे योगी ने जुबैदा से अपने वृत्तान्त को इस प्रकार कहना आरंभ किया॥ इतिदृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयभागेस्त्रीचरित्रवर्णननामाष्टचत्वारिंशःप्रदीपः ४८॥

ले गया हे सुन्दरी उससमय के मेरे कष्ट और दुःखको स
चाहिये वह दुष्ट पहिले से अपने चित्त में वैर रखता था उसके वैर
का यह कारणथा कि मुझको बालकपनमें गुलेल खेलने का बड़ा
व्यसन था सो एक दिन मैं गुलेल लिये हुये अपने घरकी छत
पर खड़ा था कि एक चिड़िया उड़ती हुई मेरे सम्मुख आई मैंने
एक गुलेल उसकी ओर चलाई संयोग वश वह उस मंत्री के नेत्र
पर कि अपने घर के कोठेपर टहलता था लगी उससे उसकी आंख
फूट गई मैं इस हाल को जानकर आप उसके निकट गया और
विनती की फिर भी उसके चित्त में मेरी ओर से वैर रहा और चा-
हता था कि समय पाय उसका बदला मुझ से ले जो कि अब उ
ने मुझे दीन और असहाय पाया मेरे उस विषय को कि भूल
हुआ था स्मरण कर मुझे देखते ही दौड़ा और अत्यन्त क्रो
अपनी अंगुली डाल मेरी दाहिनी आंख निकाल डाली

तू इस वृत्तान्त को नहीं जानता ये अधिक धिकार और दण्डके योग्य है क्योंकि यह शाहजादा बाल्यावस्था से अपनी बहिनको प्यार किया करता था मैंने बाल्यावस्था के कारण कुछ अनुचित कर्मका विचार न किया जब वह दोनों बड़े हुये और बुरा भला समझने लगे और दोनों में प्रीति भी अधिक बढ़ी तब मैंने इन की बहुत रक्षाकी और घरमें आज्ञादी कि ये दोनों बहिन भाई सम्मुख न होवें परन्तु वह अभागी लड़की भी उससे बड़ी प्रीति रखतीथी यदि मेरे मना करनेके कारण परस्पर भेंटन करसके और सम्मुख न होते थे परन्तु हृदय में एक दूसरेपर मोहितरहते यहांतक कि मेरे पुत्रने उसको अपनी ओर पा यह घर मुझ से छिपा इस आशासे बनवाया कि समय पाय उसके समेत इस घरमें रहे नि- दान जब मैं आखेटको गया तब शाहजादा उसको किसी प्रकार राजभवन से निकालि इस घरमें लाया और आप भी उसके साथ रह इस महलको बन्दरक्खा और पहिले से उसने नानाप्रकार के खाने पीने आदिकी वस्तु यहां ला रक्खीं थीं एक अवधितक उस के साथ आनंदपूर्वक यहां रहा परंतु परमेश्वर ने शीघ्रही उन दोनों को ऐसे बड़े पापका दण्ड दिया जब बादशाह इस वृत्तांत को कहचुका तब हाहाकर बहुतरोया और मैं भी उसके साथरोया फिर उसने रो धो कर मेरी ओर देखा और मुझे हृदय से लगाय कहा कि परमेश्वर की इच्छा योंहीं थी जो दुष्ट मरगया तो कुछ परवाहनहीं परमेश्वर तुझे जीतारक्खे अब तूही उसके बदले मेरा पुत्र और युवराज है उसके पश्चात् मैं और वह बादशाह शाह- जादे और उसकी बहिन के वास्ते बहुतरोये और वह उसी सीढ़ी से ऊपरको चढ़आये और वह किवाड़ बंदकर ऊपर उसके मिट्टी

॥ अथैकोनपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ॥

॥ दूसरे योगी की कहानी ॥

॥ भाग्यंफलतिसर्वत्र नविद्यानचपौरुषम् ॥
शाहजादोऽपिशास्त्रज्ञः काष्ठभारंवभारह ४९

सर्वठौर जनका भाग्यही फलता है और विद्या वा पुरुषार्थ से कुछ काम नहीं होता है जैसे बादशाहज़ादा सर्वशास्त्रादि विद्याओं का ज्ञाता भी था पर तिसे भाग्य से लकड़ियों का भारही ढोना बेचना पड़ा (दृष्टांत) दूसरे योगी ने पहिले योगी के समान जुबैदा के सम्मुख अपने वृत्तान्त को इस प्रकार पर कहना आरम्भ किया कि हे सुन्दरी आपकी आज्ञानुसार अपनी आंख का फूटना और उस कहानी में अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त आपके सम्मुख वर्णन करता हूं सुनिये बाल्यावस्था से मेरे पिता ने मुझ को विद्या में आरूढ़ पाय बहुत दूर २ के देशों से विद्यावान् और शिल्प कर्म के जाननेवाले मेरे पढ़ाने के वास्ते इकट्ठा किये कुछ समय में मैंने लिखना पढ़ना सीख कलामुल्ला याद कर लिया और सिवाय इसके स्मृति शास्त्रादिक अपने गुरुओं से पढ़ लिये और प्रत्येक शिल्प विद्या और इतिहास पहेली और काव्य और सरसवार्त्तिक अच्छे प्रकार सीख लिये और काव्यादिक विद्या और गणित विद्या आदि पढ़ अद्वितीय होगया और सिपाहगरी कि जो शाहज़ादे को अवश्य चाहिये प्राप्त की और सात प्रकार का लिखना सीखा कि मेरे समान उस समय में दूसरा कोई न लिखता था इस विद्या और गुण के होने पर भी ईश्वर ने मेरे प्रारब्ध की चिट्ठी ऐसी लिखी कि मेरी विद्या कुछ काम न आई और इस दशा को

तू इस वृत्तान्त को नहीं जानता ये अधिक धिकार और दण्डके योग्यहै क्योंकि यह शाहजादा बाल्यावस्था से अपनी बहिनको प्यार किया करता था मैंने बाल्यावस्था के कारण कुछ अनुचित कर्मका विचार न किया जब वह दोनों बड़े हुये और बुरा भला समझने लगे और दोनों में प्रीति भी अधिक बढ़ी तब मैंने इन की बहुत रक्षाकी और घरमें आज्ञादी कि ये दोनों बहिन भाई सम्मुख न होवें परन्तु वह अभागी लड़की भी उससे बड़ी प्रीति रखतीथी यदि मेरे मना करनेके कारण परस्पर भेंट न करसके और सम्मुख न होते थे परन्तु हृदय में एक दूसरेपर मोहितरहते यहांतक कि मेरे पुत्रने उसको अपनी ओर पा यह घर मुझ से छिपा इस आशासे बनवाया कि समय पाय उसके समेत इस घरमें रहे निदान जब मैं आखेटको गया तब शाहजादा उसको किसी प्रकार राजभवन से निकाल इस घरमें लाया और आप भी उसके साथ रह इस महलको बन्दरक्खा और पहिले से उसने नानाप्रकार के खाने पीने आदिकी वस्तु यहां ला रक्खीथीं एक अवधितक उस के साथ आनंदपूर्वक यहांरहा परंतु परमेश्वर ने शीघ्रही उन दोनोंको ऐसे बड़े पापका दण्ड दिया जब बादशाह इस वृत्तांत को कहचुका तब हाहाकर बहुतरोया और मैं भी उसके साथरोया फिर उसने रो धो कर मेरी ओर देखा और मुझे हृदय से लगाय कहा कि परमेश्वर की इच्छा योंहीं थी जो दुष्ट मरगया तो कुछ परवाहनहीं परमेश्वर तुझे जीतारक्खे अब तूही उसके बदले मेरा पुत्र और युवराज है उसके पश्चात् मैं और वह बादशाह शाहजादे और उसकी बहिन के वास्ते बहुतरोये और वह उसी सीढ़ी से ऊपरको चढ़आये और वह किवाड़ बंदकर ऊपर उसके मिट्टी

आदि डाल छिपा दिया फिर हम दोनों वहांसे राजमहलकी ओर चले वहां के पहुंचने के पहिले युद्ध के ढोल आदि सुनाई दिये और धूर आकाशकी ओर चढ़ीहुई देखी कि वही राज्य मंत्री जो मेरे पिताका राज्य छीन सिंहासन पर बैठाथा अब मेरे चचाके राज्यलेनेके लिये बड़ी सेनाको साथले आयाहै मेराचचा कि थोड़ी सेना रखताथा उसका सामना न करसका निदान उसने शहरको ले लिया और सेना उसकी सुगमता से राजभवनपर चलीआई मेरे चचाने कुछ देरतक उनका सामना किया फिर अपने वैरीके हाथसे मारागया उसके पश्चात् एक दो घड़ी मैंने भी उनका सामना किया और वैरीसे लड़तारहा जब चारों ओरसे घिरगया और बदला लेनेकी सामर्थ्य न पाकर वहांसे भागा तब उसमंत्री के एक सरदार ने मुझपर दयाकर उस नगर से जीता जागता निकालदिया मैं अपने प्राणकी रक्षाकेलिये कि मुझे कोई न पहिचाने भौंह दाढ़ी मूछ मुड़वा योगियों के स्वरूप बनगया और बड़ी कठिनता से गुप्त मार्गोंसे होकर अपने चचाके देशसे निकला और बहुतसे नगरों में भ[illegible] हुआ फिरा [illegible] निप्रतापवान धीमान

पहुँचाया कि जो वर्त्तमान है हे सुन्दरी मैं अपने पिता के सम्पूर्ण राज्य में बहुत विद्या होने के कारण विख्यात था इसमें हिंदुस्तान का बादशाह मेरे देखने की इच्छा करने लगा और एक दूतको बहु मौल्य उत्तम २ वस्तु सहित भेज मुझे बुलाया मेरे पिता इस बात से अत्यन्त प्रसन्न हुये और समझे कि शाहज़ादे को देशों की सैर करना और देखना और बड़े २ बादशाहों की सभा में जाना भी अवश्य है और इसका जाना हिंदुस्तान और हमारे में अधिक प्रीति और मित्रता का कारण होगा सो मैं अपने पिता की आज्ञानुसार कुछ सेवक और वस्तु साथ ले दूत के साथ चला क्योंकि इतने दूर सफ़र में अधिक वस्तु और आदमियों का ले जाना कठिनता का कारण था चलते चलते ५० सवार शस्त्र सहित राह लूटने वाले दिखलाई दिये और हम सब को घेर लिया मेरे साथ दश घोड़े कि जिनपर उत्तम २ वस्तु और सामग्री लदी थी जो अपने पिता के नाम से हिन्दुस्तान के बादशाह के निमित्त लिये जाता था यदि मेरे सेवकों ने प्रथम उनका सामना किया परन्तु पराजित हुये तब हम ने उन ठगों से कहा कि हम बादशाह हिंदके दूत हैं हमें विश्वास था कि ऐसे बड़े भारी बादशाह का नाम सुन तुम हम से कुछ न कहोगे और इसी कारण से हमारे प्राण और धन की हानि न होगी यह सुन मार्ग लूटने वालों ने बड़ी ढिठाई से उत्तर दिया कि हम हिन्द के बादशाह को क्या समझते हैं न तो हम उसके नौकर और न उसके देश में रहते हैं इतना कह उन्होंने हमको चारोंओर से घेरलिया यदि मैंने अपनी सामर्थ्य भर अपनी रक्षा की निदान घायल हुआ और देखा कि वह दूत और सब मेरे संगी मारेगये तब

म करूं इस नगर में कौनसी भाषा है और मेरा देश इस स्थान से कितनी दूरहै यह विचार एक सूचीकार के निकट गया उसने मुझे देख अपने समीप बैठाया और पूछा कि तुम कौनहो और कहां से आये मैंने उससे अपना सम्पूर्ण वृत्तान्त बताया सूचीकारने मेरे वृत्तान्त को चित्तदे सुना और जब मैं सब अपना वृत्तान्त कहचुका तब उसने धीरज देनेकी विपरीत और मुझे अधिक डराकर कहा कि यह अपनी कहानी यहां के किसी रहने वाले से मत कहना और उससे भलाईका विश्वास न रखना क्योंकि यहां का बादशाह तेरे पिताका बैरीहै जो वह तेरे आनेका वृत्तान्त सुनेगा तो तेरे साथ अवश्य अनुचित करेगा सूचीकार से मैंने यह वृत्तान्त सुन जाना कि इसने मेरेसाथ बड़ा उपकार कियाहै धन्यवाद किया और कहा कि तुमने मुझको इस बातसे चैतन्य किया मैं किसी से अपना वृत्तान्त वर्णन न करूंगा हे सुन्दरी फिर मैंने वहां के वासियोंसे अपना वृत्तान्त और अपना और अपने पिताका नाम न कहा फिर वह सूचीकार मुझे भूखा जान मेरे लिये खानेको लाया और अपने घरमें लेजाय रहनेके वास्ते स्थान दिया मैं उसमें रहनेलगा जब सूचीकार ने देखा कि इसकी थकावट दूरहोगई पूछा कि तुम्हें कोई विद्या ऐसी आतीहै कि जिससे तुम अपनी जीविका प्राप्तकरो मैंने कहा मैं अपनी विद्या और व्याकरण और लेखकी और काव्यआदिमें अद्वितीयहूं सूचीकार ने कहा इन सबसे कि जिनका तुमने नाम लिया इस नगर में एक ग्रासभी न प्राप्त करसकोगे इस नगर में विद्याकी कुछ पूंछ नहीं जो मेरा कहना मानो तो तुम बलवान् और सामर्थ्यवान् विदित होतेहो एक जांघिया बनवाकर पहिन लो और बनसे ज-

लाने के वास्ते काष्ठलाके इस शहर के वाजार में वेचाकरो तुम्हें इतनाहोगा कि दूसरे मनुष्यकी सहायता विना अपनी जीविका प्राप्तहोगा थोड़े दिन इसी श्रमसे अपना कालक्षेप करो परमेश्वर तुमपरदयाकरेगा व यह दुःखजो तुमपरछायरहाहै निवृत्तहोगा तुम को मैं एक कुल्हाड़ी और एक रस्सी मँगवादूंगा हे सुन्दरी मैंने जीविका के हेतु इस नीच कर्म्मको अंगीकार किया सूचीकार ने दूसरेदिन मेरे वास्ते कुल्हाड़ी और रस्सी और पुटन्ना मोल लेदिया और मुझे उन मनुष्योंको सौंपा जिनकी जीविका लकड़ी वेचने परथी और उनसे कहा इस मनुष्यको अपनेसाथ लकड़ी काटने को वनमें लेजायाकरो मैं उनलकड़िहारोंकेसाथ वनमेंजाता और वड़ा गट्ठा काष्ठका काटलाता और उसे वाज़ारमें लेजाकर एक सोनेके टुकड़ेको कि चलन उस शहरका यहीथा वेंचता यदि काष्ठका वन उसनगरसे वहुत दूर नथा परन्तु लकड़ी वहां वहुत महँगी विकती थी क्योंकि वहांके वासी आलस्य से इस कार्य्यको न करतेथे कि जंगल में जावें और लकड़ियों को काटें और अपने शिरपरलावें थोड़े दिनों में मैंने वहुतसा सुवर्ण इकट्ठा किया और उसमें से थोड़ासा उस सूचीकार के उपकारके वदलेमें जो मेरेसाथ किया था उसको दिया इसीप्रकार मुझे एक पूरावर्ष व्यतीत हुआ एक दिन उस वनसे मैं और आगे वढ़गया और वह स्थान मुझे वहुत अच्छा मालूम हुआ मैं काष्ठ काटने में लगा जब एक वृक्ष ऊपर से काटचुका और जड़ उसकी काटने लगा तो दैवयोग से उस जड़के नीचे मुझे एक कड़ा जो लोहेके दरवाजे में लगाथा देख पड़ा मैं तुरन्त वहांकी मट्टी हटा कुल्हाड़ी और रस्सी सहितनीचे उतर गया तो अपने को एक वड़े भारी घरमें पाया और उसमें

पृथ्वीके सदृश प्रकाशथा फिर मैं आगे गया वहां एक बड़ालम्बा दालान पाया जिसके पाये मूसापत्थरके और खंभे ऊपरसे नीचे तक सुवर्ण के बने हुयेथे उसमें एक सुन्दरी परम रूपवंती मेरी दृष्टि पड़ी कि जिसके देखतेही मैंने दूसरी ओर न देखा मैं उसके सम्मुख गया और प्रणाम किया उस सुन्दरी ने मुझसे पूंछा तू कौन है मनुष्य है या पिशाच है मैंने अपना शिर उठाके कहा हे सुन्दरी मैं मनुष्यहूं पिशाच नहीं उस स्त्रीने ठंढी श्वासलेकहा तू यहां क्योंकर आया मुझे पच्चीस वर्षसे अधिक व्यतीत हुये कि यहां रहती हूं परन्तु सिवाय तेरे अन्य मनुष्य को नहीं देखा उस स्त्री के रूप अनूप और नम्रता और उसकी छवि और कोमल वचनपर मैं ऐसा मोहितहुआ कि मुझे बोलने की सामर्थ्य न रही निदान उसकी प्रिय वाणी से थोड़ी देरके पश्चात् मुझे बात कहने की सामर्थ्य हुई तब मैंने विनती की कि वृत्तान्त मालूम होजाने के पहिले केवल तुम्हारे देखनेहीसे मैं प्रसन्न और हर्षयुक्त हुआ और अपने सर्व दुःख और क्लेशको भूलगया और चाहताहूं कि तुम्हें इस बुरी दशासे छुड़ाऊं फिर मैंने अपनासम्पूर्ण वृत्तान्त वर्णन किया और कहा मैं तुमको इस दशामें देख नहीं सक्ता उस स्त्रीने श्वासभरके कहा हे शाहजादे तू सत्य कहताहै इस धन और वस्तुके होनेपर भी मुझे इस जादूके स्थानमें भी रहना अच्छा नहीं लगता तुमने सुना होगा कि अवृतैसरसनाम बड़ा बादशाह आवनूसी द्वीपोंका है जहां आवनूसकी लकड़ी पैदाहोती है मैं उसी बादशाह की पुत्रीहूं मेरे पिताने मुझको अपने भतीजे के साथ कि वहभी शाहजादा था विवाह करदिया जब कि अपने पतिके घर जाने लगी तब एक दुष्ट पिशाच मुझको लेकर वहां

से उड़ा मैं उसी समय में वेसुध होगई तीन पहरके पश्चात् जब मैंने सुधि सँभाली तो अपने को इसघरमें पाया तभीसे मैं इसघर में रहतीहूं और इस पिशाचके निकट मेरा उठना बैठनाहै इसधन और वस्तुसे जो यहां वर्तमानहैं मुझे कुछ हर्ष नहीं केवल सा-मग्री और सजधज से धीर्य्य नहीं होता दशवेंदिन वह पिशाच यहां आता और केवल एकरात मेरे पास रहताहै उसका विवाह किसी और स्त्री के साथ हुआहै इसलिये अपनी स्त्रीके भयसे स-देव नहीं रहसक्ता और यदि दशदिन के मध्य में कभी मुझे उस पिशाच का बुलाना स्वीकार हो तो केवल जादू की वस्तुके छूनेसे कि वह मेरे शयन स्थानके समीप बनाहुआहै उसके स्पर्शसे वह आजाताहै उसको यहांसे गये चारदिन व्यतीत हुयेहैं छःदिनके पश्चात् वह फिर यहां आवेगा जो तुम्हें मेरा सङ्ग और यहांकी रह-ना अंगीकार हो तो पाँच दिवस तक यहां रहो मैं तुम्हारी भली भांति प्रतिष्ठा करूंगी यह वचन सुनमैं अत्यन्त प्रसन्नहुआ और इच्छारखताथा किसीप्रकार उस घरमें ऐसी स्वरूपवान् स्त्रीके नि-कट रहूं मुझे अंगीकार करतेही वह मुझे एक सुन्दर स्नानागार में लेगई जबमैं स्नानकर बाहर आया तो उत्तम२ सोनहरी पहिर-ने के वस्त्रदिये उनको मैंने पहिना कि जिनके पहिरने से और भी उसकी दृष्टिमें अच्छा विदित होनेलगा तदनन्तर हमदोनों एकबड़े सुन्दर दालानमें मसनद पर जोकि सुनहली कीमखावसे सजाहुआ था बैठे उसने मेरे आगे नानाप्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन लायधरे और मेरे साथ बैठ भोजन किया जब रात्रिहुई मुझे अपने शयन स्थान पर लेजाय सुलाया दूसरे दिन भोर उत्तम २ पाक बनाये और भोजनके विशेष मेरी प्रसन्नताके अर्थ पुरानी मदिराकी बो-

तललाई और कई गिलास मुझ को पिलाये जिसके पीते ही मैं मस्तहुआ उसीदशा में मैंने उससे कहा हे प्यारी तुम बहुत वर्षों से इस पृथ्वी में बन्द हो मानों जीतेही क़बर में हो अब तुम मेरे साथचलो और संसारकी हवा खावो कि जिससे तुमको प्रसन्नताहो और इस थोड़े उजियालेको जो केवल जादूसेही है परित्याग करो यह सुन उस सुन्दरी ने कहा ऐसी अनुचित वार्त्ता मतकरो मुझे सूर्य्य का उजियाला जो तुम कहते हो न चाहियें मुझको यहीं रहने दो नौदिन तुम यहीं रहा करो दशवां दिन उस पिशाचको छोड़ दो मैंने कहा तुम पिशाच से बहुत डरती हो मैं अपनेप्राण के वास्ते कुछ भी नहीं डरता उसकी जादू की वस्तुको तोड़ और जादू जोकि उसपर कुछ लिखी है विनाश करदूंगा उसको आने दो देखूंवह कैसा बलवान् और विकराल स्वरूप है उसके लिये एक हाथ मेरा बहुत है मैंने प्रणकियाहै कि सब पिशाचों को संसार से नष्ट करदूं और सब के प्रथम इस पिशाचको मारूं वह स्त्री इस अनुचित कर्म्म के फल को अच्छीतरह जानतीथी मुझ को सौगन्द देकर कहने लगी कि चैतन्य रह इसमें हाथ न लगाना नहीं तो हम तुम दोनों मरेजायँगे मैं पिशाचों के हाल और सामर्थ्य को अच्छीतरह जानतीहूं मैंने मादिरा के नशे में उसका उपदेश कुछ न सुना और उस जादूकी वस्तुको तोड़डाला इतने में बड़े जोरसे वह महल हिलने लगा और उसके साथ एक भयानक शब्द बादल के गर्ज्जने के समान हुआ और चारों ओर अँधेरा होगया बिजली के समान प्रकाश होने लगा इस अद्भुत और भयानक दशा को देख नशा मेरा जाता रहा और सुधि सँभाल शोचा तूने बड़ा अनर्थ किया फिर मैंने उस स्त्री

से पूंछा अब क्या कियाचाहिये उसने अपने
मेरे वास्ते बहुतकर कुढ़ी और पश्चात्तापकर उत्तरदिया
आफ़त को आपही अपने शिर पर लाये अब यहांसे भाग
अपने को बचाओ यह सुन मैं वहांसे ऐसा घबड़ाकर भागा कि
अपनी कुल्हाड़ी और रस्सी को वहीं छोड़दिया और शीघ्रही उ-
ठते बैठते उसी सीढ़ीतक कि जिससे उस मकान में उतरा था
पहुँचा इतने में वह भी क्रोधित हो वहां आनपहुँचा और उस
सुन्दरी से अति क्रोधित हो पूंछा तूने मुझ को क्यों बुलाया
उसने भय युक्त और कम्पायमान होकर कहा मैंने इस बोतल
से थोड़ीसी मदिरा पी थी जिसको तू देखता है सो नशे में मेरा
पांव इसपर अनजाने से लगा सो यह टूटगया इससे तुझको
ख़बर हुई मैंने तुझको नहीं बुलाया यह सुनतेही पिशाच ने आग
बबूला हो उस सुन्दरी से कहा तू कुकर्मिणी और दुष्ट है इस कु-
ल्हाड़ी और रस्सी को यहां कौन लाया स्त्री ने कहा मैंने अबतक
इसे नहीं देखा जल्दीसे तुम आयेहो तुम्हारे हाथ से लगी हुई चली
आई होगी तुमने मार्ग में इसे न देखा होगा पिशाचने उस स्त्री
को बुराभला कह बहुत मारा जिससे वह तड़पने और रोने लगी
उसके रोनेके शब्द न सुने जाते थे और वह मार धाड़ कि जो
उसपर पड़ती थी और चिल्लाना उसका सुनकर यह मेरी दशा
हुई कि जिसका वर्णन नहीं होसक्ता निदान मैंने वह वस्त्र जो
कल के दिन स्नानकर पहिने थे और ... उस
सीढ़ी से ऊपर चढ़आया ... गा
बड़ा पश्चात्ताप है कि मैं ... से
दुःख उस स्त्री ... यदि

परन्तु कभी ऐसा दुःख इस पिशाच के हाथसे न हुआ होगा फिर मैंने उस लोहे के किवाड़ को मिट्टी से बन्दकर छिपा दिया और बोझा लकड़ियों का कि आगे से इकट्ठा कररक्खा था शिरपर रख उस नगर में आया और विचारताथा कि देखिये इस कर्म से मुझे क्या दुःख पहुंचता है अत्यन्त क्लेशितथा जब मै अपने स्थानपर आया वह सूचीकार मुझे देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कहने लगा कि तुम्हारे कलके न आने से मुझे अत्यन्त चिन्ता थी कि ऐसा न हो तुम्हारा पुराना वृत्तान्त सुन यहां के अधिपतिने क़ैद किया हो परमेश्वर का धन्यवाद है, कि तुम जीते जागते फिर आये मैंने उसकी प्रीतिपर धन्यवाद किया परंतु वह कर्म कि जो मुझसे हुआथा उससे न कहा और अपने मकान में जाकर अपनी अज्ञानतापर धिक्कार देतारहा कि जो मैं उस जादूकी वस्तु को न तोड़ता तो वह राजपुत्री इस दुःखमें न पड़ती और मै नौ दिनतक अच्छे प्रकार रहता इसी चिंतामें था कि उस सूचीकारने मेरे निकट आय कहा कि एक वृद्ध जिसे मै नहीं जानता तुम्हारी कुल्हाड़ी और रस्सी हाथमें लेकर आयाहै और कहताहै कि मैंने इनदोनों वस्तुओंको मार्ग में पायाहै कोई तुम्हारे साथियोंसे कि जिनके साथ तुम लकड़ी काटनेजाया करतेहो उनकी जान पड़ती है चलके अपनी वस्तुको पहिचानकर लेआवो वह विना तुम्हारे न देगा इसबातके सुनतेही मेरा मुख बदल गया और शिरसे पैरतक कांपनेलगा सूचीकार मुझसे भयका कारण पूंछने लगा अभी मैंने उत्तर उसे न दियाथा कि एकही बेर मेरे कोठेकी धरती फटगई और वह पिशाच मेरे आने तककी राह न देखकर कुल्हाड़ी और रस्सी लिये प्रकट हुआ और सच मुच वह वृद्ध पिशाच था फिर उसने

कहा मै पिशाच हूं नवासा इबलीसका जो पिशाचों का बादशाह है और उस कुल्हाड़ी और रस्सी को दिखलाकर कहा यह तेरी है यह नहीं उसने मुझे उत्तर देनेका अवकाश न दिया यदि मुझको उस विकराल स्वरूप देखने से उत्तर देनेकी सामर्थ्य नहींथी और बेसुध होगयाथा कमरसे मुझे पकड़ बाहर खींचलाया औरएक हीबेर आकाश की ओर एक पलमें इतने ऊंचे लैउड़ा कि जिसके चढ़ने में कई मास व्यतीत होते फिर उसने धरती पर उतर एक ठोकर मारी जिससे धरती फटगई वह मुझको लियेहुये समागया एक घड़ी के पीछे मैंने अपने को उस जादूके घरमें उसी राजपुत्रीके सम्मुख पाया परन्तु बड़ा पश्चात्ताप है कि उसको नग्न लोहू लुहान अधमरी तड़फती हुई पृथ्वीपर लोटती देखा फिर उस पिशाच ने मुझको उस राजपुत्री का हाल दिखला कर कहा कि निर्लज्ज यही तुझपर मोहित है उसने ढीलीदृष्टि देख कहा मैं इसको नहीं जानती इस समयके सिवाय और कभी मैंने इसको नही देखा पिशाच ने कहा क्या तू सत्य कहती है कि इसकोकभी नहीं देखा यही मनुष्य तेरे वधकरने का कारण हुआ राजपुत्री ने कहा तू चाहताहै कि मैं असत्य कहूं कि मैंने देखाहै कि तू उसे मारडाले फिर पिशाच ने खड्ग राजपुत्री को दे कहा जो तूने इस को आगे नहीं देखा है तो इस खड्गसे इसका शिर काट राजपुत्रीने कहा कि मुझमें इतनी सामर्थ्य कहां है कि खड्ग को उठासकूं और इसके सिवाय मैं एक निर्दोष मनुष्य को क्यों मारूं पिशाच ने कहा तेरे इन्कार से पाप स्पष्ट जान पड़ता है फिर पिशाच ने मुझसे कहा तू इसको जानता है और इसको आगे देखाहै मैंने विचारा जब इस राजपुत्रीने कि वह स्त्री होकर

इतना और पास मेरा किया यदि मैं उसवात को प्रकटकरों तो अत्यन्त अश्लीलता है मैंने भी इन्कार किया कि केवल मैंने इसी समय देखा है उसने कहा जो तू सत्यकहता है तो खड्गसे उसका शिर काटडाल मैं तुझ को छोड़दूंगा और जानूंगा तू सचाहै मैंने खड्ग को पिशाच के हाथ से लेकर अपने मन में विचारा कि बड़ा शोचहै कि इस निर्दोष सुन्दरी को जो मेरेही अपराध से अपराधी हुई और इस दुःख में पड़ीहै उसे मैं मारूं और अपने प्राण बचाऊं यह मुझसे कभी न होगा और उस स्त्री ने मेरी ओर देख और मेरी चेष्टा से मेरे मनकी बात मालूम कर सैनसे कहा कि मैंतो मरने के निकट हूं अपने प्राण बचाने के वास्ते मुझको मारडाल मै इसमें प्रसन्नहूं तदनन्तर मै पीछेको हट और खड्गको हाथसे फेंक पिशाचसे कहा मैं नपुंसक नहीं कि उसको जिसे नहीं जानता मारूं इसके सिवाय ऐसी सुन्दरी कि घड़ी पल की होरही है अब जो तेरा मन चाहे वह कहकर मै तेरे आधीनहूं परन्तु यह काम मुझसे कदाचित् न होगा पिशाचने कहा तुम दोनों ने मेरे क्रोधको बढ़ाया और तू जानता है कि मुझ में कितनी सामर्थ्य है इतना कह उस दुष्टने दोनों हाथ उस स्त्री के काटडाले सो उसने उसीसमय देह त्यागदी क्योंकि पहिले घावों से सम्पूर्ण रुधिर उसके शरीर से निकलगया था इस दशाको देख मुझे मूर्च्छा आगई जब चैतन्यहुआ तो महाव्याकुल हुआ और पिशाच से कहा अब तुरन्त मुझे भी वधकर यह सुन उसने कहा हमारी यह रीति है कि जब किसी स्त्री पर व्यभिचार का सन्देह होताहै तो उसे प्राण से मारडालते है तुझको कि केवल सन्देह है और तू परदेशी है इसलिये मार नहीं सक्ता तुझे यही दण्डहै कि

इससे दूसरे होजावें यदि यह ईर्षी के साथ सदैव उपकार करता परन्तु वह अपने वैरको न छोड़ता यहांतक कि उस सत्पुरुषने सं-पूर्ण निज वस्तु और घरवेंच दूसरे नगरमें जो वहांसे डेढ़कोस दूर था एक उत्तम घर जिसमें एकउत्तम बाग और एक अन्धाकुवांथा मोललिया और रहने लगा फिर वह सांगोपांग योगियों के वस्त्र पहिन सन्त बनगया कि अवस्था हरि भजनसे आनन्दमें व्यतीत हो और कई मकान अपने घरमें बनवाये जिनमें सन्तों को रख सदैव भण्डारा किया करता यह समाचार नगर में विख्यात हो गया और बहुधा मनुष्य उसकी भेंटको आते और उसके सत्संग से प्रसन्न होते इसीप्रकार उसका नाम सुन दूर २ से मनुष्य आने लगे और उसे परमहंस समझ अपने अभिप्राय को कहना और उससे वरकी आशा रखनी आरम्भ की यहां तक कि उसकीबड़ाई और सिद्धता का समाचार उस नगर में जिसे छोड़कर यहांआया था पहुँचा इससे उसके ख्यातका समाचार सुन ईर्षी को बड़ीदाह उत्पन्न हुई और उसके वध करने को सम्पूर्ण निज काम छोड़ वहां गया और मन्दिरमें जाय उससे मिला तो वह सत्पुरुष अपने प्रथमके पड़ोसी को पहिचान प्रतिष्ठापूर्व्वक मिला ईर्षीने मकर और धोखा अपने चित्तमें विचार उससे कहा मुझे एक कठिन कार्य्य आय पहुँचा है जिस कारण इस नगर में आयाहूं जोतुम कहो तो उसको तुमसे एकान्त स्थलमें प्रकट करूं कि और कोई उसे न सुने और उस समय अपने सन्तोंसे कह देना कि कोई अपने घरसे बाहर न निकलें उस सिद्धने उसके अभिप्राय के अनुसार किया जब उस ईर्षीने उसउत्तम मनुष्यको एकांतमेंपाया तो अप ने आनेका कारण झूठ मूठ चित्तसे बनाय उससे कहना आरम्भ

कुत्ता वा गधा वा सुअर अथवा कोई पशु पक्षी बनाकर छोड़ दूं अब जिसकी योनि चाहे उसी शरीर में तुझे बनादूं मैंने इन बातों से तनक उसको ठण्ढा पाकर कहा हे बलवान् पिशाच जैसे तूने मुझे प्राण दान दिये हैं आशावान् हूं कि मुझको इसी योनि में रहने दे यदि तू मेरा अपराध क्षमा करेगा तो मैं तेरा कृतज्ञहूंगा जैसा कि एक सत्पुरुषने अपने पड़ोसीका कि उसने उसके साथ बुराई की थी अपराध क्षमा करके उसके साथ बड़ा उपकार किया था पिशाच ने पूंछा उन दोनों पड़ोसियों में क्या हुआ था मैंने उससे कहा कि ध्यानधरके सुनिये॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यांतृतीयभागेमिश्रनिबन्धेनामैकोनपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ४६॥

अथ पञ्चाशत्तमःप्रदीपः॥

ईर्षी और सत्पुरुष की कहानी॥

## महान्महत्त्वंजह्यान्ननीचश्चैवनीचताम्॥
## यथाहीर्षीद्रुहन्सन्तं मिषात्कूपेऽप्यपातयत् ४९

महान् उत्तम जन निज बड़ाई को नहीं तजता तैसे नीचजन निज नीचपन को भी नहीं त्यागता है जैसे ईर्षावाले ने सज्जन को द्रोह करते २ अर्थात् तिसे दूर जाने पर भी वहां उसके पास जाय उसे छलसे कूपमें गिराया॥ इसपर दृष्टान्त॥ एक बड़े नगर में दो मनुष्य रहते थे और दरवाजा एकके घरसे दूसरेसे दरवाजा समीप था उनमें से एक मनुष्य अपने पड़ोसी से ईर्षा रखता था दूसरे सत्पुरुष को उसके वैर करने से इच्छा हुई कि इस घर को छोड़ अनत जाय रहें कि यह वैर निकट रहने के कारण रखता है

इससे दूसरे होजावें यदि यह ईर्षी के साथ सदैव उपकार करता परन्तु वह अपने वैरको न छोड़ता यहांतक कि उस सत्पुरुषने संपूर्ण निज वस्तु और घरबेंच दूसरे नगरमें जो वहांसे डेढ़कोस दूर था एक उत्तम घर जिसमें एकउत्तम बाग और एक अन्धाकुवांथा मोललिया और रहने लगा फिर वह सांगोपांग योगियों के वस्त्र पहिन सन्त बनगया कि अवस्था हरिभजनसे आनन्दमें व्यतीत हो और कई मकान अपने घरमें बनवाये जिनमें सन्तों को रख सदैव भण्डारा किया करता यह समाचार नगर में विख्यात हो गया और बहुधा मनुष्य उसकी भेंटको आते और उसके सत्संग से प्रसन्न होते इसीप्रकार उसका नाम सुन दूर २ से मनुष्य आने लगे और उसे परमहंस समझ अपने अभिप्राय को कहना और उससे वरकी आशा रखनी आरम्भ की यहां तक कि उसकीबड़ाई और सिद्धता का समाचार उस नगर में जिसे छोड़कर यहांआया था पहुँचा इससे उसके ख्यातका समाचार सुन ईर्षी को बड़ीदाह उत्पन्न हुई और उसके वध करने को सम्पूर्ण निज काम छोड़ वहां गया और मन्दिरमें जाय उससे मिला तो वह सत्पुरुष अपने प्रथमके पड़ोसी को पहिचान प्रतिष्ठापूर्व्वक मिला ईर्षीने मक्र और धोखा अपने चित्तमें विचार उससे कहा मुझे एक कठिन कार्य्य आय पहुँचा है जिस कारण इस नगर में आयाहूं जोतुम कहो तो उसको तुमसे एकान्त स्थलमें प्रकट करूं कि और कोई उसे न सुने और उस समय अपने सन्तोंसे कह देना किकोई अपने घरसे बाहर न निकलें उस सिद्धने उसके अभिप्राय के अनुसार किया जब उस ईर्षीने उसउत्तम मनुष्यको एकांतमेंपायातो अपने आनेका कारण झूठ मूठ चित्तसे बनाय उससे कहना आरम्भ

किया और वार्त्ता में लगाय टहलता हुआ इधर उधर जाय उस कुयें के समीप लेगया और वहां पहुँचतेही सिद्ध को कुयें में ढकेल दिया उससमय वहां कोई न था कि इस समाचार को देखता निदान ईर्षी अपना कार्य्य कर और मन्दिर का दरवाज़ा वन्द कर चुप के से भागगया और इस कार्य्य के पूर्ण होने से अत्यन्त प्रसन्न हुआ और कहा कि अव इस मनुष्य की ओर से जिसकी बढ़ती और भलाई को मैं न देखसक्ता था मुझे धीर्य्य हुआ वह ईर्षी इस विचार से धोखेमें पड़ा वह सिद्ध तो भाग्यमानथा परियां जो उस कुयेंमें रहती थी हाथो हाथ उसको लिया जिससे उसको किसीप्रकार का दुःख न पहुँचा और कुयें के अन्दर बैठादिया वह सिद्ध ईश्वरका धन्यवाद कर शोचा कि इसकुयें के गिरने में भी मेरे वास्ते कुछ भलाई होगी फिर उसने चारों ओर दृष्टिकी तो कोई वहां दिखाई न दिया थोड़ी देरके पश्चात् उसने एक शब्द सुना कि कोई मनुष्य कहता है कि तुम इसको जानते हो कि यह कौनहै दूसरा शब्द सुनाई दिया कि हम इसको नहीं जानते फिर पहिले कहनेवाले ने कहा मैं तुझको इसका वृत्तान्त जनाताहूं यह मनुष्य अति शीलवान् और सिद्धहै अपना नगर छोड़ यहां रहना अंगीकार किया कि अपने पड़ोसी के वैरसे अलगहो इस नगर में ईश्वर ने उसकी सिद्धता बढ़ा दी इस कारण उसकी सब प्रतिष्ठा करते हैं ईर्षीने यह समाचार सुन अधिक वैर किया और उसके मारडालने का विचार कर इस नगर में आया और यहां आयके उसको इस कुयें में डालदिया यदि हम उसकी सहायता न करते तो मर जाता कल इस नगर का बादशाह इसके निकट आय अपनी पुत्रीके अच्छे होनेके आशी-

वाद की चाहना करेगा दूसरेने पूंछा कि उस शाहजादी को कौन सा रोगहै पहिले शब्द के कहनेवालेने उत्तर दिया कि शाहजादी पर मैमू पिशाचका पुत्र डिमडिम मोहित हुआहै कि जिससे वह सदैव रोगी और बेसुध रहा करती है और मुझे उस पिशाच के हटाने का उपाय विदितहै वह अति सुगमहै मैं उसे बताताहूं इस योगीके घरमें एक काली बिल्ली है कि जिसके पूंछके शिरपर श्वेत चिह्नहै उसी श्वेत चिह्नके स्थान से यह सिद्ध सात बाल उखाड़ अपने पास रक्खे और समय पर उन बालोंको अग्निमें जला उसकी धूनी शाहजादी की नाक में दे धुआं नासिका में पहुंचतेही वह नीरोग होजायगी और वह पिशाच उसके निकट कभी न आवेगा सत्पुरुष ने यह वार्त्ता जो परियों और जिन्दों में हुई थी अच्छेप्रकार स्मरण रक्खी जब भोरहुआ और उस कुयें में सूर्य के प्रकाशसे देखा तो खन्दाने खुदे हुये पाये उनमें पांव रखता हुआ सुगमता से ऊपर आया सम्पूर्ण सन्त जो कि ढूंढ़ते फिरते थे सिद्धको देख अत्यन्त प्रसन्नहुये सत्पुरुष ने सब हाल अपने चेलों से प्रकट कर अपने घरमें गया थोड़ी देर न हुई थी कि काली बिल्ली जिसका परियों और जिन्नों ने वर्णन किया था आई उस सिद्धने उसको पकड़ सात बाल श्वेत उखाड़े और अपने पास रख छोड़े सूर्य्य न उदय हुयेथे कि उस नगर का बादशाह उस सिद्धके भवनपर आया और मन्दिरके दरवाजेपर निज सेना छोड़ कुछ सरदारों सहित अन्दर गया वह सिद्ध उसकी अगवानी कर उसे अपने भवन में लेगया बादशाहने उससे कहा कि हे अन्तर्यामी तुझको मेरे आगमनका हाल विदित हुआ होगा ॰ कहा कि तुम शाहजादी के रोगयुक्त होनेके कारण आ।

श्वशुर के स्थान पर बादशाह होगया एक दिवस वह अपने सरदारों सहित सवारहोके जाता था संयोग वश उसने वैरीको बहुत से मनुष्यों के यूथमें देखा उस योगी ने कि अब बादशाह हुआ था अपने मंत्री के कानमें कहा कि उस मनुष्य को प्रतिष्ठा पूर्वक सधीर्य जिसमें वह किसी प्रकारका भय न करे मेरे निकट लेआ मंत्री तत्काल उस मनुष्य को बादशाहके सम्मुख ले आया बादशाह ने उस अपने ईर्षी से कहा कि हे मित्र मैं तुझको देख अति प्रसन्न हुआ फिर उसने एक हजार अशर्फ़ी और बीस गठरी वस्त्र मँगा के उस ईर्षी को दिये और एक पहरा सिपाहियों का उसके साथ किया कि वह उसको रक्षापूर्व्वक उसके घर पहुँचादे ॥ इति दृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयेभागेमिश्रनिबन्धेपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५० ॥

अथैकपञ्चाशत्तमःप्रदीपः॥

दूसरे काणेयोगी का वर्णन ॥

हे सुन्दरी जब मैं इस कहानी को पूरा करचुका तो अपने छूटने के वास्ते पिशाच से कहा हे पिशाच देख तो उस शीलवान् बादशाह ने कैसा सलूक अपने वैरी के साथ किया था और कितनाही मैंने उससे बिनतीकी कि अपनी इच्छासे हट जावे और मुझे दण्ड न दे परन्तु उस विकरालरूप पिशाच ने मुझपर दया न कर कहा कि तुझे प्राणसे न मारूंगा परन्तु दण्ड दिये बिन न छोडूंगा अब देख जादूसे तेरे साथ क्या करताहूं यह कह उसने मुझे पकड़ा और उस भवनसे जो पृथ्वीके अन्दर उसके आनेसे खुल गयाथा लेकर ऊपर को इतने ऊंचे उड़ा कि जहां से धरती बादल के टुकड़े के समान दीखती थी फिर उस ऊंचे से शीघ्रही बिजली के समान एक पहाड़की चोटीपर ले उतरा और वहांसे एक मुट्ठी

और मुझ अयोग्यको अपने चरणों से कृतार्थ किया बादशाहने कहा सत्य है मैं इसी वास्ते आयाहूं जो तुम्हारे आशीर्वादसे मेरी बेटी अच्छी होजाय तो मेरा जीवन सफलहो उस सिद्धने उत्तर दिया जो आप शाहज़ादी को यहां पर बुलवा भेजैं तो मैं परमेश्वरके अनुग्रह और अनुकम्पासे अच्छाकरदूं बादशाह यह सुनि अति प्रसन्न हुआ और अपनी बेटीको तुरन्त लौंड़ियों सहित बुलवाया बांदियोंने उसका मुख इस तरह छिपाया था कि किसीकी दृष्टि उसपर न पड़े योगीने एक चादर से शाहज़ादीका शिर इस तरह से घेरा कि जिससे धुआं बाहर न निकलसके फिर वे बाल तुरन्त अग्निपर रख उसकी धूनी शाहज़ादीकोदी इतना करतेही मैमूं पिशाचका पुत्र डिमडिम चिल्लाया और बड़ा शब्दकर उसने शाहज़ादीको छोड़दिया शाहज़ादी अच्छी हुई और सुधि सँभाली और शीघ्रही अपने हाथसे वस्त्र डाल मुख अपना छिपालिया और पूंछने लगी कि मैं कहां और मुझे इस स्थानपर कौनलाया बादशाहने अत्यन्त हर्ष युक्तहो शाहज़ादीको अपने कण्ठसे लगालिया और नेत्र चूमे फिर योगी के हाथको चूमे और अपने सरदारों से पूंछा कि इस योगीके साथ कौनसा उपकार करूं सरदारों ने एक मतहो कहा हमारे विचार से यह उचित है कि इस शाहज़ादीका विवाह इस योगी के साथ करदो बादशाहने कहा कि मेरा भी यही विचार था फिर उसने उसका विवाह उस योगी के साथ करदिया थोड़े दिनों के पश्चात् वहांका बड़ा मंत्री मरगया बादशाहने उस योगीको बड़ा मंत्री नियत किया फिर वह बादशाह भी मरगया और वह शाहज़ादी के सिवाय कोई युवराज न रखता था सो वह योगी सेना और सरदारों के सम्मत से अपने

श्वशुर के स्थान पर बादशाह होगया एक दिवस वह अपने सरदारों सहित सवारहोके जाता था संयोग वश उसने वैरीको बहुत से मनुष्यों के यूथमें देखा उस योगी ने कि अब बादशाह हुआ था अपने मंत्री के कानमें कहा कि उस मनुष्य को प्रतिष्ठा पूर्वक सधीर्य्य जिसमें वह किसी प्रकारका भय न करे मेरे निकट लेआ मंत्री तत्काल उस मनुष्य को बादशाहके सम्मुख ले आया बादशाह ने उस अपने ईर्षी से कहा कि हे मित्र मैं तुझको देख अति प्रसन्न हुआ फिर उसने एक हज़ार अशर्फी और बीस गठरी वस्त्र मँगा के उस ईर्षी को दिये और एक पहरा सिपाहियों का उसके साथ किया कि वह उसको रक्षापूर्वक उसके घर पहुँचादे॥ इति दृष्टांतप्रदीपिन्यांतृतीयेभागेमिश्रनिबन्धेपञ्चाशत्तमःप्रदीपः ५०॥

अथैकपञ्चाशत्तमःप्रदीपः॥

दूसरे काणेयोगी का वर्णन॥

हे सुन्दरी जब मैं इस कहानी को पूरा करचुका तो अपने छूटने के वास्ते पिशाच से कहा हे पिशाच देख तो उस शीलवान् बादशाह ने कैसा सलूक अपने वैरी के साथ किया था और कितनाही मैंने उससे विनतीकी कि अपनी इच्छासे हट जावे और मुझे दण्ड न दे परन्तु उस विकरालरूप पिशाच ने मुझपर दया न कर कहा कि तुझे प्राणसे न मारूंगा परन्तु दण्ड दिये बिन न छोड़ूंगा अब देख जादूसे तेरे साथ क्या करताहूं यह कह उसने मुझे पकड़ा और उस भवनसे जो पृथ्वीके अन्दर उसके आनेसे खुल गयाथा लेकर ऊपर को इतने ऊँचे उड़ा कि जहां से धरती बादल के टुकड़े के समान दीखती थी फिर उस ऊंचे से शीघ्रही बिजली के समान एक पहाड़की चोटीपर ले उतरा और वहांसे एक मुट्ठी

मिट्टीकी ले कुछ उसपर मंत्र पढ़े कि जिसका अर्थ मैंने कुछ भी न समझा फिर उसको मेरे ऊपर डाल कहा कि मनुष्यका चोला छोड़ बन्दरका स्वरूप बनजा यह जादू मुझपरकर वह पिशाच गुप्तहो गया और मैं अपने चोलेको बन्दरके चोले में देख अत्यन्त दुःखित और चिंतायुक्त हुआ और कुछ नहीं जानता कि मैं किस जगहहूं और वहांसे मेरे पिताका देश किस ओर और कितनी दूरहै और उस जगह से अनजानहूं कहां जाऊं और क्या करूं निदान उस पहाड़से उतर एक देशमें कि जिसकी पृथ्वी धरातल थी बराबर एक मास तक उसमें चलतारहा निदान एक समुद्रके तटपर कि जिसका जल कुछभी न हिलताथा गया और उसके कूलपर एक जहाज़ देखा चाहा कि किसी प्रकार वहां तक पहुंचूं इस वास्ते एकवृक्ष से टहनियां तोड़ घसीटता हुआ समुद्रके तटपर लेगया और उसको समुद्र में डाल उस पर चढ़ बैठा और दोनों हाथों से दो टहनियां पकड़ तैरने लगा और इसी प्रकार जहाज़ की ओर चला जब उसके समीप पहुंचा तो जहाज़ के मनुष्य मुझको देख अति विस्मित हुये मैं जहाज़ की रस्सी पकड़ उस पर चढ़गया जहाज़ी मुझे बन्दर के रूप में देख अत्यन्त आश्चर्य में हुये यदि मुझमें वाचाल शक्ति न थी इसकारण मैं अपना वृत्तान्त किसीसे कह न सका और आश्चर्य से सबकी ओर देखता था और यह आपत्ति उस दुःखसे कि जिसके फन्देमें पड़ाथा न्यून न थी उस जहाज़ के

डालेदेताहूं इसीप्रकार वो सब मेरे मारने को उद्यत थे इतने में मैं दौड़कर जहाज़ के कप्तान के निकट गया और उसके चरणों पर गिर उसका वस्त्र पकड़ लिया और उसे सैन से कहा मैं तुम्हारे शरणहूं मुझे बचावो और मेरे नेत्रों से आंशू चले कप्तान ने मुझपर दयाकर मेरी ओर हो सबको मेरे दुःख देने से हटा दिया और कहा इस वानर से कोई न बोले और इसे कुछ दुःख न पहुंचावे फिर उसने मेरी ऐसी रक्षाकी कि मुझ को कुछ भी दुःख न पहुंचा यदि मैं बात न कर सक्ता था परन्तु सैन से उससे बात करताथा और वह मेरी सैन समझ अत्यन्त प्रसन्न और हर्ष युक्त रहता और उस समय से अन्य मनुष्य भी मुझपर प्रसन्न होगये इसी प्रकार ५० दिन तक चला किये यहां तक कि वह जहाज़ बहुत बड़े व्यापार स्थान में पहुंचा जिसमें बहुत सी बस्ती थी और उसमें घर भी उत्तम २ थे जहाज़ी लोगोंने जहाज़को नगर के निकट ठहराया और वह नगर बड़े ऐश्वर्य्यवान् बादशाह की राजधानी थी जहाज़ में लङ्गर करतेही बहुत से मनुष्य जो उन व्यापारियों के मित्र थे नावों पर सवारहो धन्यवाद देनेको आये और जहाज़ को चारों दिशा से घेरलिया प्रत्येक मनुष्य अपने२ मित्रसे मिल सफ़र और समुद्रका वृत्तान्त पूछता क्योंकि वह जहाज़ दूर २ के देशों और नगरों में गया था उस नगर के वासियों में कोई बादशाह के सरदार भी थे उन व्यापारियों को बादशाह की ओरसे कहते थे कि हमारा बादशाह तुम्हारे आने से अत्यंत प्रसन्न हुआ और कहताहै कि जो तुम में से कोई मनुष्य लिखने पढ़ने में ऐसा योग्यहो कि इस कागज़पर कि मिस्तर किया हुआ

कोई मना नहीं करता लेखनी ले चारप्रकारके चार काव्य ऐसे लिखे कि न कोई व्यापारी और न कोई उस नगरका वासी लिखसक्ता था जब मैं लिख चुका तो सरदारजाय उस कागजको बादशाह के सन्मुख लेगया बादशाहने मेरे लिखने और काव्यको प्रसन्न किया व अपने सरदारों से कहा कि एक बड़ाभारी खिलत ले जाय उस मनुष्य को देव जिसने इस कागज को लिखाहै प-हिना के और एक अश्व हमारे अश्वशाला से लेजावो और उसे सवार कराय लेआवो यह आज्ञा पातेही वह सरदार मुसुक-राया जिससे कि बादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और दण्डदेने की आज्ञाकी उसने विनती की कि हे स्वामी हमारा अपराधक्ष-माकरो लिखने वाला इसका मनुष्य नहीं किन्तु बानरहै बादशाह ने कहा क्या ये पंक्ति मनुष्यकी लिखी नहीं एकने उन सरदारों से विनय की कि हे स्वामी हमने अपनी आंखों से देखा कि इस को बन्दर ने लिखाहै बादशाह इस बातसे आश्चर्यित और वि-स्मित हुआ और मेरे देखने की अत्यन्त लालसा की और उन सरदारों से कहा कि शीघ्रही ऐसे अपूर्व बन्दर को सवार कर मेरे सम्मुख लेआवो सरदार जहाज पर फिर गये और बादशाह की आज्ञा कप्तानसे कही उसनेकहा बहुत अच्छा मैं इसे भेजता हूं फिर मुझे कारचोबी वस्तु पहिना समुद्रके तटपर लेआये और घोड़े पर मुझे सवार किया इधर बादशाह अपने सभासदों सहित मेरे आगमन की राह देखते रहे और मेरी अगवानी को सब प्रकारके मनुष्य इकट्ठा किये और नगर के छोटे बड़े मनुष्य और स्त्रियां मेरे देखने को कोठी और मार्गमें इकट्ठाहुये क्योंकि यह वृत्तान्त अर्थात् बादशाह ने एक बन्दर को अपना मंत्री ब-

और कारण इसका यह है कि यहांका मंत्री मरगया है और वह मंत्री अन्य गुणों के विशेष इबारत अच्छी लिखता था और लिखने में अद्वितीय था और यहां का बादशाह गुणग्राहक है उसके मरजाने से अत्यन्त शोकयुक्त रहता है और सौगन्द खाई है कि जो मनुष्य पहिले मंत्री के समान अच्छा लिखनेवाला मिलेगा उसी को मंत्री बनाऊंगा बहुत ढूंढनेपर भी अबतक अपने सम्पूर्ण देशमें ऐसा कोई मनुष्य न पाया कि जिसे वह अपना मंत्री बनावे सो इस कागज को तुम्हारे निकट भेजाहै कि जो कोई तुम में से इसके योग्यहो और उसे मंत्रीका स्थानलेनेकी इच्छाहो तो इस कागज पर पंक्ति लिखे जब सरदार इतना कहचुका तो मैंने आगे बढ़ उस कागजको उसके हाथसे लेलिया इससे सब जहाज के मनुष्य विशेष वह व्यापारी जो लिखे पढ़ेथे चिल्लाने और बड़ा शब्द करनेलगे कि अभी यह बंदर इस कागजको चीरफार डालेगा वा समुद्रमें फेंकदेगा परंतु जब उन्हों ने देखा कि मैंने कागज को अच्छे प्रकार पकड़ा और सैनसे पूंछा कि मैं इसपर लिखूं सब ने चिल्लाना बंदकिया क्योंकि उन्हों ने सम्पूर्ण आयुमें कभी किसी बन्दरको लिखते नहीं देखाथा और मेरी योग्यताको नहीं जानते थे चाहा कि इस कागजको मेरे हाथसे छीनलें परंतु कप्तानने मेरी ओरहो कहा कि ठहरो इसकी परीक्षालेनेदो यदि उसने कागजको खराबकिया तो मैं तुमसे प्रण करताहूं कि उसको उचित दण्डदूंगा और जो उसने मेरे विचारके अनुसार अच्छालिखा तो उसमहै मैं उसे अपने पुत्रके समान पालन करूंगा मुझको विदितहै कि वह कागजको खराब न करेगा मैं और बन्दरोंकी अपेक्षा उसेअत्यन्त समझदार और बुद्धिमान् पाताहूं जब मैंने देखा कि मुझको अब

कोई मना नहीं करता लेखनी ले चारप्रकारके चार काव्य ऐसे लिखे कि न कोई व्यापारी और न कोई उस नगरका वासी लिखसक्ता था जब मैं लिख चुका तो सरदारजाय उस काग़ज़को वादशाह के सन्मुख लेगया वादशाह ने मेरे लिखने और काव्यको प्रसन्न किया व अपने सरदारों से कहा कि एक बड़ाभारी खिलत लेजाय उस मनुष्य को देव जिसने इस काग़ज को लिखाहै प-हिना के और एक अश्व हमारे अश्वशाला से लेजावो और उसे सवार कराय लेआवो यह आज्ञा पातेही वह सरदार मुसुक-राया जिससे कि वादशाह अत्यन्त क्रोधित हुआ और दण्डदेने की आज्ञाकी उसने विनती की कि हे स्वामी हमारा अपराधक्ष-माकरो लिखने वाला इसका मनुष्य नहींकिन्तु वानरहै वादशाह ने कहा क्या ये पंक्ति मनुष्यकी लिखी नहीं एकने उन सरदारों से विनय की कि हे स्वामी हमने अपनी आंखों से देखा कि इस को वन्दर ने लिखाहै वादशाह इस बातसे आश्चर्यित और वि-स्मित हुआ और मेरे देखने की अत्यन्त लालसा की और उन सरदारों से कहा कि शीघ्रही ऐसे अपूर्व वन्दर को सवार कर मेरे सम्मुख लेआवो सरदार जहाज पर फिर गये और वादशाह की आज्ञा कप्तानसे कही उसनेकहा वहुत अच्छा मैं इसे भेजता हूं फिर मुझे कारचोबी वस्तु पहिना समुद्रके तटपर लेआये और घोड़े पर मुझे सवार किया इधर वादशाह अपने सभासदो सहित मेरे आगमन की राह देखते रहे और मेरी अगवानी को सव प्रकारके मनुष्य इकट्ठा किये और नगर के छोटे बड़े मनुष्य और स्त्रियां मेरे देखने को कोठी और मार्गमें इकट्ठाहुये क्योंकि यह वृत्तान्त अर्थात् वादशाह ने एक वन्दर को अपना मंत्री ब-

शिरपर रक्खा अर्थात् मैं खेलने को तत्परहूं पहिली बाजी बादशाह जीता और दूसरी तीसरी में जीता बादशाह को दो बाज़ी के हारने से कुछ ग्लानताहुई इसके धीरज के वास्ते मैंने काव्य इस विषय का लिखकर दिया अर्थात् दो योद्धाओं ने परस्पर दिन भर युद्धकर सायङ्कालको मेलकिया और रात्रिको उसी युद्धस्थान में आनन्दसे सोरहे बादशाह इसकी बुद्धिमानता को देख अति आश्चर्यित हुआ और सभासदों से कहा कि मैंने किसी बन्दरको ऐसा योग्य और हाज़िर जवाब न देखा और न सुना फिर चाहा कि ऐसा अपूर्व और अद्वितीय बन्दर अपनी पुत्री मल्कैहसनको दिखावे उसने ख्वाजेसराओं के दारोग़ा को आज्ञाकी कि तू अपनी बीबीको यहांपर बुलाला कि वहभी इसचरित्रको देखे दारोग़ा राजद्वार से राजपुत्रीको बुलालाया शाहज़ादी वहां से बादशाह के सम्मुख मुख खोले गई और वहां मुझे देखते ही उसने तुरन्त अपने मुखको ढांप लिया और बादशाहसे विनयकी कि आपको क्या होगया कि आप मुझको बेगाने मनुष्यके सम्मुख बुलाते हैं बादशाहने उत्तर दिया मुझको जान पड़ताहै कि तुम बेहोशीसे बातें करतीहो इस स्थानपर मेरे वा तुम्हारे ख्वाजेसरायके सिवाय और कोई नहीं तुम जो सदैव मुख खोले मेरे सम्मुख आया करती हो इस समय क्यों अपने मुँहपर वस्त्र डाले आईहो और इसके विपरीत तुम्हें मेरे भूलका विचारहै शाहज़ादीने बादशाहसे विनय की कि आप अच्छेप्रकार जानलें कि मेरी कुछ भी भूल नहीं मैं सत्य कहती हूं कि यह बन्दर सचमुच मनुष्य और बड़े बादशाह का पुत्रहै जादूके कारण बन्दर होगया इब्लीसके पुत्रने बादशाह अबूतैमुरस अबौनी द्वीपकी शाहज़ादी के मारने पश्चात् इस

नाया है सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगया था लोग मुझे देख हँसते और चिल्लाते जब मैं बादशाही मकान में पहुँचा बादशाह को राज सिंहासन पर बैठे देखा और उसके सिंहासन के चारोंओर मंत्री और उस बादशाह के सम्पूर्ण भृत्य इकट्ठा थे मैं तीनवार प्रणाम कर हाथ जोड़ खड़ाहुआ और वहां जितने वर्त्तमान थे इस अपूर्व वृत्तान्त को देख आश्चर्यित हुये कि हमने आजतक ऐसा बन्दर नहीं देखा इसीप्रकार बादशाह भी इस बातसे अत्यन्त विस्मित हुआ फिर बादशाह ने सम्पूर्ण सभासदों को विदाकिया केवल मैं और दारोग़ा जो अत्यन्त वृद्धथा बादशाहके पास रहगये फिर बादशाह ने सभासे घरमें जाय नानाप्रकार के व्यंजन मँगाये और मुझे सैनसे खानेको बुलाया मैं प्रणामकर बैठगया और बड़ी तमीज़से खाना आरम्भ किया जब भोजनकर चुके और बरतन वहां से उठगये मैंने एक क़लमदान देख उसे सैनसे मँगाया जब वह क़लमदान मेरे सम्मुख आया मैंने उसमें से एक बड़ा काग़ज़ले बादशाहके धन्यवाद का काव्य बनाय बादशाहकेसम्मुख किया बादशाह उसे पढ़ अत्यन्त आश्चर्यित हुआ और पहिले से अत्यन्त प्रसन्नहुआ और इसके पश्चात् बादशाह ने सेवकों को सैनदी कि इसेभी मदिरा पिलाओ सो उन्होंने एक गिलास मुझे भी दिया मैंने उसे पी एक नये प्रकारका काव्य इसविषय का अपने सम्पूर्ण आपत्ति और उस बादशाहकी गुणग्राहकता से जो आनन्द और चैन प्राप्तहुआ लिखा बादशाह ने उसे पढ़ चित्त में कहा कि इस बन्दर के समान कोई भी संसार में नहीं फिर उसने सतरंज मँगाई और मुझसे सैनसे पूछा यह खेल जानतेहो इस समय खेलनेको जी चाहता है उसके उत्तर में मैंने धरतीको चूम अपना हाथ

शिरपर रक्खा अर्थात् मैं खेलने को तत्परहूं पहिली बाजी बादशाह जीता और दूसरी तीसरी मैं जीता बादशाह को दो बाजी के हारने से कुछ ग्लानताहुई इसके धीरज के वास्ते मैंने काव्य इस विषय का लिखकर दिया अर्थात् दो योद्धाओं ने परस्पर दिन भर युद्धकर सायङ्कालको मेलकिया और रात्रिको उसी युद्धस्थान में आनन्दसे सोरहे बादशाह इसकी बुद्धिमानता को देख अति आश्चर्यित हुआ और सभासदों से कहा कि मैंने किसी बन्दरको ऐसा योग्य और हाज़िर जवाब न देखा और न सुना फिर चाहा कि ऐसा अपूर्व और अद्वितीय बन्दर अपनी पुत्री मल्केहसनको दिखावे उसने ख्वाजेसराओं के दारोगा को आज्ञाकी कि तू अपनी बीबीको यहांपर बुलाला कि वहभी इसचरित्रको देखे दारोगा राजद्वार से राजपुत्रीको बुलालाया शाहजादी वहां से बादशाह के सम्मुख मुख खोले गई और वहां मुझे देखने ही उसने तुरन्त अपने मुखको ढांप लिया और बादशाहसे विनयकी कि आपको क्या होगया कि आप मुझको बेगाने मनुष्यके सम्मुख बुलाते हैं बादशाहने उत्तर दिया मुझको जान पड़ताहै कि तुम बेहोशीसे बातें करतीहो इस स्थानपर मेरे वा तुम्हारे ख्वाजेसराके सिवाय और कोई नहीं तुम जो सदैव मुख खोले मेरे सम्मुख आया करती हो इस समय क्यों अपने मुँहपर वस्त्र डाले आईहो और इसके विपरीत तुम्हें मेरे भूलका विचारहै शाहजादीने बादशाहसे विनय की कि आप अच्छेप्रकार जानलें कि मेरी कुछ भी भूल नहीं मैं सच कहती हूं कि यह बन्दर सचमुच मनुष्य और बड़े बादशाह का पुत्रहै जादूके कारण बन्दर होगया इबलीसके पुत्रने बादशाह अबूतैमुरस अबोनी द्वीपकी शाहजादी के मारने पश्चात् इस

शाहजादेको जादू से बन्दर बनाडाला है बादशाह यह बात सुन अत्यन्त विस्मित हुआ और मुझसे पूंछा कि यह बात सत्रहै मैंने अपना हाथ शिरपर रख सैन से कहा जो इस शाहजादीने कहा सो ठीक है फिर बादशाहने अपनी शाहजादीसे पूंछा तुझे क्यों-कर विदितहै कि यह शाहजादा बन्दर होगया शाहजादीने उत्तर दिया आपको स्मरण होगा कि जब दूध मेरा छुड़ाया गयाथा मेरे पालन और उपदेशके अर्थ जो वृद्धाथी वहजादूकी विद्यामें अति निपुणथी उसने मुझको सत्तर पर्व्व मन्त्र विद्याके सिखलाये जिस से मुझमें इतनी शक्तिहै कि तुम्हारे सम्पूर्ण देशको यहांसे उठा स-मुद्रमें डालदूं मुझको उनमनुष्योंका हाल जो जादूके कारण अन्य योनिमें प्राप्तहों अच्छेप्रकार विदितहै देखतेही जान लेतीहूं कि इस मनुष्यपर किसीने जादू कियाहै और इसकारण उसपर जादू हुआ और जिस मनुष्य ने इस पर जादू किया मैंने एकही बेर के देखनेमें पहिचान लिया जिसको आप बन्दर जानते हैं बादशाहने कहा हे शाहजादी मैं तुझे ऐसी गुणवती न जानताथा शाहजादीने कहा हे पिता यह भेदहै हरएक मनुष्यको सीखना उचित नहीं मैं कुछ इसमें झूठ नहीं कहती बादशाह ने अपनी शाहजादी से कहा तुम्हें इतनी सामर्थ्य है इस शाहजादे को जादू दूर कर फिर उसको अपने स्वरूप में बनादो शाहजादी ने कहा निस्सन्देह मैं बनासक्ती हूं बादशाहने कहा कि तुम इसको पहिली सूरत में लाओ तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगा और इसको अपना मंत्री कर तेरे साथ विवाह करदूंगा शाहजादी ने कहा बहुत अच्छा इतना कह मलका हुसन अपने भवनसे एक छड़ीलाई जिसमें इबरानी अक्षर लिखे थे और कहा कि आप ख्वाजे सराय और बन्दर सहित एक

भवनमें रक्षापूर्व्वक छिपकर बैठें फिर हम तीनों बरामदेमें कि चारों ओर उस मकान के बनाथा बैठे उसने उसबरामदेमें एक बड़ा घेरा पृथ्वी में खैंचा और कुछ इबरी और कलपतरी शब्द पढ़नेका आरम्भ किया जब पढ़ चुकी और विचारानुसार घेरा भी बना लिया तब उस घेरेके अन्दर जाय कुरानका पढ़ना आरम्भ किया इतने में चारों ओर रात्रि के समान अँधेरा छागया और प्रलयके चिह्न दिखाई देनेलगे यह दशा देख हम सब भयभीत हुये और घड़ी घड़ी पर हम को डर अधिक होता जाता था हमने क्या देखा दुख्तर इबलीसका पुत्र बड़े उग्र और भयंकर शेरके स्वरूप में प्रकट हुआ शाहज़ादी उसके सम्मुख कहने लगी अय कूकर तुझे चाहियेथा कि तू मेरी विनती करता विपरीत इसके मेरे डरानेको ऐसा भयमान रूपधर आया तू ने बड़ी ढिठाईकी शेर ने उत्तर दिया तू ने उस प्रण को जो पिशाचों और मनुष्यों में हुआ था तोड़ दिया और उस पर कठिन कठिन सौगन्दें दी गई थीं कि कोई एक दूसरे को दुःख न दे शाहज़ादीने कहा अय मलीन रूप तो प्रण भंगीहै मुझे चाहिये कि इस विषय में तुझे बुरा भला कहूं शेरने कहा तूने बड़ी ढिठाई की मुझे यहां आने का श्रमदिया यह कह उसने अपने मुखको फैलाया और इच्छाकी कि शाहज़ादी को निगल जायँ परन्तु वह अत्यन्त बुद्धिमान् और चैतन्य थी पीछे की ओर कूद कर हटगई और अपने शिरका एक बाल उखाड़ के उसपर दो चार अक्षर पढ़े वो बाल खड्ग के समान बनगये शाहज़ादी ने उस खड्ग से उस सिंहको दो फांककर उस दालान में डाल दिया और वह टुकड़े शेर के गुप्त होगये जो शिर उसका रहगयाथा बिच्छू बनगया शाहज़ादी उस समय सर्प बन

के उससे युद्ध करनेलगी वह विच्छू सामना करने की सामर्थ्य न रखकर उकाब बनके उड़गया फिर वह सर्प भी काला उकाब बन पहिले उकाब का पीछा किया यहां तक कि वे दोनों उकाब हमारी दृष्टि से छिपगये थोड़ीदेर के पश्चात् हमारे सम्मुख पृथ्वी फटगई और उसमें से दो बिल्लियां श्वेत और काली निकली और दुमके बालखड़े कर परस्पर चिल्लाने लगीं फिर वह काली बिल्ली काला भेड़िया बन दूसरी बिल्लीकी ओर दौड़ी व बिल्ली अवकाश न पाय निरुपाय हो, कीड़ा बनगई और उस कीड़े ने एक अनार के बीच में उसी समय वृक्षसे नहर के किनारे गिर पड़ाथा अपने को छिपाया यह अनार बढ़ने लगा यहां तक कि बढ़ते २ बड़े मटके समान होगया और वायुपर उड़ा और बरामदे की उँचाई तक जाय कभी आगेकीओर कभी पीछेको हिलताथा इसीप्रकार इधरउधर जाय पृथ्वीपर गिर फटगया और बहुत टुकड़े उसके होगये वहभेड़िया तत्काल मुर्गा बन अनारकेदाने चुनैलगा और शीघ्रही एक २ दाना निगलना आरम्भकिया जब सब दाने अनारके खाचुका तब वह पंखफैला हमारे निकटआया और बड़ा शब्द किया अर्थात् वह पूंछताहै कि कोई दाना शेष तो नहींरहा और चारोंओर ढूंढता फिरताथा कि संयोगवश उसने एकदाना नहर के तटपर पड़ाहुआ था देख दौड़कर चाहा कि उसको भी खालें इतने मे वह दाना लुढ़कता हुआ नहर में चलागया और छोटीमछली बनगया और वह मुर्गाभी मछलीके खानेको नहरमें गया वह मछली और वह मुर्गा दोघड़ीतक उस नहरके भीतररहे हमें उनका वृत्तान्त कुछ भी विदित न हुआ कि वह दोनों क्या होगये फिर थोड़ी देरके पश्चात् हमने एकभयानकशब्द चिल्लाने

का सुना कि जिसके सुनेने से हम बहुत डरे फिर उस पिशाच और शाहजादीको देखा कि वे दोनों अग्नि होगये और प्रत्येक अपने मुखसे लाटें निकाल दूसरे की ओर फेंकता और निकट हो. हो एक दूसरे पर चढ़ाई करता है यहांतक कि अग्निने सबको घेर लिया तो यह आश्चर्य देख हम कम्पित हुये कि इस अग्नि से सम्पूर्ण राज्य अभी जल जायगी इस समयान्तर में हमारे भयका एक और कारण हुआ कि वह पिशाच शाहजादी के सम्मुख से हट हमारी ओर आया जहां हम सब बैठे थे और अपने मुख से लाटें निकाल हमारी ओर फेंकने लगा चाहताथा कि यह जलकर भस्म होजावे इतने में शाहजादी दौड़कर आई और हमें उसके हाथ से बचाकर उसको वहांसे दूरभगाया शाहजादी के रक्षाकरने पर भी बादशाह का मुख झुलस गया और ख्वाजह सराय का दारोगा जल भुन कर भस्म का ढेर होगया और एक चिनगारी उड़कर मेरे दाहिने नेत्र मे लगी कि जिससे मैं काना होगया और हम दोनो अर्थात् बादशाह और मैं इससे अति दुःखित थे इतने में जय का शब्द हमने सुना और वह मलिकाहसन निज योनि में बन हमारे निकट आई और वह पिशाच जल के भस्म का ढेर होगया फिर शाहजादी ने एक छोटे नौकर से जल मंग-वाया और उसपर कुछ मन्त्र पढ़ थोड़ा उसमें से मुझपर छिड़का और कहा जो तू जादू से बन्दर बन गया तो निज योनि को प्राप्तकर और मनुष्य के स्वरूप में जैसा पहिले था वैसा बन जा इतना कहतेही मैं मनुष्य बन गया दाहिने नेत्र के सिवाय जो प्रथम से जाता रहाथा और किसी जोड़ में हानि न पहुँची मैंने चाहा कि उस शाहजादी का धन्यवाद करूं परन्तु उसने मुझको

सावकाश न दिया बादशाह से कहा यदि मैंने पिशाच को परा-
जय किया परंतु इसके साथ मेराभी काम तमाम होगया अर्थात्
इस पावक युद्धने भी मेरे शरीर को जलादिया कोई क्षणमें मुझे
भी भस्मकर डालेगी यदि एक दाना दाड़िम का भी जिससमय
कि मैं पक्षी बनीथी न छूटता और उसको भी खाजाती तो फिर
मुझको कुछ भी दुःख न पहुँचता और यह पिशाच उसी समय
मारा जाता परंतु उस दानेके बचने से फिर उसे मेरे साथ युद्धकी
सामर्थ्य हुई तब मैं लाचार होकर आनि संग्राम करने लगी उस
समय धरती से आकाश पर्य्यन्त अग्नि होगई तब उस पिशाच
को मालूम हुआ कि मैं जादू की विद्यामें अति निपुणहूं और मेरी
विद्या कहीं उससे अधिक है निदान मैंने उसको जलाकर भस्म
कर डाला परन्तु मैं भी उस आग से बच नहीं सकी बादशाह ने
शोचित होय उत्तर दिया कि तुम अपने पिताका भी हाल देखो
यदि मैं जीताहूं परन्तु मुख मेरा झुलसगया है और तुम्हारा ख्वा-
जह सराय जलकर भस्म होगया और यह शाहजादा जिसका
तुमने जादू दूर किया है दाहिने नेत्रसे काना होगयाहै यह कह
कर बादशाह और मैं इस हालमें रोते पीटते और हाहा करते थे
कि इतने में शाहजादी पुकारने लगी कि जली २ फिर वह त-
त्कालही उस अग्नि में जलकर उस पिशाच के समान भस्मका
ढेर होगई है हे शहरयार उस स्थान में उस दूसरे योगी ने हाहा
खाय ज़ुबैदासे कहा कि उस समयका दुःख जो मुझपर हुआ कुछ
वर्णन नहीं कर सका मैंने उस मलकाहसन को इस दशामें देख
अपने चित्तमें कहा कि यदि मैं बन्दर किंतु श्वान सम्पूर्ण आयु
भर बना रहता तो उत्तमथा इससे कि शाहजादी जिसने कि मुझ

से इतना उपकार कियाथा इसप्रकार वध होजाय और इधर बाद-
शाह अपनी शाहजादी के मर जानेसे शोकवान् हो रोने पीटने
लगा यहां तक कि वह मूर्च्छित होगया और मुझे बादशाह की
ओर से अत्यन्त भय और डर हुआ कि ऐसा न हो वह अपनी
शाहजादी के दुःखसे कहीं मर न जाय उस समय रोनेपीटने से
प्रलय होगया बादशाही मकान में बादशाह की यह दशा सुन
सम्पूर्ण सरदार और नौकर दौड़े और बहुत उपाय से उसे फिर
सुधि में लाये मैंने सम्पूर्ण वृत्तान्त उनसे वर्णन किया फिर वह
लोग बादशाह को उठाय उसके निज कोठे में लेगये यह वृत्तांत
सम्पूर्ण नगर में ख्यात होगया और चारों ओर से शाहजादी के
नामपर रोनेपीटनेका शब्द सुनाई देताथा सात दिनतक उन्होंने
शाहजादीका शोक और रोनापीटना किया और अपनी रीत्य-
नुसार सम्पूर्ण शोककी रीतें भी कीं फिर पिशाच के भस्मका ढेर
उन्होंने वायुपर उड़ा दिया और शाहजादीकी भस्म को एक बहु
मूल्य वस्त्रकी थैली में भर वहीं गाड़दी और उसपर एक बड़ाभारी
मक़बरा बनवाया बादशाह अपनी शाहजादी के शोक में एक
मासतक रोगयुक्त रहा अभी वह अच्छा हुआ था कि उसने मुझे
बुलाकर कहा हे शाहजादे तेरे आगमन से नानाप्रकारके दुःख
और शोक मुझपर पड़े और मेरी शाहजादी तेरेही कारण भस्म
हुई और दारोगा भी जलकर मरगया और मैं मरते २ बचा यह
सब तेरी अभाग्यता है तू अशकुन है अब मैं तुझे देख नहींसक्ता
इससे तू यहां न रह तुरन्त यहां से चला जा यदि तू यहां रहेगा
तो तेरे वास्ते अच्छा न होगा और मैं तुझे दण्डदूंगा इसीप्रकार
बादशाह ने क्रोधमें यह सब बातेंकहीं कि जिनका मैं उत्तर न दे

सका और तत्काल बादशाहके सम्मुखसे चलागया और जिधर को जाताथा उधरको मनुष्य मेरे मारनेका इरादा करतेथे निदान मैं निरुपायहो उस नगर के निकलने से पहिले भौंहें और मूछें और डाढ़ी मुंड़वाय और योगियों के वस्त्र पहिन वहां से चला और अपने जन्मभर बुराभला कहता था कि बड़ा पश्चात्ताप है कि तेरे कारण से ऐसी स्वरूपवती दो शाहज़ादियां मारी गईं फिर बहुत दिनोंतक नगर २ और देश २ फिरा किया निदान शोचा कि बग़दाद नगर में जाय अपने दुःख और शोकको ख़लीफ़ा हारूंरशीद से विनयकरूं उक्त महाशय मेरे वृत्तान्तको सुन मुझपर अवश्य दया करेंगे और इस दुःखसे छुड़ादेंगे आज सायंकाल के समय में वहां पहुंचा और पहिले पहिल योगी से कि जिसने अभी अपना वृत्तान्त वर्णन कियाहै भेंटहुई और मेरे यहां आनेका कारण आपके सम्मुख पहिला योगी तो कहचुका उसका प्रकट करना अवश्य नहीं इस प्रकार जब दूसरा योगी भी अपना वृत्तांत कहचुका तो जुबैदाने उससे कहा कि तेरा अपराध क्षमाकिया जिधरको तेरा जी चाहै चलाजा तब वह भी जुबैदा से आज्ञाले पहिले योगी के निकट बैठगया फिर तीसरा योगी अपना वृत्तान्त कहनेपर उद्यतहुआ और जुबैदाके सम्मुखजाय इस प्रकार अपना वृत्तान्त कहना आरम्भ किया ॥ इतिदृष्टान्तप्रदीपिन्यां शुक्रदेवीसहायसंगृहीतायां तृतीयभागे मिश्रनिबन्धे आरब्यफलवर्णनंनामैकपंचाशत्तमःप्रदीपः ५१ ॥

# श्रीहरि
# गोमतीसती
# चरित्र

पण्डित ईश्वरीप्रसाद रामचन्द्र संस्कृत
पुस्तकालय सदरबाज़ार
मेरठ ने प्रकाशित
किया

दूसरीबार १०००
जिल्द



मतबै सादिकुल मेरठ में छपी संवत १९५४

# मेरठमें गोमतीसती का चरित्र

श्रीगणेशायनमः

## सोरठा

गण पति गौरि मनाय, सती चरित्र बर्णन करूं॥
सुनियों कान लगाय, पतिब्रता सज्जन पुरुष

## चौपाई

| | |
|---|---|
| मेरठ नगर माहिं एक नारी | सती होय पति सङ्ग सिधारी |
| कथा सुनो उसकी सब लोगा | पति ब्रतधर्म कियो तजभोगा |
| संबत् राम पंच नव एका | बिक्रमीय के कियो बिबेका |
| श्रावण कृष्ण पक्षके माहीं | तृतिया चन्द्रबार शुभ दाहीं |
| तादिन उर्द्ध सांस पति लीन्हें | सति संकल्प तभी से कीन्हे॥ |
| पतिसंग देहत्याग सोहि करना | स्थूलदेह अब इनसंग जरना |
| प्राण से प्राण देहसे देहा॥ | पतिसे जोड़ छोड़ सब नेहा॥ |
| यह बिचार कर चढ़ी अटारी | गंगाजल की युनिल झारी |
| प्रथम हिस्नान सतीने कीन्हा | दूसर अर्घ सूर्य को दीन्हा |
| शुद्ध बस्त्र अंग लिये सुधरी | सबं सिंगार कर पियकी प्यारी |
| घृतसे सिक्त किये सब केशा | अंजन मंजन किया सुवेशा |

**दोहा** पुनि मिट्टी के तेल का तनमें लिया लगाय
दिया सलाई खैंचकर याको दिया जलाय

**छन्द** इहिं बिधिसती तनुत्याग कर पतिश्रासको संगहो गई
कलियुगमें सतयुग कर दिखाया जगत में महिमा रही
जो नारि पियकी प्यारी होवे मुक्तिपदको पावही॥

सपनेहु आनपतीन को कभीमनसेभीनहिंध्यावती

दोहा
कायथ फ़रुक्खाबादके मुरलीधरथानाम
कोर्ट इन्सपेक्टर जानलो सतिकेपतिसुखधाम

चौ०॥ बदलकासिसेमेरठआये | बहुतदिनोंतक अतिसुखपा
कुछदिनज्वरने बहुत सताये | रोगबढ़ातबतो घबराये
देख सती मन कीन्ह बिचारा | जगमें अबकोउ नहीं हमा
इतना समझपुत्रि हंकारी | पञ्चरलदे महल सिधारे
चन्द्र शालसेजबनहिं आई | तबतो नीचे पड़ी दुहाई
दत्तक पुत्रतब गया बुलाने | ऊपर माता नहिं घबरावे
कोठरि बन्द वहां जब पाई | धुवांधारही दिया दिखा
नीचे आकर ब्योरा दीना ॥ | ऊपरलोग गयेचढ़ जीना

सोरठा~
दियेकिवाड़ उतार० आगबुझाई सबंनमिल
सतिमें स्वांसनसार० सबलोगनमिलदेखियां

छंद० सुख कांति ज्योंकीत्योंरही सबवसन तनकेजरगये
चौकिपै देबि समानबैठी रही अत्मा तरगये ॥०॥+
छोड़ा वहां निजस्थूल को मिल जीव दोनों स्वरगये ॥
धन धन्य देवी सतीजी तुम नाम अपना करगये ॥०
जब न क रहे सूरज और चन्दा स्वर्गधारा बासहो ॥+॥
योंगावें वेद पुराण सब अरु धर्म्म का परगास हो ॥०॥

सती लक्षण चौपाई ॥१॥

आरत पतिहिं देखहो ... | पतिप्रसन्नमनमनहिंसुधार
परदेशहिं पतिजबहिंसिधावें |
क्रीडा करें नहीं पर गेहा ॥ | चरण धरें नहिं

सब सिंगार तजें जे नारी ॥०॥ पतिबृत धर्म करें पिय प्यारी
बेश सुबेश न करें शरीरा ॥ जिन से मन में उपजे पीरा ॥
पति के मरे मरें तन त्यागा ॥ रहें सुहागन तजें दुहागा

दोहा॰ ऐसा धर्म बिचार कर किया सती तन त्याग
वेद शास्त्र में लिखा सत्य करा धन भाग

चौपाई-इस उपरान्त नगर में भारी धूम मची सब नर और नारी
बालक युवा बृद्ध चल आये दरशन को सति जी के धाये
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अपारा शूद्र आदि सब दिये किंवारा
नदियां मनहुं उमड़ि चढ़ि आई जय २ होन लगी सति माई
कायथ जाति मगन हुए भारी एक चिन्ह हो सजी सवारी
पुलिस प्रबंध हुआ अति पक्का पड़ने लगे धक्कों पर धक्का
ले ले डन्डा दूर हटावें ॥०॥ तौभी मनुज दूर नहिं जावें
मन घबराई बूढ़ी माता दत्तक पुत्र सुश्रिका ताता ॥
बहिन भानजी और जो माता रुदन करें क्या करी बिधाता
जाति के लोग तभी बहु आये आकर धीरज उनहीं बंधाई
किया प्रबंध गड्ड की त्यारी गढ़ मुक्तीश्वर चले सवारी
यवन इन्सपेक्टर गाड़ी लाये पीछे दोउ बिमान सजाये ॥
कान्ता प्रसाद कुंवर हुए साथा डिप्टी कालक्टर गुण के गाथा
मुंशी महाबीर पर सादा ॥०॥ साथ चले उनके जब पाधा ॥
दे पिण्ड दान बिमान उठाये कंध धर कर अति सुख पाये
नगर बाहर पनि गये बिमाना रख गाड़ी पर किया पयाना
बाह जय सती मात तुम ताहीं गये लोग निज २ गृह माहीं ॥
आधे रात पहुंचे गढ़ जाई लकड़ी आदि प्रबंध कराई

पांच बजे जब हुआ प्रभाता ॥ अग्नि दाह तब किया सहाता।
सती कथा सुन करके लोगा दर्शन को आये तज भोगा
चालिस चार पती की आयु सती बर्ष चालीस पर आयू
सदा सती जी करैं शुभ कामा तीर्थ स्नान दान बहु धामा
दई अनेक समय पर्व्वों पर भूषण दान किये सर्बोपर
बढ़ा पुण्य परताप सती का अंत हु पाया लोक पती का ॥
एक दिवस पहिले सति बयना बोली पति से हम नहि रहना
संग आपके चलूंगी स्वामी जगदीश्वर हैं अन्तर जामी
वेही निबाह करेंगे मेरा ॥०॥ जहां पति तहां सति का डेरा
किया वही जो कहा सती ने मान लिया जगदीश पती ने
सूर्य्य प्रसाद पुत्र का नामा दत्तक द्वादश बर्ष सुकामा
किंचित भस्म सती की लाये मेरठ माहिं सुलोग उमाहे
सती गोपालिका सबका देवा यश और धर्म्म सदा हि रहेगा

सोरठा

मेरठ नगर मंझार॰ सति प्रभाव से सा हुआ
सबहि सुहागन नारि॰ पतिप्रेमातुर होगई

दोहा

जो नारी पति प्रेम में रहें सदा कर ध्यान
आशिष हमरा है यही उनका हो कल्यान

३४

शुभम संवत १९५४ आश्वन शु० ६

हस्ताक्षर

## शिवताण्डवभाषाटीका

दशोमुख विरचित यह पुस्तक शिव भक्तों को अवश्य लेनी चाहिये आप को मालूम है कि यह शिव शंकर इस पुस्तक के . . . दान देते हैं गृहस्थ मात्र को एक प्रति अपने पास रखनी चाहिये दाम ॥

## गंगालहरीभाषा

इस गंगालहरी का भाषा शिषरणी छंदों में वर्णित है पं० कन्हैयालाल कविजी ने जिस लय में बनाई उसी के अनुकूल है दाम =)

## नवग्रहकाण्डीभाषाटीका

नवग्रहो के मंत्र चारोवेदों से संग्रह कर लिखे स्वस्ति वाचन आदि हर एक पण्डित मात्र के परम उपयोगी पुस्तक है दाम =)

## पुरश्चरणनिरूपणभाषाटीका

१५ . . . [illegible]

शक्ति परकाय प्रवेश मोक्ष आदि दाम ।)

## योगसार

यह पुस्तक बडे मतलब की है नित्य के सोते समय उठते समय स्नेरवासा . . . किया जाय वह अटल होगा निराहार रहने के लिये औषधि ऐसी है कि वर्षो तक भूख न लगे जो और बूटी खाने से वही पुर्षार्थ बना रहता है दाम =)

## अनार्य्य समाज रहस्य

नवीन आर्य्य समाज की मट्टी पलीत की है उनकी कपोल कल्पित मिथ्या अनर्थ का मुंह तोड उत्तर दिया है सनातन धर्मियों को तो एक प्रति अवश्य अपने पास रखनी चाहिये दाम =)